CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आल्हखण्ड असली की प्रस्तावना ।

❋ आल्हा ❋

सुमिरौं श्री गिरिजा जगदम्बा ❋ दुर्गा महा कालिका माय ॥
दानव मारे मधु कैटभ से ❋ औ महिषासुर दीन गिराय ॥
चंड मुंड को भक्षण कीन्हा ❋ कीन्हा रक्तबीज का नाश ॥
शुंभ निशुंभ विदारे माता ❋ निशदिन करौं तुम्हारी आश ॥
रूप [illegible] धरे जगदम्बे ❋ औ भक्तन की करी सहाय ॥
तैसे [illegible] दया की करिके ❋ मेरे कंठ बिराजौ आय ॥
गावन वाले को स्वर दीजै ❋ औ बजवैयहि दीजै ताल ॥
नाचन वारे को नयना दे ❋ मर्द को देउ खड्ग अरु ढाल ॥
गावन वारे को स्वर बाँधै ❋ बाँधै ताल मँजीरन क्यार ॥
नाचन वारे को पग बाँधै ❋ ताको करै कालिका छार ॥
पुनि मैं सुमिरौं श्रीकाशीजी ❋ जहँ है विश्वनाथ दरबार ॥
उमानाथ शंकर निशिवासर ❋ नर कहँ देत मुक्ति भुवसार ॥
अन्नपूर्णा के दर्शन जहँ ❋ भैरवनाथ केर जहँ धाम ॥
लोल तरंगा तट गंगाका ❋ सुमिरे करत सिद्ध सब काम ॥
लसत मन्दिरन की शोभा जहँ ❋ लोभा रहत चित्त लखि हाट ॥
घाट मनोहर सो बिलसत वर ❋ मणिकर्णिका आदि जहँ घाट॥
करैं भवानी नित रक्षा जहँ ❋ निशदिन फिरैं वरद असवार॥
पाप दुरावत जन्म जन्म के ❋ दर्शन किए एकही बार ॥
बड़ बड़ शूर बीर योधा यहु ❋ जगमें आय लिये औतार ॥
सतयुग हिरण्याक्ष हिरण्याकुश ❋ जिनके बलको नाहिं सम्हार॥
त्रेता माहिं राम अरु लक्ष्मण ❋ अंगद और बीर हनुमान ॥
परशुराम को महा पराक्रम ❋ जानत सकल लोक बलवान ॥
कौरव पांडव भे द्वापर में ❋ जिन भारत में युद्ध रचाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जन्म धारिके फिर कलियुग में ❋ आल्हा ऊदन नाम धराय ॥
बावन गढ़ में शाखो कीन्हो ❋ भई सहाय शारदा माय ॥
ऐसे वीर सदा नहिं उपजैं ❋ तेहिते शाखो दिहौं सुनाय ॥
मिस्टर सी-ई-इलियट साहब ❋ कछु दिन शहर फर्रुखाबाद ॥
बन्दोबस्त के रहे कलेक्टर ❋ कीन्ही आल्हखण्ड मरजाद ॥
गावन वाले जो अल्हैत थे ❋ तिनके लिखवायो सब हाल ॥
अँगरेजी में करो तर्जुमा ❋ लंदन भेजि दियो तत्काल ॥
कंप फतेगढ़ निज मतबा में ❋ लीन्हों राम स्वरूप छपाय ॥
संवत उनइस सौ उनतिस में ❋ असली आल्हा नाम धराय ॥
कियो प्रगट लै मोल लोगबहु ❋ बाँचत आल्हखण्ड संग्राम ॥
पंडित भोलानाथ गवैया ❋ ताही समय रहे सरनाम ॥
तिनको सुन्दर आल्हखण्ड यह ❋ तिनते यथा समय हम पाय ॥
ताहि छपावो शहर बंबई ❋ अब काशी में दियो छपाय ॥

शुभमित्यलम्—

आल्हा रसिक जनों के प्रेमी—

पं०—नारायण प्रसाद सं रामजी,

—:❋:-:-:❋:-:-:❋:—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

❀ आल्हखण्ड असली अलग २, ५७ लड़ाइयों का सूचीपत्र ❀

संख्या	नाम
	पं० नारायण प्रसाद मिश्र कृत
१	पद्मिनी हरन (पृथीराज जैचन्द की लड़ाई
२	[illegible] की लड़ाई
३	महोबे की लड़ाई
४	मा[illegible] की लड़ाई
५	अनूपा [illegible]रमल से लड़ाई
६	सूरज [illegible] की लड़ाई
७	करिया की लड़ाई
८	जम्बै की लड़ाई
९	सिरसा की पहिली लड़ाई
१०	नैनागढ़ की लड़ाई
११	पथरा गढ़ की लड़ाई
१२	चन्द्रावली की चौथी की लड़ाई
१३	राजकुमारों की लड़ाई
१४	वीरशाह की लड़ाई
१५	दिल्ली की लड़ाई
१६	दरवाजे की लड़ाई
१७	मड़ये की लड़ाई
१८	नरवर गढ़ की लड़ाई
१९	इन्दुल हरन
२०	[illegible] की लड़ाई
२१	[illegible]
२२	[illegible]
२३	[illegible]
२४	[illegible] ब्रह्मा की बूंदी पहुँचना
२५	मोती जवाहिर की लड़ाई
२६	गंगाधर की लड़ाई
२७	गांजर की लड़ाई
२८	हरीसिंह वीरसिंह की लड़ाई
२९	सातनि की लड़ाई
३०	कमलापति की लड़ाई
३१	गोरखा बंगाले की लड़ाई
३२	कटक आदि के राजाओं से लड़ाई
३३	लाखनि का गौना
३४	सिरसा समर
३५	चौड़ा और मलिखान की लड़ाई
३६	पारथ और मलिखान की [illegible]
३७	धीरसिंह व मलिखान की लड़ाई
३८	मलिखान [illegible] और [illegible] का स्वर्गवास
३९	मलिखान का स्वर्गवास और [illegible] मोतिन का सती होना
४०	भुजरियों की लड़ाई
४१	अभई रंजीत की लड़ाई
४२	ब्रह्मानन्द की लड़ाई
४३	आल्हा मनौआ
४४	सिंहाठाकुर से लाखनि की लड़ाई
४५	गंगा ठाकुर से आल्हा की लड़ाई
४६	नदिया बेतवे की लड़ाई
४७	पृथीराज और लाखन की लड़ाई
४८	ऊदन हरन की लड़ाई
४९	बेला के गौने की पहिली लड़ाई
५०	बेला के गौने की दूसरी लड़ाई
५१	बेला व ताहर की लड़ाई
५२	चन्दन बगिया की लड़ाई
५३	चन्दन खम्भ उखाड़ने की लड़ाई
५४	बेला का सती होना ऊदन का स्वर्गवास और आल्हा विजय
	पं० सुदर्शनलाल त्रिवेदी "चक्र" कृत
	आल्हखण्ड की लड़ाइयाँ
५५	ढेबा का ब्याह जलहरगढ़ की लड़ाई
५६	परिमालिक का ब्याह अर्थात् महोबे की पहिली लड़ाई
५७	धांधू का ब्याह अर्थात् बुखारा की लड़ाई

अन्त में सब [illegible]
[illegible]ोरों का संक्षेप हाल लिखते
[illegible]

ग्रन्थ समाप्त ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

असली आल्हखण्ड २८ लड़ाई का सूचीपत्र ।

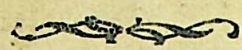

संख्या	नाम	पृष्ठ, प्रा, पृ, इति
१	संयोगिनी का स्वयंवर	१—२१
२	महोबे की लड़ाई	२२—३५
३	मा[illegible]ौ की लड़ाई	३६—७५
४	सिरसा की पहिली लड़ाई	७५—१००
५	आल्हा का व्याह	१०१—२३९
६	मलिखान का व्याह	१४०—१७७
७	चन्द्रावलि की चौथी	१७८—२०८
८	ब्रह्मा का व्याह	२०९—२४५
९	ऊदन का व्याह	२४६—२८२
१०	इन्दल हरन इन्दल का व्याह	२८३—३२०
११	आल्हा निकासी	३२१—३३२
१२	लाखनि का व्याह	३३३—३५८
१३	गाँजर की लड़ाई (ऊदन विजय)	३५९—३७८
१४	लाखनि का गौना	३७९—३९१
१५	सिरसा समर	३९२—४१२
१६	कीरति सागर पर भुजरियों की लड़ाई	४१३—४४३
१७	आल्हा मनौआ	४४४—४७२
१८	नदिया बेतवे की लड़ाई	४७३—४९३
१९	ऊदन हरन	४९४—५०३
२०	बेला के गौने की पहिली लड़ाई	[illegible]
२१	बेला के गौने की दूसरी लड़ाई	[illegible]
२२	बेला और ताहर की लड़ाई	[illegible]
२३	चन्दन बगिया काटने को लड़ा[illegible]	[illegible]
२४	चन्दन खम्भ उखाड़ने की लड़ाई	५५६—[illegible]
२५	बेला के सती होने की लड़ाई	५६१—५७२
२६	ढेबा का व्याह जलहरगढ़ की लड़ाई	५७३—६२०
२७	परिमालिक का व्याह अर्थात् महोबे की पहिली लड़ाई—	६२१ से—
२८	धांधू का व्याह अर्थात् बुखारा की लड़ाई	आखीर तक

❋ इति ❋

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भूमिका।

प्रगट हो कि जब युधिष्ठिर आदि पांडवों और दुर्योधन आदि कौरवों का कुरुक्षेत्र के मैदान में महा भारत युद्ध हुआ। उस युद्ध में श्रीकृष्ण चन्द्रजी की सहायता से पांडवों की जीत हुई। अन्त में भीमसेन आदि ने श्रीकृष्ण चन्द्रजी से प्रार्थना पूर्वक कहा कि हमारी इच्छा युद्ध से पूर्ण नहींए। इस कारण आप यह बर दीजिये कि कलियुग में हम युद्ध का अपनी इच्छा पूर्ण करैं, यह सुन श्रीकृष्णजी ने सोचा कि असन्न होने से इनको अभिमान होगया है अब कौरवों के हाथ से इनकी मृत्यु कराय इनको स्वर्ग लोक पहुँचाऊँ। यह सोच कर श्रीकृष्ण जी बोले कि अच्छा तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। सोई कलियुग में युधिष्ठिर जी आल्हा हुए। भीमसेन ऊदन हुए॥ अर्जुन ब्रह्मानन्द हुए। नकुल लाखनिराना हुए। सहदेव बीर मलिखान हुए। अभिमन्यु इन्दल हुए। कौरवों में राजा दुर्योधन पृथ्वी राज हुए। दुस्सासन धाँधू हुआ। कर्ण ताहर हुए। द्रोणाचार्य चौड़ा ब्राह्मण हुए। इस प्रकार ये सब प्रगट हुए। और युद्ध करके अन्त में सब स्वर्ग गामी हुए। आगे आल्ह खण्ड सम्बन्धी शूर बीरों का संक्षेप हाल लिखते हैं॥

राजा परिमाल (चँदेले) का हाल।

कलियुग के कुछ वर्ष बीते नगर चँदेली चन्द्रवंशीय क्षत्रिय चन्द्रब्रह्म धर्मात्मा और न्यायी राजा हुए। महाराज चन्द्रब्रह्म को चन्द्रदेव ने प्रसन्न होकर पारस माणि दी उस पारस के स्पर्श से लोहा सुवर्ण होजाता था। इस प्रभाव से चन्दब्रह्मजी ने अनेक यज्ञ किये और बहुत सेना एकत्र कर अनेक राजाओं को जीता और कालिंजर में किला बनवाया चन्दब्रह्म के मंत्री चिंतामणि

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तोमर बंशीय क्षत्रिय थे, चन्द्रब्रह्म के पुत्र बीरब्रह्मा बीरब्रह्म के रूप चन्द्र रूपचन्द्र के ब्रजब्रह्म ब्रजब्रह्म के बन्दन, बन्दन के जगब्रह्म, जगब्रह्म के सत्यब्रह्म सत्यब्रह्म के सूर्यब्रह्म, सूर्यब्रह्मने एकसूर्य कुण्ड बनवाया, सूर्यब्रह्मके मदन ब्रह्म, मदन ब्रह्मके नाम का एक मदन-ताल प्रसिद्ध है, मदन ब्रह्मके कीर्ति ब्रह्म कीर्ति ब्रह्मके नामसे कीरति सागर प्रसिद्ध है, महाराज कीर्तिब्रह्मके यहाँ बीस लाख सेना थी। कीर्तिब्रह्म के पुत्र परिमाल (चँदेले) हुए। परिमाल ने तीर्थ [illegible] करके बहुत दान ब्राह्मणों को दिया और उस समय के प्रायः [illegible] राजा को युद्ध से, मित्रता से धन से अपने वशमें करके [illegible]र नाथ गुरुकी आज्ञासे अपनी खाँड़ा सागर में पखार दिया और गुरुकी शपथ करली फिर किसी अस्त्र शस्त्र को हाथ नहीं लगाया इसी कारण युद्ध के नामसे काँप जाते थे एकतो बृद्धा-बस्था दूसरे अस्त्र शस्त्र के लिये गुरु की शपथ तीसरे अपनी कीर्ति में धब्बा लगजाने का भय था॥ राजा परिमाल के पूर्व बंशमें एक कन्या चंपावती राठौर बंशीय क्षत्रिय महाराज कनौजी को ब्याही थी उसी बंशमें राजा जयचन्द जी थे॥

राजा परिमाल का बिवाह।

राजा बासुदेव का दूसरा नाम मालवंत था सो महोबे के राजा थे बासुदेव के पुत्र १ माहिल २ भोपति, और मल्हना आदि कन्यायें थीं मल्हना के रूपकी बड़ाई सुन कर राजा परिमाल ने महोबे पर चढ़ाई की और बासुदेव माहिल व भोपति को जीत लिया तब बासुदेव ने हार मान कर मल्हना का बिवाह परिमाल के साथ कर दिया, मल्हना ने चँदेली में रहना अङ्गीकार नहीं किया तब परिमाल के कहने से महोबा खाली कर दिया और आप जाकर उरई में रहे। परिमाल ने अपनी दूसरी रानियों को भी महोबे में लाकर मल्हना सहित महोबे में निवास किया। कुछ समय बीते

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

वासुदेव परलोक गामी हुए उरई का राज्य माहिल करने लगे माहिल ने राजा परिमाल से चुगली माफ कराली थी और परिमाल से बदला लेने के दाव घात में लगे रहा करते थे माहिल परिहार क्षत्रीय थे लिल्ही घोड़ी सवारी में थी, माहिल की चुगली पर राजा परिमाल का ध्यान बहुत कम था। इसके परिणाम में पीछे से सर्वनाश होगया।

दस्सराज वच्छराज (बनाफरों) का हाल ॥

महाराज चन्द्रब्रह्म के मंत्री तोमर बंशीय चिंतामणि ने चन्द्रब्रह्मजी के स्वर्गवास होने पर कुछ खेदपाय महादेवजी का बारह वर्ष तक बड़ी भक्ति से पूजन किया, तब शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा बर माँगो, तो चिन्तामणि ने हाथ जोड़ यह बर माँगा कि हमारे बंशमें शूर बीर उत्पन्न होकर चन्देले के राज्य के अधिकारी हों यह सुन महादेवजी वर देकर अन्तर्ध्यान हो गये, चिन्तामणि के पुत्र शशिपाल शशिपाल के पुत्र कृपाचन्द्र, कृपाचन्द्र के पुत्र मकरन्द, मकरन्द के, पुत्र अक्रूर, अक्रूर के पुत्र टोडर, टोडर के पुत्र रहिमल, रहिमल, के पुत्र सोरठ, सोरठ के दो पुत्र१ सल्ल० २ वल्ल, हुए दोनों भाइयों में बड़ा प्रेमथा, बड़े होने पर दोनों के चित्त में वैराग्य उत्पन्न होगया इस कारण बनमें जाकर गुरु गोरख नाथ के पास पहुँचे इन दोनों को देखते ही गोरखनाथ जी समाधि लगा गये तीन दिन बाद समाधि से जागकर देखा कि ये दोनों भाई समाधिस्थ के समान आसन पर बैठे हैं दोनों की दृढ़ भक्ति देख प्रसन्न होकर नाम धाम पूछ करके गोरखनाथ जी ने उनको अपना शिष्य किया और योग की रीति बताई तबसे वे दोनों वहाँ बनमें रह कर योग क्रिया करने लगे, गोरखनाथ जी के प्रताप से उस बनमें सिंह और गौयें एक घाट पानी पीते थे सैकड़ों गौयें बनमें निर्भय बिचरती थीं, कुछ दिन बाद गोरखनाथ जी ने उन दोनों भाइयों को आज्ञा दी कि तुम दोनों भाई हमारे पास से कुछ दूर पर

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जाकर योग करो यह सुन वे दोनों कुछ दूर नदी के तटपर जाकर बैठे वहां एक ओर सिंह के बच्चे एक ओर गौवों के बछरे परस्पर क्रीड़ा करते उछलते कूदते हुए आये, सल्लने सिंहके बच्चों को देख कर बिचार किया कि यदि मैं सिंह का बच्चा होता तो इसी प्रकार क्रीड़ा करता और उछलता, बल्लने गौवों के बछरों को देख कर बिचार किया कि जो मैं गायका बछरा होता तो इसी प्रकार खेलता कूदता, इस प्रकार बिचार करते हुए दोनों भाइयों ने प्राणायाम किया समाधि निमित्त प्राण वायु को खींच कर ब्रह्माण्ड पर चढ़ाया परन्तु उस प्राण वायु को नहीं उतार सके तीसरे दिन प्राण वायु शरीर से निकल गया शास्त्र का प्रमाण है कि 'अन्ते या मतिः सागतिः' अन्त समय में जो मति होती है उसी अनुसार गति होती है इस सिद्धांत के अनुसार सल्ल ने सिंहिनी के गर्भसे और बल्लने गौके गर्भ से जन्म लिया पूर्व जन्म के संयोग से दोनों में बड़ी प्रीति थी सिंहिनी का बच्चा और गायका बछरा दोनों प्रसन्नता पूर्वक रहते और क्रीड़ा करते थे, सिंह आखेट के समय अलग होजाता था और एक घंटा बछरा के गले में बांधकर कह दिया था कि संकट के समय इस घंटा को बजा दिया करना, एक दिन बछरे ने सिंह की परीक्षा लेने के लिये घंटा बजा दिया सिंह उस समय अपना शिकार छोड़ कर दौड़ आया तब बछरे ने कहा मित्र ! तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये मैंने घंटा बजा दिया था, एक दिन जब सिंह शिकार पर गया था बछरा के समीप होकर कई बधिक निकले बछरे को देखकर बोले कि यह बछरा बहुत मोटा ताजा है इसपर रस्सी डाल कर फांसलो यह सलाह कर रस्सी डाला बच्छराज ने घंटा, बजाया सिंह शिकार पर था उसने सोचा कि उस दिनकी तरह घंटा बजाया होगा यह सोचकर अपना शिकार मारा इतने में बधिकों ने बच्छको फाँस कर गिराय दिया बच्छ

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

डकराया सो सुनकर जब तक सिंह आवे तबतक बधिकों ने बच्छ को मारडाला यह देख सिंहको बड़ा दुःख हुआ और बधिकों से बहुत सी लकड़ी इकट्ठी कराकर बच्छको चिता में रखवाकर आग लगवादी और बधिकों को भगाकर आप भी उस चिता में कूद पड़ा उसी समय वहीं शिवजी पार्वती समेत आ निकले पार्वती ने पूछा हे भोलेनाथ ! इस बन में यह किसकी चिता जल रही है पहले तो शिवजीने टाल दिया फिर पार्वती के हठ करने पर सब हाल कह सुनाया तब पार्वती जीने कहा कि हे महाराज ! आप देवताओं के भी देवता हो इस चिता में से बालकों को अवश्य जिलाओ तब शिवजी ने चिता पर अमृत छिड़ककर दोनों बालकों को जिलाया और दोनों का दस्सराज बच्छराज नाम धरदिया और यह बरदान दिया कि तुम्हारे पुत्र बड़े शूर बीर प्रतापी होंगे, तुम दोनों इस बनमें कन्द मूल फल खाकर रहो एकदिन राजापरिमाल यहाँ आवेगा वह तुमको यहां से ले जाकर अपने राज्य में अधिकारी बनावेगा यह कह महादेव पार्वती अन्तर्ध्यान होगये एक दिन राजा परिमाल अपने कुछ लोगों के साथ बिचरते हुए उस बन में आ निकले वहाँ मार्ग में दो भैंसा लड़ रहे थे परिमाल तो अस्त्र पकड़ नहीं सकते थे अपने लोगों से कहा कि मार्ग में से इन भैंसों को हटाओ उनमें से किसीकी भी हिम्मत नहीं पड़ी कि उन भैंसों को हटासकें इतने में दस्सराज बच्छराज दोनों भाई वहाँ आगये और एक एक भैंसा को हटा दिया यह देख राजा परिमाल ने उनको पराक्रमी जानकर पूछा तुम कौन हो क्या, नाम है, कहाँ स्थान है तुम्हारे पिता माता कौन हैं यह सुन उन बालकों ने उत्तर दिया कि हम अपने माता पिता को नहीं जानते एक साधु महात्मा को हमने एक स्त्री सहित देखा उस महात्मा ने हम दोनों का नाम दस्सराज बच्छराज रखकर कहा कि एक राजा परिमाल यहाँ आकर तुमको ले जावेगा यह सुन राजा

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

परिमाल ने उन साधु दत्त पुत्रों को साथ लेकर वहां से कूच किया और प्रसन्नता पूर्वक अपने नगर में आये और उन दोनों भाइयों सहित राजाने राज मंदिरमें प्रवेश किया, रानी मल्हना ने उन दोनों को स्वरूपवान् और तेजवान् देखकर राजा से पूछा कि ये बालक कौन हैं तब राजाने हाल कहा तो सुन कर रानी मल्हना बहुत प्रसन्न हुई, और बड़े प्रेम से दोनों को अपने महलमें रहने को स्थान दिया, बालकों की भांति दोनों रहने लगे, उसी सालमें दोनों का यज्ञोपवीत संस्कार किया, और विद्या की शिक्षा में लगा दिया, उन्हीं दिनों रहिमल और टोंडर दो भाई बकसर में रहते थे वे युद्ध विद्या में बड़े प्रवीण थे उनका नाम सुनकर दस्सराज वच्छराज दोनों भाई राजा परिमाल से आज्ञा लेकर उनके पास युद्ध विद्या सीखने गये वहां उन दोनों भाइयों ने इन दोनों को अपने समान बलवान जानकर मित्रता करली और पगिया पलटकर भाई भाईके समान रखते हुए अपना सब हुनर सिखला दिया, दस्सराज वच्छराज बनमें रहते थे वहीं इनकी उत्पत्ति हुई इस कारण इनको सब बनाफर कहते थे एक बार इन चारों बीरों से धूरेपर बनारस के मीरातान्हन के साथ कुछ बखेड़ा हो गया सब मिलकर कनौज के जयचंद के दरबार में अपना फैसला कराने जा रहे थे और महोबे में हरकारा से कनौज का रास्ता पूछने लगे हरकारा ने उनका समाचार पूछ कर कहाकि राजा जैचंद महोबे के राजा परिमाल को बहुत मानते हैं इस कारण यहीं ठहरो और परिमाल से अपना हाल कहो जो राजा लिख देंगे वही फैसला होगा, यह सुनकर वे सब महोबे के राजद्वार पर ठहर गये उसी रातको जम्बे का राजकुमार करिया माड़ौवाला माहिल परिहार के कहनेसे मल्हनाका नौलखाहार लेने आया और फाटक पर कुल्हाड़ा चलवाने लगा तब चारो बनाफर और ताल्हन सैयद ने अपने पुत्र और नातियों सहित उस पर

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

छापा मारकर भगा दिया, राजा परिमाल ने यह जान कर उन सब का बड़ा सन्मान किया, और दस्सराज बच्छराज का विवाह करा कर बसा लिया, यहां मल्हना ने बिचार किया कि दस्सराज बच्छराज इन दोनों को बसा लेने से ये रुक जायँगे नहीं तो बकसर को चले जायँगे क्योंकि राहिमल टोंडर के साथ इनका भाइचारा होगया है दूसरे उपाय से ये यहां नहीं रुक सकते। ताल्हन सैयद को बेटा और नातियों सहित बलवान् समझ कर रोक लिया और अपनी फौजका मालिक बनाया, और महोबे में रहने का स्थान दिया। फिर महोबे के आध कोस पर दशहर पुरवा नाम का एक गाँव बसाकर उसमें झिंझावट कोट बनाय दस्सराज को रहने को दिया, बच्छराज को सिरसा गढ़ दिया परंतु दोनों भाई प्रेमके कारण दशहर पुरवा में ही रहते थे, यह दस्सराज बच्छराज का हाल लिखा गया ॥

❀ पृथ्वीराजके जन्म का हाल ❀

पृथ्वी राज के पिता राजा सोमेश्वर अजमेर में राज्य करते थे उस समय दिल्ली में राजा अनंगपाल, कनौज में राजा अजय पाल, जोधपुर में नाहरराय, चित्तौर में समरसिंह पाटन में भीम देव, जसलमेर में भोजदेव, आबू में जैतसिंह पँवार राज्य करते थे। कविचंद भाटने लिखा है कि राजा अनंग पाल का कामध्वज के साथ युद्ध हुआ उस युद्ध में अजमेर के राजा सोमेश्वर ने अनंग पाल की सहायता की इससे प्रसन्न होकर अनंगपालने अपनी छोटी कन्या कमला देवी (इंद्रवती इंदकुँवरि) का विवाह सोमेश्वर के साथ कर दिया कमला (इन्द्रवती) के गर्भसे पृथ्वी राजका जन्म कवि चंद भाटने संवत १११५में लिखा है परंतु बल भद्र विलास नामक प्रमाणिक ग्रन्थ में पृथ्वीराज का जन्म इस प्रकार लिखा है कि तोमर बंशी महाराज अनंगपाल की कन्या कमला जिसका दूसरा नाम इन्द्रवती था वह जब गर्भवती थी तीन

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

महीने का गर्भथा तब श्रावण मासमें पिताने बुलाया और इन्द्रवतीको गर्भिणी सुनकर पंडित चन्दनलालजी से पूछा कि इस कन्या के गर्भस्थ बालक के लक्षण कहिये पंडित जी ने प्रश्न बिचार कर कहा सुनिये ॥

श्लोक—अस्याश्चोदर देशेतु प्रतापी राज वन्दितः ॥
नृपसंघ प्रहन्ताच भुवो भारावतारकः ॥ १ ॥
आजानु वाहुश्चन्द्रास्यः शूरः शूर निषेवितः ।
जनिष्यते प्रमाता च नर देही ति अब्दित ॥ २ ॥

इस कन्या के उदर (गर्भ) में से प्रतापी राजाओं से बन्दना के योग्य सब राजाओं को जीतने वाला पृथ्वी का भार उतारने वाला पुत्र होगा ॥ १ ॥ और लंबी भुजाओं वाला चन्द्रमा के समान मुखारविन्द वाला (तेजस्वी) शूरबीर तथा शूर बीरों से सेवित, बड़ा प्रमाणिक पुत्र उत्पन्न होगा जिसको सब कोई नर हरी कहेंगे ॥ २ ॥ और यह तुम्हारे बंश भरको दिल्ली से निकाल कर निष्कंटक राज्य करेगा, यह सुन कर राजा अनंगपालने चिंतायुक्त होकर कुटुंबियों को बुलाया और सब हाल कहा, तब कटुंबियों ने सलाह दी कि आप अपनी कन्या को एकान्त में बुलाके कहिये कि आज तेरे गर्भके कल्याण निमित्त पंडित को बुलायके हमने प्रश्न किया तो पंडितों ने कहा कि इसके गर्भसे बड़ा प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा परन्तु जो यह यहाँ रहेगी तो गर्भ गिर जायगा इस कारण बालक उत्पन्न होनेतक तुम तीर्थाटन कर आओ इस प्रकार समझाकर तीर्थाटन करने के बहाने से हम लोगों के साथ भेजदो तो हम इसको किसी कुँए में डाल कर लौट आवेंगे, इस प्रकार कुटुंबी जनों की सलाह से राजाने कन्या को एकांतमें बुलाय समझा बुझाकर अपनी कुछ सेना समेत कुटुम्बियों के साथ छलसे तीर्थाटन के मिस इन्द्रवती को भेजदिया वे सब लोग बनकी ओर चले और सिंह आदि पशुओं से पूरित भयंकर बनमें पहुँचे वहाँ एक अँधेरे और निर्जल कूयें में उसी

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

रातको किसी छलसे इन्द्रवती को ढकेल दिया और दिल्ली में आकर राजा से कहाकि हम लोग आपका काम कर आये।

इन्द्रवती उस अँधेरे कुँएमें बिलाप करने लगी, उसी समय ईश्वर की इच्छा से परोपकारी साधु (अश्वत्थामाजी) वहाँ आ गये और इन्द्रवती को कुएँ में से निकाल कर पूछा कि हे सुशोभने ! तुम कौन हो किसने तुमको इस कुएँ में डाल दिया यह सुन इन्द्रवती ने कहा हे महात्मन् ! मैं दिल्ली के राजा अनंग पालकी कन्या हूं और अजमेर के राजा सामदेव की पत्नी हूँ परंतु हे साधु ! रात्री में शयन करते समय नहीं मालूम कौन राक्षस वा देव मुझे उठा लाया और इस कुवाँ में डाल दिया यह सुन साधुने कहा अब तुम अपने पिता के यहाँ जाओगी वा पतिके यहाँ,वहीं तुमको पहुँचा दूँ तब इन्द्रवती ने कहा अब मैं कहीं न जाऊँगी इस समय मेरे पिता आपही हो,यह सुन साधुने इन्द्रवती को कन्या के समान जानकर अपनी मढ़ी में लाय रक्षानिमित्त सब ढंग बतला दिया, वह साधु जगत्प्रसिद्ध द्रोणाचार्य जी के पुत्र अश्वत्थामा जी थे जो महा भारत युद्धमें कौरवों की ओर थे। इन्द्रवती पिताके यहां से भी अधिक सुख पूर्वक वहां रहने लगी।

श्लो —अथसा माघ मासेतु त्रयोदश्यां सिते भृगौ।
पुष्येद्वित्रीन्दुचन्द्रेऽद्धे मध्यान्हेऽभिजितिक्षणे ॥ ३ ॥
त्रिविधे मारुते वाते सानुकूलग्रहो दये।
मुदित लोक सन्ताने तदा पुत्र मजी जनत् ॥ ४ ॥
यंबदन्ति नराः सर्वे धार्त राष्ट्रावतारकम्।
तस्यतज्जन्म कर्मादि द्रोणिश्चक्रे बिधानतः ॥ ५ ॥
आजानु बाहुः शशिपूर्णभास्यः पद्मायताक्षोमदनै करूपः।
बीरप्रहन्ताक्षितिभार हर्तावंशाञ्चतंसोनरदेहसंज्ञः ॥ ६ ॥

कुछ दिन ब्यतीत होने के अनन्तर संवत् ११३२ माघ मास शुक्ल पक्ष त्रयोदशी शुक्रवार को दिनमें मध्याह्न समय अभिजित्

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मुहूर्त पुष्य नक्षत्र में ॥३॥ शीतल मंद सुगन्ध तीनों प्रकार की बायु बहरही थी ग्रहोंका उदय अनुकूल था और सब संसार के लोग प्रसन्न थे उस समय इन्द्रवती को पुत्र उत्पन्न हुआ ॥ ४ ॥ जिसको सब मनुष्य राजा धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन का अवतार कहते हैं उस बालक का जात कर्म आदि संस्कार अश्वत्थामा जी ने बिधान पूर्वक किया और पृथीराज नाम रक्खा ॥ ५ ॥ वह पृथ्वीराज लंबी भुजावाले, चन्द्रसमान मुख कांति वाले कमल नयन काम देव के समान सुन्दर रूप पृथ्वी के भार को उतारने वाले, बीरहंता चौहान वंशके भूषण और नरदेही थे ॥ ६ ॥ अश्वत्थामा जी की मढ़ीमें रहते हुए पृथ्वीराज शुक्ल पक्षके चन्द्रमा के समान बढ़ने लगे पांच वर्ष की अवस्था में उस बालक को अश्वत्थामाजी ने बाण बिद्या सिखाई और क्रमशःअनेक बिद्याओं में शिक्षा देके निपुण किया सात वर्ष की अवस्था में पृथ्वीराज निर्भय हो बनमें बिचरने लगे वहां सिंह आदि पशुओं को बाण द्वारा मूर्च्छित कर पकड़ कर मढ़ीमें लाते एवं अनेक बाल चरित कर माता और मुनी को सुख देने लगे ॥

एक दिन राजा सोमदेव शिकार खेलते हुए दैव योग से उसी बनमें आये वहाँ पृथ्वीराज को धनुष बाण हाथ में लिये निर्भय बिचरते देखा और अनुमान किया कि मेरी स्त्री जो कहीं जीती होगी तो उसके भी इतनाही बड़ा बालक होगा इस बालक के देखने से हमारे हृदय में अधिक प्रीति बढ़ रही है यह बालक कौन है ऐसा बिचार करते हुए सोमदेव उस बालक से पूछने लगे कि हे बालक ! तुम कौन हो किस बंश में उत्पन्न हुए हो देखने से तुम ब्राह्मण के बालक और कर्मों से क्षत्रिय के बालक

१ कवि चंदने पृथ्वीराज का जन्म इस दोहा के अनुसार सं० ११५१ में बैशाख कृष्ण २ गुरुवार का लिखा है।

दो०—एकादशसै पंच दह, बिक्रम शाक आनन्द।
मिहिरिपु पुर जय हरन को, भे पृथि राज नरिन्द ॥ १ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जान पड़ते हो, क्योंकि धनुष बाण धारण किये निर्भय बिचर रहे हो यह सुन वह बालक बोला कि ऋषि पुत्र हूँ मेरे पिता का नाम अश्वत्थामा है आप हमारे स्थान को चलिये यह सुन राजा सोमदेव उस बालक के साथ ऋषी की मढ़ी को गए राजा सोम देव को देखकर अश्वत्थामाजी ने मधुर बचनों से सत्कार कर आसन दिया और पूछा कि तुम्हारा स्थान कहाँ है और क्या नाम है तब सोमदेव (सोमेश्वर) ने कहा हे महात्मन्! मैं अज-मेर का राजा सोमदेव नाम चौहान बंशीय क्षत्रिय हूँ मेरे दो स्त्रियाँ एक तो कुशबंशी कोतलजी अम्मेरिके के राजा की बेटी दूसरी हस्तिना पुर के राजा अनंगपाल की बेटी थी उसमें मेरा मन बसता था वह गर्भवती थी उसे श्रावण मास में अनंग पाल ने बुलाया और उसके गर्भ जान कर पंडित को बुलाकर पूछा कि इस कन्या का गर्भस्थ बालक कैसा होगा पंडित ने उत्तर दिया कि इससे जो बालक उत्पन्न होगा वह बड़ा प्रतापी होगा, और तुम्हारे बंश को यहाँ से निकाल कर राज्य करेगा यह सुन गर्भ से शंका मान कर अनंगपाल ने अपने कुटुम्बियों के साथ मेरी प्राण प्यारी को कहीं भेजकर मरवाडाला, उसी समय से मैं उदास रहता हूँ मेरा मन कहीं नहीं लगता यह कह महाराज सोमदेव आँखों से आंसुओं की धारा छोड़ने लगे और मढ़ी के भीतर बैठी हुई इन्द्रवती भी अपने पति को देखकर आँसू बहाने लगी इस प्रकार राजा को देखकर अश्वत्थामाजी बोले हे राजा सोमदेव ? आप कुछ सोचमत करो, ईश्वर की गति बिचित्र है जो किसी को मारना चाहता है उसकी मृत्यु दूसरे के हाथ से होती है सुनो इसी स्थान पर बैठे २ बटवृक्ष पर बैठा हुआ एक कबूतर का जोड़ा देखो उसी समय वहाँ से एक बहेलिया धनुष बाण लिये आया उस जोड़ा को मारनाही चाहता था कि एक बाज पक्षी ऊपर आ पहुँचा वह भी उस जोड़े पर झपटने को

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

था कि बटबृक्ष के नीचे बांबी में से एक साँप निकला और बहेलियाको काटखाया उसके काटने से बहेलिया गिरा औ उसके हाथ से खींचा हुआ,वह बाण छूटकर बाजको जा लगा बाज पक्षी और बहेलिया दोनों वहीं मरगये कबूतर का जोड़ा बचगया, यह चरित्र देख ईश्वर की गति को विचित्र जानकर मैं यहाँ इस बनमें स्थिर हूँ, हे राजा सोमदेव ? तुम्हारी प्यारी स्त्री यहाँ बनमें एक अँधेरे निर्जल कुए में बड़ी बिलाप कर रही थी दैवकी प्रेरणासे हम वहाँ पहुँच गये और उसे कुए से निकाल अपनी मढ़ी में लाये पुत्री के समान जानकर उसकी रक्षा की, अब आप अपनी स्त्री और इस बालक को लेजाइये यह सुन परमानन्दित होकर सोम देव ने पुत्र को हृदय से लगाया पृथ्वी राज ने अपने पिताको प्रणाम किया फिर स्त्री को पाकर बहुत प्रसन्न हुए अनन्तर अश्वत्थामाजी की प्रदक्षिणाकर प्रणाम करके जब चलने लगे तब अश्वत्थामा जी ने सोमदेव से कहा कि यह तुम्हारा पुत्र सब राजाओं के ऊपर शिरोमणि होगा इस का नाम पृथीराज प्रसिद्ध होगा, इस प्रकार आशीर्वाद देकर पृथीराज को एक अर्ध चन्द्राकार बाण दिया और कहा कि इस बाण को मारकर तुम शत्रुको यमपुर पहुँचाओगे इसबाण से शत्रु बच नहीं सकेगा शत्रुको मारकर यह बाण तुम्हीं को प्राप्त होगा और शब्द बेधी बाण भी तुम मारोगे इससे तुम्हारा नाम शब्दबेध चौहान प्रसिद्ध होगा । यह आशीर्वाद देकर अश्वत्थामाजी ने सोमदेव को स्त्री पुत्र सहित बिदा कियामहाराज सोमदेवअपनेघर आये, पृथ्वीराजने अपनेचाचाकान्ह देवको प्रणाम किया अनन्तर सबको प्रणाम कर आशीर्वाद पाया ।

पृथ्वी राजकी सामर्थ्य ।

जिस समय पृथीराज बारह वर्षके थे उस समय उनमें बड़ी समर्थ्य होगई थी जो मनुष्य एकसौ मनुष्यों को मारकर अपनी और अपनी सेनाकी रक्षा कर सके उसे योधा कहते हैं उसमें

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

पाँचहाथी का बलहोताहै। और जो सौ योधाओं को मारकर अपनी और अपनी सेनाकी रक्षा करसके उसे शूर कहते हैं उसमें दश हाथी का बल होता है। जो सौ शूरों को मारकर अपने को और अपनी सेनाकी रक्षा करले उसे सामन्त कहतेहैं उसमें बीस हाथी का बल होता है। तथा जो सौ सामन्तों को मारकर अपनी रक्षा कर सकै उसे धवल कहते हैं उसमें चालीस हाथी का बल होता है। और जो सौ धवलों को मारकर अपने को बचाले उसको सबल कहते हैं उसमें अस्सी हाथी का बल होता है।

श्लो०—सबलत्वं चैकएव पृथ्वी राजः परंजयः ॥
कान्ह देवादयोभूपा धवलत्वं समागताः ॥ ७ ॥
शताष्टोत्तर संख्याकः सादन्तास्तत्र जज्ञिरे ॥
षोडशानां सतंतेषां वभूवुः शूर संज्ञकाः ।
दिक् साहस्रमितास्तत्र योद्धारो नृपनंदन ॥ ८ ॥

श्रीमहाराजा पृथ्वीराजजी अकेलेही सबलथे और कान्हदेव आदि राजा धवलता को प्राप्त हुये थे ॥७॥ और एक सौ आठ पृथ्वीराज के यहाँ थे ॥ ८ ॥ इन सबके नाम और गुण लिखे जायँ तो एक पुस्तक तैयार हो जाय परन्तु इतनाही लिखते हैं कि महाराज पृथ्वीराज के यहाँ बड़े २ बूढ़े नामी शूरवीर सामंत थे उनके वंशज अब भी राजपूताने में राज कर रहे हैं, जैसे पञ्जून के वँश महाराजा जयपुर, रावल समरसी जीके वंशज महाराजा नैपाल और महाराणा उदयपुर डंगरपुर प्रतापगढ़, चौहान बंशमें बूंदी कोटा सिरोही आदि और राठौरों के वंशजों में महाराजा जोधपुर कृष्णगढ़ आदि इसी प्रकार शूर सामन्त और धवलों की संतान यत्रतत्र विद्यमान हैं।

कवि चंद्र भाट—

कवि चंद्रभाट पृथ्वीराज जी का परममित्र था, पंजाब के लोहार नगर में कवि चंदका जन्म हुआ पिता का नाम राव वेण विद्या

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरुका नाम गुरु प्रसाद था चंदके पूर्वजोंकी यजमानी अजमेर के चौहानों के यहाँ बहुत पहले से चली आती थी राव वेण महाराज सोमेश्वर का राजकवि था चंद कबि व्याकरण पुराण साहित्य, नाटक और गान विद्याका अच्छा ज्ञाता था फारसी भाषा में भी चंद कवि को अभ्यास था, चंद कवि की दो स्त्रियाँ थीं। पहली कमला अथवा मेवा दूसरी गौरी अथवा राजोरा नाम था राजाबाई नाम एक कन्या और दशपुत्र जल्ह,सुजान आदि थे पुस्तक पृथ्वीराज रासो जो पूर्णहोने को रहगई थी उसे जल्ह ने पूर्ण किया था,कविचंद को देवीजी का बरदान था इससे चंद बरदायी भी नाम प्रसिद्ध हुआ। कवि होने के सिवाय चंद योधाभी थे पृथ्वीराज के साथ प्रायः सबही लड़ाइयों में कविचंद रहे कन्नौजकी लड़ाई में कविचंदने बड़ा पराक्रम दिखलाया था, कविचंदने जो भविष्य कथन किया है वह ध्यान देने योग्य है शंकर के वीरभद्र नामक गणके मुख से कविने इस प्रकार भविष्य कहलाया है।

यह होनहार सो होय है। दिल्ली न थिरता सोयहै।पुनम्लेच्च दलबल जोर है। अरु शहर दिल्लिय तोर है॥ पृथिराज युद्ध न जीति हैं। रणमय रावल बीति हैं। चामुण्डराय गुरुरामहीं कटपरहिं भारत कामहीं। पृथिराज बंधिहि पावही॥ षट्हास बिपत विहावहीं। गोरीसुदिल्लीआनयं॥ पुनिबरत हिंदुस्थानयं तिहि दुर्गदेवल भाजयं॥ अति अनारथ्य ससाजयं॥ बरतैसोवरसां दोयसे॥ तापाछे चक्रता आवसे। हिंदुवान दंड भरावहीं॥ नृप घर घराह ब्यावहीं। देखनाद सू दल आवहीं॥ तिहि तखत दिल्ली न पावहीं। तापाछे टोपी आवही॥ बहु इलम कलम चलावहीं। नारी सुराजा बन्नसी। हिंदू तुरक सब भज्जसी॥ इति तखत दिल्लिय आवहीं। नृप घर घरहिं सुख पावहीं। वह धर्मराजे जमावसी॥ प्रतिपाल न्याय कहावसी। जब न्याय बन्धन छूटसी॥ तब आप पेटी फूटसी। मिलि बलक काबुल थट्टयं॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Varanasi. Digitized by eGangotri

रहि बरसषट नाटयं। सेसोद दिल्लिय आवहीं ॥ शिर राण छत्र धरा वहीं। पैंतीस बरस प्रमानहीं ॥ भोगवे हिंदुस्थानहीं । अजमेर पीरसे जग्गही। पुनि तखत दिल्लिय मग्गही ॥ तू बरस दिल्लिय घेरहीं। पुनि आण दिल्लिय फेरहीं॥ राठौर दिल्लिय आवहीं। पुनि धर्मनीतिचलावहीं ॥

पृथीराज का दिल्लीपति होना ।

पश्चिम दिशाका एक बादशाह जब दिल्ली पर अनंगपाल से लड़ने के लिये चढ़ आया तब एक दूतके हाथ शंदेशा भेज कर अटक नदी के किनारे डेरा किया उसके आने का समाचार पाकर अनंगपाल ने अपने मंत्रियों से पूछा कि ग़ज़नी गढ़से गोरी चढ़कर आया है उससे लड़ने को जाने पर यहाँ इस नगर पर कोई दूसरा राजा चढ़ आवेगा तो कौन इस नगर की रक्षा करेगा । मंत्रियों ने कहा कि आपके बंशमें तो कोई समर्थ नहीं आपकी कन्या इन्द्रवती का पुत्र पृथ्वीराज इस योग्य है कि इस नगर की रक्षा भली भाँति कर सकैगा, क्योंकि पृथ्वीराज ने अश्वत्थामाजी से बाण बिद्या सीखी है और बरदान पाया है उसे बुलाकर जबतक आप युद्धसे लौट कर आवें तब तक यहां का राज्य सौंप दीजिये यह सुन राजा अनंगपाल ने अजमेर से पृथ्वीराज को बुलाया समाचार पाकर पृथ्वीराज अपने चचा कान्ह देव चन्दकवि, अपने बीर व अनंगपाल की भेजी हुई सेनाको साथ लकर अपने बड़े ऊँचे आदि भयंकर नामके हाथी पर सवार होकर दिल्ली आये, हाथी पर से उतर के अपने नाना के चरणों में प्रणाम किया अनंगपाल ने हृदय से लगाकर अपने आसन पर बिठा लिया और कहा कि पश्चिम दिशाका एक बादशाह हमसे लड़ने के लिये चढ़ आया है, हम उससे लड़ने को जावेंगे सो जब तक हम, लौट कर नहीं आवैं तब तक आप हमारे राज्य की रक्षा करो, यह सुन पृथ्वीराज ने कहा कि सब को बुलाकर आप समझा दीजिये तब हम आपका राज्य ग्रहण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करेंगे यह सुनकर राजा अनंगपाल ने अपने सब मंत्रियों और कुटुम्बियों को बुलाकर कहा मैं गोरी बादशाहसे लड़ने जाता हूं और अपना राज्य पृथ्वीराज को देता हूं तुम सब लोग इनकी आज्ञा मानना, तब पृथ्वीराज ने कहा महाराज ! यह भी कह दीजिये कि बिना पृथ्वीराज की आज्ञा यहां कोई न आवे और यदि मैं भी आना चाहूं तो बिना आज्ञाके न आने पाऊँ यह सुन राजा अनंगपाल ने सबसे कह दिया कि बिना आज्ञा पृथ्वी राज के कोई यहां आने न पावे यदि मैं भी आना चाहूं तो आज्ञा लेकर आऊँगा, इस प्रकार कह सुनकर अपनी सेना राज्य व कोष आदिक सब पृथ्वीराज को सौंप आप बहुतसी सेना साथ लेके युद्ध करने को चले गये पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल की सेना के सब मनुष्यों को धन रत्न उत्तम वस्त्र और भोजन आदि से सत्कार करके अपने बशमें कर लिया, और अजमेर से अपनी चाची और अपने भाई बन्धुओं को बुला कर दिल्ली में बसा लिया, इस प्रकार पृथ्वीराज दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ हुए । जब अनङ्गपाल शत्रुको जीतकर दिल्ली आये तब पृथ्वीराज के भटों ने शहर में घुसने नहीं दिया, तो अनङ्गपाल ने सोचा कि एक तो मैं बूढ़ा होगया दूसरे कोई पुत्र नहीं, इस से पृथ्वीराजही को दिल्ली के सिंहासन पर रहने देना चाहिये यह समझ कर पाटन को चले गये वह पर्वत में पूर्व लोगों के बनाये हुए किला में बास करने लगे, कुछ दिन उपरान्त पृथ्वी राज की आज्ञा से राजा अनंगपाल दिल्ली गये और कुछ समय सुख पूर्वक रह कर राज्याभिषेक निमित्त सामग्री एकत्र कर अनेक राजाओं को बुलाय बड़े उत्साहसे पृथ्वीराज का राज्याभिषेक किया, तब पृथ्वीराज ने पाँच लाख का पाटन का राज्य नाना को दिया और आये हुए राजाओं को बड़े सत्कार से बिदा किया, पृथ्वीराज के अनेक विवाह हुए, गुजरात के

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

राजा भोला राय के यहाँ इच्छन कुमारी के साथ पृथ्वीराज का पहला विवाह हुआ फिर चंडपुंडीर की कन्या दाहिमी से विवाह हुआ। अनन्तर यादव बंशीय पद्मसेन की कन्या पद्मावती से बिवाह हुआ उर्इ के परिहार माहिलकी बहिन अगमा से पृथ्वी राज का विवाह हुआ। अगमा रानी बड़ी बुद्धिमती थी इसीके गर्भसे द्रोपदी ने बेला नाम से अवतार लिया था। देवगिरि के राजा मान की कन्या शशिब्रता से पृथ्वीराज का विवाह हुआ। राजा जयचन्द राठौर की कन्या संयोगिता से पृथ्वीराज का बिवाह हुआ था इत्यादि इन सब बिवाहों का हाल बहुत बिस्तारयुक्त है।

चौड़ा ब्राह्मण का हाल।

एक इन्द्रदत्त नाम ब्राह्मण बक्सर में रहता था उसके दो पुत्र थे १ सूर्यमणि, २ चामुण्ड, दोनों देबी जीके भक्त थे पाँच वर्ष भक्ति के साथ पूजा करने पर देबी जीने प्रसन्न होकर आकाशबाणी द्वारा कहा कि ब्राह्मणो! बर माँगो तब सूर्यमणि ने बर माँगा कि हमको लक्ष्मी, राज, और यश से पूर्ण कीजिये देबी ने बरदान देके चामुण्ड से कहा बर माँगो उसने कहा कुछ दिन सेवा करके माँगूँगा। सूर्यमणि को ब्याघ्रबंशीय रीवाँके महाराज ने आदर से बुलवाकर बहुत धन दिया और अपना पुरोहित नियत करके अपने राज्य में उत्तम अधिकार दिया। दो वर्ष उपरान्त देवी ने चामुण्ड से कहा बर माँगो तब चामुण्ड ने कहा देवी! मुझको रणमें बिजय, मंडलाधीशता, युद्ध में कुशलता और अमरत्व दीजिये इस पर देवीजी ने कहा कि अमरत्व दुर्लभ है बाकी सब बरदान तुम को दिये, चामुण्ड बीर अपने घर आया, एक दिन चामुण्ड दिल्ली गये और द्वारपाल के हाथ पृथ्वीराज के पास एक पत्र भेजा उस पत्र को पढ़कर पृथ्वीराज ने चामुण्ड को बुला कर प्रणाम किया चामुण्ड ने

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आशीर्बाद दिया पृथ्वीराज ने अपने पास बिठा लिया।

श्लोक—ततो नृपस्तकुशलं बिदित्वाकृतदारं तंनिजदुर्गमध्ये।
ददौनिवासं कतिचिद्दि नानि बिचारयं स्तद्गुणकर्मशीलम्॥ ९॥
निरीक्ष्यावद्यारणभुजयत्वं तथा समालक्ष्य वरं महेश्याः
सम्मंत्र्य सर्वैःप्रददौ बिलोक्य राजन्तस्मैनिजभूमिभारम्॥ १०॥
अथप्रजानां मधिपस्स्व सैन्य माहूयसर्व वचसा समूचे॥
मया द्विजोऽय भवदाधिपत्ये प्रकल्पितौयः सचमाननीयः॥ ११॥

तदन्तर महाराज पृथ्वीराजजी ने चामुण्ड का कुशल पूछकर और बृत्तान्त जानकर आदर करके अपने गढ़में उसके गुण कर्म स्वभाव जानने के लिये कुछ दिन वास करने की आज्ञा दी॥ ९॥ फिर चामुण्ड ब्राह्मण की बिद्या, रणभूमि में बिजय तथा देवीजी के बरदान को भलीभाँति समझकर सबकी सम्मति से पृथ्वीराज जीने अपने राज का भार चामुण्ड (चौड़िया राय) को सौंप दिया॥ १०॥ अनन्तर अपनी सेना के मुख्य लोगों को बुलाकर उनसे महाराज ने यह कहा कि हमने इस ब्राह्मण को तुम लोगों का मालिक किया जो यह आज्ञा देवे उस आज्ञा को तुम सब लोग मानना॥ ११॥

पृथ्वीराज का अबिचार और घमंड।

एक रत्नमंजरी वेश्या दिल्ली में रहती थी उसके दो पुत्र बड़े बली थे। उस वेश्या को चौमुण्ड ब्राह्मण के कहने से पृथ्वीराज ने दिल्ली से निकाल दिया वह वेश्या राजा अनंग पालकी थी उसने कई हजार भट हजारों रत्न और अपने दोनों पुत्रों को साथ लिया और दिल्ली से निकल कर गजनी गढ़को चली गई दूसरे वर्ष गज़नी गढ़का बादशाह गोरी अपने भाइयों सहित चतुरङ्गिनी सेना लेकर पृथ्वीराज से युद्ध करने आया उसकी मदद के लिये अरब का बादशाह एक लाख सेना लेकर आया दिल्ली को चारों ओर से घेर लिये युद्ध होने पर पृथ्वीराज की

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जीत हुई इस तरह गजनी गढ़का बादशाह पाँच बार आया पाँचों बार उसको पकड़ २ कर बहुतसा धन दंड लेकर पृथ्वीराज ने छोड़ दिया। एक बार अरब का मीर एक लाख अस्सी हजार सेना लेके अजमेर पर चढ़ आया और चाहा कि छल कपट से जैसे बने वैसे अजमेर का राज्य ले लिया जाय। पहले तो वह घोड़ों का सौदागर बना पृथ्वीराजने कैमाष को घोड़े लेनेके लिये भेजा वहाँ कैमाष ने मीर के एक घोड़े को पसन्द किया पहले उसका बेचना नामंजूर किया तब कैमाष ने मुँह माँगा धन देना चाहा तब मीरने कई करोड़ रुपये उस घोड़े के माँगे, कैमाषने पृथ्वीराज से आकर हाल कहा तब पृथ्वीराजने वह घोड़ा खरीदा इसी प्रकार कई तरह से जब जब पृथ्वीराज को मीर और मीर की सेना ने हानि पहुँचाई तब तब युद्ध छिड़ गया अन्त में मीर और मीरकी सेना को पृथ्वीराज ने बिध्वंस कर दिया यह सुन कर मीरके मामा ख्वाजा पीर को बहुत क्रोध हुआ और खुद अजमेर में आकर अपनी करामातों से हिन्दुओं को सताना शुरू किया! पृथ्वीराजने अनेक उपाय किये कि ख्वाजा पीर यहाँ से चले जायँ पर वे न गये, तब पृथ्वीराज ने अपनी एक धायकी लड़की परम सुन्दरी को ख्वाजा साहब का तप भंग करने को भेजा वह जाकर खुद ख्वाजा साहब की मुरीद बन कर उसकी सेवा करने लगी अन्त में पृथ्वीराज ने चन्द बरदायी को भेजा कि तुम जाकर ख्वाजा साहब को खुश करो कविचन्द ने जाकर अपनी चतुराई से ख्वाजा साहब को खुश किया ख्वाजा साहब इस बात पर राजी हुए कि अगर पृथ्वीराज अजमेर को पीरों के लिये छोड़ दे तो हम किसी को नहीं सतावेंगे पृथ्वीराज ने यह बात मान ली, और अपनी सब सेनादि को दिल्ली में भेज कर अजमेर पीरों के लिये छोड़दी तब से अजमेर ख्वाजा पीर के नाम से मशहूर है॥ ख्वाजा पीर के आने के पहले गुजरात

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

का चालुक्य राजा भीमदेव अजमेर पर चढ़ आया था और युद्ध हुआ था उसी युद्ध में लड़कर महाराज सोमेश्वर देव मारे गये थे तभीसे पृथ्वीराज ने प्रण कर लिया था कि भीम देव को हम अवश्य मारेंगे। अनंगपाल की बड़ी पुत्री सुन्दरी कन्नौज के राठौर महाराज अजय पाल को व्याही थी जिसके गर्भ से जय चन्द का जन्म हुआ। राजा अनंगपाल ने पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य सौंपा था सो जयचन्द को अच्छा नहीं लगा था इसीसे जयचन्द पृथ्वीराज के शत्रु बन गये और पृथ्वीराज के शत्रु शहाबुद्दीन से जामिले थे जिससे यह हिंदुस्तान मुसलमानों के हाथ में चला गया और इसकी स्वाधीनता सदा के लिए कूच कर गई। एक माधव भाट जो राजा अनंगपाल के यहाँ सरदार था और धमयिन कायथ ये दोनों गढ़ गजनी में गोरी के सहायक थे, ये दोनों महाराज के कट्टर शत्रु देश के द्रोही थे गोरी को यहाँ की सब खबरें भेजा करते थे यदि ये दोनों देश द्रोही नमकहरामी न करते तो आज हिन्दुस्तान की ऐसी गिरी दशा न होती जिसपर राज्यशासन का भार रहता है उसको अपनी मान मर्यादा और अपने पूर्वजों की कीर्ति का बहुत ध्यान रहता है और वे अपने कुलकी मर्यादा के लिये किसी अड़चन की परवाह नहीं करते, और अपने कर्तव्य पालन में अनेक प्रकार की कठिनाइयों को सहते हैं, 'प्राणजाय पर बचन न जाहीं, यह उनका मुख्य सिद्धान्त रहता है। पृथ्वीराज दिल्ली में थोड़े ही दिन सुख से रहे कि उनके लिये कठिन धर्म पालन का समय आ पहुँचा।

गजनी गढ़ के बादशाह के दरबार में एक सुन्दरी वेश्या चित्ररेखा नाम की थी वह गाने नाचने में बहुत निपुण थी। इस कारण बादशाह उसे बहुत चाहता था लेकिन वह बादशाह

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

के छोटे भाई हुसेनखाँ पर आशिक थी जब यह बात बादशाह ने जान पाई तब दोनों को कत्ल कर देने का हुक्म दिया हुक्म सुनते ही हुसेनखाँ चित्रेरखा को लेकर भागा और हिंदुस्तानमें आकर पृथ्वीराज की शरण में आया, पृथ्वीराज ने विचार किया कि यह काम तो अच्छा नहीं, पर शरणागत की रक्षा करना धर्म है यह समझकर हुसेनखाँ और चित्रेरखा को नागोर में रखदिया, बादशाह ने जब सुना कि हुसेनखाँ को पृथ्वीराज ने पनाह दी, तब अरब खाँ सरदार को दिल्ली भेजकर कहला भेजा कि हुसेनखाँ और चित्रेरखा को हमारे सिपुर्द कर दो नहीं तो सुल्तान का दासत्व स्वीकार करना पड़ेगा दासत्व का नाम सुनते ही पृथ्वीराज ने जवाब दिया कि तुम्हारे बादशाह को ऐसा कहना नहीं चाहिये शरणागत की रक्षा करना हम लोगों का धर्म है तुम्हारे बादशाह में जुर्रतहो तो सामने आकर अपनी ताकत दिखलावें बेफायदा गाल न बजावें। अरबखाँ यह जवाब सुनकर लौट गया, और अपने बादशाह से जाकर हालकहा, वह फौज लेकर वहाँ से चला, लाहौरके सरदार चंडपुंडीरने उसे दिल्ली की ओर आने से रोका, उधर पृथ्वीराज ने खबर पाकर धावा किया सारूड़े के मैदान में सामना हुआ, यह सुनकर पृथ्वीराज की ओर से हुसेनखाँ भी लड़ने के लिये आ गया चितौर के रावल समरसिंह के सेनापतित्व में पृथ्वीराज की ओरसे जेतपरमार चामुण्ड ब्राह्मण और अन्य सरदार लड़ते थे एक दिन रात बराबर युद्ध होता रहा, पृथ्वीराजके तेरह और शहाबुद्दीन के चौसठ सरदार मारेगये, दूसरे दिन सबेरा होतेही सुलतान की ओर से बीस हजार फौज लेकर तातारखाँने धावा किया पृथ्वीराज की ओरसे हुसेनखाँने सामना किया बहुत देर लड़ाई होनेके बाद हुसेनखाँके सब साथी मारे गये तब वह खुद तलवार लेकर तातार खाँ पर झपटा, तातारखाँ की गदा ने उसका काम

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तामाम कर दिया मरते मरते उसने भी तलवार से तातारखाँ का शिर काट डाला, चित्ररेखा हुसेन खाँकी लाशके साथ जीतीही पृथ्वीमें गाड़दी गई युद्ध होता रहा पृथ्वीराज ने अपनी सब सेना लेकर धावा किया था शाहबुद्दीन भी बीरता के साथ लड़ने लगा, अन्तमें सुल्तानकी सेना भागने लगी चामुण्ड वीर ने पीछा कर के शहाबुद्दीन को पकड़ लिया, उसे लेकर पृथ्वीराज दिल्ली आये कुछ दिन कैद रख नौ हजार घोड़े आठ हाथी, बीस ढालें और हीरा मोती आदि दंड लेकर उसे छोड़ दिया। यहाँ पृथ्वी राज के अविचार और घमण्डने यह विचार न किया कि आज हम शक्तिमान हैं कल सक्ति न रही तो ऐसे शत्रु को छोड़ देने से परिणाम क्या होगा। उस समय के राजपूतों की शक्ति ऐश्वर्य्य और देशभक्ति को बिचार कर आश्चर्य होता है कि जिस देशके राजपूत अपने देशकी रक्षाके लिये अपने प्यारे प्राणों को भी तुच्छ समझते थे वह देश कैसे बिदेशियों के अधिकार में चला गया, इसके उत्तर में अपनी अपनी समझ के अनुसार लोगों ने लेख लिखे हैं परन्तु अधिकतर लोगों की अनुमति यही है कि आपस की फूटही राजपूतोंकी अवनति का कारण है। यदि राजपूतों में एकता होती और वे देशकी भलाई के लिये आपस के वैर विरोध को दूर करके बिदेशियों का सामना करते तो उनकी वह दशा न होती जो उनके ऐसा न करने से हुई। राजपूतों ने अपने वंशगौरव के गर्व में आकर आपस में लड़ना आरंभ कर दिया तबही उनकी स्वाधीनता का अन्त हुआ फूटही ने उनका सत्यानाश किया। कविगंग ने ठीक कहा है।

❋ कवित्त ❋

फूटि गये हीरा की बिकानी कनी हाट हाट काहू घाटि मोल काहू बाढ़ि मोलको लयो। टूटि गई लंका फूटि मिल्यो है बिभीषण राम, रावण समेत बंश नाशवान ह्वै गयो॥ कहै कविगंग दुर्योधन से

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

छत्रधारी, तनिक के फूटेते गुमान वाकी नै गयो। फूटेते नारद उठिजात बाजी चौसर की, आपस के फूटे कहो कौन को भलो भयो ॥ १ ॥

पृथ्वीराज ने गर्व में आकर अपने अनेक २ शत्रु बना लिये थे परन्तु पृथ्वीराज का सामना करने के योग्य दोही राजा थे, एक तो गुजरात के चालक्य राज भीमदेव, दूसरे कन्नौज का राठौर राजा जयचन्द यदि भीमदेव, और जयचन्द शत्रुता न करके पृथ्वीराज की सहायता करते तो भारत देश भी आज स्वतंत्र राज्यों में गिना जाता परन्तु ऐसा न करके उन्होंने स्वयं शहाबुद्दीन को भारत में बुलाकर देशकी स्वतन्त्रता उसको अर्पण कर दी। अन्त में भीमदेव पृथ्वीराज के हाथ से मारे गये और जयचन्द शहाबुद्दीन के तीर से मारे गये ॥

पृथ्वीराज की प्रभुता और राजा परिमाल से अनबन।

पृथ्वीराज ने कई स्थानों से बहुत खजाना पाया था और राज पूताना, मालवा, गुजरात के सब राजा पृथ्वीराज के अधीन होगये। केवल कन्नौज के राजा जयचन्द और बुन्देल खंड की राजधानी महोबे के चंदेल बंशी राजा परिमाल ये दोनों पृथ्वीराज के अधीन नहीं थे। शहाबुद्दीन गोरी बार २ हराया जाकर भी पृथ्वीराज को नीचा दिखाने का अवसर देखता रहता था, उसके दूत भेष बदल कर दिल्ली आदि में रहते हुए खबरें भेजा करते थे। जब पृथ्वी राज पद्मावती को लेनेके लिये समुद्र शिखर गये थे। और वहां पद्मावती के साथ विवाह कर थोड़ी सेना लिये दिल्ली आ रहे थे, उस समय शहाबुद्दीन ने आकर मार्ग में ही उन्हें रोक लिया लड़ाई होने लगी, पृथ्वीराज ने उसे कैद कर लिया और आठ हजार घोड़े दंड लेकर छोड़ दिया। पृथ्वीराज दिल्ली पहुँचे, परंतु सेना में कुछ घायल मार्ग भूलकर भटकते हुए महोबा पहुँचे, सन्ध्या का समय था प्रबल वायु के साथ पानी बरसने लगा, जिससे

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

घायल और भी ब्याकुल हो गये समीपही राजा परिमालका एक उपबन था उसमें वे घायल अपनी रक्षाके लिये जाने लगे, बाग के माली ने रोका, एक घायल ने उस मालीका सिर काट डाला माली की स्त्रीने जाकर रानी मल्हनासे कहा, राजाने कुछ लोग भेजे घायलों ने उनको मारडाला यह सुनकर परिमाल को बहुत क्रोध आया और ऊदन को बुलाकर आज्ञा दी कि सब घायलों को बांध करले आओ या मारदो, ऊदनने कहा महाराज घायलों पर हथियार चलाना शूरोंका धर्म नहीं है इन घायलों को मारने से फिर पृथ्वीराज के साथ बैर हो जायगा यह सुन कर माहिल परिहार ने परिमाल से कहा कि ऊदन डरता है इस कारण पृथ्वी राज के घायलों को मारना नहीं चाहता। माहिल की बात सुन कर कान के कच्चे परिमाल ने डपट कर ऊदन से कहा कि जल्दी जाकर घायलों को मारो लाचार होकर ऊदन ने जाकर घायलों को ललकारा, उसमें कनक चौहान सबका अगुआ बनकर लड़ने लगा कुछ देर तक लड़ाई होती रही अन्त में ऊदन ने सबको मार डाला। इस लड़ाई से पृथ्वीराज और परिमाल में बैर हो गया यही लड़ाई चँदेलों के नाश का कारण हुई॥

॥ पृथ्वीराज के अंतिमदिन ॥

महाराज पृथ्वीराजने संयोगिता के प्रेम में आसक्त होकर जब राज सभामें जाना आना छोड़ दिया तब प्रजामें खल बली मच गई। महाराज महलों में ही रहने लगे, प्रजा में उपद्रव बढ़ता देखकर महाराज के पास कुछ लोगों ने प्रजा के दुःखों की पुकार पहुँचाने का निश्चय किया, और कविवर चंदने एक पत्र लिखा उसमें ऐसे शब्द लिखे थे "तुंपर गोरी रत्तियं अरु ता घर गोरी तकियं" अर्थात् तुमतो गोरी स्त्री के साथ रति सुखमें लिप्त हो रहेहो और तुम्हारा घर सुलतान गोरी तक रहा है ऐसा पत्र सब सरदार लेकर संयोगिता के महल में पहुँचे वहाँ

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पहले ही संयोगिताने दासियों का पहरा लगा रक्खा था लोगों ने एक दासी को पत्र देकर पृथ्वीराज के पास पहुँचाने की प्रार्थना की दासी ने वह पृथ्वीराज को न देकर संयोगिताको दे दिया उस पत्र के पढ़ते ही संयोगिता के क्रोध की सीमा न रही पत्र लिखने वालों को चाबुक से मारकर भगादेने की आज्ञा दासियों को दी। दासियों ने लोगों पर चाबुक झाड़े, स्त्रियों पर हाथ डालना अनुचित समझ कर लोग भागने लगे, यह कौतुक संयोगिता अपने झरोखे में से देख रही थी उसके पास ही पृथ्वीराज खड़े हुये हँस रहे थे, कबिचन्द और हाहुली रायने पृथ्वीराज को हँसते देख लिया चंद को तो शोक के साथ दया आई परन्तु हाहुली रायको बड़ा क्रोध आया, चन्द ने उसको बहुत ही समझाया पर उस हमीर ने एक न मानी और अपमान का बदला लेने के लिये शाहबुद्दीन के पास गजनी गढ़ पहुँचा, गोरी तो यही चाहता था कि किसी तरह पृथ्वीराज को हरा कर हिन्दुस्तान को अपने अधिकार में करूँ। बड़ी खुशी के साथ अपनी फौज सब सजाकर दिल्ली पर चढ़ आया। इधर पृथ्वीराज के प्रायः शूर बीर सामंत सेनापति लड़ाइयों में काम आ चुके थे। संयम राम आदि महोबे की लड़ाई में और कन्ह लंगरीराय, चंडपुंडीर, गोविन्दराय, जामयादव आततई आदि वीर कन्नौज की लड़ाई में मारे गये थे चंद के पुत्र धीर पुंडीर को मुसलमानों ने छल से मार डाला था। पृथ्वीराज को यह सुधि न थी कि दिल्ली में एक भी सरदार नहीं रहा। शाहबुद्दीन की चढ़ाई का हाल जब चित्तौर पहुँचा तब रावल समरसिंह ने अपने राज्य का भार अपने पुत्र रतनसिंह पर छोड़ा और आप एक लाख सेना लेकर दिल्ली आये आठ दिन तक पृथ्वीराज से भेंट न हुई। तब एक तोते द्वारा पृथ्वीराज तक चिट्ठी पहुँचाई चिट्ठी पढ़ते ही पृथ्वीराज को होश आया,

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुरंत आकर अपने बहनोई समरसिंह से मिले जो सरदार बचे थे वे पृथ्वीराज को देखकर शाहबुद्दीन से लड़ने को तैयारी करने लगे अबकी बार जीत होने की आशा नहीं थी, पृथ्वीराज ने अपने एक मात्र पुत्र रायनेमि को युद्ध में सम्मिलित नहीं होने दिया उसको जैतपरमार के पास भेज दिया। फ़िर संयोगिता से मिलकर युद्ध के लिये आना चाहा उसने बड़ी कठिनता से आने दिया कागर नदी के किनारे ठट्ठा नामक स्थान के निकट मैदान में दोनों फौजों का सामना हुआ राजपूतों ने अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिये प्राणोंपर खेलकर युद्ध किया परन्तु उनकी स्वाधीनता के दिन पूरे हो चुके थे इसीसे उनकी हार हुई। उस समय जयचंद को छोड़ अनेक राजाओं ने सहायता दी थी जो जयचंद साथ देते तो कदाचित यह हिंदुस्तान मुसलमानों के हाथ में न जाता परंतु होनहार बलवान् है स्वदेश और स्वजातिके निमित्त रणक्षेत्रमें समरसिंह आदि नरेश लड़कर मरगये पृथ्वीराजने अकेलेही बहुत युद्ध किया पर अंतमें पकड़ लिये गये, उसी समय बंदी पृथ्वीराज अंधे कर दिये गये, पृथ्वीराज के गले में एक भारी जंजीर डालकर सुलतान ग़ज़नी ले गया और वहां एकान्तमें कैद कर दिया। कविवर चन्द अनेक कष्ट सहते हुए ग़ज़नी पहुँचे और सुलतान की आज्ञासे पृथ्वीराज से मिलने गये चन्दका आना जानकर पृथ्वीराज उठ खड़े हुए तब सुलतान ने एक वजनदार जंजीर और डलवादी, यह देख चंदको शोक हुआ चंदने सुलतान से कहा जहाँ पनाह! मैंने सोचा था कि मेरे आने से पृथ्वीराज को दुःख कम होगा सो और बढ़ गया यह अंधा अब आपको क्या तकलीफ़ पहुँचा सकता है यदि आप इसको स्वतंत्र रहने दें तो समय समय पर आपको यह बड़ी बड़ी करामातें दिखावेगा यह अंधा होने पर भी शब्द बेधी बाण मार सकता है यह सुनकर सुलतान

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

के जीमें आया कि इसका शब्द बेधी बाण देखना चाहिये परीक्षा के लिये एक दिन नियत हुआ महल में सब सर्दार इकट्ठे हुए ऊपर सिंहासन पर सुलतान अपने सर्दार सहित बैठ गया नीचे चंद और पृथ्वीराज खड़े हुए थे, पृथ्वीराज के हाथ में तीर कमान दिया गया एक ओर लोहेके तवे लटकाये गये सब लोग पृथ्वीराज की ओर देखरहे थे, कविवर चंदने कहा— छप्पै ।

इहीबान चहुआन रामरावन उथप्यो । इहीबान चहुआन कर्ण शिर अर्जुन कप्यो ॥ इहीबान चहुआन शंभु त्रिपुरासुर संध्यो । यही बान चहुआन भ्रमर लक्ष्मण कर बंध्यो । सोबान आज तो कर चढयो चंद बिरद सच्यो चवे । चहुआन रान संवर धनी मत चूकै मोटे तबे ।

दो०—चार बाँस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमान ।
एते पर सुलतान है मत चूकै चहुआन ॥

चंद ने तीर चलाने के लिये सुलतान से आज्ञा माँगी सुलतान ने चंद के भेद को न समझ कर कहदिया मार, मार शब्द सुनतेही पृथ्वीराज ने बाण मारा ।

श्लोक-बाणस्य स्पर्श मात्रेण तर्द्येव यवनाधिपः ॥
ममार विवृता वेष्ट स्तस्मिन् सिंहसने वरे ॥ १२ ॥
ततोऽसिमादाय शितं कवींद्रः कवीन्द्र पुत्रः कविता सुदक्षः ॥
क्षिप्त्वा महीपस्य शिरः पृथिव्यां निपातयामास च तेन चन्द्रः १३
ततः कवीन्द्रेण महद्भभूव युद्ध भटानां पवनाधिपस्य ॥
यत्र प्रवृत्ता रूधिरौघ जाता नद्योमहत्कातर भीतिदात्र्यः ॥ १४ ॥
युद्धे तत्र महीपाल माराधश्चन्द्र संज्ञकः ॥
मरणं संजगामाथ तत्रेव गजनी पुरि ॥ १५ ॥

उस बाणके लगने से वह बादशाह सुलतान चेष्टारहित हो उसी सिंहासन पर मरके गिरपड़ा ॥ १२ ॥ तदन्तर कवीन्द्रपुत्र कवितामें दक्ष कबीन्द्र चंदने राजा पृथ्वीराजका शिर तलवार से

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

काटकर पृथ्वीमें डाल दिया ॥ १३ ॥ अनन्तर बादशाह के योद्धाओंसे चंदभाट का बड़ा युद्ध हुवा जहाँ रूधिरकी नदी सी कायरों को महा भय देने वाली बहने लगी ॥ १४ ॥ इस प्रकार युद्धकरता हुआ वह चंद भाट वहाँ ग़ज़नी गढ़के तख्त के पास लड़ कर मर गया ॥ १५ इस प्रकार मरने के बारे में यवन इतिहास लेखकों ने कुछ औरही प्रकार से लिखा है, वे शब्दबेधी बाणद्वारा बादशाह का मरना नहीं मानते उसी यवन इतिहास के अनुसार बहुतेरे हिंदूभी मानते हैं उनको कविचंद रासौ पर कुछभी बिश्वास नहीं है, चंदभाट कृत पृथ्वीराज रासौ जो आज बीस खंडों में लिखा हुआ है उसकी कोई बात उनको प्रमाणिक नहीं जान पड़ती। कलम उठाकर लिख दिया कि यह भी ग़लत वह भी ग़लत। लिखनातो वही ठीक है जो पक्षपात रहित लिखा जाय हमने जो कुछ इसमें लिखा है वह बड़ी पुस्तकों से प्रमाण पाकर लिखा है।

महोबे के उड़न घोड़ों का हाल ॥

महोबे में राजा परिमाल की मल्हना रानी जो अत्यन्त सुन्दरी थी। श्लोक।

यां हर्म्य पुष्टे किल क्रडियन्ती बिलोक्यतां भूप कदाचिदिन्द्रः।
देवोऽपिदिव्याम्बरवासिनीभिस्सुवितः कामवशंः प्रणीत ॥ १६ ॥

जिस मल्हना रानी को राज मन्दिर पर सखियों के साथ बिहार करते देखकर एक समय देवराज इन्द्र मोहित होगया जो इन्द्र स्वर्ग बासिनी देवाँगनाओं करके नित्य सेवित था सो मोहित हो गया तो औरों का क्या कहना ॥ १६ ॥

मल्हना पर मोहित होनेसे इन्द्रने राजा परिमाल से मित्रता की राजा परिमालने इन्द्र का बड़ाही सत्कार किया और इन्द्र के श्यामकर्ण घोड़े को अपनी घोड़शाल में बधवाँ दिया, वही परिमाल की चितरंगी आदि घोड़ियों का श्याम कर्ण से संयोग हुआ, सात दिनतक महोबेमें रहे परिमाल को इंद्र

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खाँड़ा बिजुलिया, बिजली समान पीली रेशमी चादर, वज्र कमान, पपीहा घोड़ा, और पचशावद हाथी जो ऐरावत के समानथा पचशावद हाथीके जंजीर घुमाने से रण में के क्षत्रिय गण पृथ्वीपर गिर पड़ते थे, इतनी बस्तुयें इंद्रने राजापरिमाल को दी, इसी प्रकार अनेक बार इंद्र महोबे आये परन्तु मल्हना रानीसे संयोग न हुआ एक दिन राजा इन्द्र परिमाल के वेषमें मल्हनाके पास रातमें गये मल्हनाने कहा हेनाथ ! आज एकादशी के दिन रात्रिमें कैसे आये, इंद्रने कहा कि मैं देवराज इंद्र तुम्हारा धर्मस्थित रहनेके कारण तुम्हारे पतिके वेषमें अपने समान पुत्र देने की इच्छा से तुम्हारे पास आया हूँ, यह सुनकर मल्हना विनय पूर्वक उत्तर दिया कि हे देवेन्द्र ! यदि परमात्मा की कृपा होगी तो आपही के समान पुत्र मेरे होगा परंतु मैं पतिव्रता हूं स्वप्न में भी पर पुरुष से रमण करना नहीं चाहती आपके यहाँ मेरे समान अनेक दासियाँ हैं इस कारण आप देवराज होकर ऐसी आशा न कीजिये अपने सुर पुर में जाकर विहार कीजिये यह सुन इन्द्र लज्जित होकर चले गये फिर कभी महोबे नहीं आये इन्द्र के पाँच वर्ष के आगमन से श्याम कर्ण घोड़ा और चितरंगी घोड़ीके संयोग से पाँच राशि के बछेरे हुए, उनमें करिलिया हर नागर, मनुरथा, बेंदुला ये चार बछेरे, और कबुतरी बछेरी हुई और सामान्य राशिकी एक घोड़ी गर्भिणी हुई थी उस से हिरौंजिनि नाम बछेरी हुई पपीहा घोड़ा को इन्द्रने पहले ही दिया था, इस प्रकार ये सात घोड़ा घोड़ी पवन के वेगके समान गति वाले थे इन सबको रानी मल्हना गुप्तरीतिसे रखनेके लिये आज्ञा दी थी, बेंदुला घोड़ा का दूसरा नाम दलगंजन था। करिलिया घोड़ा का दूसरा नाम हंसामणि था, यह पवनवेगी घोंड़ोका वृत्तान्त लिखा आगे आल्हा आदि बीरोंका संक्षिप्त हाल लिखते हैं

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

आल्हा का हाल ।

राजा दस्सराज की रानी देवल कुँवरिके गर्भ से ज्येष्ठ शुदी दसमी (दशहरा) के दिन मध्यान्ह समय पुत्र उत्पन्न हुआ, राजा परिमाल और रानी मल्हना ने बड़ा उत्सव किया और अनेक ज्योतिषियों को बुलाकर बालक के लक्षण पूछे तब ज्योतिषियों ने कहाकि यह बालक सिंह लग्न में उत्पन्न हुआ है यह सब राजाओं पर सिंहके समान गरजैगा इसका नाम, आल्हा, जगत में प्रसिद्ध होगा इसके नाम के साथ सैकड़ों वीर पुरुषोंका नाम संसार में प्रसिद्ध होगा । यह सुन राजा रानी ने प्रसन्न होकर ज्योतिषियों को अनेक रत्न देकर बिदा किया, आल्हा की बिजय सब लड़ाइयों में हुई अन्तमें बेलाके सती होने के समय जो लड़ाई पृथ्वीराज से हुई थी उसमें जब आल्हा की ओर के सब शूर सरदार मारे गये तब आल्हा ने बहुत कोप करके भगवती के दिये हुए खड्ग को म्यान से निकाला उसी समयः--

श्लोक--गोरक्षस्तपसां श्रेष्टस्समागत्य रणांगणे ।
मैवं चोक्त्वा करं नीत्वा देशराजात्मजस्यह ॥
बहु प्रकार मादेश्य देहल्यां प्रेठयतनृपम् ॥
प्रययौ तपसेऽरायं तने साकं यतीश्वर ॥

श्रेष्ठ तपस्वी गुरुगोरखनाथ जी वहाँ आगये और आकर रण भूमिमें आल्हा का हाथ पकड़ लिया और बोले हे देशराज के पुत्र ! ऐसा मतकरो इस खड्गको म्यान में करो इस खड्गके देखने से सब मनुष्य नाश हो जायँगे इस कारण खड्ग को वारण करो ॥ १ ॥ फिर आल्हा को साथ लेकर गोरखनाथ जी पृथ्वीराज के पास गये और बहुत प्रकार से समझा बुझा कर दिल्ली को लौटा दिया और आल्हा को अपने साथ लेकर तपस्या करने के निमित्त गुरु गोरखनाथ जी बनको चले गये ॥ १८ ॥

आल्हा ने पन्द्रह वर्ष तक देवीजीका पूजन कियाथा एकदिन

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

देवीने कहा हे पुत्र ! बरमांगो तब आल्हाने कहा माताकी जो इच्छा हो सो बर दीजिये तब देवीजी ने कहाकि हमने तुमको अमर किया तुम्हारा नाम संसार में सूर्यके समान प्रसिद्ध होगा और तुम्हारी सर्वत्र विजय होगी यह सुन आल्हा बहुत प्रसन्न हुए घर आकर अपनी माता से सब हाल कहा ॥ मलिखान का हाल ॥

राजा दस्सराज के छोटे भाई बच्छराज की रानी तिलका अथवा ब्रह्मा के गर्भ से मलिखान नाम पुत्र हुआ भाद्रकृष्ण पक्ष में सूर्योदय समय सिंहलग्न में जन्म हुआ राजा पारिमाल रानी मल्हना ने बहुत उत्सव किया और ज्योतिषियों को बुलाकर लक्षण पूछेतो ज्योतिषियों ने कहाकि यह बालक बड़ा बलवान होगा इसके पांवमें पद्महै जब तक वह पद्म नहीं फटेगा तबतक इसका बाल बांका न होगा इसका नाम भी आल्हा के समान संसार में प्रसिद्ध होगा यह सुन राजा रानी ने प्रसन्न हो बहुत द्रव्य देकर ज्योतिषियों को बिदा किया मलिखान को छोटी ही अवस्था से तलवार चलाने का बड़ा शौक था इस कारण मलिखान का तलवार प्रसिद्ध था मलिखान के पिता बच्छराजका सिरसागढ़ पृथ्वी राज ने अपने अधिकार में करके अपने पुत्र पारथ को उसमें रख दिया था मलिखान जब अपने बापका बदला माड़ोगढ़ से लेकर महोबे आये और एक दिन शिकार खेलने को सिरसागढ़ की ओर गये वहाँ बनमें पारथ भी शिकार खेलता था उसका शिकार मलिखानने मार गिराया उसपर दोनों में बादाविवाद हुआ उस विवाद से मलिखान को मालूम हुआ कि सिरसागढ़ हमारे बापका था पृथ्वी राजने दबाकर पारथको इसमें रख दिया है तब मलिखान ने पारथ से कहादिया कि हम अपने बापका सिरसा तुमसे छीनलेंगे होशियार रहना यह कह महोबे में आकर खबर की और चढ़ाई करके घोर संग्राम कर पारथसे सिरसागढ़ छीन लिया मलिखानने भी अनेक वर्षोंतक देवी की आराधना की तब एकदिन देवीने बरदान देना

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi, Varanasi. Digitized by eGangotri

चाहा मालिखानने कहा हेमाता ! अपनी इच्छानुसार बर दीजियेतब देवीने यह बर दिया कि तुमबड़े बली होगे तुम्हारी प्रशंसा सबकरेंगे सर्वत्र तुम्हारी जीत होगी आल्हाके समान तुम्हारा नाम भी संसार में प्रसिद्ध होगा और किसी वीर के हाथ से तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी। मालिखान का खड्ग युद्ध सराहनीय था ॥ जिस समय आल्हा ऊदन कन्नौज में थे उसी समय माहिल परिहार के भड़-काने से पृथ्वीराज ने सिरसा पर चढ़ाई की और दूत भेज कर मालिखान से लड़ने को कहा उसी समय बीर मालिखान लड़ने के लिये अपने गढ़ से बाहर आगया।

श्लो—ये ये मुखे तस्य भटारणौधे समागताश्चोद्यत शस्त्रहस्ताः।
ते ते क्षयं तेन यमस्यनीताः श्रीवत्सराजसुतोत्तमेन ॥ १६ ॥
तथा युगान्ते परितो महाग्निर्यथान्त को वैध्यतकाल दंडः।
तथा महीपस्य महाबलौधं शस्त्राग्नि नादाध मथ प्रचक्रे ॥ २० ॥

रणसमूह में जो जो वीरशस्त्र लेकर सन्मुख आते थे उन २ को क्षणमात्र में श्रीवत्सराज का पुत्र वीर मालिखान अपने खड्गसे मार कर यमपुरको भेजदेता था ॥१६॥ जैसे प्रलय कालमें महाअग्नि अपनी ज्वालासे और महाकाल अपने कालदंड से जगत प्रलय करता है वैसेही बीर मालिखान ने अपने शस्त्र की अग्निसे पृथ्वी राजकी सम्पूर्ण सेनाको भस्मकरदिया ॥२०॥ यहां लोग यह शंका करने लगते हैं कि इतने प्रबल पृथ्वीराज शब्दबेध क्योंकर माली-खान से हारकर दिल्ली को लौटगये होंगे, इसका उत्तर यह है कि मालिखान भी देवीजी के बरदानी थे दूसरे उसकी घोड़ी कबूतरी पव-नके समान बेगवाली थी, तीसरे सहदेवका अवतार मालिखान खड्ग चलाने में बड़ी फुरती करते थे, जब तक पृथ्वीराज अपना अस्त्र चलानेका उद्योग करते तबतक महोबे वाले वीर काम तमाम कर सकते थे, चौथी बात यहकि उससमय धर्मपूर्वक युद्धकरने की प्रथा अधिकथी पृथ्वीराजका सामना यहकोई नहीं करतेथे पृथ्वीराजने भी

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi, Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इन लोगोंके ऊपर शस्त्र चलाने की इच्छाकभी नहीं की॥फिरजब चुगुल माहिलने ब्रह्मामाताके मुखसे मलिखानके पदपद्मके फटने से मृत्यु होने का समाचार जाना तब पृथ्वीराज से जाकर हाल कहा तो दूसरी बार पृथ्वीराज ने सिरसा गढ़ आकर धूरेपर ऊभे खुदवा कर उनमें भाले बरछीसांगें गड़वादी और वहाँ ताहरसे मुकाबलाकरने को कहा, तब धोखेमें आकर वहाँ मलिखान लड़ने को गये, घोड़ी ऊभे में समागई पाँवका पद्म फटगया मलिखान मूर्छित होगये और स्वर्ग लोकको चलेगये। रानी गजमोतिन साथमें सती होगई यद्यपिधोखे से मलिखान मारेगये तथापि विजय मलिखानही की कहना चाहिये मलिखान की तलवार की लड़ाई में एक कवित्त प्रसिद्ध है वहयह है।

क०लाज गई बछराज के साथ तलवारि गई मलिखान अकेले॥
काढ़ि के तेग फिरो दलमें पृथिराज कि फौजन मारि के ठेले।
लोहू के नारे पनारे चलाये मनो रँगेरज कुसुम्म सनेले॥
ठाढ़ी कहै मलिखान की रानि कि आवत कंत बसंत से खेले॥

लाखनि राना का हाल।

श्लोक०—कन्या कूञ्जे नृपश्चैको राजन् राठूरबंशजः।
जयचन्द्रस्सभाख्यातो भूभुजांशिरसोमणिः॥ २१॥
नृपाऽनुजो महावीरो रतिभानुर्बलाग्रणीः।
मत्प्रभावं समालक्ष्योऽस्यो जग्मुः पराभवम्॥ २२॥
तस्यात्मजो बिशालाक्षः पूर्ण चन्द्र समाननः।
नकुल स्यांवतारोऽमूल्लाखनेति परिश्रुतः॥

कन्नौज नगर में राठौर बंशीय क्षत्रिय एक राजा जयचंद राजाओं में शिरोमणि हुए॥ २१॥ कन्नौज नगरके चारो ओर फाटकों पर पाँच २ हजार सेना शस्त्र उठाये खड़ी रहती थी अनेक राजा महाराज जय चंदकी आज्ञामें रहते थे चक्रवर्ती महाराज के समान महामान्य महाराज जय चन्दजी थे॥ उनराजा जयचंद का छोटा भाई रतीभानु था वह महावीर सब बीरोंमें अग्रगन्ता था

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जिसका प्रभाव देख समझ कर शत्रु लोग रणसे भागते थे॥ २२॥ रतीभानु कापुत्र बिशाल नेत्रोंवाला पूर्णचन्द्रमाके समान मुखवाला नकुलका अवतार लाखनिनाम पृथ्वीमें प्रसिद्ध हुआ ॥ ३३ ॥

लाखनि रानाने आल्हाके साथ महोबे जाकर नादिया बेतवै पर लड़ाई में पृथ्वीराज का मोरचा हटा दिया था, लाखनि राना समर में यद्यपि किसी प्रकार कम नहीं थे तथापि, पृथ्वीराजने जिस समय एक बात द्वेषकी कही उसी समय लाखनि ने अपनी छाती खोलकर सामने रोपदी और अपने शस्त्र रख कहा हे बीर चौहान ! तुमभी अपनी अभिलाषा पूरी करलो हम को भी एक दिन मरना है हम मरनेही यहां आये हैं यह सुन पृथ्वीराज ने अपना धन्वा उठाकर अर्धचन्द्राकार बाण लगाके लाखनिकी छाती में मारा श्लो०—शराघात हतो वीरो वारणे भट सन्तमः यथातथै बसंत स्थतौवृतोऽपिवीरपुँगव ॥ २४ ॥

बाण लगने से लाखनि ने प्राणतो छोड़ दिये परन्तु जिस प्रकार हथिनी पर बैठे थे उसी प्रकार बैठे रह गये किसी ओरको शिर न हिला ॥ २४ ॥ जब लाखनिकी भुरुही हाथिनी ने टक्कर मार कर। पृथ्वीराज के आदि भयंकर हाथी को सामने से हटा दिया और पृथ्वीराज ने पीठ फेरी तब लाखनि राना मूर्छित होकर गिर गये लाखनि राना के युद्ध की प्रशंसा स्मरण करने योग्य है।

सवैया—लाखनि भूपनमें एक सुन्दर रूपछटा लखि काम लजावै।
लाखनकी गिनती दलमें अरु लाखन शूरन में चलि जावै॥
लाखन बीर हने क्षणमें लखि ताहि भगै रिपु प्राण बचावै।
ऐसो महाबलवान सोलाखनि लाखनमें तलवार चलावै॥१॥

❋ ढेबा का हाल ❋

महोबे के राजपुरोहित पंडित चिन्तामणि का पुत्र बड़ाही सुन्दर उत्पन्न हुआ उसका नाम देवकर्ण रक्खा गया देवकर्ण बड़ा ही बुद्धिमान पंडित हुआ राजा परिमाल और रानी मल्हना

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दोनों देवकर्ण को बहुत प्यार करते थे प्यार से देवा नाम रख लिया था देवा बड़ा सगुनियाँ था, ऊदनकी देवासे बड़ी मित्रता थी पृथ्वीराज के सौतेले भाई संमय राय और देवकर्ण से बड़ा युद्ध हुआ था, देवकर्ण ने दो बार संयमराय का शिर गदासे फाड़ दिया परंतु चंदकविने दोनों बार अपने बाण से। शिर के फांकों को जोड़ दिया था संयमराय युद्ध करते २ मूर्छित होगये देवा बड़ा शुभचिंतक ब्राह्मण था मल्हनारानी उसे अपने पुत्रके समान मानती थी इसीसे पाँचराशि के घोड़ा में मनुरथा घोड़ा देवा को दिया था ॥ * धांधू का हाल *

राजा दस्सराज को रानी दिवला के गर्भसे गंडांत मूलमें बालक उत्पन्न हुआ तब राजा परिमालने ज्योतिषियों को बुला कर पूछाकि इस बालक के लक्षण कहो ! ज्योतिषियों ने कहा कि यह बालक अपने कुलसे युद्ध करेगा इसका जन्म अभुक्त मूलमें हुआ है, इसका पिता इसको देखेगा तो मृत्यु बश होजायगा शेष सब लक्षण इस बालकके अच्छे हैं। यह बालक बड़ा प्रतापी होगा, हजारों मनुष्यों का सरदार होगा, यह कह उसका नाम चंडपुँडीर रक्खा गया, राजाने वह बालक दस्सराज की बाँदी को सौंप कर कहाकि एकांतमें इस बालक को लेजाकर इसकी रक्षा करो और बाँदीको एक स्थान निवास के लिये बताकर बालक के रक्षाका प्रबंधकर दिया और ज्योतिषियोंको धन देकर बिदा किया फिर दस्सराज को बुलाकर कहा कि जो बालक आज उत्पन्नहुआ है उसको तुम नहीं देखना। जब वह बालक आठ महीने का हुआ तब कार्तिककी पर्वपर गंगास्नान निमित्त जानेके लिये बांदीने हठ किया। तब परिमालने कुछ सैनिक लोगोंको उसके साथकरके गंगास्नान करनेको बिठूर भेज दिया। जहाँ बाँदी ठहरी थी वहीं महाराज पृथ्वीराजभी अपने चाचा कान्हदेव समेत ठहरे हुए थे, कार्तिककी पर्वके समय गंगास्नान करके बाँदी उस बालकका हाथ एक पंडितको दिखाने लगी। वहां स्नान निमित्त

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पृथ्वीराज और कान्हकुमार भी सामनेही खड़े थे दोनोंने उस बालक को अति स्वरूपवान्, राज-लक्षणोंसे युक्त, कांतिमान् और चंचलदृष्टिवाला देखा तो एक रक्षक से पूछा कि यह किस राजाका बालक है ? रक्षकने कहा महाराज ! यह राजा दस्सराज का पुत्र है अभुक्तमूलमें उत्पन्न होनेके कारण इसको राजा परिमाल ने इस बांदीको सौंपकर इसकी रक्षाका प्रबंध कर दिया है। यह सुनकर और पंडित के मुखसे उस बालक के लक्षण सुनकर पृथ्वीराजने एक जादूगरको बुलाकर कहाकि तुम आज रातको इस बालकको चुराकर हमारे पास लाओ तो हम तुमको बहुत इनामदें, उसने मंजूर किया और रातको उसने अपनी विद्यासे सबको अचेत कर बालकको चुरालिया और लाकर पृथ्वीराज को दिया। पृथ्वीराजने उसे बहुत धनदेकर प्रसन्न करदिया, कान्ह कुमारने उस बालक को देखकर पृथ्वीराजसे कहाकि इस बालक को हम राशि बिठावेंगे क्योंकि हमारे कोई संतान नहीं है, तब पृथ्वीराजने वह बालक कान्हकुमारको देदिया और दिल्लीमें पहुँचकर बड़ा उत्सव किया। पंडितोंने नष्ट जन्मपत्री बना कर उसका नाम चंडपुंडीर रक्खा, बाल्यावस्थामें बहुत मोटा ताजा होनेके कारण कान्हदेव उस बालकको धाँधू कहकर पुकारने लगे ! योग्यावस्था होने पर पृथ्वीराज ने धांधूको सब प्रकार से बलवान जाना तब अस्सी हजार सेनाका अधिपति बनाया। जब धाँधूको जादूगर चुरा लेगया और जादूउतर गया तब बांदी ने बालकको अपने पास न देखकर बिलापकिया दूसरे दिन बालक ढूँढा गया परन्तु कहीं पता न लगा। जब मेलाभरमें बालक न मिला तब बाँदीने महोबे में आकर हालकहा यह सुन सबने बड़ा सोच किया। कुछदिन बाद समाचार मिलाकि गंगा बिठूर घाटसे एकबालकको लाकर कान्हदेवने बड़ा उत्सव किया और गोदलिया, यह सुनकर राजा परिमाल आदि सबने सन्तोष

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Vedanidhi, Varanasi. Digitized by eGangotri

किया और दस्सराज आदिको समझादिया कि बालक बहुत बड़े अधिकार वाला होगा कुछ चिंता नहीं ॥ ब्रह्मानंद का हाल ॥

राजा परिमाल की रानी मल्हना के गर्भ से श्रीकृष्ण चन्द्रजी की इच्छा से अर्जुन ने आकर जन्म लिया परशुराम जयंती के दिन जन्म होने से महाराज परिमाल ने बहुत प्रसन्न होकर ज्योतिषियों को बुलाकर बालक के लक्षण पूछे । ज्योतिषियोंने विचार कर कहाकि यह बालक का मेषके सूर्य बृषके चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र में जन्म है इसीदिन परशुरामजी हुए थेइस कारण यह परशुरामजी के समान तेजवान बलवान और भाग्यवान होगा, इस बालक के सन्मुख रणमें कोई नहीं जीत सकेगा, यह सुन परिमाल बहुत प्रसन्न हुये, फिर परिमाल ने पूछा कोई ग्रह अरिष्ट तो नहीं है, पंडितों ने उत्तर दिया कि मंलगके समय अरिष्ट कहने की आवश्यकता नहीं है, इस पर परिमाल ने हठ किया तब पंडितों ने कहा कि इस बालक का स्त्री भाव अच्छा नहीं, स्त्री ही के कारण से इसकी मृत्यु होगी, यह सुन परिमाल उदास हुए फिर संतोष कर ज्योतिषियों को धन रत्न देके प्रसन्न किया, नामकरण में उसका नाम पंडितों ने ब्रह्मानंद रक्खा, बाल जन्मोत्सव महोबे भरमें मनाया गया, परन्तु राजाने ब्रह्मानन्द के विवाह करनेकी इच्छा कभी प्रगट न की, बीर मलिखान के बहुत कुछ हठसे ब्रह्मानन्द का विवाह हुवा था, जब पृथ्वीराज की सेनाके वीरोंसे ब्रह्मानन्द का युद्ध हुआ था और ब्रह्मानन्द ने सबको व्यतीत करदिया था तब चन्दकविने पृथ्वीराज से कहाकि श्लो--नजेतव्यः कदापीह ब्रह्मा ब्राह्मण वल्लभः । तदागजं समारुह्य पृथ्वीराजश्चतुर्भुजः ॥ २५ ॥ ब्राह्मणस्सन्मुखा भूत्वामह द्युद्धं कृतंपुनः ॥ कोपेन बाणांसंगृह्य ब्रह्मणो मरणेच्छया ॥२६॥ ब्रह्मबाणो न व्यथितो राजा मूर्च्छा मवापह ॥ हा हा कारे तदा जाते युद्ध तस्मिन्महोत्सवे ॥ २७ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

यह ब्राह्मणों का प्यारा ब्रह्मा कभी जीता नहीं जा सकता तब हाथीपर चढ़ कर पृथ्वीराज चौहान ॥ २ ॥ ब्रह्मानन्द के सामने हुये और फिर बहुत युद्ध किया जब देखा कि ब्रह्मा से जीत नहीं हो सकती तब क्रोध करके धन्वा हाथ में अर्ध चंद्राकार बाण चढ़ाकर ब्रह्मानन्द को मारने की इच्छा से बाण छोड़नाही चाहते थे ॥ २६ ॥ कि ब्रह्मानन्द ने पहले ही से बाण मारकर राजाको मूर्च्छित कर दिया उस समय रण में बड़ा हाहाकार मचगया ॥ ७२ ॥ ब्रह्मानन्द की वीरता का वर्णन नहीं हो सकता ब्रह्मानन्द की मृत्यु भी धोखे से हुई थी जिसका वर्णन आल्हखण्ड में है ।

ऊदन का हाल—

राजा दस्सराज की रानी देवकुँवरि के गर्भ से भीम सेनावतार ऊदन का जन्म हुआ ऊदन के जन्म होने पर राजा परिमाल रानी मल्हना ने बहुत आनंद माना परंतु दिवला ने अपने पति के शोक में उस पुत्रको लेकेबांदी को देदिया और कहाकि इसको लेजाकर बनमें डालदे विधवा होनेपर यह पुत्र मेरे हुआ इस कारण मैं इस पुत्रको पालन करना नहीं चाहती यह सुन कर बांदी उस पुत्रको लेकर महोबे गई और रानी मल्हना से हाल कह कर पुत्रको आगे रखदिया रानी मल्हनाने उस पुत्रको कांतिमान तेजवान और स्वरूपवान देखकर उठा लिया और बड़े चावसे पालन करने लगी । एक सिंहनी नामकी भैंसथी उसका दूध पिलाकर पालन किया । ब्रह्मानन्द और ऊदन एकही साथ पालन किए गए । ऊदन ने भी देवीकी आराधना करके प्रसन्न किया था और देवी से बरदान पाया था ।

श्लो०—ऊदन स्यकृतंकर्म कएवं मानवेषुच ।
रणेकुर्या द्वितोयेायः पूरूरसामन्त घातिनम् ॥ ८ ॥

ऊदन के किये कामों को ऐसा कौन मनुष्य है जो रणमें कर सकै ऊदन रणमें शूर सामन्तों को क्षणमात्र में मारदेता था दूसरा ऐसा कौन है जो ऊदन के समान ऐसा पुरुषार्थ दिखा सकै ॥ २८ ॥

ऊदन का बल पराक्रम सर्वत्र प्रसिद्ध है लाखनि राना से ऊदन की बड़ी मित्रता थी जब लाखनि राना का मरना ऊदन ने सुना उसी समय से अपना मरना ठानकर युद्ध में वह कौतुक दिखलाया कि देखने वाले दंगरह गये ऊदन का मरना देख कर आल्हा का चित्त विरक्त हो गया था, इसी से गुरु गोरखनाथ जी के उपदेशानुसार आल्हा बनको चले गये ।

जो जो हाल इस भूमिका में नहीं लिखा गया वह आल्हखंड में लिखा है ।

॥ इति भूमिका समाप्त ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

* श्रीः *

अथ संयोगिनी स्वयम्बर की लड़ाई ।

मंगलाचरण–दोहा ।

श्रीगणेश पद ध्यानधरि, भोलानाथ मनाय ॥
आल्हखंड बर्णन करौं, जगदम्बा मन लाय ॥१॥
सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ॥
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥ २ ॥

॥ छन्द–त्रिभंगी ॥

जै जै शिवनन्दन सुर उर चन्दन शत्रु निकन्दन सिद्धिसदन ॥
जै विघ्न निवारन मूषक बाहन सब सुखकारन नाग बदन ॥
जै असुर बिदारक सुर दुखहारक गोद्विज पालक लम्बोदर ॥
जै रूप उजागर सब गुणआगर विद्यासागर शशिशेखर ॥
जै गिरिजा प्यारे शंभु दुलारे जग रखवारे गणराजा ॥
जै दीनदयाला जय शशिभाला करहु कृपाला सब काजा ॥

अथ संयोगिनी का स्वयम्बर ।

(इसीको पद्मिनी हरण व कन्नौजखंड भी कहते हैं)

सुमिरिनी सवैया ।

श्रीरघुनाथ सियाबरको शिर नाय कविन्द्र को शिरनावौं ॥
पूत प्रभंजनको हनुमन्त प्रभूत बली सब भाँति मनावौं ॥
ध्यावौं सदा गुरुके पदपंकज शंभु पदाम्बुज में लव लावौं ॥
क्षत्रिन भूषन शत्रुनिषूदन भारत शूरन के गुण गावौं ॥ ४ ॥

छन्द–आल्हा ।

सुमिरन करिके श्रीगणपतिको * जगदम्बा के चरण मनाय ॥
आदिभवानीको सुमिरन करि * सुमिरौं बहुरि कालिका माय ॥
आदि शक्ति दुर्गा महरानी * छिनमें हरो भूमिके भार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

महिषासुर को मारि गिरायो * चंड मुंडको कियो सँहार ॥
रक्तबीज दानवको मारो * शुंभनिशुंभहि दियो गिराय ॥
जहँ जहँ भीर परी भक्तनपर * तहँ माता तुम कीन सहाय ॥
फूलमती देवीको सुमिरौं * सन्दोहिनिको लैके नाम ॥
सुमिरन करिके गुवर्धनी को * जहँपर अजैपाल को धाम ॥
हाथ जोरि के सब देवन के * बेनि चक्कवै के गुणगाय ॥
बीर पँवारो मैं गावत हौं * जिह्वा बैठु सारदा माय ॥
गावन वालेको दीजै स्वर * औ बजवैये दीजे ताल ॥
नाचनवाले को नैना देउ * मर्द को देउ खड्ग अरु ढाल ॥
गावनवाले को स्वर बाँधै * बाँधै ताल मँजीरन क्यार ॥
नाचनवाले को पग बाँधै * ताको करै कालिका त्तार ॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगे मैं * देहौं कनउज खंड सुनाय ॥
लिखौं स्वयम्बर संयोगिनि को * यारो सुनियो कान लगाय ॥
देश अयोध्या के मंडल में * सोहत नैमिषार बनराज ॥
ताते दक्षिण रजधानी यक * कनउज नगर राज शिरताज ॥
राजा अजैपाल बर क्षत्री * जो राठौर वंश बिख्यात ॥
तिनके बेटा बेनिचक्कवै * शोभा तासु बरनि नहिं जात ॥
बेनिचक्कवे के दुइ बेटा * जैचँद रतीभान महराज ॥
लगी सभा जैचंद बिराजैं * सोहैं क्षत्र और शिरताज ॥
देश देश के राजा बैठे * भारी लागि रहा दरबार ॥
छत्रपती गढ़पती नरपती * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
सूर्यवंश औ चन्द्रवंश के * औ रघुवंशी राजकुमार ॥
बूंदी वाले हाड़ावारे * औ परिहार गुटैया टार ॥
भदवरिया गहलौत रुहेले * औ सोलखि बीर चौहान ॥
नगर चँदेरी के चन्देले * नृप राठौर और कछवान ॥
बँधे बजुल्ला भुजदंडन में * तुर्रा लौटि लौटि रहिजाय ॥
मोढ़ाक सँग मोढ़ा रगड़ैं * मचिया रगड़ि रगड़ि रहिजायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सिंह ठवनि क्षत्री सब बैठे * ठिहुना धरे नग्न तलवार ॥
क्या छबि बरणौं राजसभा की * मानहु इन्द्र केर दरबार ॥
नचैं कंचनी बारह जोड़ी * तबला ठुमकि ठुमकि रहिजाय ॥
समय सुहावन गान सुनावैं * गावैं भाव बताय बताय ॥
सोलह जोड़ छोकरा नाचैं * गावैं तान मनोहर गान ॥
जबहीं झोंका देत नयनकी * क्षत्रिन लगत कामके बान ॥
नाँच रंग देखे सब क्षत्री * नयनन रही लालरी छाय ॥
बैठे सैयद मोछा ऐंठे * दाढ़ी रही तोंद पर आय ॥
ताही समया महराजाके * मनमें सोच रही कछु छाय ॥
ब्याहन योग भई संयोगिनि * मैं ताको बर देहुँ मिलाय ॥
सोच समझके राजा जैचँद * निज मंत्री से कही सुनाय ॥
ब्याह योग संयोगिनि हुइगइ * सम्मति हमहिं देउ बतलाय ॥
यह सुनि ज्वाब दियो मंत्रीने * तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
चिठिया भेजो सब राजन को * औ कनउज में लेउ बुलाय ॥
रचौ स्वयम्बर संयोगिनि को * जासो सिद्धि होय सबकाज ॥
सम्मति उचित सुनीत्याहि औसर * बहुतै खुशी भये महराज ॥
चिठिया भेजी सब राजन को * अपनी करन तयारी लाग ॥
देश देश के राजा आये * कनउज नगर केर धनि भाग ॥
तम्बू तनिगे सब बागन में * झंडन रही लालरी छाय ॥
रचो स्वयम्बर संयोगिनि को * शोभा कछु कही ना जाय ॥
बिछे बिछौना रेशमवाले * मंडप तुरत भयो तैयार ॥
भयो बुलोआ सब राजन को * आये कुरी कुरी सरदार ॥
अपनो अपनो साज सजाये * एकते एक शूर बलवान ॥
एक न आये दिल्लीवारे * राजा पृथीराज चौहान ॥
सूरति बनवाई पिरथी की * सो द्वारे पर दई धराय ॥
खबरि भेजि दई रंग महल में * आवे कुँवरि साजि हर्षाय ॥
चली संयोगिनि तब महलोंसे * शोभा अंग अंग रहि छाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गहने पहिरे नखसे सिखलौं * बनता बरन करी ना जाय ॥
पूर्ण चन्द्रमा के सम आनन * सुन्दर मन्द मन्द मुसकाय ॥
नैना हिरना के सम सोहत * बाँकी चितवन भौंह कमान ॥
माला लीन्हें दोउ हाथन में * पहुँची राज सभा में जाय ॥
समुहें देखे ज्यहि राजा को * सो अपनो शिर लेय झुकाय ॥
बेटी ढूँढ़े पृथीराज को * सो कहुँ नाहीं परे दिखाय ॥
खबरि मिली थी संयोगिनि को * ऐ हैं नाहिं पिथौरा राय ॥
मूरति धरिदई दरवाजे पर * यह अपने मन कीन्ह विचार ॥
गइ संयोगिनि दरवाजे पर * मूरति देखि पिथौरा क्यार ॥
देखत सबके संयोगिनि ने * माला तुरत दई पहिराय ॥
कैतो ब्याह होय पिरथी संग * कैतो जपौं राम रटलाय ॥
देखि हाल यह संयोगिनि को * राजा सबै गये खिसियाय ॥
देश देश के जो राजा थे * सबने कूच दियो करवाय ॥
सुनी हकीकत जैचँद राजा * तुरतै सोच रहा उर छाय ॥
बेगि बुलायो चन्द्रभाट को * औ यह कही कनौजी राय ॥
कैसे राजा पृथीराज हैं * सो सब हाल देउ बतलाय ॥
बोले चन्दभाट राजा से * तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
हैं बरदानी शिव शंकर के * अरु हैं शब्द बेधि चौहान ॥
महाबीर हैं दिल्लीवारे * रणमें एक शूर बलवान ॥
गज भरि छाती पृथीराज की * शंका करै कालकी नाहिं ॥
ऐसे महाराज दिल्लीपति * जीते अवशि शत्रु रणमाहिं ॥
इतनी सुनिके चन्द्रभाट से * राजा जैचँद लगे बतान ॥
हमहिं दिखावौ पृथीराज को * कैसे महाराज चौहान ॥
कूच करायो चन्द्रभाट ने * औ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी महराजा को * बहुतै खुशी भये नरराय ॥
पृथीराज तब पूछन लागे * अपनो हाल कहो कविराज ॥
चन्द्रभाट तब बोलन लागे * सुनिये पृथीराज महराज ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

रचो स्वयम्बर संयोगिनिको * जैचँद महाराज दरबार ॥
देश देशके राजा आये * एकते एक शूर सरदार ॥
तुम्हरी मूरति नृप बनवाई * सो द्वारे पर दई धराय ॥
भयो बुलौआ संयोगिनि को * माला लिये पहूँची आय ॥
सिगरे राजन पै फिरि आई * औ द्वारे पर पहुँची आय ॥
मूरति देखी दरवाजे पर * माला तुरत दई पहिराय ॥
कै तौ क्वाँरी रहौं जन्म भर * कै पिरथी सँग होय बिवाह ॥
साँची साँची यह भाषतिहौं * मनमें यही हमारे चाह ॥
देश देशके राजा चलि भये * जैचँद सोच रहा उर छाय ॥
हमहिं बुलायो तब जैचँद ने * पूछो तुमहिं कनौजी राय ॥
कही हकीकति सब तुम्हरी हम * भेजो तबहिं मोहिं नरनाथ ॥
तुमहिं बुलायो है देखन को * सो तुम चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनिके चन्दभाट ते * बहुतै खुशी भये नरनाह ॥
अब हम लैहैं संयोगिनि को * मनमें छाय गयो उत्साह ॥
दासी भेजी थी जो हमने * ताने कारज दियो बनाय ॥
यह मन सोचे पृथी राज तब * चन्द भाटसे कही सुनाय ॥
धीरज राखौ अपने मनमें * अबहीं चलिहैं साथ तुम्हार ॥
हुक्म देदियो पृथीराज ने * सिगरे शूर होयँ तैयार ॥
तुरत बुलायो हरीसिंह को * ठाकुर चलो हमारे साथ ॥
देबी मरहठाको बुलावायो * तुमहूँ चलो साथ नरनाथ ॥
सब सामन्त शूर सँग लीन्हे * औ कनौज को भये तयार ॥
बोले पृथीराज कान्हर से * चाचा सुनलो बात हमार ॥
लश्कर लैयो तुम पीछे से * लीजो साथ शूर बलवान ॥
आगे जैहैं हम कारज हित * यह कहि चले बीर चौहान ॥
आठ रोजका मंजिल करिके * गढ़ कनौज में पहुँचे जाय ॥
बाना बदलो पृथीराज ने * चन्दभाट को संग लिवाय ॥
लगी कचहरी जहँ जैचँद को * पहुँचे जाय चन्द कविराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आगे आगे चन्दभाट के * पीछे पृथीराज नरराय ॥
करी बन्दगी चन्दभाट ने * जैचँद चौकी दई डराय ॥
चन्दभाट बैठे चौकी पर * पीछे खड़े पिथौरा राय ॥
नचैं कंचनी वा बँगला में * शोभा कछू कही ना जाय ॥
मचिया के सँग मचिया रगड़े * मोढ़ा रगड़ि रगड़ि रहिजाय ॥
शूर बीर योधा सब बैठे * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
क्या छबि बरणौं राज सभा की * मानहुँ इन्द्र केर दरबार ॥
मनमें सोचे राजा जैचँद * क्या यह खड़े पिथौरा राय ॥
मूँछ पै हाथ धरी जैचँद ने * चन्द भाटने कही सुनाय ॥
हाथ न धरियो तुम मूँछन पै * इस उनहारि पिथौरा राय ॥
कड़ियाँ तड़कीं पृथीराज की * नयनन रही लालरी छाय ॥
सूरति देखी राजा जैचंद * मनमें सोचि सोचि रहिजाय ॥
कैसे जाँच होय पिरथी की * यह तो चाकर पैर दिखाय ॥
कोइ कोइ क्षत्री मनमें सोचे * जेई खड़े बीर चौहान ॥
चन्द्रभाट को यह चाकर है * पै यह जानि परत बलवान ॥
मतो बिचारो तब जैचँद ने * बाँदी जौन पिथौरा क्यार ॥
ताहि बुलाओ सो देखत खन * करिहै लाज राज दरबार ॥
भयो बुलौआ तब बाँदीको * सो बीरा लै पहुँची आय ॥
खड़ो देखिकै प्रथीराज को * मनमें सोच रहो अतिछाय ॥
जो मैं लाज करौं पिरथी को * तो बँधि जाय पिथौरा राय ॥
आँखी मीजति गई सभामें * राजे बीरा दियो गहाय ॥
शिर खुजलावति बाँदी लौटी * औ रनिवास पहूँची जाय ॥
ना कछु जानिपरो महफिल में * जानि न परे पिथौराराय ॥
राजा जैचँद अपने मनमें * सोचै बार बार घबराय ॥
बिना बिचारे जो कछु करिहैं * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
अपने भाट से जैचँद बोले * बागन इनको देउ टिकाय ॥
तीनों चलिभये तब ड्योढ़ी से * दरवाजे पर पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मूरति देखी पृथीराज ने * गुस्सा गई देह में छाय ॥
स्याह पुतरिया लाली हुइगई * औ जरि मरे पिथौरा राय ॥
बागमें पहुँचे चन्द्रभाट जब * अपने तम्बू दिये तनाय ॥
खबरि भेजदइ चन्द्रभाट ने * आये यहाँ पिथौरा राय ॥
सुनी खबरि जब संयोगिनि ने * पहिरे भूषण बसन बनाय ॥
डेरा कीन्हीं हैं बागन में * यहसुनि बहुतखुशी हुइजाय ॥
सब सिंगार कियो पद्मिनि ने * पहिरे भूषण बसन बनाय ॥
थार सोबरन को सजवायो * बीरा तामें धरे बनाय ॥
साथ सहेलिन को लै लीन्हों * औ पलकी में बैठी जाय ॥
एक घरीको अरसा गुजरो * सो बागन में पहुँची जाय ॥
जहँ पर बैठे पृथीराज थे * तहँ पर गई पद्मिनी नारि ॥
पास पहूँची जब राजा के * दीन्हों डारि कंठमें हार ॥
बीरा दैके पाँच पानको * तुरत आरती धरी उतारि ॥
लई बिजनियां फूलनवारी * पृथीराज पै करे बयारि ॥
फिरि संयोगिनि बोलन लागी * सुनिये महाराज नरनाथ ॥
हम प्रण कीन्हीं हैं अपने मन * करिहैं ब्याह तुम्हारे साथ ॥
नातर क्वाँरी रहौं जन्मभर * नाहीं करों ब्याह की बात ॥
इतनी सुनिके पिरथी बोले * प्यारी सुनो हमारी बात ॥
जो कछु मरजी नारायण की * हुइहैं वही रची करतार ॥
धीरज राखो अपने मनमें * गुजरे घरी घरी पर वार ॥
डोला लेहैं अब हम तुम्हरो * औ दिल्लीमें रखिहैं जाय ॥
इतनी बात सुनी पद्मिनि ने * मनमें बहुत खुशी हुइजाय ॥
चली सँयोगिनि तब बगियासे * औ महलन में पहुँची जाय ॥
सुनी खबरिया राजा जैचँद * आये यहाँ पिथौरा राय ॥
करी तयारी तब राजा ने * दीन्हों हुक्म कनौजी राय ॥
दुइसै घोड़ा त्यार कराये * हाथी तीस लिये सजवाय ॥
चीरा कलँगी साल दुसाला * मोहन माला औ रूमाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

थार सोवरन को सजवायो * तामें धरे जवाहर लाल ॥
संग लेलिया सब काहूको * औ चलिभये कनौजी राय ॥
भेंट देनको राजा जैचँद * फुलवगिया में पहुँचे जाय ॥
जबहीं देखो चन्द्रभाट ने * पृथीराज से कही सुनाय ॥
खड़े होउ अब तुम जल्दी से * बीरा राजे देउ गहाय ॥
बीरा लैके पृथीराज ने * सो जैचँद को दीन्हों जाय ॥
हाथ दाबिदो तब जैचँद को * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
लोहू देखत परलै हुइगइ * औ जरिगयो कनौजी राय ॥
चन्दभाट को यह चाकर नहिं * याको नाम पिथौरा राय ॥
भेंट जो लाये थे देबे को * चन्दभाट को दई गहाय ॥
तुरतै चलिमै राजा जैचँद * औ शूरन को लियो बुलाय ॥
हुक्म देदिया राजा जैचँद * अपनो डंका देउ बजाय ॥
जान न पावैं दिल्ली वाले * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
सुनी खबरि यह पृथीराज ने * आगे बढ़े पिथौरा राय ॥
तीनि कोस कनउज से उत्तर * अपने डेरा दिये लगाय ॥
कागद लीन्हों कलपी वारो * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
लिखी हकीकत कान्हदेव को * चाचा याहि पढ़ौ मनलाय ॥
जल्दी आवो तुम दिल्ली से * हुइहैं यहाँ जंग मैदान ॥
पाती लैके धामन चलिभो * कान्हर मिले राहमें आय ॥
पाती दीन्हों तब धामन ने * कान्हर लीन्हीं हाथ बढ़ाय ॥
पाती पढ़तै कान्हदेव ने * अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
धावाकरि देउ सब जल्दी से * औ कनउज को लेउ दबाय ॥
तीनि रोजकी मंजिल करके * औ कनउज में पहुँचे जाय ॥
तीनि लाख लश्कर दिल्ली को * एक सौ आठ शूर सरदार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * बहुतै खुशी भये महराज ॥
कान्ह देव औ हरीसिंह से * बोले पृथीराज महराज ॥
अबतुम रारि करो कनउज में * औ डोला को लेउ खँदाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

डोला लेहैं संयोगिनिको * तब छातीको डाहु बुझाय ॥
इतनी कहिके पृथीराज ने * अपनो घोड़ा लियो मँगाय ॥
सो सजवाय लियो जल्दीसे * तापर फाँदि भये असवार ॥
चारि घरी केरे अरसा में * पहुँचे नदी किनारे जाय ॥
जहाँ महलथो संयोगिनि को * मछरी तहाँ चुगावन लाग ॥
देखि सँयोगिनि पृथीराज को * तब बाँदीको लियो बुलाय ॥
थार भरायो यक मोतिनसे * सो बाँदीको दियो गहाय ॥
बाँदी चलिभइ मोती लैके * पृथीराज पै पहुंची जाय ॥
बोले पृथीराज बाँदी से * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
कौने भेजो है तुमको यहँ * सो सब हाल देव बतलाय ॥
हाथ जोरिके बाँदी बोली * सुनिये महाराज चौहान ॥
हमहिं पठायो संयोगिनिने * मोतियन थार देहु पहुँचाय ॥
बैठि संयोगिनि है खिरकीमें * सो तुम देखिलेउ महराज ॥
नजर बदलिगइ पृथीराजकी * संयोगिनि तन रहे निहारि ॥
ऐंड लगाय दई घोड़ाके * सतखंडा पर पहुँचे जाय ॥
सूरति देखी पृथीराजकी * पद्मिनि उठी भरहरा खाय ॥
माला लैके संयोगिनिने * पृथीराजको दइ पहिराय ॥
हाथ जोरिके पद्मिनि बोली * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
एक अँदेसा मोहिं आवत है * जियरा सोचि २ घबराय ॥
लश्कर भारी है कनउजको * थोड़ी फौज तुम्हारे साथ ॥
कैसे जितिहौ तुम कनउजमें * रहिरहि मेरो जिया घबराय ॥
दिया भरोसा पृथीराज ने * प्यारी धीर धरो मनमाहिं ॥
मुहरा मरिहैं हम जैचँदको * तुमको दिल्ली दिहैं दिखाय ॥
इतनी कहिके धीरज दीन्हों * औ घोड़ा पर भये सवार ॥
चारि घरीको अरसा गुजरो * अपनी फौज पहुँचे जाय ॥
हुक्म दे दियो सेनापतिको * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
यहां कि बातैं तौ यहँ छोड़ो * अब कनउजको सुनो हवाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुरत बुलायो सेनापति को * औ यह कही कनौजीराय ॥
जल्दी सजवावौ लश्करको * मारू डंका देउ बजाय ॥
इतनी सुनिके रायलंगरी * लश्कर तुरत पहूँचा जाय ॥
हुक्म देदिया सब लश्कर में * लश्कर डंका दियो बजाय ॥
पहिले डंकाके बाजतखन * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
दुसरे डंकामें जिनबन्दी * तिसरे बाँधि लिये हथियार ॥
चौथे डंकाके बाजत खन * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * पहुंचा समर भूमि में जाय ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे * घूमन लागे लाल निशान ॥
दोनों लश्कर के अन्तरमें * रहिगा आध कोस मैदान ॥
हुक्म देदिया पृथीराजने * सुनलो हरीसिंह सरदार ॥
इज्जत राखि लेउ दिल्लीको * मारो फौज कनौजी क्यार ॥
इतनी सुनके हरीसिंह ने * अपने घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
राय लंगरीको ललकारो * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
डोला पद्मिनि को मँगवावो * औ खेतनमें देउ धराय ॥
ज्यहिकी जीति होय दंगल में * सो डोलाको लेय उठाय ॥
सुनी बात यह हरीसिंह की * देही अग्नि ज्वाल हुइ जाय ॥
राय लंगरी ने ललकारो * सुनलो हरीसिंह चौहान ॥
डोला मिलिबे को नाहीं है * चाहै कोटिक करौ उपाय ॥
लड़े न जितिहौ तुम कनउज में * नाहक प्राण गँवाये आय ॥
बातन बातन बतबढ़ हुइगौ * हल्ला तुरत दियो करवाय ॥
खैंचि सिरोही लइ ज्वाननने * खटखट चलन लगी तलवार ॥
पैदलके सँग पैदल भिरिगो * औ असवारन से असवार ॥
हौदा के सँग हौदा अभिरे * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
चलै सिरोही दोनों दलमें * सबके मारु मारु रट लाग ॥
चारि घरी भरि चली सिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
चारि लाख तो पैदल गिरिगे * घोड़ा गिरिगे आठ हजार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथी गिरिगे तहँ बारह सै * दिल्लीवारेन दिये गिराय ॥
भजे सिपाही कनउज वारे * अपने डारि डारि हथियार ॥
झुके सिपाही दिल्लीवारे * दोनों हाथ करैं तलवार ॥
भजत सिपाही अपने देखे * राय लंगरी कही सुनाय ॥
जौन सिपाही रणसे भागै * ताके जीवन को धिक्कार ॥
नरक पड़ै सो जब दुख भोगे * होवै नमकहरामी नाम ॥
ताते तुमको समझावति हौं * कोइ न धरो पिछारी पाँव ॥
समर खेतमें जो मरिजैहौ * हुइहैं युगन युगन लौं नाम॥
खटिया परिके जो मरिजैहौ * कलिमें कोइ न लीहैं नाम ॥
जंग जीतिके जो घर चलिहैं * तुम्हरी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दैके बढ़ावा रजपूतनको * सबको आगे दियो बढ़ाय ॥
धीरजसिंह बढ़े आगेको * हरीसिंहसे कहो सुनाय ॥
सम्हरो ठाकुर तुम घोड़ापर * तुमरो काल पहूँचो आय ॥
घोड़ा फेंक्यो हरीसिंह ने * औ धीरजको दइ ललकार ॥
दोनों शूरन झुरमुट हुइगो * धीरज खैंचिलई तलवार ॥
करो जड़ाका हरीसिंह पर * बचिगो शूर पिथौरा क्यार ॥
चौथी चोट करी धीरजने * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
सोचे धीरज अपने मनमें * अब ना बचि हैं प्राण हमार ॥
जौन सिरोही से गज काटे * औ घोड़न के चारो पाँव ॥
तौन सिरोही धोखा दैगई * अबधौं कहा रची करतार ॥
हरीसिंह ने तब ललकारो * धीरज खबरदार हुइ जाउ ॥
चोट तुम्हारो हम सहि लीन्ही * अब लैलेते गाज हमार ॥
चोट चलाई हरीसिंह ने * धीरज ढाल अड़ाई आय ॥
ढाल फाटगइ गैंड़ा वाली * गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
शीश काटि लै हरीसिंह ने * धीरज जूझि गयो मैदान ॥
तीनि पहरभरि चली सिरोही * संझा काल रही नियराय ॥
सुनी खबरि राजा जैचँदने * धीरज जूझि गयो रणमाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

शंका मानी तब राजाने * मनमें सोच रहा बहु छाय ॥
बन्द लड़ाई भइ तेहिं औसर * सबने बन्द करे हथियार ॥
करो बसेरो राति भये पर * भोरहिं उठे कनौजी राय ॥
राय लंगरी को बुलवायो * अरु यह हुक्म दियो फरमाय॥
डोला साजो संयोगिनिको * रणखेतन में देउ धराय ॥
जबहीं आवैं दिल्ली वारे * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
हमा जमाको तुरत बुलायो * तिनसे जैचन्द कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो डोला पर * रखियो लाज हमारी जाय ॥
जो कहुँ डोला दिल्ली जैहैं * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
खबरि भेजि दइ राजमहल में * डोला तुरत होय तैयार ॥
डोला सजिगौ संयोगिनिको * आयो समर खेत तत्काल ॥
जितने शूर हते कनउजके * सो डोलापर भये तयार ॥
यक हरिकारा दौरति आयो * पृथीराज से कही सुनाय ॥
डोला आयो है खेतन में * अब तुम खबरदार हुइजाउ ॥
इतनी सुनिके दिल्ली पतिने * अपने शूर लिये बुलवाय ॥
हुक्म देदियो सब शूरन को * अब डोलापर होउ तयार ॥
डोला जैहैं जो दिल्ली को * दूनी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
ऐसो समय नहीं मिलि हैं फिरि * रणमें खेलौ जूझ अघाय ॥
इतनी सुनिके सब शूरन ने * अपने बाँधिलिये हथियार ॥
धावा करिदौ सब शूरनने * पहुँचे समर खेत में जाय ॥
हरीसिंह बढ़िगे आगे को * हमा जमासे कही सुनाय ॥
डोला धरि देउ तुम खेतन में * जो जीते सो लेय उठाय ॥
राय लंगरी ने ललकारो * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
कौनसो क्षत्री है दुनियाँ में * जो यह डोला लेय उठाय ॥
खेदिके मारौं मैं दिल्ली लौं * सबके शीश लेउँ कटवाय ॥
बातन बातन बतबढ़ हुइगै * ज्वानन खैंचि लई तलवारि ॥
हल्ला हुइगौ दोनों दल में * क्षत्री वीर रूप हुइ जायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हमा जमा बोले क्षत्रिन से * क्षोत्रउ सुनो हमारी बात ॥
जान न पावैं दिल्ली वाले * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
धावा करिदौ सब क्षत्रिन ने * सबके मारु मारु रट लागि ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * खट खट चलन लगी तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चले बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बरदवान को * कटि कटि गिरैं अरेखा ज्वान ॥
कटि कटि शूर गिरे धरती पर * उठि उठि रुंड करैं तलवारि ॥
चारि घरी भरि चली सिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
कटे भुसुँडा तहँ हाथिन के * चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
कल्ला कटिगे हैं घोड़न के * ऐसी विषम चली तलवार ॥
गोविंद राजा ने ललकारो * है जो शूर पिथौरा क्यार ॥
डोला धरिदेउ संयोगिन को * चुप्पै लौटि कनौजै जाउ ॥
इतनी सुनिके हमा जमाने * तुरतै खैंचि लई तलवारि ॥
झुरमुट हुइगो तब दोउन को * अपनी अपनी चोट चलाय ॥
चोट चलाई हमा जमा ने * अरु गोविंदको दियो गिराय ॥
जगो कमंडल तहँ गोविंद को * बहुतक क्षत्री दियो गिराय ॥
लीलको झंडा फिरो रुंडपै * धरती गिरे रुंड तत्काल ॥
हमा जमापै हरीसिंह ने * अपनो तेगा दियो चलाय ॥
छूटि जनेवा गो तुरतै तब * राय लंगरी पहुँचो आय ॥
तब ललकारो हरीसिंह को * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
चोट आपनी तुम करिलीजो * नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥
इतनी सुनिके हरीसिंह ने * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका जब समुहें पर * ताने दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तीनि सिरोही हनि २ मारी * राय लंगरी गये बचाय ॥
राय लंगरी ने ललकारो * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
चोट तुमारी हम सहि लीन्ही * अबतुम खबरदार हुइजाउ ॥
इतनी कहिके तेगा मारो * हरीसिंह को दियो गिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

देखि हकीकति राजा कुंजर * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
राय लंगरी को ललकारो * काहे दीन्हो प्राण गँवाय ॥
डोला जैहैं यह दिल्ली को * चुप्पै लौटि कनौजे जाउ ॥
इतनी सुनिके राय लंगरी * अपनो तेगा लियो निकारि॥
करो जड़ाका तब कुंजर पर * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
चोट चलाई नृप कुंजर ने * राय लंगिरिहिं दियो गिराय॥
सुनी खबरि जब राजा जैचँद * मारो गयो लंगरी राय ॥
परो सनाका तब लश्कर में * जैचँद सोचि सोचि रहिजाय॥
चारि शूर कनउज के जूझे * जूझे तीनि पिथौरा क्यार ॥
बहुतक सेना गढ़कनउज की * दिल्लीवाले दई गिराय ॥
क्षत्री बूड़ि गये लोहू से * डोला रक्त बरन हुइ जाय ॥
कठिन लड़ाई भई डोला पर * विपता कछु कहीना जाय ॥
सोचि समुझिके राजा जैचँद * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगाड़ा हमरे दल में * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
हुक्म पायके बजो नगाड़ा * तुरतै फौज भई तैयार ॥
तीनिलाख लश्कर सजवायो * अपने चले कनौजो राय ॥
चारि घरी को अरसा गुजरो * पहुँचे समर भूमि में जाय ॥
जैचँद बोले सब क्षत्रिन से * यारो रखियो धर्म हमार ॥
जो कहुँ डोला दिल्ली जैहै * बूड़ै सात साखिको नाम ॥
नमक हमारो तुम खायो है * अब गाढ़े में आवो काम ॥
पाँव पिछारूको जो धरिहौ * तौ रजपूती जाय नशाय ॥
दियो बढ़ावा सब क्षत्रिनको * औ आगे को दीन्ह बढ़ाय ॥
खबरि पहुँच गइ पृथीराजको * आयो साजि कनौजी राय ॥
इतनी सुनिके पृथीराज ने * कान्हदेवको लियो बुलाय ॥
यहकहि दीन्ही उन कान्हरसे * चाचा सुनो हमारी बात ॥
कठिन लड़ाई है मुर्चा पर * अब तुम खबरदार हुइजाउ ॥
साथमें आये राजा जैचँद * भारी शूर कनौजी राज ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

डोला जैहैं जो कनउज को * तो सब जैहैं काज नशाय ॥
दागु लगिहै चौहानी में * बुड़िहै सात साखिको नाम ॥
इतनी सुनिके कान्हदेव ने * अपनो लश्कर दियो बढ़ाय ॥
बजो नगाड़ा दोनों दलमें * क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
बढ़े सिपाही कनउज वाले * खटखट चलन लगी तलवार ॥
एक शूर कनउज को कहिये * जो पंजून कनौजी क्यार ॥
बड़ो शूरमा थो जैचँद को * रणमें कठिन करै तलवार ॥
ज्यों किसान खेतीको काटे * कतरे जस तंबोली पान ॥
कठिन लड़ाई भइ त्यहि अवसर * अन्धा धुंध चली तलवार ॥
रंग बिरंगो डोला हुइगो * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
पृथीराज कुंजर को टेरो * औ यह बात कही समुझाय ॥
कठिन लड़ाई है जैचँद की * अब गाढ़े में आवो काम ॥
बड़ो भरोसो मोहिं तुम्हरो है * सो तुम करो सामना जाय ॥
इतनी सुनिके कुंजर बरने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
एक खेत जब डोला रहिगो * जहँ पंजून शूर सरदार ॥
कुंजर बोले पंजूनी से * अब तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
कैबर लीन्हो कुंजरबर ने * गाँसी सेर भरे की खाय ॥
मारो कैबर पंजूनी के * सूखा निकरि गयो वा पार ॥
भारी शूर गिरो कनउज को * कुंजर डोला लौ उठवाय ॥
पहुँचो डोला पृथीराज पै * पिरथी हुक्म दियो करवाय ॥
देर करन की नहिं बिरिया है * डोला आगे देउ बढ़ाय ॥
डोला बढ़िगो तब आगे को * अपनो डंका दियो बजाय ॥
जीतिको डंका जब बजवायो * जयचँद गये सनाका खाय ॥
आठ कोस जब डोला बढ़िगो * जयचँद डोला घेरो जाय ॥
आगे आगे पृथीराज हैं * पीछे चले कनौजीराय ॥
कबहुँक डोला जैचँद छीने * कबहुँक पिरथी लेयँ छिनाय ॥
जौन शूर छीनै डोला को * राखै पाँच कोस पर जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कोस पचासक डोला बढ़िगो * बहुतक क्षत्री गये नसाय ॥
लड़त भिड़त दोनों दल आवैं * पहुँचे सोरों के मैदान ॥
राजा जैचँद ने ललकारो * सुनलो पृथीराज चौहान ॥
डोला लै जैहो चोरीसे * तुम्हरो चोर कहै है नाम ॥
डोला धरि देउ तुम खेतन में * जो जीते सो लेय उठाय ॥
इतनी बात सुनी पिरथी ने * डोला धरो खेत मैदान ॥
हल्ला हुइगै दोनों दल में * तुरतै चलन लगी तलवार ॥
झुरमुटि हुइगयो दोनों दलको * कोता खानी चले कटार ॥
कोइ कोइ मारै बन्दूकन से * कोइ कोइ देय सेलको घाव ॥
भाला छूटै नागदौनि के * कहुँ कहुँ कड़ाबीन की मारु ॥
जैचँद बोले सब क्षत्रिन से * यारो सुनलो कान लगाय ॥
सदा तुरैया ना बन फूलै * यारो सदा न सावन होय ॥
सदा न माता उरमें जनमै * यारो समय न बारम्बार ॥
जैसे पात टूटि तरवर से * गिरिके बहुरि न लागे डार ॥
मानुष देही यह दुर्लभ है * ताते करो सुयश को काम ॥
लड़िकै सन्मुख जो मरिजैहो * हुइ है जुगन २ लौ नाम ॥
झुके सिपाही कनउज वाले * रणमें कठिन करैं तलवार ॥
अपनो पराओ ना पहिचाने * जिनके मारु मारु रट लाग ॥
झुके शूरमा दिल्ली वाले * दोनों हाथ लिये हथियार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपक छपक तलवार ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
कठिन लड़ाई भइ डोला पर * जहँ बहिचली रक्तकी धार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * औ रण दुलहा चले बराय ॥
शूर पैतिसक पृथीराज के * कनउज वारेन दिये गिराय ॥
एक लाख जूझे जैचँद के * दिल्लीवारेन दिये गिराय ॥
ऐसो समर भयो सोरों में * अंधाधुन्ध चली तलवार ॥
आठ कोस पर डोला पहुँचो * जीते जंग पिथौरा राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यक हरकारा दौरति आवे * रतीभान पर पहँचो जाय ॥
डोला लैगे दिल्लीवारे * बहुतक क्षत्री भूमि गिराय ॥
सुनी खबर जब रतीभानने * गुस्सा गई देहमें छाय ॥
हुक्म दीदया सब लश्करमें * तुरते फौज होय तैयार ॥

* रतीभानकी लड़ाई *

सुमिरन करिकै नारायण को * जगदम्बाके चरण मनाय ॥
समर बखानौं रतीभानको * यारो सुनियो कान लगाय ॥
बजो नगाड़ा गढ़ कनउज में * क्षत्री सबै भये तय्यार ॥
हाथी चढ़ीया हाथिन चढ़ि गये * बांके घोड़न के असवार ॥
लश्कर चलिभो रतीभानको * डंका होन गोल में लाग ॥
धावा करिकै गढ़ कनउज से * औ डालाको घेरो जाय ॥
राति बसेरो करि खेतन में * भोरहि उठे बीर रतिभान ॥
हुक्म दीदिया सब छात्रिन को * यारो खबरदार होइ जाउ ॥
डाला जैहैं जो दिल्ली को * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
हाथी आयो रतीभानको * होदा धरो सोबरन क्यार ॥
गद्दा परिगो मखमलवारो * रेशम रस्सा दियो कसाय ॥
सुमिरन करिके नारायण को * गुरु गणपतिके चरण मनाय ॥
हाथी चढ़ि गये रतीभानजी * तबही अशगुन भयो अगार॥
बोला पंडित रतीभान से * राजा सुनो हमारी बात ॥
अशगुन हुइगो है समुहें पर * अब तुम लौटि जाउ महराज॥
काम तुम्हारो ना जैबे को * इतनी मानो बात हमार ॥
यह सुनि बोले रतीभानजी * पंडित सुनो हमारी बात ॥
सगुन बिचारैं बनियाँ बाटू * जो धरि मौर बिआहन जायँ॥
शगुन बिचारें क्या क्षत्री सुत * जो रण चढ़िके लोह चबायँ॥
पाँव पिछारू हमना धरिहैं * चाहे प्राण रहै की जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

* कुन्डलिया *

साईं समौं न चूकिये खेलि शत्रुसों सार ॥
दाँव परे नहिं चूकिये तुरत डारिये मार ॥
तुरत डारिये मार नरद काँची करि दीजै ॥
काँची होयतो होय जीति जगमें यश लीजै ॥
कहागिरधर कविराय युगन ऐसी चलि आई ।
सौ सौ सौहैं खाय शत्रुको मरिये साईं ॥

* छन्द आल्हा *

डोला जैहैं जो दिल्ली को * बुड़िहै सात साखिको नाम ॥
दागु लागिहैं रजपूती में * औ जग हुइहैं हँसी हमार ॥
गजै बढ़ायो रतीभान ने * औ डोलाको घेरो जाय ॥
समुहें पहुँचे सो मुकुन्द के * भारी जाय दई ललकार ॥
डोला जैहै ना दिल्ली को * चाहे मूड़ मारि मरिजाउ ॥
यह सुनि बोले मुकुन्द ठाकुर * तुम सुनि लेउ कनौजीराय ॥
डोला लौटन को नाहीं है * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
यह सुनि बोले रतीभान तब * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
डोला धरि देउ रन खेतन में * जो जीतै सो लेय उठाय ॥
इतनी सुनिके मुकुन्द ठाकुर * डोला खेतन दियो धराय ॥
झुर्मुट हुइगौ दोनों दलमें * खटखट चलन लगी तलवार ॥
रतीभान बोले मुकुन्द से * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
चोट चलाइ लेउ अपनी तुम * नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताय ॥
इतनी सुनिके मुकुन्द ठाकुर * अपनो भाला लियो उठाय ॥
चोट चलाई रतीभान पर * रतीभान गै चोट बचाय ॥
खैंचि शिरोही लइ मुकुन्द ने * लैके रामचन्द्र को नाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करो जड़ाका तब चेहरा पर * बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ ठाकुर की * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
मुकुन्द सोचैं अपने मन में * हमरो काल रहो नगिचाय ॥
जौन शिरोही से गज काटे * औ घोड़न के चारो पाँव ॥
तौन शिरोही धोका दैगई * हमपर रूठि गयो भगवान ॥
गजै बढ़ायो रतीभान ने * औ मुकुन्द से कही सुनाय ॥
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही * अब लैलेते गाज हमार ॥
इतनी कहिके रतीभान ने * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
चेहरा मारो त्यहि समुहें पर * बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली * गही कटि मखमल की जाय ॥
कटि गइ कड़ियाँ हैं बख्तर की * उनकी छूटि जनेवा जाय ॥
मुकुन्द जूझि गये डोला पर * पिरथी मनमें गये घबराय ॥
बड़ो शूरमा यहु मारो गो * को गाढ़े में ऐहैं काम ॥
जितने शूर हते पिरथी सँग * सबसे कही बीर चौहान ॥
डोला आयो जो फिरि जैहैं * तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
डोला छीनि लेउ जल्दी से * मारो शूर कनौजी क्यार ॥
झुके सूरमा दिल्ली वारे * सुनिके हुक्म पिथौरा क्यार ॥
झुरमुट होइगै दोनों दल में * खट खट चलन लगी तलवार ॥
क्यागति बरणौं त्यहि समयाकी * बिपता कछू कही ना जाय ॥
रतीभान केरे मुहरा पर * कोई शूर न आड़े पाँव ॥
आठ कोस जब दिल्ली रहि गइ * तहँ पर बहुत चली तलवार ॥
चलै शिरोही जहँ मुठ भेरी * हा दैया गति कही न जाय ॥
जौहर कीन्हें रतीभान ने * मारे बड़े बड़े सरदार ॥
सोचै पृथीराज त्यहि औसर * अबधौं कहा करै करतार ॥
बड़ो शूर यह रतीभान है * क्यों ना राज करै जैचंद ॥
सोचत देखो पृथीराज को * कान्ह देवने कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

काहे सोच करौ अपने मन * तुमको कहा पड़ी परवाहि ॥
जब लौं प्राण रहै देही में * तबलौं लड़ौं शत्रुके साथ ॥
इतनी कहिके कान्ह देवने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
जाय पहुँचे समर खेतमें * भारी जाय दीन ललकार ॥
जितने शूर हते दिल्ली के * रतीभान ने दिये गिराय ॥
देखि हकीकत कान्हदेव के * गुस्सा गई देहमें छाय ॥
कान्हर बोले रतीभान से * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
डोला धरि देउ रण खेतन में * जो जीते सो लेय उठाय ॥
हमरी तुमरी अब बरनी है * देखो कापर राम रिसाय ॥
यह मन भाई रतीभान के * डोला खेतन दियो धराय ॥
गजे बढ़ाय दियो आगे को * कान्हदेव से कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो समुहें पर * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
इतना कहिके गुर्ज उठायो * सो समुहें पर दियो चलाय ॥
ढाल अड़ाई कान्ह देव ने * जिनके अंग न आयो घाव ॥
फिरि ललकारो रतीभान ने * अपनो खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका जब समुहें पर * बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वारी * गही कटि मखमलकी जाय ॥
घाव आयगौ तब मस्तक पर * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
तब ललकारो कान्हदेव ने * पृथीराज से कही सुनाय ॥
डोला लौटे जो कनउज को * बुड़िहै सात साखिको नाम ॥
दाग लागिहैं रजपूती में * औ चौहानी जाय नशाय ॥
टाँके दैदेउ तुम मस्तक में * तौ बैरी को देउँ गिराय ॥
एक घरी केरे जीवन में * डोला दिल्लिहि देउँ पठाय ॥
इतनी सुनिके पृथीराज ने * करमें लीन्हीं लाल कमान ॥
तीर खैंचिके तुरतै मारो * गाँसी झलकि रही वापार ॥
कान्ह देव तब तुरतै लौटे * रतीभान पै पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चली शिरोही तिन दोनों की * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
मारि शिरोही रतीभान के * उनकी छुटि जनेवा जाय ॥
जूझे रतीभान डोला पर * पिरथी डोला दियो बढ़ाय ॥
आई मुर्च्छा कान्ह कुँवर को * उनहूँ दीन्हे प्राण गँवाय ॥
डोला पहुँचि गयो फाटक पर * जैचँद डोला घेरो जाय ॥
चन्द भाट औ पिरथी रहिगे * सिगरे जूझि गये सरदार ॥
सोचि समझि के पृथीराज ने * करमें लीन्ही लाल कमान ॥
हाथ जोरि संयोगिनि बोली * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
तुमहिं सुनासिब यह नाहीं है * जो दादा पर डारो हाथ ॥
लाल कमान धरो पिरथी ने * जैचँद खंडा लियो उठाय ॥
देखि हकीकत संयोगिनि ने * हाथ जोरिके कही सुनाय ॥
बात हमारी अब तुम मानो * दुदुआ बार बार बलि जाउँ ॥
तुमहिं सुनासिब यह नाहीं है * जो राजा पर डारो हाथ ॥
इतनी सुनिके राजा जैचँद * मनमें सोचि समझ रहिजाय ॥
चन्द भाट आगे को बढ़ि गये * औ जैचँद से कही सुनाय ॥
जितने शूर हते दिल्ली के * सो सब तुमने दिये गिराय ॥
कोउ दुसरिहा तुमरो नाहीं * सो तुम सुनो कनौजी राय ॥
अब तुम छोड़ौ पृथीराज को * कीरति चली अगारू जाय ॥
इतनी सुनिके राजा जैचँद * कनउज कूच दियो करवाय ॥
गइ संयोगिनि रङ्ग महलमें * मनमें बहुत खुशी हुइजाय ॥
पृथीराज राजा जैचँद की * साखो लिखिके दियो सुनाय ॥
सुमिरन करिये नारायण को * जो दीनन पर रहत दयाल ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * अब महुबे को लिखौं हवाल ॥

—***—

* अथ संयोगिनि का स्वयंबर समाप्त *

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

॥ अथ महोबे की लड़ाई ॥

॥ सुमिरन छन्द आल्हा ॥

सुमिरन करके नारायण को * अरु गणपति के चरण मनाय॥
देबी गैये आदि भवानी * भूले अक्षर देहु बताय ॥
कोट कांगड़े की देबी को * सुमिरौं बार बार शिरनाय ॥
जिह्वा बैठो मात शारदा * जाते काम सिद्ध हुइजाय ॥
धौलागिरि पर्वत की देबी * निशिदिन पूजौं चरण तुम्हार॥
मोती लैके बीच बीच में * गूथौं मौरसिरी को हार ॥
सो पहिरावौं जगदम्बे को * होय सहाय राज दरबार ॥
देबी ललिता नैमिषार की * मुम्बा देबि मुम्बई क्यार ॥
बिन्ध्याचलकी बिन्ध्य बासिनी * हिरदै करै ज्ञान उजियार ॥
देश कामरु की कामच्छा * सुमिरन करत जाहि संसार ॥
मात संकठा हैं लखीम पुर * मन्दिर मात सीतला क्यार ॥
सिंह सवारी देबी गरजै * औ बैरी को करै सँहार ॥
दर्शन कीन्हे श्री देबी के * जरि जरि पाप होत सब छार॥
पुनि मैं सुमिरौं श्रीगंगाजी * भागीरथी नाम संसार ॥
जो अस्नान करै नित प्रातहिं * ताको तुरत होत निस्तार ॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगे मैं * कहिहौं हाल महोबे क्यार ॥

॥ सवैया ॥

श्री गिरजा पतिको बिनवौं पुनि मैं बिनवौं गिरिजेश दुलारो ॥
अंजनि पुत्र बली हनुमान तुही सब भाँतिन सो रखवारो ॥
हर्षि हिये बिनवौं सब देवन भक्तन कष्ट सदा निरवारो ॥
मैं मतिमन्द यथामति सो सबके हित गावत बीर पँवारो ॥
जेठ दशहरा की पर्बी परि * गंगा जाजमऊ के घाट ॥
देश देशसे मेला चलि भौ * बुड़की हेत गंगकी धार ॥
करिया बोला गढ़ माँड़ो में * जो जम्बे को राजकुमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

एक बात तुमसे कहियतु हौं * ददुआ बार बार बलिजाउँ ॥
जेठ दशहरा की पर्वी है * बुड़की लेउँ गंगकी धार ॥
है अभिलाषा यह हमरे मन * ददुआ हुक्म देउ फरमाय ॥
देश देशके राजा चलि भये * गंगा जाजमऊ के घाट ॥
हमहूँ जैहैं जाजमऊ में * करिहैं जाय गंग अस्नान ॥
दान दिहैं हम कछु विप्रनको * जासो पाप दूरि हुइजाय ॥
इतनी सुनिके जम्बे बोले * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
काम तुम्हारो ना जैबे को * इतनी मानो कहो हमार ॥
बारह वर्ष को पैसा हुइ गो * कनउज देइ न एक छदाम॥
जो सुनि पैहैं राजा जैचँद * तुम्हरो कैद लिहैं करवाय ॥
जहँ ठकुराई है जैचँद की * भारी राज कनौजी क्यार ॥
बात हमारी बेटा मानो * घरमें बैठि रहो हरगाय ॥
हाथ जोरिके करिया बोलो * दादा सुनो हमारी बात ॥
बैर तो तुमहीं से जैचँद को * ददुआ मेरे बघेला राय ॥
तौतो बेटा मैं तुम्हरो हौं * पैसा माफ लेउँ करवाय ॥
इतनी बात सुनी जम्बै ने * तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
करी तयारी तब करिया ने * फौज कटीली लई सजाय ॥
आयो करिया रंगमहल को * जहँपर हती विजैसिनि रानि ॥
बोलि विजैसिनि तहँ करिया से * भैया सुनो हमारी बात ॥
जो तुम जैयो जाजमऊ को * लैयो कछु निशानी मोहि ॥
उहांसे करिया बदलत आवै * अपने लश्कर पहुँचा आय ॥
बजै नगाड़ा दुइसै जोड़ी * बाजै तुरही औ कंडाल ॥
कूच कराय दियो मांड़ौ से * पहुँचा जाजमऊ के घाट ॥
बहुत दान दीन्हों बिप्रन को * औ गंगाको करि अस्नान ॥
बात याद आई बहिनी की * तब उठि चला करिंघा राय ॥
तुरतै पहुँचा सो बजार में * ढूंढ़त फिरै नौलखा हार ॥
तौलौं मिलिगये माहिल ठाकुर * सो करिया से लगे बतान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

लड़िका हुइके तुम राजाके * ढूँढ़त फिरौ नौलखा हार ॥
तुमहिं हँसी को डर नाहीं है * ओ जम्बैके राजकुमार ॥
यह सुनि करिया बोलन लागो * तुम सुनिलेउ महिल परिहार ॥
सब बाजार में हम फिरि आये * कहूं न मिला नौलखा हार ॥
फिरि कै माहिल बोलन लागे * ओ महराज करिंघा राय ॥
बात हमारी जो तुम मानो * हम बतलावैं नौलख हार ॥
नगर महोबा यक बस्ती है * जहँ पर बसैं चँदेले राय ॥
तिन घर रानी यक मल्हना है * सो वह बाहिनी लगै हमारि ॥
हार नौलखा वह पहिरे है * चलिकै लूटि लेउ करवाय ॥
टूटे फाटे पड़े चँदेले * कोई फेंट बँधैया नाहिं ॥
यह मन भाय गई करिया के * औ महुबे को पकरी राह ॥
यहांकी बातें तो यहँ छोड़ौ * अब आगे को सुनो हवाल ॥
रहिमल टोंडर दस्सराज औ * चौथे बच्छराज महराज ॥
ये रहवैया बकसर वाले * चारो बीर बनाफर राय ॥
मीरा ताल्हन बनरस वाले * तिन नौ पूत अठारह नाति ॥
अली अलामति औ दरियाखां * बेटा जानबेग सुलतान ॥
मियां बिसारति औ कल्लूखां * कल्लन बेग और कल्यान ॥
कारो बाना कारो निसाना * कारे घोड़न के असवार ॥
शिरपर चारा है मुगलानी * मीरा ताल्हन राजकुमार ॥
जहाँ ठकुरई है जैचँद की * तहँ पर भयो बखेड़ा आय ॥
वे फिरियादी कनउज चलिभये * राजा जैचद के दरबार ॥
जो रस्ता थे महुबे हुइके * वे महुबे में पहुँचे आय ॥
पूँछन लागे हरिकारा पर * चारौ बीर बनाफर राय ॥
हम सब जैहैं गढ़ कनउज को * रस्ता हमहिं देउ बतलाय ॥
तब हरिकारा पूछन लागो * अपनो काम देउ बतलाय ॥
यह सुनि चारौ बोलन लागे * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
हम फिरियादी कनवज जैहैं * राजा जैचँद के दरबार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

फिरि हरिकारा बोलन लागो * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
यह बस्ती है गढ़ महुबे की * यहँ पर बसत रजा परिमाल ॥
बात बड़ी है परिमालै की * मानत जिनहिं कनौजी राय ॥
भयो बखेड़ा जो घूरे पर * जो लिखिदिहैं रजा परिमाल ॥
सोइ फैसला तुमरो हुइ हैं * जाते काम सिद्धि हुइजाय ॥
कही हमारी जो ना मानिहौ * तुम्हरो काम होनको नाहिं ॥
बात मानि लइ हरिकारा की * द्वारे गये चँदेले क्यार ॥
खाली सिदरी परिमाले की * तहँ टिकि रहे बनाफर राय ॥
यक लँग ताल्हन बनरस वारे * यक लँग पड़े बनाफर राय ॥
करिया आयो गढ़ महुबे में * वह जम्बेको राज कुमार ॥
जहँ पर फाटक चन्द्रवंश की * तहईं पड़े बनाफर राय ॥
बोलो करिया तब फाटक पर * ओ रजपूतो बात बनाउ ॥
खबरि सुनावौ चन्द्रवंश को * औ मल्हना से कहो सुनाय ॥
हार नौलखा लै जल्दी से * हमरी नजरि गुजारे आय ॥
यह सुनि बोला बनरस वाला * बोले तुरत बनाफर राय ॥
तीनि रोजसे गढ़ महुबे में * हम सब परे परौने आय ॥
हाल हमारो ना जानो है * हम परदेश रहत महराज ॥
हुक्म देदियो तब करिया ने * कछु क्षत्रिन से कही सुनाय ॥
बजै कुल्हाड़ा तब फाटक पर * औ धरती में देउ मिलाय ॥
महल लूटि लेउ परिमालै को * सिगरो गहना लेउ उठाय ॥
बजो कुल्हाड़ा तब फाटक पर * देखन लाग बनाफर राय ॥
मीरा ताल्हन और बनाफर * सो आपस में लगे बतान ॥
तीनि रोजसे गढ़ महुबे में * खाये नमक चँदेले क्यार ॥
सुखसे पानी पियो यहाँ पर * सो हाड़न में गयो समाय ॥
हीनी हुइ हैं चन्द्रबंश की * तो जग हुइहैं हँसी हमारि ॥
दागु लागे है रजपूती में * औ क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
सबहुन मिलि के यहमत कीन्हों * प्राणन को दो मोह बिसारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खैंचि शिरोही यकलँग हुइगै * चारो बीर बनाफर राय ॥
एक ओर को ताल्हन पहुँचे * सूबा जौन बनारस क्यार ॥
ताल्हन बोले सब बेटन से * तुम सब सुनो हमारी बात ॥
याही दिनको हम पालो है * अपनो हुनर देउ दिखलाय ॥
काज परगये जो मरि जैहौ * हुइहैं जुगन २ लौं नाम ॥
जंग जीति हौ जो दंगल में * पक्की कबर दिहौं चुनवाय ॥
सीधा रस्ता है जन्नत का * तुमको कौन पड़ी परवाहि ॥
इतनी सुनिलइ उन लड़िकन ने * अपनो खैंचि लई तलवारि ॥
बादल गरजै ज्यों भादौं में * बिजली कड़कि २ रहिजाय ॥
ऐसे गरजैं बनरस वाले * बनता बरन करी ना जाय ॥
सबमिलि झपटे त्यहि करियापर * जिनके मारु मारु रट लाग ॥
गड़बड़ परिगो गढ़ महुबे में * बिपता कछू कही ना जाय ॥
जहाँ भीर देखे करिया की * तहँ घुसि परे बनाफर राय ॥
मारि शिरोही चहला उठिगो * सब दल रेन बेन हुइजाय ॥
जौन रिसाला ताल्हन पैठे * त्यहि धरती में देय गिराय ॥
ऐसे काटा दल करिया का * जैसे खेती लुनै किसान ॥
बड़े लड़ैया बनरस वाले * तहँ पर बीत रही घमसान ॥
मूड़न के तहँ ढेर लागि गै * औलोथिनपर लोथि दिखाय ॥
करिया भागि गयो माड़ौ को * नाहीं मिला नौलखा हार ॥
सुनी खबर जब परिमालै ने * औ मल्हनाने सुनो हवाल ॥
पैर परौने जो द्वारे पर * तिनने राखो लाज हमारि ॥
आये चन्देले दरवाजे पर * औ ठकुरन ते लगे बतान ॥
जो तुम होते ना महुबे में * तो सब जाती लाज हमारि ॥
धर्म हमारो तुमने राखो * तुमरो जन्म धन्य संसार ॥
इतनी कहिके तब चन्देले * अपने बंगला गये लिवाय ॥
खातिर करिके उन सबहुन की * मालिक करो चँदेले राय ॥
राजपाट औ धन दौलति के * मालिक भये बनाफर राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

फौजके मालिक ताल्हा सैयद * सूबा जौन बनारस क्यार ॥
मल्हना बोली परिमाले से * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
व्याह करावो इन ठकुरन की * लड़िका जौन बनाफर राय ॥
तो ये बने रहें महुबे में * नाहीं कबहुँ जायँ परदेश ॥
देवै ब्रह्मा दुइ बहिनी हैं * लड़िका दस्सराज बच्छराज ॥
व्याह रचावौ तिन दोनौं को * तुम्हरे काम सिद्धि होइ जाय ॥
इतनी सुनिके परिमाले ने * अपनो नेगी लिये बुलाय ॥
टीका लाय दियो जल्दी ते * औ लड़िकन को लियो बुलाय ॥
दस्सराज औ बच्छराज को * टीका तुरतै लियो चढ़ाय ॥
एकहिं मड़ये में दोनों को * भांवरि तुरत लई करवाय ॥
बिदा कराय लई बहुअन की * औ द्वारे पर पहुँची आय ॥
जितनी रानी चन्द्र वंश की * सो द्वारे पर पहुँची आय ॥
दोनों बहुअन को सँग लीन्हों * रानी रंग महल में जाय ॥
हार नौलखा मल्हना लैके * देवै को दीन्हों पहिराय ॥
जौन नौलखा के लेने को * चढ़िके आय करिंघाराय ॥
औरो रानी चन्द्र बंश की * उनहू हार दिये पहिराय ॥
अनँद बधैया महुबे बाजै * घर घर भयो मंगला चार ॥
फिरिके मल्हना बोलन लागी * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
स्याने लड़िका अरु बहुएँ हैं * इनको महल देउ बनवाय ॥
नहीं गुजारा इन महलन में * सो तुम समुझिलेउ मनमाहिं ॥
इतनी सुनिके चन्देले ने * अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
महुबे केरे आध कोस पर * दशहर पुरवा दियो बसाय ॥
सुन्दर महल सजे पुरवा में * तहँ बसि गये बनाफर राय ॥
वही साल में आल्हा जन्मे * हैं जो धर्म राज अवतार ॥
दस्सराज की रनि दिवला से * आल्हा प्रगट भये संसार ॥
बच्छराज की रनि ब्रह्मा से * श्री सहदेव लीन अवतार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पांडव कुलमें जो तरवरिहा * जगमें प्रगट भयो मलिखान ॥
ब्रह्मा जन्म लियो मल्हना से * हैं जो अर्जुन को अवतार ॥
रतीभानकी रनि तिलका से * पांडव नकुल प्रगट संसार ॥
लाखनि राना गढ़ कनउज में * जाको नाम प्रगट संसार ॥
वही साल केरे अन्तर में * ढेबा आनि धरा औतार ॥
रही गर्भ से दिवला रानी * योधा भीम सेन औतार ॥
ऊदनि नामक गढ़ महुबे में * हुइहैं प्रगट आय संसार ॥
बच्छराज की रनि ब्रह्मा के * आयो गर्भ ताहि सुलिखान ॥
दस्सराज औ बच्छराज ये * दोनों रहे एकही साथ ॥
नित नित जावैं नगर महोबे * मानैं हुकम चँदेले क्यार ॥
दोनों भाई समरथ होइ गै * निशदिन करैं राजको काज ॥
धनि धनि माया परमेश्वर की * अचरज होत देखि सब काज ॥
पाँय पनहियां ना जिनके हैं * तिनको प्रभू देत गजराज ॥
हियाँकि बातैं तो हियँ छाँड़ौं * अब आगे की सुनो हवाल ॥
यकादिन ताल्हन बोलन लागे * तुमसुनि लेउ रजा परिमाल ॥
हाल बतावौ तुम अपनो म्वहिं * क्यों ना हाथ गहौ हथियार ॥
बोले राजा तब ताल्हन से * सैयद सुनो हमारी हाल ॥
नगर चँदेरी के हम राजा * बहु दिन करो राजको काज ॥
भैया हमरो यक चन्दा कर * त्यहि हमसौंपि दियो सबराज ॥
व्याह कियो हम गढ़ महुबे में * सुनिके सुघर मल्हन दे रानि ॥
इच्छा देखी रनि मल्हना की * तब हम रहे महोबे आय ॥
ससुर हमारे मालवन्त थे * जिनके पुत्र महिल परिहार ॥
तिनहिं बसायो हम उरई में * महुबे कियो राज दरबार ॥
भरत खण्ड में जितने योधा * हमने जीति लिये तत्काल ॥
बावन गढ़ के राजा जीते * जीते बड़े बड़े भूपाल ॥
मार न खाई काहु बली के * मिगरो हारि गयो संसार ॥
रहा मुकाबिल ना कोइ योधा * खाँड़ा सागर धरो पखार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अमर गुरूकी कसम खायली * अबना गहूं हाथ तरवार ॥
बहुत बर्ष बीते महुबे में * हमना गही हाथ हथियार ॥
माया परबल है ईश्वर की * सो प्रभु राखे धर्म हमार ॥
तुमहिं पठायो परमेश्वर ने * तुमने राखी लाज हमार ॥
इतनी सुनिके सैयद बोले * तुम सुनि लेउ रजा परिमाल ॥
जहाँ पसीना गिरे तुम्हारा * तहँ दै देउँ रक्त की धार ॥
ऐसे बात भई सैयद से * बहुतै खुशी भये परिमाल ॥
हाल सुनाऊँ अब आगे को * यारो सुनियो कान लगाय ॥
मीरा ताल्हन बनरस वाले * बेटा नाती संग लिवाय ॥
कोइ कारज हित गये बनारस * पाई खबरि महिल परिहार ॥
माहिल चलि भौ तब उरई से * लिल्ली घोड़ी पर असवार ॥
आठ रोजको धावा करिके * गढ़ माड़ो में पहुँचे जाय ॥
जहाँ कचहरी थी जम्बै की * माहिल उतरि परे हरगाय ॥
करी बन्दगी तब जम्बै को * घोड़ा थामि लई थनवार ॥
आवो आवो उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
माहिल बोलो तब राजा से * तुम सुनि लेउ बघेलेराव ॥
मीरा ताल्हन बनरस पहुँचे * खाली पड़ा महोबा गाँव ॥
फेंट बँधैया तहँ कोई नहिं * चलिके लूटि लेउ करवाय ॥
औसर चूके फिरि पछतैहो * आवै घड़ी न बारम्बार ॥
यह मन भाय गई करिया के * औ महुबे को भयो तयार ॥
माहिल चलिभै गढ़ माड़ौ से * औ उरई में पहुँचे आय ॥
राजा जम्बै ने ललकारो * बेटा सुनो करिंघा राय ॥
काम तुम्हारो ना जैबे को * ना महुबे पर होउ तयार ॥
तुमहिं लूटिबो ना सोहत है * तुम राजन के राज कुमार ॥
कही न मानी वो करिया ने * अपनो कूच दियो करवाय ॥
आठ रोजको धावा करिके * गढ़ महुबे में पहुँचो आय ॥
आधी राति केर अमला में * दश पुरवा में पहुँचो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सोवत बाँधो दस्सराज को * बच्छराज को लिओ बँधाय ॥
महल लूटिलौ उन दोउन को * सिगरो गहना लियो उठाय ॥
हार नौलखा देवै पहिरे * सोऊ तुरत लियो छिनवाय ॥
माल खजाना चन्द्रबंश को * सब लै लियो करिंघा राय ॥
गज पचशावद दस्सराज को * सो करिया ने लियो खुलाय ॥
लाखा पातुर दस्सराज की * घोड़ा पपिहा लियो मँगाय ॥
जौन बस्तु देखो समुहें पर * सो लै गया करिंघा राय ॥
करी बीरता क्या करिया ने * चोरी करी महोबे माहिं ॥
लानति ऐसी रजपूती पर * तेगा बाँधन को धिरकार ॥
माल पराया जो काउ ताके * चोरी करै पराई आय ॥
धोखा देवै जो काहूको * ताको बार बार धिकार ॥
पर उपकार करै दुनियाँ में * सब बिधि सुखी करै नरनार ॥
काम बनावै जो कहूको * ताको जन्म धन्य संसार ॥
करिया पहुँचो गढ़ माड़ौं में * जीतिको डंका दियो बजाय ॥
दस्सराज औ बच्छराज को * पत्थर कोल्हू दियो पिराय ॥
शीश काटिके दोउ भैयन को * सो बरगद में दियो टँगाय ॥
हार नौलखा देवै वारी * पहिरे नित्य बिजैसिन रानि ॥
नित उठि नाचै लाखा पातुर * राजा जम्बै के दरबार ॥
गज पचशावद दस्सराज को * तापर चढ़े करिंघा राय ॥
हियां कि बातैं तो यहँ छाड़ो * अब महुबेको सुनो हवाल ॥
राम बनावै सो बनि जावै * बिगड़ी बनत २ बनिजाय ॥
देवै ब्रह्मा दोनों रोवैं * हा दैया गति कही न जाय ॥
सुनी खबरि जब पारिमालै ने * तुरते गिरे धरनि मुरझाय ॥
जितनी रानी चन्देले को * सबने छोड़ि दई डिडकार ॥
मल्हना रानी रोवन लागी * बिपता कछू कही ना जाय ॥
देदे हाँकें रनियाँ रोवें * कोई धीर धरैया नाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कछुक दिना में ताल्हन सैयद * आये नगर महोबे माहिं ॥
सुनी हकीकत गढ़ महुबे को * सैयद गिरे मूर्छा खाय ॥
हाय हाय करि रोवन लागे * अब कहँ मिले धर्मके भाय ॥
कहा बिगारो तिन करिया को * बिन तकसीर सतायो आय ॥
धोखा दीन्हा त्याहि करियाने * करिया तेरो बुरो होइ जाय ॥
अब कहँ पै हैं हम भैयन को * यह दुख दिया मोहि करतार ॥
धावा मारौं जौ माडौ पर * तौ कछु काम बननको नाहिं॥
कठिन लड़ाई है माड़ौ की * कोई शूर बचन को नाहिं ॥
बारह कोसन बबुरी बन है * औ लोहा गढ़ कोट कराल ॥
कहा हकीकत बन्दूकन की * तोप निशाना ना अनिआय॥
देवै बोली तब सैयद से * सैयद सुनो हमारी बात ॥
अब तुम पालौ सब लड़िकनको * सिगरो दुःख देउ बिसराय ॥
कबहूं लायक लड़िका हुइहैं * माड़ौ लिहैं बापके दाँय ॥
तबही चुरिया हम तोड़ैंगी * मिटिहैं तबहिं पेट को डाहु ॥
सुनिके बातें रनि देवै की * सैयद धीर धरो मन माहिं ॥
तीनि महीना के बीते पर * ऊदनि आन धरो अवतार ॥
कछु दिन बीते रनि ब्रह्मा के * सुलिखे आनि धरो औतार ॥
देवै बोली तब बाँदी से * बाँदी सुनले बात हमारि ॥
मुँहना देखौं या लड़िका को * जियते याहि देउ फिंकवाय ॥
रँड़िया हुइ के बेटा जन्मा * कहि हैं सबै नगर नर नारि ॥
बाँदी बोली तब देवै से * रानी सुनो हमारी बात ॥
राजपाट धन सम्पति मिलिहैं * लड़िका फेरि मिलनको नाहिं॥
पुत्र बड़ो फल है दुनियां में * पालौ याहि मेटि तकरार ॥
बहुतक समझाया बादी ने * देवै के मन नाहिं समाय ॥
कर्महीन यह बालक जन्मा * याने डारो बाप मराय ॥
टारौ टारौ मेरे समुहें से * औ जंगल में देहु फिंकाय ॥
फिरिके बाँदी बोलन लागी * रनियाँ बार बार बलिजाउँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बिरवा सींचत सब दुनियां है * यह आगे को ऐहैं काम ॥
बड़े प्यार से याको पालो * माड़ो लिहै बाप के दाँय ॥
मनै हमारे ऐसी आवै * हुइ हैं सबै तुम्हारे काम ॥
ताते तुमको समुझावति हौं * रानी मानो बात हमारि ॥
फेंकन योग्य नहीं यह बालक * सोतुम समुझि लेउ मनमाहिं ॥
बात न मानी यक देवै ने * औ बाँदी से कही सुनाय ॥
हुक्म अदूली जो तू करिहै * तेरो पेटु दिहौं फरवाय ॥
जल्दी लेजा या लड़िका को * औ समुहें से जाउ बराय ॥
लड़िका लीन्हों तब बाँदी ने * औ मल्हना तर पहुँची जाय॥
हाथ जोरि के बाँदी बोली * रानी सुनो हमारी बात ॥
बालक जन्मा रनि देवै ने * औ यह हमसे कही सुनाय ॥
बनमें फेंको या लड़िका को * हमको हँसिहैं सकल जहान ॥
राँड़िया हुइके बालक जन्मा * हमरे जीवन को धिरकार ॥
इतनी बात सुनी मल्हना ने * तब राजाको लियो बुलाय ॥
हाल बतायो सब देवै को * सुनते सुन्न भये परिमाल ॥
केहि मति मारी है देवै की * क्या कहुँ अकिल गई हेराय ॥
बिष्णु बड़े हैं ज्यों देवन में * वेदन साम बेद को गान ॥
तैसेइ पुत्र बड़ो दुनियां में * औ देहीं में नैन प्रधान ॥
छाती चौड़ी या लड़िका को * नैना हिरना की अनुहारि ॥
ऊँचो माथो मुख सुन्दर है * अच्छे लक्षण परे दिखायँ ॥
शूर बीर हुइ है यह बालक * रानी बचन करो परमान ॥
बहुत हेत से याको पालो * मनमें करो न सोच बिचार ॥
इतनी सुनिके मल्हना रानी * मनमें बहुत खुशी होइ जाइ॥
लेके लड़िका मल्हना रानी * पालन करनलगी करि प्यार ॥
एक दूधको ब्रह्मा पीवै * दूजो पिये उदयसिंह राय ॥
दूध पिआवै अमखुरचन से * दोनों पुत्र गोद बैठाय ॥
दिन दिन बढ़न लागनर ऊदनि * योधा भीम सेन औतार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बहुत प्यार से मल्हना पालैं * अमखुरवन से दूध पिलाय ॥
कछु दिन बीते चन्द्र बंश में * उपजा आय पुत्र रणजीत ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा * ढेवा रणजित औ सुलिखान ॥
याहि बिधि प्रगटे सातो लड़िका * शोभा कछू कही ना जाय ॥
खेलत डोलैं सब आँगन में * सबको मल्हना करै दुलार ॥
आल्हा बोले रनि मल्हना से * मैं तरवरिहा पूत तुम्हार ॥
बोली मल्हना तब आल्हा से * जुगजुग जियो लड़ैते लाल ॥
तब तरवरिहा पूत हमारे * पानी पियौं उतारि उतारि ॥
नित नित लाड़करे लड़िकन का * होइके खुशी मल्हनदे रानि ॥
सुन्दर सुन्दर कपड़े लैके * सो लड़िकन को दय पहिराय ॥
कड़ा सोवरन के पहिराये * चीरा कलँगी दई बँधाय ॥
लै तरवारैं छोटी छोटी * सो लड़िकन को दई गहाय ॥
इन्दा नाई चन्द्र बंश को * ताको मल्हना लियो बुलाय ॥
नाई आयो जब महलन में * तब मल्हना ने कही सुनाय ॥
तुम लैजावो इन लड़िकन को * जहँ दरबार चन्द्र सरदार ॥
संग लैलियो उन लड़िकन को * नाई गयो राज दरबार ॥
जबही लड़िका बँगला पहुँचे * तुरतै उठे रजा परिमाल ॥
बहुत प्यारसे लै लड़िकन को * अपनी छाती लियो लगाय ॥
दई मिठाई सब लड़िकन को * औ महलन को दियो पठाय ॥
उठी कचहरी जब राजा की * महलन गये चँदेले राय ॥
यक ललकार दई मल्हना को * रानी आकिल गई तुम्हार ॥
बंश नशैवे को लागी हो * बँगले लड़िकन दियो पठाय ॥
हाथ जोरि कै रानी बोली * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
दूध पूत नाहीं छिपिवे को * नाहीं छिपे सम्पदा राज ॥
अबहितो लड़िका बँगला पहुँचे * भोरहिं खेलत फिरैं शिकार ॥
यह सब लड़िका समरथ हुइहैं * एकदिन प्रगट होय संसार ॥
इतनी बात सुनी मल्हना की * मनमें खुशी भये महराज ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

राम बनावै सो बनि जावै * बिगड़ी बनत बनत बनिजाय ॥
कछुक दिना बीते महुबे में * आये अमर नाथ महराज ॥
खबरि पहुँचि गई रंग महल में * आये अमर गुरू महराज ॥
मल्हना दिवला ब्रह्मा रानी * सब मिलि आयगई तत्काल ॥
करि परिक्रमा अमरनाथ की * सातौ लड़िका करे अगार ॥
लड़िका डारि दिये चरणों में * हाथ जोरिके कही सुनाय ॥
शरण तुम्हारी सब लड़िका हैं * जानो इनहिं आपनो दास ॥
दाया करि कै इन लड़िकन पै * आपन हाथ धरौ महराज ॥
चारौं ओर बसत बैरी हैं * केहि बिधि बनै हमारे काज ॥
यह सुनि बोले अमर नाथ जी * रानी सुनो महोबे क्यार ॥
सोचि त्यागि देउ तुम जियरासे * सब बिधि भलो करे करतार ॥
ये सब लड़िका समरथ होइहैं * होइहैं सबै तुम्हारे काम ॥
साखा चलिहैं बाघन गढ़ में * जिति हैं बड़े बड़े बलवान ॥
इतना कहि कै अमर गुरू ने * लड़िका ठाढ़े करो अगार ॥
सूरत देखी उन लड़िकन की * मनमें खुशी भये गुरु राय ॥
पीठी ठोंकी जब आल्हा की * तब यह कही गुरू महराज ॥
जगमें तुम्हरो साखा चलिहैं * होइहैं जीति समर के माहिं ॥
पीठी ठोंकी फिर ऊदिन की * बोले अमरनाथ तत्काल ॥
बज्रकि देही या लड़िका की * जामें गड़े नाहिं हथियार ॥
हाथ फिराया नर मलिखे पर * काया सबै बज्र होइ जाइ ॥
हाथ बढ़ावन लगे पाँव पर * तब ब्रह्मा ने कही सुनाय ॥
पाँव न छुइयो तुम चेला के * नहिं घटि जैहैं धर्म हमार ॥
यह सुनि बोले अमरगुरू जी * रानी सुनो बनाफर क्यार ॥
सिगरी काया भई बज्र की * याके तलुअन में है काल ॥
शस्त्र लागिहैं जब तलुआ में * तबना बचे तुम्हारो लाल ॥
फिर कर परसा ब्रह्मानँद पर * सारी देह बज्र होइ जाय ॥
तुम्हरि बराबरि को ताहर हैं * नहिं दूजाको बार बिसाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथ फिराया फिरि सुलिखे पर * काया बज्र रूप होइ जाय ॥
तुम्हरी बरनी है धांधू से * ना दूजे से काल तुम्हार ॥
फिर कर परसा नर ढेबा पर * औ रणजित पर फेरो हाथ ॥
बज्रकि काया करी गुरू ने * अपनी मठी पहूँचे जाय ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे डेबा * ब्रह्मा रणजित औ सुलिखान ॥
सातौ लड़िका दिन दिन बाढ़ैं * खेलैं राज महल के माहिं ॥
करै चौकसी रानी मल्हना * सबको देखि देखि खुश होय ॥
राम बनावै सो बनि जावै * बिगड़ी बनत बनत बनि जाय ॥
सोइ बनाई रघुनन्दन ने * समरथ भये बनाफर राय ॥
ताल्हन सैयद बनरस वाले * जो सब लड़िकनके उस्ताद ॥
युक्ति बताई सब लरिबेकी * दीन्हें अस्त्र शस्त्र सिखलाय ॥
आल्हा मलिखे औ बघऊदनि * चौथे ब्रह्मा राजकुमार ॥
चारौ लड़िका भये जोरावर * जिनके बलका नाहिं सम्हार ॥
मलिखे ऊदनि के समुहें पर * बिरला शूर गहे हथियार ॥
जो कोइ देखे इन लड़िकन को * मनमें बहुत खुशी होइ जाय ॥
फिरि तदबीर करी मल्हना ने * सातो लड़िका लिये बुलाय ॥
सात बछेड़ा बड़ी राशिके * सो मँगवाय मल्हनदे रानि ॥
घोड़ा करिलिया बड़ी राशिको * सो आल्हाको दियो गहाय ॥
घोड़ा हरनागर बड़ी राशिको * सो ब्रह्माको दियो गहाय ॥
घोड़ी कबुतरी बड़ी राशिकी * सो मलिखेको दियो गहाय ॥
घोड़ा बेंदुला मल्हना लैके * सो ऊदनको दियो गहाय ॥
घोड़ा मनोरथा मल्हना लैके * सो ढेबाको दियो गहाय ॥
घोड़ी हिरौंजिनि मल्हना लैके * सो सुलखे को दई गहाय ॥
घोड़ी हिरौंजिनि दुसरा लैके * सो रनजीतको दइ पकराय ॥
फिरि हँसि बोली मल्हना रानी * लड़िका सुनो हमारी बात ॥
भोर होत खन झाबर जैयो * बनमें खेलियो जाय शिकार ॥
हिरना लैहे जो जंगल से * सो तखरिहा पूत हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भोर होतही सिगरे लड़िका * अपने घोड़न पर असवार ॥
जायके पहुँचे सब झाबर में * बनमें खेलत फिरैं शिकार ॥
तीनि पहर जंगल में होइगे * ना काहूको मिला शिकार ॥
आल्हा मलिखे ब्रह्मा ढेबा * रणजित और बीर मलिखान॥
ये सब लौटि गये महुबे को * ठाढ़ो ऊदनि करै बिचार ॥
ना शिकार बनमें हम पाई * क्यहिबिधि जैहौं नगरमहोब ॥
तौलो हिरना यक जंगल को * रसबेंदुल के भजो अगार ॥
घोड़ा बेंदुला को धरि दाबो * औ हिरनाके परो पिछार ॥
हिरना पहुँचो सो उर्ई में * औ बगियामें गयो छिपाय ॥
ऊदन ढूंढै वा हिरना को ❀ बगिया गर्द दई करवाय ॥
तब ललकारो तहँ माली ने ❀ औ राजन के राजकुमार ॥
कौन देशके तुम ठाकुर हो * बगिया गर्द दई करवाय ॥
जो सुनि पै हैं माहिल ठाकुर * तुम्हरो घोड़ा लिहैं छिनाय ॥
इतनी सुनिके ऊदनि तड़पे * औ माली से कही सुनाय ॥
देश हमारो नगर महोबा * जहँपर बसत रजा परिमाल ॥
छोट भैया हम आल्हा के * औ ऊदन है नाम हमार ॥
कौनसा क्षत्री है दुनियाँ में * जो यह घोड़ा लेय छिनाय ॥
इतनी कहिके ऊदनि चलिभै * औ महुबेकी पकड़ी राह ॥
एक पहर केरे अरसा में * गढ़ महुबे में पहुँचे आय ॥
दूसरेदिन सब लड़िका चलिभै * बनमें खेलन गये शिकार ॥
हिरना मारो सबने मिलिके * सो मल्हना के धरो अगार ॥
करैं सवारी सब घोड़न पर * नित २ खेलन जायँ शिकार ॥
सुनिसुनि बातैं सब लड़िकन की * बहुतै खुशी होयँ परिमाल ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे सुलखे * माड़ौ लिहैं बापके दायँ ॥
तौन लड़ाई आगे लिखिहैं * यारो सुनियो कान लगाय ॥
सुमिरन करिके नारायण को * जो दीननपर रहत दयाल ॥
भोला नाथ मनाय हिये महँ * अब माड़ौका लिखौं हवाल ॥

॥ इति महोबे की लड़ाई समाप्तः ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ माड़ौ की लड़ाई ॥

दो –सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश॥

❀ आल्हा ❀

अलख निरंजन को सुमिरणकरि ✻ भोरहि लेउ रामको नाम॥
बहुरि सुमिरिये नारायण को ✻ जाते होय सिद्धि सब काम॥
सन्ध्या तारनि तुमको गैये ✻ घर घर दीपक दिये बराय॥
लिखौं लड़ाई अब माड़ौ की ✻ जगदम्बे के चरण मनाय॥
चारौ युगसे है चलि आई ✻ यह मरजाद प्रकट संसार॥
जो कोउ मारे जग काहू को ✻ ताको हनत आपु करतार॥
बिन कसूर मारे करिया ने ✻ सोवत दस्सराज बलराज॥
समय आयगौ जब करिया को ✻ मारौ गयो मेटि सब राज॥
जिनके पुत्र होत अन्यायी ✻ निश्चय सबी गोत्र नशिजाय॥
जिनके पुरुषा होयँ पातकी ✻ सबही बर्कत जाय नशाय॥
जिनके बेटा होय सुकर्मी ✻ उनको सुयश बढ़ै संसार॥
जिनके पुरुषा राम भक्त हौं ✻ तिनको सदा बढ़ै परिवार॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगे मैं ✻ गढ़ माड़ौ को कहौं हवाल॥
नारायण प्रसाद को आल्हा ✻ चित दै सुनो वृद्ध अरुबाल॥
गाँसी बखानौं बघ ऊदन की ✻ औ तलवारि बीर मलिखान॥
शगुन बखानौं मैं ढेबा को ✻ सैयद केर युद्ध घमसान॥
कछुक बखान करौं ब्रह्मा को ✻ जो महुबे को राजकुमार॥
बिजय बखान करौं आल्हा की ✻ नौ सै झंडा चलत अगार॥
बारह बर्ष केरि उम्मिरि में ✻ ऊदन सबै सजे हथियार॥
घोड़ा बेंदुला को मँगवायो ✻ तापर फाँदि भये असवार॥
जायके पहुँचे सो पनिघट पर ✻ विषधर उरई के मैदान॥
बोले ऊदन पनिहारिन से ✻ घोड़े पानी देउ पियाय॥
बोली बाँदी तब माहिल की ✻ घोड़े पानी पिऐ हैं नाहिं॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कौन गाँव के तुम ठाकुर हो * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोले ऊदन तब बाँदी ते * जहँ पर बसत रजा परिमाल ॥
हम हैं ठाकुर गढ़ महुबे के * औ ऊदन है नाम हमार ॥
बोली बाँदी तब ऊदन ते * ऊदन लौटि महोबे जाउ ॥
जो सुनि पैहैं माहिल राजा * तुम्हरो घोड़ा लिहैं छिनाय ॥
सुनतै गुस्सा हुइ ऊदन ने * करमें तुरते लई गुलेल ॥
जितनी गागरि थीं पनिघट पर * सब गुल्लन सो दई गिराय ॥
हाँकि बछेरा ऊदन चलि भये * बाँदी गई माहिल पै धाय ॥
माहिल राजा तुमरे राज में * ऊदन इज्जति लई हमार ॥
जितनी गागरि थीं पनिघट पर * सो ऊदन ने दई गिराय ॥
सुनतै माहिल गुस्सा हुइके * पाती लिखी चँदेले काहिं ॥
तुम्हरे घर के नौकर चाकर * हम से रारि मचावत आय ॥
जितनी गागरिथीं पनिघट पर * सो ऊदन ने दई गिराय ॥
कब से ऊदन भै तरवरिहा * माड़ौ लेयँ बाप को दाउ ॥
पाती लैके धामन चलि भौ * औ महुबे में पहुँचो आय ॥
पाती दीन्हीं चंदेले को * बाँचन लाग रजा परिमाल ॥
शंका मानी मन अपने में * उत्तर लिखन लाग तत्काल ॥
जैसेइ लरिका हमरे घर के * तैसेइ लरिका लगे तुम्हार ॥
गागरि फोरी जो माटी की * तो सोने की देउँ पठाय ॥
चर्चा करिओ ना माड़ौं की * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
लिखिके पाती दइ धामन को * धामन उर्इ पहुँचा जाय ॥
पाती बाँची माहिल राजा * मुखसे कछु न आई बात ॥
इक दिन ऊदन गे उरई फिरि * फुल बगिया में पहुँचे जाय ॥
जोड़ी मारी इक हिरना की * बगिया गर्द दई करवाय ॥
माली पहुँचो तब अभई पै * औ बगिया की कहो हवाल ॥
अभई आय कही ऊदन ते * क्यों तुम उधम मचायो आय ॥
जल्दी चले जाउ समुहें से * नहिं घोड़ाते दिहौं गिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बाँह पकरिके तब अभई को * झटका दियो उदैसिंह राय ॥
हिरना लैके ऊदल चलि भै * माहिल खबर सुनी तत्काल ॥
गुस्सा हुइ तब माहिल आये * औ बगिया को देखो हाल ॥
गादी लैके उन अभई को * औ पलकी में दौ पौढ़ाय ॥
सो पठवाय दियो महलन में * लिल्ली घोड़ी भये सवार ॥
जायके पहुँचे गढ़ महुबे में * जहँ दरबार चँदेले क्यार ॥
करी बन्दगी परिमाले को * राजा चौकी दई डराय ॥
बैठ के माहिल बोलन लागे * तुम सुनि लेउ रजा परिमाल ॥
तुमने पालो है ऊदन को * दूजी करो हमारे साथ ॥
उई केरी फुल बगिया सब * ऊदन गर्द दई करवाय ॥
बाँह उखारि दई अभई को * दाखि छुहारे दिये उजारि ॥
कब से ऊदन भये जुरावर * माड़ौ लेयँ बाप के दाँव ॥
सुनते राजा बोलन लागे * हरजा दूनौं दिहौं तुम्हार ॥
चर्चा करो नाहिं माड़ौ की * कलहा दस्सराज को लाल ॥
कान अवाज परी ऊदन के * हाथ जोरिके पूछन लाग ॥
को है करिया माड़ौ वारो * केहिने मारो बाप हमार ॥
करी बहाना तब राजा ने * सिलहट जूझे बाप तुम्हार ॥
ऊदन पूछो तब माहिल ते * साँचो हाल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल तब ऊदन ते * तुम देवे से पूछो जाय ॥
ऊदन पहुँचे तब माता पै * हाथ जोरिके कही सुनाय ॥
साँचो हाल हमहिं बतलाओ * नाहीं पेटु मारि मरि जाउँ ॥
सुनतै देवै मनमें सोची * ऊदन लई कटारी काढ़ि ॥
पेटु मारि अबहीं मरि जैहौं * नहिं सब हाल देउ बतलाय ॥
छीन कटारी लइ देवै ने * औ सब हाल सुनावन लाग ॥
रोय रोय सब हाल सुनायो * औ फिर कही दिवलदेरानि ॥
बारह वर्ष भये रँडिया हौं * चूरी एक उतारी नायँ ॥
जब क्यहु लायक लड़िका हुइहैं * माड़ौं लिहैं बापको दाँव ॥
चूरि उतरिहौं तब सागर पर * तब छाती को डाहु बुझाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अबहिं उमिरि तुम्हरी थोरी है * ताते बैठि रहो चुपसाधि ॥
ऊदन तड़पे तब गुस्सा हुइ * माता हम मनिबे को नाहिं ॥
बदलो लेहैं हम ददुआ को * माड़ौ खोदि करैहैं ताल ॥
बंश नशैहैं हम जम्बै को * तब छाती को डाह बुताय ॥
बोली देवै तब ऊदन ते * बेटा सुनो लड़ैते लाल ॥
कठिन मवासी गढ़ माड़ौ है * औ लोहागढ़ कोट कराल ॥
बारह कोस की बबुरी बन है * रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * माता हुक्म देउ फरमाय ॥
देवै पहुँची लै ऊदन को * जहँ पर रहैं मल्हनदे रानि ॥
बात सुनाई तहँ देवै ने * तबमल्हना समुझावन लागि ॥
कछु दिन बीते पर समरथ हुइ * माड़ौं लिओ बापको दाउँ ॥
हाथ जोरि तब ऊदन बोले * माता हम मनिबे के नाहिं ॥
हँसी खुशी से आज्ञा दैदेउ * लड़िके लेउँ बापको दाउँ ॥
हुक्म देदियो तब मल्हना ने * जुग जुग जिओ लड़ैते लाल ॥
सवा लाखको कंगन लैके * सो ऊदन कर दियो बँधाय ॥
पीठी ठोंकी रनि मल्हना ने * माड़ौ लेउ बापको दाँव ॥
ऊदन संग लिये देवै ने * औ आल्हा तर पहुँची जाय ॥
सैयद बैठे थे तहँना पर * तिनसे देवै लगी बतान ॥
जेठ हमारे तुम लागत हौ * हमरी बात सुनो मनलाय ॥
ऊदन बिचले हैं माड़ौं को * हमरी कही न मानत बात ॥
संगहिं जैयो तुम ऊदन के * माड़ौं जूझ खिलैयो जाय ॥
बोले ऊदन सुनिआल्हा से * दादा जल्द होउ तैयार ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * भैया धीर धरो मनमाहिं ॥
बदलो लेहैं हम दादा को * तब छाती को डाहु बुताय ॥
समुहें सैयद जो बैठे थे * तिनसे ऊदन कही सुनाय ॥
बाप बरोबरि तुम हमरे हौ * अब गाढ़े में आवो काम ॥
सुनतै ताला सैयद बोले * बेटा सुनो उदयसिंह राय ॥
कठिन मोरचा जहँ पर देखो * तहँ सैयद को देउ बताय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनिके ऊदनि बहुत खुशी भै * औ ढेबा से लगे बतान ॥
सगुन बताय देउ भैया तुम * ढेबा सगुन विचारन लाग ॥
बोलो ढेबा उदैसिंह से * माड़ौ काम सिद्धि हुइजाय ॥
रूप बनावौ तुम जोगिन को * माड़ौ सबै लेउ पँजियाय ॥
हालु जानिके सब माड़ौ को * तुरतै लेउ बाप को दाउँ ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * बहुतक थान लिये मँगवाय ॥
सो रंगवाय लिये गेरू से * पाँच गुदरिया लई सिलाय ॥
हीरा मोती मूँगा लैके * सो गुदरिन में दिये टँकाय ॥
कड़ा सोबरन के हाथन में * टोपिन जड़े जवाहिर लाल ॥
बाइस पर्तन को गुदरी है * जिनमें छिपे पांच हथियार ॥
कुंडल सोहत हैं कानन में * माला लिये सुमरनी हाथ ॥
आल्हा ऊदन मलिखे ढेबा * पँचयें सैयद भये तयार ॥
बोले मलिखे तब आल्हा से * दादा सुनो हमारी बात ॥
अलख जगावो गढ़ महुबे में * ना पहिचाने मल्हनदे माय ॥
तब हम जनिहैं अपने मनमें * माड़ौ लिहौ बाप को दाउँ ॥
सुनी बात जब यह मलिखे की * सब के मन में गई समाय ॥
लइ सारंगी ताल्हा सैयद * आल्हा डमरू लई उठाय ॥
लौ इकतारा नर मलिखे ने * ढेबा खँजरी लई उठाय ॥
लई बांसुरी बघऊदन ने * औ चलिभये एकही साथ ॥
राग रागिनी गावन लागे * जिन में उठे बीर बैताल ॥
डगरत चलि भये पाँचो योगी * रंग महल तर पहुँचे जाय ॥
मल्हना आई दरवाजे पर * औ जोगिनतन रही निहारि ॥
ना पहिचानो उन जोगिन को * भिक्षा देके पूछन लागि ॥
कौन देशके तुम जोगी हौ * काहे डारे मूड़ मुड़ाय ॥
हँसि के ऊदन बोलन लागे * माता सुनो हमारी बात ॥
धोखे रहियो ना जोगिन के * हमरो नाम उदैसिंह राय ॥
यहसुनि मल्हना बहुत खुशीभई * जुगजुग जिओ लड़ैते लाल ॥
अब हम जानी अपने मन में * माड़ौ लिहौ बापको दाउँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनिके जोगी चलि भये * जहँपर महल दिवलदे क्यार ॥
देवै आई दरवाजे पर * औ जोगिनते लगी बतान ॥
कौन देश से तुम आये हौ * सुनते ऊदन कही सुनाय ॥
ना पहिचानो माता तुमने * माड़ौ लिहैं बाप को दाउँ ॥
हँसि के देवै बोलन लागी * अबहम जानी बात तुम्हार ॥
भुजबल पूजि दिये जोगिन के * पीठी ठोंकि उदैसिंह क्यार ॥
बोली देवै बहुत खुशी हुइ * हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार ॥
युद्ध देखिहैं गढ़ माड़ौ का * जोगी लश्कर पहुँचे जाय ॥
बाना बदलो रजपूती का * तुरत नगड़ची लियो बुलाय ॥
बीरा दैके सैयद बोले * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा गढ़ महुबे में * लश्कर सजे बनाफर क्यार ॥
बरनी हुइगइ गढ़ माड़ौ को * अबना राखो देर लगाय ॥
बोलि दरोगा तोपन वारो * चीरा कलँगी दई इनाम ॥
तोपैं सजवायो जल्दी से * सो चरखिनपर देउ चढ़ाय ॥
चला दरोगा हुक्म पाय के * तोपैं तुरत सजावन लाग ॥
तोप कालिका तोप संकटा * तोप भवानी लई सजाय ॥
हनू हंकारनि गर्भ गिरावनि * किला तुड़ावनि लई सजाय ॥
सूर्य लपकनि चन्द्र झपकनि * बुर्ज मरोरनि लई सजाय ॥
बिजुली तड़पनि पर्वत ढावनि * भैरो तोप लई सजवाय ॥
तोप लदमणा को सजवायो * बंबकी तोप लई सजवाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
बोलि दरोगा हाथिन वारो * सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
हाथी सजवावौ जल्दी से * जिनको सजत न लागै बार ॥
हुक्म सुनतही चला दरोगा * हाथी सबै सजावन लाग ॥
भौंरा गज अंगद पंगद गज * भूरा हाथी लिये सजाय ॥
हाथी एक दन्ता सजवायो * औदुइ दन्ता लिये सजाय ॥
मकुना हाथी सब सजवायो * मुड़िया हौदा लिये कसाय ॥
जड़े जवाहिर अम्मारिन में * झालर लगी मोतियन क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यक यक हाथी के हौदा में * बैठे चारि चारि असवार ॥
बोलि दरोगा घोड़न वारो * हाथन कड़ा दियो डरवाय ॥
घोड़ा साजो सब जल्दी से * अब ना राखो देर लगाय ॥
हुक्म पाइके चला दरोगा * घोड़ा सबै सजावन लाग ॥
कच्छी मच्छी औ दरिआई * ताजी तुर्की लियो सजाय ॥
सब्जा सुर्खा घोड़ा साजे * पंच कल्यानी लिये सजाय ॥
लक्खा गर्रा हरियल साजे * औ मुख भंजन करे तयार ॥
श्याम कर्ण घोड़ा सजवाये * घोड़ा सफेदा लिये सजाय ॥
घोड़ा पचरंगा सब रंगा * घोड़ा हिरैंजिन लई सजाय ॥
केशरि डारि दई मेहदी में * चारौ सुम्म दिये रँगवाय ॥
पूँछ रँगाय दई घोड़न की * शोभा कछू कहीना जाय ॥
धरि कठिलानी तिन घोड़न पर * ऊपर जीन दिये कसवाय ॥
लगे बकसुआ हैं सोने के * औ रेशमके तंग कसाय ॥
लैलैं कलँगी मोती चूरकी * सो कल्लन पर दई धराय ॥
डेढ़ पहर केरे अरसा में * सिगरी फौज भई तैयार ॥
मलिखे ऊदन बदलति आये * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
ऊदन बोले सब क्षत्रिन से * क्षत्रिउ सुनो हमारी बात ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगो हमार ॥
कठिन लड़ाई है माड़ौ की * अब गाढ़ेमें आवो काम ॥
जिनको प्यारी घर तिरिया हों * सो सब तलब लेउ घर जाउ ॥
जिन्हें पियारी परम भगौती * सो सब चलो हमारे साथ ॥
जीतिके ऐहौ जब माड़ौ से * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
बोले क्षत्री तब ऊदन से * हमना धरिहैं पाँव पिछार ॥
जहाँ पसीना तुम्हरो गिरिहैं * तहँ दै दिहौं रक्तकी धार ॥
इतनी कहिके सिगरे क्षत्री * अपनी करन तयारी लाग ॥
पाँचो कपड़ा क्षत्री पहिरे * पाँचो बांधि लिये हथियार ॥
पहिरे नीचे से कवची बंद * औ ऊपर से कुलह कटार ॥
तिनके ऊपर बख्तर पहिरे * जामें नाहिं गड़ै तरवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पगड़ी सुरखै हैं माथे पर * ऊपर कुंडी लई औंधाय ॥
आल्हा सैयद बनरस वारे * सोऊ साजि भये तैयार ॥
सजिके ठाढ़े भै ब्रह्मानँद * औ सजिगये बनाफर राय ॥
यक यक जिरहैं दुइ दुइ वख्तर * कम्मर दुइ बाँधे तरवार ॥
पहिरे जामा सबै केसरिया * औ माथेपर तिलक सुहाय ॥
सुरख पगड़िया शिरपर सोहै * आ कलगी की अजब बहार ॥
सुमिरन करिके जगदम्बे को * मनियां सुमिरि महोबे क्यार ॥
जायके पहुँचे सब राजा पै * दोनों हाथ जोरि रहिजाय ॥
आज्ञा दैदेउ अपने मुँहसे * माड़ौ लेयँ बापके दाँव ॥
पीठी ठोंकि दई राजाने * तुम्हरे काम सिद्धि हुइजाय ॥
बेटा लड़ियो हुशियारी से * सो तुम सुनो युद्धकी बात ॥
नीति धर्मसे जो कोउ बर्तै * ताकी कबहुँ न होवे हारि ॥
बालक बूढ़े को ना मारे * ना निर्बल पर करै प्रहार ॥
हो हा खाते को ना मारे * ना तिरिया पर डारे हाथ ॥
पहिली चोट करै कबहूँ ना * ना मागे के परै पिछार ॥
ताको मारै ना काहू बिधि * जाके पास नाहिं हथियार ॥
पाँव पिछारी को न हटावै * ताको जीति होय सब काल ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * औ राजास कही सुनाय ॥
यह सब बातें हम सब मनिहैं * चाहे प्राण रहे के जाय ॥
इतनी कहिके सबिया चलिभये * औ मल्हना ढिग पहुँचे जाय ॥
चरण लागिकै रनिमल्हना के * औ माथे से लियो लगाय ॥
पीठी ठोंकी रनि मल्हनाँ ने * तुम्हरे काम सिद्ध हुइजाय ॥
चरण लागिकै रनिमल्हना कँ * अपने लश्कर पहुँचे जाय ॥
बोल नगड़ची को बीरा दे * कूच का डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * लश्कर चला महोबे क्यार ॥
घोड़ी सिंहिनि पर सैदय हैं * दाढ़ी रहो तोंद पर छाय ॥
घोड़ी करिलिया पर आल्हा हैं * घोड़ी कबुतरी पर मलिखान ॥
घोड़ा हरनागर पर ब्रह्मानँद * देवा मनुरथा पर असवार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बेंदुला घोड़ा पर ऊदन हैं * डोला साथ दिवलदे क्यार ॥
कूच करिदियो गढ़ माड़ौ को * क्षत्रिन गिनी धूपना छाँह ॥
सत्रह दिन को धावा करिके * बबुरी बनमें पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दिये धूरे पर * ऊँचे ठाढ़े किये निशान ॥
तंग छोरि दौ सब घोड़न के * हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
फैटैं छुट गईं रजपूतन की * अपने छोरि धरे हथियार ॥
तंबू लगिगै बन्नातन के * झंडन रही लालरी छाय ॥
बारह कोशी चौगिर्दा में * लश्करपरी महुबियन क्यार ॥
दस दिन बीति गये डेरन में * इक दिन कही उदैसिंहराय ॥
कौन नींद दादा सोवत हो * अब चढ़ि लेउ बाप को दाउँ ॥
बोले आल्हा तब ढेबा से * भैया सगुन देउ बतलाय ॥
बोले ढेबा तब आल्हा से * दादा अबही होउ तयार ॥
पहिले चलिके अलख जगावो * तुम्हरे काम सिद्धि हुइजाय ॥
इतनी सुनतै मुनि आल्हा ने * पाँचौ गुदरी लई मँगाय ॥
आल्हा ऊदन ढेबा सैयद * पचयें सजे बीर मलिखान ॥
ब्रह्मानंद आँड़े लश्कर में * औ देवै तर पहुँचे आय ॥
आरति सजि के तब देवै ने * सो पाँचो पर धरी उतार ॥
माथ नाय कै तब देवै को * पांचो जोगिन कियो पयान ॥
बजि सारंगी तब सैयद की * आल्हा डमरू दई बजाय ॥
बजा इकतारा नर मलिखे की * ढेबा खँझरी दई बजाय ॥
बजी बाँसुरी बघ ऊदन की * गावन लागे राग मलार ॥
गावत लाँघि गये बबुरी बन * औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
फाटक खोलि दियो दरमानी * जोगी ड्योढ़ी पहुँचे जाय ॥
समुहें अनुपी को देखत खन * जो जम्बे को राजकुमार ॥
बायें कर से करी बन्दगी * तब अनुपी ने कही सुनाय ॥
मारि निकारो इन जोगिन को * बायें हाथ से करो सलाम ॥
बोले ऊदन तब अनुपी से * राजा है कहँ ज्ञान तुम्हार ॥
जौन हाथ से जपैं सुमिरनी * तासो कैसे करैं सलाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हमरो जोग भंग हुई जावै * यह सुनि टोडर लगे बतान ॥
कर्तब के पक्के जोगी हैं * इनको भिक्षा देहु मँगाय ॥
सुनते जोगी बहुत खुशी भै * अपने बाजो दिये बजाय ॥
गावन लागे राग रागिनी * अनुपी मोहि मोहि रहिजायँ ॥
बोले अनुपी सुनो जोगिओ * कछुदिन इहाँ करो बिसराम ॥
बोले ऊदन तब अनुपी से * राजा सुनो हमारी बात ॥
बहता पानी रमता जोगी * इनको एक ठिकाना नाहिं ॥
भिक्षा मँगिहैं हम माड़ौं में * जे हैं हिंगलाज महराज ॥
इतनी सुनिके अनुपी ठाकुर * जोगिन तोड़ा दियो गहाय ॥
चलिभै जोगी तब माड़ौको * औ फाटकपर पहुँचे जाय ॥
बोले जोगी दरमानी से * फाटक जल्द देउ खुलवाय ॥
भिक्षा मँगिहैं हम माड़ौं में * भोरहिं कूच दिहैं करवाय ॥
फाटक खोलो दरमानी ने * जोगी पहुँचे बीच बजार ॥
लगी दुकाननकी शोभा तहँ * बैठे बड़े बड़े उमराव ॥
सुनी रागिनी उन जोगिन की * बाजा सुने जोगियन क्यार ॥
मोहित हुइ गे नरनारी सब * सबने बढ़ि बढ़ि दियो इनाम ॥
गावत चले जात जोगी तहँ * सब पनिघट पर पहुँचे जाय ॥
रूपा बांदी रनि कुशला की * देखो रूप जोगियन क्यार ॥
मोहित होइके बाँदी चलि भइ * औ रानी ढिंग कही सुनाय ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये * जिनके रूप न बरने जाय ॥
बोली कुशला तब बाँदी से * रूपा अकिल गई तुम्हारि ॥
रूप कि अगरी मेरि बेटी है * ऐसो रूप नाहिं संसार ॥
हाथ जोरि तब बाँदी बोली * रानी बचन करो परमान ॥
हुक्म तुम्हारो जो मैं पाऊँ * अबही उनको लाउँ बुलाय ॥
हुक्म दैदियो तब रानी ने * बाँदी गई जोगियन पास ॥
हाथ जोरिके बाँदी बोली * जोगिउ चलो हमारे साथ ॥
संगहि चलिभये पाँचो जोगी * औ ड्योढ़ी में पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कछुक बिलम जाउ दरवाजे पर * यह कहि बाँदाँ गई अगार ॥
घोड़ी पपीहा गज पचशावद * सो आल्हा ने लइ पहिचान ॥
आगे बढ़िगे पाँचो जोगी * दुसरे फाटक पहुँचे जाय ॥
पत्थर कोल्हू तहँ पर देखो * पेड़ बर्गदा परो दिखाय ॥
टँगी खुपरिया जो बर्गद में * सो आल्हा ने लई पहिचान ॥
तिनहिं देखि आल्हा रोये तब * पूछन लगे उदयसिंह राय ॥
बोले आल्हा तब ऊदन से * तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय ॥
टँगी खुपरिया है दादा की * औ चाचा की परत दिखाय ॥
यहै हड़ावर है बुर्जी पर * जो कोल्हू में दई पिराय ॥
सुनतै ऊदन खुपरी पकरी * औ छाती से लई लगाय ॥
रोयके ऊदन बोलन लागे * दादा धीर धरो मन माहिं ॥
बदला लीन्हें बिन ना जैहैं * चाहे प्राण रहे के जाय ॥
बोली आभा दस्सराज की * धनि २ मेरे लड़ैते लाल ॥
अब हम जानी अपने मनमें * हमरो गया दिहो करवाय ॥
तौलौ बाँदी आय पहूँची * जोगी महलन गई लिवाय ॥
रंग महल देखो जम्बै को * जोगी बहुत खुशी हुइ जाय ॥
पर्दा करिके रानी बैठी * औ जोगिन तन रही निहारि ॥
तब ललकारो रानी कुशला * बाँदी देहौं पेटु फराय ॥
ये तो लरिका हैं राजन के * ये ना जोगी परत दिखाय ॥
सुनतै बोले ऊदन बाँकुड़ा * रानी सुनो हमारी बात ॥
सूखा परिगौ देश हमारे * माता बेचा जोगियन हाथ ॥
रूप विधाता हमको दीन्हा * ताको कैसे होय छिपाव ॥
बोली रानी तब जोगी से * अब तुम नाच देउ दिखलाय ॥
बजी सरंगी तब सैयद की * बाजी बेन बीर मलिखान ॥
डमरू बाजो तहँ आल्हा को * ढेबा खँजरी दई बजाय ॥
बजी बाँसुरी तब ऊदन की * शोभा एक न बरनी जाय ॥
राग रागिनी गावन लागे * अपनी तान सुनावन लाग ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

फिरि २ ऊदन नाचन लागे * जैसे बन में नचै पुछारि ॥
परदा लौटा तब रानी ने * औ जोगिनको देखन लागि ॥
हार नौलखा रानी पहिरे * सो ऊदन के परी निगाह ॥
डारि मोहनी दइ ऊदन ने * रानी मोहि मोहि रहिजाय ॥
मोती मँगवाये रानी ने * सो थारी में लई धराय ॥
बढ़िके देनलगी जोगिन को * जोगिउ तीनि जन्म लौखाउ ॥
मुठी एक मोतिन को लैके * ऊदन नथुनन लई लगाय ॥
कौन रूख में यह लागत है * भौरे बने उदय सिंहराय ॥
देखि हाल यह रानी सोची * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
फल नाहीं ये काहु रूखके * इनको मोती कहत जहान ॥
इतनी सुनते ऊदन तड़पे * मोती सबै दिये बिथराय ॥
हमको मोती ये चहिये ना * इनको लगत चोर बटमार ॥
देउ निशानी कछु रानी तुम * जैसे दई तिलक दे रानि ॥
तिलका रानी गढ़ कनउजकी * ताने दियो नौलखा हार ॥
हार नौलखा तुमहू दैदेउ * तुम्हरो हुइहैं नाम जहान ॥
सुनिके रानी सोचन लागी * यामें नाहिं लगे कछु दाम ॥
लूट में आयो यह हरवा है * सो जोगिन को दिहौं इनाम ॥
सोचिकै रानी बोलन लागी * जोगिउ तनिक बिलमि तुम जाउ॥
देखि तमाशा बेटी लेवै * तब हम दिहैं नौलखा हार ॥
भेजी बाँदी तब रानी ने * तू बेटीको लाउ बुलाय ॥
बाँदी पहुँची सतखण्डा पर * औ बिजमाको दियो जगाय ॥
तुमहिं बुलायो है रानी ने * महलन भयो तमाशा आय ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
सुनतै समुझि गई बिजमा तब * आये महल उदैसिंह राय ॥
पाँच पान को बीरा लैके * बिजमा तहाँ पहूँची आय ॥
तुरतै बीरा दौ ऊदन को * ऊदन बीरा लियो चबाय ॥
मोहित हुइके दोनों गिरि गये * दोउन लीन्हीं बात बनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बाजा बजन लगे जोगिन के * अपनो तान सुनावन लाग ॥
कुशला रानी मोहित हुइके * दीन्हा तुरत नौलखाहार ॥
चलिभये जोगी तब महलन से * तुरतै उठी बिजैसिनि रानि ॥
पहुँचे जोगी तब खिरकी ते * तहँई बिजमा खड़ी अगार ॥
बाँह पकरिलइ त्याहि ऊदन की * सतखंडा पर पहुँची जाय ॥
पलँग बिछोथो जहँ अंटापर * तापर ऊदन दै बैठारि ॥
बोली बिजमा तब ऊदन से * तुम्हरो उदैसिंह है नाम ॥
अभई लड़िका जो माहिल को * ताको सिरउज भयो बिआहु ॥
तुम बरात में तहँ आये थे * बाँधे शीश बैजनी पाग ॥
मड़ये भीतर हम ठढ़ी थी * तुमहुँ तहाँ गये नगिचाय ॥
मारी कुहना तुम छाती में * चोली गई हमारी फाटि ॥
सूरति देखी जब तुम्हरी हम * तब अपने मन कियो बिचार ॥
ब्याह होय हमरो ऊदन सँग * नातौ रहौं जन्मभर क्वाँर ॥
बहुत बर्त साधे तुम्हरे हित * हमरे हिये बसो दिन राति ॥
सुनतै ऊदन बोलन लागे * तुमने हमहिं लियो पहिचानि॥
तुम्हरे कारन जोगी हुइ के * हम माड़ौ में पहुँचे आय ॥
यह सुनि बिजमा बोलन लागी * अबही भामरि लेउ डराय ॥
बोले ऊदन तब बिजमा ते * प्यारी धीर धरो मनमाहिं ॥
ब्याह न करिहैं हम चोरीसे * ना हम करैं चोरको काम ॥
जो तुम ब्याहु कियो चाहौ तो * सबिया हाल देउ बतलाय ॥
बदलो लीहैं हम दादा को * तादिन हुइहैं ब्याह तुम्हार ॥
बोली बिजमा तब ऊदन से * गंगा करो हमारे साथ ॥
होय भरोसा तब हमरे मन * तुमको हाल देउँ बतलाय ॥
सुनतै ऊदन खैंचि गंग तब * बोले बचन करो परमान ॥
बिना बिआहे जो तोहि छोड़ौं * तो मोहिं लौटि भगौती खाय ॥
सुनि प्रसन्न हुइ बिजमा बोली * अब तुम हाल सुनो मनलाय ॥
कठिन किला है लोहागढ़ को * जहँ है जम्बे बाप हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बिना सुरँगके नहिं टूटन को * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
किला दूसरो झाँसी गढ़ है * तहँपर तपै करिंघा राव ॥
बारहदरी कठिन बैठक है * जहँ है सूरज भाई हमार ॥
तोप लगाओ तुम बबुरी बन * तुम्हरो काम सिद्धि हुइ जाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदन चलिभे * औ द्वारे पर पहुँचे आय ॥
आल्हा पूछन लगे हाल तब * ऊदन हाल दियो बतलाय ॥
बात करत सब अगे चलिभे * औ लोहा गढ़ पहुँचे जाय ॥
फौज कटीली औ तोपैं सब * देखो तहाँ बनाफर राय ॥
पनियाँ सोते खन्दक देखे * तब आपुस में लगे बतान ॥
कैसे टूटैहैं लोहा गढ़ यह * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
मरजी हुइहै नारायण की * माड़ौं लिहैं बापको दाउँ ॥
जोगी पहुँचे जब ड्योढ़ी पर * अपने बाजा दिये बजाय ॥
फाटक खोली दरमानी ने * जोगी भीतर पहुँचे जाय ॥
लगी कचहरी जहँ जम्बै की * जोगी तान सुनावन लाग ॥
राजा जम्बै के दहिने पर * बैठो बीर करिंघा राय ॥
पहुँचे जोगी जब समुहें पर * बायें करसे करी सलाम ॥
गुस्सा हुइ तब राजा बोले * इन बायें कर करी सलाम ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * दहिने हाथ जपैं हरिनाम ॥
तौन हाथ से करैं बन्दगी * हमरो जोग भंग हुइ जाय ॥
यह सुनि बोले राजा जम्बे * जोगिउ साँचो ज्ञान तुम्हार ॥
पक्के गुरुके तुम चेला हो * अब तुम करतब देउ दिखाय ॥
गावन लागे तब जोगी तहँ * बंगला दई मोहनी डारि ॥
देन इनाम लगे राजा तब * बोले तुरत उदयसिंह राय ॥
हमना भूखे हैं दौलत के * जाको लगत चोर बटमार ॥
लाखा पातुर जो तुम्हरी है * ताको नाच देउ दिखराय ॥
बात मानिके तब जम्बे ने * लाखा पातुर लई बुलाय ॥
नाचन लागी लाखा पातुर * अपनी तान सुनावन लागि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

लाखा पातुर नाचत आई * औ जोगिनतर पहुँची आय ॥
हार नौलखा ऊदन दीन्हों * लाखा तुरत लियो पहिचान ॥
सूरत देखी जब सैयद की * तबत्यहिजानिलियो सबहाल ॥
करो इशारा लाखा पातुर * तुमसब कूच जाउ करवाय ॥
समझि इशारा जोगी चलिभे * फाटक निकरि गये बापार ॥
लाखा पातुर हार छिपावै * नाचै भाव बताय बताय ॥
आँचर उड़ो जबहिं लाखाको * हरवा चमकि चमकि रहिजाय ॥
हरवा देखि लियो राजाने * तब लाखासे पूछन लाग ॥
है यह हरवा गढ़ महुबे को * पायो कहाँ नौलखा हार ॥
यहसुनि बोली लाखा पातुर * यहँपर कबहुँ न मिलो इनाम ॥
राह चलन्ते योगी आये * सो दैगए नौलखा हार ॥
इतनी सुनतै परले हुइगई * राजा बहुत गये घबराय ॥
बोले राजा तब करिया से * अबहीं तुम महलन लौ जाऊ ॥
जल्दी लावो हार नौलखा * हमरो नजर गुजारो आय ॥
पहुँचो करिया तब महलनमें * तहँ माता ते कही सुनाय ॥
हमको भेजो है दादा ने * लावो जाय नौलखा हार ॥
करो बहाना तब कुशला ने * पोहन गये नौलखा हार ॥
बोली कुशला तब करिया से * हमरी मत मारौ भगवान ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये * महलन दई मोहनी डार ॥
हार नौलखा हमसे माँगो * हमने हरवा दिये उतारि ॥
इतनी सुनतै करिया लौटा * औ राजासे कही हवाल ॥
बोले राजा तब करिया से * तुम जोगिनको लावो बाँधि ॥
चलिभौ करिया तब बँगला से * खटकत जाय भुजनपर ढाल ॥
जूता लपेटा मर्कत आवै * जाको चलत न लागै बार ॥
देखत हाँक दई जोगिन को * जोगिउ सुनो हमारी बात ॥
तुमहिं बुलायो है राजाने * सुनते मलिखे कही सुनाय ॥
हुक्म नहीं है हमरे गुरुकी * जो हम धरैं पिछारी पाँव ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनतै करिया ने ललकारो * अपनो खैंचि लई तलवार ॥
पाँव अगारी जो तुम धरिहौ * अबहीं दिहौं जानसे मार ॥
इतनी सुनते ऊदन तड़पे * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
मलिखे खैंचत ढेबा खैंची * औ करिया को घेरो जाय ॥
धोखे रहियो ना जोगिन के * मारों राज भंग हुइ जाय ॥
सोचो करिया अपने मनमें * ये महुबे के राजकुमार ॥
उनहीं पायन करिया लौटो * औ राजासे कही हवाल ॥
सुनो हाल राजा जम्बै जब * सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो सूरजमल को * बेटा लश्कर लेउ सजाय ॥
आये महुबिया हैं माड़ौ में * उनकी कटा देउ करवाय ॥
फौज सजन लागी माड़ौ की * अब जोगिनका सुनो हवाल ॥
डगरत आये पाँचो जोगी * बबुरी बनमें पहुँचे आय ॥
ऊदन हाल कही देवै से * औ ढेबा से कही सुनाय ॥
पाँजि देखिहैं अब नही की * यह कहिचलिभै संग लिवाय ॥
धोबी कपड़ा जहँ धोवत थे * जोगिन अलख जगाई जाय ॥
बहति नर्वदा है पश्चिम को * धोबिउ पाँजि देउ बतलाय ॥
बोलो धोबी पाँच खेत हटि * सीधे उतरि जाउ वापार ॥
यह सुनि ऊदन ढेबा चलिभै * पाँच खेत पर पहुँचे जाय ॥
नदी मझाई तहँ दोऊन ने * सो कम्मरसे परी देखाय ॥
लग्गा गाड़ि दई बाँसन की * उनमें ध्वजा दियो बँधवाय ॥
तहँते चलिके लश्कर आये * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
नदी नर्बदा जहँ थाही है * तहँ हम चीन्हा दियो बनाय ॥
फौज उतारि लिहैं जल्दी से * अब आगेको सुनो हवाल ॥
बारह कोस में बबुरी बन है * चहुँदिशि रही अँधरिया छाय ॥
गम्य पियादे को नाहीं तहँ * तहँ असवार कौन बिधि जाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदन से * चन्दन बढ़ई लेउ बुलाय ॥
नौसै बढ़ई सँग लै आवै * औ बबुरी बन काटे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इकइक बिरवा कहुँ कहुँ छोड़े * घैहा जहाँ करैं बिसराम ॥
हुक्म सुनतही बढ़ई आये * बनमें बजन कुल्हाड़ा लाग ॥
सवा पहर केरे अरसा में * सब बन काटि करो खरिहान ॥
एक हरकारा दौरत आयो * औ अनुपीको करो सलाम ॥
राजा आयो है महुबे को * औ बबुरी बन दियो कटाय ॥

अनूपी टोडर की ऊदन से लड़ाई ।

इतनी सुनत अनूपी जरिगै * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
सबियां लश्कर टोडर पुर की * अबही साजि होय तैयार ॥
बोलि नगड़ची को बीरा दौ * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजो नगाड़ा टोडर पुर में * छत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंका में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हाथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * छत्री फाँदि भये असवार ॥
बड़ि २ तोपैं आगे चल भइँ * लश्कर चला अनूपी क्यार ॥
घोड़ा सुर्खा को सजवायो * तापर अनुपी भये सवार ॥
दहिने सजिगये तहँ टोडरमल * घोड़ा सब्जा पर असवार ॥
लश्कर चलिभौ तहँ अनुपीको * डंका होत गोल में जाय ॥
पहर एक केरे अरसा में * पहुँची फौज समर मैदान ॥
खबरि सुनतही बघ ऊदन ने * अपनी फौज लई सजवाय ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * ढेवा ऊदन चले अगार ॥
परो उतारा तब नद्दी में * लश्कर उतरि गयो वापार ॥
चारि घरी को अरसा गुजरी * पहुँची फौज समर मैदान ॥
दोनों फौजन के अन्तर में * रहिगो तीनि खेत मैदान ॥
ऊदन पहुँचे जब समुहें पर * तब अनुपी ने कही सुनाय ॥
कहाँ से आये हौ कहँ जैहौ * केहि बबुरीबन दियो कटाय ॥
समुहें हुइ तब ऊदन बोले * हम बबुरीबन दियो कटाय ॥
रहवैया हैं हम महुबे के * माड़ौ लिहैं बापको दाउँ ॥
इतनी सुनतै अनुपी जरिगै * औ टोडर से कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जान न पावैं महुबे वीर * अबहीं कटा देउ करवाय ॥
हुक्म दैदियो तब टोडर मल * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
सुनत हुक्म के चला खलासी * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
लौटे ऊदन अपने दल में * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * धुआना रहो सरग मड़राय ॥
अररर अररर गोला छूटै * कह कह करै अगिनियां बान ॥
सननन सननन गोला छूटै * सरसर परी तीर की मारु ॥
दोनों फौजन के संगम में * अन्धा धुन्ध तोप की मारु ॥
गोला लागे ज्याहि हाथी के * रणमें डौंकि डौंकि रहि जाय ॥
गोला लागै जौन ऊँट के * सो गिरि परे चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जिन घोड़न के * चारौ सुम्म गर्द हुइ जायँ ॥
गोला लागे जिन क्षत्रिन के * तिनकी भुजा सर्ग मड़राय ॥
बंब का गोला जिनके लागे * सो लत्ता से जायँ उड़ाय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागे * तिनके हाड़ मास छुटि जाय ॥
सैलकी गोली जिनके लागे * मानो गिरह कबूतर खाय ॥
बानको डंडा जिनके लागे * तिनके दुइ खंडा हुइ जाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * कोइ रजपूत न टारै पाँव ॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइ गइं * ज्वानन हाथ धरे ना जाय ॥
चढ़ी कमनियाँ पानी हुइ गइं * चुटकिन के गये मास उड़ाय ॥
तोप रहकला पीछे छाँड़े * लंबे बन्द करैं हथियार ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * रहिगो पाँच पैग मैदान ॥
साँगैं चलन लगीं दोनों दल * ऊपर बर्छिन की भइ मारु ॥
छुटैं पिचका जब लोहुन के * औ बुबकारिन बोले घाव ॥
बूड़ि जुल्फियां गइं लोहुन में * चर्बी अंग गई लपटाय ॥
हौदा भरिगये हैं लोहू से * औ चुचुआत फिरैं असवार ॥
चारि घरी भरि बजो सांगड़ा * भारी भइ बर्छिन की मारु ॥
भाला लाचके दोना हुइगे * लटुआ कटि बर्छिन की जायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बढ़े सिपाही तन आगे को * रहिगो डेढ़ कदम मैदान ॥
अपनी २ जीति जानि के * क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजे * बोले छपक छपक तलवार ॥
चले जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चले बिलायत क्यार ॥
पैदलके संग पैदल अभिरे * औ असवारन से असवार ॥
तेगा चटकैं बदवान के * कटिकटि गिरे सुघरुआ ज्वान ॥
हौदाके संग हौदा भिरि गये * हाथिन अड़ो दाँतसे दाँत ॥
सात कोसलौ चले सिरोही * चारो ओर चले तलवार ॥
पैग पैग पर पैदल गिरि गे * उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे * छोटे पर्वत की उनहार ॥
कब्जा कटिगे जिन घोड़न के * धरनी गिरे करौंटा खाय ॥
कटि भुज दैं रजपूतन की * चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
कटे भुसुण्डा जिन हाथिन के * भुइमें गिरे भरहरा खाय ॥
ढालैं डारीं जो लोहू में * मानों कछुआ सी उतरायँ ॥
पगिया डारी जो लोहू में * मानो कमल फूल उतराय ॥
परी बन्दूकैं जो लोहू में * मानो नाग रहे मन्नाय ॥
परे दुशाला जो लोहू में * जनु नदी में परो सिवार ॥
डारे घैहा जे खेतन में * तिनके प्यास प्यास रटलाग ॥
तीनि लाख सो चढ़ो अनूपी * रहिगो डेढ़ कदम मैदान ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * दोनों हाथ करैं तलवार ॥
भजे सिपाही माड़वार के * अपने डारि डारि हथियार ॥
गोल फूटि गो भर्रा परिगो * लश्कर अनीबदल हुइजाय ॥
कोई रोवै मात पिता को * कोई लड़कनको चिल्लाय ॥
कोई रोवै घर तिरियन को * बेड़ा कौन लगैहैं पार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जे रन दुलहा चले बराय ॥
छाड़ि नौकरी हम जंबै को * बनकी बेंच लकड़िया खायँ ॥
भिड़हा आये हैं महुबे के * जे मनइन को करैं अहार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भजत सिपाही अनुपी देखे * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जहाँ बेंदुला को चढ़वैया * अनुपी तहाँ पहूँचो जाय ॥
सुनो महुबिया महुबे वारे * राजा दस्सराज के लाल ॥
अब तुम लौटि जाहु महुबे को * नाहक दीहो प्राण गँवाय ॥
बोले ऊदन तब अनुपी से * चाहे आसमान टरि जाय ॥
ऊदन लौटन के नाहीं हैं * चाहे प्राण रहे के जाय ॥
बाप आपनो को बदलो लै * तब हम जैहैं नगर महोब ॥
यह सुनि अनुपी गुस्सा हुइगये * नैनन रही लालरी छाय ॥
दस दस रुपया के नौकर हैं * नाहक डरिहैं मुड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं रण खेतन में * दुइमें एक आंकु रहिजाय ॥
यह मन भाय गई ऊदन के * तब अनुपी से कही सुनाय ॥
चोट आपनी अनुपी कर लेउ * नाहीं सर्ग बैठि पछिताउ ॥
इतनी सुनिलइ जब अनुपी ने * अपनी खैंचि कमानियाँ हाथ ॥
गाँसी खावै सेर भरे की * तापर फोंक जमावन लाग ॥
खैंचि कमनियाँ भुजदंडन पर * हियरा डाटि उदैसिंह क्यार ॥
कैवर छोड़ो तब समुहें पर * ऊदन लीन्ही चोट बचाय ॥
साँगि उठाई तब अनुपी ने * सो ऊदन पर धमकी जाय ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने हुइ गयो * नीचे साँगि गिरी अरराय ॥
बोले अनुपी तब ऊदन से * अबहूं लौटि महोबे जाउ ॥
हँसिके ऊदन ज्वाब दियो तब * हमना धरैं पिआरू पाँव ॥
गुस्सा हुइके तब अनुपी ने * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका बघ ऊदन पर * बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
तीनि शिरोही गहि गहि मारी * तुरतै टूटि गई तलवार ॥
अनुपी शोचे तब अपने मन * हमरो काल रहो नियराय ॥
बोले ऊदन तब अनुपी से * अब तुम खबरदार हुइजाउ ॥
खैंचि शिरोही ऊदन मारी * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली * गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
छूटि जानेवा गौ अनुपी को * भुइ में गिरे मूर्च्छा खाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

देखि हाल यह टोडर मलने * आगे जाय दई ललकार ॥
सम्हरो ऊदनि तुम घोड़न पर * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
गुर्ज चलायो टोडर मल ने * ऊदनि लीन्ही चोट बचाय ॥
खेंचि शिरोही टोडर मारी * ऊदन दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
टूटि शिरोही गइ टोडर की * खाली मूठ हाथ रहि जाय ॥
ढालकि ओफ़ड़ ऊदन मारी * औ टोडर को दियो गिराय ॥
मुश्क बाँधिलई टोडर मलकी * औ ढेवा से कही सुनाय ॥
यह है बँधुआ गढ़ माड़ौ को * यहि लश्कर में देउ पठाय ॥
बँधुआ लैके ढेवा चलि भौ * औ बबुरी बन पहुँचो जाय ॥
बारहदरी गये ऊदन तब * अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥
पहलि लड़ाई यह पूरी भई * दुसरी सुनो यार मनलाय ॥

॥ सूरजमल की लड़ाई ॥

संझा तारनि तुमको गैये * घर घर दीपक दियो बराय ॥
चरि चरि गौवें बनमें डगरीं * उड़ि २ पंछिन लीन्ह बसेर ॥
पूरन काज करो जगदंबे * माता अब न करो कछु देर ॥
बिधवा हुइके पान चबावे * नैहर तिरियन करें सिंगार ॥
जेहि किसान घर बैरे न दीपक * त्यहि घर कुशल करैं करतार ॥
एक हरिकारा बदलति आयो * बारहदरी पहूँचो जाय ॥
करो बन्दगी सूरज मलको * औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
हाल सुनतही सूरज जरिगै * गुस्सा गई देह में छाय ॥
हुक्म देदियो तब जल्दी से * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बजा नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
जितनी तोपैं थीं सूरज की * सो सब साज भई तैयार ॥
जितने हाथी थे सूरज के * सब पर हौदा दिये धराय ॥
जितने घोड़ा घुड़शाला में * काठी एक साथ खिंचजाय ॥
जितने पैदल थे लश्कर में * कमैरं एक साथ खिंच जायँ ॥
मारू डंका के बाजत खन * सिगरी फौज भई तैयार ॥
अपने अपने सब घोड़न पर * क्षत्री निकरे बाग मरोरि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कोई राब्बिन कोइ रौहालिन * कोइ कुढरिन पर फेरे बाग ॥
चित्र चालिपै चतुर चालिपै * कोइ २ तितुर चालिलै जाय ॥
हंस चालिपै मोर चालिपै * घोड़ा हिरन चालिलै जाय ॥
चालि सागमन घोड़ा आवै * दुलकी चालि चलावत जाय ॥
करी तयारी सूरजमल ने * हरियल घे ड़ा लियो सजाय ॥
फाँदि बछेड़ा पर चढ़ि बैठे * औ क्षत्रिन से कही सुनाय ॥
पाँव पिछारू तुमना धरियो * रणमें रखियो धर्म हमार ॥
गंगा कीन्ही तब हिन्दुन ने * औ तुर्कन को उठी कुरान ॥
हमना भगिहैं रण समुहें से * चाहे प्राण रहे के जाय ॥
लश्कर आयो सूरजमल को * औ खेतन में पहुँचो आय ॥
लाशि पड़ी थी जहँ अनुपी की * सूरज तहाँ पहूँचे आय ॥
सो उठवाय लई नलकी में * औ माड़ौ को दई पठाय ॥
तहँ ते चलिकै सूरज आये * औ मुर्चा पर पहुँचे जाय ॥
सिंहकि गर्जनि सूरज गरजे * भारी आय दई ललकार ॥
कौन सो क्षत्री चढ़ि आयो है * सो समुहें हुइ देइ जवाब ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदन ने * औ सूरज को दियो जवाब ॥
हम चढ़ि आये हैं महुबे से * माड़ौ लिहैं बापको दाव ॥
इतनी सुनते सूरज जरिगे * तोपन बत्ती दइ लगवाय ॥
हुक्म दै दियो बघ ऊदन ने * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
दगी सलामी दोनों दल में * धुँअना रहो सरग मँडराय ॥
अररर गोला छूटन लागे * सर सर परी तीर की मारु ॥
गोला पहुँचे तीन कोसलौ * गोला आध कोसलौ जाय ॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइ गइं * ज्वानन हाथ धरेना जाय ॥
लइ बन्दूकें तब क्षत्रिन ने * पैदल पल्टन बढ़े अगार ॥
गोली लागे ज्यहि क्षत्री के * सो गिरि परे तुरत मैदान ॥
काल नहीं जिनकी रण भीतर * उनके गोली ना अनियाय ॥
जिनको काल लिखो खेतन में * समुहें लगत निशाना जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तीनि घरी बन्दूकैं बाजीं * ज्वानन हाथ धरे ना जाय ॥
झुके सिपाही दोनों दलके * रहिगे डेढ़ कदम मैदान ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने * खटखट चलन लगी तलवार ॥
सात कोसलौं चलै शिरोही * रण में बीति रहा घमसान ॥
चारि लाखसे सूरज आयं * रहेगये दुइअलाख असवार ॥
भगे सिपाही माड़वार के * सूरज घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले सूरज बघ ऊदन से * ठाकुर सुनो महोबे क्यार ॥
नौकर चाकर जे क्षत्री हैं * काहे डरिहौ मूड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं रण खेतन में * दुइमें एक आंकु रहिजाय ॥
यह मन भाय गई ऊदन के * तब सूरज से कही सुनाय ॥
चोटें अपनी सूरज करिलेउ * मनकी मेटि लेउ अरमान ॥
लई कमनियां तब सूरज ने * औ गाँसीको लियो चढ़ाय ॥
खैंचि कमनियां भुजदंडन पर * समुहें छोड़ि कैबरी दीन्ह ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने हुइगौ * बचिगौ दस्सराज के लाल ॥
साँगि उठाई तब सूरज ने * सो ऊदन पर दई चलाय ॥
घोड़ा बेंदुला ऊपर उड़िगौ * नीचे साँगि गिरी अरराय ॥
खैंचि शिरोही लइ सूरज तब * औ ऊदन पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाई बघ ऊदन ने * उनकी टूटि गई तलवार ॥
खाली मूठि हाथ में रहिगई * सूरज गये सनाका खाय ॥
बोले ऊदन तब सूरज से * अब तुम खबरदार हुइजाय ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदन ने * औ सूरजपर दई चलाय ॥
ढाल फाटि गइ सूरजमल की * सिरपर भयो जड़ाका जाय ॥
सूरज गिरिगये तब घोड़ा से * सबदल रेन बेन हुइ जाय ॥
जूझे सूरज रण खेतन में * जीते जंग उदयसिंह राय ॥
दुसरि लड़ाई यह माड़ौ की * सोहम तुमको दई सुनाय ॥
तिसरि लड़ाई है करिया की * यारो सुनियो कान लगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करिया की लड़ाई ।

मैं पद बन्दौं रामचन्द्र के * शिवशंकर के चरण मनाय ॥
तेंतिस कोटि देवता सुमिरौं * मोपर सबमिलि होउ सहाय ॥
लिखौं लड़ाई अब करियाकी * यारो सुनो छोड़ि सब काम ॥
यक हरकारा बदलति आयो * औ दरबारमें पहुँचो आय ॥
समुहें पहुँचो जब करिया के * हाथ जोरिके कही सुनाय ॥
आये महुबिया हैं महुबे से * सब बबुरीबन दियो कटाय ॥
अनुपी जूझि गये खेतन में * टोडरमल को लियो बँधाय ॥
सूरजमल जूझे रण भीतर * चलिके लाशि लेउ उठवाय ॥
इतनी बात सुनी करिया ने * मनमें गयो सनाका खाय ॥
होशबन्द भये तब करिया के * सिगरी देह गई थर्राय ॥
धीरज धरिकै फिरि अपने मन * तुरत नगड़ची लियो बुलाय ॥
बीरा दैके हुक्म दैदियो * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सजन लगे तत्काल ॥
शाहाबादी दुइ भैया हैं * रंगा बंगा शूर पठान ॥
बोला करिया उन दोउन ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
आये महुबिया महुबे वारे * सबकी कटा देउ करवाय ॥
लश्कर लूटि लेउ महुबे को * तुम्हरी लूटि माफ हुइजाय ॥
इतनी सुनतै दोनों चलिभये * अपने घोड़ा लिये सजाय ॥
हुक्म देदियो करिया ठाकुर * हथिपचशावद होय तयार ॥
घोड़ा पपीहा को सजवायो * कोतल चले हमारे साथ ॥
घरी एक केरे अरसा में * दोनों साजि भये तैयार ॥
करे तयारी तब करिया ने * घट गंगाजल लियो मँगाय ॥
करि स्नान ध्यान जल्दी से * धोती पहिरि पोतिया क्यार ॥
डारि आसनी रेशमवारी * तापर बैठि करिंघा राय ॥
पूजन करिके गणनायक को * करिके इष्टदेव को ध्यान ॥
सुमिरन करिके हनूमानको * माथे चन्दन लियो लगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बाँधे पटुका कसि कम्मर में * दहिना लीन्हों गुरसि कटार ॥
अगल बगल में दुइ पिस्तौलें * बायें हाथ गैंड़की ढाल ॥
तेगा बाँधे बर्दमान को * भाला नागदौनि को हाथ ॥
टोप झलरिया धरि माथे पर * ऊपर कुंडी लइ औंधाय ॥
साजि करिंघा जब ठाढ़ो भौ * मानौ इन्द्र अखाड़े जाय ॥
हथि पचशावद सजिके आयो * घोड़ा पपिहा पहुँचो आय ॥
सिढ़ी लगाई मलयागिरि की * औ हौदा पर पहुँचो जाय ॥
पहिलो पाँव धरो हौदा में * समुहें भई तड़ाका छींक ॥
तुरतै पंडित बोलन लागे * औ महराज करिंघा राय ॥
शगुन बिगरिगौ है हाथी पर * अबना जाउ लड़न महराज ॥
तापर ज्वाब दियो करिया ने * तुम सठिआय गये यहिकाल ॥
शगुन बिचारैं बनियाँ बाटू * जो धरि मौर बियाहन जायँ ॥
हमतो लड़िका हैं क्षत्रिन के * नितउठि चढ़िके लोह चबायँ ॥
यह कहि करिया चढ़ि हाथी पर * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
चारि घरीको अरसा गुजरी * पहुँचो समर भूमि में आय ॥
हाथी परसे करिया उतरा * सूरजमल पै पहुँचो जाय ॥
लाशि धराय दई नलकी में * औ माड़ौ को दई पठाय ॥
करिया गरजा चढ़ि हाथी पर * क्याहि बबुरी बन दियो कटाय॥
अनुपी सूरज को क्याहि मारो * सो समुहें हुइ देइ जवाब ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदन ने * औ करिया को दियो जवाब ॥
हम कटवायो है बबुरी बन * अनुपी सूरज दिये गिराय ॥
लानति तुम्हरी रजपूती पर * चोरी करी महोबे जाय ॥
सोवत बाँधे बाप हमारे * औ धोखे से मारो आय ॥
बदला लीहैं हम दादा को * माड़ो खोदि करैहैं ताल ॥
इतनी सुनतै करिया जरिगौ * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
ऊदन लौटे अपने दल में * तुरतै बत्ती दइ लगवाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * धुअना रहो सरग मड़राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

चहुँ दिशि गोला छूटन लागे * अन्धा धुन्ध तोपकी मार ॥
पहर एक भरि गोला बरसो * तो पैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
हाथ न धरो जाय तोपन पर * तोप लड़ाई परी पछार ॥
साँगि उठाय लई क्षत्रिन ने * साँगें चलन लगीं तत्काल ॥
चारि घरी भरि बजो साँगड़ा * भारी बही रक्त की धार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला * ऊदन कहें पुकार पुकार ॥
भागि न जैहौ तुम समुहें से * यारो रखियो धर्म हमार ॥
बढ़े सिपाही महुबे वारे * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
झुके सिपाही माड़वार के * खटखट चलन लगी तलवार ॥
चलै शिरोही दोनों दलमें * क्षत्रिन मारु २ रट लागि ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * औ रण दुलहा चले बराय ॥
भगत सिपाही करिया देखे * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
खोलि जँजीर दई हाथी को * औ हाथी से कही सुनाय ॥
निमक हमारो तुम खायो है * अब गाढ़े में आवो काम ॥
मारि गिरावो सब लश्कर को * राखो धर्म बघेले क्यार ॥
जल्दी बाँधि लेउ ऊदन को * ऐसे समय मिलन को नाहिं ॥
करिया बढ़िगो तब आगे को * हाथी लश्कर गयो समाय ॥
साँकल फेरो पचसावद ने * औ क्षत्रिन को काटन लाग ॥
बिचलो हाथी दलके भीतर * लश्कर तिड़ी बिड़ी हुइ जाय ॥
हटे सिपाही महुबे वारे * कोई न धरे अगारू पाँव ॥
करिया ललकारे ऊदन को * अब तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
साँग धमकी तब करिया ने * ऊदन लै गये चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो तब करिया ने * औ ऊदन पर दियो चलाय ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने हुइ गो * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
ऊदन झपटे तब करिया पर * घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
करो जड़ाका एक हौदा पर * छतुरी टूक टूक हुइ जाय ॥
साँगि उठाई बघ ऊदन ने * सो करिया पर दई चलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

साँगि धाँसि गई तब होदा में * करिया गिरो भरहरा खाय ॥
होश रहा नहिं कछु देही में * मुर्छित भयो करिंघाराय ॥
गुस्सा आई तब हाथी को * अपनी साँकल दई घुमाय ॥
तुरतै बाँधि लियो ऊदन को * घोड़ा भगो उदयसिंह क्यार ॥
देखि हाल यह अपना चलिभो * बबुरी बनमें पहुँचो आय ॥
हाल सुनायो तब आल्हा को * औ देवै ते कही सुनाय ॥
साँकल फेरी पचशावद ने * बाँधे तुरत उदयसिंह राय ॥
चलिकै हाथी को समझावो * तुम्हरो काम सिद्ध ह्वइजाय ॥
बोले आल्हा तब सैयद ते * लश्कर जल्द लेउ सजवाय ॥
फिरि बुलवायो नर मलिखे को * औ यह कही बनाफर राय ॥
ऊदन बँधिगे हैं माड़ो में * हम तुम चलिकै लेयँ छुड़ाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बैज नगाड़ा हमरे दल में * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
डंका बाजो तब लश्कर में * तुरतै लश्कर भयो तयार ॥
देवै माता त्यार भई सँग * अपनी नलकी लई मँगाय ॥
थार सोबरन को सजवायो * तामें आरति लई धराय ॥
रोरी अक्षत मेवा लैके * करिके इष्टदेव को ध्यान ॥
चढ़ी पालकी पर देवै तब * औ लश्कर सँग भई तयार ॥
घोड़ा करिलिया त्यार करायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
ताल्हा सैयद बनरस वाले * घोड़ी सिंहिनि पर असवार॥
घोड़ा मनुरथा को सजवायो * देवा फाँदि भये असवार ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो * तापर ब्रह्मानन्द असवार ॥
घोड़ी कबुतरी पर मलिखे हैं * संगै चली दिवलदे माय ॥
सुमिरन करिके महादेव को * मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ॥
घोड़ी बढ़ाई नरमलिखे ने * औ लश्कर में भये अगार ॥
कूच को डंका तब बजवायो * लश्कर चलो बनाफर क्यार ॥
चारि घरीको अरसा गुजरो * लश्कर खेत पहुँचो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सबके पहिले देवै माता * पचशावद ढिग पहुँची जाय ॥
तुरतै उतरि परी पलकी ते * औ हाथी से कही सुनाय ॥
क्या तुम भूलि गये महुबे को * भूले आय रजा परिमाल ॥
भूलि गये क्या रनि देवै को * जो अब तुम्हरे खड़ी अगार ॥
निमक हमारो तुमने खायो * औ पचशावद बात बनाउ ॥
ज्यहि दिन करिया धोखा दैके * दशहर पुरवा लियो लुटाय ॥
हार नौलखा लाखा पातुर * घोड़ा पपीहा लियो खुलाय ॥
तुमको साथ लियो करिया ने * तुम दुश्मन की करी सहाय ॥
ऊदन बेटा मुझ रँडिया को * तुमने बाँधि लियो मैदान ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है * मैं हाथी को लेउँ बलाय ॥
ठँगी खुपरिया है राजा को * हमहूँ चुरी उतारी नाहिं ॥
काहू लायक लड़िका हुइ हैं * माड़ौ लिहैं बापको दाउँ ॥
सोतुम बाँधि लियो ऊदन को * ऐसो तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
याही दिनको हम पालो थे * की गाढ़े में ऐहो काम ॥
तेहिते तुमको समुझावति हौं * तुम बेटन को करो सहाय ॥
जीतिके चलिहौ जो महुबे को * दूना रातिब दिहौं बढ़ाय ॥
बातैं सुनि के रनि देवै की * हाथी तुरत गयो पहिचानि ॥
शरम खाय के पचशावद ने * साँकल दई भूमि पर डारि ॥
मुर्छा जागो जब करिया को * हौदा उठो भरहरा खाय ॥
बँधो देखि के बघ ऊदन को * मनमें बहुत खुशी हुइ जाय ॥
बँधे देखि के अपने मन में * ऊदन बहुत गये घबराय ॥
तौलो मलिखे दल में पहुँचे * औ करिया से कही सुनाय ॥
काल आय पहुँचो तुमरो अब * सन्मुख लड़ो हमारे साथ ॥
सुनतै करिया साँगि उठाई * सो मलिखे पर दई चलाय ॥
घोड़ी कबुतरी दहिने हुइगइ * नीचे गिरी साँगि अरराय ॥
तेगा लेके करिया मारो * मलिखे लोन्हो चोट बचाय ॥
बोले मलिखे तब करिया से * अब तुम खबरदार हुइजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऐंड़ लगाई तब घोड़ी के * औ मस्तीक अड़ाये पाँव ॥
करो जड़ाका यक हौदा में * छतुरी टूक टूक हुइ जाय ॥
डंडा कटिगो तब हौदा में * सोने कलश गिरो अरराय ॥
गद गद गद गद करै महावत * हाथी बैठि खेत में जाय ॥
सूंड़ि लपेटि लई हाथी ने * औ दाँवन में लई दबाय ॥
मलिखे पहुँचे तब ऊदन पै * औ ऊदन को दियो छुड़ाय ॥
रुपना लायो घोड़ा बेंदुला * ऊदन फाँदि भये असवार ॥
चढ़ि गये मलिखे तब घोड़ा पर * दोनों तुरत भये हुशियार ॥
तौलौं लश्कर गौ महुबे को * करिया देखि गयो घबराय ॥
घोड़ा पपीहा जो कोतल थो * तापर चढ़ौ करिंघा राय ॥
देवै पहुँची तब हाथी पै * औगजमस्तक पूजन लागि ॥
बोली देवै तब हाथी ते * औ पचशावद बात जनाउ ॥
तुमको सौंपति हौं लड़िका सब * रखियो धर्म चन्देले क्यार ॥
बोली देवै तब आल्हा से * अब हाथी पर होउ सवार ॥
तुम्हरे दादा को हाथी है * मनमें करो न सोच बिचार ॥
सुनते चरण लागि माता के * लै बजरंग बली को नाम ॥
आल्हा चढ़िगै पचशावद पर * औ हौदा में बैठे जाय ॥
बोले आल्हा तब क्षत्रिन से * यारो रखिओ धर्म हमार ॥
जीतिके चलिहौ जब माड़ौते * दुनी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
इतनी बात सुनी क्षत्रिन ने * क्षत्री बीर रूप हुइ जायँ ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * जिनके मारु मारु रटि लागि॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जे रण दुलहा चले बराय ॥
बोलो करिया तब रंगा से * औ बंगा से कही सुनाय ॥
थोरी उम्मिरि को ऊदन है * याको देउ जानते मारि ॥
घोड़ा बढ़ायो तब रंगा ने * औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
काल आय पहुँचो तुम्हरो अब * यह कहि खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका जब ऊदन पर * ऊदन दीन्ही ढाल अड़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

टूटि सिरोही गइ रंगा की * रंगा मन में सोचन लाग ॥
ऊदन ललकारो रंगा को * अब तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
खैंचि शिरोही ऊदन मारी * औ रंगा को दियो गिराय ॥
रंगा जूझि गयो खेतन में * बंगा समुहें पहुँचो आय ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ढेबा ने * औ बंगा को दइ ललकार ॥
खैंचि शिरोही लइ बंगा ने * सो ढेबा पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ढेबा ने * तापर भयो जड़ाका जाय ॥
टूटि शिरोही गइ बंगा की * बंगा सोचि २ रहि जाय ॥
बोलो ढेबा तब बंगा से * अब तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
खैंचि शिरोही ढेबा मारी * औ बंगा को दियो गिराय ॥
रंगा बंगा दोनों जूझे * करिया गयो सनाका खाय ॥
करिया पहुँचो नर ढेबा पर * अपनी दीन्हीं गुर्ज चलाय ॥
चोट बचाई तब ढेबा ने * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
लटुआ लागि गयो घोड़ा के * घोड़ा पाँच पैग हटि जाय ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदन तब * औ करिया पर राखी जाय ॥
चोट बचाय लई करिया ने * अपनी दीन्हीं गुर्ज चलाय ॥
चोट बचाई बघ ऊदन ने * नीचे गिरो गुर्ज अरराय ॥
लगो चपेटा रस बेंदुल के * घोड़ा तीनि पैग हटि जाय ॥
बोले ऊदन तब मलिखे से * दादा सुनो बीर मलिखान ॥
बरनी तुम्हरी को करिया है * अब क्यों राखी देर लगाय ॥
सुनतै मलिखे आगे बढ़िगे * औ करिया से कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं रण खेतन में * देखें कापर राम रिसाय ॥
यह मन भाय गई करिया के * अपनी लई कमनियां हाथ ॥
फोंक जमाय खैंचि दंडन पर * समुहें छाड़ि कैबरी दीन्ह ॥
घोड़ी हटिगइ नर मलिखे की * उनको राखि लियो भगवान ॥
साँगि चलाई तब करिया ने * मलिखे लैगे चोट बचाय ॥
खैंचि शिरोही लइ करिया तब * औ मलिखे पर राखी जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घोड़ी हटि गइ नर मलिखे की * बचि गई चोट करिंघा क्यार ॥
करिया सोचो अपने मनमें * ये क्षत्री हैं बुरी बलाय ॥
बोलो करिया नर मलिखे से * तुम समुहें से जाउ बराय ॥
अबकी उचौनी पर बचिहौ ना * सुनिहँसि मलिखेदियो जवाब॥
पुष्य नक्षत्र माहिं जन्मा हूँ * बरहें परो बृहस्पति आय ॥
और देवताकी गिनती क्या * शंका हमहिं काल की नाहिं ॥
यह सुनि करिया कड़ाबीन ले * समुहें गोली दई चलाय ॥
गोली झेली नर मलिखे ने * तुरतै लगत चीप हुइ जाय ॥
तब ललकारो नर मलिखे ने * अब तुम खबरदार हुइजाउ ॥
खैंचि शिरोही लइ मलिखे ने * लैके राम चन्द्र को नाम ॥
चेहरा मारो तब करिया को * औ धरती में दियो गिराय ॥
उतरे ऊदन रस बेंदुल ते * औ चेहरा को लियो उठाय ॥
जाय दिखायो नुनिआल्हा को * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
अवधि बीतिगइ गढ़ माड़ौं में * ताते शीश देउ पहुँचाय ॥
इतनी सुनिके नुनिआल्हा ने * रुपना बारी लियो बुलाय ॥
शीश दैदियो तब करिया को * औ महुबे को दियो पठाय ॥
यहाँ की बातैं तो यहँ छोड़ो * अब महुबे की सुनो हवाल ॥
अवधि बीतगई जब आवन की * मल्हना सोचि २ रहिजाय ॥
एक दिन ठाढ़ी मल्हना रानी * हेरे बाट लड़िकवन क्यार ॥
तौलौ माहिल दाखिल हुइगये * औ मल्हना से कही सुनाय॥
यक हरकारा गढ़ माड़ौ का * गढ़ उरई में करो मुकाम ॥
तिनने हाल कही हमसे सब * की खपिगये बनाफर राय ॥
कोउ न बचि हैं गढ़ महुबे में * फिरि दुख नींद पहुँची आय ॥
इतनी कहिके माहिल चलिभये * तौलौ रुपना पहुँचो आय ॥
करी बन्दगी परिमालै को * औ सबहाल कहौ समुझाय ॥
सुनतै खुशी भये चंदेले * औ रुपना से कही सुनाय ॥
पलकी लैजावो जल्दी तुम * औ रानीको देखावो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुरतै रुपना महलन पहुँचो * औ सब हाल दियो बतलाय॥
बहुत खुशी हुइ मल्हना बोली * माहिल तेरो बुरो हुइजाय ॥
खबरि सुनाई यह झूठी सब * फिरि रुपनासे कही सुनाय ॥
करैं रसोई हम महलन में * सो तुम जेंइ लेउ जेउनार ॥
हाथ जोरि तब रुपना बोलो * माता हम रुकबे के नाहिं ॥
इतनी कहिके रुपना चलि भो * औ माड़ो की पकरी राह ॥
सुनी खबरिया जब यह जम्बै * जूझो करिया पुत्र हमार ॥
आय मूर्छा गइ जम्बे को * औ मनमाँह गयो घबराय ॥
जागी मूर्छा जब जम्बे को * सोचन लगे बघेले राय ॥
पूत सपूत होय दुनियां में * आवै मात पिताके काम ॥
पूत कपूत होय जो कुल में * बंटाधार जाय परिवार ॥
सोचत राजा महलन पहुँचे * रानी उठी भरहरा खाय ॥
पूछन लागी तब राजा से * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
बोले राजा तब रानी से * बिपदा कछु कहीना जाय ॥
चारौ बेटा रण में जूझे * ऊदन करी बंशकी हानि ॥
इतनी सुनतै रानी सोची * औ राजा से लगी बतान ॥
नाहक मारो दस्सराज को * खुपरी बरगद दई टँगाय ॥
हाथ दैदियो थो बाँबी में * क्यों ना डसे कालिया नाग॥
हाय हाय करि रानी रोई * अब कहँ मिलिहैं पुत्र हमार ॥
यह दुख देखी जब बिजमा ने * तब दोनों से कही सुनाय ॥
कैद करलिहैं हम ऊदन को * यह कहि जादू लियो उठाय ॥
डारि मसानी दइ लश्कर में * चहुँदिशि रही अँधेरी छाय ॥
नजरैं बन्द भईं सबही की * औ फिरि भूलि गयो सब ज्ञान ॥
मेढ़ा बनाय लियो ऊदन को * झारखंड में राखो जाय ॥
गुरु झिल मिला की बगिया में * मेढ़ा बाँधि दियो तत्काल ॥
बोली बिजमा तहँ बाबा से * बाबा बहुत रह्यो हुशियार ॥
जादू फेरि लियो लश्कर से * महलन गई बिजैसिन रानि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जादू उतरि गयो आल्हा को * तब मलिखे से लगे बतान ॥
काहे भैया यह कैसी भई * ऊदन नाहीं परत दिखाय ॥
मलिखे पूछी तब ढेबा से * भैया सगुन देउ बतलाय ॥
बोले ढेबा तब बिचार के * बिजमा बेटी बघेले क्यार ॥
मेढ़ा बनायो बघ ऊदन को * झारिखंड में राखो जाय ॥
गुरु झिलमिला की मढ़िया में * मेढ़ा बाँधि दियो तहँ जाय ॥
जोगी बनिके चलो तहाँ पै * लावो तुरत लहुरवा भाय ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * जोगिन गुदरी लई मँगाय ॥
गुदरी पहिरि लई दोनों ने * मस्तक लीन्हों तिलक लगाय॥
डमरू लीन्हीं नर ढेबा ने * बँसुरी लई बीर मलिखान ॥
दोनों चलिभये झारखंड को * औ मढ़ियामें पहुँचे जाय ॥
गुरू झिलमिला के समुहें पर * जोगिन अलख जगाई जाय॥
भाँति भाँति के राग सुनाये * बाबा बहुत खुशी होइ जाय ॥
बोले बाबा उन जोगिन से * जोगिन नाच देउ दिखलाय ॥
जो कुछ मँगिहो सो हम दीहैं * यह सुनि मलिखे नाचन लाग॥
गुरूझिलमिला मोहित हुइ के * दोउ जोगिन से कही सुनाय॥
माँगौ माँगौ तुम मढ़िया में * जो कुछ इच्छा होय तुम्हार ॥
मेढ़ा माँगो तब मलिखे ने * बाबा सुनत गये घबराय ॥
यह तो मेढ़ा है बिजमा को * सो तो हम देवे के नाहिं ॥
इतनी सुनते ढेबा बोले * बाबा बिगड़ी बात तुम्हार ॥
कहिके बदलत हौ बाबा तुम * तुम्हरो जोग भंग होइजाय ॥
बाबा मनमें कायल हुइगये * खोलिके मेढ़ा दौ पकराय ॥
बोले मलिखे तब बाबा से * याको मानुष देउ बनाय ॥
चेला करि हैं हम याको अब * बाबा झोरी लई उठाय ॥
डारि के जादू वा मेढ़ा पर * मानुष करो लहुरवा भाय ॥
तीनौ चलिभये तब मढ़ियासे * बघऊदन ने कही सुनाय ॥
जबहीं सुनिहैं रानी बिजमा * फिर के जादू दिहै चलाय ॥
जादू की जड़ यह बाबा है * याको देहु जान ते मारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनते मलिखे लौटे * औ बाबा से कही सुनाय ॥
बहुतै प्यास लगी हमको है * बाबा पानी देउ पिलाय ॥
गुरू झिलमिला गडुवा लेके * पानी भरन लगे ततकाल ॥
मारि शिरोही दइ मलिखे ने * जादू झोरी लई उठाय ॥
डगरत चलिभये तीनों जोगी * औ लश्कर में पहुँचे आय ॥
करी सलाह तहाँ आल्हा ने * माड़ौ चिट्ठी देउ पठाय ॥
बैर हमारो था करिया से * अब क्यों रार बढ़ावैं जाय ॥
यह मन भाय गई सबही के * यक हरिकारा लियो बुलाय ॥
पाती लिखन लगे आल्हा तब * पढ़ियो याहि बबेले राय ॥
हार नौलखा लाखा पातुर * डोला साजि बिजैसिन क्यार ॥
बावन बगुचा पशमीना के * हमरो नजरि गुजारौ आय ॥
खुपरी लावो मेरे बाप की * तौ हम लौटि महोबे जायँ ॥
यह चिट्ठी लिखदइ धामनको * धामन माड़ो पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी तहँ जम्बे को * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलि के पाती जम्बे बाँची * औ पाती को लिखी जवाब ॥
जीवत डोला हम ना दीहैं * ताते लौटि महोबे जाउ ॥
जोगति कीन्ही दस्सराज को * सोगति करिहौं आय तुम्हार ॥
यह जवाब लिखि दौ धामनको * धामन लौटि पहूँचा आय ॥
पाती बाँची जब आल्हा ने * तुरत नगड़ची लियो बुलाय ॥
हुक्म दैदियो पुनि आल्हा ने * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
हाथी घोड़ा सब सजवाये * तोपैं सबियाँ करी तयार ॥
पहिले नगाड़ाके जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे नगाड़ाके बाजत खन * क्षत्रिन धरे रकाबन पाँव ॥
कूच का डंका तब बजवायो * लश्कर चला एकही साथ ॥
हाथी पचसावद सजवायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ी सिंहिनि पर सैयद हैं * घोड़ी कबुतरी पर मलिखान ॥
घोड़ा बेंदुला पर ऊदन हैं * ढेबा मनुरथा पर असवार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चारि घड़ी को अरसा गुजरो * लोहा गढ़ ढिग पहुँचे जाय ॥
हुक्म देदियो तब आल्हा ने * तोपैं जल्दी देउ लगाय ॥
बत्ती दै देउ सब तोपन में * लोहा गढ़ को देउ गिराय ॥
आगे लड़ाई है जम्बे की * यारो सुनियो कान लगाय ॥

जम्बे की लड़ाई ।

एक हरिकारा दौरति आयो * औ जम्बे से कही सुनाय ॥
फाटक घेरि लियो आल्हीने * सिगरी तो पैं दई लगाय ॥
सुनतै जम्बे हुक्म सुनायो * सिगरी तोपैं देउ चढ़ाय ॥
बत्ती दै देउ सब तोपन में * महुबे वारन देउ उड़ाय ॥
हुक्म होतही तोपैं चाढ़ गईं * तिनमें बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * चहुँदिशि धुआं रहा मँडराय ॥
गोला चलन लगो दोऊ दल * अंधा धुंध कहो ना जाय ॥
तकि तकि गोला मलिखे मारे * लोहा गढ़ ना आड़े पाँव ॥
गोला छूटै लोहा गढ़ से * कोई कुँवर न आड़े पाँव ॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइ गइँ * औ लोहा गढ़ टूटा नाहिं ॥
बोले ऊदन तब आल्हा से * दादा सुनो हमारी बात ॥
जितनी लकड़ी है बबुरी बन * सो सब इहाँ लेउ मँगवाय ॥
सो भरवाय देउ खंदक में * नीचे सुरँग देउ लगवाय ॥
हुक्म सुनायो तब आल्हा ने * सिगरी लकड़ी लइ मँगवाय ॥
बोले बहुरि सफर मैंना से * जल्दी देवो सुरँग लगाय ॥
हुक्म पाय कै लोहा गढ़ में * तुरत सुरंग किये तैयार ॥
झाँखर आये बबुरी बन से * सो खंदक में दिये झुकाय ॥
पीपा भरि भरि बारूदन के * सो सुरंग में दिये धराय ॥
बत्ती दै दइ तब बरूद में * सीसा पिघल पिघल रहिजाय ॥
उड़ी दिवालैं लोहा गढ़ की * मिट्टी आसमान उड़ि जाय ॥
तोपैं गिर गईं तब ऊपर से * मलिखे धावा दिये कराय ॥
छत्री पहुँचे जब फाटक पर * सबने खैंचि लई तलवार ॥
जितनी लश्कर थी फाटक पर * सो सब काटि करो खरिहान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

लोहा गढ़ फाटक माड़ौ को * सो धरती में दियो मिलाय ॥
रैयत रोवै गढ़ माड़ौ को * करिया तेरो बुरो हुइ जाय ॥
आपु नशाय गयो अपने को * औ रैयत को दियो बिगार ॥
काल आयगो अब जम्बे को * बैठी बर्रे दई उड़ाय ॥
खलबल परि गयो सब रैयत में * सबके भूलि गये औसान ॥
बढ़े सिपाही महुबे वारे * फाटक निकरि गये वा पार ॥
सुनी खबरि जब राजा जम्बे * मनमें बहुत गये घबराय ॥
तुरतै हुक्म दिये जम्बे ने * सिगरी फौज होय तैयार ॥
बजा नगाड़ा तब लश्कर में * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
करो तयारी तब जम्बे ने * हाथी भौरा नँद मँगाय ॥
सिढ़ियन सिढ़ियन जम्बे चढ़िगै * औ हौदा में बैठे जाय ॥
दोनों सेना एक मिल हुइ गइं * खट खट चलन लगी तलवार ॥
कहँ लग बरणौं मैं त्यहिं अवसर * रण में चलै सबै हथियार ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * दोनों हाथ करैं तलवार ॥
हाथी बढ़ायो राजा जम्बे * औ ऊदन को दइ ललकार ॥
ऊदन झपटे तब हाथी पर * दुइ मस्तीक अड़ाये पाँव ॥
सोने के कलशा जो हौदा के * सो ऊदन ने दिये गिराय ॥
रिसहा हुइ के तब ऊदन पर * जंबे दीन्हा गुर्ज चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के * घोड़ा पाँच कदम हटि जाय ॥
ढेबा बहादुर समुहें आयो * जंबे दीन्हा गुर्ज चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के * सो समुहें से गयो बराय ॥
राजा जम्बे को डपटनि में * सब दल रेन बेन होइ जाइ ॥
बोले मलिखे तब आल्हा से * दादा सुनो हमारी बात ॥
हमरी बरनी को नाहीं है * लेतो तुरत जँजीरन बाँधि ॥
तुम्हरी बरनी को जंबे है * दादा लेउ जँजीरन बाँधि ॥
हाथी बढ़ायो तब आल्हा ने * हाथिहिं साँकल दइ पकराय ॥
साँकल फेरी पचसावद ने * सब दल रेन बेन होइ जाय ॥
भगे सिपाही माड़ौ वारे * जंबे हाथी दियो बढ़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

समुहें पहुँचे जब आल्हा के * जंबै लीन्हा लाल कमान ॥
तीर चलाय दिये समुहें पर * आल्हा लीन्हा तीर बचाय ॥
साँगि चलाई जब जंबे ने * आल्हा हाथी दियो हटाय ॥
खैंचि सिरोही लइ जंबे न * सो आल्हा पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई आल्हा ने * जंबै लई कटारी काढ़ि ॥
चोट बचाई तब आल्हा ने * औ हाथी से कही सुनाय ॥
बैरी समुहें यह ठाढ़ो है * याको लेउ जँजीरन बाँधि ॥
फेरी साँकल तब हाथी ने * तुरतै हौदा दियो गिराय ॥
आल्हा बाँधि लियो जंबेको * लश्कर भगा बघेले क्यार ॥
बहुत खुशी भये महुबे वारे * जीतिको डंका दियो बजाय ॥
माल खजाना हाथी घोड़ा * औ सब लूटि लियो हथियार ॥
माता देवै को बुलवायो * सोऊ तुरतै पहुँची आय ॥
बोले ऊदन तब माता से * रानी कुशलै लेउ बुलाय ॥
देवै बुलवायो कुशला को * त्यहि ऊदनते कही सुनाय ॥
हाथ चलैयो ना तिरियन पर * यह सुनिऊदन कही सुनाय ॥
धर्म की माता तुम हमरी हो * मनमें करो न सोच बिचार ॥
बैर हमारो थो करिया से * सो खेतन में दियो गिराय ॥
चीरा कलँगी मेरे बाप की * डोला साजि बिजैसिन क्यार॥
बावन बगुचा पशमीना के * लाखा और नौलखा हार ॥
हमहिं मँगाय देउ रानी तुम * रानी यह सब दियो मँगाय ॥
आल्हा चलिभये तब कोल्हूपै * देवै कुशला संग लिवाय ॥
पेड़ बर्गदा ते ऊदन ने * खुपरी दोनों लई उतारि ॥
आरति सजवाइ थारी में * तामें खुपरी दई धराय ॥
मलिखे आल्हा बैला बनिगे * ऊदन कातर दई फिराय ॥
देवा बहादुर लै जम्बै को * पत्थर कोल्हू दियो दबाय ॥
शीश काटि के फिरि जंबै को * सो थारी में दियो दबाय ॥
देखि हाल यह कुशला रानी * तुरतै गिरी भूमि भहराय ॥
बोले ऊदन तब कुशला से * रानी सुनो बघेले क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जो जो देखा तुम आँखिन से * सो सब कर्म करिंहा क्यार ॥
दोष हमारो कछु नाहीं है * मनमें समुझि लेउ महरानि ॥
गड़हा खोदे जो काहू को * ताके लिये कुआँ तैयार ॥
जैसी करनी तैसी भरनी * है यह बात प्रगट संसार ॥
धर्म की माता हौ हमरी तुम * बैठी राज करो गढ़ माहिं ॥
जो कोउ बैरी तुमहिं सतावै * तुरतै खबरि दिओ पहुँचाय ॥
हम चढ़ि ऐहैं गढ़ महुबे से * औ बैरिनको दिहैं भगाय ॥
यह कहि डोला लै बिजमाकी * राखो महल दूसरे जाय ॥
बोले ऊदन तब आल्हा से * गंगा करी बिजैसिन साथ ॥
ब्याहु रचाय लेउ जल्दी से * तब आल्हाने दियो जवाब ॥
ब्याहु सुनासिब नहिं बैरी घर * मनमें समुझि लेउ इकसाथ ॥
तोते मारि देउ याको तुम * यह सुनि ऊदन कही सुनाय॥
हाथ न डरिहैं हम तिरियन पर * रण में होय झूठ हथियार ॥
बोले आल्हा तब मलिखे से * तुम बिजमाको डारो मारि ॥
खैंचि सिरोही मलिखे मारे * तुरतै छूटि जनेवा जाय ॥
शाप दिया तब रनि बिजमाने * तुम सुनि लेउ जेठ मलिखान॥
मारे जैहो तुम अधबिच में * जहँ ना हुइहैं भाय तुम्हार ॥
इतनी कहिके रनि बिजमाने * तुरतै दीन्हे प्राण गँवाय ॥
लाशि उठाइ लई ऊदन ने * सो नदी में दई बहाय ॥
करी तयारी तहँ ते सबहुन * औ बबुरीबन पहुँचे आय ॥
शूर सिपाही महुबे वारे * तिनको आल्हा लियो बुलाय ॥
तलब बढ़ाय दई सबही को * औफिरि दियो इनाम बटाय ॥
हाथ जोरि तब मलिखे ऊदन * रनि देवै से कही सुनाय ॥
करि हैं गया जाय दादा को * माता हुक्म देउ फरमाय ॥
हुक्म दैदियो तब देवै ने * दोउन कूच दियो करवाय ॥
लश्कर चलिभौ तब आल्हा को * गढ़ महुबे में पहुँचा आय ॥
दगी सलामी गढ़ महुबे में * आये जीति जंग सरदार ॥
अनँद बधैया बाजन लागी * घर घर भयो मंगला चार ॥

॥ इति माड़ौ की लड़ाई सम्पूर्ण ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ सिरसा की पहिली लड़ाई ॥

* सुमिरनी *

अलख निरंजन परमेश्वर का * लै परभात रामको नाम ॥
सुमिरन कीजै श्रीगणेश को * जाते सिद्धि होय सब काम ॥
एकदंत गजबदन बिनायक * लायक सुभट कालके काल ॥
शंकर नंदन दुष्ट निकंदन * बंदन जगत गौरिके लाल ॥
ऋद्धि सिद्धि निधि चमर डुलावैं * सुरगण हाथ बाँधि रहिजायँ ॥
तेज बिराजै अंग अंग में * शोभा अमित बरणि नहिंजाय॥
पूरब सुमिरौं जगन्नाथ जी * पश्चिम कृष्णचन्द्र करतार ॥
दक्षिण ध्यावौं रामेश्वर को * उत्तर बद्रिनाथ दरबार ॥
आगे सुमिरौं सब देवन को * कहिहौं बीर पँवारा गाय ॥
कंठ बिराजौ मेरे कंठेश्वर * जिह्वा बैठु शारदामाय ॥
जो जो अक्षर माता भूलूं * सो सो लिखियो जीभ हमार ॥
तेरी नवैया पर चढ़ि बैठों * बेड़ा खेइ लगैयो पार ॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगे मैं * बरणौं सुयश बीर मलिखान ॥
सिरसा छीनि लियो पारथ से * करिके युद्ध घोर घमसान ॥
आल्हा ऊदन मलिखे ब्रह्मा * देवा आदि शूर सरदार ॥
जबते जनमे गढ़ महुबे में * जगिगये भाग चँदेले क्यार ॥
धन्य भाग माता कौशल्या * जिनके पुत्र भये भगवान ॥
धन्य कुक्षि रानी तिलका की * जन्मे प्रबल बीर मलिखान ॥
जबसे जन्म लियो तिलका से * बलनिधि शूर बीर मलिखान॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

शंका बढ़न लगी महुबे की * काँपन लग सुभट बलवान ॥
निर्भय बीर उदयसिंह उपजे * जन्मा अभयसिंह मलिखान ॥
संपति लाय भरी महुबे में * लै लै महा बलिन सो मान ॥
जित दोउ बीर समरको गवनैं * भागैं हाँक सुनत महिपाल ॥
ऐसे नर महुबे में उपजे * जगमें अहोभाग परिमाल ॥
जैसे राजा रामचन्द्र के * योधा अंगदादि हनुमान ॥
तैसेही परिमाल भूपके * बलनिधिउदयसिंह मलिखान॥
गढ़पति शूर बीर भट योधा * राजा राज कुँवर सरदार ॥
चत्र पती रणधीर बहादुर * हाजिर रहन लगे दरबार ॥
कनक कोट पर झंडा लहरे * सोहत चित्र विश्व भगवान ॥
ऊपर नामा चन्देले को * नीचे ऊदयसिंह मलिखान ॥
सुख समेत नाना बिधि सम्पति * महुबे भोगि रहे परिमाल ॥
परजा सुखी सुखी पशु पक्षी * योधा सुघर बजावैं ताल ॥
पारस पूजा चन्देले घर * लोहा छुवत सोन हुइ जाय ॥
रहै कृपा सब परमेश्वर की * आगे हाल सुनो मनलाय ॥
लगी कचहरी नुनिआल्हा की * भारी लागि रहा दरबार ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * तापर तपै शूर सरदार ॥
बारह द्वारी के बँगला है * तेरह द्वारी के दलान ॥
खंभ अठासी की बैठक है * चौबिसकी चौपारि बखान ॥
एक अलँग पर ताला सैयद * बैठो एक ओर मलिखान ॥
एक अलँग पर ढेवा बैठा * यकलँग उदयचंद बलवान ॥
नचै कंचनी वा बँगला में * शोभा कछू कही ना जाय ॥
वाहि समैया के औसर में * मलिखे उठा चित्त हर्षाय ॥
उतरि सिंहासनसे भुइँ आया * बोला हाथ जोरि मलिखान ॥
एक बात तुमसे कहियतु हैं * दादा मंडलीक बलवान ॥
बहुत दिना से बन बेलिन में * हम नहिं खेलनगये शिकार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हुक्म तुम्हारो दादा पाऊँ * तो घोड़ा पर होउँ सवार ॥
हुइके गुस्सा तब आल्हा ने * नर मलिखे से कही सुनाय ॥
पड़ी तबाही गढ़ माड़ौ की * अब तक भयो होश कछुनाय॥
है तू जालिम भैया मलिखे * तेरा कोइ न पावै पार ॥
कोइ तो मारे हैं शेरन को * तू वीरन के करै शिकार ॥
शरि मचावै केहु सावँत से * मारे जायँ सकल सरदार ॥
तापर ज्वाब दियो मलिखे ने * दादा मंडलीक औतार ॥
पहिली गारी पर ना बोलूँ * ना दूजी पर करौं बिगार ॥
तीजी गारी पर छोड़ूँ ना * मुखमें खोसि देउँ तलवार ॥
हुक्म देदिया तब आल्हा ने * मलिखे तुरत भयो तैयार ॥
घोड़ी कबुतरी को सजवायो * तापर फाँदि भये असवार ॥
सिरसा गढ़ केरे जंगल में * घोड़ी पहुँचि गई तत्काल ॥
जहां शिकार करत बन डोलै * पारथ नाम पिथौरा लाल ॥
हिरण एक घेरी पारथ ने * सो मलिखे की परी निगाह॥
झपटि गिराया नर मलिखे ने * तब पारथने करी निगाह ॥
लौटि गरदना नाहर केसा * सो मलिखे तइँ रहा निहार ॥
बोला पारथ नर मलिखे से * औ राजन के राज कुमार ॥
कौन देश के तुम बासी हो * आगे कहा तुम्हारो नाम ॥
हमरी सीमा के अन्तर में * तुम्हरो यहां कौन सो काम ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ * तो समुहें से जाउ बराय ॥
छाँड़ि शिकार देउ हमरो तुम * नाहीं तेगा देउँ चलाय ॥
इतनी सुनतै मलिखे तड़पे * औ पारथ से कही सुनाय ॥
यह सीमा है गढ़ महुबे की * तू है कौन देश का राय ॥
पटिया नाहीं तेरे बाप की * जो चलि आयो हमरे गाम ॥
सिंहा बिचरत है या बन में * या में गीदड़ का क्या काम॥
इतनी सुनि लइ जब पारथ ने * बोली गई करेजे पार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोला पारथ तब मलिखे से * सुनले सच्चा बचन हमार ॥
यहँ है सीमा मेरे बाप की * हैं जो शब्द बेध चौहान ॥
गढ़ दिल्ली पति पृथीराज हैं * जिनको जानत सकल जहान॥
यहँ का राजा बच्छराज था * जो महुबे को राज कुमार ॥
जादिन मरिगा बच्छराज नृप * सिरसा भयो बिना सरदार ॥
तब महराजा पृथीराज ने * यह दिल्लीमें लियो मिलाय ॥
सिरसा गढ़ का यह जंगल है * सिरसा तीनिकोश रहिजाय ॥
राज हमारो यहँ पर कहिये * पारथ नाम पिथौरा लाल ॥
सीमा नाहीं यह तुम्हरी है * ना है राज रजा परिमाल ॥
इतनी बात सुनी पारथ की * तब हँसि कही बीर मलिखान॥
भली बताई पारथ ठाकुर * हौ तुम धन्य बीर चौहान ॥
मैं हूँ बेटा बच्छराज का * औ मलिखान हमारो नाम ॥
सिरसा गढ़ है मेरे बाप को * तहँ तुम कियो आपनो धाम॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ * खाली करिदेउ गाँव हमार ॥
खाली करिहौ ना सिरसा जो * तो लेलेउँ तेग की धार ॥
इतनी सुनतै पारथ जरिगा * औ मलिखेसे कही सुनाय ॥
ऐसो शूर कहीं ना देखों * सिरसा खाली लेय कराय ॥
और बियरिया डोलन लागी * औरइ होन लाग ब्योहार ॥
यहाँ कि बातैं तो यहँ छाड़ौ * आगे केरि सुनो तकरार ॥
बातन बातन बत बढ़ हुइगा * औ बातन में बाढ़ी रार ॥
गुस्सा हुइके तब पारथ ने * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
हिरना धरि देउ तुम हिंयना पर * चुप्पै लौटि महोबे जाउ ॥
नाहीं चोटैं आपनि करि लेउ * क्यों फिर सर्ग बैठि पछिताय॥
बोले मलिखे तब पारथ से * बेटा सुनो पिथौरा क्यार ॥
चोट अगारू हम नहिं खेलैं * ना भागे के परैं पिछार ॥
पाँव पिछारू को नहिं राखैं * ना तिरिया पर करैं हथ्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चोट आपनी पारथ करि लेउ * ना कछु मनमें करौ बिचार ॥
फूलिके पारथ गरगज हुइगौ * समुहें झोंकि दई तलवार ॥
ढाल उठाय दई मलिखे ने * ताको लीन्ही चोट सम्हार ॥
तीनि वार पारथ ने कीन्हों * मलिखे तीनों लियो बचाय ॥
होश बिगरि गये तब पारथ के * मनमें गयो सनाका खाय ॥
खैंचि शिरोही लइ मलिखे ने * औ पारथ पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई पारथ ने * तापर भयो जड़ाका जाय ॥
घोड़ा भागि चलो पारथ को * ना रोके से रुकी लगाम ॥
पारथ भागि गयो सिरसा को * मलिखे गयो आपने गाम ॥
पारथ सोचे अपने मनमें * औ पलका पर करै बिचार ॥
रैनि समैया नींद न आई * बोली तासु पद्मिनी नार ॥
स्वामी निधड़क तुम सोवत थे * जैसे बिपिन माहिं मृगराज ॥
कौन आपदा तुमपर परि गई * स्वामी नींद न आई आज ॥
बोला पारथ तब रानी से * तुम सुनि लेउ पद्मिनी नार ॥
सिरसा के रे तीनि कोश पर * हम बन खेलन गये शिकार॥
आज मिलाप भयो बैरी से * निदिया कूँच गई करवाय ॥
बहुत दिना सुखसे सोये हम * अब दुख नींद पहूँची आय ॥
मलिखे बेटा बच्छराज का * ताने हमरी हनी शिकार ॥
सिरसा माँगे अपने बापको * जाकी कठिन चलै तलवार ॥
इतनी बात सुनी रानी ने * मनही मनमें गइ मुरझाय ॥
पाँच पुरुष की तिरिया जैसे * अपने मनहीं मन पछिताय ॥
यहाँ कि बातैं तो यहँ छाड़ो * अब महुबे को सुनौ हवाल ॥
जहाँ कचहरी नुनि आल्हा की * मलिखे पहुँचि गये तत्काल ॥
हाथ जोरिके मलिखे बोले * दादा मंडलीक औतार ॥
न्यारा किला हमहि बतलावो * न्यारा बँगला फौज हमार ॥
तापर ज्वाब दियो आल्हा ने * पहुँचो चन्द्रबंश दरबार ॥
जो कोइ गढ़िया देयँ चँदेले * तामें जाय रहौ सरदार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ताल्हा सैयद बोलन लागे * बेटा सुनो हमारी बात ॥
सिमा दबाई पृथीराज ने * हैं जो दिल्ली पति चौहान ॥
सिरसा गढ़ तुम्हरे चाचा का * सो पिरथी ने लियो दबाय ॥
अपना सिरसा जाकर लेलो * चाहे रार मार बढ़ जाय ॥
अब तुम जावो गढ़ महुबे में * औ राजा से कहो सुनाय ॥
जाय माँगियो तुम कोइ गढ़िया * तुमको देयँ चँदेले राय ॥
जोई रोगी के मन भावै * सोई वैद बताई आय ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठा * औ महुबे में पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी चन्देले की * बैठे बड़े बड़े उमराव ॥ ॥
क्या छबि बरणौं वा बँगला की * शोभा कछू कही ना जाय ॥
मलिखे पहुँचि गये बँगला में * लैके रामचन्द्र को नाम ॥
पाँच पैग पे शीश झुकायो * औ ढिग जाकर किया प्रणाम॥
नजरि बदलि गइ चन्देले की * देखा बच्छराज का लाल ॥
हाथ पकरि के लै गोदी में * लौ बैठाय रजा परिमाल ॥
बोले राजा नर मलिखे से * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
कौन आपदा तुम पर पड़ि गइ * जो मुरझाय रहे यहि काल ॥
राज बढ़ायो तैं महुबे को * सम्पति भरी भवन में लाय ॥
कंचन कोट धाम रचिडारे * यशकी ध्वाजा रही फहराय ॥
दल गढ़ राज धाम धन सम्पति * जो तोहिवस्तुजहाँ दिखलाय॥
आजु माँगिले राज द्वार में * कहि देउँ एवमस्तु हर्षाय ॥
सारे साच हमारे मिटि गये * जबसे तुम पकड़ी तरवार ॥
समरथ लड़िका जिनके हुइगै * पुरखिन कहा रही दरकार ॥
हाथ जोरि मलिखे शिरनायो * बोले दीन बचन बिलखान ॥
लज्जित करत नाथ मलिखे को *अवगुणकहत सुयसदिखलाय॥
कोइ आपदा हम पर नाहीं * चाचा चहिये दया तुम्हार ॥
हाथ धरे राखो पीठी पर * जासो होवे भला हमार ॥
इन भुज से दल गढ़ संहारे * जीते महा बलिन के राज ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सो फैलाय वस्तु क्या माँगौं * केहिबिधि तजौंजगतकीलाज॥
आपहि नाथ न्याय निरवारो * जो मैं सौंपि चुका धन धाम ॥
इस जिह्वासे फिरि क्या माँगौं * क्या मैं कुटिल होउँ सरनाम ॥
जबलग आपु राज पर बैठे * महुबे भोग करो सुखसाज ॥
जब जग त्यागिस्वर्ग को गवनौ * ब्रह्मा भ्रात करै यह राज ॥
मैं नहिं भाग लेत भ्राताको * जिसको गिनौं प्राण आधार॥
कछु मति नाथ कहौ मलिखे से * क्यों सिर लेत अयसको भार॥
हाँ जो दया करत मलिखे पर * औ कछु देन चहत महराज ॥
तौ इक अर्ज करत स्वामीसे * राखियो हाथ गहेकी लाज ॥
सुनतै महाराज तब बोले * करि अतिप्रेम प्रीत हितप्यार ॥
जौन मनोरथ जियमें राखो * कहिदो आजु राज दरबार ॥
बचनसुनतमलिखे उठि बोल्यो * दोउ करजोर चरण शिरनाय ॥
इच्छा प्रगट करत स्वामी से * सुनतै दया लहरि हुइजाय ॥
सिरसा गढ़ जो मेरे बापका * जो पिरथीने लियो दबाय ॥
हुक्म तुम्हारो जो मैं पाऊँ * तो पारथ से लेउँ छिनाय ॥
मारि भगाऊँ मैं पारथ को * सिरसा फेरि करौं आबाद ॥
किला बाँधि धुर पै अड़ि बैठौं * तुम्हरी करौं राज मरजाद ॥
चौकी हुइ जाय गढ़महुबेकी * धुर पर पड़े रहैं बलवान ॥
जब दलसिन्धु झुके दिल्लीसे * पहले लहरि लेय मलिखान ॥
सुनत बात सोचे राजा तब * भारी भूप पिथौरा राय ॥
कही हमारी जो माने यह * तो मैं याहि देउँ समुझाय ॥
बहुतै समझायो राजा ने * औ छाती से लियो लगाय ॥
हाथ फेरि पीठी पर बोले * बेटा तुम्हें कौन परवाय ॥
कहो तो महुबा खाली करदूं * कहु जगनेरी करौं तुम्हार ॥
कहो बसादूँ किला कलिंजर * कहु पटना को देउँ पहार ॥
तुम मति अटको पृथीराज से * सदा सदाको बैर बँधाय ॥
जीवत टारि नाहिं मिटनेको * बेटा सभी फौज खपि जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथ जोरिके मलिखे बोला * तुम सुनि लेउ चन्द्रसरदार ॥
हँसी खुशी से आज्ञा दैदेउ * मनमें करौ न सोच विचार ॥
सिरसा जीति लेउँ पारथ से * जल्दी हुक्म देउ फरमाय ॥
किला बानऊँ मैं धूरे पर * बैठौं जाय भूमि अपनाय ॥
जिससे उत्तर धुर कनउजको * दक्षिन मदन सिंहकी ठाउँ ॥
पश्चिम धूरो है दिल्ली को * आज्ञा देउ तुरत चढ़ि जाउँ ॥
इतनी बात कही मलिखे ने * सुनतै सुन्न भये परिमाल ॥
आल्हा मनमें सोचन लागे * ऊदनतकनलगाजिमिब्याल ॥
आल्हा ऊदन चलिआये थे * बातैं सुनन बीर मलिखान ॥
नृपके एक ओर बैठे थे * बैठे ब्रह्मानँद बलवान ॥
शूर बीर भट कोइ न बोले * को भरि सके कालकी साख ॥
बिषधर छुवत भ्रातको जानो * बोला उदयसिंह करिभाख ॥
इर्द गिर्द के गढ़ संहारौं * सिरसा गाँव लेउँ अपनाय ॥
निर्भय राज करौ सुख सोवौ * क्या करि सकैं पिथौराराय ॥
पर इक सीख सुनो ऊदनकी * राखौ दूत सदा तैयार ॥
निरखत दिशा रहे दिल्लीको * आवत जचै फौज इकतार ॥
तब वे दूत पवन गति गवने * ना मग मध्य करैं जलपान ॥
खबरि सुनावैं गढ़ महुबे में * गढ़ में घिरे जात मलिखान ॥
तो भट शूरबीर बहुबे के * उड़िके जाय परैं तत्काल ॥
आल्हा ऊदन ब्रह्मा ढेबा * शिरपर बनैं भ्रात के ढाल ॥
एक बात जिह्वा पर आवै * पै कछु खौफखाय रुकिजाय ॥
जो तुम खता माफकरि डारौ * तो मैं अर्ज करौं शिरनाय ॥
करिमदमान चुप्पमत रहियो * नहिं गढ़सहितधूरि हुइजाय ॥
समाचार जल्दी लिखि भेज्यो * चूके समय स्वर्ग पछिताउ ॥
जैसेइ बचन सुने ऊदन के * लागे हृदय मध्य जिमिबान ॥
क्रोध अग्निमनमें उठि भभकी * बोल्योनजरजोरि मलिखान ॥
कायर खबरि करत संकट में * सायर सिंह तके नहिंआस ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

रेमनहीन समर लखि काँपै * रणसे शूर करहिं क्या त्रास ॥
सिंहहि घिरत सुने बन भीतर * कबहुँन घिरत सुने खरस्यार ॥
शूरहि कटत सुने रण गढ़ में * कटत न सुने चोर बटकार ॥
बड़ बड़ सुभट बीर नर उपजे * सबको किया कालने ग्रास ॥
मैं क्या वस्तु सकल तनुधारी * इकदिन लेहिंस्वर्ग में बास ॥
तुमहीं कहो अमर को रहिगे * जो जग प्रगट भये तनुधारि ॥
मृत्यु गरल किसको नहिं व्यापो * जगमें रहत कौन नर नारि ॥
दुख सुखरोग विपति रण पीड़ा * यह सब बने स्वर्गके बाट ॥
देखु बीर जगसे सुरपुर को * निश दिन रमत पाटके पाट ॥
बिलग न मानो राजसभा में * तौ मैं कहौं उदयचंद राय ॥
संकट परे कौन नहिं लरजै * को नहिं शरण तकै भयखाय ॥
कौन हितू है गढ़ महुबे में * मैं नहिं धरी शीश पै ढाल ॥
सबकी बिपति लई मलिखे ने * अब कोउ बीर बजावौ गाल ॥
जेनर शरण तकत मलिखे की * उनकी आशलखै मलिखान ॥
व्यर्थहि चीर दियो माता ने * क्योंनहिं गरल करायो पान ॥
लज्जित हुइ ऊदन शिर डारो * आल्हाशिथिल भयेसकुचाय ॥
क्रोधवन्त मलिखेको निरखो * बोले महाराज समुझाय ॥
जो तू कहत प्रगट सब दरशै * भाषत सत्य परस्पर बात ॥
पर मैं पिता रूप तोहिं बरजौं * सुनु यह बात कान धरि तात ॥
सागर अगम कटक दिल्लीको * इकलँग मगर रूप चौहान ॥
क्यों तू आप भँवर में कूदत * पार न पायसकै मलिखान ॥
बार बार तोको मैं बरजत * मति करु कालबलीसे माख ॥
तू मैं क्या सिगरे सुत भ्राता * होवैं समर भूमि में राख ॥
बचन सुनत मलिखे तब बोल्यो * जचिगई नाथ चित्तकी बात ॥
कारण समुझि लियो मलिखे ने * जो तुम हुक्म देत सकुचात ॥
स्वामी आपु चित्त यह शोचत * जो यह छेड़ करै मलिखान ॥
आपु मरै तौ क्या भय चिन्ता * हमरो नास करै सुत प्रान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह संशय जियमें जनि लावो * मैं नहिं देहुँ त्रास कछुनाथ ॥
संकट परे तुम्हे नहिं हेरौं * यह प्रण नाथ प्राण के साथ ॥
पृथीराज क्या शिव चढ़ि आवैं * अर्जुन धनुष बाण लै हाथ ॥
अपने गढ़की समर भूमि में * मैं नहिं लड़ौं बंधु लै साथ ॥
शीश डारि राजा मन सोचै * उलटे सीख देत मलिखान ॥
बेढ़ब बात बढ़ाति मजलिसमें * क्या कर्तव्य बिश्व भगवान ॥
हाथ पकरि हिय में लपटायो * बोले बचन प्रेम रससानि ॥
दुबिधा भरम सकल सुत तजिदे * मेरी सीख सुधा सम जानि ॥
तू मत टरिये दुख संकट में * पर मैं कहे देत प्रियलाल ॥
समर होत कानन सुनिपाऊँ * शिर पर ढाल बनौं तत्काल ॥
चरण पकड़ि तब मलिखे बोले * है कहँ महाराज को ध्यान ॥
जब तुम ढाल शीश पर बैठे * फिरक्या फिक्र करै मलिखान ॥
जो मैं नाथ बचन नहिं मानत * मरजी गिनौ बिश्व भगवान ॥
बिधि गति समुझि हुक्म दैडारो * अपने काज लगै मलिखान ॥
बहु समझायो पुनिराजा ने * उत्तर उचित पाय ततकाल ॥
लाभु न जानि परो बर्जन में * बोले तबहिं रजा परिमाल ॥
जाउ पुत्र हम अज्ञा देदी * लड़िके लेउ सिरसमा जाय ॥
गणपति सुमिरिसिंह सम गवनौ * धुर पर किला बनावौ जाय ॥
कमर खींचि धनुबाण उठावौ * बेटा करो सुयशको काम ॥
ऐसो नाध नधौ पृथिवी पर * होवै वत्सराज को नाम ॥
आज्ञा श्रवण करी मलिखे ने * बहुबिधि बिनयकरी शिरनाय ॥
धर्म रूप तुम पितु परमानँद * म्वहिंसुखभयो हुक्म यहपाय ॥
बाँह पकरि तब नरमलिखे को * बोले भूप शीश धरि हाथ ॥
सदा पुत्र जगमें सुख भोगौ * निशिदिन रहे बीरता साथ ॥
लै धनुबाण आप पकड़ायो * बोले महाराज करि ध्यान ॥
सन्मुख चन्द्रलग्न दिगद्वारी * करियो अबहिंगमन मलिखान ॥
यह सुनते राजहिं शिरनायो * दुर्गे सुमिरि गह्यो धनुबान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भेंटि भाँटिके सब भ्रातन को * तहँते गमन कियो मलिखान ॥
जायके पहुँचा रंग महल में * मल्हना चरण कमलधरिमाथ ॥
कीन्ह प्रणाम भँवर मलिखे ने * ठाढ़ो भयो जोरि दोउ हाथ ॥
कही हकीकत सब मलिखे ने * आज्ञा दई मल्हनदे रानि ॥
तहँते चलिभा बीर बाँकुड़ा * माता चरणछुए मनमानि ॥
कही हकीकत सब माता से * तिलकाशोचिसमुझिसकुचाय ॥
अज्ञा दीन्ही सुत अपने को * भुजबल पूजि दिये हर्षाय ॥
चरण पूजि के जगदम्बे के * मनियां सुमिरि महोबे क्यार ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठा * इकला चला शूर सरदार ॥
बाल बयसि के मित्र सनेही * जुरिमिलिसकल एकसौ सात ॥
अस्त्र शस्त्र लै धुर पै भेंटे * बोले हाथ पकड़ि सुन भ्रात ॥
जन्मे संग साथ नित खेले * इक ढिग बैठि गँवाई रात ॥
हम घर रहैं आपु बन गवनैं * अनुचित बातमित्र दिखलात ॥
संग चलहिं संगहिं सँग बैठैं * संगहिं करैं समर संग्राम ॥
संग शीश रणमें कटवावैं * संगहिं मित्र चलैं सुरधाम ॥
भुजापकड़ि मलिखे हँसि बोल्यो * मैंने उऋण किये सबयार ॥
यारो लौटि जाउ महुबे को * क्यों बन माँझ फिरौगे ख्वार ॥
हाथ जोरि सबने शिर नायो * बोले सजल नयन बलवान ॥
अनुचित बात कहत जिह्वासे * हमकोलाज लगतमलिखान ॥
हम चोला तुम प्राण हमारे * फिरिका कहौ बीर मलिखान ॥
कौन यत्न है संसारी में * जोतन रहे मित्र बिन प्राण ॥
बहु बिधि सीखदई मलिखे ने * बर्जे बहुत भाँति बलवान ॥
कोउनहिं मित्र भुवनको गवनो * आगे बढ़े खींचि धनुबान ॥
यहिबिधि गवन कियो मलिखेने * अब महुबे को सुनो हवाल ॥
सबियाँ बैठे थे बँगला में * बोले बिहँसि रजापरिमाल ॥
सिरसा गढ़ के सर करने को * इकला गया भँवर मलिखान ॥
जो कहुँ मलिखे मारो जैहैं * हमको हँसिहैं सकल जहान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

फौज सजाय लेउ जल्दी से * औ सिरसा पर होउ तयार ॥
इतनी सुनतै आल्हा सैयद * सिगरी फौज केर सरदार ॥
तोप दरोगा को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं जो महुबे में * तिनको तुरत लेउ सजवाय ॥
हाथी वारे को बुलवायो * सिगरे हाथी लेउ सजाय ॥
घोड़ा वारे को बुलवायो * घोड़ा सभी लेउ सजवाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा गढ़ महुबे में * लश्कर गये उदयसिंह राय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
जितनी तोपैं तुपखाने में * सो सजवाइ उदयसिंह राय ॥
हाथी साजे कजरी बनके * जो लश्कर के चलत अगार ॥
फौज बिडारन हाथी साजे * औ गज भूरा करे तयार ॥
सिंघलदीपी हाथी साजे * सुबरन हौदा दिये धराय ॥
घोड़ा साजे कच्छी मच्छी * ताजी तीनि पाय ठहराय ॥
हरियल मुश्की पचकल्यानी * औ दरियाई लिये सजाय ॥
लकवा गर्रा और कुमैता * समुदा घोड़ा लिये सजाय ॥
चौधर चाल कबूतर साजे * अबलख घोड़ा लिये सजाय ॥
श्यामा कुबजा तुर्की साजे * औ सबरंग लिये सजवाय ॥
सुन्दर टाँगन और सफैदा * सुर्खा श्यामा लिये सजाय ॥
बलख बुखारे औ काबुल के * घोड़ा सबै लिये सजवाय ॥
जीन सुनहरी तिन धरवाये * रेशम तंग दिये कसवाय ॥
खुलि गये ताले आमखासके * छत्री उठे भरहरा खाय ॥
पहिले पहिरे लाल कुर्तिया * ताके ऊपर कुलह कबार ॥
ताके ऊपर सोला कस कर * जामें नाहिं गड़ै तलवार ॥
ऐसी बखतर पहिरि सिपाही * जामें साँगि बिलौचा खाय ॥
टोप झिलमिला धरि माथेपर * ऊपर कुंडी लइ औंधाय ॥
छप्पन छुरिया हनि हनि बाँधी * औ गुजराती हनै कटार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अगल बगल पर दुइ पिस्तौलैं * दहिने दुइ झूमैं तलवार ॥
लई कमनियाँ मुलतानी की * औ बूंदी की असल कटार ॥
सजिके गहना रजपूती का * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
पहले डंका के बाजत खन * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
दुसरे डंका के बाजत ही * सिगरे फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़नके असवार ॥
कोइ नालकिन कोइ पालकिन * कोई गजरथ भये सवार ॥
हाथी पचशावद सजवायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
ताला सैयद बनरस वाला * घोड़ी सिंहिनि पर असवार ॥
घोड़ा मनुरथा पर ढेबा हैं * घोड़िहिरौंजिनि पर सुलिखान॥
घोड़ा बेंदुला त्यार कराया * तापर उदयसिंह बलवान ॥
कूच का डंका तब बजवाया * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
धौंसा बाजि रहा लश्कर में * शोभा कछू कही ना जाय ॥
दबति अँधिरिया दल में जावे * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
धूरि उड़ानी आसमान लौं * सूरज रहे धुन्धि में छाय ॥
नौसै झंडा दल में सोहैं * लश्कर रही लालरी छाय ॥
राह पकरि लइ गढ़ सिरसा की * डंका होत गोल में जाय ॥
छम छम छम छम बजै पैंजनी * दमकै अष्ट धातु की नाल ॥
झूमत चले जात हाथी सब * घोड़ा चलैं आपनी चाल ॥
फौजें चली जायँ महुबे को * अब मलिखे को सुनो हवाल॥
घोड़ी कबूतरी चढ़वैया * बाँका बच्छराज का लाल ॥
चलत चलत बाहन पुर पहुँचे * जहँ धुरलगा सिरसवा जान॥
सब भट उतरि परे घोड़न ते * सीमा पूजि कीन्ह जलपान ॥
तीनि पहर रहिके चलिभे सब * हुइगै बिल्ह नदीके पार ॥
चारिकोश जब सिरसा रहिगा * तहँ सब उतरि परे सरदार ॥
राति बिताय प्रात उठि बैठे * विधिवत जाय करी असनान॥
अस्त्र धोय मंत्रन करि शोधे * शुचि हुइ किया इष्टका ध्यान॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुमिरन करिके सब देवन को * मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार॥
सब पुर बासी गढ़ महुबे के * तिनको शीशनाय बहुबार॥
लैके कागद कल्पी बाला * अपनी कलमदवात सम्हाल॥
पहिले लिखिके सरनामा को * फिरिपारथ कोलिख्यो हवाल॥
इच्छा तुम्हरी जो लड़ने की * अपना खेत बुहारो आय॥
नाहीं मनसा जो लरिबे को * सिरसा खाली देउ कराय॥
किला हमारो हमको देदो * नातर आय युद्ध मैदान॥
बल पौरुष अपना दिखरावो * तुमपर आय गये मलिखान॥
याबिधि अंकलिखे चिठिया में * ऊपर दीन्ही मुहर लगाय॥
बन्द लिफाफा में तुरतै करि * औ धामन को दई गहाय॥
धामन चलिभा गढ़सिरसा को * औ गढ़िया में पहुँचा जाय॥
बड़े बजारन में आयो जब * नगरी देखि २ रहिजाय॥
जहाँ कचहरी थी पारथ की * धामन तहाँ पहूँचो जाय॥
सँकर खौंचिलइ सडिनि बैठि गइ * धामन उतरि परो हरगाय॥
जायके समुहें दाखिल हुइगा * लैके नाम राम रघुराय॥
पाँच कदमते कुन्नस करिके * पाती गद्दी दई चलाय॥
नजर बदल गइ तब पारथ की * तुरतै पाती लई उठाय॥
पाती बाँचत परलै हुइ गइ * गुस्सा गई देहमें छाय॥
लौटि जवाब लिखी चिठियाका * मलिखे सावधान होइ जाय॥
कठिन मवासी गढ़ सिरसा है * सीधे किला मिलैगो नायँ॥
जंग जीतिके सिरसा लैलो * जाको देय सारदा माय॥
यहिबिधि चिठियालिख पारथने * सो धामन को दई गहाय॥
करी बन्दगी तब पारथको * औ चढ़ि चला शुतर असवार॥
तौलौं लश्कर गढ़ महुबे को * पहुँचो आय विल्हके पार॥
उठी निगाह भँवर मलिखे की * औ लश्कर तइँ रहा निहार॥
झंडा देखे गढ़ महुबे के * बहुतै खुशी भया सरदार॥
जहँपर तम्बू नरमलिखे को * लश्कर तहाँ पहूँचो आय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तनि गये तम्बू धुरखेतन में * शोभा कछु कही ना जाय ॥
हाथी बँधिगये एकपास सब * घोड़ा बँधे थान से जाय ॥
फेंटैं खुलि गईं रजपूतन की * सबने डेरा दियो लगाय ॥
लगी कचहरी नुनिआल्हाकी * भस्माभूत लगा दरबार ॥
आल्हा मलिखे ऊदन ढेबा * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
तौलौ धामन दाखिल हुइगा * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिकै पाती आल्हा बाँची * आँकुइ आँकु नजरि करिजाय॥
बाँचि सुनाई नर मलिखे को * मलिखे अग्निज्वालहुइ जाय ॥
तोप दरोगा को बुलवायो * औ यह हुक्म दई फरमाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर देउ चढ़ाय ॥
सेनापति को तुरत बुलायो * जल्दी लश्कर लेउ सजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
कोई नालकी कोई पालकिन * कोई गजरथ पर भये सवार ॥
सुनी खबरि सब जब पारथने * तुरतै हुक्म दीन फरमाय ॥
जितनी तोपैं हैं गढ़िया में * सब चरखिन पर देउ धराय ॥
जितने हाथी हथिखाने में * मुंडा हौदा देउ धराय ॥
जितने घोड़ा घुड़शालन में * काठी एक संग पड़जाय ॥
पैदल पलटन जितनी कहिये * सो सब सजिके होय तयार ॥
अब चढ़ि आये महुबे वारे * अंधाधुंध चले तलवार ॥
निमकजो खायो चौहानन को * सो हाड़नमें गयो समाय ॥
पाँव पिछारू जो कोइ धरि हैं * ताको तुरत दिहौं उड़वाय ॥
सुनतै सबके होशबंद भये * बँगला सूनसान हुइ जाय ॥
जो जो नाम सुने मलिखे का * तिनकी बँधी फेंट खुलिजाय॥
जो कोइ नाम सुने ऊदन का * करसे छूटि परै तलवार ॥
डोंड़ी पिट गइ गली गली में * कूँचे और बजार बजार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बहुतक कायर सटकन लागे * लुटिया ले झाड़ेको जायँ ॥
लानति ऐसी नौकरिया पर * बनकी बेंचि लकरिया खायँ ॥
यहगति होरहि सब क्षत्रिनकी * कायरसहमिसहमि रहि जायँ ॥
दहमति गालिब है पारथ की * डरते कान हिलावत नाय ॥
डंका बाजो सब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले नगाड़ा में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथि चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाके घोड़न के असवार ॥
जितनी तोपैं थीं गढ़िया में * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
सो बढ़वाय दई आगे को * शोभा एक न बरनी जाय ॥
जितनी फौज हती पारथकी * दो घण्टे में भइ तैयार ॥
हाथी साजि गया पारथको * हौदा बीच भया असवार ॥
जा दिश मारैंथीं तीरन की * तादिश ढालैं लई अड़ाय ॥
जा दिश मारैं बंदूकन की * लोहे तवा लिये जड़वाय ॥
कूचको डंका बाजन लागो * लश्कर कूच दीन करवाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * रणखेतन में पहुँचा आय ॥
लगे मोरचा अब तोपन के * कछु तारीफ करीना जाय ॥
हुक्म देदिया तब पारथ ने * तोपन आगी देउ लगाय ॥
इतनी सुनतै उठे खलासी * औ तोपन पर पहुँचे जाय ॥
बत्ती दैदइ तब तोपन में * धुँअना रही सरग मँड़राय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * रणमें होन लाग घमसान ॥
अररर रर रर गोला छूटे * कह कहकरैं अगिनियाँ बान ॥
सननन सननन गोली छूटे * सररर परी तीर की मारु ॥
दोनों फौजन के संगम में * अन्धाधुंध तोप की मारु ॥
गोला लागे जेहि हाथी के * दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय ॥
गोला लागे जौन ऊँट के * दलमें गिरे चकत्ता खाय ॥
गोला लागे जिन घोड़न के * चारो सुम्म गर्द होइ जायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गोला लागे जिन क्षत्रिन के * तिनकी त्वचा स्वर्ग मड़राय ॥
बंबको गोला जिनके लागे * तिनके हाड़मास छुटिजाय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागे * सो लत्तासे जायँ उड़ाय ॥
छोटी गोली जिनके लागे * मानो गिरह कबूतर खाय ॥
बान को डंडा जिनके लागे * तिनके दुइ खंडा हुइ जाय ॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइगइँ * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
चढ़ी कमनियाँ पानी हुइगइँ * चुटकिन के गये मास उड़ाय ॥
तोप रहकला पाछे छाँड़े * लंबे बन्द करैं हथियार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके * रहिगे पाँच पैग असवार ॥
साँगें चलन लगीं दोनों दल * ऊपर बर्छिन की दइ मार ॥
छुटै पिचका जे लोहुन के * जहँबहि चली रक्तकी धार ॥
बूड़ि जुलफियाँगइँ क्षत्रिन की * चर्बी अंगन गइ लपटाय ॥
मानहु टेसू बनमें फूले * ऐसी रही लालरी छाय ॥
हौदा भरि गये जे लोहू से * औ चुचुआत फिरे असवार ॥
चारि घरी भरि बजो साँगड़ा * भारी भई साँगि को मार ॥
भाला टूटि के दोना हुइ गयो * सबियाँ हारि मानि गये ज्वान॥
दोनों फौजन के अन्तर में * रहि गयो डेढ़ कदम मैदान ॥
खैंचि सिरोही रजपूतन लइ * नंगी चलन लगी तलवार ॥
चले जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायति क्यार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोले छपक छपक तलवार ॥
तेगा चटके बर्दवान के * औ बूँदीकी असल कटार ॥
पैदल के सँग पैदल अभिरे * औ असवारन ते असवार ॥
हौदा के सँग हौदा मिलिगये * ऊपर पेशकब्ज की मार ॥
पैग पैग पर पैदल गिरि गये * उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे * छोटे पर्वत की उनहार ॥
कल्ला कटिगए जिन घोड़नके * धरती गिरे भरहरा खाय ॥
कटे भुसुंडा जिन हाथिन के * धरती गिरे करवरा खाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कटि भुज डण्डै रजपूतन की * चेहरा कटैं सिपाहिन क्यार ॥
पड़े दुशाला हैं लोहू में * जनु नदी में परो सिवार ॥
पगिया डारी जो लोहू में * मानो ताल फूल उतराय ॥
ढालैं डारी हैं लोहू में * यारो कछुआसी उतरायँ ॥
पड़ि बन्दूकें हैं लोहू में * मानो नाग रहे मन्नाय ॥
घैहा डारे रण में लोटैं * दलमें मारु मारु सुनाय ॥
मुर्चन मुर्चन नचै कबुतरी * मलिखे कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगो हमार ॥
पाँव पिछारी को ना धरियो * नहिं सब जै हैं काम नसाय ॥
सिरसागढ़ जो हमको मिलिहैं * दूनी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दियो बढ़ावा सब क्षत्रिन को * मलिखे आगे दिये बढ़ाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * अपनो मया मोह बिसराय ॥
दोनों हाथन करैं सिरोही * अरु आगे को पाँव बढ़ाय ॥
बढ़ि बढ़ि हाथ करैं महुबे के * मारु मारु रट रहे लगाय ॥
जैसे भिड़हा भेड़न पैठे * जैसे सिंह बिडारै गाय ॥
तैसे दल में महुबे वारे * जिनको मारा मारु सुहाय ॥
सुआ सुपारी जैसे कतरैं * जैसे खेती लुनै किसान ॥
पान तमोली जैसे कतरै * त्यों दल काटि करो खरिहान ॥
फौज के क्षत्री भागन लागे * पारथ गया सनाका खाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वारे * जिनसे कछू पेस ना जाय ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जे रण दुलहा चल्ले बराय ॥
बेष बदलि बहु क्षत्री भागे * हा दैया गति कही न जाय ॥
फौजें भागि गईं सिरसा की * तबही सूर्य अस्तहो जाय ॥
इकला पारथ रणखेतन में * अब कोइ धीर धरैया नायँ ॥
खाय शिकस्त गया पारथ तब * जीते जंग बनाफरराय ॥
पारथ भागि गया सिरसाको * मनमें बहुत गया घबराय ॥
इत सब क्षत्री महुबे वारे * अपने डेरनको चलि जायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

कमरैं खोलि दई ज्वानन ने * अपनी करी रसोई जाय ॥
भोर होतही पारथ ठाकुर * मनमें सोचिसमुझिसकुचाय ॥
चिट्ठी भेजी गढ़ दिल्ली को * दादा सुनो पिथौरा राय ॥
आये महुबिया महुबे वारे * बहुदल कटा दियो करवाय ॥
मारि भगायो सब लश्कर को * अब कोइ नाहीं चलत उपाय ॥
कुंमक अपनी दादा भेजो * नातर सिरसा लिहैं छिनाय ॥
यहिविधि चिट्ठी लिखि पारथने * सो दिल्ली को दई पठाय ॥
चिट्ठी पहुँची पृथी राज पै * पाती बाँचि गये खिसियाय ॥
चौड़ा धाँधू को ललकारा * चंदन बेटा लिया बुलाय ॥
हुक्म सुनाय दियो तीनौं को * जल्दी लश्कर लेउ सजाय ॥
भई लड़ाई गढ़ सिरसा पर * पारथ हारि गया रणमाय ॥
करो चढ़ाई अब जल्दी से * महुबे गर्द देउ करवाय ॥
इतनी सुनतै चौड़ा धाँधू * चंदन उठे भरहरा खाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
डंका दैदेउ मेरे लश्कर में * जल्दी फौज लेउ सजवाय ॥
बजा नगाड़ा गढ़ दिल्ली में * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगये * बाँके घोड़न के असवार ॥
हाथी इकदन्ता सजवायो * तापर चौड़ा भयो सवार ॥
भौरानँद गज पर धाँधू है * चन्दन सब्जा पर असवार ॥
कूच को डंका तब बजवायो * लश्कर चला पिथौरा क्यार ॥
नौसै झंडा चलै अगारू * जिनको चलत न लागै बार ॥
फिरि मन सोचे पृथीराज तब * इक हरिकारा लियो बुलाय ॥
पाती लिखदइ धीरसिंह को * जो रणशूर बीर नर राय ॥
पहिले लिखिके सिरनामा को * लिखिदो समाचार समुझाय ॥
भई लड़ाई गढ़ सिरसा में * जीते जंग बनाफर राय ॥
पारथ हारि मानि सिरसा में * पाती हमहिं दई पहुँचाय ॥
कुम्मक भेजी हम दिल्ली से * लश्कर सात लाख चढ़वाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

तुमहूँ भाई हमरे लागत * अपनी फौज लेउ सजवाय ॥
जल्दी पहुँचि जाउ सिरसा पर * महुबे की लेउ लूट कराय ॥
लिखके पाती दइ धामन को * धामन तुरत भया तैयार ॥
जाय पहूँचो धीरसिंह पै * नैके पाती धरी अगार ॥
पाती बाँची धीरसिंह ने * अपनो लश्कर लियो सजाय ॥
जाय पहूँचो गढ़ सिरसा में * जहँपर फौज पिथौरा राय ॥
दोनों लश्कर सिरसा पहुँचे * पारथ बहुत खुशी हुइजाय ॥
सुनी खबरि जब यह आल्हाने * धीरजसिंह पहुँचा आय ॥
बड़ो शूरमा धीर कहावै * तासो कछू पेश ना जाय ॥
फिरि कछु सोचै आल्हा ठाकुर * ताको बल लैहौं अजमाय ॥
घोड़ा पपिहा त्यार करायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
ताको डारि दियो दुलकी पर * जो रोके से नाहिं सम्हार ॥
उतते आवै धीरज साँवत * अपने हाथी पर असवार ॥
पूँछा धीरज पीलवान से * आगे आवत कौन सवार ॥
तौलो आल्हा समुहें पहुँचे * तब धीरज ने कही सुनाय ॥
घोड़ा बचाय लेउ समुहें से * बोले सुनत बनाफर राय ॥
कट्टर घोड़ा यह हमरो है * ताते हाथी लेउ हटाय ॥
इतनी सुनतै धीरजसिंह के * गुस्सा गई देहमें छाय ॥
साँगि उठाई मन पक्के को * सो आल्हा पर दई चलाय ॥
चोट बचाई तब आल्हा ने * नीचे साँगि गिरी अरराय ॥
दुसरी साँगि लई धीरज ने * सो आल्हा पर दई चलाय ॥
साँगि पकरि लई तब आल्हाने * धीरज नाहीं सके छुड़ाय ॥
हौदा गिरन लगो हाथी को * धीरज छाँड़ि दई खिसियाय ॥
उतरे धीरज तब हाथी से * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
कौन शूरमा तुम राजा हो * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
नगर महोबे यक बस्ती है * जामें बसत चँदेले राय ॥
तिनघर लरिका दस्सराज के * नुनि आल्हा है नाम हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुम्हरे मिलिबे को आये थे * सोतुम मिले माहिं मगझार ॥
धनिधनि आल्हा तुमको कहिये * धनि धनि दस्सराज भूपाल ॥
ऐसे शूर भये महुबे में * क्यों नहिं राज करैं परिमाल॥
करी मित्रता तब धीरज ने * तुम सब लायक मित्र हमार ॥
बोले आल्हा तब धीरज से * तुम सुनिलेउ धीर सरदार ॥
करी अदावत पृथीराज ने * हमरो सिरसा लियो दबाय ॥
उनसे सिरसा हम माँगा था * सो उन दीन्हीं फौज चढ़ाय ॥
तुम समुझाय देउ पारथ को * हमरो सिरसा देयँ गहाय ॥
दुइ दुइ रुपया के नौकर हैं * काहे दीहैं कटा कराय ॥
यह सुनि धीरज बोलन लागे * तुम सुनिलेउ बनाफर राय ॥
मनके बढ़िया दिल्ली वाले * सो हटके से मानि हैं नाहिं ॥
हमहिं पठायो है कुम्मक को * हमनहिं चाहत हारि तुम्हार॥
करी मित्रता है हम तुमसे * अब तुम हुइगये मित्र हमार॥
जंग जीतिके सिरसा लेलो * अपनो कबजा लेउ कराय ॥
इतनी कहिके धीरज चलिभये * अपने लश्कर पहुँचे जाय ॥
तुरत बुलाय लियो पारथको * सबविधि ताहि कही समुझाय॥
कही न मानी तेहि धीरज को * औ लश्कर में पहुँचा जाय ॥
बजो नगाड़ा गढ़ सिरसा में * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्ट धातुकी * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
अपनी अपनी असवारिन पर * चढ़ि खेतन में पहुँचे जाय ॥
मारू बाजा बाजन लागे * आल्है खबरि भई इकतार ॥
फौज सजाई तब ऊदन ने * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
फौज कटीली महुबे वारी * रण खेतन में उरकी आय ॥
रण के बाजे बाजन लागे * अपने मुर्चा दिये लगाय ॥
पारथ बोला सब योधन से * सुनलो बीर बनाफर राय ॥
एक एक से होय लड़ाई * अन्धा धुन्ध होनकी नायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धर्म युद्ध खेतन में करलो * जाको देय बिष्णु करतार ॥
जो कोउ जीति जाय सिरसाको * सो गद्दीका हो सरदार ॥
यह मन भाय गई आल्हाके * तब पारथ से कही सुनाय ॥
यही बात हमको भाई है * अभिरौ एक एकसे आय ॥
पारथ मलिखे की बरनी भइ * चन्दन उदयसिंह जुटि जाय॥
धीरज की बरनी ताल्हन से * आल्हा और चौड़िया राय ॥
धाँधू ढेवा की बरनी है * ऐसे जुटे समर मैदान ॥
अपने अपने शस्त्र चलावैं * ताकैं दाव घात बलवान ॥
बड़े लड़ैया महुबे वारे * सो काहू को शस्त्र न खायँ ॥
एक पहर भरि भई लड़ाई * शोभा बरणि करी न जाय ॥
पारथ हारिगया मलिखे से * जीता जंग भँवर मलिखान ॥
चन्दन हारा बघ ऊदन से * जीता उदयसिंह बलवान ॥
चौड़ा हारा जुने आल्हा से * धाँधू ढेवा से तेहि ठाँव ॥
धीरज हारि गयो ताल्हन से * ऐसा पड़ा हार का दाँव ॥
मलिखे गरजा धुर खेतन में * जैसे सिंह बिपिन के मायँ ॥
रिसलदार को बेगि बुलाया * अब क्यों राखो देर लगाय ॥
जितने घोड़ा हैं लश्कर में * एकै संग छुटैं असवार ॥
पैदल पलटन की बरणी है * औ तोपन को करौ अगार ॥
आगे आगे चले रिसाले * पीछे पैदल पलटन जायँ ॥
ताके पीछे तुप खाना हैं * जिनके पहिया सरकत जायँ॥
घोड़ा चले जात चालों से * तेगा चमकि चमकि रहिजाय॥
भाला घूमैं नागदौन के * जिनमें उड़त चिड़ी बिधजाय ॥
साँगैं चमकि रहीं दल भीतर * नंगी चमकि रही तलवार ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * अपनी खैंचि खैंचि तलवार ॥
इक मुहरे पर सोभा सुनरा * इक पर चिंतामणी लुहार ॥
इक मुहरे पर कल्लू मुंशी * इक पर नवलशूर सरदार ॥
इक मुहरे पर ताला सैयद * जो है बनरस का सरदार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इक पर देवा जंग बहादुर * इक पर मंडलीक औतार ॥
इक मुहरे पर बच्छराज का * कलहा उदयसिंह बलवान ॥
सारी पलटन और रिसाले * एकै बार भुकाये जायँ ॥
तड़ तड़ तड़ तड़ तासे बाजे * जंगी ढोल रहे झहनाय ॥
रिमझिम रिमझिम गोली बरसैं * सन सन तीर करैं घमसान ॥
बान अगिनियाँ छूटन लागे * दलको भूनत भार समान ॥
तीर कमनियाँ जो मुलतानी * कारी नागिन सी मन्नायँ ॥
जैसे साँप बिलों में जावैं * त्यों ज्वाननके अंग समायँ ॥
चलै शिरोही माना शाही * औ बूंदीकी असल कटार ॥
चलै जुनब्बी औ अहिगर्बी * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजैं * बोलैं छपक छपक तलवारि ॥
चलै सकेला पानीपत को * खुपरी झरिझरि परत अगार॥
कल्ला कटि गये हैं घोड़न के * चेहरा कटैं सिपाहिन क्यार ॥
कटि कटि शीश गिरे धरती पर * उठि उठि रुंड करैं तलवार ॥
उतते बढ़ि गये दिल्ली वारे * इतते बढ़े बनाफर राय ॥
दोनों सेना इक मिलि हुइगुई * ना तिल परो धरनिमें जाय॥
ज्यों सावन में छुटै फुहारा * भादों बरसै मेघ मलार ॥
मलिखे ऊदन के मुहरा पर * बिरला शूर गहे तलवार ॥
हाथी पचसावद आल्हा का * जो दल काल रूप बलवान ॥
साँकल फेरै दल के भीतर * क्षत्रिन काटि करै खरिहान ॥
धावा पड़गये बन्नाफर के * अब कोइ बीर न पैरै अगार ॥
केहिको जननी नाहर जन्मी * जो समुहें पकड़े हथियार ॥
सर सर सर सर छुटैं बछेरा * ज्यों बनमें से छुटैं बिजार ॥
ऐसे छूटैं महुबे वारे * दोनों हाथ करैं तलवार ॥
देखत हल्ला भगहर पड़ि गइ * आगे बढ़े महुबिया ज्वान ॥
भजे सिपाही पारथ वाले * फाटक घेरि लियो मलिखान॥
आल्हा ने पचशावद हूला * हाथी हुवा रूप बिकराल ॥
फेंके साँकल जब खेतन में * क्षत्री भाग जायँ ततकाल ॥
फाटक तोड़ा गढ़ सिरसा का * धँसिगा किला माँह मलिखान॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऐसे कूदे महुबे वारे * जैसे लंक माहिं हनुमान ॥
लूटि मचाय दई सिरसा में * लूटन लागे हाट बजार ॥
हाथ जोरि के बनियाँ बोले * हमरी बात सुनो सरदार ॥
पहले रैयति हम पारथ के * अब तुम हमरे हौ सरदार ॥
काहे लूटत अपनी रैयति * हम सब ताबेदार तुम्हार ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * दीन्ही लूटि बन्द करवाय ॥
सब सिरसा काबू में करिके * अपने कबजा लियो बिठाय ॥
पारथ भागि गयो दिल्ली को * जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
हाथ जोरि के पारथ बोला * दादा सुनो भूप सरदार ॥
जल्द सजाय लेउ लश्कर को * औ सिरसा पर होउ तयार ॥
हमरी सिरसा हमहिं दिलावौ * तुम सब लायक बाप हमार ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब * बेटा सुनो बात मन लाय ॥
छोटी गढ़िया वह सिरसा है * कछु दिन धीरधरो मन मायँ ॥
मनके बढ़िया महुबे वारे * केहु खातिर में लावत नाहिं ॥
दांव लगैगा केहु समया पर * लीहैं जंग जीति रण माहिं ॥
पारथ बैठि रहा दिल्ली में * अब सिरसा को सुनो हवाल ॥
जाय कचहरी दाखिल हुइगा * राजा बच्छराज को लाल ॥
करी सजावट गढ़ सिरसा के * सुबरन कलश दिये टँगवाय ॥
बिछे गलीचा हैं मखमल के * ऊपर टँगी चाँदनी जाय ॥
करी कचहरी मलखे ठाकुर * भेंटैं देन लगे धनवान ॥
अपनी कृपा करी नारायण * सिरसा बसे बीर मलिखान ॥
बोले ताल्हन तब मलिखे से * जो कछु चहै लेउ मलिखान ॥
तब हम जावैं गढ़ महुबे को * बोले तुरत बीर बलवान ॥
बारह पलटन बीस रिसाले * दश तुपखाने देउ छुड़ाय ॥
कल्लू मुंशी शोभा सुनरा * चिंतामणि लुहार रणराय ॥
जो जो माँगा नर मलखेने * सो सब दियो मलनसीराय ॥
त्यारी करिदइ गढ़ महुबे की * जीति को डंका दौ बजवाय ॥
आल्हा ऊदन बहादुर ढेवा * महुबे पहुँचि गये ततकाल ॥
सुनी खबरि सब जब राजाने * बहुतै खुशी भये परिमाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

बजी बधाई गढ़ महुबे में * औ बिप्रन को दीन्हें दान ॥
यहिबिधि जीति लियो सिरसागढ़ * नामी भये बीर मलिखान ॥
किला सिरसवाँ नर मलिखे ने * नये सिरेसे दिया बसाय ॥
करी सजावट सब नगरी को * चौपड़ हाट दिया सजवाय ॥
फिर इक नया किला बनवाया * सुन्दर रतन जटित सब धाम ॥
नाना भवन विविध रँग रचना * मानहु इन्द्रकेर सब ठाम ॥
चौंसठि बुर्ज चारि नौखंडी * जिनपै बैठि स्वर्ग दिखलाय ॥
चारिहु ओर हाट अति सोहै * लखिमनमोहि मोहिरहि जाय ॥
तीनि द्वार गढ़के रखवारे * तिनपै बज्र लगे हैं डारि ॥
रक्षाहेत द्वार बीरन ने * धरिदिये द्वार शिखर गिरिकाटि ॥
उत्तर द्वारे गढ़ कनउज को * पूरब सिम्त महोबे नाम ॥
सिंह पौरि पश्चिम के द्वारे * जाके परे राज सुखधाम ॥
पुर रखवारे जहँ तहँ डोलैं * लीन्हें अस्त्र शस्त्र बहुभाँति ॥
यहिबिधि गढ़ नवीन की शोभा * वर्णन करत चित्त सकुचाति ॥
जगमें सदा रीति चलिआई * अबलगि बर्ति रहे ब्योहार ॥
जाकी बात बनत लखि पावै * ताकी ओर होय संसार ॥
बड़ बड़ सुभट बीर रणके हरि * जिनको हती समरमें धाक ॥
तिनभजि शरण गहो मलिखेकी * प्रणताजि डारि सुयशपै खाक ॥
यहिबिधि बहुत बीर भट आये * सबको धीरदई चुपकारि ॥
आपुहि आनि भरे लश्कर में * उमगन लगे खींचि तलवारि ॥
पारब्रह्म हरिकी गति निरखी * क्या संयोग करे इकसार ॥
कीच कीच में लय हुइ बैठे * जलसे जाय मिले जलधार ॥
गति नहिं जानिपरै भगवत की * पलमें पलटि देहिं संसार ॥
क्षणमहँ विश्व छार करि डारैं * माया प्रबल विश्व आधार ॥
मलिखे बैठे अमन चैन से * इक दिन दूत करौ तैयार ॥
बिनय पत्र महुबे को भेजा * इहिबिधि लिखो प्रेम ब्योहार ॥
जबमैं चरण परशि महुबे में * तुम से बिदा भयो महराज ॥
केवल नाथ प्रताप आपके * बनिगये सकलदास के दास ॥
अबयह बिनयकरौं चरणन महँ * अंगीकार करो हुइ द्याल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जननी औ मम मित्र कुटुम्बी * सिरसहिं भेजि देउ तत्काल ॥
समाचार परमानँद पाये * हर्षित कियो इष्टको ध्यान ॥
फिरि यश कहनलगे मलिखे के * नरने मेटि लिये अरमान ॥
फिरि उठि राज महल में आये * सबको टेरि कही हर्षाय ॥
समाचार मलिखे के आये * बनमें कोट लियो बनवाय ॥
पूछि मुहूरत सुन्दर दिन में * राजा साजिबाजि सुखपाल ॥
तिलका औ सब मित्र कुटुम्बी * सिरसहिं भेजि दिये तत्काल ॥
कुशल क्षेम सिरसा में पहुंची * माता उतरि परी सुखधाम ॥
रैनिवास के सतखंडा पर * रानी जाय भई निष्काम ॥
तिलका रानी बहुत खुशी भइ * धन मलिखान लड़ैतेलाल ॥
मंत्री सुखी सुखी पुरबासी * मिटिगये सकल संकटा जाल ॥
शूर बीर गढ़पति भट योधा * मंत्री राजकुँवर सरदार ॥
बुद्धिवान सज्जन गुण सागर * हाजिर रहन लगे दरबार ॥
बलिपुरगढ़ पडिरल औबिमगढ़ * जीतिके गढ़में लिये मिलाय ॥
पूरण कला भई मलिखे की * गढ़पति मिलन गये भयपाय ॥
जितनी कला बढ़े मलिखे की * उतनइ दिये रजापरिमाल ॥
तेगा विदित होय सिरसा को * गरुई होत महोबे ढाल ॥
छब्बिस गढ़ ऊदल ने जीते * छब्बिस बिजयकरे मलिखान ॥
अभय चित्त राजा हुइ बैठे * बिसरो खौफ धनी चौहान ॥
समय निहारो शब्द बेधि ने * निरखे भागवन्त परिमाल ॥
तेजवान दोनों भट जाने * रहिगयेऐंठि बैठि जिमि व्याल ॥
सकल लड़ाई नर मलिखे की * जो हम लिखैं यहाँ मनलाय ॥
पुस्तक बहुत बढ़ै आल्हा की * तासों पूरण करी सुनाय ॥
ऊदन मलिखे की पुरषारथ * सो कहँलग मैं करौं बखान ॥
ताते यह संक्षेप सुनायो * सज्जन लेहिं आप सब जान ॥
पहिली लड़ाई यह सिरसा की * सो मैं लिखके दई सुनाय ॥
जैसे ब्याह भयो आल्हा को * राजा नैपाली घर जाय ॥
भई लड़ाई नैनागढ़ में * सो आगे लिखि दिहैं सुनाय ॥
आल्हा गावौ समय पाय तुम * सुमिरो कृष्ण चन्द्र मनलाय ॥

* इति सिरसा की पहिली लड़ाई *

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

॥ नैनागढ़ की लड़ाई ॥

॥ आल्हा का व्याह ॥

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥

सुमिरन करके रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
व्याह सुनावौं मैं आल्हा को * यारो सुनो छोड़ि सब काम ॥
राजा नैपाली नैना गढ़ * ज्याहि घर अमरढोल घहराय॥
रहै बरदानी इन्द्र देवको * जो मरिबेको नाहिं डेराय ॥
ताकी बेटी सोनवाँ कहिये * जाने जादू पढ़े बनाय ॥
नितनित खेलकरै सखियन सँग * एकदिन सखियनकहीसुनाय॥
बारह बर्ष केर उम्मिर भइ * तुम्हरी कहूं न करी बिआहु ॥
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे * या धन हीन भये महराज ॥
इतनी बात सुनी सोनवाँ ने * मनमाँ बहुत गई खिसियाय॥
तुरत पहूँची रंग महल में * माता लीनी कंठ लगाय ॥
पूंछन लागी सो सोनवाँ ते * बेटी हाल देउ बतलाय ॥
कौन सोचु है तुम पर जियमें * सो सब हमहिं देउ समुझाय ॥
हाथ जोरिके सोनवाँ बोली * माता सुनो हमारी बात ॥
ताना देतीं सखी सहेली * क्यों ना तुमरो भयो बियाह॥
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे * या धन हीन भये महराज ॥
रानी बात सुनो बेटी को * अपने मनमें सोचन लाग ॥
व्याह योग बेटी यह होयगइ * जल्दी याको करो विवाहु ॥
दियो भरोसा तब रानी ने * बेटी धीर धरो मन माहिं ॥
व्याह तुम्हारो जल्दी होइहैं * अबही टीका दिहौं पठाय ॥
राजा आये रंग महल में * तब रानीने कही सुनाय ॥
बारह बर्ष केरि बेटी भइ * ताको जल्दी करो विवाह ॥
तुमहिं हँसौआ को डर नाहीं * अबहीं टीका देउ पठाय ॥
इतनी बात सुनी राजा ने * तब रानी ते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

धीरज राखो अपने मनमें * जल्दी टीका दिहौं पठाय ॥
इतनी कहिके राजा चलि भये * औ दरबार पहूँचो जाय ॥
लैके कागज कलपी वाला * अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लिखी हकीकत नैपाली ने * सब टीकाको लिखी हवाल ॥
अमर ढोल है हमरे घर में * सेना सुनत अमर होइ जाय॥
कठिन लड़ाई है जोगा की * औ भोगा की है तलवारि ॥
जंग जीति के बेटी ब्याहै * सो हमरे घर करै विवाह ॥
नाऊ बारी भाट पुरोहित * चारो नेगी लिये बुलाय ॥
तीन लाखको टीका लैके * सो चारौ को दियो सौंपाय ॥
होयजो क्षत्री उत्तम कुलको * सो टीका को लेइ चढ़ाय ॥
अच्छे घर टीका लै जैयो * एक न जैयो नगर महोब ॥
जाति बनाफरकी ओछी है * सो हम तुमहिं दियो बतलाय॥
इतनी सुनिके नेगी चलि भये * बिजयी बेटा संग लगाय ॥
पहले पहुँचो गढ़ दिल्ली में * टीका फेरि दियो चौहान ॥
तहँते पहुँचो गढ़ कनउज में * जैचंद टीका दियो लौटाय ॥
देश देश में टीका पहुँचो * सबने टीका दिया लौटाय ॥
लौटिके नेगी गै नैना गढ़ * औ राजाते कही सुनाय ॥
देश देश में हम फिर आये * टीका कोउ कबूलै नाहिं ॥
इतनी बात सुनी राजाने * मनमें गये बहुत शरमाय ॥
रचो स्वयम्बर तब राजाने * धूरे डंका दई धराय ॥
यह प्रण कीन्हों नैपाली ने * जो कोउ डंका देइ बजाय ॥
त्यहि राजा घर बेटी ब्याहौं * खबर देश देश हुइ जाय ॥
राजा आये देश देश के * औ नैनागढ़ पहुँचे आय ॥
तम्बू लगि गयो है धूरे पर * झंडन रही लालरी छाय ॥
नजरि गुजारी सब राजा ने * औ राजा ते कही सुनाय ॥
तुम्हरि बराबरि के हम नाहीं * जो तुम्हरे घर करैं विवाह ॥
सदा सहायक हम तुम्हरे हैं * सो तुम जानि लेउ महराज॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

राम बनावैं तो बनि जावै * बिगरी बनत बनत बनजाय ॥
हालसुनो अब रनि सोनवाँ को * सोनवाँ मनमें करै विचार ॥
यातो व्याह होय आल्हा सँग * नातर रहिहौं सदा कुँवारि ॥
कागद लीन्हों कलपी वालो * अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लिखी हकीकत बघऊदन को * पढ़ियो याहि उदैसिंहराय ॥
टीका भेजो हमरे बाप ने * सब राजन ने दियो लौटाय ॥
हम प्रणकीन्हों यह अपने मन * देवर मानो बचन हमार ॥
कैतो व्याह होय आल्हा सँग * ना दूजो सँग होय विवाह ॥
तुम सब लायक हो महुबे में * भाँवर आय लेउ डरवाय ॥
बाना राखो हो क्षत्री को * औ तरवारि गहेकी लाज ॥
खबरि न लीहौ जो हमरी तुम * तो रजपूती को धिरकार ॥
यातो व्याहौ तुम भैया को * या घर छाड़ि धरो हथियार ॥
यहिबिधिपाती सोनवाँ लिखिके * सो डोरा में दियो बँधाय ॥
सुआ निकारि लियो पिंजराते * औ तोता से कही सुनाय ॥
पाती दीजो तुम ऊदन को * यह कहि पाती दई बँधाय ॥
जल्दी जावो गढ़ महुबे को * हमरो कारज देउ बनाय ॥
इतनी सुनिके सुअना चलिभयो * औ महुबे की पकरी राह ॥
तीन दिना को धावा करिके * गढ़ महुबे में पहुँचा जाय ॥
सुअना उतरो फुलवगिया में * बैठो एक वृक्ष पर जाय ॥
वही समैया फुलवगिया में * आये तहाँ उदैसिंह राय ॥
बैठो देखो एक तोता को * पाती बाँधि कंठके माहिं ॥
बोले ऊदनि तब तोता से * सुअना हमे देउ बतलाय ॥
कौन देशते तुम आये हो * आगे कौन देशको जाउ ॥
जो तुम आये गढ़ नैना से * तो तुम चलो हमारे साथ ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * औ ऊदन है नाम हमार ॥
इतनी सुनके सुअना उतरो * औ ऊदनि पर पहुँचो जाय ॥
देखी पाती बघ ऊदनि ने * तापर पढ़ो आपनो नाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पाती खोलो तब ऊदनि ने * औ सोनवाँ की पढ़ी हवाल ॥
बहुत खुशी हो ऊदनि चलि भै * औ तोताको साथ लिवाय ॥
जहाँ कचहरी परिमाले की * तहँ पर गये उदैसिंह राय ॥
करो बन्दगी परिमाले को * तुरते पाती दई गहाय ॥
मलिखे बैठेथे दाहिने पर * पाती पढ़ी रजा परिमाल ॥
पढ़िके पाती चन्देले ने * सो गद्दी तर लई दबाय ॥
ताल्हा सैयद ढेवा बहादुर * आल्हा आदि शूर सरदार ॥
बड़े बड़े क्षत्री बँगला बैठे * सो राजा तन रहे निहार ॥
हँसिके मलिखे बोलन लागे * ददुवा हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ कि पाती यह आई है * जो गद्दी तर दई दबाय ॥
बोले राजा तब मलिखे ते * बेटा सुनो हमारी बात ॥
पाती आई नैनागढ़ ते * रानी सोनवाँ दई पठाय ॥
टीका भेजा सब राजा के * काहू ब्याह कबूलो नाहिं ॥
तब यह पाती गढ़ महुबे में * सोनवाँ लिखके दई पठाय ॥
अमर ढोल है नैपाली के * लड़िका कठिन करैं तलवारि ॥
कठिन मवासी नैनागढ़ है * ताते हाल सुनायो नाहिं ॥
इतनी सुनिके मलिखे बोले * तुमको जानत सकल जहान ॥
तुमहिं हँसौआ को डर नाहीं * दादा आकिल कहाँ तुम्हारि ॥
ब्याह फेरिहौ जो महुबे ते * तो जग होइ है हँसी तुम्हारि ॥
दागु लागिहैं रजपूती में * जो यह ब्याह दिहौ लौटाय ॥
इतनी बात कही मलिखे ने * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
करो तयारी नैनागढ़ को * औ आल्हा को रचो विवाह ॥
इतनी बात सुनी राजा ने * मनमें गये सनाका खाय ॥
जायके पहुँचे रंग महल में * औ मल्हना ते कही सुनाय ॥
पाती आई नैना गढ़ ते * रानी सोनवाँ दई पठाय ॥
ब्याह लिखो है वा पाती में * रहि २ मेरो प्राण घबराय ॥
काठन लड़ाई नैपाली की * ज्यहिघर अमर ढोल घहराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

"आल्हखण्ड"

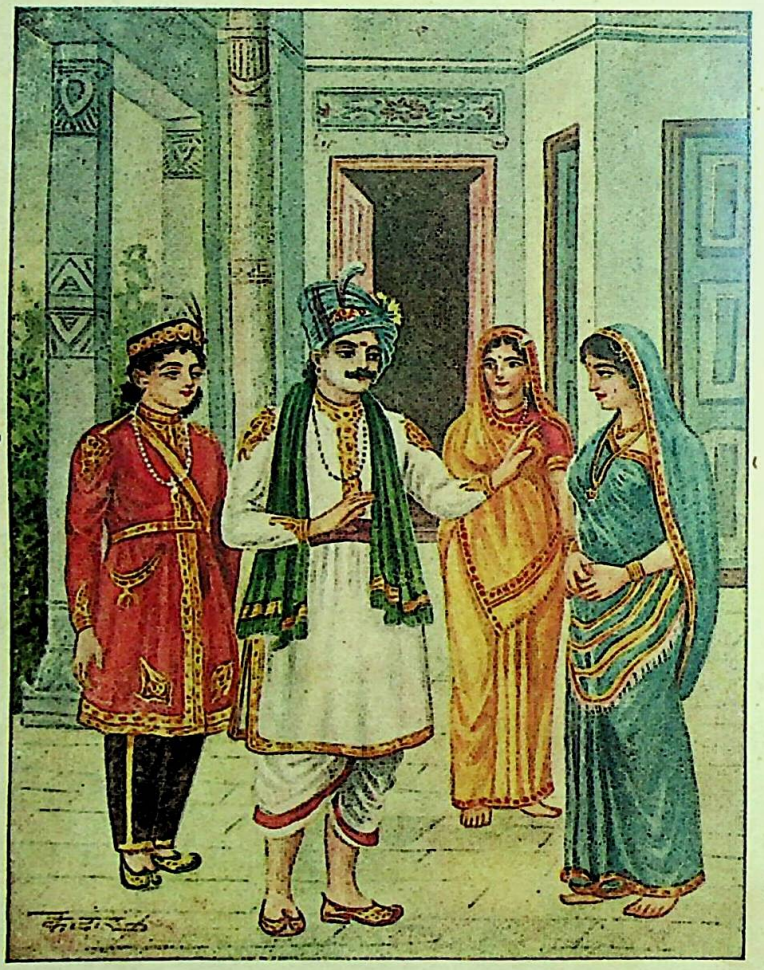

बोली मल्हना तिन दोनों ते, बेटा मानो कही हमारि
लड़े न जितिहौ नैपाली से, तासे बैठि रहो अरगाय
इतनी सुनिके मलिखे बोले, माता सुनो हमारी बात

पृ० सं० १०५

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जोगा भोगा दोनों लड़िका * जिनके जग जाहिर तलवारि ॥
देश २ टीका फिर आयो * काहू ब्याह कबूलो नाहिं ॥
मलिखे ऊदन दोनों लड़िका * अपने त्यारी दई कराय ॥
तुम समझाय देउ दोनों को * नहिं सब जैहैं काम नसाय ॥
इतनी सुनिके मलिखे ऊदनि * दोनों लड़िका लिये बुलाय ॥
बोली मल्हना तिन दोनों ते * बेटा मानो कही हमारि ॥
कठिन मवासी नैनागढ़ है * जहँपर अमर ढोल घहराय ॥
लड़े न जितिहौ नैपाली ते * तासे बैठि रहो अरगाय ॥
इतनी सुनके मलिखे बोले * माता सुनो हमारी बात ॥
आल्हा ब्याहन को रहिहैंना * यह दिन कहिबे को रहिजाय ॥
जो हम बैठि रहैं महुबे में * बूड़े सात साखिको नाम ॥
अमर नहीं है कोउ दुनियाँ में * माता समझ लेउ मनमाहिं ॥
ब्याह रचै हैं हम आल्हा को * चाहे प्राण रहे कि जाहिं ॥
हँसी खुशी ते आज्ञा दैदेउ * माता हम मनिबेके नाहिं ॥
इतनी सुनिके मल्हना सोची * मनिहे नाहिं बात मलिखान ॥
बोली मल्हना तब मलिखे ते * तुम्हरे काम सिद्ध होइजाय ॥
दिवला तिलका को बुलवायो * औसब सखियाँ लियो बुलाय ॥
सब मिलि मंगल गावन लागीं * तब पण्डित को लियो बुलाय ॥
चूड़ामणि पंडित जब आये * तिनसो मल्हना पूछन लागि ॥
साइत देखो तुम पत्रा में * तबही तेल लेयँ चढ़वाय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले * सब सामान करो तैयार ॥
तेल चढ़ाओ तुम आल्हा को * अबही साइति लेव सधाय ॥
ऊदनि बोले नर ढेबा ते * भैया सगुन देउ बतलाय ॥
समरसार की पोथी लैके * ढेबा सगुन बिचारन लाग ॥
काम तुम्हारो पूरन होइहैं * जल्दी फौज लेउ सजवाय ॥
मल्हना रानी नेग करावै * सखियाँ करैं मंगला चार ॥
बेदी रचवाई आँगन में * मोतिन चौक दई पुरवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चूड़ामणि पंडित तहँ बैठे * गौरी गणेश दिये पुजवाय ॥
बारह रानी परिमालै की * सो मंडप में पहुँचीं आय ॥
तुरत बुलाय लियो आल्हा को * औ चौकी पर दियो बिठाय ॥
सात सुहागिन मिलि आल्हा को * मड़ये तेल दियो चढ़वाय ॥
नहखुर होन लाग मंडप में * नेगी झगरि झगरि रहि जायँ ॥
सबको नेग दियो रानी ने * औ मुँह माँगा दियो इनाम ॥
कपड़ा पहिराये आल्हा को * तुरत पालकी लई मँगाय ॥
आल्हा बैठि गये पलकी में * दुलहा बने बनाफर राय ॥
चली पालकी सुनि आल्हा की * औ कुअटापर पहुँची जाय ॥
बैठी देवै जब कुअटा पर * औ दोउ पायँ दिये लटकाय ॥
हमने पाला है आल्हा को * हमहीं कुवाँ बिये हैं जाय ॥
यह कहि मल्हना गइ कुअटापर * औ दोउ पायँ दिये लटकाय ॥
पहिली भाँवरि पगधरते खन * आल्हा मल्हने लियो उठाय ॥
प्राण दान माता हम दीन्हे * राखो धीर मल्हन दे माय ॥
दई असीस तबहिं मल्हना ने * जुग २ जियो लड़ैते लाल ॥
चरण लागि के रनि मल्हना के * आल्हा माथे लिये लगाय ॥
चरण छुये दिवला तिलका के * सब रानिन को कियो प्रणाम ॥
कूदि पालकी पर चढ़ि बैठे * पलकी चली बनाफर राय ॥
पलकी पहुँची जब लश्कर में * मलिखे डंका दियो बजाय ॥
लैके कागद कल्पी वाला * अपनो कमल दान लै हाथ ॥
सिद्धि श्रीनारायण लिखिके * ऊदनि पाती लिखी हवाल ॥
लिखी बन्दगी रनि सोनवाँ को * ता पाछेते लिखी हवाल ॥
तुमही ब्याहन आल्हा आवत * भौजी धीर धरो मनमाहिं ॥
बिना ब्याहके हम नहिं लौटैं * चाहे प्राण रहे की जाय ॥
ऐसी पाती ऊदनि लिखि कै * तुरतै दई कंठ में बाँधि ॥
सुआ उड़ानो तब महुबे ते * नैना गढ़की पकरी राह ॥
राम बनावै तो बनि जावै * बिगरी बनत २ बनिजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऊदनि पहुँचे फिरि लश्कर में * तोप दरोगा लियो बुलाय ॥
हुक्म दैदियो बघ ऊदनि ने * सिगरी तोपैं लेउ सजाय ॥
बड़ि २ तोपैं अष्ट धातुकी * सो चरखिन पर देउ चढ़ाय ॥
बोलि दरोगा घोड़न वालो * चीरा कँलगी दई इनाम ॥
अच्छे घोड़ा गढ़ महुबे के * सिगरे साजि करो तैयार ॥
जीन धरावो सब घोड़न पर * रेशम तंग लेउ कसवाय ॥
हाथिन वाले को बुलवायो * तासो ऊदनि कही सुनाय ॥
बड़ी राशि के जितने हाथी * सो सब साजि करो तैयार ॥
हाथी यकदंता सजवावो * औ दुइदंता लेउ सजाय ॥
मैंनकुंज भौंरा गिरि कहिये * मकुना हाथी लेउ सजाय ॥
धौलागिरि हाथी सजवावो * भुरा हाथी लेउ सजाय ॥
मुडिया हौदा तुम कसवावो * चारो ओर चले तलवारि ॥
इतनी सुनिके चला दरोगा * सिगरे हाथी करि तैयार ॥
डारे गद्दा मखमल वाले * ऊपर चारि २ असवार ॥
यक यक हाथी के हौदा में * बैठे चारि चारि असवार ॥
बड़ी राशिके जितने घोड़ा * सो सब साजि भये तैयार ॥
लक्खा गर्रा घोड़ा साजे * औ कुम्मैत भये तैयार ॥
हरियल मुश्की घोड़ा सजिगे * पंच कल्यानी भये तयार ॥
अर्बी तुर्की औ तातारी * सब्जा सुर्खा भये तयार ॥
पूंछ रँगाय दई घोड़न की * औ सब जेवरदौ पहिराय ॥
धरि कठनाली तिन घोड़ा पर * ऊपर जीन दियो कसवाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * लश्कर साजि भयो तैयार ॥
हाथी चढ़ैया हाथी चढ़ि गये * बाँके घोड़न के असवार ॥
मलिखे ढेवा ताला सैयद * चौथे ऊदनि संग लिवाय ॥
जहाँ कचहरी चन्देरे की * तहँपर करी बन्दगी जाय ॥
हाथ जोरिके ऊदनि बोले * दादा हुक्म देउ फरमाय ॥
हाथ फेरि दियो तब पीठी पर * तुम्हरो काम सिद्धि हाइजाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करौ तयारी नैना गढ़की * औ आल्हा को करौ बिवाह॥
इतनी सुनिके चारौ लौटे * अपनी करन तयारी लाग॥
ताला सैयद बनरस वाले * घोड़ी सिंहिनि पर असवार॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई * तापर चढ़े बीर मलिखान॥
गज पचशावद घोड़ा करलिया * सो सजवाये बीर मलिखान॥
घोड़ा हरनागर सजवायो * तापर जगनिक भये सवार॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो * तापर ऊदनि भये सवार॥
मन्ना गूजर महुबे वालो * सो बरातको भयो तयार॥
जानवेग सुलतान बहादुर * अली अलामति औदरियाय॥
अपने घोड़न पर चढ़ि बैठे * लैके खुदा नबी का नाम॥
मारू डंका के बाजतही * सबने कूच दियो करवाय॥
राह पकरि लइ नैना गढ़की * लै बजरंग बली को नाम॥
सात रोज की धावा करिके * नैना गढ़ में पहुँचे जाय॥
तीनि कोस नैनागढ़ रहिगयो * अपने डेरा दिये डराय॥
पाँच कोसलौं लश्कर परि गये * तँबुअन रही लालरी छाय॥
फेटैं छुटिगईं रजपूतन की * आपन खोलि धरे हथियार॥
हौदा उतरि गये हाथिन के * घोड़न जीन दिये उतराय॥
चढ़ी रसोइयां उमराइन की * शोभा कछू कही ना जाय॥
ऊदनि मलिखे दोनों चलि भै * औ बागन में पहुँचे जाय॥
जहँपर डंका नैपाली को * ऊदनि डंका दियो बजाय॥
चोब नगारा के बाजत खन * धावन कूच दियो करवाय॥
जाय पहूँचो नैपाली पै * झुकिके करो बन्दगी जाय॥
कही हकीकत त्यहिं डंकाकी * औ महराज गरीब नेवाज॥
आई बरात है काहु देशकी * चोब नगारा दियो बजाय॥
इतनी बात सुनी राजा ने * अपनो लरिका लियो बुलाय॥
हुक्म दै दियो तब जल्दी से * जल्दी खबरि सुनावो आय॥
कौन सो राजा चढ़ि आयो है * कौने डंका दियो बजाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनतै लरिका चलि भये * औ बागन में पहुँचे जाय ॥
ऊँचे चढ़िके देखन लागे * भारी लश्कर परा दिखाय ॥
देखि हकीकत लड़िका लौटे * नैपाली पै पहुँचे आय ॥
जोगा भोगा बिजया बेटा * तीनों खबरि सुनावन लाग ॥
लश्कर डारो पाँच कोसलौ * तँबुअन रही लालरी छाय ॥
आई बरात है क्यहु राजा की * कोसन झंडा परो दिखाय ॥
हियाँ कि बातैं तौ हियँ छाँड़ो * अब आगे को सुनो हवाल ॥
ऊदन बोले नर मलिखे ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
कौन नींदमें तुम सोवत हौ * जल्दी पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडित को * सो तम्बू में पहुँचे आय ॥
खोलि पत्तरा देखन लागे * अच्छी साइत दई बताय ॥
रुपना बारी को बुलवायो * ऐपनवारी देउ पठाय ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * रुपना बारी लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो तब रुपना को * ऐपनवारी को लै जाउ ॥
बोलेउ रुपना तब मलिखे ते * हमना मूड़ कटैहैं जाय ॥
कठिन मारु है नैपाली की * हमते मारु सही ना जाय ॥
इतनी सुनतै ऊदन तड़पे * रुपना अक्किल गई तुम्हारि ॥
मुख ते हीनी तुम बोलत हो * हमरे सुनिवे को धिरकार ॥
आल्हा ब्याहन को रहिहैं ना * यह दिनु कहिबे को रहिजाय ॥
ऐपनवारी तुम लै जावो * जल्दी कूच जाउ करवाय ॥
तुमको नेगी हम समुझैंना * घरके भैया लगो हमार ॥
यह सुनि रुपना बोलन लागेउ * घोड़ा करेलिया देउ मँगाय ॥
पाग बैंजनी हमको दै देउ * औ आल्हा की ढाल तलवार ॥
जो जो चाहो त्यहिं रुपना ने * सो सब तुरतै दियो मँगाय ॥
करी तयारी तब रुपना ने * ऐपनवारी लई मँगाय ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठा * नैनागढ़ में पहुँचा जाय ॥
ठाढ़े दरवानी द्वारे पर * सो रुपना ते लगे बतान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कौन देशते तुम आये हो * आगे कौन देश को जाउ ॥
रुपना बोलेउ दरवानी ते * तुम सुनि लेव हमारी बात ॥
नगर महोबे यक बस्ती है * जहँपर बसैं रजा परिमाल ॥
तहँते ब्याहन आल्हा आये * रुपना बारी नाम हमार ॥
ऐपनवारी हम लाए हैं * हमरो नेग देउ मँगवाय ॥
खबरि सुनावो तुम राजा को * नेगी ठाढ़ो पँवरि दुआर ॥
यह सुनि बोलेउ दरवानी तब * अपनो नेग देउ बतलाय ॥
बोला रुपना दरवानी ते * तुमहू सुनि लेउ नेग हमार ॥
चले शिरोही यहँ द्वारे पर * औ बहिबे रक्त की धार ॥
इतनी सुनतै गयो दरवानी * औ राजा से कही सुनाय ॥
बारी आयो है महुबे को * ऐपनवारी लीन्हें ठाढ़ ॥
नेग आपनो वह माँगत है * द्वारे बहै रक्त की धार ॥
इतनी सुनतै नैपाली के * गुस्सा गई देह में छाय ॥
जोगा भोगा को बुलवायो * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बाँधिके लावो तुम बारी को * हमरो नजरि गुजारो आय ॥
तौलौ रुपना दाखिल होइगयो * औ गद्दी पै पहुँचो जाय ॥
नजर बदलि गई नैपाली की * औ रुपना तन रहे निहारि ॥
करी बन्दगी तब रुपना ने * ऐपनवारी दई चलाय ॥
तब नैपाली बोलन लागे * औ रुपना ते पूछन लाग ॥
कौन देश ते तुम आए हो * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोल्यो रुपना तब राजा ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
हम तो आए हैं महुबे ते * रुपना बारी नाम हमार ॥
आल्हा आए हैं ब्याहन को * ऐपनवारी दई पठाय ॥
नेग हमारो जल्दी चहिये * सो तुम हमहिं देउ मँगवाय ॥
इतनी सुनतै नैपाली के * नैना अग्निज्वाल होइ जाय ॥
बड़े बड़े क्षत्री बँगला बैठे * ठहुना धरे नग्न तलवार ॥
बोले नैपाली क्षत्रिन ते * याको देउ जानते मारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

जान न पावे यह द्वारे ते * तुरतै मूँड लेउ कटवाय ॥
बैठे क्षत्री यक हजार जहँ * सो सब उठे भरहरा खाय ॥
खैंचि शिरोही क्षत्रिन लीन्ही * तुरतै चलन लगी तलवारि ॥
पूरन ठाकुर पटना वालो * वाने लीन्ही गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज धमक्को जब रुपना पर * रुपना लैगयो चोट बचाय ॥
साँग उठाई जो रुपना ने * सो पूरन पर दई चलाय ॥
लगो चपेटा तब पूरन के * पूरन गिरो भरहरा खाय ॥
सुमिरन करके नारायण को * मनियाँ सुमिरे महोबे क्यार ॥
खैंचि शिरोही लइ रुपनाने * बारी कठिन करे तलवारि ॥
जाय पहुँचो जब गद्दी पै * ऐपनवारी लई उठाय ॥
ऐंड़ लगाय दई घोड़ा के * घोड़ा निकर गयो वापार ॥
रुपने घेरो सब क्षत्रिन ने * द्वारे चलन लगी तरुवारि ॥
रंगविरंगो रुपना होइ गयो * घोड़ा रक्त बरन होइ जाय ॥
क्षत्री भागि गये आगे ते * रुपना निकरि गयो वापार ॥
देखि तमासा यह बारी की * नैपाली ने कही सुनाय ॥
नेगी जालिम है महुबे को * अकिले करो कठिन तलवारि ॥
जिनके नेगी ऐसे जालिम * तिन क्षत्रिनते कहा बिसाय ॥
यह सुनि जोगा भोगा बोले * दादा धीर धरो मनमाहिं ।
जितने आये हैं महुबे ते * सबको कटा दिहौं करवाय ॥
यह कहि जोगा भोगा चलिभये * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
बोलि दरोगा तोपन वालो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर देउ धराय ॥
हाथिन वाले को बुलवायो * चीरा कलँगी दई इनाम ।
हाथी सजवायो जल्दी ते * औ लड़िवेको होउ तयार ।
घोड़न वाले को बुलवायो * सिगरे घोड़ा लेउ सजाय ॥
बजे नगारा हमरे दल में * क्षत्री साजि होयँ तैयार ॥
डंका बाजो नैनागढ़ में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मारू डंकाके बाजन खन * क्षत्रिन बाँधि लिये हथियार ॥
पहिले नगारा में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन * क्षत्रिन धरे रकाबन पायँ ॥
चन्द्रवंश राउर भदावर * औ परिहार गुटैया टार ॥
सूरजबंगी औ रघुवंशी * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
कछवाहे पवार यादव सब * औ काबुलिया भये तयार ॥
बूँदी वाले हाड़ा वाले * औ गहलौत गौर चौहान ॥
मारवाड़ के सजे सिपाही * तोमर बंशी भये तयार ॥
जितने क्षत्री नैना गढ़ के * सोसब साजि भये तैयार ॥
तोपैं सजिगइँ नैना गढ़की * सो आगे को दई जुताय ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * जोगा भोगा चले अगार ॥
झंडा घूमै दरियाइन के * घूमत जावैं लाल निशान ॥
लश्कर पहुँचि गयो धूरे पर * मूर्चा बन्दी दई कराय ॥
राम बनावै तो बनि जावै * बिगरी बनत बनतबनिजाय ॥
यहाँ की बातैं तो यहँ छाँड़ो * अब आगेका सुनो हवाल ॥
रंग बिरंगी रुपना देखो * तब हँसिकही बीर मलिखान॥
कैसी गुजरी दरबाजे पर * रूपन हाल देउ बतलाय ॥
इतनी सुनिके रुपना बोलो * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
कठिन लड़ाई नैपाली की * हमते कछु कही ना जाय ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
जबही नाम सुने महुबे को * फाटक बन्द दियो करवाय ॥
झुके सिपाही नैनागढ़ के * आमाझोर चली तलवार ॥
काम तुम्हारे हम करि आये * दहिने भई शारदा माय ॥
अब क्यों गाफिल तुम बैठे हौ * सिरपर फौज पहुँची आय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखे ते * दादा सावधान होइ जाउ ॥
फौज आयगइ नैनागढ़ की * अब लरिबे को होउ तयार ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * लश्कर डंका देउ बजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बजो नगारा तब लश्कर में * क्षत्री तुरत भये हुशियार ॥
पहिले डंका में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत ही * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
चौथे डंका के बाजत ही * लश्कर चला महोबे क्यार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार खड़ी रहै * मलिखे फाँदि भये असवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो * ऊदनि फाँदि भये असवार ॥
चारि घड़ी को धावा करिके * रण खेतन में पहुँचे जाय ॥
दोनों फौजन के अन्तर में * रहि गयो आध कोस मैदान ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो ऊदन ने * औ जोगा पै पहुँचो जाय ॥
सूरति देखी जब ऊदनि की * तब जोगा ने कही सुनाय ॥
कौन देश ते तुम आये हो * आगे कहा तुम्हारो नाम ॥
इतनी सुनि के ऊदनि बोले * औ जोगा को दियो जवाब ॥
नगर महोबा एक बस्ती है * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * औ ऊदन है नाम हमार ॥
आल्हा व्याहन को आये हैं * तुरतै भाँवरि देउ डराय ॥
इतनी सुनतै जोगा जरिगये * गुस्सा गई देहमें छाय ॥
ऊदनि लौटि जाउ महुबे को * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
व्याह न होइहैं हियँ आल्हा को * ओछी जाति बनाफर राय ॥
धोखे रहियो ना माड़ौ के * जहँ लैलियो बापको दाँव ॥
कठिन मवासी नैनागढ़ है * सबके लेहौं शीश कटाय ॥
कुसल आपनो जो तुम चाहौ * अपनो कूच जाउ करवाय ॥
इतनी बातें सुनि जोगाकी * तब हँसिकही उदैसिंह राय ॥
बढ़िके बातें तुम बोलत हो * नाहक रारि करत बिन काज ॥
रारि बढ़ैहो जो हमरे संग * सबको कैद लिहौं करवाय ॥
डंड बाँधिके नैपाली को * सातौ भाँवरि लिहौं डराय ॥
बिना बियाहे हमना जैहैं * चाहे प्रान रहे की जाय ॥
सुनतै जोगा गुस्सा होइकै * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बत्ती दैदेउ मेरि तोपन में * इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
जान न पावैं महुबे वाले * सबको कटा देउ करवाय ॥
इतनी सुनते झुके खलासी * औ तोपन पै पहुँचे जाय ॥
लैके थैली बारूदन की * सो तोपन में दई झुकाय ॥
गोला डारि दियो तोपन में * ऊपर रंजक दई धराय ॥
दैदइ बत्ती उन तोपन में * धुँअना रहेउ सरग में छाय ॥
लौटे ऊदनि अपने दल में * तोपन बत्ती दइ लगवाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * चहुँदिशि रही अँधिरिया छाय॥
तो पैं छूटीं दोनों दल में * गोला चलन लाग तत्काल ॥
अररर अररर गोला छूटै * कहकह करै अगिनियाँ बान ॥
सननन सननन गोला छूटै * सरसर परी तीर की मारु ॥
दोनों फौजन के अन्तर माँ * अन्धाधुन्ध तोप की मारु ॥
गोला लागै ज्यहि हाथी के * दलमें डौंकि डौंकि रहि जाय
गोला लागै जौन ऊँट के * सो गिरि परे चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जिन घोड़न के * सो गिरि परे भूमि मँडराय ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिन के * तिनको त्वचा सर्ग मँडराय ॥
बंबको गोला जिनको लागे * तिनको लगै ठिकाना नाहिं॥
गोला जँजिरहा जिनको लागै * तिन के हाड़ मास छुटिजाय॥
छोटी गोली जिनके लागै * मानो गिरह कबूतर खाय ॥
बानको डंडा जिनके लागै * तिनके दुइखंडा हुइजाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * कोइ रजपूत न टारे पाँव ॥
तो पैं धैं धैं लाली होइ गइँ * ज्वानन हाथ धरेना जाय ॥
चढ़ी कमनियाँ पानी होइ गई * चुटकिन के गै मांस उड़ाय ॥
तोप रहकला पीछे छाड़े * लंबे बंद करैं हथियार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके * रहिगा पाँच पैग मैदान ॥
साँगैं चलन लगीं दोनों दल * ऊपर बर्छिनको दइ मार ॥
छुटे पिचिका जहँ लोहन के * औ बुबकारिन बोले घाव ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बूड़ि जुलफियाँ गईं लोहुन ते * चर्बी अंग गई लपटाय ॥
हौदा भरि गये सब लोहुन ते * औ चुचुहात फिरैं असवार ॥
तीनि घरी भरि बजो साँगड़ा * भारी भइ बर्छिन की मारु ॥
भाला टूटके दोना होइगे * लटुआ कटि बर्छिन के जाय ॥
यहौ लड़ाई पीछे परि गई * अब आगे को सुनो हवाल ॥
दोनों फौजन के अंतर में * रहिगयो डेढ़ कदम मैदान ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * अपनो खैंचि २ तलवार ॥
खट खट खट खट चले शिरोही * बोले छपक छपक तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटके बर्दवान के * कटि कटि गिरै सुघरुआ ज्वान॥
पैदल अभिरे तहँ पैदल सँग * औ असवारन ते असवार ॥
हौदाके संग हौदा मिलि गये * हाथिन अड़ो दाँत ते दाँत ॥
आठ कोस केरे गिरदा में * चारो ओर चले तलवार ॥
पैदल गिरिगये पैग पैग पर * उनके दुइ दुइ पैग असवार ॥
रेख उठन्ते क्षत्री गिरि गये * उन तिरियन घर कौन हवाल ॥
हाथी डारे बिसै बिसै पर * छोटे पर्वत की उनहार ॥
कटि गये कल्ला जिन घोड़न के * धरती गिरे करौटा खाय ॥
कटि भुजदंडैं रजपूतन की * चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
पंगिया डारी जो लोहुन में * मानो ताल फूल उतराय ॥
परे दुशाला जो लोहुन में * जनु नदी में परो सेवार ॥
ढालैं डारी हैं लोहू में * मानो नाग रहे मन्नाय ॥
परी बन्दूकैं हैं लोहू में * मानो नाग रहे मन्नाय ॥
डारे घैहा रण में लोटैं * जिनके प्यास २ रटलाग ॥
मोहर कटोरा पानी होइ गयो * रणमें कोइ न पूछे बात ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * जिनके मारु २ रटलाग ॥
मुर्चन मुचन नचै बेंदुला * ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हो * तुम सब भैया लगो हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

काम हमारो पूरन होइ है * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
कुं०—कीजै रणमें आयके यारो युद्ध अघाय ॥
दुश्मन को हनि डारिये आगे धरिये पाँय ॥
आगे धरिये पाँय मोह मनमें नहिं कीजै ।
रणमें करि संग्राम पाँव पीछे नहिं दीजै ॥
हितसो करिके ध्यान शूरता यही बिचारौ ।
रणमें कायर भगे शूर भागै नहिं यारौ ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

बढ़े सिपाही महुबे वाले * अपनो मया मोह बिसराय ॥
भगे सिपाही नैना गढ़ के * अपने डारि २ हथियार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * औ रन दुलहा चले बराय ॥
कोऊ रोवत है लड़िकन को * कोऊ पुरखिन को चिल्लाय ॥
कोऊ रोवै घर तिरियन को * अबही लाये गौनवाँ चार ॥
तीन लाखते जोगा आयो * रहि गयो डेढ़ लाख असवार ॥
भगत सिपाही जोगा देखे * तब भोगाते कही सुनाय ॥
खबरि सुनावो तुम राजाको * रहि गयो डेढ़ लाख असवार ॥
डेढ़ लाख क्षत्री रण जूझे * महुबे वालेन दियो गिराय ॥
इतनी सुनतै भोगा झपटे * औ नैनागढ़ पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी नैपाली की * भोगा हाल सुनावन लाग ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * रणमें कठिन करैं तलवार ॥
तीन लाख लश्कर हम लैगे * रहिगो डेढ़ लाख असवार ॥
डेढ़ लाख जूझे रण भीतर * महुबे वालेन दियो गिराय ॥
दश हजार महुबे के जूझे * ऐसी कठिन करी तलवार ॥
सोनवाँ बहिनी के कारण ते * सिगरी फौज गई बिलाय ॥
व्याहजो होइहैं कहुँ आल्हा सँग * कोइ न पिये घड़ा को पानि ॥
इतनी बात सुनी राजा ने * तब भोगा को दियो जवाब ॥
धीरज राखो अपने जियमें * सबको शीस लिहैं कटवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

राजा उठिके गये महलन में * औ लै आये ढोल उठाय ॥
अमर ढोल लै दियो भोगा को * यह दल माहिं बजावो जाय ॥
मूर्छा जगि है सब शूरन को * तुम्हरो काम सिद्धि होइजाय ॥
लैके ढोल गयो भोगा तब * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
ढोल बजाय दियो भोगा ने * क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
सुनतै घैहा उठि ठाढ़े भये * जिनके मारु २ रटलागि ॥
हल्ला करि दियो तब जोगा ने * खट २ चलन लगी तलवार ॥
झुके सिपाही नैनागढ़ के * बढ़ि बढ़ि धरैं अगारी पाँव ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही * संझाकाल रहो नियराय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखे ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
एक बात अनहोनी हो गइ * ताको करिहो कौन उपाय ॥
गिरे सिपाही फिरि उठि बैठत * हमते लड़न लगत तत्काल ॥
लड़े हमारे कछु ना होइहै * ताते मुर्चा देउ हटाय ॥
कछु विचार करि कै फिरि लड़िहैं * अपनो मतलब लिहैं बनाय ॥
हुक्म फेरिके बघ ऊदनि ने * अपनो मुर्चा दियो हटाय ॥
लश्कर लौटि परी महुबे को * औ डेरन पर पहुँचो आय ॥
सोचि समुझि के बघऊदनि ने * नैनागढ़ की पकरी राह ॥
जहाँ महल रहै रनि सोनवाँकी * पहुँचे तहाँ उदयसिंह राय ॥
सोनवाँ ठाढ़ी सतखण्डा पर * सो ऊदनि तन रही निहारि ॥
सुरति साँवरे मुख नरियारे * नैना हिरना की उनहार ॥
घोड़ा बेंदुला नाचति आवै * शिरपर बँधी बैजनी पाग ॥
महल तरे ऊदनि आये जब * सोनवाँ तुरत गई पहिचानि ॥
जूझको कंगन कर में देखो * औ सब लक्षण लियो मिलाय ॥
सिढ़ियन २ सोनवाँ उतरी * औ खिरकी पर पहुँची जाय ॥
सोनवाँ रानी पूछन लागी * देवर हाल देउ बतलाय ॥
बोले ऊदनि तब सोनवाँ ते * भौजी सुनो हमारी बात ॥
लिखि कै पाती हमको भेजी * आवो साजि उदैसिंह राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

फौज नसावन को लागी हौ * तुम करि दियो बंशको हानि ॥
जौन सिपाही हम मारत हैं * सो उठि लड़त हमारे साथ ॥
गिरे सिपाही क्यों उठि बैठत * सो सब हाल देउ बतलाय ॥
भेद बताय देउ लश्कर को * नहिं सब जै हैं काम नशाय ॥
तापर ज्वाब दियो सोनवाँ ने * देवर सुनो हमारी बात ॥
धोखे रहियो ना माड़ौ के * जहँ लैलियो बाप को दावँ ॥
कठिन मवासी नैनागढ़ है * जहँपर अमर ढोल घहराय ॥
अम्मर ढोल सुनै जो क्षत्री * गिरिके उठै भरहरा खाय ॥
यह बरदान दियो इन्दर ने * यह हम भेद दियो बतलाय ॥
पार न पैहो तुम नैना गढ़ * तुमको जतन देउँ बतलाय ॥
भोर होतही देवी पूजन * ऐहौं अमर ढोल लै साथ ॥
माली होइके मठिया ऐयो * तुमरो काम सिद्ध होइ जाय ॥
इतनी सुनतै ऊदनि लौटे * औ लश्कर में पहुँचे आय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखे ते * दादा सुनो बीर मलिखान ॥
नैनागढ़ से हम होइ आये * सोनवाँ हाल दियो बतलाय ॥
राति गुजरि गइ जब लश्कर में * भोरहिं उठे उदयसिंह राय ॥
घोड़ा बेंदुला पर चढ़ि बैठे * औ मठिया पै पहुँचे जाय ॥
माली बनिगै ऊदनि बाकुड़ा * घोड़ा पीछे दियो बँधाय ॥
लैके डलिया कर फूलन को * बैठे सम्हरि उदयसिंह राय ॥
यहिबिधि पहुँचे ऊदनि बाँकुड़ा * अब सोनवाँ का सुनो हवाल ॥
सोनवाँ उतरी भोर होत खन * पहुँची रंग महल में जाय ॥
रानी देखी जब बेटी को * पूछन लागी हाल हवाल ॥
कौन काम को तुम आईहौ * सो तुम हाल देउ बतलाय ॥
बोली सोनवाँ तब माता ते * माता सुनो हमारी बात ॥
पूजन जैहौं मैं देवी को * अम्मर ढोल देउ मँगवाय ॥
सुनतै रानी बोलन लागी * ढोल न देहैं बाप तुम्हार ॥
यह सुनि सोनवाँ तुरतै बोली * माता बचन करो परमान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ढोल न पैहौं जो पूजन को * तो मैं पेटु मारि मरि जाउँ ॥
इतनी सुनतै रानी चलि गई * औ राजा पै पहुँची जाय ॥
हाथ जोरिकै रानी बोली * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
देवी पूजन बेटी जैहै * अम्मर ढोल देउ मँगवाय ॥
बोले राजा तब रानी ते * अम्मर ढोल मिलनको नाहिं ॥
तब फिर रानी बोलन लागी * हमरे बचन करो परमान ॥
जो ना देहौ अमर ढोल तुम * बेटी देहै जान गँवाय ॥
तीनि घरी पूजा में लगिहैं * नाहक रारि बढ़ावत आय ॥
ढोल मँगाय देउ जल्दी ते * जामें दोउ धर्म रहिजाय ॥
बात मानि लइ तब राजाने * अम्मरढोल दियो मँगवाय ॥
ढोलक लैके रानी आई * औ सोनवाँ को दई गहाय ॥
बहुत खुशी होय सोनवाँ बेटी * अपनी सखियाँ लियो बुलाय ॥
देवी पूजन सोनवाँ चलि भई * औ मढ़िया में पहुँची जाय ॥
ढोल बजावत सोनवाँ आई * बैठे जहाँ उदैयासिंह राय ॥
करो इशारा तब ऊदनि को * अम्मर ढोल दियो धरवाय ॥
पूजा करन लगी मठिया में * ऊदनि ढोलक लियो उठाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे * औ लश्कर में पहुँचे आय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखे ते * दादा मोर बीर मलिखान ॥
अमर ढोल यह हम लै आये * अब ना राखौ देर लगाय ॥
कूच कराय देउ लश्कर को * गुजरे घरी घरी पर वार ॥
इतनी सुनतै नरमलिखे ने * तुरत नगड़ची लियो बुलाय ॥
डंका बाजे मेरे लश्कर में * लश्कर जल्द होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्कर में * छत्री सबै भये हुसियार ॥
पहले डंका में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन * छत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथी चढ़िगै * बाँके घाड़न के असवार ॥
ऊदनि चढ़िगै रसबेंदुल पर * घोड़ी कबुतरी पर मलिखान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ताल्हा सैयदहैं सिंहिनि पर * देवा मनोरथा पर असवार ॥
जगनिक चढ़ि गये हर्नागर पर * औ लश्कर सँग भये तयार ॥
रूपन बारी महुबे वालो * घोड़ा पपीहा पर असवार ॥
मन्ना गूजर जो महुबेको * सोऊ साथ भयो तैयार ॥
सबदल सजिगो महुबे वाले * डंका होन गोल में लाग ॥
मारू डंकाके बाजत खन * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
फौज पहूँची जब खेतन में * मुर्चा बन्दी दइ करवाय ॥
चलो साँड़िया रणखेतन ते * नैनागढ़ में पहुँचो जाय ॥
खबरि सुनाई नैपाली को * लश्कर खेत पहूँचो आय ॥
इतनी सुनतै नैपाली ने * अपने बेटा लिये बुलवाय ॥
पटना वाला पूरन राजा * ताको तुरत लियो बुलवाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दीते * सबके सीस देउ कटवाय ॥
जान न पावै कोउ महुबे को * तुरतै कूच जाउ करवाय ॥
जोगा भोगा बिजमा बेटा * चौथे पूरन संग लिवाय ॥
हुक्म पायके चारो चलिभये * औ लश्कर में पहुँचो जाय ॥
तुरत नगरची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजो नगारा नैनागढ़ में * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले नगारा में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
तीनों लरिका नैपाली के * अपने घोड़न पर असवार ॥
राजापूरन भी सँग चलिभये * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
लश्कर पहुँचो जब खेतनमें * जोगा घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जोगा बोले आगे बढ़के * भारी जाय दई ललकार ॥
कौन शूरमा चढ़ि आयो है * सो समुहें होय देय जवाब ॥
ऊदनि बढ़िगे तब आगे को * औ समुहें होय दियो जवाब ॥
हमहिं सूरमा चढ़ि आये हैं * औ ऊदनि है नाम हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ब्याहन आये हम आल्हा को * सो तुम भाँवरि देउ डराय ॥
रारि बढ़ाओ ना आगे को * इतनी मानो कही हमारि ॥
इतनी सुनतै जोगा जरिगये * नैना अगिन ज्वाल होइ जाय ॥
बोले जोगा तब ऊदनि ते * ऊदनि लौटि महोबे जाउ ॥
धोखे रहियो ना माड़ौ के * जहँ लेलियो बापको दाँव ॥
जितने आये हो महुवे ते * सबको कटा दिहौं करवाय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनि ने * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
बिना बियाहे हम ना जैहैं * चाहे प्राण रहेकी जाय ॥
बातन बातन बतबढ़ होइ गयो * औ बातन में बाढ़ी रारि ॥
हुक्म सुनाय दियो जोगाने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
मारि भगाओ इन पाजिन को * सब को कटा देउ करवाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर * तुरतै बत्ती दई लगाय ॥
ऊदनि लौटे तब लश्कर में * तोपन बत्ती दइ लगवाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * धुआना रहो स्वर्ग मडराय ॥
गोला चलन लगे दोनों दल * अन्धा धुन्ध तोपकी मारु ॥
तीनि घरी भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन होइ जायँ ॥
तोपैं छोड़ दई चात्रिन ने * जिनपर हाथ धरो ना जाय ॥
दोनों सैना थक्कमिल होगइं * ज्वानन हाथ गही तरवारि ॥
झुके सिपाही दोनों दलके * खटखट चलन लगी तरवारि ॥
पैदल अभिरि गये पैदल संग * औ असवारन ते असवार ॥
हौदा के संग हौदा मिलिगये * हाथिन अड़ो दाँतसे दाँत ॥
पैदल गिरिगे पैग पैग पर * उनके दुदुइ पैग असवार ॥
हाथी गिरिगये बिसे २ पर * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला * ऊदनि कहै पुकारि पुकारि ॥
भागि न जैयो कोउ मोहरा ते * यारो रखियो धर्म हमार ॥
बोले ऊदनि त्यहि रुपना ते * भैया बहुत रहेउ हुशियार ॥
ताल्हा सैयद बनरस वाले * तिनते ऊदनि कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सावधान मुर्चा पर रहियो * चाचा रखियो धर्म हमार ॥
ऊदनि बोले तब ढेबाते * भैया बहुत रह्यो हुशियार ॥
मामा जगनिक ते फिरि बोले * मामा सावधान होइ जाउ ॥
कठिन लड़ाई नैनागढ़ की * मामा रखियो धर्म हमार ॥
ढेबा दबिगये तब उत्तर को * सैयद दखिनको दबिजाय ॥
जगनिक पहुँच गये पश्चिम को * मन्ना पूरब को दबिजाय ॥
मन्ना गूजर रुपना बारी * रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
मलिखे ठाकुर की धमकिन में * सब दल रेनबेन होइ जाय ॥
जौन गोल होइ मलिखे निकरैं * तहँ पर काटि करैं खरिहान ॥
नचे बेंदुला बघ ऊदनि को * भाला नागदौनि को हाथ ॥
क्या गति वरणौं त्यहि अवसर को * शोभा कछू कही ना जाय ॥
बाइस हौदा खाली करके * घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
जायके पहुँचे तब जोगा पै * औ ऊदनि ने कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं रन खेतन में * देखैं कापर राम रिसाय ।
यह मन भाय गई जोगा के * तब ऊदनि से कही सुनाय ॥
तुम परदेशी हो नैनागढ़ * पहिली चोट करो तुम आय ॥
इतनी सुनिके ऊदनि बोले * जोगा सुनो हमारी बात ॥
पहिली उचौनी हमना खेलैं * ना भागे के परैं पिछार ॥
चोट चलाय लेउ अपनी तुम * मनकी मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी सुनतै तब जोगा ने * करमें लीन्हीं लाल कमान ॥
तानि कमनियाँ भुजदंडन पर * समुहें कैबर दियो चलाय ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने होइ गयो * कैबर निकरि गयो वापार ॥
बचिगे ऊदन रस बेंदुलापर * जोगा लीन्हीं साँग उठाय ॥
सोधरि धमकी बघ ऊदन पर * ऊदनि लेगयो चोट बचाय ॥
बोले जोगा तब ऊदनि ते * ऊदनि सुनो हमारी बात ॥
चुप्पै लौटि जाउ महुबे को * अबही मानौ कही हमारि ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * हमना धरैं पिछारूँ पाँव ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चोट आपनो औरो करिलेउ * मनते मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी बात सुनी जोगा ने * अपनो खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब ऊदनि पर * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
तीनि सिरोही जोगा मारो * ऊदनि लीन्ही चोट बचाय ॥
कावा दैके बघ ऊदने ने * अपनो भाला दियो चलाय ॥
लगो चपेटा तब घोड़ा के * घोड़ा पाँच कदम हटिजाय ॥
यहगति देखी जब जोगा की * तब भोगा ने दियो जवाब ॥
सम्हरो ऊदनि तुम घोड़ा पर * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
मलिखे आय गये समुहें पर * औ भोगा को दियो जवाब ॥
खबरदार घोड़ा पर बैठो * तुमपर रहेउ काल मेडराय ॥
इतनी सुनतै भोगा जरिगे * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका जब समुहें पर * मलिखे लैगे चोट बचाय ॥
गुर्ज उठाय लियो मलिखे ने * सो भोगा पर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा तब घोड़ा के * घोड़ा बीस कदम हटिजाय ॥
दाबे बेंदुला ऊदनि आये * औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
हाथ चलैयो ना भोगा पर * नहिं कछु काम बनैगा नाहिं॥
नेगु करै है को मड़ये तर * ताते मानो बात हमार ॥
इतनी बात सुनी ऊदनकी * तब हटिगयो बीर मलिखान॥
घोड़ा बढ़ाय दियो आगे को * समुहें गोल गये समुहाय ॥
मलिखे ऊदन दोनों बिचले * रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही नैना गढ़ के * अपने डारि २ हथियार ॥
तीनि लाख लश्कर जोगा के * रहिगयो एक लाख असवार ॥
कठिन लड़ाई भइ धूरे पर * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जे रण दुलहा चले बराय ॥
भागो लश्कर नैपाली का * महुबे वाले परे पिछार ॥
जोगा भोगा सोचन लागे * अब लश्करको भयो विनाश ॥
दोनों चलिभये नैनागढ़ को * औ दरबार पहूँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करी बन्दगी नैपाली को * औ लश्कर को कह्यो हवाल ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * सबदल काटि करो खरिहान ॥
लश्कर भागि गये खेतन ते * ताको करिहौ कौन उपाय ॥
इतनी सुनिके नैपाली तब * मनमें बहुत गये घबराय ॥
चलिभये राजा फिर ड्योढ़ी ते * आम खास में पहुँचे जाय ॥
देखी कोठरी तब राजा ने * अमर ढोल ना परो दिखाय ॥
देखि हकीकति राजा स्वाचै * मनमें गये सनाका खाय ॥
राजा लौटि परे बँगला को * औ लरिकन ते कही सुनाय॥
चोरी होयगई अमर ढोलकी * सो लै गयो बनाफर राय ॥
चलि भयो राजा तब बँगला ते * देबी की मठ पहुँचे जाय ॥
पूजा करि कै जगदम्बा की * औ फिरि होम दियो करवाय॥
शीस चढ़ावन के हित राजा * अपने मन में कियो बिचार॥
आभा बोली तब देबी की * राजा धीर धरो मन माहिं ॥
ढोलक पाई तुम इन्दर ते * सोहम ढोलक दि हैं मँगाय ॥
इतनी सुनिके राजा लौटे * औ दरबार पहूँचे आय ॥
देबी पहुँची इन्द्र लोक में * औ यह ढोलक माँगन लागि ॥
बोले इन्द्र तबै देवन ते * अबही मृत्युलोक को जाउ ॥
अमर ढोल लावो जल्दी ते * हमरो नजर गुजारौ आय ॥
देव झपटि गयो मृत्यलोक को * लाये अमर ढोल तत्काल ॥
बोले इन्दर तब देबी ते * देबी सुनो हमारी बात ॥
आल्हा अम्मर हैं दुनियाँ में * यह बर दियो शारदा माय ॥
काम नशै हैं सब आल्हा के * जो अब ढोलक दिहौ गहाय॥
हुक्म दे दियो यह इन्दर ने * औ देवन ते कही सुनाय ॥
ढोलक फोरि देउ जल्दी ते * जामें दुनों धर्म रहिजाय ॥
देबी चलि भई इन्द्रलोक ते * औ मठिया में पहुँची आय ॥
सपना दीन्हों नैपाली को * इन्दर ढोलक दियो फुराय ॥
करौ लड़ाई तुम केहू बिधि * अपनो कारज लेउ बनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भोर होत खन नैपाली ने * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
लैके कागद कल्पी वालो * अरिनन्दन को लिखी हवाल॥
पहले लिखि कै सरनामा को * ता पीछे ते लिखी हवाल ॥
तेहिते पीछे लिखी हकीकत * याको पढ़ियो चित्त लगाय ॥
नगर महोबा एक बस्ती है * जहँपर बसत रजा परिमाल ॥
तहँ ते आल्हा ब्याहन आये * ओछी जात बनाफर राय ॥
जोकहुँ ब्याह होइ आल्हा सँग * तो रजपूती जाय नशाय ॥
जल्दी आवो सुन्दर बन ते * सबको कटा देउ करवाय ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबे के * जिनते हारि गई तलवारि ॥
यहिबिधि चिट्ठी राजा लिखिके * सो धावन को दई गहाय ॥
लैके पाती धावन चलि भये * औ सुन्दर बन पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी अरिनन्दन की * धावन उतरि परो अरगाय ॥
करी बन्दगी अरिनन्दन को * पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजरि बदलिगई अरिनन्दन की * तुरतै पाती लई उठाय ॥
खोलिकै पाती राजा बाँची * आँकुइ आँकु नजरि कै जाय ॥
तुरत नगरची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजो नगारा तब लश्कर में * क्षत्री तुरत भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्रिन धरे रकाबन पाय ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़ि गये * बाँके घोड़न के असवार ॥
पैदल सजि भये सुन्दर बन के * जिनको सजत न लागी बार ॥
चौथे डंका के बाजत खन * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
करी तयारी अब अरिनन्दन * झट गंगाजल लियो मँगाय ॥
करि अस्नान ध्यान शंकरको * पूजी बहुरि शारदा माय ॥
चन्दन दीन्हों निज माथे पर * भुजदंडन में लियो लगाय ॥
लंग चढ़ाई रेशम वाली * जामें तेग नाहिं आनियाय ॥
बारह छुरिया कम्मर बाँधे * कलहा दुइ बाँधे तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अगल बगल पर दुइ पिसतौलें * दहिने सिंहिन मुठ कटार ॥
भाला सोहे नाग दौनि को * बायें ओर गैंडकी ढाल ॥
अपनी हाथी त्यार करायो * औ अरिनन्दन भयो सवार ॥
लश्कर चलिभयो अरिनन्दनको * नैना गढ़की पकरी राह ॥
तीनि दिना मारग में लागे * औ धूरे पर पहुँचे आय ॥
लश्कर उतर परी नद्दी पर * अपने डेरा दियो लगाय ॥
नावैं भेजि दई नद्दी पर * तिन पर नाच दियो करवाय ॥
वही समैया आल्हा आये * नद्दी करन हेत अस्नान ॥
नचैं कंचनी तहँ नावन पर * जिनकी सोभा कही न जाय ॥
तान मनोहर तिनकी सुनिके * आल्हा निकट पहुँचे जाय ॥
सूरति देखी अरिनन्दन ने * तब आल्हा ते पूछन लाग ॥
कहाँ के बासी तुम ठकुर हौ * आगे काह तुम्हारो नाम ॥
बोले आल्हा अरिनन्दन ते * तुम सुनि लेव हमारी बात ॥
हम रहवैया हैं महुबे के * जहँपर बसत रजा परिमाल ॥
तिनके घरमें हम उपजे हैं * राजा दस्सराज के लाल ॥
नाम हमारो सब जानत हैं * आल्हा नाम प्रगट संसार ॥
इतनी बात सुनी अरिनन्दन * तब आल्हा ते लगे बतान ॥
नगर महोबा में पारस है * लोहा छुवत सोन होजाय ॥
बड़े प्रतापी चन्देले हैं * तुम्हरो नाम जगत सरनाम ॥
हियाँ नाव पर तुम चढ़ि आवो * देखो नाच कंचनिन क्यार ॥
इतनी सुनिके आल्हा चढ़िगै * राजा चौकी दई डराय ॥
बैठिके आल्हा देखन लागे * सुन्दर नाच कंचनी क्यार ॥
देखि दुचित्तो जब आल्हा को * राजा नाव दई खुलवाय ॥
मारो धक्का मल्लाहन ने * लागो जाय नाव वा पार ॥
कैद कराय लई आल्हा को * सुन्दर बनकी पकरी राह ॥
बहुत देर आल्हा को हुइगयो * ऊदनि सोचि सोचि रहिजाय ॥
तौलो रुपना आय पहूँचो * तातें ऊदनि पूछन लाग ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आल्हा दादा को कहँ छाड़ेउ * सोतुम हमहिं देउ बतलाय ॥
इतनी सुनिके रुपना बोलेउ * हमते कछु कही ना जाय ॥
जो अरिनन्दन सुन्दर बनके * सो नद्दी पर पहुँचे आय ॥
नावें लगवाई नद्दी में * तिनपर नाच दियो करवाय ॥
आल्हा निकट गये नावन के * अरिनन्दन ने लियो बुलाय ॥
ऊँची चौकी तिन डरवाई * आल्हा बैठि गये अरगाय ॥
देखि दुचित्ता जब आल्हा को * राजा नाव दई खोलवाय ॥
पार लागि गई जब नौका वह * आल्हे कैद लियो करवाय ॥
कूच कराय दियो अरिनन्दन * सुन्दर बनको गयो लिवाय ॥
मलिखे सोचै अपने मन में * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दी ते * अबही कैद लेउ छोड़वाय ॥
ऊदनि बोले तब मलिखे ते * दादा धीर धरौ मन माहिं ॥
तुरत बुलाय लियो ढेबाको * भैया सगुन देउ बतलाय ॥
खोलि पत्तरा ढेबा बोलेउ * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
रूप बनावौ सौदागर को * घोड़ा बेंदुला लेउ सजवाय ॥
घोड़ा करेलिया को सजवावौ * औ सुन्दरबन जाउ लिवाय ॥
करौ बहाना तुम बेंचन को * आल्हे लैयो संग लिवाय ॥
इतनी सुनतै ऊदनि बाँकुड़ा * घोड़ा करेलिया लियो मँगवाय॥
घोड़ा बेंदुला को मँगवायो * औ कठनाली लई कसवाय ॥
तंग खिचाय दियो रेशम के * सुन्दर जीन दिये कसवाय ॥
डारि रकाबैं दइ चाँदी की * बारन मोती दई पुराय ॥
कलँगी लैके मोतीचूर की * सो धरवाई उदैसिंह राय ॥
डारि हुमेल दई कल्लन में * माथे हीरा दियो धराय ॥
झूलें डारि दई मखमल की * शोभा कछु कही ना जाय ॥
रूप बनायो सौदागर को * ऊदनि कूच दियो करवाय ॥
चारि दिना मारग में बीते * सुन्दर बनमें पहुँचे जाय ॥
लगी कचहरी अरिनन्दन की * अजगर लागि रहो दरबार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऊदनि पहुँचे जहँ फाटक पर * दरवानी ने कही सुनाय ॥
कौन देशके तुम बासी हो * औ है कहा तुम्हारो काम ॥
बोले ऊदनि दरवानी ते * राजे खबरि सुनावो जाय ॥
यक सौदागर है घोड़न का * अच्छे घोड़ा लेउ खरीद ॥
इतनी सुनतै दरवानी ने * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
सौदागर आयो घोड़न को * सो तुम देखि लेउ महराज ॥
ऐसे घोड़ा हम ना देखे * जिनको रूप न बरनो जाय ॥
इतनी सुनतै दरवानी ते * अरिनन्दन ने कही सुनाय ॥
जल्दी भेजो तुम घोड़न को * सौदागर को देउ पठाय ॥
सुनतै लौटा दरवानी तब * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
औ सौदागर काबुल वाले * जल्दी घोड़न को लै जाय ॥
ऊदनि चलि भये लै घोड़न को * बीच कचहरी पहुँचे जाय ॥
देखे घोड़े अरिनन्दन ने * औ सौदागर बात बनाउ ॥
मोल बतावो इन घोड़न को * साँचे दाम देउ बतलाय ॥
ऊदनि बोले तब राजा ते * राजा सुनो हमारी बात ॥
बड़े मोलके ये घोड़ा हैं * अबहीं मोल बतै हैं नाहिं ॥
पहिले फेरि लेउ घोड़न को * इनकी चाल लेउ पहिचानि ॥
तबही कीमति मालुम हुइ है * सो तुम जानि लेउ महराज ॥
इतनी बात सुनी अरिनन्दन * तब छत्रिन को लियो बुलाय ॥
चाल दिखावो इन घोड़न को * हमरे समुहें देउ फिराय ॥
जो छत्री समुहें पर आवै * सो घोड़न को देखि डेराय ॥
ज्वाब देदियो सब छत्रिन ने * हम ते ये फिरि बे के नाहिं ॥
बोले ऊदनि तब राजा ते * राजा बचन करो परमान ॥
घोड़ा लाये हम काबुल ते * बेंचे पाँच महोबे माहिं ॥
दुइ घोड़ा झुन्ना गढ़ बेंचे * ये उड़िजायँ पवनके साथ ॥
होय ज्वान कोउ झुन्ना गढ़ को * या कोउ होय महोबिया ज्वान ॥
तेहि बुलवावौ यहि समया पर * सो घोड़न को लेय फिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनतै अरिनन्दन ने * तब आल्हा को लियो बुलाय ॥
औ यह हुक्म दिया आल्हा को * घोड़ा फेरि दिखावो आय ॥
कैद माफ तुम्हरो कर देहैं * जो तुमचाल देउ दिखलाय ॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने * सुमिरेउ कृष्णचन्द्र भगवान ॥
सुमिरन करिके रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
कूदि बछेड़ा पर चढ़ि बैठे * ऊदनि करो इशारा आय ॥
ऊदनि चढ़ि गये रसबेंदुला पर * मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ॥
ऐंड़ लगाय दई घोड़न के * फाटक निकरि गये वापार ॥
धावा मागै एक दिना को * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी नर मलिखे को * औ ऊदनि ने कही सुनाय ॥
करो तयारी अब लड़िबे को * दादा भाँवरि लेउ डराय ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
बजे नगारा हमरे दल में * लश्कर सबै होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंका में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्रिन धरे रकाबन पाय ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगये * बाँके घोड़न के असवार ॥
घोड़ा बेंदुला पर ऊदनि हैं * घोड़ी कबुतरीपर मलिखानि ॥
हथि पचशावद त्यार करायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा हरनागर पर जगनिक हैं * ढेबा मनोरथा पर असवार ॥
घोड़ा करेलिया पर सुलिखे हैं * सैयद सिंहिन पर असवार ॥
मन्ना गूजर महुबे वाला * सोऊ तुरत भयो तैयार ॥
रुपना बारी महुबे वाला * घोड़ा हिरौजिनपर असवार ॥
मारू डंका के बाजत खन * लश्कर चला बनाफर क्यार ॥
बोले ऊदनि सब क्षत्रिन ते * यारो सुनो हमारी बात ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हो * तुम सब भैया लगो हमार ॥
जीतिके चलिहौ जब महुबे को * सबको तलब दिहौं बढ़वाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दियो बढ़ावा सब क्षत्रिन को * औ आगेको दियो बढ़ाय ॥
लश्कर पहुँची रण खेतन में * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
खबरि सुनी जब नैपाली ने * तीनों लरिका लिये बुलाय ॥
जल्दी लश्कर तुम सजवाओ * महुबे वारेन देउ भगाय ॥
जोगा भोगा विजयी बेटा * तीनों लश्कर पहुँचे जाय ॥
हुक्म दैदियो तब लश्कर में * डंका तुरत दियो बजवाय ॥
बजा नगारा नैनागढ़ में * क्षत्री होन लगे तैयार ॥
मारू डंकाके सुनते खन * क्षत्री साजि भये तैयार ॥
तीनों लरिका नैपाली के * तुरतै घोड़न भये सवार ॥
पूरन राजा पटना वाले * अपने हाथी पर असवार ॥
लश्कर चलिभयो नैनागढ़ को * औ खेतन में पहुँचो जाय ॥
आगे बढ़िके जोगा बोला * औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
कूच कराय जाउ महुबे को * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
बोले ऊदनि तब जोगा ते * जल्दी भाँवरि देउ कराय ॥
कही हमारी जोगा मानो * नाहक रारि बढ़ावत आय ॥
इतनी सुनिके जोगा बोलेउ * यहँपर ब्याह होनको नाहिं ॥
जाति बनाफर की ओछी है * अपनो कूच जाउ करवाय ॥
इतनी सुनते ऊदनि तड़पे * औ जोगाको दियो जवाब ॥
ब्याहि के जैहैं नैना गढ़ ते * हमरो नाम उदयसिंहराय ॥
हमहैं लड़िका दस्सराज के * रानी देव कुँवरि के लाल ॥
बातन २ बतबढ़ होइ गयो * औ बातन में बढ़ि गई रारि ॥
जोगा लौटिपरे लश्कर में * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * गोला चलन लगे तत्काल ॥
अररर अररर गोला छूटै * गोला भन्न भन्न भन्नाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन होइ जायँ ॥
मारु बन्दभइ सब तोपन की * क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
खटखट खटखट तेगा बाजे * सरसर परी तीरकी मार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

झुके सिपाही महुबे वाले * रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही नैनागढ़ के * अपने डारि २ हथियार ॥
भगत सिपाही जोगा देखे * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जोगा बोलेउ तब ऊदनि ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
शूर जुझाये ते का पैहो * हम तुम खेलैं जूझ अघाय ॥
यह मन भाय गई ऊदनि के * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
चोट आपनो जोगा करि लेउ * मनको मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी बात सुनी जोगा ने * तुरतै लीन्ही लाल कमान ॥
हिकरा डाटके बघऊदनि को * समुहें छाड़ि कैबरी दीन्ह ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने होइ गयो * कैबर निकरि गयो वापार ॥
भाला लैके फिरि जोगा ने * बघऊदन पर दियो चलाय ॥
बचिगा बेग दस्सराज का * जोगा खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई जब ऊदनि पर * बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ जोगा की * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
जोगा स्वाचै अपने मन में * हमरो काल रह्यो नियराय ॥
ढालकी औझड़ ऊदनि मारी * औ जोगाको दियो गिराय ॥
भुजा पकरिके त्यहिं जोगाकी * ऊदनि लियो जँजीरन बाँधि ॥
देखि हकीकति यह भोगा ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
घोड़ा दाबे मलिखे आये * औ भोगाते कही सुनाय ॥
खबरदार घोड़ा पर रहियो * तुमपर आय गयो मलिखान ॥
इतनी सुनतै भोगा ठाकुर * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका नर मलिखे पर * बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
तीनि शिरोही भोगा मारो * मलिखे लीन्ही चोट बचाय ॥
ढाल कि औझड़ मलिखे मारो * औ भोगा को दियो गिराय ॥
दंड बाँधि लइ तब भोगा को * तुरतै कैद लई करवाय ॥
यहगति देखी जब विजयाने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
ढेवा आय गये समुहें पर * औ बिजयाते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हमरो तुम्हरो अब बरनी है * देखें कापर राम रिसाय ॥
इतनी सुनिके तब बिजया ने * तुरतै खैंचि लई तलवारि ॥
सो धरि धमकी नर ढेवा पर * ढेवा दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही बिजया मारी * उनकी टूटि गई तलवारि ॥
बिजया स्वाचैं अपने मन में * हमरो काल रह्यो नियराय ॥
ढाल कि औझड़ ढेवा मारो * औ बिजयाको दियो गिराय ॥
मुश्क बाँधि कै त्यहि बिजयाको * तुरतै कैद दियो करवाय ॥
देखि हकीकत पूरन राजा * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
तौलौ जगनिक दाखिल होइगये * औ पूरन को घेरयो जाय ॥
सम्हरिके बैठो तुम हाथी पर * तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो जगनिक ने * दुइ मस्तीक अड़ाये पाँव ॥
करो जड़ाका यक हाथी पर * मारि महावत दियो गिराय ॥
देखि तमासा पूरन राजा * अपनो लीन्ही गुर्ज उठाय ॥
सो धरिधमकेउ उनजगनिक पर * जगनिक लैगे चोट बचाय ॥
घोड़ा बढ़ायो फिरि जगनिक ने * औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥
खैंचि शिरोही लइजगनिक ने * सो हौदा में दियो चलाय ॥
चोट बचाय लियो पूरन ने * मनमें बहुत गये घबराय ॥
कलशा गिरिगये अम्बारी के * सोने फूल गिरे झन्नाय ॥
गाफिल करिके उन पूरन को * जगनिक लीन्ही कैद कराय ॥
चारो बँधिगये जब खेतन में * लश्कर रैन बेन होइजाय ॥
लश्कर लौटि परो आल्हा को * औ डेरापर पहुँचो जाय ॥
जीति देखिके नुनि आल्हा को * माहिल उरई के परिहार ॥
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठे * नैनागढ़ की पकरी राह ॥
जहाँ कचहरी नैपाली की * माहिल तहाँ पहुँचे जाय ॥
उतरि बछेरी ते भुइँ आये * नैपाली को करी सलाम ॥
नजरि बदलिगई नैपाली की * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो आवो उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

माहिल बोले तब राजा ते * हमते कछु कही ना जाय ॥
बड़े शूर हैं महुबे वाले * तिनको कोउ जितैया नाहिं ॥
बाँधे लड़िका सब तुम्हरे उन * औ पूरनको लियो बँधाय ॥
जाति बनाफरकी ओछी है * ताते ब्याह मुनासिब नाहिं ॥
जतन बतावें हम तुमको अब * सो तुम मानि लेउ महराज ॥
करि आधीनी तुम आल्हा ते * आवो अपने संग लिवाय ॥
क्षत्री बैठारो कोठरिन में * सबके शीस लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनि लइ नैपाली ने * तब चलिबे को भयो तयार ॥
नाऊ बारी भाट पुरोहित * नेगी लीन्ही संग लिवाय ॥
चलि भयो राजा नैना गढ़ते * आये जहाँ बनाफर राय ॥
तहँ नैपाली पूछन लागे * औ क्षत्रिनते कही सुनाय ॥
कौनसो तम्बू है आल्हा को * सो तुम हमहिं देव बतलाय ॥
रुपना बारी बोलन लागेउ * नैपाली ते कही सुनाय ॥
ऊँची तम्बू है आल्हा को * झंडा लाल बरन फहराय ॥
चोबदार द्वारे पर ठाढ़े * तहँ तुम चले जाव महराज ॥
तब नैपाली गयो तम्बू में * औ आल्हा को करी जोहार॥
सूरति देखी नैपाली की * आल्हा चौंकी दई डराय ॥
करी अधीनी नैपाली ने * धनि धनि दस्सराज के लाल॥
धन्य भाग रानी देवेकी * जहँ तुम आनि लियो औतार॥
धन्य भाग्य है परिमालै के * जिन घर तुम समान सरदार॥
धनि धनि नगर महोबा कहिये * प्रगटे जहाँ बनाफर राय ॥
धन्य भाग्य हमरो बेटी को * ऐसो शूर मिलो घर आय ॥
अबहीं साइत है ब्याहे की * देवा लग्न करो तुम ब्याह ॥
होयँ घरैया जो तुमरे कोउ * सो सब चलैं हमारे साथ ॥
बातें सुनिके नैपाली की * तुरतै कही बीर मलिखान ॥
डंका बाजे हमरे दल में * लश्कर साजि होय तैयार ॥
बोले नैपाली मलिखे ते * तुम सुनि लेउ बनाफर राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

काम नहीं है तहँ लश्कर को * अकिले आल्हा देउ पठाय ॥
तुरतै भाँवर करि आल्हा को * अबहीं बिदा दिहौं करवाय ॥
इतनी सुनिके ऊदनि बोले * तुम घटि करी हमारे साथ ॥
सुनतै राजा नैपाली ने * तुरते गंगा लई उठाय ॥
साँची मानि लई आल्हा ने * अपनी त्यागि दई कराय ॥
मलिखे सुलिखे ऊदनि ढेबा * मन्ना गूजर भयो तयार ॥
रुपना बारी ताल्हा सैयद * अपनी त्यागि दई कराय ॥
चारो नेगी संग लिवाये * आल्हा पलकी भये सवार ॥
चली पालकी जब आल्हा को * जोगा भोगा दियो ओड़ाय ॥
बिजया बेटा औ पूरन को * तुरतै कैद दई छुटवाय ॥
आठ घरौआ औ सब नेगी * नैनागढ़ में पहुँचे जाय ॥
जाय पहूँचो दरवाजे पर * तब नैपाली कही सुनाय ॥
मँडओ गाड़ि देउ आँगन में * चारो नेगी लेउ बुलाय ॥
इतनी सुनि जोगा भोगाने * सिगरे नेगी लिये बुलाय ॥
मड़वा गड़वायो आँगन में * सखियाँ करैं मंगला चार ॥
पंडित बेद उचारन लागे * ब्याह की बेदी लई बनाय ॥
करी सलाहैं नैपाली ने * सब लरिकन को लेउ बुलाय॥
दुइ हजार छत्री बुलवायो * सो कोठरिन में दियो छिपाय॥
भयो बुलौआ सुनि आल्हा को * सब मड़ये तर पहुँचे जाय ॥
फाटक बन्द भयो द्वारे को * तुरतै ब्याह होन तबलाग ॥
पहली भाँवरि के परतै खन * भोगा खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब आल्हा पर * मलिखे दीन्हो ढाल अड़ाय ॥
दुसरी भाँवरि के परतै खन * भोगा खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई जब आल्हा पर * ऊदनि दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तिसरी भाँवरि के घूमत खन * बिजया खैंचि लई तलवारि ॥
कीन्ही चोट जबहि आल्हा के * ढेबा ले गयो चोट बचाय ॥
घाव न आयो कछु आल्हा के * दहिने भई शारदा माय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

चौथे भाँवरि के परते खन * राजा जादू लियो उठाय ॥
जादू डारि दियो सबही पर * सबके होश बन्द होइजाय ॥
सोनवाँ सोच करै अपने मन * अब सब जैहैं काम नशाय ॥
बीर महमदा वाली पुरिया * सो सोनवाँ ने दियो चलाय ॥
भई लड़ाई तब जादू की * भाँवरि फिरे बनाफर राय ॥
बोली सोनवाँ बघऊदान ते * अबहीं बिदा लेव करवाय ॥
सुनते ऊदनि रुपना बोलेउ * भैया सुनो हमारी बात ॥
पलकी लावौ दरवाजे ते * अबहीं बिदा लेयँ करवाय ॥
सुनते रुपना गयो द्वारे पर * तुरत पालकी लयो लिवाय ॥
सोनवाँ बैठिगई पलकी में * राजा हल्ला दियो कराय ॥
जान न पावैं महुबे वाले * सबके शीश लेउ कटवाय ॥
क्षत्री निकरि परे कोठरिन ते * अपने खैंचि खैंचि तलवारि ॥
बहुत लड़ाई भइ आँगन में * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * बहुतक क्षत्री दियो गिराय ॥
बहुतक भागि गये समुहें ते * अपने डारि डारि हथियार ॥
जोगा भोगा औ बिजया को * मुश्कें बाँधि लई तत्काल ॥
चली पालकी रनि सोनवाँ की * तीनों भैया बढ़े अगार ॥
धावा करि दियो नैपाली ने * अपनो लश्कर संग लेवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने * खट २ चलन लगी तलवारि ॥
आठो शूर महोबे वाले * तहँ पर कठिन करी तलवारि ॥
सबके पीछे आल्हा रहिगये * ऊपर परी गुर्जकी मारु ॥
पहुँचे नैपाली आल्हा पै * अपनी जादू दई चलाय ॥
कैद कराय लियो आल्हा को * औ क्षत्रिन ते कही सुनाय ॥
हाथ चलैहो ना आल्हा पर * तीनों लड़िका बँधे हमार ॥
आल्है बाँधि लियो बदले में * चुंगल दहक देउ दरवाय ॥
ऐसे दहक परे आल्हा तब * अब लश्कर को सुनो हवाल ॥
ऊदनि बोले नर मलिखे ते * दादा करिहौ कौन उपाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पता नहीं है कहुँ आल्हा को * ताको अब कछु करो उपाय ॥
भयो बुलौआ तब ढेवा को * भैया सगुन देउ बतलाय ॥
आल्हा लश्कर में नाहीं हैं * सोकहँ मिलिहैं देउ बताय ॥
खोलिके पत्रा ढेवा देखे * औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
आल्हे बाँधेउ नैपाली ने * चुंगुल दहक दियो डखाय ।
जाय छुड़ावो सौदागर बनि * अपने घोड़ा लेउ सजाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदनि ने * तब सोनवाँ ते कही सुनाय ॥
बाप तुम्हारे गंगा करिके * फिरि घटिकरी हमारे साथ ॥
बोली सोनवां तब ऊदनि ते * हमहूँ चलैं तुम्हारे साथ ॥
घोड़ा करिलिया को सजवाओ * औ सजि लेउ बेंदुला घ्वार ॥
खोज लगे हैं हम बालम को * तुम्हरो काम सिद्धि होइजाय॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो * ऊदनि फाँदि भये असवार ॥
घोड़ा करेलिया कोतल लैके * संगे सोनवाँ लियो लेवाय ॥
जाय पहूँचे नैनागढ़ में * औ मालिन घर करो मुकाम ॥
सोनवाँ बोली त्यहि मालिनते * पोहपा सुनो हमारी बात ॥
हाल हमारो कोउ जाने ना * पहुँचो राजद्वार में जाय ॥
देखि कै आवो तुम बालम को * हमको खबरि सुनावो आय ॥
बोली मालिन रनि सोनवाँ ते * अबही तुमहिं देउँ बतलाय ॥
शीश महलमें आल्हा मिलिहैं * पहुँचो गूजरि रूप बनाय ॥
इतनी सुनतै रनि सोनवाँ ने * गूजरि रूप धरो तत्काल ॥
धरी दहेड़ी तब माथे पर * औ महलन में पहुँची जाय ॥
सूरति देखी जब गूजरि की * तब आल्हाने कही सुनाय ॥
बहुत पियारी हमको लागो * दहीकी मोल देउ बतलाय ।
बोली सोनवाँ तब आल्हा ते * गढ़ चित्तौर है देश हमार ॥
मोहन राजा की बेटी हौं * तुम्हरो कैद लिहौं छोड़वाय ॥
देउ निशानी तुम हमको कछु * आय छोड़ैहैं बाप हमार ॥
इतनी सुनतै काढ़ि अँगूठा * सो सोनवाँ को दइ पकराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

पहिरिमुदरिया सोनवाँ चलिभई * औ मालिनघर पहुँची जाय ॥
बोली सोनवाँ बघ ऊदन ते * देवर सुनो हमारी बात ॥
जल्दी पहुँचो शीश महल में * दोनों घोड़ा साथ लिवाय ॥
ऊदनि चलिभये सौदागर बनि * शीश महलपै पहुँचे जाय ॥
जबहीं पहुँचे दरवाजे पर * दरवानी ने कही सुनाय ॥
कौन देशते तुम आये हो * यहँ पर कौन तुम्हारो काज ॥
बोले ऊदनि दरवानी ते * गढ़ काबुल है देश हमार ॥
घोड़ा लाये हैं बेचन को * राजै खबरि सुनावो जाय ॥
गयो दरवानी तब भीतर को * राजै खबरि सुनाई आय ॥
राजा आये दरवाजे पर * ऊदनि करी बन्दगी आय ॥
देखी सूरति जब घोड़न की * राजा मोहि २ रहे जाय ॥
ऊदनि बोले तब राजा ते * औ महराज गरीब नेवाज ॥
चाल देखिके इन घोड़न की * तबही कीमत देउ चुकाय ॥
इतनी सुनिकै नैपाली ने * बहुतक क्षत्री लियो बुलाय ॥
चाल दिखाय देउ घोड़न को * तब क्षत्रिन ने दियो जवाब ॥
बहुतै चंचल ये घोड़ा हैं * हमरे फेरन के हैं नाहिं ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * राजा सुनो हमारी बात ॥
बड़े चढ़ैया हैं दिल्ली के * या महुबे के राज कुमार ॥
होय जो क्षत्री इन जोगा को * सो घोड़ा को दिहै फिराय ॥
इतनी सुनतै नैपाली ने * आल्हा तुरत लियो बुलवाय ॥
चाल दिखाय देव घोड़न को * तुम्हरो कैद माफ होइजाय ॥
देखि इशारा बघऊदनि को * आल्हा बहुत खुशी होइजाय ॥
कूद बलेगा पर चढ़ि बैठे * औ तँबुअन की पकरी राह ॥
चारि घरीके तब अरसा मा * तबुअन बीच पहुँचे जाय ॥
सुनी खबरिया रनि सोनवाँ ने * तँबुअन गये बनाफर राय ॥
कूच कराय दियो जल्दी ते * औ लश्कर में पहुँची जाय ॥
जोगा भोगा औ विजया को * तुरते मुश्क दई खोलवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धीरज देके उन तीनों के * आल्हा बहुत कीन सन्मान ॥
बहुत खुशी होय जोगा भोगा * बिजया ठाकुर करी सलाम ॥
तीनों चलिभये नैनागढ़ को * पहुँचो चारि घरी में जाय ॥
हाल सुनायो नैपाली को * कलहा दस्सराज के लाल ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * सातो भाँवरि लई डराय ॥
शूर प्रगट भये हैं महुबे में * क्यों ना राज्य करैं परिमाल ॥
राम बनावैं तो बनि जावै * बिगरी बनत २ बन जाय ॥
हियाँ कि बातैं तो हियँ छाड़ो * अब आल्हा को सुनो हवाल ॥
आल्हा बोले बघऊदनि ते * भैया कूच देउ करवाय ॥
आज्ञा सुनिकै उदयसिंह ने * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
डेरा उखरि गये धूरे ते * जीतिको डंका दियो बजाय ॥
धावा करिके सातरोज में * महुबो धुरो दबायो जाय ॥
रोज आठवें मदन ताल पर * सबने डेरा दियो डराय ॥
फेटें छुटिगईं रजपूतन की * महुबे खबर दई पहुँचाय ॥
रुपना बारी महुबे आयो * दरवाजे पर पहुँचो जाय ॥
ठाढ़ी मल्हना तहँ ड्योढ़ी पर * हेरे बाट लरिकवन क्यार ॥
तौलो रुपना दाखिल होइगयो * हाथ जोरिके कही सुनाय ॥
कठिन लड़ाई भै नैनागढ़ * भारी बही रक्तकी धार ॥
जंग जीतिके सब लरिका ते * सातों भाँवर लई डराय ॥
कामतो बनिगयो नैनागढ़ में * माता सब परताप तुम्हार ॥
बिदा कराय लई सोनवाँ को * संगै डोला दियो फँदाय ॥
आई बरात है मदन तालपर * आगे खबरि दई पहुँचाय ॥
इतनी सुनिकै रानी मल्हना * मनमें बहुत खुशी होइजाय ॥
खबरि फैलिगई रंगमहल में * आये ब्याहि बनाफर राय ॥
करी तयारी रानी मल्हना * सखियाँ करैं मंगला चार ॥
उनही पायन रुपना लौटो * औ बरात में पहुँचो जाय ॥
खबरि सुनाई रंगमहल की * महलन होत मंगला चार ॥
इतनी सुनतै बघऊदनि ने * चूड़ामनि को लियो बुलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

साइत देखो घर जैबे की * अब पल २ पर होत अज्यार ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले * अबहीं डोला देउ पठाय ॥
साइत नीकी है जैबे की * अबना राखो देर लगाय ॥
भई तयारी सुनिआल्हा की * पालकी साथ सोनवँदे क्यार ॥
आई पालकी रनि सोनवाँ की * हाथी खड़ा बनाफर क्यार ॥
करी तयारी रनि मल्हना ने * देवै ब्रह्मा लियो बुलाय ॥
साजि आरती मल्हना रानी * चौमुख दियना धरो बनाय ॥
बारह रानी परिमाले की * सो लै थार पहूँची आय ॥
भयो बुलौआ तब आल्हा को * संगै चली सोनवँदे रानि ॥
परछिन कीन्ही रनि मल्हना ने * ऊपर आरति लई उतारि ॥
सोनवाँ आल्हा को सँग लैके * सो महलन में राखेउ जाय ॥
आल्हा पाँव छुये मल्हना के * औ माथे में लिये लगाय ॥
देवै ब्रह्माके पद छुइके * सबके चरन छुये मनलाय ॥
बजी बधाई गढ़ महुबे में * घर २ भयो मंगला चार ॥
सोनवाँ रानीने मल्हना के * हितते चरण छुये मनलाय ॥
भेंट में दीन्हीं कर कंगन यक * मल्हना दियो नौलखा हार ॥
मुख दिखराई में रानिन सब * बहु आभूषण दियो उतारि ॥
परजा झगरैं गढ़ महुबे के * सबको मल्हना दियो इनाम ॥
ऊदनि पहुँचि गये लश्कर में * सबको लिखतैं दई बँटाय ॥
दगी सलामी गढ़ महुबे में * आये जीति बनाफर राय ॥
आदर करिके सब राजन को * ऊदनि बिदा दई करवाय ॥
जितने राजा आए बराती * अपने देश पहूँचे जाय ॥
ऐसे ब्याह भयो आल्हा को * सोहम लिखिकै दियो सुनाय ॥
साँच झूठ परमेश्वर जाने * पै हम साँची लिखी बनाय ॥
ब्याह सुनै हैं अब मलिखे को * यारो सुनियो कान लगाय ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * सीता राम क्यार धरि ध्यान ॥
समय २ पर आल्हा गावो * नित उठि लेउ नाम भगवान ॥

॥ नैनागढ़ की लड़ाई समाप्त ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथपथरीगढ़ (कसौंदी) की लड़ाई ॥

* मलिखान का ब्याह *

दो०—भोला नाथ मनाय उर, धारि हिये घनश्याम।
ब्याह लिखौं मलिखान को, जो सहाय सियराम ॥ १ ॥

* छन्द—आल्हा *

इतनी बेरिया अब क्या गैये * शारद कहिके लीजे नाम ॥
आदि भवानी के गुण गैये * जाते होय सिद्ध सब काम ॥
मात सरस्वति को सुमिरन करि * लै बजरंग बली को नाम ॥
बीर पँवारो मैं गावत हौं * होउ सहाय राम बलधाम ॥
पथरी गढ़ औ बिसहिन कहिये * तिसरी कोट कसौंदी नाम ॥
तीनि नाम हैं एक नगर के * ब्याहे तहाँ बीर मलिखान ॥
तहको राजा गजराजा हैं * शंका करे कालकी नाहिं ॥
श्यामा भगतिन गजराजा घर * जो जादू में बुरी बलाय ॥
घोड़ा अँगिनिया गजराजा के * जो फौजन को देय भगाय ॥
गजमोतिन बेटी राजा की * जाको रूप न बरनो जाय ॥
सो है चन्द्रमुखी मृगनैनी * शोभा अंग अंग रहिजाय ॥
बारह वर्ष केरि गजमोतिनि * नित सखियन सँग खेलन जाय॥
यक दिन खेलन हित सखियनसँग * फुल बगिया में पहुँची जाय ॥
एक सखी उनमें ते बोली * बेटी सुनो बिसेने क्यार ॥
तुम हौ बेटी गजराजा की * है परतापी बाप तुम्हार ॥
बहुत पियारी हौ माता की * तुम्हरो कीन्ही नाहिं बिवाह ॥
तुम्हरे सँगकी जे सखियाँ हैं * ब्याही सबै गईं ससुरारि ॥
क्या धनहीने गजराजा भये * या कुल घट बिसने क्यार ॥
इतनी बात सुनी गजमोतिनि * मनमें बहुत गई खिसियाय ॥
संग छोड़िदियो सब सखियन को * औ माताढिग पहुँची जाय ॥
आवत देखी जब माता ने * बेटिहिं लीन्हीं कंठ लगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

देखि अनमनी गजमोतिनि को * तब माता ने कही सुनाय ॥
काहे बेटी तुम अनिमनि हो * सो सब हाऊ देउ बतलाय ॥
बोली गजमोतिन माता ते * माता सुनो हमारी बात ॥
संग सहेली जो हमरी हैं * हम पर करें हँसौआ आय ॥
क्या कुलहीने बाप हमारे * जो हमरो नहिं करत विवाह ॥
इतनी बात सुनी माता ने * मनमें सोचि २ रहि जाय ।
दियो दिलासा तब बेटी को * अबही टीका दिहौं पठाय ॥
राजा आये रंग महल में * तब रानी ने कही सुनाय ॥
बारह वर्ष की बेटी होइ गइ * क्यों नाहीं कहुँ करो विवाह ॥
टीका भेजि देउ बेटी को * इतनी मानौ बात हमारि ॥
इतनी सुनिकै राजा चलि भये * औ दरबार पहुँचे जाय ॥
सूरज बेटी को बुलवायो * चारों नेगी लिये बुलाय ॥
टीका बेटी को लै जावो * कोहु राजा के देउ चढ़ाय ॥
एक न जैयो नगर महोबे * जहँ पर बसैं बनाफर राय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * कोइ न पिये घड़ा की पानि ॥
दागु लागि हैं रजपूती में * बुड़ि है सात साखि को नाम ॥
इतनी कहिकै गजराजा ने * सब सामान लियो मँगवाय ॥
पाँच पालकी नब्बे गजरथ * अच्छे घोड़ा एक हजार ॥
साल दुशाला मोहन माला * चीरा कलँगी दई सौंपाय ॥
थार मँगायो यक सोने को * कीमखाब के थान मगाय ॥
तोड़ा लैके दुइ मोहरन के * सोऊ थार में दियो धराय ॥
टीका लैके तीनि लाख को * सो नेगिन को दिये गहाय ॥
टीका लैके नेगी चलि भये * सूरज बेटा संग लिवाय ॥
करी बन्दगी गजराजा को * औ दिल्ली की पकरी राह ॥
सात रोज मारग में बीते * तब दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
राति बसेरा करि बागन में * भोरहिं करन तयारी लाग ॥
तीनि घरीको अरसो गुजरो * औ फाटक पर पहुँचो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोला दरबानी सूरज ते * अपनो हाल कहो समुझाय ॥
कहाँते आये औ कहँ जैहो * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
यह सुनि सूरज बोलन लागे * राजै खबरि देउ पहुँचाय ॥
पथरी गढ़ते सूरज आये * गजराजा के राजकुमार ॥
टीका लाये हैं बहिनी को * सो टीका को लेउ चढ़ाय ॥
उनहीं पायन गयो दरबानी * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
भयो बुलौवा तब सूरज को * सो दरबार पहूँचे जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * पाती गही दई चलाय ॥
पाती बाँची पृथीराज ने * तुरते पाती दइ लौटाय ॥
ब्याहु न करिहौं हम पथरी गढ़ * ना हम फौज कटैहैं जाय ॥
ज्वाब पायके सूरज चलि भये * औ कनउज में पहुँचे जाय ॥
लगी कचहरी जहँ जैचँद की * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
पाती दीन्ही सूरज मलने * जयचंद पाती बाचन लाग ॥
पाती फेरगई जयचँद ने * ना बिसहिन में रचैं बिवाह ॥
कठिन मवासी कोट कसौंदी * जहँ पर तपै बिसेने राय ॥
श्यामा भगतिन जादू फेंके * लश्कर सुन्नसान होइ जाय ॥
फौज हमारो ना भारू है * ना कुपियारो पुत्र हमार ॥
पाती लैके सूरज लौटे * औ उरई की पकरी राह ॥
भेंट होइ गइ बघ ऊदनि ते * ऊदनि खेलन गये शिकार ॥
राह चलन्ते सूरज देखे * ऊदनि तुरत लियो पहिचान ॥
हँसिके ऊदन पूछन लागे * ठाकुर हाल देउ बतलाय ॥
कौन कामको तुम आये हौ * साँची हाल कहौ समुझाय ॥
करो बहाना तब सूरज ने * आये करन गंग असनान ॥
बोले ऊदनि तब सूरज ते * चारो नेगी संग तुम्हार ॥
बात बतावौ तुम साँची अब * नाहक बात बनावत आप ॥
यह सुनि सूरज बोलन लागे * टीकालिये बहिनि को जात ॥
देश २ में हम फिरि आये * टीका कोऊ कबूलै नाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अब हम जैहै गढ़ उरई को * जहँ पर बसैं महिल परिहार ॥
इतनी सुनि के ऊदनि बोले * सूरज सुनो हमारी बात ॥
लरिका तुमको हम बतलावैं * सो तुम टीका देउ चढ़ाय ॥
बेटा कहियो बच्छराज के * जिनके नाम बीर मलिखान ॥
टिका चढ़ावो तुम महुबे में * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
तापर ज्वाब दियो सूरज ने * ऊदनि अकिल गई तुम्हार ॥
हुक्म नहीं है गजराजा को * ओछी जाति बनाफरराय ॥
नगर महोबे हम ना जैहैं * हटको हमहिं बिसेने राय ॥
इतनी बात सुनी सूरज की * ऊदनि अग्निज्वाल होइजाय ॥
चन्द्र वंश के चन्देले हैं * ना कुलहीन रजा परिमाल ॥
खोटी बातें क्यों बोलत हो * हमको जानत सकल जहान ॥
आल्हा व्याहे नैना गढ़ में * है नैपाली ससुर हमार ॥
अब नाही ना मुखते कहियो * टीका महुबे देउँ चढ़ाय ॥
बात हमारी सूरज मानो * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
यह सुनि सूरज सोचन लागे * टीका महुबे देउ चढ़ाय ॥
बिना चढ़ाये जो हम जैहैं * तौहू बात बनैगो नाहिं ॥
व्याह तो करना है काहु घर * देखें नगर महोबा जाय ॥
चलिभये सूरज तब ऊदनि संग * पहुँचे नगर महोबा जाय ॥
शोभा देखी गढ़ महुबे की * सूरज खुशी भये मनमाहिं ॥
लगी कचहरी परिमालै की * भस्माभून लाग दरबार ॥
ताल्हा सैयद बनरस वाले * आल्हा और बीर मलिखान ॥
ब्रह्मा ढेवा सुलखे बैठे * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
मोढ़ाके सँग मोढ़ा रगड़े * ठिहुना रगड़ि रगड़ि रहि जाय ॥
ऊदनि पहुँचिगये सूरज सँग * राजै करी बन्दगी जाय ॥
करी बन्दगी सूरज मलने * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची * औ गद्दीतर लई दबाय ॥
बोले आल्हा तब राजा ते * दादा हाल देउ बतलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कौन देशकी यह पाती है * काहे पाती लई दबाय ॥
बोले राजा सुनि आल्हा ते * बेटा सुनौ हमारी बात ॥
यह है चिट्ठी गढ़ बिसहिनको * गज राजा ने दई पठाय ॥
टीका आयो है बिसहिन ते * को बिसहिन में करै विवाह ॥
बात हमारी बेटा मानौ * टीका तुरत देउ लौटाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * दादा कहँ है ध्यान तुम्हार ॥
दतिया मारि उड़ैसा मागे * बाजी सेतबंद लौ टाप ॥
अटक पार लौ झंड़ा गाड़ो * जीते खुरासान गुजरात ॥
धुर दक्खिनते औ काबुललग * बाजी टाप बेंदुला क्यार ॥
घरमें आयो टीका फेरें * तो रजपूती जाय नशाय ॥
तुमहिं हँसौआ को डरनाहीं * तुमको जानत सकलजहान ॥
टीका लौटन को नाहीं है * चाहे प्राण रहे की जाय ॥
ब्याह रचाय लेव मलिखे को * टीका तुरत लेउ चढ़वाय ॥
इतनी सुनिकै राजा बोले * औ ढेबाते कही सुनाय ॥
शगुन बताय देव जल्दी ते * ढेबा शगुन बिचारन लाग ॥
खोलि पतरा ढेबा देखेउ * औ राजाते लगेउ बखान ॥
काम तुम्हारो पूरन होइहैं * अबही टीका लेव चढ़ाय ॥
इतनी सुनतै परिमालै ने * अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
करौ तयारी रंग महल में * टीका चढ़े बीर मलिखान ॥
खबरि पहुँचिगई रंगमहल में * मल्हना बहुत खुशी होइजाय ॥
करी तयारी रनि मल्हना ने * लागे होन मंगलाचार ॥
आँगन लिपवायो गोबरते * मोतिन चौक दियो पुरवाय ॥
कलश धराय दियो सोनेको * चन्दन चौकी दई डराय ॥
देवै ब्रह्मा दोनों आई * पंडित वेद उचारन लाग ॥
भयो बुलौआ तब सूरज को * बैठे चौक बीर मलिखान ॥
पूजा होनलगी गणपति की * शोभा कछु कही ना जाय ॥
पग परछाले तब सूरजने * माथे रुचना दियो लगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बीरा दीन्ही सूरजमल ने * चाभ्यो तुरत बीर मलिखान ॥
सोने चाँदी के गहने लै * सब नेगिनको दियो पहिराय ॥
ऊदनि पहुँचे रंगमहल में * सोने के डब्बा लाये उठाय ॥
चारो नेगी जो सूरज के * तिनको गहना दियो पहिराय ॥
गहना बचिगयो जो डब्बा में * सो नेगिनको दियो पकराय ॥
बाकी नेगी जो बिसहिन को * तिनको गहना दियो बँधाय ॥
यह गति देखी जब सूरज ने * मनमें खुशी भये सुखपाय ॥
बोले सूरजमल पंडित ते * ब्याहकि साइत देउ बताय ॥
साइति देखी चूड़ामणि ने * माघ महीना दियो बताय ॥
शुक्लपक्ष तेरस तिथि नीकी * होवै ब्याह बीर मलिखान ॥
सुनिके साइति सूरज चलिभये * औ बिसहिनि की पकरी राह ॥
सुनी खबरि जब यह माहिल ने * टीका चढ़ी बीर मलिखान ॥
लिल्ली घोड़ी को मँगवायो * तापर फाँदि भयो असवार ॥
राह पकरि लइ पथरी गढ़की * पहुँचे आठ दिनामें जाय ॥
जहाँ कचहरी गजराजा की * पहुँचे तहाँ महिल परिहार ॥
उतरि के लिल्ली ते भुइ आये * घोड़ी थामि लई थनवारि ॥
करी बन्दगी गजराजा को * तब राजाकी परी निगाह ॥
आवो आवो उरई वाले * ऊँची चौकी दई डराय ॥
हाल बताय देउ उरई को * अपनो कुशल देउ बतलाय ॥
यहसुनि माहिल बोलन लागे * तुम सुनि लेउ बिसेनाराय ॥
कुशल क्षेम है गढ़ उरई में * बैठे राज करो महराज ॥
एक बात अनहोनी होगई * सो सुनि लेउ बिसेनेराय ॥
टीका चढ़गयो गढ़ महुबे में * सूरज मलने दियो चढ़ाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * कोइ न पिये घड़ाको पानि ॥
बात होति रहै गजराजा ते * तौलो सूरज पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी जब सूरज ने * तिनते राजा कही सुनाय ॥
कहाँ चढ़ायो तुम टीका को * बेटा हाल देउ बतलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले सूरज तब राजा ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
टीका चढ़ायो हम महुबे में * जहँ परिमाल चन्दसरदार ॥
बोले राजा तब सूरज ते * बेटा अकिल गई तुम्हार ॥
कही हमारी तुम ना मानी * जल्दी टीका लेउ फिराय ॥
ब्याहजो होइहैं गढ़ महुबे में * तो रजपूती जाय नशाय ॥
यहसुनि सूरज बोलन लागे * ददुआ हाल देउ बतलाय ॥
देश देशमें हम फिरि आये * कोऊ टीका चढ़ायो नाहिं ॥
चारि कोस को फेरु खाय के * हम उरई की पकरी राह ॥
राह चलंते ऊदनि मिलिगये * पूछन लागे हाल हवाल ॥
करो बहाना हम बहुतेरा * ऊदनि जानिगये सब हाल ॥
टीका चढ़वायो ऊदनि ने * टीका अब फिरिबे को नाहिं ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबे के * दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
जबहीं ब्याहन बिसहिन आवैं * तबहीं लीजो शीश कटाय ॥
हियाँकि बातैं तो हियँ छाड़ो * अब आगेकी सुनो हवाल ॥
माहिल लौटि परे उरई को * पहुँचे आठ रोज में आय ॥
लाग महीना माघ मास को * महुबे होन तयारी लाग ॥
न्योता भेज्यो सब राजन को * राजा दस्सराज के लाल ॥
रूपन राजा सिरउँज वाले * औ जयचन्द कनौजी राय ॥
न्योता भेज्यो नैनागढ़ में * राजा नैपाली दरबार ॥
न्योता भेज्यो गढ़ दिल्ली को * जहँ पर बसैं बीर चौहान ॥
न्योता भेज्यो गढ़ उरई को * जहँपर बसैं महिल परिहार ॥
न्योता भेज्यो बौरी गढ़ में * राजा बीर साह दरबार ॥
न्योता भेजिदियो पत्यउज को * जहँपर राजा मदन गोपाल ॥
न्योता पहुँचा जिन राजन को * सो महुबे में पहुँचे आय ॥
लश्कर परिगया सब बागन में * झंडन रही लालरी छाय ॥
कोऊ परिगयो कनवाँ खेरे * कोऊ खजुहा गढ़ मैदान ॥
कोऊ परिगयो मदन तालपर * कोउ बैरागि तालपर आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घोड़ा बेंदुला पर ऊदनि चढ़ि * सब राजन को मिले अगार ॥
आदर भाव करो सबही को * फिरि महुबे में पहुँचे आय ॥
समाचार राजा ते कहिके * अपनी करन तयारी लाग ॥
बोलि नगरची को बीरा दै * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
डंका बाजे गढ़ महुबे में * लश्कर साज होय तैयार ॥
बोलि दरोगा तोपन वालो * मोतिन माला दियो इनाम ॥
बड़ि बड़ि तोपन को सजवाओ * औ आगे को देउ जोताय ॥
बोलि दरोगा घोड़न वालो * चीरा कलँगी दियो इनाम ॥
बड़े बड़े घोड़न को सजवाओ * औ बरात को होउ तयार ॥
जितने घोड़ा सुघर चाल के * सो सब साजि करो तैयार ॥
जीन सोनहुले धरि घोड़न पर * रेशम तंग देउ कसवाय ॥
पूँछ रँगाय देउ केसरि ते * औ मेंहदी ते सुम्म रँगाय ॥
डारि हुमेलें देउ कलन पर * माथे कलँगी देउ धराय ॥
बोलि दरोगा हाथिन वालो * मोहन माला दियो गहाय ॥
बड़ी राशि के जे हाथी हैं * सो बरात को लेउ सजाय ॥
करो तयारी तुम जल्दी ते * दीन्हो हुक्म सूर सरदार ॥
डंका बाज्यो गढ़ महुबे में * छत्री सबै भये हुशियार ॥
बोले ऊदनि सब छत्रिन ते * यारो सुनो हमारी बात ॥
जिनहिं पियारी घर तिरिया हैं * सो सब तलब लेउ घरजाय ॥
जिनहिं पियारी परम भगौती * सो सब चलो हमारे साथ ॥
यहु दिन कहिबे को रहि जैहैं * होइहैं ब्याह बीर मलिखान ॥
ब्याह रचायो पथरी गढ़ में * चलिहैं रात दिना तलवारि ॥
कठिन मोरचा है बिसहिनिका * है गुजरात देश सरनाम ॥
जितने छत्रि रहे तखरिहा * सो सब सजन लगे तत्काल ॥
जितने कायर रहे लश्कर में * सो सब घरको भये तयार ॥
ऊदनि लौटे रंग महल को * औ मल्हना ते कही सुनाय ॥
करो तयारी अब माता तुम * सिगरे नेग करो तत्काल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सखी बुलाई रनि मल्हना ने * महलन होय मंगला चार ॥
चौक पुराय दई आँगन में * चन्दन चौकी दई डराय ॥
पंडित बेद उचारन लागे * औ मलिखे को लियो बुलाय॥
चंदन चौकी पर बैठायो * तुरतै तेल दियो चढ़वाय ॥
झगरो नाऊ जब मल्हना ते * मल्हना पुरवा दियो इनाम ॥
करिके उबटन तब नाऊ ने * गंगा जलते दियो अन्हवाय ॥
भयो बोलौआ फिरि दरजी के * ताने कपड़ा दियो पहिराय ॥
मौर बाँधिके रनि मल्हना ने * सब को नेग दियो मँगवाय ॥
आई पलकी दरवाजे पर * बैठे जाय बीर मलिखान ॥
चली पालकी दरवाजे ते * औ कुँअटा पर पहुँची जाय ॥
देवे ब्रह्मा संगै चलि भइँ * आगे चली मल्हनदे रानि ॥
बारह रानी चन्देले की * सोऊ साथ भई तैयार ॥
मोहन लरिका बीरसाह को * लीन्हें गोद बीर मलिखान ॥
भाँवर परन लगी कुँअटा पर * ब्रह्मा रही पाँव लटकाय ॥
पहिली भाँवरि के पग धरते * तब धरि बहियाँ लियो उठाय ॥
बाग लगैहैं तुम्हरे नाम को * माता धीर धरौ मन माहिं ॥
चरण लागि कै सब काहू के * मलिखे माथे लिये लगाय ॥
हाथ फेरि दियो रनि मल्हना ने * जुग २ जिओ लड़ैते लाल ॥
मलिखे बैठि गये पलकी में * मल्हना रंग महल को जाय ॥
देवे ब्रह्मा बारह रानी * सब मिलिगईं महल यकसाथ॥
मलिखे पहुँचि गये लश्कर में * लश्कर सजा महोबे क्यार ॥
हथि पचशावद त्यार करायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो * ऊदनि फाँदि भये असवार ॥
घोड़ा मनोरथा पर ढेबा हैं * घोड़ा हिरौजिनिपर सुलखान॥
घोड़ा हरनागर सजवायो * तापर ब्रह्मानन्द सवार ॥
खुन खुन कोरी मदन गड़ेरिया * मन्ना गूजर भयो तयार ॥
जितने शूर हते महुबे के * सो बरात को भये तयार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घोड़ी कबुतरी नर मलिखे की * सोऊ कोतल चली अगार ॥
जितने भूप बराती आये * सो सब चले चित्त हरषाय ॥
राह पकरि लई पथरी गढ़ की * डंका होन ग्वाल में लाग ॥
आठ रोज मारग में बीते * बिसहिन आठ कोस रहिजाय ॥
डेरा डारे तब धूरे पर * ऊँचे तम्बू दिये लगाय ॥
फेटैं खुलिगईं रजपूतन की * छत्री करन रसोई लाग ॥
बोले ऊदनि तब आल्हा ते * अब पंडित को लेव बुलाय ॥
भयो बोलौआ चूड़ामणि को * पंडित साइत दई बताय ॥
ऐपनवारी तुम पठवाओ * तुम्हरो काम सिद्ध होजाय ॥
इतना सुनिके बघ ऊदनि ने * रुपना बारी लियो बुलाय ॥
ऐपनवारी तुम लै जाओ * तब रुपनाने दियो जवाब ॥
काठिन मारु है गढ़बिसहिन की * हमना शीश कटैहैं जाय ॥
बोले ऊदन तब रुपना ते * भैया कटि गयो ज्ञान तुम्हार ॥
तुमको नेगी हम समझैं ना * तुम तो भैया लगौ हमार ॥
यहुदिन कहिबे को रहि जैहैं * होइहैं ब्याह बीर मलिखान ॥
अबना हीनी तुम कहियो कछु * नहिं सबजैहैं काम नशाय ॥
बोलेउ रुपना तब ऊदन ते * घोड़ी कबुतरी देउ मँगाय ॥
ढाल मँगाय देउ जल्दी से * औ तरवार बीर मलिखान ॥
जो जो माँगेउ रुपना बारी * सो ऊदनिने दियो मँगाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठो * ऐपनवारी लई उठाय ॥
सब हथियार बाँधि रुपना ने * गढ़ बिसहिन की पकरी राह॥
चारि घरी केरे अरसा में * सो फाटक पर उतरो जाय ॥
बोल्यो दरबानी रुपना ते * सुनु परदेशी बचन हमार ॥
कौन देशमें घर तुम्हरो है * यहँ पर काह तुम्हारो काज ॥
तापर ज्वाब दियो रुपना ने * रूपन बारी नाम हमार ॥
हम रहवैया हैं महुबे के * ब्याहन आये बीर मलिखान॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * राजे खबरि सुनावौ जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

नेगु हमारो जल्दी भेजो * म्वहिं बरात को होत अब्यार ॥
बोला दरवानी रुपना ते * अपनी नेगु देउ बतलाय ॥
रुपना बोलेउ दरवानी ते * जल्दी खबरि देउ पहुँचाय ॥
नेगु हमारो यहै होत है * द्वारे कठिन चलै तलवारि ॥
इतनी सुनिके दरवानी ने * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
नेगी आयो है महुबे ते * माँगत खड़ा आपुनो नेगु ॥
ऐपनवारी लीन्हें ठाढ़ो * रुपना बारी नाम बताय ॥
नेगु बतावत है अपनो यह * द्वारे कठिन चले तलवारि ॥
इतनी सुनिके गजराजा ने * सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
हुक्म सुनाय दियो सुरज को * बेटा सुनो हमारी बात ॥
बारी आयो है महुबे ते * ताको लेउ जँजीरन बाँधि ॥
सूरज चलि भेय तब द्वारे को * तौलो रुपना पहुँचो आय ॥
करी बन्दगी गजराजा को * ऐपनवारी दई चलाय ॥
नेगु हमारो जल्दी दे देउ * हमको पल पल होत अब्यार ॥
गुस्सा होके गजराजा ने * तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
मूड़ काटि लेउ या बारी को * देखो कहूँ भागिना जाय ॥
इतनी सुनतै मानसिंह ने * तुरतै दीन्हीं गुर्ज चलाय ॥
घोड़ी कबुतरी दहिने होगई * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
भाला लैके तब रुपना ने * मानसिंह पर दियो चलाय ॥
धरती गिरगये मानसिंह जी * लाग्यो घाव शीश में आय ॥
नोक चलाई त्याहि भाला को * ऐपनवारी लई उठाय ॥
एड़ लगाई तब घोड़ी के * फाटक निकरि गयो बापार ॥
रुपनै घेरी दरवाजे पर * छत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
चली शिरोही तहँ रुपना पर * रुपना काठिन करै तलवारि ॥
तीनि घरी भरि चली शिरोही * रुपना लाल बरन होइ जाय ॥
कठिन लड़ाई भइ द्वारे पर * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
एड़ लगाय दियो घोड़ी के * औ बरात में पहुँचा आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आवत देखो जब रुपना को * ऊदनि गये सनाका खाय ॥
नेरे आय गयो रुपना जब * तब हँसि कही उदैयसिंहराय॥
कैसी गुजरी दरवाजे पर * कैसे लाल बरन दिखराउ ॥
घाउ आय गयो क्या देही में * सो सब हाल देउ बतलाय ॥
रुपना बोलेउ तब ऊदन ते * द्वारे बही रक्तकी धार ॥
हमै भगवती दाहिनि होगई * हमकरि आये काम तुम्हार ॥
मारि भगाया सब क्षत्रिन को * द्वारे बही रक्तकी धार ॥
यहगति देखी जब माहिल ने * लिल्ली घोड़ी भये सवार ॥
जाय पहुँचे गढ़ बिसहिन में * जहँ दरबार विसेना क्यार ॥
लिल्ली घोड़ीते भुइँ आये * घोड़ी थामि लई थनवार ॥
करी बन्दगी गजराजा को * माहिल रहिगयो माथ नवाय॥
नजरि बदलगई गजराजा की * औ माहिलते लगे बतान ॥
हाल बताय देउ अपनो तुम * औ उरईको कहो हवाल ॥
बोले माहिल गजराजा ते * राजा सुनो हमारी बात ॥
व्याह न करियो तुम मलिखेसंग * ओछी जात बनाफर राय ॥
व्याह जो होइहै गढ़ महुबे में * बुड़िहैं सात साखिका नाम ॥
दाग लगैहैं रजपूती में * कोऊ न पिये घड़ाका पानि ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * शंका करत कालकी नाहिं ॥
लड़े न जितिहौ तुम लरिकनते * कलहादेव कुँवरि के लाल ॥
ज्यहिकी लड़की नीकी देखें * जोरावरि ते करैं विवाह ॥
बात हमारी राजा मानो * तोहम तुमहिं देयँ बतलाय ॥
जाय टिकाओ पथरी गढ़में * जहाँ न गड़े मेंख भुइँ माँह ॥
विष घोरवाओ तुम शर्बतमें * सो जल्दी ते देउ पठाय ॥
पियतै क्षत्री सब मरि जैहैं * तुम्हरो काम सिद्ध होइ जाय॥
इतनी सुनके गजराजा ने * सूरज बेग लियो बुलाय ॥
भला बताई माहिल ठाकुर * हम सब मानों बात तुम्हारि॥
शरबत घोरवावौ जल्दी ते * अपनो हुकम दियो फरमाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह सुनि शरबतको घोरवायो * चारो नेगी संग लेवाय ॥
सूरज चलिभये गढ़बिसहिन ते * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
कहँपर तम्बू है आल्हा को * सो तुम हमें देउ बतलाय ॥
सूरज पूछो दरवानी ते * दरवानी ने दियो बताय ॥
सूरज पहुँचे जब तम्बू में * चारो नेगी संग लिवाय ॥
करी बन्दगी नुनिआल्हा को * औ शरबतको दियो धराय ॥
बोले सूरजमल आल्हा ते * पथरी गढ़को होउ तयार ॥
तहँ जनवासो तुम सबको है * अपने तम्बू देउ लगाय ॥
इतनी सुनतै मलिखे ठाकुर * बघऊदनि को संग लिवाय ॥
घन लै लीन्हो अपने करमें * ऊदनि मेखैं लई उठाय ॥
मेखैं गाड़ी पथरी गढ़ में * अपने तम्बू दिये तनाय ॥
बोले सूरज तब आल्हा ते * शरबत सबको देउ बँटाय ॥
इतनी सुनिके नुनिआल्हा ने * सोने कटोरा लियो मँगाय ॥
जबहीं शरबत आल्हा माँग्यो * सबुहें छींक भई ठहनाय ॥
भयो बुलौआ तब ढेवा को * भैया सगुन देउ बतलाय ॥
ढेवा बोलो तब आल्हा ते * शरबत सबै देउ फिकवाय ॥
जहर मिलायो यह शरबत है * दादा बचन करो परमान ॥
इतनी सुनिके बघऊदनि ने * अपनो कुत्ता लियो बुलाय ॥
थोरा शर्बत ऊदन लैके * सो कुत्ताको दियो पिलाय ॥
शरबत पियतै कुत्ता गिरिगयो * ऊदनि शरबत दियो फेंकाय ॥
मारि भगायो चारो नेगी * औ सूरजते कही सुनाय ॥
घटिहा राजाके लरिका हो * यह घटिकरी हमारे साथ ॥
लौटे सूरज तब बरात ते * औ भुन्नागढ़ पहुँचे जाय ॥
जहाँ कचहरी गजराजा की * सूरज नैके करी सलाम ॥
बोले सूरज गजराजा ते * दादा कछू कही ना जाय ॥
बड़े सगुनियाँ महुबे वाले * शरबत खंदक दियो फेंकाय ॥
मेखैं गाड़ि दियो पथरी गढ़ * औ नेगीको दियो भगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सूरज बात करन ना पाये * तौलो माहिल पहुँचे आय ॥
तब गजराजा पूछन लागे * अब तुम जतन देउ बतलाय ॥
बोले माहिल तब राजा ते * राजा बचन करो परमान ॥
लड़ै न जितिहौ तुम आल्हा ते * ताते करो अधीनी जाय ॥
विनती करिके लरिका लावौ * औ खंदक में देउ डराय ॥
इतनी सुनिके गजराजा ने * मोहरन तोड़ा लियो मँगाय ॥
कूच करायो गढ़ बिसहिन ते * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
करी अधीनी गजराजा ने * दीन्ही नजरि सामुहें जाय ॥
हाथ जोरि बोले गजराजा * हमरे कुला यही ब्योहार ॥
लरिका अकेला तुम भेजवावौ * सातौ भाँवरि देउँ डराय ॥
बोले मलिखे तब आल्हा ते * दादा कछु छल परे दिखाय ॥
ऊदनि बोले तब हुँअना पर * जो छल करिहैं साथ हमार ॥
गर्द कराय दिहौं बिसहिन को * मारौं राज्य भंग होइ जाय ॥
लई शिरोही तब मलिखे ने * औ चलिबे को भये तयार ॥
बोले गजराजा मलिखे ते * यक हथियार संग ना जाय ॥
देश हमारे यही रीति है * सो तुम सुनो बनाफर राय ॥
गंगाजल भरि कलश मँगायो * सो आल्हा ने दिये धराय ॥
जहर मिलायो शर्बत भेज्यो * ताते नाहिं रह्यो इतबार ॥
गंगा उठाई गज राजा ने * औ आल्हाते लगे बतान ॥
जोकोउ घाटकरै तुम्हरे सँग * ताको लौटि भगौती खाय ॥
इतनी सुनतै सुनि आल्हा ने * तुरत पालकी लई मँगाय ॥
मलिखे बैठि गये पलकी में * सो गजराजा चले लिवाय ॥
चारि घरीकी अरसा गुजरी * पलकी भीतर पहुँची जाय ॥
हुक्म दैदियो गजराजा ने * फाटक बन्दी देउ कराय ॥
हुक्म होतही फाटक लगिगये * अहनी ताले दिये डराय ॥
चौक चाँदनी पलकी पहुँची * तब छत्रीते कही सुनाय ॥
जान न पावैं महुबे वाले * याको शीस लेउ कटवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनिके सब क्षत्रिन ने * अपनो खैंचि लई तलवारि ॥
मलिखे स्वाचै अपने मनमें * इन घटिकरी हमारे साथ ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
बाँस निकारि लियो पलकी को * मलिखे दई बाँस की मारु ॥
मलिखे ठाकुर बाँसन मारे * क्षत्री रेन बेन होइ जायँ ॥
देखि हकीकत गजराजा तब * दोनों हाथ जोरि भे ठाढ ॥
देश हमारे यही रीति है * द्वारे चले कठिन तलवारि ॥
बोले मलिखे गजराजा ते * तुम छल करो हमारे साथ ॥
छलिकै हमको तुम लै आये * यहँ पर मार दई करवाय ॥
करी अधीनी फिर राजा ने * औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
रीति हमारे कुल ऐसी है * डंड बाँधिकै होय विवाह ॥
ऐसे कहके गंगा कीन्ही * औ मलिखेको लियो बँधाय ॥
चली पालकी नर मलिखेको * पहुँचो सिंह पँवरि पर जाय ॥
चन्दन खंभा जहँ गाड़ी रहे * तामें मलिखे दियो बँधाय ॥
हरे बाँस आये बगिया ते * बाँसन मार दई करवाय ॥
जामा पहिरे रहे देही में * सो सब टूक टूक होइ जाय ॥
बाँस उपटिगये तब पीठी में * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
बाँदी देख्यो सत खंडा ते * गजमोतिनिते कही सुनाय ॥
लरिका छलिकै यह लैआये * बाँसन मारु दई करवाय ॥
बाप तुम्हारे बैरी होइ गये * जो घटि करत तुम्हारे साथ ॥
जाय बरात में गंगा कीन्ही * लाये साथ बीर मलिखान ॥
इतनी सुनिके बेटी चलि भई * आई जहाँ बँधे मलिखान ॥
बोली बेटी गजराजा ते * बँधुवा कौन देशमें जाय ॥
काहे बाँसन मारु करावत * ददुआ हाल देउ बतलाय ॥
यह सुनि बोले गजराजा तब * यह है बँधुवा ऋणी हमार ॥
पैसा मारो सात बरसको * ताते दई बाँसकी मारु ॥
कंकन देखेउ जब हाथेमा * बेटी तुरत गई पहिचानि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोलन लागी गजमोतिन तब * दादा सुनौ हमारी बात ॥
ये तो स्वामी हमरे आहीं * तुमना करो सोचि यह काम ॥
मुश्कखोलि देउ मो रे बालमकी * ददुआ बार बार बलि जाऊँ ॥
बातें सुनि जब यह मलिखे ने * अपने मनमें गये लजाय ॥
गुस्सा आय गयो देही में * फरकी भुजा बीर मलिखान ॥
भुज बल मसके नरमलिखे ने * कड़ियाँ टूकटूक होइ जाय ॥
खंभउखारि लियो मलियागिरि * औ क्षत्रिनपै पहुँचे जाय ॥
खैंचि शिरोही क्षत्रिन लीन्हा * महलन कठिन चलै तलवारि ॥
मलिखे खंभा जेहिके मारैं * सो गिरिपरे भूमि में जाय ॥
क्षत्री भाग गये आगे ते * अकिले खड़े बीर मलिखान ॥
बोले राजा हाथ जोरि के * तुम समरत्थ बनाफर राय ॥
नेगु आपनी हमने पायो * अबही भाँवरि देउँ डराय ॥
खंभा धरिके मलयागिरि को * औ पलकी में बैठे जाय ॥
फिरिकै धोखा दे राजा ने * मलिखे को लइ दंड बँधाय ॥
दहक एक रहे जो द्वारे पर * तामें तुरतै दियो डराय ॥
यह गति देखी जब बाँदीने * गज मोतिन ते कही सुनाय ॥
बालम तुम्हरे खंदक डारे * ताको अब कछु करो उपाय ॥
बोली गज मोतिनि बाँदी ते * चलिके हमहिं देहु बललाय ॥
कौने खंदक में बालम हैं * यह सुनि बाँदी दियो जवाब ॥
शीश महलके पीछे खंदक * तेलिया नाम कहत संसार ॥
दिवसगुजरिगयाज्योंत्यों करिके * संझाकाल रह्यो नियराय ॥
आधी राति केर अमला में * गजमाँ भोजन कर तैयार ॥
सो धरवाय लिये थारी में * औ गंगा जल लियो धराय ॥
जाय पहूँची गजमोतिनि तब * जहँ पर पेर बीर मलिखान ॥
रेशम रस्सा लै गजमोतिनि * सो दाहक में दियो लटकाय ॥
बोली गज मोतिनि मलिखेते * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
जल्दी निकरौ तुम खंदकते * अपनी लाओ फौज सजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दादा हमरे बैरी हो गये * तुमको खंदक दियो डराय ॥
स्वामी भोजन मैं लाई हौं * सो तुम जेंइ लेउ ज्योनार ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * रानी सुनो हमारी बात ॥
घटिहा राजाकी बेटीहो * ज्यहिं घटिकरी हमरे साथ ॥
तुम क्यों आई हो दाहक पर * नाहक रूप दिखायो आय ॥
इतनी बात सुनी बेटी ने * तब मलिखेते लगी बतान ॥
हम व्रत कठिन किये तुम्हरोहित * करिहौं ब्याह तुम्हारे साथ ॥
नातरु क्वाँरी रहौं जन्म भरि * या मैं पेटु मारि मरि जाऊँ ॥
जल्दी निकरो अब स्वामी तुम * औ यह जेयँ लेउ ज्योनार ॥
बोले मलिखे तब रानी ते * रानी बात सुनौ धरि ध्यान ॥
तुम्हरे काढ़े जो हम निकरैं * तौ रजपूती जाय नशाय ॥
चोरी चोरा हम ना निकरैं * ना हम करैं चोरका काम ॥
क्वाँरे भोजन हमना करि हैं * नहिं रजपूती धर्म नशाय ॥
जौतुम रानी हमको चाहो * आल्हा खबरि देउ पहुँचाय ॥
यहसुनिचलिभइगजमोतिनतब * औ पत्थर को दियो सरकाय॥
आई गज मोतिनि महलन में * सत खंडा पर पहुँची जाय ॥
लैके कागद कलपी वाला * अपनो कलम दान लै हाथ ॥
पहिले लिखिके सरनामा को * फिरिअल्हा को लिखा सलाम॥
लिखी हकीकति गजमोतिन ने * तुम सुनि लेव बनाफर राय ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी * आकिलो भैया दियो पठाय ॥
हियँ छल कीन्ही बाप हमार * चुंगल दहक दीन डरवाय ॥
सुख की निदिया तुम सोवतहो * खंदक बालम परे हमार ॥
जल्दी आवो तुम बरात ते * औ भैयाको लेउ निकारि ॥
लिखी हकीकति गजमोतिनिने * अपनी मालिनि लई बुलाय ॥
करी अधीनी गज मोतिन ने * मालिन सुनो हमारी बात ॥
बिपति सतावै सब काहू को * मालिनि विपतिपरे संसार ॥
बिपती परि गै हैं हमपर यक * सो तुम कारज करौ हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चिट्ठी लै जावो बरात में * सो आल्हा को देउ गहाय ॥
मालिनि बोली गजमोतिन ते * बेटी सुनो हमारी बात ॥
फाटक बन्दी है बिसहिन में * कैसे जायँ बनाफर पास ॥
इतनी सुनिके बेटी बोली * तुमको जतन देंउ बतलाय ॥
करौ बहाना दरवानी ते * औयह कहियो बात बनाय ॥
हमहैं मालिन गजमोतिन को * बागिया फूल लेन को जायँ ॥
इतनी सुनिके मालिन चलि भइ * औ फाटकपै पहुँची जाय ॥
चिट्ठी लीन्ही गजमोतिन को * सो जूरा में लई छिपाय ॥
सूरति देखी जब मालिनि को * तब सूरजने कही सुनाय ॥
यहै खबरुआ है बरात को * तुरतै लूटि लेउ करवाय ॥
इतनी सुनतै छत्री झपटे * औ मालिनिको लूटन लाग ॥
काहू लूट्यो गरेको हरवा * काहु माला लई निकारि ॥
काहू लूट्यो मुदरी छल्ला * काहु कपड़ा लिये उतारि ॥
यह गति देखत मालिनि रोई * औ सूरजते कही सुनाय ॥
हमतो मालिनि गजमोतिन को * बागिया फूल लेनको जायँ ॥
अबहीं कहिहौं मैं बेटी ते * सूरज लूटि लई करवाय ॥
इतनी सुनिके सूरज सोचै * बहिनी दे हैं कठिन सराप ॥
सोचि समुझिके गहना फेर्‌यो * फाटक तुरत दियो खोलवाय ॥
तुमना कहियो गजमोतिन ते * की सूरज लइ लूटि कराय ॥
इतनी सुनिकै मालिनिचलिभइ * औ बरातमें पहुँची जाय ॥
जहँपर तम्बू है माहिल को * मालिनि तहाँ पहूँची जाय ॥
मालिनि आवत माहिल देखे * तब मालिनते पूछन लाग ॥
कौने तुमको यहँ भेज्यो है * सोतुम हमहिं देउ बतलाय ॥
मालिनि बोली तब माहिलते * आल्हे खबरि सुनै हैं जाय ॥
कौनसो तम्बू है आल्हा को * सो तुम जल्दी देउ बताय ॥
माहिल बोले तब मालिन ते * हमहीं आल्हा हैं सरनाम ॥
हाल बताय देउ मलिखे को * औ विवाहको कहौ हवाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खोलो जूरा तब मालिनि ने * तुरतै पाती दई गहाय ॥
पाती बाँची तब माहिल ने * मनमें बहुत खुशी होइजाय॥
लैके चाबुक माहिल राजा * तब मालिनको मारन लाग ॥
तुम ना कहियो यह काहूते * ऊभे परे बीर मलिखान ॥
जल्दी लौटिजाउ बिसहिन को * नाहीं दिहौं जानते मारि ॥
रोवत रोवत मालिनि चलिभै * तौलो मिले उदयसिंह राय ॥
ऊदनि बोले तब मालिनि ते * काहे बिलखि २ रहिजाउ ॥
हाल बताय देव जल्दी ते * तब मालिनने कही सुनाय ॥
आये महोबिया महुबे वाले * ब्याहनहेत बीर मलिखान ॥
छलिकै लरिका राजा लैगये * यहँ पर दंड दई बँधवाय ॥
मारु कराय दई बाँसन की * फिरि खंदकमें दिये डराय ॥
रोय २ पातीलिखि गजमोतिनि * लिखिकै हमको दई गहाय ॥
सो छिनवाय लई आल्हा ने * हमपर मारु दियो करवाय ॥
इतनी सुनिके ऊदनि जरिगये * औ मालिनते लगे बतान ॥
कौन सो तम्बूहै आल्हा को * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
लौटी मालिनि तब ऊदनि सँग * औ माहिलको दियो बताय ॥
देखौ ठाढ़े हैं आल्हा वे * इनहीं मारु दई करवाय ॥
बोले ऊदनि तब माहिल ते * मामा अकिल गई तुम्हारि ॥
काहे मालिनि को मारे तुम * काहे पाती लई छिनाय ॥
बात बनाई तब माहिल ने * औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
कछु अपराध नहीं हमरो है * भैया समुझिलेउ मनमाहिं ॥
मालिनि टेरत यह आवतिरहै * मलिखे ऊभे दिये डराय ॥
जोसुनि पावत कोउ बिसहिनको * पाती लेतो तुरत छड़ाय ॥
खबर पहुँचती ना आल्हा पै * तौना बनतो काम तुम्हार ॥
ताते पाती हमने छीनी * सो यह लेउ उदय सिंहराय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * मामा जाने कर्म तुम्हार ॥
लावौ पाती तुम जल्दी ते * हम सब लैहैं काम बनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पाती दीन्ही तब माहिल ने * ऊदनि लीन्ही हाथ पसारि ॥
लैके पाती तब माहिल ते * औ चलिभये उदैसिंह राय ॥
पहुँचे ऊदनि तब आल्हा ढिग * मालिन अपने संग लिवाय ॥
करो इशारा जब मालिन को * मालिन पाती दई गहाय ॥
खोलिकै पाती आल्हा बाँची * मनमें गये सनाका खाय ॥
ऊदनि बोले तब आल्हा ते * दादा हाल देउ बतलाय ॥
कैसी पाती यह आई है * काहे सोच ग्यो मनछाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदनि ते * भैया कछू कहीना जाय ॥
घटिया राजा गजराजा है * झूठी गंगा लई उठाय ॥
छलिके मलिखे को सँग लैके * बांसन मारु दई करवाय ॥
डंड बाँधिके नर मलिखे को * चुंगल दहक दीन डरवाय ॥
पाती भेजी गजमोतिन ने * औ मालिनको दियो पठाय॥
इतनी कहिके सुनि आल्हा ने * तुरतै गहना लियो मँगाय ॥
सो दै दीन्हों त्यहि मालिनको * औ यह कही बनाफर राय ॥
तुम कहिदीजो गजमोतिन ते * सातो भाँवरि लिहैं डराय ॥
धीरज राखो अपने मनमें * आवत साजि बनाफर राय ॥
चलिभइ मालिनि तब बरात ते * औ बिसहिनमें पहुँची जाय ॥
खबरि सुनाई गजमोतिन को * बेटी धीर धरो मन माहिं ॥
गहना दीन्हो मोहि आल्हा ने * औ यह कहा बनाफर राय ॥
तुमयह कहियो गजमोतिन ते * सातौ भाँवरि लिहैं डराय ॥
हियाँकि बातैं तो हियँ छाड़ो * अब आगेको सुनो हवाल ॥
बोले आल्हा बघ ऊदन ते * लश्कर तुरत लेउ सजवाय ॥
हुक्म पायके ऊदनि चलिभये * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
तुरत नगरची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजै नगारा हमरे दलमें * लश्कर साजि होय तैयार ॥
डंका बाज्यो तब लश्कर में * छत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तिसरे नगारा के बाजतही * क्षत्रिन धरे रकाबन पाँय ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगये * बाँके घोड़न के असवार ॥
चौथे डंकाके बाजत खन * लश्कर चला बनाफर क्यार ॥
ठाढ़ी करखा बोलत आवैं * घूमत आवै लाल निशान ॥
दबति अँधोरिया दलमें आवैं * हाहाकारी बीतत जाय ॥
एक हरकारा बदलत आयो * गज राजापै पहुँचो जाय ॥
हाथ जोरिकै बोलन लाग्यो * राजा सुनो हमारी बात ॥
लश्कर आयो है महुबे को * सो तुम खबरदार होइजाव ॥
बिसहिनि घेरि लियो आल्हाने * ताको जल्दी करो उपाय ॥
इतनी सुनतै गजराजा ने * सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
फिरि बुलवायो कान्तामल को * मानसिंहको लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो तिन तीनौं को * जल्दी फौज लेउ सजवाय ॥
जितने आये हैं महुबे के * सबके मूँड लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनिके तीनों चलिभये * औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
बोलि नगरची को बीरादै * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
डंका बाजै मेरे लश्कर में * जल्दी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा गढ़ बिसहिन में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लियो हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
लश्करचलिभये गढ़बिसहिनिको * डंका होन गोलमें लाग ॥
दोनों फौजन के अन्तर में * रहिगयो आठ खेत मैदान ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो सूरज ने * आगे जाय दई ललकार ॥
कौनसो क्षत्री चढ़ि आयो है * सो समुहें होय देइ जवाब ॥
ऊदनि बढ़ि आये आगे को * औ सूरजको दियो जवाब ॥
हम चढ़ि आये हैं महुबे से * हमरो नाम उदय सिंहराय ॥
घटिहा राजा के लरिका हौ * झूठी गंगा लई उठाय ॥
छलिकै लैगये नर मलिखे को * औ खंदकमें दियो डराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुम्हें मुनासिब यह नाहिं रहे * जो छल करो हमारे साथ ॥
भला आपनो जो अब चाहो * सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
जो ना मनिहौ कहा हमारो * मरिहौं राज्यभंग होइ जाय ॥
तख्त लूटिके गजराजा को * सब को मुश्कैं लिहौं बँधाय ॥
बातन बातन बतबढ़ होइगयो * औ बातन में बाढ़ी रारि ॥
गुस्सा होइ के सूरज बोले * मानसिंह ते कही सुनाय ॥
जान न पावैं महुबे वाले * सब की कटा देउ करवाय ॥
हल्ला होइ गयो सब लश्कर में * क्षत्रिन खैंचिलई तलवारि ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के * खट खट चलन लगी तलवारि॥
पैदल अभिरे गये पैदल संग * औ असवारनते असवार ॥
चारि घरी तहँ चली शिरोही * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
बड़े लड़ैयो महुबे वाले * दोनों हाथ करें तलवारि ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * जिनके मारु मारु रटलागि ॥
पैदल गिरि गये पैग पैग पर * दुइ दुइ पैग गिरे असवार ॥
हाथी गिरि गये बिसे २ पर * छोटे पर्बत की अनुहारि ॥
कल्ला कटि गये उन घोड़न के * चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
मुर्चा हटि गयो गजराजा को * लश्कर रेन बेन होइजाय ॥
सूरज भागि चले लश्कर ते * गजराजा पै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिके सूरज बोले * ददुआ सुनो हमारी बात ॥
बड़े लड़ैया गढ़ महुबे के * जो मरिबेको नाहिं डेराँय ॥
लश्कर भागिगयो विसाहिन को * सब दल रेन बेन होइ जाय ॥
इतनी बात सुनी राजा ने * अपने उठे भरहरा खाय ॥
तोप दरोगा को बुलवायो * चीरा कलँगी दियो इनाम ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी * सो चरखिन पर देउ चढ़ाय ॥
हुक्म पायके चला दरोगा * सिगरी तोपैं लई सजाय ॥
सो पठवाय दई आगे को * औ मुर्चा पर पहुँचे जाय ॥
मुर्चा बन्दी तब करवाई * औ क्षत्रिनते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मारि भगावौ तुम लश्कर को * मारौ खेदि महोबिया ज्वान ॥
जान न पावें कोउ महुबेको * सब के शीस लेउ कटवाय ॥
निमक हमारो तुम खायो है * सो हाड़न में गयो समाय ॥
भागि न जैयो कोउ मोहराते * यारो रखियो धर्म हमार ॥
झुके खलासी विसहिन वाले * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लौ * सविता रहे धुंधि में छाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें * अन्धाधुन्ध तोप की मारु ॥
गोला छूटैं दोनों दलमें * हाहा कारी शब्द सुनाय ॥
अररर अररर गोला छूटै * गोली मन्न मन्न मन्नाय ॥
एक पहर भरि गोला बरसो * ज्वानन हाथ धरे ना जाय ॥
तोपैं धैं धैं लाली होइ गइँ * कीन्ही बन्द तोप की मारु ॥
झुके सिपाही दोनों दलके * अपनी खैंचि खैंचि तलवार ॥
झुरमुट होइ गयो दोउ लश्कर में * बढ़िके चलनलगी तलवारि ॥
खट खट खट खट तेगा बाजे * बोले छपक छपक तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * औ बूँदी के असल कटार ॥
चलै शिरोही माना शाही * ऊना चलै विलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * कटिकटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
तीनि लाख लश्कर विसहिनको * रहिगयो डेढलाख सब ज्वान ॥
देखि हकीकत सूरज ठाकुर * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले सूरज बघ ऊदनि ते * तुम सुनि लेउ उदयसिंहराय ॥
शूर जुझाये ते का पैहो * हम तुम खेलें जूझ अघाय ॥
यह मन भायगई ऊदनि के * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले ऊदनि सूरजमल ते * अपनी चोट करो तुम आय ॥
इतनी सुनिके सूरज ठाकुर * अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब ऊदनिपर * बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
तीनि शिरोही गहि गहि मारी * ऊदनि लेगये चोट बचाय ॥
ऊदनि बोले तब सूरज ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चोट तुम्हारी हम सहिलीन्हो * अब लैलेउं हमारी श्याल्ह ॥
यहकहि गुर्जलियो ऊदनि ने * औ सूरजपर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा तब घोड़ा के * सूरज घोड़ा दिये भगाय ॥
देखि हकीकति कांतामल ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लई कांतामल * सो ऊदनि पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ऊदनि ने * तुरतै लीन्हो चोट बचाय ॥
भाला लैके बघ ऊदनि ने * कांतामल पर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा काँतामल के * अपनो घोड़ा दियो भगाय ॥
ढेबा बढ़िगयो तब आगे को * मानसिंह पै पहुँचो जाय ॥
बैठे मानसिंह होदा में * ढेबा दीन्ही साँग चलाय ॥
घाव आयगयो मानसिंहके * मुर्चा हटो बिसेने क्यार ॥
सूरज आये गजराजा पै * हाथ जोरिके कही सुनाय ॥
बड़े शूरमा हैं महुबे के * जिनते कछु ना पार बसाय ॥
इतनी सुनिके गजराजा तब * मनमें बहुत गये घबराय ॥
श्यामा भगतिनिपहँ राजा गये * औ सब हाल सुनायो जाय ॥
व्याह जो होइहैं गढ़ महुबे में * तौ क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
जाति बनाफरकी ओछी है * ताते जादू देउ चलाय ॥
जितने आये हैं महुबे ते * सबपर देउ मोहनी डारि ॥
इतनी सुनिके श्यामा भगतिनि * सूरजमलको संग लेवाय ॥
श्यामा चलिभइ गढ़बिसहिनते * औ लश्कर में पहुँची जाय ॥
जहँपर लश्कर रहे महुबे को * श्यामा जादू लियो उठाय ॥
डारिमसान दियो लश्कर में * सबके होशबन्द होइजाय ॥
ढेबा बचिगयो त्याहि लश्करमें * सो आल्हा पै पहुँचे जाय ॥
हाल सुनायो सब लश्कर को * औ जादूको कह्यो हवाल ॥
इतनी सुनिके आल्हा बोले * औ ढेबा ते कही सुनाय ॥
जल्दी जावो तुम महुबे को * सोनवैं लाओ संग लिवाय ॥
इतनी सुनतै ढेबा चलि भये * औ महुबे की पकरी राह ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तीनि रोजका धावा करिके * महुबे बीच पहूँचो जाय ॥
देवै ठाढ़ी रहै द्वारे पर * सो ढेबा ते लगी बतान ॥
हाल बताओ तुम बरात को * औ लश्कर को कहो हवाल ॥
यहसुनि ढेबा बोलन लागेउ * हमते कछू कहीना जाय ॥
श्यामा भगतिनि जादूडारी * लश्कर सुन्नसान होइजाय ॥
कान अवाज परी सोनवाँ के * सो ढेबापै पहुँची आय ॥
पूछन लागी सो ढेबा ते * देवर हाल देउ बतलाय ॥
लालि बरात कहाँ तुम छाँड़ी * औकहँ छोड़ि कटीली फौज ॥
इतनी सुनतै ढेबा बोलेउ * भौजी सुनो हमारी बात ॥
श्यामा भगतिनि जादू कीन्ही * लश्कर के गये होश उड़ाय ॥
सुन्नसान लश्कर सब हुइगयो * ऊभे परे बीर मलिखान ॥
आकेले तम्बू में आल्हा हैं * तुमरी याद करो महराज ॥
करौ तयारी तुम जल्दी ते * औ तुम चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनतै सोनवाँ चलिभई * देबीकी मठ पहुँची जाय ॥
पूजन करिके जगदम्बा को * अपनी शीश चढ़ावन लागि ॥
आभा बोली तब देबी को * तुम्हरो काम सिद्धि होइजाय ॥
अमृत दीन्हा जगदम्बा ने * यह लैजाउ सोनवाँ दे शानि॥
अमृत छिड़क दियो लश्कर में * उठि हैं फौज बनाफर क्यार ॥
अमृत लैके सोनवाँ लौटी * जगदम्बे को शीस नवाय ॥
सोनवाँ आई रनिदेवे पहँ * औसब हाल कह्यो समुझाय ॥
चरण लागिकै निज सासुन के * औ चलिबे को भई तयार ॥
घोड़ा पपीहा को सजवायो * तापर सोनवाँ भई सवार ॥
सुमिरन करिके नारायण को * मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ॥
कूच कराय दियो महुबे ते * नर ढेबाको संग लिवाय ॥
तीनि दिनाको धावा करिके * पथरी गढ़में पहुँची जाय ॥
करी बन्दगी सुनि आल्हा को * औ यह सोनवाँ लगी बतान ॥
काम तुम्हारो पूरन होइ हैं * स्वामी धीर धरौ मनमाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अमृत लैके सोनवाँ चलि भइ * औ लश्कर में पहुँची आय ॥
जहँ पर लश्कर रहै महुबे को * तहँपर अमृत दियो डराय ॥
मुर्च्छा जागी सब लश्कर को * जागे उदयसिंह बलवान ॥
ऊदनि आये रनि सोनवाँ पै * तुरतै चरण छुये मन लाय ॥
करि पचशावद त्यार करायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
धावाकरिदियो गढ़बिसहिनिको * सबके मारु मारु रटलाग ॥
यक हरकारा दौड़त आयो * औ राजा ते कह्यो हवाल ॥
लश्कर आयो है आल्हा को * जल्दी लश्कर लेउ सजाय ॥
इतनी सुनतै गज राजा ने * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
लश्कर सजवायो बिसहिनि को * ज्यहिका सजत न लागी बार ॥
बजो नगारा तब बिसहिनि में * क्षत्री साजि भये तैयार ॥
मानसिंह सूरज काँतामल * तीनों साजि भये तैयार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * औ मुर्चा पर पहुँचे जाय ॥
हुक्म दै दियो सूरज मल ने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * लश्कर रही अँधेरिया छाय ॥
गोला छूटे दलके भीतर * अबना सूझै अपन विरान ॥
बीस कदम के तहँ अन्तर में * गोला चले दनाक दनाक ॥
गोला लागे ज्यहि हाथी के * मानो चोर सेंध दै जाय ॥
गोला लागे जौन ऊँटके * सो गिरिपरे चकत्ता खाय ॥
गोला लागे ज्यहि घोड़ा के * चारो सुम्म गर्द होइ जाय ॥
गोला लागे ज्यहि क्षत्री के * सो गिरि परे करौंटा खाय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागे * तिनके हाड़मास छुटि जाय ॥
बंबको गोला जिनके लागे * सो लत्ताअस जाय उड़ाय ॥
चारि घरीभरि गोला बरसो * अंधाधुंध तोप की मारु ॥
तोपैं धैं धैं लाली होइ गईं * ज्वानन हाथ धरे ना जाय ॥
मारु बन्द भइ तब तोपन की * क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
झुके सिपाही दोनों दलके * अंधाधुंध चली तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चारि घरी भरि चली शिरोही * भारी बही रक्त की धारि ॥
पैग पैग पर पैदल गिरि गये * उनके दुइ दुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी गिरि गये * छोटे पर्वत की उनहार ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * जिनके मारु मारु रट लागि ॥
भगे सिपाही झुन्ना गढ़ के * अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब सूरज मल * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
समुहें देखा बघ ऊदनि को * तिनते सूरज कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं रन खेतन में * देखैं कापर राम रिसाय ॥
यह मन भाय गई ऊदनि के * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही सूरज मल ने * बघ ऊदनि पर दई चलाय ॥
तीनि शिरोही सूरज मारी * ऊदनि लीन्ही चोट बचाय ॥
टूटि शिरोही गइ सूरज की * खाली मुठी हाथ रहि जाय ॥
धोखा दैके तब सूरज को * दहिने गये उदय सिंहराय ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी * सूरज गिरे भूमि भहराय ॥
उतरि बेंदुलाते भुइँ आये * औ सूरज को लियो बँधाय ॥
देखि हकीकति काँतामल ने * आगे घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लइ जल्दी ते * सो ऊदनि पर राखो जाय ॥
ढाल अड़ाई ऊदयसिंह ने * तीनों चोटैं लई बचाय ॥
गाफिल करिकै काँतामल को * ऊदनि लीन्ही डंड बँधाय ॥
काँता बँधते परलै होगई * लश्कर तिड़ी बिड़ी होइ जाय ॥
खबरि सुनी जब गजराजा ने * दोनों बेटा बँधे हमार ॥
राजा चलिभये तब डयोढ़ी ते * औ भगतिनिपे पहुँचे जाय ॥
हाल सुनायो सब लश्कर को * श्यामा जादू लियो उठाय ॥
जादू लैके श्यामा चलि भई * औ लश्कर में पहुँची जाय ॥
घोड़ा अगिनियाँ त्यार करायो * औ गजराजा भये सवार ॥
फौज सजाय लई अपनी सब * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
दाबे घोड़ा राजा आये * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कौने बाँधे पुत्र हमारे * सो समुहें होय देइ जवाब ॥
बोले ऊदनि गजराजा ते * राजा सुनो हमारी बात ॥
हमने बाँधे पुत्र तुम्हारे * मेरो उदयसिंह है नाम ॥
धुर दक्खिनते सेतबन्ध लौं * बाजी टाप बेंदुला क्यार ॥
दतिया मारि उड़ैसा मारो * सो सब जानत सकल जहान ॥
झंडा गाड्यो अटकपार लौं * मारयो राज्य कमायूँ क्यार ॥
पेशावर मुलतान जो कहिये * बूँदी थहर थहर थर्राय ॥
साँझ होतही मेवातिन की * तिरिया हनि २ देयँ केवार ॥
आवत होइहैं ऊदनि ठाकुर * ठाढ़े महल लिहैं लुटवाय ॥
गर्व न राख्यो कोहु राजाको * हमको जानत सब संसार ॥
भला आपनो जो तुम चाहो * सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
दूजी करिहौ जो हमरे संग * मरिहौं राज्य भंग होइ जाय ॥
बिना बियाहे हम ना जैहैं * सो तुम बचन करो परमान ॥
इतनी सुनते राजा जरि गये * गुस्सा गई देह में छाय ॥
बोले गजराजा ऊदनि ते * क्या कमबख्ती लगी तुम्हारि ॥
बढ़ि बढ़ि बातैं तुम मारतहौ * अबही मूँड लिहौं कटवाय ॥
ताते लौटि जाउ महुबे को * दोनों लरिका देउ छोड़ाय ॥
बोले ऊदनि तब राजाते * तुम सुनि लेउ बिसेनेराय ॥
जेहिकी बिटिया अच्छी द्याखैं * जोराजोरी करैं बियाहु ॥
रीति हमारे यह चलिआई * ताते मानो कही हमारि ॥
रारि बढ़ैहो जो राजा तुम * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
बातन बातन बतबढ़ होइ गयो * औ बातन में बाढ़ी रारि ॥
हुक्म दै दियो गजराजा ने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी झुन्नागढ़के * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लौं * सबिता रहे धुंधि में छाय ॥
गोला छूटे दोनों दल में * सरसर परी तीरकी मारु ॥
सननन शननन गोला छूटै * कह कह करे अगिनियाँ बान॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चारि घरी भरि गोला बरसो * तो पैं लाल बरन होइ जायँ ॥
मारु बंद भइ तब तोपन की * क्षत्री खैंचि लई तलवारि ॥
मुर्चन मुर्चन नचे बेंदुला * ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगो हमार ॥
भागि न जैयो कोउ समुहेंते * नहिं क्षत्री पन जाय नशाय ॥
सन्मुख लरिकै जौ मरि जैहौ * होइहैं जुगन जुगनलो नाम ॥
खटिया परिकै जो मरिजैहौ * जगमें कोऊ न लेहैं नाम ॥
जीतिकै चलिहौ जो महुबेको * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
दै दै पानी रजपूतन को * ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * जिनके मारु मारु रटलागि ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने * खटखट चलनलगी तलवारि ॥
पैदलके संग पैदल भिरिगये * औ असवारन ते असवार ॥
चले सिरोही मानासाही * ऊना चले बिलायत क्यार ॥
तेगा चटके बर्दवानके * काटिकटि गिरे केसरिहा ज्वान ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
भगे सिपाही गजराजा के * सब दल रेनबेन होइजाय ॥
बोले राजा तब श्यामा ते * भगतिनि सुनो हमारी बात ॥
करतब अपनो तुम दिखलावो * अपनो जादू देउ चलाय ॥
अगिनिकिपुड़ियालइश्यामा ने * सो लश्करपर दई चलाय ॥
बोले ऊदनि तब सोनवाँ ते * श्यामा आग दई बरसाय ॥
पानीकि पुड़ियाले सोनवाँने * सो लश्कर में दई चलाय ॥
अगिनि शाँत भइ सबलश्करकी * श्यामा गई सनाका खाय ॥
तकि तकि जादू श्यामा मारे * सोनवाँ जादू देय उड़ाय ॥
चिल्हियाबनिगइश्यामाभगतिनि*सोनवाँ बाज बनी तत्काल ॥
दोनों उड़िगइँ आसमान को * दोऊलड़न लगीं त्यहिकाल ॥
एक घरी तहँ भई लड़ाई * फिरिउड़ि गिरी धरनिपर आय ॥
बोली सोनवाँ बघऊदनि ते * श्यामहि देउ जानते मारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले ऊदनि तब सोनवाँ ते * भौजी सुनो हमारी बात ॥
हाथ जो हारि हैं हम तिरिया पर * तो क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
ऊदनि उतरे रस बेंदुल ते * औ श्यामापै पहुँचे जाय ॥
जूरा काटि लियो भगतिन को * जादू सबै झूठ परि जाय ॥
देखि हकीकति यह गजराजा * घोड़ा अँगिनियाँ दियोबढ़ाय ॥
पूँछ घुमाई जब घोड़ा ने * लश्कर जरन लगे तत्काल ॥
बोली सोनवाँ तब ऊदनि ते * देवर मानो बात हमारि ॥
पूँछ काटि लेउ या घोड़ा को * तोसब काम सिद्धि होइजाय ॥
धोका दैके तब राजा को * ऊदनि लीन्हो पूँछ उड़ाय ॥
पूँछ कटिगई जब घोड़ा की * राजा बहुत गये घबराय ॥
घोड़ाअगिनियाँ श्यामाभगतिनि * दोनों भये तेजते हीन ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्र को * लैके महादेव को नाम ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो राजा ने * औ आल्हा पै पहुँचे जाय ॥
लई कमनियाँ गजराजा ने * कैवर खैंचिलियो अरगाय ॥
फौक जमाई सिंदोही की * औ गजबेलिकि गाँसी लाग ॥
खैंचि कमनियाँ भुजदंडन पर * तोबा मरमर होय कमान ॥
छाति डाटिकै तब आल्हा की * समुहें छाड़ि कैबरी दीन्ह ॥
हथि पचशावद दहिने होइगयो * कैबर निकरि गयो वा पार ॥
खैंचे शिरोही गजराजा तब * सो आल्हा पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई आल्हा ने * तापर भयो जड़ाका जाय ॥
टूटि शिरोही गइ राजा की * राजा मनमें गये सकाय ॥
तौ लौ ऊदनि बदलाति आये * औ आल्हाते कही सुनाय ॥
तुम्हरी बरनी को राजा है * याको लेउ जँजीरन बाँधि ॥
लैके साकल तब आल्हा ने * पचशावदको दइ पकराय ॥
बाँधिलेउ तुम गजराजा को * गजपचशावद बात बनाउ ॥
साँकल फेरी तब हाथी ने * औ राजाको दियो गिराय ॥
दंड बाँधलइ तब आल्हा ने * औ हौदामें दियो कसाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कूच कराय दियो लश्कर ते * औ फाटक पर उरके जाय ॥
जीतिको डंका तब बजवायो * गजराजाते कही सुनाय ॥
कौने दाहक में मलिखे हैं * सो तुम जल्दी देउ बताय ॥
हाथ जोरि बोले गजराजा * हमहीं चलिकै दिहैं बताय ॥
संग लैलियो गजराजा को * औ खंदकपै पहुँचे जाय ॥
पत्थर टारि दियो ऊभेको * रेशमरस्सा दियो लटकाय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखे ते * दादा सुनो बीर मलिखान ॥
जल्दी निकरो तुम दाहकते * अबहीं भाँवरि लिहौं डराय ॥
इतनी सुनिके मलिखे बोले * तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय ॥
भारी घाव लगे देही में * लोह जँजीरन कसे बनाय ॥
कैसे निकरैं हम ऊभे ते * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले ऊदनि तब मलिखे ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
पुष्य नक्षत्र में जन्मे हो * बरहैं परो बृहस्पति आय ॥
यक सौ कुंजरको बल राखो * शंका तुमहिं कालकी नाहिं ॥
मुखते हीनी तुम बोलत हौ * क्या बज घटा बीर मलिखान ॥
इतनी सुनतै भुजबल मसको * साँकल तोरि दई मलखान ॥
उछलिकै आये तब उभे पर * औ आल्हा को करी प्रणाम ॥
बिनती कीन्ही गजराजा ने * औ आल्हाते कही सुनाय ॥
मुश्क छोरिदेउ तुम लरिकन को * अबही भाँवरि देउँ डराय ॥
इतनी सुनिके नुनिआल्हा ने * सबको कैद दई छोड़वाय ॥
गंगा उठवाई दोनों ते * औ पंडितको लियो बुलाय ॥
साइति पूछिलई भौरिनकी * राजा करन तयारी लाग ॥
माहिल पहुँचे गजराजा पै * नैके करी बन्दगी जाय ॥
बोले माहिल गजराजा ते * राजा मानो कही हमार ॥
व्याह जो करिहौ गढ़ महुबे में * बुड़िहैं सात साखिको नाम ॥
जाति बनाफर की ओछी है * हम एक जतन देइँ बतलाय ॥
जितने घरौआ हैं महुबे के * तिनको मड़ये लेउ बुलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

शूर छिपावो तुम कोठरिन में * सबके शीस लेउ कटवाय ॥
यह मन भाई गजराजा के * तुरतै मड़वा दियो गड़ाय ॥
शूर बुलायो गजराजा ने * सो कोठरिन में दिये छिपाय ॥
चौक पुराय दई आँगन में * ऊँची चौकी दई डराय ॥
कलश धराय दियो सोनेका * औ सूरज को लियो बुलाय ॥
बोले राजा सूरज मल ते * जल्दी तुम बरातको जाउ ॥
जितने घरौआ हैं महुबे के * सो लरिका संग लावो जाय ॥
सूरज चलि भयो तब ड्योढ़ीते * औ पथरीगढ़ पहुँचे जाय ॥
बैठे आल्हा जहँ तम्बू में * सूरज नैके करी सलाम ॥
बोले सूरज तब आल्हा ते * हमरे कुला यहै ब्योहार ॥
जितने घरौआ हैं महुबे के * सो सब चलैं हमारे साथ ॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने * अपनी करन तयारी लाग ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेवा * सुलखे बाँधि लिये हथियार ॥
मोहन बेटा बीरशाह को * जो बौरीगढ़को सरदार ॥
लाखनि ब्रह्मा जोगा भोगा * जगनिक बाँधिलिये हथियार ॥
बारह छत्री तुरतै सजिगये * ताल्हन सजे बनारस क्यार ॥
सबै घरौआ घोड़न चढ़िगये * पलकी चढ़े बीर मलिखान ॥
चली पालकी पथरी गढ़ते * औ द्वारे पर पहुँची जाय ॥
उतरि सवारिन ते भुइँ आये * बारहु शूर महोबे क्यार ॥
भयो बोलौआ तब मड़ये तर * सब मड़ये तर पहुँचे जाय ॥
मलिखे बैठिगये चौकीपर * पंडित बेद उचारन लाग ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * लागे होन मंगला चार ॥
आई गजमोतिन मड़ये तर * पंडित गाँठिदई जोरवाय ॥
होम कराय दियो पंडित ने * भाँवरि परनलगी तत्काल ॥
पहिली भाँवरिके परतै खन * सूरज खैंचिलई तलवारि ॥
चोट चलाई नर मलिखे पर * ऊदनि दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
दूसरी भाँवरि मलिखे घूमे * काँता मल दइ तेग अड़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ढाल अड़ाई तब सुलखे ने * औ बचिगये बीर मलिखान॥
तिसरी भाँवरिके परते खन * क्षत्रिन खैंचिलई तलवारि॥
चली शिरोही वा मड़ये में * औ बहिचली रक्तकी धार॥
टूक टूक मड़ये के होइगये * क्षत्री भगे बिसेने क्यार॥
बोले ऊदनि तब आल्हा ते * दादा खंभ लेउ गड़वाय॥
भाँवरि चारौ जो बाकी है * सोऊ अबहीं लेउ डराय॥
मड़वा गाड़ौ तब साँगन को * ढालन मड़वा दियो छवाय॥
चारो भाँवरि जो बाकी रहे * घूमे तुरत बीर मलिखान॥
चली शिरोही फिरि मंडप तर * चर्बी खंभ गई लपटाय॥
चुनरी भीजिगई लोहू ते * मलिखे रक्तबरन होइ जाय॥
एक हजार शूर बिसहिन के * नौसे जूझि गये त्यहिकाल॥
एक सौ जोधा बाकी रहिगये * सो खिरकिनते गये पराय॥
काँतामल औ सूरजमल को * आल्हा डंड लइ बँधवाय॥
मुश्क बाँधके गजराजा की * सातो भाँवर लई डराय॥
बोले ऊदनि गजराजा ते * अब तुम भात लेउ बनवाय॥
भात के गरजी हम क्षत्री सब * महलन भोजन होय तयार॥
इतनी कहिकै ऊदनि चलिभये * सब सूरनको संग लेवाय॥
उठा पालकी नर मलिखे की * जनवासे की पकरी राह॥
सबैमिलि पहुँचि गये पथरीगढ़ * जान्यो हाल माहल परिहार॥
लिह्वी घाड़ी पर चढ़ि बैठे * औ बिसहिन की पकरी राह॥
जहाँ कचहरी गजराजा की * पहुँचे उर्ई के परिहार॥
करी बन्दगी गजराजा को * तहँ राजाने कही सुनाय॥
बड़े शूरमा हैं महुबे के * जिनते हार गई तलवारि॥
सातौ भाँवरि उन डरवाई * दोनों बेटा लिये बँधाय॥
भात खानको अब वे कहिगये * सो कछु जतनदेउ बतलाय॥
बोले माहिल तब राजाते * तुम सुनिलेउ बिसनेराय॥
जो वै कहिगये भात खानको * सबका काल रह्यो नियराय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बिनती करिके तुम आल्हा ते * लावो सात घरौआ ज्वान ॥
बिन हथियार साथ लै आवो * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनिकै राजा बोले * घनि २ उरई के परिहार ॥
भली बताई माहिल ठाकुर * हमने मानी बात तुम्हारि ॥
तुरतै भात त्यार करवायो * महलन भई रसोई त्यार ॥
शूर बुलाये गजराजा ने * दोहरे तेगा दिये बँधाय ॥
सो बैठारि दिये कोठरिन में * जनवासे को भये तयार ॥
संग लैलियो सब नेगिन को * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
जहँ पर तम्बू रहे आल्हा को * पहुँचे तहाँ बिसेने राय ॥
लगी कचहरी सुनि आल्हा की * अजगर लागि रहा दरबार ॥
एक अलँग तालहन सैयद हैं * बैठे एक ओर मलिखान ॥
एक अलँग पर ढेबा बहादुर * एक लँग उदयसिंह बलवान ॥
एक अलँगपर लाखनि राना * जिनके लाखन के ब्योहार ॥
एक अलँग ब्रह्मानँद बैठे * मानहु इन्द्रदेव सरदार ॥
जगनिक बैठे जगनेरी के * जोगा भोगा औ मलिखान ॥
मोहन बैठे बौरीगढ़ के * बैठे बड़े बड़े बलवान ॥
नचै कंचनी वा समया पर * सोभा कछु कही ना जाय ॥
जबही झोंक देत नैनन की * छत्रिन लगत कामकी बान ॥
तीनि हाथ ऊँचा सिंहासन * तापर तपै बनाफर राय ॥
तौलौं पहुँचगये गजराजा * औ आल्हा को करी सलाम ॥
नजर बदलिगई सुनि आल्हाकी * ऊँची चौकी दई डराय ॥
तुरतै बैठि गये गजराजा * तब आल्हाने कही सुनाय ॥
कौन कामको तुम आये हो * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले गजराजा आल्हा ते * हमरे कुला यही ब्योहार ॥
जितने शूर गये भौंरिन में * उतनेइ भात खान को जायँ ॥
त्यार रसोई है महलन में * सब उठिचलें हमारे साथ ॥
इतनी सुनिके सुनि आल्हा ने * सब सूरनते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करौ तयारी अब चलिबेको * चलिके जेइँलेउ ज्योनार ॥
बारहु सूर उठे एकै सँग * अपने बाँधि लिये हथियार ॥
तब गजराजा बोलन लागे * दुबिधा छोड़ि देउ महराज ॥
बिन हथियार चलो हमरे सँग * हमरे कुला यही ब्योहार ॥
अब हम दूजी कछु करिहैं ना * मानो साँचे बचन हमार ॥
हौ समरत्थ सबै लरिका तुम * धनि रजपूत लिये औतार ॥
गड़ुआ लैके गंगाजल को * बारहु सूर भये तैयार ॥
चली पालकी नर मलिखे की * सिगरे शूर चले यक साथ ॥
जाय पहूँचे दरवाजे पर * तुरतै पलकी धरी उतारि ॥
उतरे मलिखे तब पलकी ते * औ मड़ये में पहुँचे जाय ॥
लैलै गड़ुआ कर सोने को * सब चौका में बैठे जाय ॥
करी चौकसी गजराजा ने * फाटक बंद दियो करवाय ॥
डारि पत्तलैं दई राजा ने * उनपर भात दियो परसाय ॥
नेग मँगाय दियो गजराजा * सोने कंगन रतन जड़ाय ॥
कौर उठायो जब मलिखे ने * राजा हल्ला दियो कराय ॥
क्षत्री निकरि परे कोठरिन ते * अपनी लिये हाथ तलवारि ॥
देखि हकीकत ऊदनि बोले * घटिहा भूप बिसेने राय ॥
बिन हथियार संग निजलाये * औ घटकरी हमारे साथ ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
बारहु शूर उठे महुबे को * गड़ुआ हाथ में लिये उठाय ॥
गड़ुआ मारैं ज्यहिं क्षत्री के * सो गिरिपरे धरनि महराय ॥
चार घरीभरि गड़ुअन मारी * चौकी पाटा लिये उठाय ॥
बड़े खिलारी महुबे वाले * सब क्षत्रिन को दियो गिराय ॥
बचे बचाये क्षत्री भागे * मड़ये बही रक्त की धार ॥
बोले ऊदनि नर मलिखे ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
भात न छाँड़ो पतरिन परको * बैठिके जेइ लेउ ज्योनार ॥
इतना सुनिकै बारहु क्षत्री * लोथिन ऊपर बैठे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भातुखान लागे सबही मिलि * शोभा कछू कहीना जाय ॥
देखि हकीकत गजमोतिन ने * निज माताते कही सुनाय ।
लरिकै जितिहैं ना दादा अब * ताते जल्द देउ समुझाय ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबे के * माड़ौ लियो बापको दाउँ ॥
जंग जीति के नैनागढ़ में * सातो भाँवरि लई डराय ॥
इतनी सुनिके रानी चलिभई * औ राजापै पहुँची जाय ॥
हाथ जोरिके रानी बोली * स्वामी मानौ बात हमार ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * इनते तुम जीतन के नाहिं ॥
सोच करौना कछु जियरा में * बेटी बिदा देउ करवाय ॥
इतनी बात सुनी गजराजा * औ आल्हा पै पहुँचे जाय ॥
बोले राजा सुनि आल्हा ते * हमरो चूक माफ होइ जाय ॥
करो तयारी अब बरात को * अबहीं बिदा देउँ करवाय ॥
यह सुनि ऊदनि उठिठाढ़े भये * फाटकबंद लियो खोलवाय ॥
शूर बारहौ चलि बिसहिनते * पथरी गढ़ में पहुँचे जाय ॥
हुक्म दैदियो सब लश्कर में * अब महुबे को होउ तयार ॥
तौलौ नाई गजराजा को * सो आल्हा पै पहुँचा आय ॥
हाथ जोरि के नाई बोलेउ * तुम सुनिलेउ बनाफर राय ॥
हुक्म दियो है गज राजा ने * तुरत पालकी देउ पठाय ॥
बिदा कराय देउँ बेटी की * अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनिकै बघ ऊदनि ने * गहनेको डब्बा लियो मँगाय ॥
संग पालकी लै बरात ते * बिसहिन गढ़की पकरी राह ॥
गई पालकी दरवाजे पर * ऊदनि डब्बा लियो उठाय ॥
जितने नेगी गजराजा के * सबको गहना दियो पहिराय॥
भई तयारी गजमोतिनि की * शोभा कछू कही ना जाय ॥
सिगरे गहने बेटी पहिरे * अंग अंग में सजे बनाय ॥
रूपकि आगरि सो गजमोतिनि * तापर भूषण लिये रचाय ॥
सजि के ठाढ़ी भइ गजमोतिनि * मानो लक्ष्मी सजी बनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भेंटन लाग्गी निज माता ते * भेंटी बहुरि सहेलिन साथ ॥
शीश नाय के गजराजा को * औ पलकी में बैठी जाय ॥
सुमिरन करिके गजमोतिनिको * सखिया रोय रोय रहिजायँ ॥
चली पालकी गजमोतिनि की * औ बरात में पहुँची जाय ॥
आई पलकी जनवासे में * आल्हा हुक्म दियो फरमाय ॥
कूच कराय देउ लश्कर को * औ महुबे को होउ तयार ॥
इतनी सुनिके बघ ऊदनि ने * लश्कर हुक्म दियो करवाय ॥
कूच कराय दियो फौजनको * औ महुबे को भये तयार ॥
आया भिखारो गढ़ बिसहिनिके * ऊदनि मोहर दई लुटाय ॥
चले महोबिया गढ़ बिसहिनिते * औ महुबे की पकरी राह ॥
आठ रोज मारग में बीते * महुबा धुरो दबायो जाय ॥
रुपना बारी को बुलवायो * सो आगे को दियो पठाय ॥
मल्हना रानी अंटा ठाढ़ी * हेरे बाट बरायत क्यार ॥
तौलौं रुपना दाखिल होइगयो * दोनौं हाथ जोरि रहिजाय ॥
बोली मल्हना तब रुपना ते * बेटा हाल देउ बतलाय ॥
कैसी गुजरी पथरी गढ़ में * सो सब हाल कहौ समुझाय ॥
रुपना बोलेउ तब मल्हना ते * माता सुनो हमारी बात ॥
घटिहा राजा बिसहिनि वाला * बहुछल करो बनाफर साथ ॥
पुण्य तुम्हारो दहिने होइगयो * आये ब्याहि बीर मलिखान ॥
करौ तयारी अब परिछन की * बहुअर जल्दी लेउ उतारि ॥
इतनी बात सुनी मल्हना ने * मनमें बहुत खुशी होइजाय ॥
देवै ब्रह्मा को बुलवायो * बारहु रानी लईं बुलाय ॥
सखियाँ बुलवाई महुबे की * लागे होन मंगला चार ॥
थार सूबरन को मँगवायो * चौमुख दियना दियो बराय ॥
करी तयारी रनि मल्हना ने * औ रुपनाते कही सुनाय ॥
जल्दी भेजदेउ पलकी को * महलन त्यारी लेउँ कराय ॥
रुपना चलि भयो तब बरात को * औ ऊदनि पै पहुँच्यो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

रुपना बोलेउ बघऊदनि ते * जल्द पालकी देउ पठाय ॥
चली पालकी गजमोती की * औ द्वारेपर पहुँची जाय ॥
आई बरायत जब महुबे में * झंडन रही लालरी छाय ॥
मल्हना रानी द्वारे आई * देवै ब्रह्मा संग लिवाय ॥
बारह रानी चँदेले की * सोऊ द्वारे पहुँची आय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * परिछन होनलगी तत्काल ॥
बहू उतारि लई मल्हनाने * रंग महल में गई लिवाय ॥
नेगचार कीन्ही सबने मिलि * दान दक्षिणा दई बटाय ॥
मलिखे पाँव छुये मल्हना के * सो माथे में लिये लगाय ॥
देवे ब्रह्मा के पद छुइ के * सबके चरण छुये मनलाय ॥
बजी बधाई गढ़ महुबे में * घर घर भयो मंगलाचार ॥
परजा झगरैं गढ़ महुबे में * सबको मल्हना दियो इनाम ॥
ऊदनि पहुँचि गये लश्कर में * सबको खिलतें दई बटाय ॥
दगी सलामी गढ़ महुबे में * आये जीति बनाफर राय ॥
जितने बराती महुबे आये * सबको मिले उदयसिंह राय ॥
आदर करिके सब राजन को * ऊदनि बिदा दियो करवाय ॥
जितने बराती रहे महुबे में * अपने घरन पहूँचे जाय ॥
ऐसे ब्याह भयो मलिखे को * सोहम लिखकै दियो सुनाय ॥
साँच झूठ परमेश्वर जाने * पै हम साँची लिखो बनाय ॥
नित उठि सुमिरो शिवशंकरको * करि हैं भोलानाथ सहाय ॥
सुनो सुनावो यह आल्हा तुम * बाढ़ै ज्ञान बुद्धि सरसाय ॥
लिखो हकीकति बौरी गढ़ के * ज्यहिं बिधि ऊदनि भये तयार॥
चौथी लाये चन्द्रावलि को *ज्यहिबिधिआये उदयसिंहराय॥
समय समय पर आल्हा गावो * नित उठि लेव नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

* इति मलिखान का ब्याह समाप्त *

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ चन्द्रावलिकी चौथी ।

(और बौरीगढ़की लड़ाई)

दो०-सदाभवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षाकरैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥

॥ सवैया ॥

जाहि मनाय बनाय प्रपंच बिरंचि रच्यो बिरच्यो जगती को ॥
बिष्णुकरैं प्रतिपालन लालन पाय सहाय अलक्ष्य गती को ॥
शंकर सृष्टि सँहारत ता बल फर्क न आवत एक रती को ।
ध्यान करौं त्यहि सारसती को उदार मती श्री पार्वती को ॥

॥ छन्द-आल्हा ॥

लगत महीना शुभ भादौं का * तिथि अष्टमी और बुधवार ॥
मथुरा माहिं रूपगुण आगर * लीन्हों कृष्णचन्द्र अवतार ॥
आधीराति समय मन भावन * पावन रूप काल कल्यान ॥
भक्त उबारन हेत जगत महँ * प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान ॥
माया प्रगट करी स्वामी ने * लीला करी भक्त के काज ॥
महिमा प्रभुकी सब जगजाहिर * जानत सकल देव शिरताज ॥
चरित अनूपम कृष्णचन्द्र के * गावत साधु संत मन लाय ॥
पावत भक्ति सुखद यदुबर की * हितकरि जगत माहिं हर्षाय ॥
लगा महीना जब सावन का * घर २ परे हिंडोला आय ॥
होन लगा त्योहार तीज को * सखियाँ गावैं राग मलार ॥
ठाढ़ी मल्हना सतखंडा पर * अपने मन महँ करै बिचार ॥
सुधि नहिं पाई चन्द्रावलि की * घर घर बिटिया आइँ बोलाय ॥
जबते ब्याहि गई चन्द्रावलि * तबते मिली नाहिं म्वहिं आय॥
सोच करति हौं मैं अपने मन * समरथ लरिका होयँ हमार ॥
चौथी लैहैं चन्द्रावलि की * तब हम मिलिहैं हाथ पसारि ॥
अस बिचारि कै मल्हना रानी * लैलै नाम चन्द्रावलि क्यार ॥
रोवन लागी सत खंडा पर * तबलग आये उदैसिंह राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कान अवाज परी ऊदनि के * ऊदनि हाथ जोरि रहिजाय ॥
बोले ऊदनि रनि मल्हना ते * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कौन बातको माता रोवौ * सोतुम हमहिं कहौ समुझाय ॥
करो बहाना तब मल्हना ने * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
घर घर बिटिया सावन गावैं * अपनो करैं तीज त्योहार ॥
हमरे घरमा कोउ उपजी नहिं * करती आज तीज त्योहार ॥
इतनी सुनि कै ऊदनि बोले * अपनी लई कटारी काढ़ि ॥
पेटु मारि अबहीं मरिजैहौं * नाहीं साँची देउ बताय ॥
केहिके बेटी चन्द्रावलि है * को है बीर शाह महराज ॥
यहसुनि मल्हना बोलन लागी * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
बहिनि तुम्हारी यक चन्द्रावलि * सो बौरी गढ़ गई बिआहि ॥
जबते व्याहि गई चन्द्रावलि * काहू बिदा कराई नाहिं ॥
कोउ न उपजा अस महुबे में * जो बेटी को लावै जाय ॥
इतनी सुनिके ऊदनि बोले * माता हमहिं बतायो नाहिं ॥
कैसे व्याह भयो बहिनी को * सो सब हाल देउ बतलाय ॥
यहसुनि मल्हना बोलन लागी * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
उमरि तुम्हारी तब थोरी रहि * ताते तुमहिं बतायो नाहिं ॥
बहिनि तुम्हारी चन्द्रावलि जो * जाको रूप कह्यो ना जाय ॥
खबरि फैलगइ देश देश में * बेटी सुघर चन्देले क्यार ॥
ऐसी सुन्दरि है चन्द्रावलि * मानौं प्रगट पद्मिनी नारि ॥
राजा बीरशाह बौरी का * लश्करसाथ लाय हियँआय ॥
एक कोस पर डेरा कीन्ही * चिट्ठी महुबे दई पठाय ॥
लिखी हकीकत बीरशाह ने * पढ़ियो याहि चँदेले राय ॥
बेटा व्याहन हम आये हैं * तुम बेटीको करौ बियाहु ॥
ऐसी पाती पढ़ी चँदेले * तुरतै हमहिं लियो बुलवाय ॥
हाल सुनायो सब पाती को * औफिरि पूँछी उचित सलाह ॥
सो सुनि ज्वाबदियो हमने तब * स्वामी सुनो हमारी बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करिहौ व्याह कोऊ राजाके * आखिर बेटी रहै न क्वाँरि ॥
स्यानी बेटी है अपने घर * ताते मानहु बात हमारि ॥
उत्तम कुल है बीर शाहको * यादव बंश बीर बिख्यात ॥
बेटा सुन्दर इन्द्रसेन है * बेटी व्याहि देहु महराज ॥
पारस पूजा है तुम्हरे घर * दायज देउ उचित सुखपाय ॥
बात हमारी सुनि राजा ने * अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लिखी हकीकत बीरशाह को * पढ़ियो याहि यादवाराय ॥
नाम हमारो तुम जानत हौ * जगमें विदित रजा परिमाल ॥
बड़े बड़े क्षत्री हम जीते हैं * सबकी हारि गई तलवारि ॥
जब हम जानी अपने मनमें * सन्मुख कोऊ लड़ैया नाहिं ॥
तब हम खाँड़ा धरि समुद्र में * मानी अमर गुरू की आनि ॥
नहिं हथियार छुवैं हम रणमें * हमरे मित्र सकल सरदार ॥
करिया आयो माड़ौ वाला * आधी राति जानि त्यहिकाल॥
सोवत बाँध्यो दस्तराज को * बच्छराज को लियो बँधाय ॥
पुनि लुटवायो दशपुरवा सब * ना विपदा को रहो सुमार ॥
निबल जानिके गढ़ महुबे को * लाये तुमहूँ फौज सजाय ॥
करी चढ़ाई जब बौरी गढ़ * तब तुम कहाँ हते महराज ॥
मित्र बने तहँ बाप तुम्हारे * सोतुम हमहिं भूलगये आज॥
लिख्यो व्याह जो तुम पाती में * सो तुम सुनो यादवाराय ॥
बेटी स्यानी है हमरे घर * सो हम दे हैं व्याह रचाय ॥
धीरज राखौ अपने मनमें * होइहैं व्याह पद्मिनी क्यार ॥
याहिबिधि पाती लिखि राजा ने * औ धावन को दई गहाय ॥
धावन चलिभयो तब जल्दी ते * बीरशाह पै पहुँचो जाय ॥
पाती दीन्ही बीरशाह को * सो लै तुरतै बाँचन लाग ॥
पढ़ी हकीकत जब पाती की * मनमें बहुत गये शरमाय ॥
ज्वाबलिख्यो फिर बीरशाह ने * पढ़ियो याहि चँदेलेराय ॥
जो तकसीर भई हमते कछु * सो तुम माफ करौ महराज ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करो तयारी अब जल्दी ते * जासों होय ब्याहको काज ॥
पढ़ी हकीकत चन्देले ने * बहुते खुशी भये परिमाल ॥
करी तयारी तब ब्याहे की * घर घर भयो मंगला चार ॥
खबरि भेजिदइ बीरशाह की * सोऊ करन तयारी लाग ॥
सजी बरायत इन्द्रसेन की * आई चन्द्रवंश के द्वार ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * पंडित बेद उचारन लाग ॥
नेग योग होय ब्याह भयो तब * बेटी बिदा दई करवाय ॥
उमिरि तुम्हारी तब थोरी रहि * लरिका सबै रहे लाचार ॥
कठिन यादवा बौरी वाले * तातें हाल बतायो नाहिं ॥
देख्यो नाहीं हम बेटी को * बारह बरस भई यहि काल ॥
सो सुधि आई ब्वहि बेटीको * तब हम रोय उठी लै नाम ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * माता सुनौ हमारी बात ॥
बिदा करैबे को हम जैहैं * हमको खर्चा देउ मँगाय ॥
मल्हना बोली तब ऊदन ते * बेटा मानो कही हमारि ॥
बैरी तुम्हरे देश देश हैं * नाहक रारि बढ़ैहो जाय ॥
काम तुम्हारो ना जैबे को * कोऊ चुगुली करिहैं जाय ॥
यह सुनि बोले बघऊदनि तब * माता सोच देउ बिसराय ॥
कही तुम्हारी हमना मनिहैं * ताते त्यारी देउ कराय ॥
बिदा करै हैं हम बहिनी को * चाहे प्राण रहे की जाय ॥
इतनी कहिके ऊदन चलिभये * औ परिमाल कचहरी जाय ॥
हाथ जोरिके ऊदनि बोले * दादा सुनो हमारी बात ॥
खर्च मँगाय देउ हमको तुम * मैं बौरीगढ़ होयँ तयार ॥
बिदा करै हौं मैं बहिनी को * घर पर आय करै त्योहार ॥
इतनी बात सुनी ऊदनि की * तब राजाने कही सुनाय ॥
काम नहीं है हमैं बिदाकी * बेटा मानो बात हमारि ॥
चाह नहीं है हमैं बिदाकी * ना बेटी ते काम हमार ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * दादा हम मनिवे के नाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बिदा करै हैं हम बहिनी को * अबहीं खर्च देउ मँगवाय ॥
तो मैं बेटा देवै वालो * तुरतै बिदा लेउँ करवाय ॥
इतनी सुनिके राजा चलिभये * औ मल्हनापै पहुँचे जाय ॥
सूरति देखी जब राजाकी * मल्हना उठी भरहरा खाय ॥
बोले राजा तब मल्हनाते * रानी अकिल गई तुम्हारि ॥
हाल बतायो तुम बौरीको * ऊदन एक न मानत बात ॥
यहसुनि मल्हना बोलन लागी * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
पारस पूजा तुम्हरे घरमें * लोहा छुवत सोन होइ जाय ॥
दौलति चहिये सब काहूको * सो तुम तहाँ देउ पहुँचाय ॥
बिदा करि दिहैं बौरीवाले * राजा मानौ बात हमारि ॥
सुनी बात जब रनिमल्हना की * राजाके मन गई समाय ॥
त्यारी करिदइ परिमालैने * साठि पालकी दई सजाय ॥
अस्सी गजरथ चालिस हाथी * सुन्दर घोड़ा एक हजार ॥
बारह तोड़ा मोहर वाले * बीस दुशाला औ रूमाल ॥
सवालाख की चीरा कलँगी * सो ऊदनि को दई गहाय ॥
सात लाख की सब सामग्री * सो ऊदनि को दई सौंपाय ॥
बावन मटुका मल्हना साजे * तिनपर रंगति दई कराय ॥
बोले राजा तब ऊदनि ते * पृथीराज ते मिलियो जाय ॥
पहले जैयो तुम दिल्ली को * जैसी कहैं बीर चौहान ॥
तैसी करियो तुम बौरीमें * यह सुनि चले उदयसिंह राय ॥
नाऊ बारी भाट पुरोहित * चारो नेगी संग लिवाय ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो * ऊदनि फाँदि भये असवार ॥
करी बन्दगी परिमालै को * औ दिल्लीकी पकरी राह ॥
ताही अवसर माहिल आये * लिल्ली घोड़ी के असवार ॥
हाल बतायो ना काहूने * माहिल सबते पूछन लाग ॥
अहिर को लरिका यक उर्इ को * जाको महुबे भयो बिवाहु ॥
तौलौ मिलि गयो सो माहिलको * ताने हाल कह्यो समुझाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनिकै माहिल तुरतै चलिभये * औ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
खबरि पठाइ रहे पहिलेते * लिखिकै हाल उदैसिंह राय ॥
तौलौं माहिल दाखिल होइगये * पृथीराज को करी सलाम ॥
सूरति देखी जब माहिल की * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरई वाले * यह हँसि कही पिथौरा राय ॥
माहिल बोले पृथीराजते * तुम सुनि लेउ बीर चौहान॥
करी सलाहैं चन्देले ने * दिल्ली चलिके लेउ लुटाय ॥
पहिले भेजो है ऊदनि को * ऐहैं बहुरि बीर मलिखान ॥
करौ बहाना बौरीगढ़ को * सो तुम मानौ बात हमारि ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब * ऐसि न कहो महिल परिहार॥
काहे दिल्ली वे लुटवै हैं * उनको कौन परी परवाहि ॥
क्या तकसीर करी उनकी हम * काहे दिल्ली लिहैं लुटाय ॥
जब तुम आवत हो दिल्ली को * तब तुम झूठी कहत बनाय ॥
यह सुनि मन में कायल होइकै * औ चलिभये महिल परिहार॥
राह पकरि लइ बौरी गढ़ को * अब ऊदनि को सुनो हवाल॥
ऊदनि पहुँचे गढ़ दिल्ली में * बाग में डेरा दियो डराय ॥
जब सुधि पाई पृथीराज ने * सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
बोले पृथीराज सूरज ते * तुम ऊदनि को लावो लिवाय॥
यह सुनिचलिभये तबसूरजमल * औ बागन में पहुँचे जाय ॥
जहँ पर डेरा है ऊदनि की * तहँ सूरजमल पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी सूरजमलने * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलायो है राजा ने * सो तुम चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनिके ऊदनि चलिभै * पृथीराज पै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * दोनों हाथ जोरि रहि जाय ॥
नजरि बदलि गइ पृथीराज की * तुरतै छाती लियो लगाय ॥
कहाँ कि त्यारी करी उदैसिंह * सो तुम हमै देउ बतलाय ॥
बोले ऊदनि पृथीराज ते * हम बौरी को भये तयार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बिदा करै हैं हम बहिनी को * यह सुनि कही पिथौरा राय ॥
जालिम राजा है बौरी का * ताते लौटि महोबे जाउ ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * राजा हम मनिबे को नाहिं ॥
बिदा न करि हैं चन्द्रावलि को * तौ हम बौरी लिहौं लुटाय ॥
बिदा करै हैं हम बहिनी को * चाहे प्राण रहे की जाय ॥
यह सुनि पृथीराज सोचे मन * ऊदनि कही न मानिहै बात ॥
चीरा कलँगी सवालाख को * पृथीराज ने लिये मँगाय ॥
मो दै दीन्हों बघ ऊदनि को * यह बौरी में दीजो जाय ॥
बिदा करिदि हैं चन्द्रावलि को * तुम्हरो काम सिद्धि होइजाय ॥
खबरि सुनी जब रनि अगमा ने * तब ऊदनि को लियो बुलाय॥
सखियाँ ठाढी जो महलन में * सो ऊदनि तन रही निहारि ॥
चरन लागिकै रनि अगमा के * ऊदनि माथे लियो लगाय ॥
बोली अगमा बघ ऊदनिते * तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय ॥
कठिन यादवा बौरी वाले * तुमते मारु सहीना जाय ॥
ताते मानौ कही हमारी * ऊदनि लौटि महोबे जाउ ॥
इतनी सुनिके ऊदनि बोले * माता सुनो हमारी बात ॥
बिदा करै हैं हम बहिनी को * तब हम लौ टैं नगर महोब ॥
बिदा न करि हैं बीरशाह जो * मरिहौं राज्य भंग होइ जाय॥
यहसुनि अगमा सोचन लागी * कलहा दस्सराज को लाल ॥
यहुना मनि है कही हमारी * याको नाम उदैसिंह राय ॥
लहर पटोरैं सवा लाख को * रनि अगमाने लई मँगाय ॥
सो पकराय दई ऊदनि को * औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
भेंटदीजियो यह समधिनि को * तुम्हरो काम सिद्ध होइ जाय ॥
चरणलागि के रनि अगमा के * तुरतै चले उदैसिंह राय ॥
कई रोजकी मंजिल करिकै * बौरीगढ़ में पहुँचे जाय ॥
आध कोस जब बौरी रहि गइ * अपनो डेरा दियो लगाय ॥
कागद लैके कल्गी वालो * अपनो कलमदान लै हाथ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

लिखी हकीकति बघऊदनि ने * पढ़ियो बीरशाह महराज ॥
सिद्ध श्री नारायण लिखिकै * ता पाछेते लिखी जोहार ॥
लिखी हकीकते फिरि चौथी की * औ महुबेको लिखी हवाल ॥
बिदा करावन हम आये हैं * बघऊदनि है नाम हमार ॥
ऐसी पाती ऊदनि लिखिकै * सो धावन को दई गहाय ॥
धावन चलिभय पाती लैके * बौरी गढ़में पहुँचा जाय ॥
लगी कचहरी बीरशाह की * धामन नैके करी सलाम ॥
पाती धरि दइ त्यहि गद्दी पर * सो राजा ने लई उठाय ॥
खोलि कै पाती राजा देखी * मनमें बहुत खुशी होइ जाय ॥
जोरावर लरिका बुलवायो * औ पाती को कह्यो हवाल ॥
जबते ब्याह भयो महुबे में * सुधि नहिं लई काहुने आय ॥
लरिका आयो है महुबे ते * जाको नाम उदैसिंह राय ॥
जल्दी लावो तुम ऊदनि को * सुनि जोरावर भयो तयार ॥
लरिका चलि भयो बीरशाह को * औ ऊदनि पै पहुँचो जाय ॥
करी तयारी बीरशाह ने * अपनो बँगला लियो सजाय ॥
जैसी पगिया रहि राजा की * तैसी सबको दई बँधाय ॥
एकरँग कलँगी सबके शिरपर * बीरशाह ने दई लगाय ॥
एक उमिरिया सब काहूकी * एकै बाना लियो बनाय ॥
ना पहिचान होय राजा की * यहिबिधि बँगलासज्यो बनाय ॥
यक हरकारा दौरति आयो * औ ऊदनि ते लगो बतान ॥
लरिका आयो बीरशाह को * सोतुम उठिके करो जोहार ॥
ऊदनि उठिकै तुरतै आये * जोरावर को कियो जोहार ॥
बोले जोरावर ऊदनि ते * तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय ॥
तुमहिं बुलायो है राजा ने * जल्दी चलो हमारे साथ ॥
इतनी बात सुनी ऊदनि ने * घोड़ा बेंदुला लियो सजाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे * औ चलिभये उदैसिंह राय ॥
जहाँ कचहरी बीरशाह की * अपनो घोड़ा नचायो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

क्षत्री देखि रहे ऊदनि तन * शोभा कछू कहीना जाय ॥
रूप साँवरो बघऊदनि को * नैना हिरना की उनहार ॥
मोहित होइ गये क्षत्री तहँ * कोउ न आँखी सके मिलाय॥
ऊदनि देखा वा बँगला को * औ क्षत्रिन तन रहे निहारि ॥
एकै उम्मिरि के क्षत्री सब * सो है पाग शीस एकसार ॥
एकै तुर्रा एक निशाना * एकै रंग क्षत्रियन क्यार ॥
ऊदनि सोचे अपने मनमें * धोखा दियो यादवा राय ॥
जानि प्रताप देखि राजा को * ऊदनि तुरतै करी सलाम ॥
चिट्ठी लैके परिमालै की * सो गद्दी पर दई चलाय ॥
जो सामान गये लै ऊदनि * सो राजा के धरो अगार ॥
देखी सामाँ जब चौथी की * राजा बहुत खुशी होइ जाय ॥
पाती बाँची परिमालै की * आँकुइआँकु देखि सुखपाय ॥
हृदय लगाय लियो ऊदनि को * औ यह कही यादवा राय ॥
सुधि बिसराय दई बौरी को * कबहु न आये हमारे देश ॥
चौथी पाई हम राजी भये * धीरज धरो उदयसिंह राय ॥
इतनी सुनिके ऊदनि बोले * राजा सुनो हमारी बात ॥
मटुका लाये हम चौथी के * महलन अबहिं देउ पठवाय ॥
बोले राजा जोरावर ते * महलन खबरि देउ पहुँचाय ॥
इतनी सुनिके जोरावर ने * महलन खबरि दई करवाय ॥
सखियाँ बुलवाई राजा ने * महलन होय मंगला चार ॥
नगर सजायो बीरशाह ने * सिगरी गलियाँ दई सजाय ॥
बंदनवारी घरघर बँधिगई * द्वारे द्वारे कलश धराय ॥
जहँ तहँ बाजा बाजन लागे * नौबत झरन लगी नृपद्वार ॥
बजै नगारा गलियारन माँ * शोभा कछू कहीना जाय ॥
भयो बुलौवा बघऊदनि को * महलन चले उदैसिंह राय ॥
घोड़ा बेंदुला नाचत जावै * संगै चलो काफिला जाय ॥
सुनी खबरि जब चन्द्रावलि ने * मनमें बहुब खुशी होइ जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऊदनि निकसैं जौन गली होय * तहाँ गलीचा बिछै अगार ॥
फूल बरसि रहे तहँ ऊपर ते * सखियाँ रहीं अबीर उड़ाय ॥
अतर गुलाबन की झरिलागी * छज्जन रही लालरी छाय ॥
छुटै पिचका रँग केशरि के * गलियाँ महकिमहकिरहिजायँ॥
सुन्दर रूप देखि ऊदनि को * तिरिया मोहि मोहि रहि जायँ॥
धनि धनि कहिये इनकी माता * जेहिकी कोखि लिये औतार॥
शोभा देखी बौरी गढ़की * ऊदनि बहुत खुशी होइ जाय ॥
धीरे धीरे चले उदय सिंह * औ द्वारे पर पहुँचे जाय ॥
दगी सलामी दरवाजे पर * शोभा एक न बरणी जाय ॥
रंगमहल के दरवाजे पर * ऊदनि घोड़ नचायो जाय ॥
रानी आई बीरशाह की * लीन्ही थार सुबरन क्यार ॥
भुजबल पूजे बघ ऊदनि के * तुरत आरती धरी उतार ॥
उतरे ऊदनि रसबेंदुल से * औ रानीके समुहें आय ॥
चरण लागिकै महरानी के * सो माथे ते लिये लगाय ॥
लहर पटोरैं ऊदनि लैके * सो रानीके धरो अगार ॥
मटुका लैके सब चौथी के * सो ऊदनि ने धरे अगार ॥
जो सामान गयेलै ऊदनि * सो समुहें सब दियो धराय ॥
सोने चाँदी को गहना लै * सो नेगिन को दियो बँटाय॥
बाकी गहना ऊदनि लैके * सो रानी को दियो गहाय ॥
बाकी नेगी रहे होयँ जो * तिनको दीजै आपु बँटाय ॥
नेगी खुशी भये बौरी के * औ तारीफ करन सब लाग ॥
युग युग जीवौ ऊदनि ठाकुर * ऐसो कबहुँ न मिल्यो इनाम॥
चन्द्रावलि आई तुरतै तहँ * औ ऊदनि को गइ लपटाय ॥
हाल पूछि कै बघ ऊदनि को * पूछी कुशल महोबे केरि ॥
तौलो माहिल दाखिल होइगये * जो परिहार गोटैया टार ॥
जहाँ कचहरी बीरशाह की * माहिल तहाँ पहूँचे जाय ॥
उतरि बछेरी ते भुइँ आये * औ राजा को करी सलाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

नजरि बदलि गइ बीरशाह की * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरई वाले * अपनो हाल कहो समुझाय॥
बोले माहिल तब राजा ते * हमते कछु कहीना जाय ॥
बात बिगरि गइ गढ़ महुबे में * गुस्सा भये रजा परिमाल ॥
आल्हा ऊदनि को महुबे ते * चन्देलेने दियो निकारि ॥
तब खिसियाने दोनों भैया * औ बौरी को कियो पयान ॥
ऊदनि आये हैं तुम्हरे घर * तुरतै लेहैं बिदा कराय ॥
लैकै जैहैं चन्द्रावलि को * अपनो दासी लिहैं बनाय ॥
दागु लागि हैं तुम्हरे कुल में * ताते मानो बात हमारि ॥
बिदा न करियो तुम ऊदनि सँग * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
जानते मारौ तुम ऊदनि को * औ खंदक में देउ गिराय ॥
बात मान लइ बीरशाह ने * औ यह हुक्म दियो करवाय॥
होय रसोई जो ऊदनि को * तामें जहर देउ मिलवाय ॥
भई रसोई रंग महल में * सब में जहर दियो मिलवाय ॥
भयो बोलौआ बघऊदनि को * ऊदनि बाँधि लिये हथियार ॥
इन्द्रसेन बोले ऊदनि ते * ऊदनि छोरि धरौ हथियार ॥
दुसरी करिहैं ना तुमते हम * नाहक बाँधि लियो हथियार ॥
यह सुनि ऊदनि सीधे मनते * अपने छोरि धरे हथियार ॥
गडुआ लैलियो एक हाथ में * औ चलि भये उदैसिंह राय ॥
ऊदनि पहुँचे जब चौकामें * औ भोजन को भये तयार ॥
सातौ बेटा बीर शाह के * सोऊ तहाँ पहूँचे आय ॥
चन्द्रावलि बैठी खिरकी में * सो ऊदनि तन रही निहारि॥
करो इशारा चन्द्रावलि ने * ऊदन समुझि गये मन माहिं॥
थारी बदलो इन्द्रसेन को * इन्द्रसेन तब कही सुनाय ॥
काहे बदलो थार हमारो * तब यह कही उदैसिंह राय ॥
देश हमारे यहै रीति है * बहनोई को बदलैं थार ॥
इतनी सुनतै सातौ बेटा * तुरतै अग्निज्वाल होइ जाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

लैके गड़ुआ सातौ झपेट * औ ऊदनि को मारन लाग ॥
ऊदनि उठिके गड़ुआ लीन्हों * तिनकी चोट बचावन लाग ॥
चोट बचाई बघऊदनि ने * महलन गड़बड़ दियो मचाय ॥
सातौ बेटा घायल कीन्हें * तब सब मनमें गये लजाय ॥
हल्ला होइगयो तब महलन में * क्षत्रिय खैंचि लई तलवारि ॥
ऊदनि गड़ुआ ज्याहिके मारैं * त्यहिं धरती में देयँ गिराय ॥
बज्रकि देही है ऊदनि की * ऊदनि भीमसेन औतार ॥
कलहा बेटा दस्सराज को * काहु भाँति न मानै हारि ॥
गड़ुआ छाँड़ि दियो ऊदनि ने * औ यक पाटा लियो उठाय ॥
पाटन मारैं ऊदनि ठाकुर * क्षत्री रेन बेन होइ जायँ ॥
देखि हाल यह चन्द्रावलि ने * अपने पतिको लै तलवारि ॥
सो दै दीन्हों बघऊदनि को * ऊदनि मनमें कियो बिचार ॥
जो हम मारैं या तेगा ते * तो रजपूती धर्म नशाय ॥
तेगा डारि दियो ऊदनि ने * बीचहिं घिरे उदैसिंह राय ॥
सातो बेटा बीरशाहके * तिनने धोखा दियो बनाय ॥
बाँधि जँजीर लियो ऊदनिको * चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
शिला धरि दिये यक ऊपरते * पोहपा मालिनि देखै ठाढ़ि ॥
मालिनि पहुँची सतखंडापर * चन्द्रावलिते लगी बतान ॥
ऊदनि बँधिगे हैं महलन में * चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
सुनी हकीकति चन्द्रावलि ने * मनमें बहुत गई घबराय ॥
भोजन त्यार करे चन्द्रावलि * सो थारी में लिये धराय ॥
रेशम रस्सा लै चन्द्रावलि * औ दाहकपर पहुँची जाय ॥
डारि पिहिनियाँ त्यहिं ऊपरकी * रेशम डार दियो लटकाय ॥
निकरौ भैया तुम चुंगल ते * भोजन करौ उदेसिंहराय ॥
बोले ऊदनि चन्द्रावलि ते * बहिनी मानौ बात हमार ॥
खबरि भेजदेउ तुम महुबे को * ऊभे परे उदैसिंह राय ॥
तुम्हरे काढ़े जो हम निकरैं * तो क्षत्रीपन जाय नशाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भोजन करिहैं ना खंदक में * जल्दी खबरि देउ पहुँचाय ॥
इतनी सुनिके चन्द्रावलि गइ * सतखंडा पर पहुँची जाय ॥
सोचन लागी अपने मनमें * कैसे खबरि देउँ पहुँचाय ॥
करि बिचार तब चन्द्रावलि ने * औ यक पाती लिखी सुधारि ॥
लिख्योहाल सबबघऊदनि को * ऐसी तुमहिं सुनासिब नाहिं ॥
अकिले भेजिदियो ऊदनि को * सो ऊभे में दियो डराय ॥
हीरामनि तोताको लैके * पाती गरे दई बँधवाय ॥
बोली चन्द्रावलि सुअना ते * तोता सुनो हमारी बात ॥
पाती लैके महुबे जावो * औ माताको दीन्यों जाय ॥
माता हमरी मल्हना रानी * जो है महुबे की महरानि ॥
सुआ उड़ानो गढ़ बौरी ते * माहिल देखि गये पहिचान ॥
चलिभये माहिल बौरीगढ़ ते * औ महुबेकी पकरी राह ॥
सुअना पहुँच्यो नरवरगढ़ में * औ बगियामें पहुँचोजाय ॥
माहिल देखो जब सुअनाको * तब राजापै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी झुकि नरपतिको * राजा चौकी दई डराय ॥
आवो आवो उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल तब राजा ते * बैठे राज्य करौ महराज ॥
बस्तु एक देखी उत्तम हम * सोहम तुमहि देयँ बतलाय ॥
तोता आयो एक बगियामें * सो पकराय लेउ महराज ॥
ताहि पठाय देउ महलन में * पै यह जल्दी करो उपाय ॥
हुक्म दैदियो तब नरपति ने * मकरंदा ते कही सुनाय ॥
जल्दी जावो फुलबगिया में * औ तोताको लेउ पकराय ॥
चलिभये मकरंदा बँगला ते * एक बहेलिया लियो बुलाय ॥
तोता पकरायो मकरँद ने * औ महलनमें दियो पठाय ॥
माहिल चलिभये नरवरगढ़ ते * औ उरईकी पकरी राह ॥
तोता पहुँचो जब महलन में * रानी देखि खुशी होइजाय ॥
पाती खोली सो रानी ने * औ सबहाल पढ़ो मनलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हालु जानिके बघऊदनि को * पाती तुरत दई बँधवाय ॥
बोली रानी त्यहि तोता ते * जल्दी जावौ नगर महोब ॥
खबरि जनावौ रनि मल्हना को * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनैत सुआ उड़ानौं * औ महुबे में पहुँचो जाय ॥
ठढ़ी मल्हना शतखंडा पर * हेरै बाट उदैसिंह क्यार ॥
सुअना पहुँच्यो रनि मल्हना पै * तब मल्हना ने कही सुनाय॥
कहाँ कि पाती तोता लाये * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
यह कहि मल्हना पाती खोली * औ पाती को पढ़ो हवाल ॥
बोली मल्हना तब सुअना ते * चन्द्रावलि ते कहियो जाय ॥
लश्कर आवत है महुबे ते * तुरतै बिदा लिहैं करवाय ॥
इतनी कहिकै पाती लिखिके * सो सुअना के गरे बँधाय ॥
सुआ उड़ानौं तब महुबे ते * बौरी गढ़ की पकरी राह ॥
मल्हना बुलवायो रुपना को * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
जल्दी जावो तुम सिरसा को * औमलिखेको लाओ बुलाय॥
उनहीं पाँयन रुपना चलि भयो * औ सिरसा में पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी नरमलिखे को * हाथ जोरि के कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलायो है मल्हना ने * अबही चलो हमारे साथ ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई * मलिखे फाँदि भये असवार ॥
चारि घड़ी मारग में बीते * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
उतरि बछेरी ते भुइँ आये * औ मल्हना पै पहुँचे आय ॥
चरण लागिके रनिमल्हना के * सो माथे में लियो लगाय ॥
पाती बाँची जब मलिखे ने * तब मल्हना ते लगे बतान ॥
माता जैहैं हम बौरी गढ़ * लैहैं चौथी तुरत लिवाय ॥
मलिखे चलिभे तब महलन ते * औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी सुनि आल्हा को * औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
हाल सुनो जब यह आल्हा ने * मनमें बहुत गये घबराय ॥
बोले आल्हा नर ढेबाते * भैया सगुन देउ बतलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सगुन बिचारो तब ढेबाने * औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
रूप जोगियन को धारो तुम * तुम्हरो काम सिद्धि होइ जाय ॥
इतनी सुनिके मुनि आल्हा ने * जोगिन गुदरी लई मँगाय ॥
हुक्म दैदियो नर मलिखे को * सिगरी फौजलेव सजवाय ॥
इतनी सुनिकै मलिखे चलिभये * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजै नगारा गढ़ महुबे में * सिगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाज्यो तब लश्कर में * क्षत्री भये सबै हुशियार ॥
पहिले डंका में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लियो हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी पचशावद सजवायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो * ब्रह्मानन्द भये असवार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार करायो * तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
घोड़ मनोरथ त्यार करायो * तापर ढेबा भयो सवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो आगेको दई जोताय ॥
मारू डंकाके बाजत खन * लश्कर चला महोबे क्यार ॥
पाँच रोज मारग मैं बीते * गढ़ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दियो बागन में * मलिखे घोड़ी दई चढ़ाय ॥
पहुँचे मलिखे गढ़ दिल्ली में * जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
उतरि बछेरी ते भुइँ आये * घोड़ा थाम लई थनवार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * सन्मुख जाय बीर मलिखान ॥
सूरति देखी जब मलिखे की * तबपिरथी ने कही सुनाय ॥
आवो बैठो सिरसावाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
ऊँची चौकी उन डरवाई * बैठे तुरत बीर मलिखान ॥
मलिखे बोले पृथीराज ते * राजा सुनो हमारी बात ॥
बिदा करावन गे ऊदनि जब * बौरीगढ़ में पहुँचे जाय ॥
घाटि करी तहँ बीरशाह ने * ऊदनि खंदक दिये डराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हुक्म तुम्हारो जो होवै म्हहिं * बौरी गर्द देउँ करवाय ॥
कुम्मक अपनी हमको दैदेउ * अबही कूच जाउँ करवाय ॥
इतनी बात सुनी पिरथी ने * तब सूरज को लियो बुलाय ॥
बोले पृथीराज सूरज ते * बेटा सुनो हमारी बात ॥
जल्दी त्यार होउ बौरी को * संगै जाउ फौज लै साथ ॥
चौड़ा ब्राह्मण को बुलवायो * तासो पिरथी कही सुनाय ॥
संगै जावो तुम मलिखे के * बरिशाह ते कहियो जाय ॥
बिदा कराय देयँ आल्हा सँग * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनिकै चौड़ा चलिभये * सूरजमल को संग लिवाय ॥
गज यकदंता पर चौड़ा चढ़ि * सूरज सज्जा पर असवार ॥
फौज सजाय लियो जल्दी ते * अपनो कूच दियो करवाय ॥
दोनों लश्कर संगै चलि भै * औ बौरी की पकरी राह ॥
सात रोज को धावा करिके * बौरी धुरे दबायो जाय ॥
तीनि कोस जब बौरी रहिगई * मलिखे डेरा दियो डराय ॥
फेटैं छुटि गईं रजपूतन की * हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
जीन उतरि गये सब घोड़न के * क्षत्री करन रसोई लाग ॥
फिरि बिश्राम करो सबही ने * भोरहि उठे बीर मलिखान ॥
बोले मलिखे सुनि आल्हा ते * दादा गुदरी लेउ मँगाय ॥
रूप बनावौ अब जोगिन को * औ ऊदनि को लेउ छोड़ाय ॥
हुक्म दै दियो तब आल्हा ने * चारो गुदरी लई मँगाय ॥
गुदरी पहिर लई चारौं ने * अपने बाजा लिये उठाय ॥
लई बँसुरिया ब्रह्मानँद ने * डमरू लियो बीर मलिखान ॥
लियो यकतारा सुनिआल्हा ने * खँभरी ढेबा लई उठाय ॥
डगरत चलि भै चारौं जोगी * औ बौरी की पकरी राह ॥
जोगी आये जब फाटक पर * दरबानी ने दियो जवाब ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे दरबानी ते * फाटक जल्द देउ खोलवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

देश हमारा बंगाला है * आगे हिंगलाज को जायँ ॥
भिक्षा मँगिहैं हम बौरी में * गढ़में अलख जगैहैं जाय ॥
इतनी सुनतै दरबानी ने * तुरतै फाटक दियो खोलाय ॥
जोगी चलिभे तब आगे को * अपनो बाजा दियो बजाय ॥
गावत चलि भे चारौ जोगी * रैयत मोहि मोहि रहिजाय ॥
रूपके आगर जोगी देखे * सब अपने मन करैं बिचार ॥
बड़े तेजसी ये जोगी हैं * इनको धन्य घड़ी औतार ॥
काहू दीन्हें साल दुसाला * मोहन माला दियो इनाम ॥
जोगी पहुँचे दरवाजे पर * अपनो अलख जगावन लाग ॥
केसर बाँदी जो रानी की * सो जोगिन तन रही निहारि ॥
मोहित होइकै केसरि बाँदी * महरानी पै पहुँची जाय ॥
हाथ जोरिके बाँदी बोली * रानी सुनो हमारी बात ॥
चारि जोगिया ऐसे आये * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
नीके गावैं नीक बजावैं * सो तुम देखिलेउ महरानि ॥
हुक्म दै दियो तब रानी ने * जोगिन अबहीं लाउ बुलाय ॥
उनहीं पाँयन बाँदी आई * औ जोगिन ते कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलायो है रानी ने * महलन करो तमासा आय ॥
जोगी चलिभये रंग महल को * औ ड्योढ़ी पर पहुँचे जाय ॥
रानी आई दरवाजे पर * देखो रूप जोगियन क्यार ॥
संग सहेली जो रानी के * सो सब मोहि गईं तत्काल ॥
बोली रानी तब जोगिन ते * जोगिओ नाचदेउ दिखलाय ॥
बजी बँसुरिया तब ब्रह्मा की * ढेबा खँझरी दियो बजाय ॥
बजो यकतारा नुनिआल्हा को * डमरू बजो बीर मलिखान ॥
राग रागिनी गावन लागे * गावन लागे राग मलार ॥
मोहित होइकै रानी बोली * जोगिओ सुनो हमारी बात ॥
डेरा डारि देउ महलन में * नित उठि सेवा होय तुम्हारि ॥
बोले मलिखे तब रानी ते * रानी आकिल गई तुम्हारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

वहता पानी रमता जोगी * इनको कौन सके बिरमाय ॥
आजु रमानी यह ड्योढ़ी है * हमको भोर रमानी बाट ॥
सुनी खबरि जब चन्द्रावलि ने * तब बाँदी ते कही सुनाय ॥
सासु हमारी ते कहियो यह * जोगिन यहाँ देयँ पहुँचाय ॥
हमहूँ देखिहैं आजु तमासा * हमरो जन्म सुफल होइ जाय ॥
बाँदी चलिभइ चन्द्रावलि की * औ रानी पै पहुँची जाय ॥
हाथ जोरिके बाँदी बोली * रानी मानौ बात हमारि ॥
बहू देखिहैं आजु तमासा * सो जोगिन को रही बुलाय ॥
यह सुनि रानी बोलन लागी * जोगिन सुनो हमारी बात ॥
देखि तमासा बहुअर लेवे * अब तुम बाँदीके सँगजाउ ॥
इतनी सुनिकै जोगी चलिभै * चन्द्रावलि पै पहुँचे जाय ॥
देखी चन्द्रावलि जोगिन को * औ जोगिन ते कही सुनाय ॥
रूप तुम्हारो नहिं जोगिन को * तुम राजनके राज कुमार ॥
कैसे कैसे तुम जोगी हौ * साँची हाल देउ बतलाय ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * चन्द्रावलि ते कही सुनाय ॥
रूप बिधाता हमको दीन्ही * सुखते भजन करत दिनरात ॥
करौ तमाशा हम कनउज में * जयचँद खुशी भये तत्काल ॥
गुदरी बनवाई राजा ने * फिरि हम महुबे पहुँचे जाय ॥
करो तमासा जब महुबे में * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
मल्हना रानी बहुत खुशीहोय * सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
यहसुनि बोली चन्द्रावलि तब * मल्हना माता लगे हमार ॥
ब्रह्मा भैया हमरे लागैं * जोगिउ मानो बात हमारि ॥
जब तुम जैयो नगर महोबे * तहँपर खबरि सुनैयो जाय ॥
बिदा करावन ऊदनि आये * ऊदनि ऊभे दिये डराय ॥
तिनहिं छुड़ावन आल्हा आवैं * आवैं संग बीर मलिखान ॥
भैया आवैं ब्रह्मानँद यहँ * औ ऊदनि को लेयँ छोड़ाय ॥
यह सुनि बोले मलिखे तुरतै * बहिनी सुनो हमारी बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ब्रह्मा ठाढ़े हैं समुहें पर * आल्हा समुहें खड़े तुम्हार ॥
ढेबा बीर खड़े समुहें पर * हमरो नाम कहत मलिखान ॥
कौने दाहक में ऊदनि हैं * बहिनी हमहिं देउ बतलाय ॥
चन्द्रावलि बोली मलिखे ते * बीरन सुनो हमारी बात ॥
खंदक एक महल के पीछे * तामें परे उदैसिंह राय ॥
इतनी सुनतै जोगी चलिभये * औ खंदक में पहुँचे जाय ॥
खंदक देखि गये लश्कर में * तहँते सुरँग खुदावन लाग ॥
सुरँग खोदायो बघऊदनि लग * तुरतै ऊदनि लियो बिकारि ॥
ऊदनि पहुँचे जब लश्कर में * झुकिके आल्हे कियो प्रणाम ॥
मलिखे ढेबा औ ब्रह्मा को * कियो प्रणाम जोरि दउहाथ ॥
दगी सलामी फिरि लश्कर में * तुरतै नाच होन तब लाग ॥
बोले मलिखे तब आल्हा ते * दादा जल्द होउ तैयार ॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने * तुरतै हुक्म [illegible] दखवाय ॥
डंका बाजै हमरे दल में * लश्कर जल्द [illegible] बिसराय ॥
डंका बाज्यो तब लश्कर में * छत्री करन तयारी [illegible] घबराय ॥
पहले डंका में जिन बंदी * दुसरे बाँधि लियो हथि[illegible] ॥
तिसरे नगारा के बाजत खन * छत्री फाँदि भये असवार ॥
मारू डंका के बाजत खन * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
हथि पचशावद त्यार करायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई * तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो * तापर ब्रह्मानंद सवार ॥
घोड़ा मनोरथ त्यार करायो * तापर ढेबा भयो सवार ॥
सब्जा घोड़ा को सजवायो * तापर सूरज भयो सवार ॥
हाथी एकदन्ता सजवायो * तापर चढ़ा चौड़िया राय ॥
लश्कर चलिभये महुबे वाला * डंका होन गोल में लाग ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्ट धातुकी * सो आगे को दई जोताय ॥
चारि घरीके तब अरसा में * बौरीगढ़ को घेरो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खबरि पहुँचिगई बीरशाहको * लाये फौज बनाफर राय ॥
इतनी सुनतै बीरशाह ने * सातौ बेटा लिये बोलाय ॥
बोले बीरशाह लरिकन ते * जल्दी खबरि सुनावौ जाय ॥
कौन शूरमा चढ़ि आयो है * ताको तुरत लेउ बँधवाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दी ते * औ लरिबेको होउ तयार ॥
इतनी सुनतै सातौं चलि भये * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
हुक्म दै दियो अपने दल में * जल्दी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा बौरी गढ़ में * छत्री तुरत भये तैयार ॥
लश्कर त्यार भयो बौरी को * डंका होत गोल में जाय ॥
लश्कर चलिभयो गढ़ बौरी को * औ खेतन में पहुचाँ जाय ॥
थोड़े छत्री फौज लीन्हें * जोरावर को संग लिवाय ॥
जायके पहुँचे दोऊ आगे को * भारी जाय दई ललकार ॥
कौनसो धमके आयो है * सो समुहें होय देइ जवाब ॥
खैंचे शिरोही मलिखे ठाकुर * औसमुहें होय दियो जवाब ॥
चोट बड़ आये हैं महुबे ते * हमरो नाम बीर मलिखान ॥
कैद करावन ऊदनि आये * तुमने कैद लियो करवाय ॥
तुमतो हमरे बहनोई हौ * क्यों घटिकरी हमारे साथ ॥
कैद छाँड़ि देउ तुम ऊदनि को * औफिरि बिदा देउ करवाय ॥
रारि बढ़ावत हौ नाहक तुम * हमरे बचन करो परमान ॥
बोले सूरज तब मलिखे ते * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
बिदा न करिहैं हम तुम्हरे सँग * चाहे लाखन करो उपाय ॥
इतनी सुनतै मलिखे तड़पे * गुस्सा गई देह में छाय ॥
बोले मलिखे सूरजमल ते * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
बिदा न करिहौ जौ बहिनी को * मारौं राज भंग होइ जाय ॥
लूटि करैहौं मैं बौरीको * हमको जानत सकल जहान ॥
गुस्सा होइके तब सूरज ने * लश्कर हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती देदो अब तोपन में * इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनतै उठे खलासी * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें * धुँअना रह्यो स्वर्ग मड़राय ॥
अररर गोला छूटन लागे * कहकह करै अगिनियाँ बान ॥
कैबर छूटैं सररर सररर * गोला चलै सनाक सनाक ॥
क्या गति बरणौं त्यहि समयाकी * क्षत्रिन मारु मारु रटलाग ॥
तीनि घरी लौं भई लड़ाई * सबने खैंचि लई तलवारि ॥
खट खट तेगा बाजन लागे * ब्वालै छपक छपक तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * मानासाही चलै कटार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
पैदल अभिरि गये पैदल सँग * औ असवारन ते असवार ॥
भारी मारु होय दोऊ दल * कटि कटि गिरैं सुघरु आ ज्वान ॥
हौदाके सँग हौदा मिलि गये * हाथिन अड़ो दाँतते दाँत ॥
दोनों लश्कर यकमिलि होइगे * सबके मारु मारु रट लागि ॥
बढ़े सिपाही महुबे वाले * अपनो मया मोह बिसराय ॥
भगे सिपाही बौरी गढ़ के * मनमें बहुत गये घबराय ॥
झुके महुबिया दलमें बिचले * मुर्चा हटो यादवन क्यार ॥

* चन्द्रावलिकी चौथी की लड़ाई समाप्त *

-*****-

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ राजकुमारों की लड़ाई ॥

* छन्द आल्हा *

सुमिरन करिकै नारायणको * जगदम्बाके चरण मनाय ॥
लिखौं लड़ाई अब मलिखेकी * अभिरे क्वाँर यादवा राय ॥
भगे सिपाही बौरी गढ़के * सूरज घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जायके पहुँचे नर मलिखे पै * औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
कही हमारी मलिखे मानौ * अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
बोले मलिखे सूरजमल ते * तुम बहनोई लगौ हमार ॥
कैदछोड़ि देउ तुम ऊदनि को * बहिनि के बिदा देउ करवाय ॥
तौ हम लौटि जायँ महुबे को * इतनी मानौ कही हमारि ॥
गुस्सा होइकै तब सूरज ने * अपनी लीन्हीं तेग निकारि ॥
सो धरि धमकी नरमलिखे पर * मलिखे लीन्हीं चोट बचाय ॥
खैंचि शिरोही लइ सूरज ने * औ मलिखे पर राखो जाय ॥
चोट बचाई नर मलिखे ने * औ सूरज से कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर * तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
खैंचि शिरोही मलिखे लीन्हीं * आल्हा हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले आल्हा नर मलिखे ते * इनको कैद लेउ करवाय ॥
हाथ चलैयो ना सूरज पर * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
ढाल कि औझड़ मलिखे मारो * औ सूरज को दियो गिराय॥
कसि भुजदंडै सूरजमल को * मलिखे लियो जँजीरनबांधि ॥
हाल देखि यह जोरावर ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई मलिखे को * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब मलिखे पर * मलिखे दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
चोट बचाई जोरावर की * अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
ढालकि औझड़ मलिखे मारी * जोरावर को लिये बँधाय ॥
यक हरकारा दौरति आयो * बीरशाहते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दोनों बेटा तुम्हरो बँधिगै * लश्कर रेन बेन होइजाय ॥
इतनी सुनतै बीरशाह ने * इन्द्रसेन को लियो बुलाय ॥
फौज सजाय लेउ अपनो तुम * महुबे वालेन देउ भगाय ॥
इतनी सुनतै इन्द्रसेन ने * अपने भैया संग लिवाय ॥
हुक्म दैदियो निज लश्कर में * लश्कर जल्द होय तैयार ॥
डंका बाज्यो तब लश्कर में * सिगरी सेना भई तयार ॥
मारू डंकाके बाजत खन * लश्कर चला यादवन क्यार ॥
चारि घरीके तब अरसा में * रणखेतन में पहुँचे जाय ॥
घोड़ा बढ़ायो इन्द्रसेन ने * भारी जाय दई ललकार ॥
कौनसो क्षत्री चढ़ि आयो है * सो समुहें होय देय जवाब ॥
कौने बाँध्यो है भैयन को * केहिके जमे करेजे बार ॥
घोड़ी रेली तब मलिखे ने * औ समुहें होय दियो जवाब ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं * तुम बहनोई लगौ हमार ॥
घर घर बिटिया नैहर जावैं * सावन मास जानि त्योहार ॥
बिदा करावन ऊदनि आये * सो तुम ऊमे दिये डराय ॥
कैद छाड़ि देउ तुम ऊदनि को * बहिनि के बिदा देउ करवाय ॥
तौ हम लौटि जायँ महुबे को * अबहीं रारि सबै मिटिजाय ॥
यहसुनि बोले इन्द्रसेन तब * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
बिदा तुम्हारे सँग ना होइहै * चाहे लाखन करो उपाय ॥
गुस्सा होइके मलिखे बोले * चाहे प्राण रहे की जाय ॥
बिदा कराये बिन ना जैहैं * हमरो नाम बीर मलिखान ॥
नाम हमारो तुम जानत हौ * ना हम धरत पिछारी पाँव ॥
गर्द कराय दिहौं बौरीको * गढ़ में आगी दिहौं लगाय ॥
बिदा न करिहौ जो बहिनी को * मारौं राज भंग होइ जाय ॥
गुस्सा होइके इन्द्रसेन ने * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
मारि उड़ावो इन पाजिन को * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
इतनी सुनिके झुके खलासी * औ तोपन पै पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बत्ती दै दइ सब तोपन में * धुँअना रह्यो स्वर्ग मड़राय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * चहुँदिश रही अँधरिया छाय ॥
अररर गोला छूटन लागे * सननन परी तीर की मारु ॥
मननन मननन गोला छूटै * कहकह करै अगिनियाँ बान ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * अँधाधुँध तोप की मारु ॥
तोपैं धैं धैं लाली होइ गइं * ज्वानन हाथ धरे ना जाय ॥
बंद लड़ाई भइ तोपन की * लम्बे बंद करैं हथियार ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके * रहिगये तीनि कदम मैदान ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने * खटखट चलन लगी तलवार ॥
चलै कटारी बूंदी वाली * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दमान के * कटि कटि गिरैं केसरिहा ज्वान ॥
बढ़े सिपाही महुबे वाले * जिनके मारु २ रटलाग ॥
भगे सिपाही बौरी वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
दाबे बेंदुला ऊदनि आये * समुहें गोल गये समुहाय ॥
भगत सिपाही मोहन देखे * अपने घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जायके पहुँचे बघ ऊदनि पै * भारी जाय दई ललकार ॥
खबर दार रहियो घोड़ा पर * तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
इतनी बात कही मोहन ने * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब समुहें पर * ऊदनि दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही मोहन मारी * ऊदनि के नहिं आयो घाव ॥
भाला मारो तब ऊदनि ने * सो घोड़ाके लाग्यो जाय ॥
घोड़ा गिरिगय तुरत धरनि पर * औ मोहन को लियो बँधाय ॥
मोहन बाँधे जब ऊदनि ने * जगमनि खैंचि लई तलवारि ॥
तौलौं ढेबा समुहें आयो * औ जगमनिते कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर * तुम्हरो काल रह्यो मड़राय ॥
चेहरा मारो तब जगमनि ने * ढेबा लैगयो चोट बचाय ॥
ढाल कि औझड़ ते ढेबा ने * औ घोड़ाते दियो गिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुरत बँधाय लियो जगमनिको * औ लश्कर में दियो पठाय ॥
मोती पूरन दोनों भैया * बाँधे तिन्हे उदैसिंहराय ॥
भैया बँधिगये इन्द्रसेन के * मनमें गये सनाका खाय ॥
बोले इन्द्रसेन क्षत्रिन ते * यारो राखो धर्म हमार ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हो * तुम सब भैया लगो हमार ॥
मारो लश्कर गढ़ महुबे को * तो रजपूती धर्म तुम्हार ॥
दैके पानी रजपूतन को * औ आगे को दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही गढ़ बौरी के * दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
देखि हाल यह नर मलिखे ने * अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
चौड़ा ब्राह्मण जहँ ठाढ़ो रह * पहुँचे तहाँ बीर मलिखान ॥
बोले मलिखे तब चौड़ा ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
कैद कराय लेउ जल्दी ते * कोऊ ज्वान भागिना जाय ॥
हाथी बढ़ायो तब चौड़ा ने * समुहें गोल गयो समुहाय ॥
साँकल लैके यकदंता को * चौड़ा ब्राह्मण दई गहाय ॥
हाथी बिचलो चौड़ा वालो * काटन लागे फौजके ज्वान ॥
भगे ज्वान सब बौरी वाले * ऊँचे खाले चल बराय ॥
यह गति देखी इन्द्रसेन जब * मनमें बहुत गये घबराय ॥
सुर्खा घोड़ा दाबे आये * औ मलिखे पै पहुँचे आय ॥
बोले इन्द्रसेन मलिखे ते * अब तुम खबरदार होइ जाउ ॥
इतनी कहिके नरमलिखे पर * अपनो दीन्हो गुर्ज चलाय ॥
चोट बचाई इन्द्रसेन की * औ बचिगये बीरमलिखान ॥
भाला मारो यक मलिखे ने * सो घोड़ा के गयो समाय ॥
पैदल रहिगये इन्द्रसेन जब * तब मलिखेने लियो बँधाय ॥
सातो बेटा बीरशाह के * बँधिगये समर खेत मैदान ॥

॥ इति ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ बीरशाहकी लड़ाई ॥

सुमिरन करिके रामचन्द्र को * लै बजरंग बलीको नाम ॥
लिखौं लड़ाई बीरशाह की * यारो सुनो छाड़ि सबकाम ॥
यक हरकारा दौरत आयो * बीरशाहपै पहुंचो आय ॥
खबरि सुनाई बीरशाह को * सातौ बेटा बँधे तुम्हार ॥
सुनत खबरिया परलै होइगइ * राजा गये सनाका खाय ॥
डंका वाले को बुलवायो * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगारा हमरे दलमें * सिगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाज्यो तब सेना में * क्षत्री सजन लगे तत्काल ॥
पहले डंका में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
भूरा हाथी को मँगवायो * राजा ताहि सजावन लाग ॥
हौदा धरि दियो त्याहि हाथी पर * रेशम रस्सा दियो कसाय ॥
कलश सूबरन के हौदा में * शोभा कछु कही ना जाय ॥
तुरत सवार भये राजातब * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
एक पहरको अरसा गुजरो * औ खेतनमें पहुँचो जाय ॥
मुर्चाबन्दी उन करवाई * औ हाथीको दियो बढ़ाय ॥
निकट पहूँचे बीरशाह जब * तब राजाने कही सुनाय ॥
कौने बाँध्यो है लरिकन को * सो समुहें होय देइ जवाब ॥
इतनी सुनितै नरमालिखे ने * अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
करि प्रणाम हँसिके मलिखे तब * बोले सुनहु यादवाराय ॥
अदब तुम्हारो हम मानतहौं * नाहक रारि करत महराज ॥
बिदा करावन ऊदनि आये * तुम खंदक में दियो डराय ॥
नाहिं मुनासिब है तुमको यह * जो घटिकरी हमारे साथ ॥
अबहूं तुम्हरो कछु बिगरो नहिं * बहिनि कि बिदा देउ करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कैद छोड़ि देउ तुम ऊदनिको * तो सब रारॅ अबहिं मिटिजाय ॥
बोले बीरशाह मलिखेते * लरिकन कैद देउ छोड़वाय ॥
चुप्पै लौटि जाउ महुबे को * इतनी मानौ कही हमारि ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * राजा सुनो हमारी बात ॥
बिदा न करिहौ जो बहिनीको * बौरी गर्द दिहौं करवाय ॥
बिना बिदाके हम ना लौटैं * चाहे प्राण रहेकी जाय ॥
तौलौं बढ़िगये चौड़ा ब्राह्मण * सो राजाते लगे बतान ॥
यह कहि दीन्ही पृथीराजने * तुरतै बिदा देयँ करवाय ॥
कही हमारी जौ ना मनिहौ * तो सब जैहै काम नशाय ॥
इतनी सुनिकै राजा बोले * ब्राह्मण सुनो हमारी बात ॥
बिदा न करिहौं हम आल्हा सँग * चाहे लाखन करौ उपाय ॥
चौड़ा बोल्यो तब राजाते * है यह हुक्म पिथौरा क्यार ॥
कही न मानै बीरशाह जो * बौरी गर्द देउ करवाय ॥
इतनी सुनतै बीरशाह की * देही अग्नि ज्वाल होइजाय ॥
हुक्म दै दियो तब राजाने * तोपन पत्ती देउ लगाय ॥
हुक्म पायकै उठे खलासी * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
छाय अँधेरिया गइ लश्कर में * धुँअना रह्यो सरग मड़राय ॥
दगी सलामी दोउ फौजनमें * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
अरर गोला छूटन लागे * सर सर परी तीरकी मारु ॥
गोला छूटैं सननन सननन * कह कह करैं अगिनियां बान ॥
गोला लागै ज्यहि हाथी के * मानौ चोर सेंधिकै जाय ॥
गोला लागै जौन ऊंटके * सोगिरि परै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जिन घोड़न के * चारो सुम्म गर्द होइ जाय ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिन के * सो लत्ता अस जाय उड़ाय ॥
बंबक गोला जिनके लागै * तिनके हाड़ मास छुटिजाय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागै * तिनके दुइखंडा होइ जाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * अंधाधुंध तोपकी मारु ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तोपैं धैं धैं लाली होइगइँ * ज्वानन हाथ धरे ना जाय ॥
तोप लड़ाई पाछे परिगई * लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
दोनों फौजैं यकमिलि होइगइँ * रहिगयो तीनि कदम मैदान॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने * खटखट चलनलगी तलवारि॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवानके * कटिकटि गिरें सुघरुआज्वान॥
चारौ बियरियनका मसका है * अंधा धुन्ध चलै तलवारि ॥
घैहा डारे रणके भीतर * जिनके प्यास प्यास रटिलाग॥
पैदल अभिरे तहँ पैदल सँग * औ असवारन ते असवार ॥
हौदा मिलिगये हैं हौदा सँग * हाथिन अड़ो दाँतसे बाँत ॥
हाहाकारी रनमें बीते * कोऊ रंधे भात न खाय ॥
चहला उठिगये हैं चर्बिन के * औ बहचली रक्तकी धार ॥
ढालें डारी हैं लोहू में * मानौ कछुआसी उतरायँ ॥
पगिया डारी हैं लोहू में * जस नद्दी में परो सेवार ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
एक ओर को चौड़ा दबिगयो * दबिगै एकओर मलिखान ॥
एक ओरको ढेवा दबिगयो * सबके मारु मारु रटलागि ॥
भगे सिपाही बीरशाह के * जे रणदुलहा चले बराय ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * गाँजावाले चले बराय ॥
झुके अफीमी रन के भीतर * पलकैं उघरैं औ रहिजायँ ॥
लंबी धोतिन के पहिरैया * तिन नारेनकी पकरी राह ॥
देखि हकीकत यह लश्करकी * राजा गये सनाका खाय ॥
गुस्सा होइके बीरशाह ने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
जहँपर मुर्चा है मलिखेको * राजा तहाँ पहूँचे जाय ॥
एक ललकार दई मलिखेको * अबतुम खबरदार होइजाउ ॥
इतनी कहिके बीरशाह ने * अपनो भाला लियो उठाय ॥
भाला मारो नर मलिखेके * मलिखे लैगे चोट बचाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मलिखे बढ़िगे सुनि आल्हापै * औ आल्हाते कही सुनाय ॥
तुम्हरी बरनी को राजा है * तुरतै बाँधि लेउ यहिकाल ॥
इतनी सुनतै सुनि आल्हाने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
जाय पहूंचे बीरशाह पै * औ राजाको करो जोहार ॥
आल्हा बोले बीरशाह ते * राजा सुनौ हमारी बात ॥
कही हमारी राजा मानौ * चौथी बिदा देउ करवाय ॥
कैद छाड़िदेउ तुम ऊदनिकी * नाहक रारि करत महराज ॥
यहसुनि बोले बीरशाह तब * तुम सुनि लेउ बनाफरराय ॥
धोखे रहियो ना माड़ौके * जहँ लैलियो बापको दाँव ॥
भागे बचिहौ ना महुबेलग * ताते लौटि जाउ तत्काल ॥
आल्हा बोले तब गुस्साहोय * हम ना धरैं पिछारी पांव ॥
धर्म क्षत्रियन के नाहीं है * जौ समुहेंते जाय बराय ॥
बिदा करैं हैं हम बहिनीको * चाहे प्राण रहैं की जाय ॥
इतनी सुनतै बीरशाहने * अपनो भजा दियो चलाय ॥
चोट बचाई सुनि आल्हा ने * बीरशाह लियो गुर्ज उठाय ॥
चोट चलाई तब आल्हा पर * आल्हा हाथी दियो बढ़ाय ॥
आल्हा बचिगे तब हौदाते * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
हाथि बढ़ायो तब आल्हा ने * हौदा हौदा ते मिलिजाय ॥
लई कटारी बीरशाह ने * सो आल्हापर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई आल्हा ने * आल्हाके नहिं आयोघाव ॥
टक्कर मारी पचसावद ने * औ अम्बारी दई गिराय ॥
आल्हा उतरे निज हौदा ते * औ राजा को लियो बँधाय ॥
राजा बँधतै परलै होइगइ * लश्कर रेनु बेनु होइ जाय ॥
झुके महोबिया तब आगे को * बौरीगढ़ में पहुँचे जाय ॥
धावन भेजो एक डेरन पर * ब्रह्मानँदको लियो बुलाय ॥
आल्हा बोले ब्रह्मानँद ते * गढ़में आगी देउ लगाय ॥
इतनी सुनिके बीरशाह ने * तब आल्हाते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

क्याहिको लरिका यह ठाढ़ो है * सोतुम हमें देउ बतलाय ॥
आल्हा बोले तब राजा ते * राजा सुनो हमारी बात ॥
यहुहै लरिका परिमाले को * रनिमल्हना ने दियो पठाय ॥
बिदा करावन यहु आयो है * सो तुम रारि मचाई आय ॥
रानी भेज्यो है ऊदनि को * सो तुम कैद लई करवाय ॥
इतनी सुनतै राजा बोले * माहिल तोर बुरो होइजाय ॥
लाग हमारी कछु नाहीं है * हम सब त्यारी दई कराय ॥
तौलौं माहिल उर्ई वाले * तिनयह हमते कही सुनाय ॥
गुस्सा होइकै परिमाले ने * आल्हा ऊदनि दियो निकारि ॥
मन खिसियाने ऊदनि आये * तुरतै लैहैं बिदा कराय ॥
बिदाजो करिहौ तुम बहुअर की * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
बिदा कराय महोबे जैहैं * अपनी दासी लिहैं बनाय ॥
गंगा कीन्ही माहिल ठाकुर * तबहम मानिलियो सतिभाउ ॥
कैद कराई हम ऊदन को * औ ऊभे में दियो डराय ॥
बात हमारी अब तुम मानौ * लरिकन कैद देउ छोड़वाय ॥
करि हैं बिदा अबै बहुअर की * हमरे बचन करो परमान ॥
धोखा होइगयो है हमते यहु * माहिल आय बिगारौ काम ॥
होनी प्रबल होत दुनियाँ में * माया कठिन विश्व भगवान ॥
इतनी सुनतै नुनि आल्हा ने * सबकी कैद दई छोड़वाय ॥
राजा पहुँचे जब महलन में * तब रानीने कही सुनाय ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबे के * स्वामी मानौ बात हमारि ॥
बिदा कराय देउ बहुअर को * काहे रारि करत महराज ॥
गरुये नातेके लरिका हैं * जिनघर पारसको अधिकार ॥
बात मानिकै यह रानी की * राजा त्यारी दई कराय ॥
आल्हा ऊदन ब्रह्मानँद को * देवा और बीर मलिखान ॥
सबको बुलवायो राजा ने * औ आदरते लियो बिठाय ॥
सातौ बेटा बीरशाह के * सोऊ आय मिले तत्काल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हँसी खुशी ते सब भेंटे तहँ * शोभा एक न बरनी जाय ॥
साजि आरती तब रानी ने * परछनि करी बहूकी आय ॥
चन्द्रावलि बैठी पलकी में * तुरत निछावर दई कराय ॥
उठी पालकी चन्द्रावलि की * औ डेरनपर पहुँचे जाय ॥
चले महोबिया तब बौरी ते * जीतिको डंका दियो बजाय ॥
कछुक दिना को धावा करिके * पहुँचे गढ़ महुबे में जाय ॥
सुनी खबरि जब मल्हना रानी * बारह रानी साथ लिवाय ॥
साजि आरती दरवाजे पर * ठाढ़ी करै मंगला चार ॥
आइ पालकी दरवाजे पर * मल्हना बहुतखुशी होइजाय ॥
जाय उतरो चन्द्रावलि को * औ महलन में गई लिवाय ॥
बजी बधाई तब घर घर में * महुबे दगन सलामी लागि ॥
इतनी लड़ाई भइ बौरी में * सोहमलिखिके दियो सुनाय ॥
साँच झूठ परमेश्वर जाने * ये हम साँची लिखी बनाय ॥
आगे लिखिहौं मैं ब्रह्मा को * दिल्लीमाहिं ब्याह को साजि ॥
जैसे ब्याह भयो बेला सँग * यारौ सुनौ छाड़ि सब काम ॥
समय समय पर आल्हा गावौ * नितउठि नाम लेउ भगवान ॥
भोला नाथ मनाय हिये महँ * सीताराम केर धरि ध्यान ॥

इति चन्द्रावलिकी चौथी और बौरीगढ़ की लड़ाई समाप्त ॥

-*****-

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ दिल्ली की लड़ाई ॥

(ब्रह्मानन्द और बेलाका विवाह)

दो०—भोलानाथ मनाय उर, सीताराम सहाय।
ब्रह्मानंद को ब्याह अब, लिखौं सुअवसर पाय॥१॥

॥ सवैया ॥

काहे को भूल्यो फिरै भटको कहूँ अंत नहीं तुव काज सरैगो ॥
रोज खुशामद लोगन की करु कोऊ न होय कि पीर हरैगो ॥
कैलास के नायक दायक हैं तुम ताहि भजो दुख दूरि बहैगो।
औघट घाट लगावत है सोइ पारवती पति पार करैगो ॥ २ ॥

॥ आल्हा ॥

मैं पद बन्दौं शिव शंकर के * ज्यहिं शिर गंग चन्द्रमा भाल॥
भोला नाथ नाम जग जाहिर * धारे कंठ मुंडकी माल ॥
शीघ्र प्रसन्न होत सेवक पर * जगमें महा देव सरनाम ॥
म्वहि बरदान देहु गौरी पति * कहि हौं शूर बीर संग्राम ॥
राजा दुर्योधन कलि युग में * प्रगटे पृथी राज होइ नाम ॥
भई द्रोपदी बेला होइकै * प्रगटी पृथी राज घर आय ॥
अर्जुन प्रगटे गढ़ महुबे में * जगमें ब्रह्मानँद सरनाम ॥
बेटा कहियो परिमालै को * रनि मल्हना को राज कुमार ॥
पृथीराज की रनि अगमाँ ते * बेला आनि धरो अवतार ॥
क्या छबि बरनौं मैं ब्याला की * जाको रूप न बरनो जाय ॥
पूर्ण चन्द्रमा के सम आनन * शोभा अंग अंग रहि छाय ॥
गज गामिनी सुघर मृग नैनी * बोले मनहुँ कोकिला बैन ॥
नित२खेलन लगी सखियन सँग * खेलै खेल प्रेम के साथ ॥
बारह बरस केरि उम्मर में * बेला सबै कियो सिंगार ॥
एक सखी बोली बेला ते * बेटी सुनो पिथौरा क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बहुत पियारी तुम राजा को * रनि अगमाँ को बहुत पियारि ॥
जितनी सखियाँ तुम्हरे सँगकी * तिन सबको होइ गयो विवाह ॥
क्यों नहिं ब्याह भयो तुम्हरो कहुँ * क्या कुल हीने बाप तुम्हार ॥
बात सुनी जब यह सखियन ते * बेला मनमें गई लजाय ॥
संग छाँड़िके सब सखियन को * रंग महलमें पहुँची जाय ॥
आवत देखो जब बेटी को * अगमा लीन्हों कंठ लगाय ॥
देखि अनमनी जब बेटी को * रनि अगमाँ ने कही सुनाय ॥
काहे अनमनि तुम बेटी हौ * सो मोहि हाल कहो समुझाय ॥
बेला बोली तब धीरे ते * माता सुनो हमारी बात ॥
जितनी सखियाँ हमरे संगकी * हमते करैं हँसौआ आय ॥
तुम्हरे संग की जितनी सखियाँ * तिन सबको होइ गयो विवाह ॥
क्या कुल हीने बाप तुम्हारे * जो तुम्हरो नहिं करो विवाह ॥
इतनी बात सुनी रानी ने * बेटिहिं कंठ लियो लपटाय ॥
दियो दिलासा तब बेला को * बेटी धीर धरो मन माहिं ॥
टीका भेजि दिहैं जल्दी ते * तुरतै देहौं व्याह रचाय ॥
यह कहि अगमा उठि ठाढ़ी भइ * अपनो गडुआ लियो उठाय ॥
जाय पहूँची महाराज पै * औ पलकी पर बैठी जाय ॥
आदर करि कै पृथी राज ने * महरानी ते कही सुनाय ॥
कौन काम को तुम आई हौ * सो सब हाल देउ बतलाय ॥
हाथ जोरि के रानी बोली * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
ब्याहन योग्य भई बेटी अब * ताको अब कहुँ करो विवाह ॥
टीका भेजि देउ जल्दी ते * इतनी मानौ कही हमार ॥
यह सुनि राजा बोलन लागे * रानी बचन करौं परमान ॥
टीका भेजि दिहैं अबहीं हम * प्यारी धीर धरो मन माहिं ॥
इतनी कहिकै राजा चलि भये * पहुँचे आय राज दरबार ॥
चौड़ा ब्राह्मण को बुलवायो * औ ताहर को लियो बुलाय ॥
नाऊ बारी भाट परोहित * चारो नेगी लिये बुलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सिगरो हाल कह्यो राजा ने * औ ताहरको संग लिवाय ॥
राजा पहुँचे रंग महल में * टीका क्यार कियो सामान ॥
थार सूबरन को मँगवायो * औ नारियल लियो मँगवाय॥
शाल दुशाला औ गहने सब * मोहरन तोड़ा लियो मँगाय ॥
कीनखाप के थान मँगायो * हीरा मोती लिये मँगाय ॥
अस्सी गजरथ साठि पालकी * अच्छे घोड़ा एक हजार ॥
सब सामान मँगाय प्रेमते * तीनि लाखको करो तयार ॥
ताहर चौड़ा औ नेगिन को * सब सामान दियो सौंपाय ॥
कागद लैके कलपी वालो * अपनो कलमदान लै हाथ ॥
सिद्धि श्रीनारायण लिखि के * ता पीछे ते लिखी जोहार ॥
चारौ नेगी ताहर बेटा * चौड़ा ब्राह्मण संग पठाय ॥
सब सामग्री तीनि लाख को * सो टीका में दई पठाय ॥
प्रथम लड़ाई है द्वारे की * मड़ये कठिन चले तलवारि ॥
करन कलेवा लरिका ऐहैं * तब हम लेहैं शीश कटाय ॥
जो मंजूर होय जाको यह * सो टीका को लेय चढ़ाय ॥
यहिविधि पाती पृथीराज ने * लिखिके बंद दई करवाय ॥
चिट्ठी सौंपि दई ताहर को * औ यह हुक्म दियो फरमाय॥
धर्मनीति यह जग जाहिर है * की जै ब्याह बरोबरि माहिं ॥
ताते तुमको समझावत हौं * टीका जानि चढ़ैयो जाय ॥
सबते टीका तुम लै जैयो * एक न जैयो नगर महोब ॥
जाति बनाफर की ओछी है * सो तहँ बसत बनाफर राय ॥
इतनी बात सुनी ताहर ने * है जो कर्ण क्यार अवतार ॥
चौड़ा ब्राह्मण को संग लैके * चारो नेगी संग लिवाय ॥
कूच कराय दियो दिल्ली ते * औ चौड़ा ते कही सुनाय ॥
लरिका क्वाँरो है झुन्नागढ़ * गजराजा को राजकुमार ॥
सुयश प्रगट है गजराजा को * तहँई टीका देइँ चढ़ाय ॥
इतनी कहिके ताहर मलने * झुन्नागढ़ की पकरी राह ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सात रोजकी मंजिल करिके * पहुँचे झुन्नागढ़ में जाय ॥
लगी कचहरी गजराजा की * ताहर समुहें पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी जब राजा की * तब राजाने लियो बिठाय ॥
समाचार पूछो ताहर ते * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कौन काजहित इत आये हो * सोतुम हमहिं कहो समुझाय॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे * राजा बचन करो परमान ॥
हमहैं लरिका पृथीराज के * दिल्ली नगर हमारो धाम ॥
ब्याह काज हित हम आये हैं * औ ताहर है नाम हमार ॥
खोलिकै पाती टीका वाली * सो गद्दी पर दई चलाय ॥
पाती बाँची गजराजा ने * आँकुइआँकु नजरि करिजाय॥
पढ़ी हकीकत जब नीचेको * पढ़ते मनमें गये डेराय ॥
पाती फेरि दई राजा ने * औ ताहर ते कही सुनाय ॥
चाह नहीं है हमहिं ब्याह की * ना हम शीश कटैहैं जाय ॥
इतनी सुनतै ताहर लौटे * अपनो कूच दियो करवाय ॥
जाय पहुँचे नरवरगढ़ में * औ नरपतिको करी सलाम॥
पाती दीन्ही तब राजा को * राजा पढ़िके दई फिराय ॥
ब्याहु न करि हैं हम दिल्ली में * नाहीं हमैं ब्याह दरकार ॥
ताहर चलिभये तब नरवर ते * औ बूँदी में पहुँचे जाय ॥
टीका फेरि दियो गंगाधर * ताहर बहुत गये शरमाय ॥
देश देश टीका फिरि आयो * काहू ब्याह कबूल्यो नाहिं ॥
ताहर बोले तब चौड़ाते * ब्राह्मण सुनो हमारी बात ॥
बेला बैरिनि हमको होइगइ * नाहीं मिला तासु बरजोग ॥
हम तुम चलिहैं अब उरई को * जहँ पर बसत महिल परिहार॥
जहँ बतलैहैं माहिल ठाकुर * तहँ हम टीका दिहैं चढ़ाय ॥
यहकहि ताहर चौड़ा चलिभये * औ उरई की पकरी राह ॥
आठदिना की मंजिल करिके * औ उरई में पहुँचे जाय ॥
लगी कचहरी जहँ माहिल की * ताहर उतरि परे अरगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करी बन्दगी जब माहिलको * तब माहिलने कही सुनाय ॥
आवो बैठो दिल्ली वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कौन काम तुम्हरो अटको है * काहे बदन रह्यो मुरझाय ॥
इतनी सुनिकै ताहर बोले * औ माहिल ते लगे बतान ॥
काह बतावों मामा माहिल * हमते कछु कहीना जाय ॥
चारि मास मारग में बीते * बेला बैरिनि भई हमारि ॥
देश देश में हम फिरिआये * काहू टीका नाहिं चढ़ाय ॥
अब कहुँ लरिका हमहिं बताओ * तहँ हम टीका देयँ चढ़ाय ॥
बोले माहिल तब ताहर ते * लरिका लायक देयँ बताय ॥
राजा अजैपाल कनउज में * जिनको उदय अस्तलौ राज ॥
तिनको बेटा रतीभान है * जानै जिनहिं सकल संसार ॥
लाखनि राना तिनको बेटा * जेहिघर लाखनको ब्योहार ॥
टीका चढ़ावौ तुम लाखनिको * तुम्हरो काम सिद्ध होइजाय ॥
इतनी सुनते ताहर चलिभये * औ कनउजमें पहुँचे जाय ॥
तीनि रोजकी मंजिल करिकै * गढ़ कनउजमें पहुँचे जाय ॥
ताहर पहुँचे जब ड्योढीपर * दरवानी ने दियो जवाब ॥
कहाँते आये औ कहँ जैहो * सोतुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले ताहर दरवानी ते * राजै खबरि सुनावो जाय ॥
टीका लाये हम दिल्ली ते * सो राजा घर दिहैं चढ़ाय ॥
इतनी सुनिकै दरवानी ने * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
भयो बोलौआ तब ताहरको * ताहर तहाँ पहूँचे जाय ॥
करी बन्दगी महाराज को * पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजरि बदलिगई तब जैचँदकी * ऊँची चौकी दई डराय ॥
ताहर बैठि गये चौकी पर * राजा पाती लई उठाय ॥
पाती बाँची जब जैचन्द ने * तब ताहर ते कही सुनाय ॥
चाह नहीं है हमहिं ब्याहकी * टीका कहुँ चढ़ावौ जाय ॥
ब्याह न करिहैं हम दिल्ली में * ना हम शीश कटैहैं जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनीसुनिकै ताहर चलिभये * मनमें बहुत गये शरमाय ॥
कूच कराय दियो कनउजते * औ उरई की पकरी राह ॥
तीनि कोस जब उरई रहिगई * तब बगियामें करो मुकाम ॥
तहाँ पहूँचे मलिखे ठाकुर * बनमें खेलन गये शिकार ॥
भेंट होय गइ तहँ ताहर ते * पूछन लगे वीर मलिखान ॥
कौन कामको तुम आये हो * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
करो बहाना तब ताहर ने * झूठी बात बनावन लाग ॥
हम तो गये रहैं गंगा जी * कीन्ही जाय गंग अस्नान ॥
बोले मलिखे तब ताहर ते * बेटा सुनो पिथौरा क्यार ॥
तुमहो लरिका बादशाह के * काहे झूठी कहत बनाय ॥
नेगी चारि संग तुम्हरे हैं * चौड़ा ब्राह्मण संग तुम्हार ॥
साँची हाल हमहिं बतलावो * इतनी मानो कही हमारि ॥
यह सुनि ताहर बोलनलागे * हमरे बचन करो परमान ॥
टीका लाये हम बहिनी को * सो कोउ ब्याह कबूलै नाहिं ॥
बोले मलिखे तब ताहर ते * पाती हमहिं देउ दिखलाय ॥
लैके पाती टीका वाली * सो चौड़ा ने दई गहाय ॥
पाती बाँची जब मलिखे ने * मनमें बहुत खुशी होइजाय ॥
बोले मलिखे तब ताहर ते * ताहर सुनो हमारी बात ॥
लरिका तुमको हम बतलैहैं * ताको टीका देउ चढ़ाय ॥
नगर महोबे के परिमालै * तिनको ब्रह्मानन्द कुमार ॥
पारस पूजा है जिनके घर * लोहा छुवत सोन होइजाय ॥
टीका चढ़ावो ब्रह्मानन्द को * तुम्हरो काम सिद्ध होइजाय॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे * औ मलिखेते लगे बतान ॥
हुक्म नहीं है महराजा को * हम ना जैहैं नगर महोब ॥
मलिखे बोले तब ताहरते * कारण हमहिं देउ बतलाय ॥
कौन बात को राजा हटको * क्या कुलहीन चँदेले राय ॥
चन्द्रवंश सुन्दर कुल जाहिर * है नरनाह रजा परिमाल ॥

Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

देश देशके राजा जीते * जीते बड़े बड़े महिपाल ॥
अमरनाथ गुरुकी आज्ञा ते * खाँड़ा सागर धरो पखारि ॥
इतनी सुनिकै चौड़ा बोलो * तुम सुनि लेउ बीर मलिखान॥
जाति बनाफरकी ओछी है * संगति करी ओछि परिमाल ॥
दागु लागि गयो चन्द्रवंश में * टांका लगो रजा परिमाल ॥
इतनी सुनतै मलिखे जरिगे * नैना अग्नि ज्वाल होइजाय ॥
बोले मलिखे तब चौड़ाते * मुखते बोलो बात सम्हारि ॥
क्या कमबख्ती लगी तुम्हारी * जो तुम हीनी कही बनाय ॥
आल्हा ब्याहे नैनागढ़ में * नैपाली घर भयो विवाह ॥
हमरो ब्याह भयो पथरीगढ़ * जानत हमहिं बीर चौहान ॥
माँमाँ हमरे माहिल राजा * जो हैं उरई के परिहार ॥
कौन बात में हम ओछे हैं * सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
जो कछु धर्म कर्म क्षत्रिन में * तिनमें कौन कमी हम माहिं ॥
पारथ जीति लियो दंगल में * अपनो सिरसा लियो छोड़ाय॥
मोहरा मारो चौहानन को * जानत हाल बीर चौहान ॥
अपन दुसरिहा हम राखोना * जो समुहें होय दई जवाब ॥
बड़े बड़े क्षत्री हमने जीते * बाजी सेतबंद लो टाप ॥
कही हमारी अब तुम मानो * टीका महुबे देउ चढ़ाय ॥
जैसे राजा पृथ्वीराज हैं * तैसेइ भूप रजा परिमाल ॥
सुन्दर लरिका ब्रह्मानन्द है * रणमें एक शूर सरदार ॥
लायक तुम्हरे परिमालै है * तिन घर टीका देउ चढ़ाय ॥
जो नहिं मनिहौ बात हमारी * तौ सब जैहै काम नशाय ॥
लौटिके टीका यह ना जैहै * चाहौ प्राण रहै की जाय ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे * औ चौड़ाते लगे बतान ॥
देश देशमें हम होइ आये * काहू ब्याह कबूल्यो नाहिं ॥
ताते बात मानि मलिखे की * टीका महुबे देउ चढ़ाय ॥
यह मन भाय गई चौड़ा के * चलि भयो साथ बीरमलिखान॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जाय पहूँचे गढ़ सिरसा में * खातिरि करी वीर मलिखान ॥
तिनहिं टिकाय दियो बँगला में * तुरत कबुतरी लै सजाय ॥
कूदे बछरा पर चढ़ि बैठे * ओ महुबे की पकरी राह ॥
एक पहर के तब अरसा में * पहुँचे जाय राज दरबार ॥
उतरे बछरा ते भुइँ आये * घोड़ा थामि लई थनवार ॥
करी बन्दगी चन्देले को * मलिखे हाथ जोरि रहिजाय ॥
हाथ पकरि के चन्देले ने * अपने पास लियो बैठाय ॥
बहुत प्रीति ते राजा बोले * बेटा कुशल कहो समुझाय ॥
हाथ जोरिके मलिखे बोले * दादा चहिये दया तुम्हारे ॥
बैठो राज्यकरौं सिरसा में * है सब कुशल छेम महराज ॥
एक बात मानो दादा तुम * जोकुछ अर्ज करौं यहि काल ॥
टीका आयो है ब्रह्मा को * सो जल्दीते लेउ चढ़ाय ॥
यह कहि पाती दिल्ली वाली * सो राजाको दई गहाय ॥
पाती बाँची चन्देले ने * आँकुइ आँकु नजरिकरि जाय॥
बोले राजा तब मलिखे ते * तुम सुनि लेउ लड़ैते लाल ॥
टीका फेरि देउ दिल्ली को * नाहीं हमहिं व्याह की चाह ॥
ऐसो टीका हमहिं न चहिये * लरिका कौन करै बलिदान ॥
कठिन मारुहै चौहानन की * हमने छोरि धरे हथियार ॥
खाँड़ा धरि दियो हम सागर में * रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * दादा सुनो हमारी बात ॥
टीका घरते जो लौटै हौ * तो जग होइहै हँसी तुम्हारि॥
क्या कुलीने चन्देले हैं * यह कहि हँसि हैं सकल जहान॥
नाम तुम्हारो देश देशमें * दादा समुझि लेउ मन माहिं ॥
अपनो सिरसा हमने छीनो * धूरमें किला लियो बनवाय ॥
मोहरा मारो चौहानन को * सबराजनको लियो पँजियाय॥
टीका फेरि देयँ घरते जो * तो क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
हम न फेरि हैं यह टीका अब * चाहै प्राण रहै की जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दंड बाँधिके महराजा को * सातो भाँवरि लिहौं डराय ॥
ब्याहि जो लावैं हम दिल्ली ते * तो यह नाम बीर मलिखान ॥
यह सुनि राजा बोलन लागे * तुम रानीते पूछो जाय ॥
जो कछु भावे तुम्हरे मनमें * सोई करो लड़ैते लाल ॥
इतनी सुनिके मलिखे चलिभे * औ मल्हना पै पहुँचे जाय ॥
आवत देख्यो जब मलिखे को * मल्हना उठी भरहरा खाय ॥
हृदय लगाय लियो मलिखे को * औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
सुरति बिसारे दई हमरी तुम * नित उठि हेरौं बाट तुम्हारि ॥
आवत देखौं जब काहू को * आये मनहुँ बीर मलिखान ॥
कुशल क्षेम अबगढ़ सिरसा की * बेग हाल देउ बतलाय ॥
कौन काम को तुम आये हो * सो सब हाल कहौ समुझाय ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * माता हमपर दया तुम्हारि ॥
कुशल क्षेम है गढ़ सिरसा में * बैठे राज्य करौं महरानि ॥
सुरति तुम्हारी हम ना भूले * नित उठि पूछौं हाल तुम्हारि ॥
मिलति खबरिया है मोको नित * माता बचन करो परमान ॥
इतनी कहिकै नरमलिखे ने * पाती मल्हने दई गहाय ॥
खोलिकै पाती मल्हना बाँची * औ मलिखे ते लगी बतान ॥
टीका फेरि देउ अबही तुम * इतनी मानौ कही हमारि ॥
मलिखे बोले तब मल्हनाते * माता बोलौ बचन सम्हारि ॥
घरमें आयो टीका फेरैं * तो रजपूती धर्म नशाय ॥
होय हँसौआ देश देशमें * औ बदनामी होय तुम्हारि ॥
मोहरा मरिहौं चौहानन को * सातो भाँवरि लिहौं डराय ॥
किला बनायो हम सिरसा में * औ पारथ को दियो भगाय ॥
ब्याह रचै हैं हम ब्रह्मको * हमरो नाम बीर मलिखान ॥
कौन बातको डर माता है * टीका जल्दी लेउ चढ़ाय ॥
तब समुझायो मछुला रानी * औ मल्हनाते कही सुनाय ॥
मलिखे माननको नाहीं हैं * ताते हुक्म देउ फरमाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तौलौ महलन ऊदनि आये * औ मल्हना को कियो प्रणाम ॥
करी बन्दगी नरमलिखे को * औ मलिखे ते पूछन लाग ॥
कौन बात पूंछत माता ते * दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
पाती लैके तब मलिखे ने * सो ऊदनि को दई गहाय ॥
खोलिके पाती ऊदनि बाँची * मनमें बहुत खुशी होइजाय ॥
बोले ऊदनि तब मल्हना ते * माता त्यार करो सामान ॥
टीका चढ़ाय लेउ जल्दी ते * माता मानो बचन हमार ॥
मल्हना बोली तब ऊदनि ते * टीका अबहिं देउ लौटाय ॥
तड़पे ऊदनि तब मल्हना ते * माता अकिल गई हेराय ॥
तुमहिं हँसौआ को डर नाहीं * घरते टीका देउ फिराय ॥
टीका लौटन को नाहीं है * चाहौ आसमान टरिजाय ॥
जंग जीतिके गढ़ दिल्ली में * सातौ भाँवरि लेउँ डराय ॥
ब्रह्मा ब्याहौं पृथीराज घर * तौ मैं दस्सराज को लाल ॥
फिरिके बोली मछुला रानी * औ मल्हनाते कही सुनाय ॥
तुमना हटकौ बघ ऊदनि को * यह ना मानिहै कही तुम्हारि ॥
रनको दुलहा यहु ऊदनि है * है नरनाह बीर मलिखान ॥
काम तुम्हारो पूरन होइ है * ताते हुक्म देउ करवाय ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी * बेटा उदयसिंह मलिखान ॥
जो कछु इच्छा होय तुम्हारी * सोई करौ लड़ैते लाल ॥
इतनी सुनिकै नरमलिखे ने * रुपना बारी लिये बुलाय ॥
तुरत पठाय दियो सिरसा को * औ सबहाल कह्यो समुझाय ॥
जल्दी लै आवौ ताहरको * टीका जल्दी लेयँ चढ़ाय ॥
हुक्म पायके रुपना चलि भयो * औ सिरसा में पहुँचो जाय ॥
बैठे सुलखे रहैं बँगला में * तिनको रुपना करैं सलाम ॥
रुपना बोल्यो तब सुलखेते * तुम ताहरको देउ पठाय ॥
टीका चढ़ि है ब्रह्मानंद को * यहकहि दियो बीर मलिखान ॥
इतनी बात सुनी रुपना ते * सुलिखे उठे भरहरा खाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ताहर चौड़ा औ नेगिन को * तुरतै महुबे दियो पठाय ॥
बोले मलिखे इत मल्हना ते * माता सुनहु हमारी बात ॥
नाम तुम्हारो जग जाहिरहै * पारस पूजाको अधिकार ॥
ताहर बेटा पृथीराज को * आवत ह्वै हैं नगर महोब ॥
त्यारी करौ जल्द महलन में * सब सखियनको लेउ बुलाय ॥
इतनी सुनतै रनिमल्हना ने * घर घर खबरि दई पहुँचाय ॥
त्यारी होन लगी महुबे में * घर घर होय मंगलाचार ॥
कलश सूबरन के सजवाये * सो द्वारे पर दिये धराय ॥
तुरत बुहारे गलियारे सब * औ सतरंजी दई बिछाय ॥
ठौर ठौर पर बाजन बाजे * नौबत झरन लगी त्यहिकाल ॥
बन्दनवार बँधी घर घर में * गलियन इतरदियो छिरकाय ॥
मल्हना सखियां बुलवाई सब * झोरिन दियो अबीर भराय ॥
हाथ सूबरन की पिचकारी * छज्जन रही लालरी छाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडित को * सो महलनमें पहुँचे जाय ॥
कलश मँगाय लियो सोने को * मोतियन चौक दियो पुरवाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * शोभा कछु कहीना जाय ॥
पंडित बुलवायो ब्रह्मा को * सो पाटा पर बैठे आय ॥
देवला तिलका दोनों रानी * तिसरी बहिनि मल्हदेरानि ॥
बारह रानी चन्देले की * सबमिलि करैं मँगलाचार ॥
आल्हा ऊदनि ढेबा आये * आये साजि वीर मलिखान ॥
सब मिलि बैठिगये आँगन में * बैठे आय रजा परिमाल ॥
पंडित बेद उचारन लागे * बन्दी सुयश बखानन लाग ॥
ताहर चौड़ा चारौ नेगी * सो महुबे में पहुँचे आय ॥
ताहर आये जब गलियन में * वर्षा होन फूलकी लागि ॥
अतर गुलाबन की झरि लागी * गलियां महकि २ रहिजायँ ॥
छुटै पिचका रँग केसरि के * छज्जन रही लालरी छाय ॥
रंग बिरंगी कपड़ा होइगये * ताहर खुशी भये मनमाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धनि २ बस्ती यह महुबे को * जामें बसत चन्देले राय ॥
पारस पूजा है जिनके घर * लोहा छुवत सोन होइ जाय ॥
ताहर आये दरवाजे पर * तुरतै उतरि परे अरगाय ॥
चारौ नेगी औ चौड़ा संग * पहुँचे रंगमहल में जाय ॥
नीचे ऊपर बघऊदनि ने * दीन्हे सात तवा धरवाय ॥
ताहर पहुँचे जब आँगन में * नेगाचार होन तब लाग ॥
तीनि लाख का टीका लाये * सो ताहर ने दियो धराय ॥
रूप देखिकै ब्रह्मा नन्द को * ताहर बहुत खुशी होइ जाय ॥
पूजा करिकै श्रीगणेश को * औ करि इष्टदेव को ध्यान ॥
करो रोचना ब्रह्मानँद के * माथे अच्छत दिये लगाय ॥
तवा धरे जो बघ ऊदनि ने * तिनपर ताहर करी निगाह ॥
साँग धमकी तब ताहर ने * सातौ तवा तोरि भँसि जाय ॥
ताहर बोले तहँ आँगन में * हमरे कुला यही ब्यौहार ॥
साँग उखारैं जो ब्रह्मानँद * तो हम बीरा देयँ खवाय ॥
देखि हाल यह राजा सोचे * मल्हना बहुत गई घबराय ॥
बोली मल्हना नर मलिखे ते * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
हमरे आगे तो ऐसी भइ * पीछे काह रचो भगवान ॥
ऊदनि बोले तब मल्हना ते * धीरज धरे होत सब काम ॥
यह कहि ऊदनि उठि ठाढ़े भये * औ ताहरते लगे बतान ॥
छोटे भैया हम ब्रह्मा के * हम यह लेहैं साँग उखारि ॥
इतनी कहिके बघ ऊदनिने * तुरतै लीन्ही साँग उखारि ॥
ताहर बोले तब चौड़ातें * दादा सुनो हमारी बात ॥
ऐसे योधा हैं जिनके घर * क्यों नहिं राज्य करैं परिमाल ॥
यह कहि ताहर बीरा लैके * ब्रह्मानँद को दियो खवाय ॥
ज्योंही बीरा लियो ब्रह्माने * समुहें भई तड़ाका झींक ॥
बोली मल्हना तब मलिखे ते * अबही टीका देउ फिराय ॥
पुत्र हमारो क्वाँरो रहि है * नाहीं हमहिं बहूकी चाह ॥
ऊदनि समुझायो मल्हना को * माता समुझि लेउ मन माहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घरकौ आया टीका फिरि हैं * तो जग होइहै हँसी हमारि ॥
हमना फेरि हैं अब टीकाको * चाहे असगुन होय हजार ॥
जब हम त्यार भये माड़ोको * पूजे भुजबल जबहिं हमारि ॥
माता सोचौ तुम अपने मन * समुंह छींक भई ठहनाय ॥
तबही तुमने म्वहि हटको रहै * हम लै आये बापको दाउँ ॥
मन नहिं भाई यहु मल्हनाके * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
पुत्र हमारो मारो जैहै * ताते टीका देउ फिराय ॥
इतनी सुनतै नर मलिखेने * अपनी लई कटारी काढ़ि ॥
धरी कटारी तब छाती पर * औ मल्हनाते कही सुनाय ॥
जो कहुँ टीका यह फिरि जैहैं * अपने लिहौं कटारी मारि ॥
इतनी सुनि कै मल्हना बोली * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
जो कछु तुम्हरे मन में आवे * सोई करो बीर मलिखान ॥
ढोलक बजवाई मल्हनाने * सखियाँ करैं मंगलाचार ॥
जितने नेगी रहे दिल्ली के * गहनो तिनहिं दियो पहिराय ॥
बाकी गहना जितनी रहिगये * सो चौड़ाको दियो पकराय ॥
नेगी और होयँ दिल्ली में * दीजो जाय चौड़ियाराय ॥
नेगी बुलाये तब महुबेके * ताहर गहना दियो इनाम ॥
नेग निछावर जबहिं होइ गइ * तब ज्योनार दई करवाय ॥
भयो बोलौआ फिरिपंडितको * ब्याहकिसायति देउ बतलाय ॥
माह बदी तेरसि भाँवरि को * अच्छी सायिति दई बताय ॥
बोले ताहर तब राजा ते * आज्ञा देउ जायँ महराज ॥
बहुत दिनाते हम घूमति हैं * अब दिल्लीको करैं पयान ॥
आज्ञा दैदइ तब राजा ने * ताहर उठिके करैं जोहार ॥
सबको मिलिके ताहर चलिभये * नेगी ब्राह्मण संग लिवाय ॥
राह पकरि लई गढ़ दिल्लीको * औ उरईमें पहुँचे जाय ॥
आवत देखा जो ताहर को * माहिल चौकी दई डराय ॥
ताहर बैठे जब चौकी पर * तब माहिलने कही सुनाय ॥
टीका चढ़ायो क्याहि राजाघर * सोसब हाल कहा समुझाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ताहर बोले तब माहिल ते * मामा सुनो हमारी बात ॥
कनउज पहुँचे हम टीकालै * जैचँद तुरत करी इनकार ॥
तब हम आवत रहे उरई को * तौ लौं मिले बीर मलिखान ॥
हमहिं संगलै गे महुबे को * ब्रह्माका टीका लियो चढ़ाय ॥
इतनी बात सुनी माहिल ने * मनमें बहुतगये खिसिआय ॥
चलिभये ताहर जब उरई ते * माहिल बीड़ा लई मँगाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे * औ दिल्लीकी पकरी राह ॥
पाँचरोज की मंजिल करिके * पहुँचे जाय राज दरबार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * राजा चौकी दई डराय ॥
बोले राजा तब माहिलसे ते * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
माहिल बोले तब राजा ते * हमते कछु कही ना जाय ॥
ताहर पहुँचे गढ़ महुबे में * तहँ पर टीका दियो चढ़ाय ॥
टीका फेरि लेउ महुबे ते * ओछी जाति बनाफर राय ॥
तौ लौ ताहर चौड़ा आये * चारो नेगी संग लिवाय ॥
बोले पृथीराज चौड़ा ते * ब्रह्माण अकिल गई तुम्हारि ॥
हमने हटको रहै महुबे को * तहँ तुम टीका आये चढ़ाय ॥
फेरिके लावो तुम टीका को * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे * दादा सुनो हमारी बात ॥
देश देश में हम फिरि आये * काहू ब्याह कबूल्यो नाहिं ॥
चारि मास मारग में बीते * तौ लौ मिले बीर मलिखान ॥
लरिका बतलायो मलिखेने * राजा चन्द्र वंश दरबार ॥
पारस पूजा है महुबे में * लोहा छुवत सोन होइजाय ॥
इन्द्र धाम सम सो बस्ती है * जहँ पर तपत रजा परिमाल ॥
तिनको लरिका ब्रह्मानँद है * जाको रूप न वरणों जाय ॥
आल्हा ऊदनि जिनके घर में * जिनके बलको नाहिं सुमार ॥
आल्हा ब्याहे नैपाली घर * औगजराजा घर मलिखान ॥
माँमाँ माहिल हैं उनहूं के * फिरि क्या घाट क्षत्रियनमाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

टीका लौटनको नाहीं है * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
जब बरात आवे दिल्ली को * सबको लीजो कैद कराय ॥
इतनी सुनिके माहिल चलिभये * औ उरई में पहुँचे जाय ॥
राम बनावे तो बनिजावे * बिगरी बनत २ बनिजाय ॥
सुनो हाल अब गढ़ महुबे को * ज्यहिविधि रच्योब्याहको जाय॥
माह महीना जबही लाग्यो * महुबे होन तयारी लागि ॥
जितने राजा ब्योहारी रहैं * तिनको न्योता दियो पठाय ॥
लश्कर लैलै राजा आये * औ महुबे में पहुँचे आय ॥
डेरा परि गये ठौर ठौर पर * तँबुअन रही लालरी छाय ॥
सुनी खबरि जब यह माहिल ने * लिल्ली घोड़ी भये असवार ॥
राह पकरि लई गढ़ महुबे को * पहुँचे चार घरी में जाय ॥
उतरिके लिल्ली ते भुइं आये * औ मल्हना पै पहुँचे जाय ॥
सूरत देखी जब माहिल की * मल्हना बहुत खुशी होइजाय॥
माहिल बोले रनिमल्हना ते * बहिनी वचन करो परमान ॥
अकिलौ लरिका तुमलै आवो * यह कहि दई पिथौरा राय ॥
यह कहि दीन्ही पृथीराज ने * सातो भाँवर दिहौं डराय ॥
जो कहुँ अइहैं आल्हा ऊदनि * ओछी जाति बनाफर राय ॥
शीश काटिहौं उन दोउन को * लरिका दिहौं जानते मारि ॥
अकिलो लरिका जो लै ऐहौ * सातो भाँवर दिहों डराय ॥
बिदा कराय दिहौं बेटी को * यह कहि पाती दई गहाय ॥
झूठी पाती दइ माहिल ने * बाँची तुरत मल्हन दे रानि ॥
साँची बात मानि माहिल को * मल्हना पलकी दई मँगाय ॥
ब्रह्मा बेटा को बुलवायो * औ पलकी में दियो बिठाय ॥
संग करि दियो तब माहिल के * औ माहिल ते लगी बतान ॥
तुमका सौंपति हौं लरिका को * वीरन बहुत रहेउ हुशियार ॥
चली पालकी ब्रह्मा नन्द की * संगे चले माहिल परिहार ॥
सुनी खबरिया जब ऊदनि ने * ब्रह्महि माहिल गये लिवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कूदि बेंदुला पर चढ़ि बैठे * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
जहँ पर बैठी रानी मल्हना * ऊदानें तहाँ गये नियराय ॥
आवत देखो जब ऊदनि को * मल्हना उठी भरहरा खाय ॥
चरण लागिकै रनिमल्हना के * ऊदनि माथे लिये लगाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले * माता अकिल गई तुम्हारि ॥
ब्रह्मै भेजि दियो माहिल सँग * अगुआ करे माहिल परिहार ॥
कटन मरन को आल्हा ऊदनि * माहिल जँय लेयँ जेवनार ॥
धोका दैके माहिल लैगे * अबना मिलिहै पुत्र तुम्हार ॥
नाम हमारो सब राजन में * सो तुम खोई बात हमारि ॥
सबै बरायत महुबे रह गई * अकिले ब्रह्मा दियो पठाय ॥
हम ना ऐहैं अब महुबे को * यह कहि चले उदैसिंह राय ॥
मल्हना रानी देखत रहि गई * जिनको चलत न लागी बार ॥
ऊदनि पहुँचे दश पुरवा में * सोनवाँ रानी पूछन लागि ॥
कौन अँदेशा में देवर हो * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
बोले ऊदनि रनि सोनवाँ ते * हमते कछु कही ना जाय ॥
काह बतावों मैं भौजी ते * अकिले माहिल गये बरात ॥
माहिल आये गढ़ महुबे में * झूठी बातैं करी बनाय ॥
सीख मानिके रनि मल्हना ने * ब्रह्मा संगै दियो पठाय ॥
जन्म के बैरी माहिल मामा * ताकत दाँव घात दिनराति ॥
बंश नशावन को लागे हैं * नित घटि करत हमारे साथ ॥
सबै बराती महुबे रहि गये * माहिल ब्रह्मै गये लिवाय ॥
अब बरात को हम ना जैहैं * ना महुबे ते काम हमार ॥
यहसुनि सोनवाँ बोलन लागी * देवर अकिल कहाँ तुम्हार ॥
रानी मल्हना तुमको पालो * अपनो कुचको दूध पिलाय ॥
मारे जैहैं जो ब्रह्मानँद * तो जग होइ हैं हँसी तुम्हारि ॥
बदनामी होइहैं सबही बिधि * सोतुम समुझिलेउ मन माहिं ॥
लाग नहीं है कछु मल्हना की * देवर सुनो हमारी बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कामु बिगरि है जो मल्हनाको * तुम्हरे जीवन को धिरकार ॥
बात हमारी देवर मानौ * अबहीं कूच देव करवाय ॥
यह मन भाई बघ ऊदनिके * औ सोनवाँते कही सुनाय ॥
सीख तुम्हारी हमने मानी * यह कहि चले उदैसिंह राय ॥
जायके पहुँचे सो लश्कर में * तुरते डंका दियो बजवाय ॥
डंका बाज्यो गढ़ महुबे को * क्षत्री तुरत भये हुशियार ॥
पहले डंकाके जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन * क्षत्री साजि भये तैयार ॥
कागद लीन्हा कल्पी वालो * ऊदनि कलमदान लै हाथ ॥
पाती लिखिदइ नरमलिखे को * तामें सबियाँ लिखी हवाल ॥
छलिकै माहिल ब्रह्मै लैगयो * घटिया भूप मिहल परिहार ॥
जान न पावै माहिल राजा * तुरतै कैद लेउ करवाय ॥
पाती लेके धावन चलिभये * औ सिरसा में पहुँचो जाय ॥
मलिखे बैठे सिंहासन पै * धामन पाती दई गहाय ॥
खोलिके पाती मलिखे बांची * औ सुलखेको लियो बुलाय ॥
हाल बतायो सब सुलखेको * औ यह कही वीर मलिखान ॥
माहिल जियेजात ब्रह्माको * तिनको कैद लेउ करवाय ॥
इतनी सुनकै सुलखे चलिभये * अपनो लश्कर लियो सजाय ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * औ रस्ताको घेरो जाय ॥
आई पालकी ब्रह्मानँद की * लिल्ली चढ़े महिल परिहार ॥
सुलखे मिलै जाय माहिल को * तुरतै करो बन्दगी आय ॥
बोले सुलखे तब माहिल ते * मामा सुनो हमारी बात ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं रहै * जो घटि करी हमारे साथ ॥
अकिले ब्रह्माको सँग लीन्हों * है यह कौन देश की रीति ॥
यहकहि डंड बाँधि माहिल को * लै फाटकपर दियो टँगाय ॥
पैठे पालकी दई सिरसा को * महुबे खबरि दई पहुँचाय ॥
सजी बरायत गढ़महुबे में * सिरसा नेग होन सब लाग ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

हाथी पचशावद सजवायो * तापर आल्हा भयो सवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो * तापर ऊदनि भये सवार ॥
घोड़ा मनोरथा पर ढेवा हैं * कोतल चलो करेलिया घ्वाड़॥
सजी सवारी परिमालै को * औ महुबे ते चली बरात ॥
आल्हा आये जब सिरसा में * औ फाटकपर परी निगाह ॥
टँगो देखिकै तब माहिल को * तुरतै मुरक दई खोलवाय ॥
माहिल राजा रोवन लागे * सुलिखे इज्जत लई हमारि ॥
अबना जैहैं हम बरात को * तब ऊदनिने कही सुनाय ॥
मामा माहिल जो ना जैहैं * तौ को करिहै काम हमार ॥
तब ढेवा समुझावन लागे * मामा सुनो महिलपरिहार ॥
सोच करौ नहिं कछु जियरामें * औ बरातको होउ तयार ॥
जोनहिं चलिहौ तुम बरातको * तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
बात मानिलइ तब माहिलने * औ बरात को भये तयार ॥
जितने घरौआ रहैं माहिल के * सो ऊदनिने दियो लौटाय ॥
अकिले संग लियो माहिल को * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
उठी सवारी ब्रह्मा नँदकी * झंडन रही लालरी छाय ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई * तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
घोड़ी हिरौंजिनको सजवायो * तापर सुलिखे भये सवार ॥
सात दिनाको धावा करिके * दिल्ली निकट पहूँचे जाय ॥
पाँचकोश जब दिल्ली रहिगई * तहँ पर डेरा दियो लगाय ॥
फटैं छुटिगइँ रजपूतन की * हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
जीन उतारि दिये घोड़न के * सब राजा ने करी मुकाम ॥
नाच होन लागीं तँबुअन में * तबला ठनकि २ रहिजाय ॥
ऊदनि बोले सुनि आल्हा ते * अब विवाहको करौ बिचार ॥
जायके पूँछौ तुम राजा ते * पहिले होय कौनसो काम ॥
इतनी सुनिके आल्हा चलिभये * पहुँचे जहाँ रजा परिमाल ॥
करी बन्दगी चन्देले को * तब राजा ने कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कौन कामको तुम आये हो * सोतुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले राजा परिमाले ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
पंडित अपने को बुलवाओ * ब्याहकि साइति देय बताय ॥
भयो बुलौआ तब पंडित को * सो तम्बू में पहुँचे आय ॥
खोलि पत्तरा देखन लागे * ब्याह महूरत दियो बताय ॥
नीकी सायति दरवाजे को * ऐपनवारी देउ पठाय ॥
इतनी सुनितै नर मलिखे ने * रुपना बारी लियो बुलाय ॥
ऐपनबारी तुम लै जावो * दिल्ली खबरि देउ पहुँचाय ॥
यह सुनि रुपना बोलन लागे * हमना शीश कटै हैं जाय ॥
कठिन मवासी गढ़ दिल्ली है * भारी मारु पिथौरा क्यार ॥
बोले ऊदनि तब रुपना ते * रूपन अकिलगई तुम्हारि ॥
ब्रह्मा ब्याहन को रहि हैं ना * यहुदिनु कहिबे को रहिजाय ॥
मुखते हीनी तुम बोलत हौ * ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
तुमको नेगी हम समुझैं ना * तुमतो भैया लगो हमार ॥
इतनी सुनिकै रुपना बोल्यो * लावो हमहिं ढाल तलवारि ॥
घोड़ा लावो ब्रह्मा वाला * औ दे देउ बैजनी पाग ॥
तो हम चले जायँ दिल्ली को * ऐपनवारी देयँ पठाय ॥
जो कछु माँगो तहँ रुपना ने * ऊदनि तुरत दियो मँगवाय ॥
रुपना चलिभयो तब दिल्ली को * ऐपनवारी लई उठाय ॥
जाय पहूँचो जब फाकट पर * दरबानी ने कही सुनाय ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहो * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोल्यो रुपना दरबानी ते * तुम सुनिलेउ हमरी बात ॥
आई बरायत ब्रह्मानँद को * जो महुबे के राजकुमार ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * औ रूपन है नाम हमार ॥
खबरि सुनावौ महाराज को * हमरो नेग देउ मँगवाय ॥
बोलो दरबानी रूपना ते * अपनो नेग देउ बतलाय ॥
सो बतलावैं हम राजा को * तुम्हरी खबर देउँ पहुँचाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोलो रूपना दरबानी ते * यह राजा ते कहो सुनाय ॥
बारी आयो है महुबे ते * मागँत नेग आपनो ठाढ़ ॥
नेग हमारो यहै बतावो * ढारे चलै कठिन तलवारि ॥
यहसुनि चलिभयो दरबानी तब * पहुँचो जाय राज दरबार ॥
लगी कचहरी पृथीराज की * जो नरनाह बीर चौहान ॥
सोने सिंहासन पृथी बैठे * जामें जड़े जवाहिर लाल ॥
हीरा चमकै भाँति भाँति के * कलँगी फहर फहर फहराय ॥
गजभरि छाती पृथीराज की * औ नैनन में बरे मसाल ॥
दुइ हजार क्षत्री तहँ बैठे * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
देवी मरहटा दक्षिण वाला * अंगद भूप ग्वालियर क्यार ॥
धाँधू बैठो राज सभा में * ब्राह्मण शूर चौड़िया राय ॥
बीर मुगन्ता रिहमत सहिमत * भूरा मुगुल काबिली ज्वान ॥
सातौ बेटा पृथीराज के * बैठे तहाँ राज दरबार ॥
ताहर गोपी सूरज चन्दन * सर्दनि मर्दनि राजकुमार ॥
सतवाँ बेटा पारथ कहिये * जो मरिबे को नाहिं डराय ॥
करी बन्दगी दरबानी ने * औ राजाते लगो बतान ॥
आई बरायत गढ़ महुबे ते * ऐपनवारी दई पठाय ॥
बारी ठाढ़ो है फाटक पर * अबहीं नेग देहु पहुँचाय ॥
नेग आपनो एहु मागत है * ढारे चले कठिन तलवारि ॥
इतनी सुनिकै दरबानी ते * गुस्सा भये बीर चौहान ॥
सूरज बेटा को बुलवायो * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बाँधि लै आवो वा बारी को * हमरी नजर गुजारो आय ॥
यह सुनि तुरतै सूरज चलिभये * अलँगा परी ढाल तलवारि ॥
देर देखिकै रुपना बारी * समुहें तुरत पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * ऐपनवारी दई चलाय ॥
रुपना बोलो महाराज ते * तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
हम हैं बारी परिमालै के * हमरो नेग देहु मँगवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनेकै पृथीराज ने * तब ताहर ते कही सुनाय ॥
जान न पावे महुबे वाला * याको शीश लेउ कटवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने * ताहर हल्ला दिये कराय ॥
छाँड़ि आसरा जिंदगानी को * रुपना खैंचि लई तलवारि ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
जितने क्षत्री रुपने घेरा * उतने धरती दिये गिराय ॥
रुपना आयो पृथीराज पै * अपनो भाला लियो निकार ॥
नोक ते तुरतै ऐपन वारी * सो रुपना ने लई उठाय ॥
नेग हमारो जो बाकी है * सो भौरिन में लेहौं आय ॥
इतनी कहिकै रुपना चलिभये * फाटक निकरि गये बापार ॥
रुपना घेर्‍यो गलियारेन में * क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
देखि हाल यह रुपना बारी * लै तलवारि पहूँचो जाय ॥
रुपना मारे ज्यहि क्षत्री को * सो गिरिपरे धरनि भहराय ॥
तीनि घरी भरि चली शिरोही * गलियन बही रक्तकी धार ॥
बाग मरोरी हरनागर की * रुपना निकरि गयो बापार ॥
रुपना पहुँचो जब फौजन में * देखो ताहि रजा परिमाल ॥
खूनते बूड़ो रुपना बारी * घोड़ा लाल बरन होइ जाय ॥
पूछन लागे ऊदनि ठाकुर * रुपना हाल देउ बतलाय ॥
कैसी गुजरी दरवाजे पर * सो सबहाल कहौ समुझाय ॥
रुपना बोल्यो तब ऊदनि ते * द्वारे चली कठिन तलवारि ॥
दुइ हजार क्षत्रिन ने घेर्‍यो * खटखट चलनलगी तलवारि ॥
मोहरा मारयो रजपूतन की * ऐपनवारी लयो उठाय ॥
हाल सुनो जब यह माहिल ने * तब ऊदनि ते कही सुनाय ॥
अबहीं जैहैं हम दिल्ली को * औ राजा ते कहौं सुनाय ॥
करिकै नेग चार द्वारे सब * सातो भाँवरि देउ डराय ॥
इतनी कहिके माहिल राजा * लिल्ली घोड़ी भये सवार ॥
जायके पहुँचे गढ़ दिल्ली में * जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

उतरि बछेरी ते भुइँ आये * घोड़ा थमिलई थनवार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * राजा चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
माहिल बोले महाराज ते * तुम सुनिलेउ पिथौरा राय ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबे के * तिनते आप जीतिहौ नाहिं ॥
सीख हमारी राजा मानो * शर्बत अबहिं देउ पहुँचाय ॥
जहर घोराय देउ शर्बत में * पियतै मरैं महोबिया ज्वान ॥
बात तुम्हारी सब रहिजावे * लाठी बिना साँप मरिजाय ॥
बात मानिलइ पृथीराज ने * सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
नेगी औ कहार बुलवायो * तुरतै शर्बत दियो घोराय ॥
जहर घोराय दियो शर्बत में * नौसे गगरी दई भराय ॥
सूरज चलिभये अगवानी को * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
तंबू पूछो परिमालै को * दरबानी ने दियो बताय ॥
बैठे राजा तहँ गद्दी पर * दहिने डटे बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी सूरजमल ने * सिगरी बहिंगी दई धराय ॥
बोले सूरज परिमालै ते * भेजो हमहिं बीर चौहान ॥
शर्बत लाये हम बरात में * सो क्षत्रिनको देउ बटाय ॥
करो तयारी दरवाजे को * यहु कहि दई बीर चौहान ॥
किया इशारा तब मलिखे ने * ऊदनि बेलवा लियो मँगाय ॥
हाथ कटोरा लियो ऊदनि ने * समुहें भई तड़ाका छींक ॥
ऊदनि सोचे तब अपने मन * कौनौ कारन परै दिखाय ॥
ढेबा शगुनियां को बुलवायो * भैया शगुन देउ बतलाय ॥
बोलो ढेबा शगुन देखिकै * ऊदनि बचन करौ परमान ॥
जहर घुरो है या शर्बत में * क्षत्री पियत तुरत मरिजायँ ॥
शर्बत दीजो ना काहू को * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनतै ऊदनि ठाकुर * कुत्ता एक लियो बुलवाय ॥
शर्बत प्यायो तेहि कुत्ता को * कुत्ता तुरत गयो मुरझाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गुस्सा होइकै तब ऊदनि ने * सिगरो शर्बत दियो फेंकाय ॥
नेगी आये जो दिल्ली के * तिनको ऊदनि मारनलाग ॥
नेगी भागे सूरज भागे * पहुँचे गढ़ दिल्ली में जाय ॥
करी बन्दगी बादशाह को * औ बरातको कह्यो हवाल ॥
बड़े सगुनियाँ हैं महुबे के * जिनकी शगुन न खालीजाय॥
तुमने शर्बतजो भर्यो रह * सो खन्दकमें दियो फेंकाय ॥
अब सब ऐहैं दरवाजे पर * ताको अब कछु करौ उपाय ॥
बोले माहिल तब राजा ते * औ महराज गरीब नेवाज ॥
सीख हमारी राजा मानौ * तौ हम यतन देयँ बतलाय ॥
बाँस गोड़ि देउ दरवाजे पर * ऊपर कलशा देउ धराय ॥
जौंरा भौंरा मदमाते करि * दोनों हाथी देउ छोड़ाय ॥
आवैं महोबिया जब द्वारे पर * तब कहिदीजो बात सुनाय ॥
हमरे कुलमें यहै रीति है * सो तुम जानि लेउ व्योहार ॥
द्वार चार पीछे ते होइहै * पहिले हाथी देउ पछारि ॥
कलश उतार लेउ लग्गी ते * तौ हम भाँवरि देउँ डराय ॥
सीख मानिलइ उन माहिल की * माहिल बहुत खुशी होइजाय ॥
माहिल चलिभये तब लिल्लीपर * औ बरात में पहुँचे आय ॥
पृथीराज पहुँचे ड्योढ़ी पर * महलन खबरि दई करवाय ॥
त्यारी होनलगी महलन में * पहुँचे महाराज तहँ जाय ॥
खम्भ मँगायो मलया गिरिके * सो आँगन में दिये गड़ाय ॥
मड़वा छाय गयो पानन ते * सोने कलश दियो धरवाय ॥
चौकी डरवाई चन्दन की * सखियाँ लई सबै बुलवाय ॥
करी तयारी दरवाजे की * द्वारे लग्गी दई गड़ाय ॥
कलश सूबरनको तापर धरि * हाथी मस्त लिये मँगवाय ॥
सो छुड़वाय दियो द्वारे पर * जौंरा भौंरा जिनको नाम ॥
हियाँ कि बातैं तौ हियँ छाड़ौ * अब आगेको सुनो हवाल ॥
बोले ऊदनि नर मलिखे ते * दादा त्यारी लेउ कराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करौ दुआरौ ब्रह्मानँद को * अबना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनते नर मलिखे ने * लश्कर हुक्म दियो करवाय ॥
सजैं बराती सब जल्दी ते * लश्कर जल्द होय तैयार ॥
बजो नगरा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
हौदा धरिदिये सब हाथिन पर * घोड़न जीन दिये धरवाय ॥
ऊँट पालकी गजरथ सजिगे * जिनको सजन न लागी बार ॥
यक यक हाथी के हौदा पर * चढ़िगे चारि चारि असवार ॥
अपनी अपनी असवारिन पर * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
तोपैं जोतवाई आगे को * लश्कर कूच दीन करवाय ॥
चली पालकी ब्रह्मानँद की * झंडन रही लालरी छाय ॥
झंडा धूमैं दरियायिन के * बाजैं तोरही औ कंडाल ॥
बायें बेंदुला के चढ़वैया * दहिने चले बीर मलिखान ॥
पाछे पालकी चन्देले की * संगहि मंडलीक अवतार ॥
सात कोसके चौगिर्दा में * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
धूरि उड़ानी आसमान लौं * सबिता रहे धुंधिमें छाय ॥
खबरि पहूँची पृथीराज को * आवत फौज महोबे क्यार ॥
सातौ बेटा तब बुलवाये * देबी मरहठा लियो बुलाय ॥
पूरन राजा औ अंगद को * चौड़ा धांधू लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो इन सबही के * लश्कर जल्द करौ तैयार ॥
जितने राजा न्योते आये * सो हाथिन पर भये सवार ॥
सातौ बेटा पृथीराज के * सो घोड़न पर भये सवार ॥
बजो नगारा गढ़ दिल्ली में * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
पंडित बुलवायो राजा ने * द्वारे चौक दियो पुरवाय ॥
घट भरवायो गंगाजल ते * सो द्वारे पर दियो धराय ॥
पूजन करि कै श्रीगणेश को * सब सामग्री दई धराय ॥
ताहर बेटा को बुलवायो * सो अगवानी दियो पठाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यक हरकारा को बुलवायो * सो लश्कर में दियो पठाय ॥
पहुँचे ताहर जब बरात में * औ आल्हा को करी सलाम ॥
हमहिं पठायो अगवानी को * अब द्वारे को होउ तयार ॥
जबहीं पहुँचे सब द्वारे पर * तब ताहरने कही सुनाय ॥
हमरे कुल में यही रीति है * सो सुनिलेउ बनाफर राय ॥
जो कोउ आवै दरवाजे पर * पहिले हाथी देय पछारि ॥
हाथी झूमैं जौंरा भौंरा * देखत जिनहिं शूर डरिजात ॥
साँकल फेरी द्वउ हाथिनने * लश्कर रेन बेन होइजाय ॥
यक ललकार दई हाथीको * झपटे तुरत बीर मलिखान ॥
दाँत पकरि धरतीपर पटक्यो * देखें खड़े बीर चौहान ॥
सूँड पकरिके बघऊदनिने * दुसरो हाथी दियो पछारि ॥
देखि हाल यह पृथीराज तब * मनमें गये सनाका खाय ॥

—:*****:—

॥ दिल्लीकी लड़ाई समाप्त ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ दरवाजे की लड़ाई ॥

॥ आल्हा ॥

सुमिरन करि के नारायणको * औ गणपतिके चरण मनाय ॥
कहौं लड़ाई दरवाजे की * शारद मोको होउ सहाय ॥
बोले ताहर आगे बढ़िके * तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
कलश उतारि लेउ लग्गीते * तो हम द्वारो देउँ कराय ॥
बोले मलिखे तब जगनिकते * अबही कलशा लेउ उतारि ॥
यह सुनि जगनिक आगे बढ़िगे * औ लग्गी पै पहुँचे जाय ॥
ताहर बोले कमलापति ते * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
तुम्हरी बरनीको जगनिक है * तुरतै लेउ जँजीरन बाँधि ॥
इतनी सुनतै कमलापति ने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
बढ़ि ललकारो जगनायक को * ठाकुर सावधान होइ जाउ ॥
हाथ चलैहौ जो कलशापर * तो घोड़ा ते दिहौं गिराय ॥
इतनी सुनतै जगनिक तड़पे * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जगनिक पहुँचिगये हौदा पर * औ मस्तीक अड़ाये पाँय ॥
मारि महाउत कमलापतिको * सो धरती पर दियो गिराय ॥
देखि हकीकति कमलापतिने * अपनो खैंचि लई तलवारि ॥
चेहरा मारो जगनायकको * जगनिकदीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही गहि गहि मारी * जगनायक लइ चोट बचाय ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रके * जगनिक खैंचिलई तलवारि ॥
करो जाड़ाका कमलापति पर * कमला दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटिगइ गैंडा वाली * गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
बारह कड़ियाँ कटि बख्तरकी * चाँदी फूल गिरे झहनाय ॥
घाव लागि गयो तब तोंदीमें * कमला गिरे धरनि भहराय ॥
कमला जूझे दरवाजे पर * ताहर मनमें गे घबराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

रहिमत सहिमत जिन्सी वाले * तिनते ताहर कही सुनाय ॥
मोहरा मारौ जग नायकको * औ द्वारेते देउ भगाय ॥
देखि हाल यह बघऊदनि ने * मन्नागूजर लियो बुलाय ॥
फिरि समुझायो नर देवा को * भैया बहुत रहेउ हासयार ॥
तुम्हरी बरनी के दोनों हैं * भैया इनको देउ भगाय ॥
खैंचि शिरोही लियो क्षत्री ने * खटखट चलनलगी तलवारि ॥
घायल होइकै दरवाजे ते * रहिमत सहिमत गये पराय ॥
भगे सिपाही पृथीराज के * द्वारे कठिन चली तलवारि ॥
हुक्म दैदियो तब ताहर ने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर * तुरतै आगी दई लगाय ॥
धुवाँ उड़ानों आसमानलौं * द्वारे रही अँधेरिया छाय ॥
चहुँदिशि गोला छूटनलागे * गोला मन्न मन्न मन्नाय ॥
एक घरी लौं गोला छूटे * क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
सातौ बेटा पृथीराज के * तिनहू खैंचे लई तलवारि ॥
खटखट खटखट तेगा बोले * ब्वाले छपकछपक तलवारि ॥
चलै जुनव्वी औ गुजराती * ऊना चले बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * कटिकटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
दोनों फौजनके संगम में * कोताखानी चलै कटार ॥
पैदल अभिरिगये पैदल सँग * औ असवारनते असवार ॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगये * सबके मारु मारु रट लागि ॥
अँटके डंडा अम्बारिन के * ऊपर पेश कब्जकी मारु ॥
चारि घरी भरि भई लड़ाई * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
घैहा डारे जो लोहू में * तिनके प्यास प्यास रट लाग ॥
एक लाख क्षत्री दिल्ली के * ऐसो कठिन भयो संग्राम ॥
ऊदनि पहुँचिगये लग्गी पै * सोने कलशा लियो उतारि ॥
बोले ऊदनि तब ताहरते * औरो रीति देउ बतलाय ॥
देखि हाल यह पृथीराज ने * द्वारेवार दियो करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

नेग चार करिके द्वारको * व्याहके साइति दइ बिचराय ॥
हालु जानिकै माहिल राजा * पहुँचे पृथीराज पै जाय ॥
बोले माहिल उरई वाले * तुम सुनिलेउ पिथौरा राय ॥
जो कहुँ व्याह होय महुबे में * कोउ न पियै घड़ाको पानि ॥
सीख हमारी राजा मानौ * सेंइ करौ बीर चौहान ॥
यह कहि पठवो तुम बरात को * हमरे कुला यहै व्योहार ॥
पहिले करि लेयँ समधोरा हम * पीछे होय व्याह का काम ॥
सबै घरौआ औ चन्देले * तिनको अबहीं लेउ बुलाय ॥
जबहीं आवैं महुबे वाले * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
यह मन भायगई पिरथी के * औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
पहिले करिके समधोरा हम * पीछे देहैं व्याह कराय ॥
इतनी सुनकै ऊदनि चलिभये * आये जहाँ रजा परिमाल ॥
हाल सुनायो समधोरे को * तब उन पलकी लई मँगाय ॥
तुरतै पलकी पर चढ़ि बैठे * औ द्वारे पर पहुँचे जाय ॥
गजभरि छाती पृथीराज की * औ नैनन में बरै मसाल ॥
तिनते कौन करे समधौरा * क्यहि रजपूत लीन्ह अवतार ॥
सूरति देखी पृथीराज की * बोले ऊदनि ते परिमाल ॥
उमिरि हमारी बूढी होइ गइ * खाड़ाँ सागर धरा पखारि ॥
है कछु धोखा समधोरे में * ताको अबहीं करौ उपाय ॥
इतनी सुनिके ऊदनि चलिभै * औ आल्हा पै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले * दादा सुनिलेउ बात हमारि ॥
नहिं है मनसा समधोरे की * गै परिमाल सनाका खाय ॥
तौलो आयगयो मलिखे तहँ * जिनते ऊदनि कह्यो हवाल ॥
बोले मलिखे तब आल्हा ते * दादा मंडलीक अवतार ॥
जेठो भैया बाप बरोबर * तुम समधोरा करो बनाय ॥
पान लगावौ पृथीराज के * अब ना राखो देर लगाय ॥
इतनी सुनतै मुनि आल्हा ने * हथिपचसावद लियो मँगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सो सजवाय लियो जल्दी ते * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला पर ऊदनि चढ़ि * घोड़ी कबुतरी पर मलिखान ॥
तीनों चालभये तब लश्कर ते * औ द्वोरपर पहुँचे आय ॥
समुहें पृथीराज ठाढ़े रहे * आल्हा उतरि पेर अरगाय ॥
भयो सामना शब्द बोधते * जो नरनाह बीर चौहान ॥
दही लगायो तब छाती में * ऊपर पान दियो चपकाय ॥
जोधा ठाढ़े जो द्वारे पर * देखैं सबै तमाशा ठाढ़ ॥
छाती मिलाइ जब दोनों ने * धरती गिरो पसीने आय ॥
जाफ आयगइ तिन दोनोंको * सोचो पृथीराज महराज ॥
बड़े बली हैं महुबे वाले * रानी देव कुँवरिके लाल ॥
पृथीराज बोले आल्हा ते * तुम सुनि लेउ बनाफरराय ॥
अबहिं चढ़ावा तुम पठवावो * जल्दी होय ब्याहको साज ॥
इतनी सुनिके आल्हा चलिभे * औ तम्बू में पहुँचे जाय ॥
लौटे पृथीराज द्वारे ते * औ ड्योढ़ी में पहुँचे जाय ॥
बोले आल्हा नर मलिखे ते * अबहीं चढ़ावा देउ पठाय ॥
डब्बा भेजि देउ गहने को * ब्याहके कपड़ा देउ पठाय ॥
इतनी सुनिके नर मलिखे ने * गहने कपड़ा लियो निकारि ॥
भयो बोलौवा तब रुपना को * सो तम्बू में पहुँचा जाय ॥
गहने कपड़ा दै रुपन को * औ सबहाल दियो बतलाय ॥
रुपना चलिभये डब्बा लैके * औ ड्योढ़ी में पहुँचे जाय ॥
गहनो सौंपि दियो नेगिनको * सब सामान दियो पकराय ॥
लैके गहना नेगी पहुँचे * तुरतै रंगमहल में जाय ॥
भयो बोलौवा तब बेलाको * सो मड़ये तर पहुँची आय ॥
संग सहेली रहिं बेला की * सो गहनेको देखन लागि ॥
देखि के गहना बेला जरिगई * औसब गहना दियो फैलाय ॥
ब्याला बोली एक सखी ते * गुस्सा रही देहमें छाय ॥
गहना लैके जो आयो है * ताको अबहीं लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब रुपना को * सो समुहें पर पहुँचा आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथ जोरिके रुपना ठाढ़ो * बेला तासो कही सुनाय ॥
कलियुग वालो गहना लैके * व्याहन आये साजि बरात ॥
तुम यह कहौ जाय आल्हा ते * द्वापर गहना देउ पठाय ॥
गहनो लावो हस्तिना पुरको * चुरिया चुनरी देउ पठाय ॥
तौ तौ ब्याह होय दिल्ली में * नहिं सब लौटि महोबे जायँ ॥
यह सुनिचलिभयो रुपनावारी * औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिके रुपना बोल्यो * दादा अब कछु करो उपाय ॥
जितनो गहना तुम भेजो है * सो बेलाने दियो फैलाय ॥
गहना माँगै द्वापर वालो * चुरिया चुनरी पठइ मँगाय ॥
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर * दादा करिहौ कौन उपाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदनि ते * भैया धीर धरो मनमाहिं ॥
आल्हा चलिभये झारखंडको * खांडा बिजुलिया लियोउठाय ॥
जाय पहूँचे तब मंदिर में * अस्तुति करी बनाफर राय ॥
होम कियो श्रीजगदम्बा को * अपनो शीश चढ़ावनलाग ॥
हाथ पकरि लियो तब देवी ने * औ आल्हाते लगी बतान ॥
कौन काजहित शीश चढ़ावो * सोतुम हमहिं देउ बतलाय ॥
हाथ जोरिके आल्हा बोले * माता धर्म तुमारे हाथ ॥
ब्याहकरन हित ब्रह्मानँद को * हम दिल्ली लै गये बरात ॥
बेला बेटी पृथीराज की * सो गहने को रही मँगाय ॥
द्वापर वालो गहना मागै * चुरिया चुनरी रही मँगाय ॥
इतनी सुनिके देवी बोली * आल्हा धीर धरौ मनमाहिं ॥
बैठे रहो यहाँ मन्दिर में * अबहीं होइहैं काम तुम्हार ॥
इतनी कहिकै देवी चलिभई * पहुँची इन्द्रलोक में जाय ॥
बोली देवी तब इन्दर ते * अटको काज चँदेले क्यार ॥
बेला बेटी पृथीराज की * हैजो द्रोपदिको अवतार ॥
गहना माँगे वह द्वापर को * चुरिया चुनरी रही मँगाय ॥
इतनी सुनिके इन्द्रदेव ने * तब बासुकको लियो बुलाय ॥
गहना लावो द्वापर वालो * तब बेलाको होय बियाह ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह सुनि बासुकगै पताल में * सिगरो गहना लाये उठाय ॥
सो पकराय दियो देवी को * तब चलिदई अम्बिकामाय ॥
आई देवी तब मन्दिर में * आल्है गहना दियो गहाय ॥
चुरियाँ चुनरी द्वापर वाली * सो आल्हाको दइ पकराय ॥
लैके गहना आल्हा चलिभये * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
रुपना बारीको बुलवायो * औ सबगहनो दियो पकराय ॥
गहनो लैके रुपना चलिभयो * पहुँचो रंग महल के द्वार ॥
गहनो पहुँचायो बेला पै * बेला देखि खुशी होइजाय ॥
हँसिहँसि गहना ब्याला पहिरो * पूरन हुइगया काम हमार ॥
चलिभयो रुपना तब ड्योढ़ी ते * औ बरात में पहुँचो जाय ॥
हाल कह्योसब सुनि आल्हा ते * पूरन होइ गयो काम तुम्हार ॥
सुनो हाल जब यह माहिल ने * अपनो घोड़ी लई मँगाय ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे * पहुँचे जहाँ पिथौरा राय ॥
उतरि बछेरी ते आगे चलि * पृथीराज को करी सलाम ॥
नजरि बदलिगई पृथीराज की * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोलो माहिल तब राजा ते * अबतुम मानो बात हमारि ॥
होयँ घरौआ जो महुबे को * सो मड़ये तर लेउ बुलाय ॥
शूर बीर क्षत्री बुलवावो * सो कोठरिनमें देउ छिपाय ॥
जबहीं आवैं महुबे वाले * सबके मूँड़ लेउ कटवाय ॥
बात मानिके पृथीराज ने * तब माहिलते कही सुनाय ॥
भली बताई माहिल राजा * रहिहैं दोनों धर्म हमार ॥
दुइ हजार क्षत्री बुलवाये * सो महलनमें दिये छिपाय ॥
मोती बेटा को बुलवायो * ताते कह्यो बीर चौहान ॥
जल्दी जावो तुम लश्कर को * औ आल्हाते कहियो जाय ॥
जल्दी त्यार होउ मड़ये को * अबहीं भौंरी दिहैं डराय ॥
हुक्म पायके मोती चलिभये * औ नेगिन को लीन्हें साथ ॥
मोती पहुँचि गये लश्कर में * औ आल्हा पै पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करी बन्दगी जुनि आल्हा को * औ आल्हाते कही सुनाय ॥
जितने घरौआ हैं महुबे को * सो हमरे सँग होउ तयार ॥
शंका छोड़ि देउ जिअरा को * सातौ भाँवरि दिहौं डराय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
गंगा कीन्ही तब मोती ने * औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
देश हमारे यहै रीति है * आगे कुला २ ब्योहार ॥
जितने घरौआ होयँ बराती * सोई साथ होयँ तैयार ॥
इतनी सुनिके जुनिआल्हा ने * ब्रह्मानंदहि लियो बुलाय ॥
पलकी मँगवाई ब्रह्मा को * तापर ब्रह्मा भये सवार ॥
सजे घरौआ सब बरात के * जिनको सजत न लागीबार ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा * सोऊ तुरत भये तैयार ॥
जोगा भोगा नैना गढ़के * जिनको जानत सकल जहान ॥
मोहन राजा बौरी वाले * रनमें एक शूर सरदार ॥
ताल्हन सैयद बनरस वाले * जिनकी बेंड़ि बहै तलवारि ॥
राजा जगनिक जगनेरी के * जिनको भाला प्रगट जहान ॥
मन्ना गूजर महुबे वाले * जो मरिबे को नाहिं डराय ॥
यह दश शूर महोबे वाले * तुरतै साजि भये तैयार ॥
अपने घोड़न पर चढ़ि बैठे * अपने बाँधि २ हथियार ॥
चली पालकी ब्रह्मा नन्दकी * संगै चले घरौआ ज्वान ॥
जायके पहुँचे फाटक भीतर * मोती आगेको बढ़ि जाय ॥
मोती बोले पृथीराज ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
आई पालकी ब्रह्मा नन्दकी * आये साथ घरौआ ज्वान ॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने * फाटक बंद दियो करवाय ॥
पहुँचि पालकी गइ ड्योढ़ी में * ब्रह्मा उतरि परे अरगाय ॥
जाय पहूँचे जब मड़ये तर * तुरतै अक्षत दिये बँड़ाय ॥
नेग चार करिके मड़ये तर * तुरतै बेलाहि लियो बुलाय ॥
भयो गठि बंधन वर कन्या को * पंडित होम दियो करवाय ॥
सखियाँ मँगल गावन लागीं * बन्दी सुयश बखानन लाग ॥

॥ दरवाजे की लड़ाई समाप्त ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ मड़ये की लड़ाई ॥

—:***:—

॥ आल्हा ॥

सुमिरन करिके नारायण को * जगदम्बे के चरण मनाय ॥
कहौं लड़ाई अब मड़येकी * शारद मोको होउ सहाय ॥
भौंरी परन लगी ब्रह्मा की * पंडित बेद उचारन लाग ॥
पहिली भाँवरि के परखेतन * सूरज खैंचि लई तलवारि ॥
कियो जड़ाका ब्रह्मानँद पर * जगनिक दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
दुसरी भाँवरि के परते खन * चन्दन खैंचि लई तलवारि ॥
करी चोट जब ब्रह्मानँद पर * ढेवा लीन्ही चोट बचाय ॥
तिसरी भाँवरि के परतेखन * सरदनि खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई जब ब्रह्म पर * मन्ना लीन्हीं चोट बचाय ॥
चौथी भाँवरि के परते खन * मरदनि खैंचिलई तलवारि ॥
करो जड़ाका ब्रह्मानँद पर * जोगाने लइ चोट बचाय ॥
भाँवरि पँचई के परते खन * गोपी चोट चलाई आय ॥
भोगा सारोजो आल्हा को * ताने लीन्ही चोट बचाय ॥
छठई भाँवरि के परते खन * पारथ खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका ब्रह्मानँद पर * ऊदनि दीन्ही ढाल अड़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सतई भाँवरि के परतै खन * ताहर खैंचि लई तलवारि ॥
करो चोट जब ब्रह्मानँद पर * मलिखे लीन्ही चोट बचाय ॥
हल्ला हुइ गयो फिरि मड़ये में * निकरेशूर कोठरियन क्यार ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने * खटखट चलन लगी तलवारि ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * मड़ये खूब चली तलवारि ॥
जितने क्षत्री सन्मुख आये * महुबे वालेन दियो गिराय ॥
सातौं बेटा पृथी राज के * ताहर खैंचि लई तलवारि ॥
चारिघरी भरि चली शिरोही * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
कपड़ा भीजि गये लोहू ते * बेला खून ते गई नहाय ॥
बिकट लड़ाई भइ मड़ये में * सातौ बेटा लिये बँधाय ॥
सुनी खबरि जब पृथीराज ने * मनमें बहुत गये घबराय ॥
चौड़ा ब्राह्मण बोलन लाग्यो * द्रोणाचारज को अवतार ॥
छोटे लरिका देवे वालो * जाको नाम उदैसिंह राय ॥
बड़ो लड़ैया है बाँको यहु * ताने जौहर करे बनाय ॥
धीरज राखो अपने मन में * मरिहौं ताहिं अबहिं तहँ जाय ॥
इतनी कहिकै चौड़ा चलिभयो * औ मड़ये पर पहुँचो जाय ॥
करी अधीनी तहँ चौड़ा ने * औ आल्हाते कही सुनाय ॥
हौ सब लायक देबै वाले * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
बड़े शूर हौ तुम महुबे के * तुमते कोउ जितैया नाहिं ॥
कैदछाँड़ि देउ अब लरिकनकी * पूरन होइगयो काम तुम्हार ॥
इतनी सुनिकै सुनिआल्हाने * सबको कैद दई छोड़वाय ॥
कैद छूटिगई जब लरिकनकी * तब चौड़ाने कही सुनाय ॥
नेग जोगजो बाकी रहिगयो * सोऊ अबहिं लेउ करवाय ॥
इतनी सुनिके तब आल्हाने * बाकी नेग लिये करवाय ॥
नाउनि आई पृथीराज की * सो आल्हा ते लगी बतान ॥
लरिका भेजिदेउ भीतर को * जल्दी खाय कलेवा जाय ॥
अकिला लरिका महलन जैहैं * है यह हुक्म पिथौरा क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * हमरे कुला यहै व्योहार ॥
दूलह संग जाय सहबोला * जेंवै तबहि तौन ज्योंनार ॥
यहसुनिनाउनिमहलनचलिभई * ब्रह्मा ऊदन संग लिवाय ॥
बिछे गलीचा रंगमहल में * तापर दोनों बैठे जाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * पाई खबरि चौड़िया राय ॥
लहँगा लुगरी चौड़ा पहिरो * चुरियाँ पहिरि मोतिया क्यार ॥
गहना पहिरिलियो तिरियन को * तुरतै लियो घूँघटा काढ़ि ॥
भेष जनाना चौड़ा करिके * पहुँचो रंगमहल में जाय ॥
जहर बुझाई एक छूरी लै * सो कम्मर में लई दबाय ॥
जहँपर बैठे ऊदनि ब्रह्मा * तहँ सखियन में बैठो जाय ॥
थार परोसो अगमा रानी * सो दोनों पै दियो धराय ॥
कौर उठायो जब ऊदनि ने * चौड़ा दहिने हनी कटार ॥
घाव आयगयो तब ऊदनि के * धरती गिरे मूर्छा खाय ॥
देखि हाल यह बघऊदनि को * तुरते चौड़ा गयो बराय ॥
अगमा रानी रोवन लागी * सिगरो रोय उठी रनिवास ॥
मोह आयगयो ब्रह्मानंद को * उनहूं छाड़ि दई डिंडकार ॥
रूप देखिकै बघ ऊदनि को * अगमा रोय रोय रहिजाय ॥
चौड़ा ब्राह्मण तुम मरि जैयो * तुमपर परै इन्द्रकी गाज ॥
धोखा दियो आय महलन में * चौड़ा तेरो बुरो होइजाय ॥
जेहिको लरिका अस मारोगयो * कैसे जिये देवल दे माय ॥
रोवत २ अगमाँ चलिभई * सतखंडा पर पहुँची जाय ॥
रोवत देखो जब माता को * तब बेला ने कही सुनाय ॥
कौने कारण माता रोवौ * सोम्वहिं हाल देउ बतलाय ॥
बोली अगमा तब बेला ते * हमते बिपति कही ना जाय ॥
मारो ऊदनि को चौड़ा ने * धरिके भेष मेहरिया क्यार ॥
घाटिकरी त्यहि धोका दैके * नाहीं कियो मर्दको काम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खबरि पहुँचिहै जब देवै को * अपनो पेट मारि मरिजाय ॥
हनी कटारी है चौड़ा ने * कैसे जिये उदयसिंहराय ॥
इतनी सुनतै बेला चलि भई * औ ऊदनि पै पहुँची जाय ॥
हालु देखिकै बघ ऊदनि को * बेला छुरिया लई निकार ॥
अपनी अँगुरी एक चीरिकै * लोहू अपनो दियो चुवाय ॥
घाव पूरिगयो जब ऊदनि को * मुर्छा जगी उदौसिंहराय ॥
समुहें देखो रनि बेला को * ऊदनि चरण गये लपिटाय ॥
ऊदनि ब्रह्मा दोनों चलिभये * औ पलकी पर भये सवार ॥
चली पालकी ब्रह्मानँद की * औ बरात में पहुँची जाय ॥
जहँ पर तम्बू चन्देले को * तहाँ पालकी धरी उतारि ॥
ब्रह्मा ऊदनि दोनों उतरे * औ राजाको करी सलाम ॥
घाव दिखायो बघऊदनि ने * देखैं खड़े बीर मलिखान ॥
हाल सुनायो बघऊदनि ने * सुनिके खुशी भये परिमाल ॥
मोहरन तोड़ा उन लुटवायो * दहिने भई शारदा माय ॥
राजा बुलवायो आल्हा को * औ आल्हाते कही सुनाय ॥
सायति पूछि लेउ पंडित ते * महुबे कूच देउ करवाय ॥
रूपने भेजि देउ दिल्ली को * अबहीं बिदा देंय करवाय ॥
भये बोलौआ तब रुपना को * औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
चलि भयो रुपना तब लश्करते * पहुँच्यो बीच कचहरी जाय ॥
करी बान्दगी पृथीराज को * औ राजा ते लगो बतान ॥
हमहिं पठायो चन्देले ने * औ यह कहा रजा परिमाल ॥
सायति नीकी है अबहीं की * जल्दी बिदा देउ करवाय ॥
बोले पृथीराज रुपना ते * हमरे कुला यहै ब्योहार ॥
गौना दे हैं साल बीच हम * यह राजा ते कहियो जाय ॥
हैं सब लायक भूप चँदेले * धनि २ बीर बनाफर राय ॥
जिन यह ब्याह करो दिल्ली में * यह सुनि रुपना करी सलाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चलि भयो रुपना गढ़ दिल्ली ते * औ लश्कर में पहुँचो जाय ॥
ज्वाब सुनायो पृथीराज को * आल्हा हुक्म दियो करवाय ॥
मेख उखारि देउ तम्बुन को * लश्कर कूच देउ करवाय ॥
हुक्म पायके भई तयारी * जीतिको डंका दियो बजाय ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * औ महुबे की पकरी राह ॥
रुपनै भेजि दियो महुबे को * मल्हनै खबरि सुनाई जाय ॥
सखियाँ बुलवाई मल्हना ने * महलन होय मंगला चार ॥
आई बरायत गढ़ महुबे में * महुबे दगन सलामी लागि ॥
आई पालकी ब्रह्मानँद की * मल्हना आरति धरी उतारि ॥
दान दक्षिणा और निछावार * सबको दीन्ही तुरत बँटाय ॥
जितने बराती राजा आये * सबको बिदा दई करवाय ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे सबको * ब्रह्मा मिले जोरि दुइ हाथ ॥
चरण लागि के महतारी के * सो माथे में लियो लगाय ॥
हाल बतायो सब दिल्ली को * ऊदनि मल्हनैं दियो समुझाय॥
सालके भीतर गौना होइ हैं * माता सब परताप तुम्हार ॥
ऐसे व्याह भयो ब्रह्मा को * सोहम लिखिके दियो सुनाय॥
व्याह सुनैहौं अब ऊदनि को * करि हैं भोला नाथ सहाय ॥

* इति दिल्ली की लड़ाई (ब्रह्माका व्याह) सम्पूर्णम् *

—*****—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ नरवरगढ़ की लड़ाई ॥

ऊदनि का ब्याह ।

दो०—भोला नाथ मनाय उर, सीताराम सहाय ।
अब ऊदनि को व्याह मैं, लिखी सुअवसर पाय ॥ १॥

सवैया ।

रामको नाम बड़ो जगमें सोइ रामको नाम रटैं नरनारी ॥
रामके नाम तरी सेवरी बहुतारे अजामिलते खलभारी ॥
रामको नाम लियो हनुमान हते बहु निश्चर लंक मँझारी ॥
प्रेमते नेमते राम रटौ नित रामको नाम बड़ो हितकारी ॥

आल्हा ।

कौने कारण को ब्रह्मा भे * कौने हेत बिष्णु भगवान ॥
कौने कारण श्री शंकर भे * काहे प्रगट भये हनुमान ॥
क्यहिं कारण अवतार रामको * कौने कारणको घनमाल ॥
कौन हेत जग पावन देवता * कौने हेत अग्निको ज्वाल ॥
कौने हेत भये धन्वन्तर * काहे लीन कृष्ण अवतार ॥
कौने कारण श्रीगणेश भे * क्यहिं हित चन्द्रदेव संसार ॥
जग उपजावनको ब्रह्मा भे * रक्षा करन हेत भगवान ॥
जग संहारन हित शंकर भे * लंका जारन को हनुमान ॥
रावण मारन हेत राम भे * जल बरसावन हित घनमाल॥
सुख सरसावन पवन देवता * जगआनन्दअग्निकी ज्वाल॥
रोग नशावनको धन्वन्तर * मार्यो कंस कृष्ण भगवान ॥
विघ्ननशावन हित गणेशजी * जिनको जानत सकल जहान॥
वारि बढ़ावन को समुद्रकी * निशिमें पूर्ण चन्द्रमा जान ॥
ज्ञान बढ़न हित करैं निरन्तर * चितसे इष्ट देवको ध्यान ॥
नगर महोबा एक बस्ती है * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

शूर बीर प्रगटे बहुवे में * आल्हा आदिबली अवतार ॥
बड़े बड़े योधा जगमें जीते * जिनके नाम रजा परिमाल ॥
बहुतक राजा मित्र बनाये * बहुतक हने समर मैदान ॥
बावन किला जीतिसर कीन्हें * मानी हारि गये महिपाल ॥
मार न खाई केहु योधाकी * सिगरे हारि जगत भूपाल ॥
अपन दुसरिहा जब राखौना * खाँडा सागर धरो पखारि ॥
कसम खाय लइ अमर गुरूकी * अबना गहौं हाथ हथियार ॥
भूप युधिष्ठिर तौ आल्हाभये * ऊदनि भीमसेन बलवान ॥
अर्जुन प्रगटे ब्रह्मानँद होय * औ सहदेव बीर मलिखान ॥
लगी कचहरी परिमालै को * बैठे बड़े बड़े बलवान ॥
माहिल बैठे उर्इ वाले * सो परिमाल ते लगे बतान ॥
नाम तुम्हारो देश देशमें * जानत तुमहिं सकल संसार ॥
घोड़ा काबिलते मँगवावो * जो गाढ़ेमें आवे काम ॥
कलश मगाय लेउ सोनेको * तापर बीरा देउ धराय ॥
इतनी सुनतै चन्देलेने * तुरतै कलश लिया मँगवाय ॥
पाँच पानकौ बीरा लेके * सो कलसा पर दियो धराय ॥
है कोउ क्षत्री हमरे दलमें * जो काबिलपर पान चबाय ॥
भरी कचहरी क्षत्री बैठे * सुनतै सबै गये घबराय ॥
कोऊ बीरा तन देखैना * नाहीं मसा तलक मन्नाय ॥
तौलो आये ऊदनि ठाकुर * सो माहिलते लगे बतान ॥
बीरा धरायो कौन कामको * मामा हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले माहिल तब ऊदनिते * तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय ॥
घोड़ा मँगवै हैं काबिलते * राजा बीरा दियो धराय ॥
पान चबायो ना काहूने * बहुतक क्षत्री गये बराय ॥
तड़पिके ऊदन गै बीरा पै * औ बीराको लियो उठाय ॥
घोड़ा लैहैं हम काबिलते * हमको खर्च देउ मँगवाय ॥
इतनी सुनिके राजा बोले * तुम ना जाउ लड़ैते लाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करत लड़ाई राह चलत तुम * सहजे तोप देत लगवाय ॥
चाह नहीं हमको घोड़नकी * नहिं कछु अटको काम हमार ॥
पान चबाय लियो ऊदनने * औ राजाते कही सुनाय ॥
नहीं धर्म है यह क्षत्रिनको * जो हटि थरैं पिछारी पाँव ॥
दुबिधा छाँड़ि देउ जियरेकी * जल्दी खर्च देउ मँगवाय ॥
इतनी सुनतै चन्देले ने * नर ढेवाते कही सुनाय ॥
कलहा लरिका देवै वाला * यहुना मनिहै कही हमार ॥
तुमहूँ चले जाउ ऊदन सँग * इतनी मानौ कही हमारि ॥
देश पराये में जैहौ तुम * करिओ नाहिं बखेड़ा जाय ॥
मोहरैं मँगवाई राजाने * चौदह खच्चर दियो भराय ॥
फिरि समुझायो बघऊदनको * बेटा बहुत रहो हुशियार ॥
होनहार ढेवा सब जानैं * जोगिन गुदरी लई उठाय ॥
ऊदनि ढेवा दोनौं चलि भये * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
डंका बजवायो लश्कर में * अपनी फौज लई सजवाय ॥
सुनी खबरिया जब मल्हनाने * तुरतै ऊदनि लिये बुलाय ॥
बोली मल्हना बघ ऊदनते * बेटा हमहिं देउ बतलाय ॥
कहाँकि त्यारी तुमने कीन्ही * सो तुम जल्दी कहो सुनाय ॥
यह सुनि ऊदनबोलन लागे * भेजत हमहिं चँदेलेराय ॥
घोड़ा लैहैं हम काबिल ते * ढेवा जैहैं संग हमार ॥
हँसी खुशीते आज्ञा दै देउ * तौ सबकाम सिद्धि होइजाय ॥
हुक्म दैदियो तब मल्हनाने * ऊदनि चलिभये माथ नवाय ॥
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो * ऊदनि तापर भये सवार ॥
कूच कराय दियो महुबे ते * दशपुरवा में पहुँचे जाय ॥
आल्हा समुझायो ऊदनिको * तुम ना जाउ लहुरवा भाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले * दादा हम मनिबेके नाहिं ॥
बीरा चबायो हम कादिलको * भेज्यो हमहिं रजापरिमाल ॥
आल्हा सोचे अपने मनमें * यहुना मनिहै कही हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हुक्म देदियो तब आल्हा ने * चलिभै उदनि माथ नवाय ॥
देवे सोनवाँ दोनों हटकैं * ऊदनि एक न मानी बात ॥
सोनवाँ समुझायो ऊदनि को * देवर बहुत रहेउ हुशियार ॥
चरण लागिकै तब दोनों के * ऊदनि कूच दियो करवाय ॥
सात रोज की मंजिल करिके * नरवर गढ़में पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदनि तब ढेबाते * आगे कौन शहर दिखलाय ॥
करो बहाना तब ढेबाने * नहिं कछु जानो हाल हमार ॥
काम तुम्हारो यहँ अटको नहिं * सीधे चले चलो तुम राह ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो ऊदनि ने * नरवर गढ़ में पहुँचे जाय ॥
गाय चरावत हते बरदिया * तिनते ऊदनि पूछन लाग ॥
कौन शहर यह क्यहि राजा को * सोतुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले बरदिया तब ऊदनि ते * औ परदेशी बात बनाउ ॥
नरवर गढ़ है नाम शहर को * नरपति राजा को है राज ॥
मोरंगगढ़ है नाम दूसरो * याही शहर केर दुइ नाम ॥
यह सुनि ऊदनि घोड़ा हाँको * औ बागन में करो मुकाम ॥
अकिले ऊदनि चढ़ि घोड़ा पर * आगे घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
ऊदन पहुँचे जब पनिघटपर * पनिहारिन तनरहे निहारि ॥
रूप देखिकै पनिहारिन को * ऊदन खुशी भये मन माहिं ॥
बोले ऊदन पनिहारिन ते * घोड़े पानी देउ पियाय ॥
यहसुनि बोली एक पनिहारिन * औ परदेशी बात बनाउ ॥
हम पनिहारिन हैं फुलवाकी * पानी घोड़े पिए हैं नाहिं ॥
हँसी करत हौ क्यों हमते तुम * अपनो घोड़ा जाउ भगाय ॥
हाल तुम्हारो राजा जानि हैं * तुम्हरो घोड़ा लिहैं छँड़ाय ॥
बोले ऊदनि पनिहारिन ते * काहे घोड़ा जायँ भगाय ॥
काह बिगारी हम राजा को * जो घोड़ा को लिहैं छँड़ाय ॥
ऐसो क्षत्री हम ना देखैं * हमते करै सामने बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पानी अपनी रहन देउ तुम * घोड़ा लेहैं अनत पियाय ॥
रूप देखिकै बघ ऊदन को * सब पनिहारी रही लोभाय ॥
यक पनिहारी बोलन लागी * बहिनी मानौ बात हमारि ॥
रूपको आगर यहु क्षत्री है * कोहु राजाको राजकुमार ॥
देखि जो पावै फुलवा रानी * इनको तुरतै लेय टिकाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
केहिकी बेटी फुलवा रानी * सोतुम हमहिं कहौ समुझाय ॥
यह सुनि बोली पनिहारी यक * औ परदेशी बात उनाय ॥
फुलवा बेटी है राजाकी * नितउठि फूलन तौली जाय ॥
गुणअरु रुपशील की अगरी * ज्याहि सुन्दरता कहीन जाय ॥
परी निगाह जबहिं ऊदनि को * फुलबगिया तन रहे निहारि ॥
पूछन लागे ऊदनि ठाकुर * यह फुल बगिया केहिकै आय ॥
यह फुलबगिया है फुलवा की * ऊदनि तहाँ पहूँचे जाय ॥
उतरि बेंदुला ते बगिया में * अपनी मेख दई गड़वाय ॥
घोड़ा बेंदुला बाँधि दियो तहँ * तौलो ढेवा पहुँचो आय ॥
बोले ढेवा तब ऊदनि ते * इतनी मानो बात हमारि ॥
काम नहीं कछु यहँ रहिबे को * जल्दी मेख देउ उखराय ॥
जो सुनि पैहैं नरपति राजा * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
घोड़ा लैबो मुश्किल होइहैं * ताते कूच देउ करवाय ॥
ढेवा समुझायो ऊदनि को * मानौ नाहिं उदै सिंहराय ॥
सोचि समझिके ऊदनि बोले * भोरहि कूच दिहैं करवाय ॥
मोहर लैके यक ऊदन ने * सो ढेवाको दई गहाय ॥
रातिब लावो तुम बजारते * सो घोड़न को देयँ खवाय ॥
चलि भयो ढेवा तब जल्दी ते * तौलों माली पहुँचो आय ॥
बगिया देखी जब मालीने * तब ऊदनि ते लगौ बतान ॥
दाखि छोहारन की बगिया है * काहे गर्द दई करवाय ॥
खबरि जो पैहैं नरपति राजा * तुमको तुरतै लिहैं बँधाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भलो आपनो जो तुम चाहो * अबही कूच जाउ करवाय ॥
यहसुनि ऊदन बोलन लागे * काहे राजा लिहैं बँधाय ॥
काह बिगारो हम नरपति को * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
तोड़ा एक लियो ऊदनि ने * सो माली को दियो गहाय ॥
रातिभरे की मोहलति दैदेउ * भोरहिं जैहैं कूच कराय ॥
बहुत खुशी होयमाली बोल्यो * अबतुम दसदिनकरौ मुकाम ॥
इतनी कहिकैमाली चलि भयो * औ अपने घर पहुँचो जाय ॥
मालिन देखी जब मालीको * तब मालीते पूछन लागि ॥
काह भेंट पाई राजाते * जोतुम बहुत खुशी मनमाहिं ॥
इतनी सुनते तोड़ा लैके * सो मालिनको दियो गहाय ॥
उमिरि बीतिगई नरवर गढ़में * ऐसा कबहु न मिलो इनाम ॥
एक बटोही बगिया उतरो * ताने तोड़ा दियो गहाय ॥
तुमहूं चली जाउ बगियालो * जाते करियो बात रिसाय ॥
गुस्सादेखि तुमहिं राजी करि * तुरतै तोड़ा दिहैं गहाय ॥
यह सुनिहिरिया तुरतै चलिभई * औ बगियामें पहुँची जाय ॥
रूप देखिकै बघ ऊदन को * मालिन बहुत खुशी होजाय ॥
बोली मालिन तब ऊदन ते * अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
दाख छोहारेन को बगिया है * तुमने गर्द दई करवाय ॥
लैके तोड़ा मोहरन वालो * सो मालिनको दियो गहाय ॥
तबतो मालिन बोलन लागी * औ ऊदनिते लगी बतान ॥
कौन देशके तुम बासी हो * आगे काह तुम्हारो नाम ॥
ऊदनि बोले तब मालिन ते * मालिन सुनौ हमारी बात ॥
देश हमारो नगर महोबा * जहँपर बसैं रजा परिमाल ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * औ ऊदनि है नाम हमार ॥
यहसुनि हिरिया पूछन लागी * ब्याहे कहाँ बनाफर राय ॥
बोले ऊदनि तब मालिन ते * नैनागढ़ में भयो विवाह ॥
सोनवाँ भौजी हमरो लागै * हमरे वचन करौ परमान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोली हिरिया तब ऊदन ते * सोनवाँ बहिनी लगे हमार ॥
एक साथ खेली हम दोनों * आगे पीछे भयो विवाह ॥
हमरो ब्याह भयो नरवर गढ़ * सोनवाँ पहुँची नगर महोब ॥
जैसे देवर हौ सोनवाँ के * तैसेइ देवर लगौ हमार ॥
मेख उखारि देउ बगियाते * हमरे घर पर करौ मुकाम ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि ठाकुर * मनमें बहुत खुशी होइजाय ॥
जोई रोगी के मन भावै * सोई वैद बताई आय ॥
तौलो ढेबा दाखिल होइ गयो * ताते ऊदन कह्यो हवाल ॥
बोलो ढेबा तब ऊदन ते * ऊदन अकिल गई तुम्हारि ॥
घोड़ा खरीदन तुम आये हो * जल्दी कूच देउ करवाय ॥
बोले ऊदन तब ढेबाते * दादा मानौ बात हमारि ॥
रानी फुलवा को देखे बिन * हमना जैहैं साथ तुम्हार ॥
इतनी कहिकै ऊदनि चलिभये * औ मालिन घर पहुँचे जाय ॥
तीनि महीना भय मालिन घर * एकदिन ऊदन सोचन लाग ॥
माया लाये जो महुबे ते * सो नरवर में दई गँवाय ॥
फुलवा देखन को पाई नहिं * ताको करिहैं कौन उपाय ॥
सोचि समझि कै बघऊदनिने * नर ढेबा ते कही सुनाय ॥
फुलवा रानी देखि न पाई * सिगरी माया दई गँवाय ॥
जतन बतावौ कछु दादा तुम * जाते होवै काम हमार ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागे * हम यक जतन देयँ बतलाय ॥
हार दुलरिया हिरिया गूँधे * गूँधौ जाय चौलरा हार ॥
इतनी सुनिकै ऊदन चलिभये * औ हिरिया पै पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदनि तब हिरिया ते * अबही तुम बजारलौ जाउ ॥
रातिव लै आवो घोड़न की * हम हरवा को करैं तयार ॥
चलिभइमालिन तब बजारको * ऊदनि लीन्हों हार उठाय ॥
बिच बिच मोती ऊदन गूँधे * गूँधे तुरत चौलरा हार ॥
फूल केतकी बिच बिच गूँधे * सुन्दर हार करौ तैयार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आई मालिन जब बजारते * हरवा देखत कही सुनाय ॥
दुलरा हरवा हम गूँधति रहैं * तुम ने गूँधो चौलरा हार ॥
अब जो गूँधें हम हरवा को * तो जैबे को होय अब्यार ॥
बोले ऊदनि तब मालिनि ते * तुम फुलवाते कहियो जाय ॥
बहनौतिनि हमरी एक आई * ताने गूँथो चौलरा हार ॥
इतनी सुनिके हिरिया चलिभई * सत खंडा पर पहुँची जाय ॥
फूलन तौलौ रानि फुलवा को * औ पलकी पर दियो बिठाय॥
हरवा दीन्हों जब फुलवा को * नैना अग्निज्वाल होइ जाय॥
बोली फुलवा तब मालिनि ते * तेरो डरिहौं पेट फराय ॥
हार चौलरा कौने गूँधो * करी गाँठी दिये बनाय ॥
मोती गूँधो है हरवा में * तुमको कहां मिलो बतलाय ॥
मर्द को हाथ लगो हरवा में * साँची हाल देउ बतलाय ॥
हाथ जोरिके मालिन बोली * हमरी खता माफ हुइ जाय ॥
बहनौतिनि आई महुबे ते * ताने गुँथो चौलरा हार ॥
यह सुनि फुलवा बोलन लागी * औ मालिनि ते लगी बतान ॥
बहिनि हमारी तुम लगती हौ * वह बहनौतिनि भई हमारि ॥
जल्दी लावौ बहनौतिनि को * हमरो नजरि गुजारो आय ॥
इतनी सुनके हिरिया मालिन * मनमें गई सनाका खाय ॥
मालिन चलिभइ सतखंडाते * औ अपने घर पहुँची आय ॥
हाल सुनायो सब ऊदन को * औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
फुलवा बुलायो बहनौतिन को * सो अबकेहि को जायँ लिवाय॥
बोले देवा तब ऊदनि ते * अब तुम धरो जनानो भेष ॥
देखो चाहो जो फुलवा को * तो तुम जल्द होउ तैयार ॥
मोहरैं पाँच दई ऊदनि ने * औ हिरिया ते कही सुनाय ॥
चुरिया बिछिया तुमलै आवो * नथुनी लावो त्यार कराय ॥
इतनी सुनिकै हिरिया चिलिभइ * औ सुनरा पै पहुँची आय ॥
नथुनी बनवाई जल्दी ते * चुरिया बिछिया लियो खरीदि॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आई हिरिया बघ ऊदनि पै * लहँगा लुगरी लियो मँगाय ॥
लहँगा लुगरी ऊदन पहिरो * औ धरि लियो जनानो भेष॥
फुलवा रानी के देखबे को * ऊदन डारी नाक छेदाय ॥
सब सिंगार करी ऊदनि ने * शोभा कछू कहीना जाय ॥
तुरत पालकी तब मँगवाई * तापर चढ़े उदयसिंह राय ॥
चली पालकी बघ ऊदनि की * हिरिया मालिनि संग लेवाय॥
पहुँचि पालकी गई महलन में * औ खिरकी पै दई धराय ॥
उतरि पालकी ते भुइँ आये * घूंघट लिये हाथ भरि काढ़ि ॥
आगे आगे मालिनि चलिभई * पीछे चले उदयसिंह राय ॥
मालिन चढ़िगइ सतखंडा पर * संगे चले उदयसिंह राय ॥
बोली फुलवा तब हिरियाते * ना बहनौतिनि लाइ लिवाय॥
बोली मालिनि तब फुलवा ते * मैं तो संगे लाइ लिवाय ॥
समुहें ठाढ़ी बहुनौतिनि है * सोतुम देखो दृष्टि पसारि ॥
हाथ भरे को घूंघट काढ़े * दुलाहिन बने उदय सिंहराय॥
ठाढ़ो देखी जब ऊदनि को * तब फुलवाने कही सुनाय ॥
महल जनानी यह हमरो है * घूंघट काहे लियो निकार ॥
यह सुनि मालिन बोलन लागी * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
लाज शरम की यह गरुई है * ताते घूंघट काढ़ो आय ॥
इतनी सुनतै रनि फुलवाने * चन्दन पिढ़िया दई डराय ॥
आवो बैठो या पिढ़िया पर * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
मनमें ऊदनि सोचन लागे * औ हिरियाते लगे बतान ॥
फुलवा बैठी है पलका पै * हम जो नीचे बैठें जाय ॥
दागु लागिहै रजपूती में * औ क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
बोली हिरिया तब फुलवाते * हमरो खता माफ हुइ जाय ॥
राजा चंदेले महुबे के * जिनघर पारस को अधिकार॥
उनकी बेटी यक चन्द्रावलि * जा को रूप न बरनो जाय ॥
ताकी मालिन यह बहनौतिनि * संगै खेलै पंसा सार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

संगै बैठें यक पलका पर * ताते पास लेउ बैठारि ॥
इतनी सुनिके फुलवा हटिगई * औ सिरहाने बैठी जाय ॥
पाँयत खाली तुरतै करदियो * ऊदनि सोचि २ रहिजाय ॥
फुलवा बैठी सिरहाने में * औ हम पायँत बैठें जाय ॥
रणमें झूठी परे शिरोही * बूड़े सात साखिका नाम ॥
छांड़ि आसरा जिन्दगानीको * अपनी माया मोह बिसराय ॥
पाँयँत छाड़ि दियो ऊदनिने * औ सिरहाने बैठे जाय ॥
फुलवा मनमें सोचनलागी * है कछु कारण संशय नाहिं ॥
बोली फुलवा तब ऊदनि ते * तुम बहनौतिनि लगो हमार ॥
हाल बताय देउ महुवे को * कैसे बसें चँदेले राय ॥
मीठी बोली ऊदनि बोले * ज्यों पिंजरा में बोले लाल ॥
नगर महोबे बसैं चंदेले * जिनघर पारसको अधिकार ॥
आल्हा ऊदनि हैं जिनके घर * जिनकी बेड़ि बहै तलवार ॥
सुखिया रैयति चंदेले को * दुखिया कोउ न परैं दिखाय ॥
यह सुनि फुलवा पूछनलागी * आल्हाको कहँ भयो विवाह ॥
कहाँ बियाहे ऊदनि ठाकुर * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
इतनी सुनि ऊदनि मुसक्याने * औ फुलवा ते कही सुनाय ॥
आल्हाव्याहे रनि सोनवाँ सँग * नैनागढ़ में भयो विवाह ॥
व्याह भयो नहिं कहुँ ऊदनिको * क्वाँरे उदैसिंह बलवान ॥
बोली फुलवा फिरि ऊदनिते * मर्द के ऐसे पाँव तुम्हार ॥
पिंडरी तुम्हरी करीं करीं * सो साँची तुम देउ बताय ॥
गाय भैंस हैं मोरे बाप के * हम जंगल में चराई जाय ॥
तिनके पीछे हम दौरी हैं * तासे पाँय गये कर्राय ॥
इतनी सुनिकै फुलवा रानी * सिगरी देह टटोरन लागि ॥
कैसी कैसी बहनौतिन हो * सिगरी देह गई कर्राय ॥
जो तुम मालिन हो महुवे को * प्यारी बहुत चंद्रावलि क्यार ॥
पंसासारी तुम खेलौ अब * हमरे साथ आजुकी राति ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

फुलवा बोली तब मालिनिते * बहनौतिनि को छोड़े जाउ ॥
भोर होतही तुम यहँ ऐहो * तब बहनौतिनि दिहैं पठाय ॥
इतनी सुनिके हिरिया चलि भई * औ अपने घर पहुँची जाय ॥
सुन्दर पलका रतन जड़ाऊ * सो फुलवाने लियो मँगाय ॥
सो बिछवायो सत खंडा पर * फूल बिजनियाँ दई धराय ॥
पंसासारी खेलन लागी * आधी रात गई नगिचाय ॥
लिये बिजनियाँ फूलनवाली * हाँकनलागिफुलामति रानि ॥
लगी बयरिया जब खेलत में * अँचरा उड़ो उदयसिंहक्यार ॥
तुरत निगाह परी फुलवा की * कमर में देखिलई तलवारि ॥
तबतो फुलवा बोलन लागी * हमनेतुमहिं लियो पचिानि ॥
तुमहो छलिया गढ़ महुबे के * औ ऊदनिहै नाम तुम्हार ॥
झूंठे कहिहौ जो हमते तुम * तो बीरनको लिहौं बुलाय ॥
यहसुनि ऊदनि बोलन लागे * देखो हमहिं कहाँ तुमजाय ॥
पता पतावौ जो हमको तुम * तो हम मानैं बात तुम्हारि ॥
बोली फुलवा तब ऊदनि ते * हमरे बचन करो परमान ॥
जबतुम गये रहो माड़ो में * लीन्ही जाय बापको दाउँ ॥
तबहम देखो रहे तुमहिं तहँ * जोगी रूप बनाफर राय ॥
भेद बिजैसिन ते पूछो तुम * औ लैलियो बापको दाउँ ॥
सो तुम याद करौ बातें सब * हमनेतुमहिं लियो पहिचानि ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * तुमने भलोलियो पहिचानि ॥
बोली फुलवा तब ऊदनि ते * अब तुम भाँवरि लेउ डराय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने * रानी अक्किल गई तुम्हारि ॥
चोरी चोरा ब्याह न करिहौं * नहिं क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
लैहैं हम बरात महुबे ते * सातौ भाँवर लिहौं डराय ॥
बोली फुलवा तब ऊदनिते * यहँ पर बीरन को है राज ॥
कठिन मारु है नरवर गढ़की * जानत जिनको सकल जहान ॥
काठको घोड़ा बान अजीता * शेल्ह शनीचर है गढ़माहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जिनके मारे लश्कर बिचले * कोऊ शूर न आड़े पाँव ॥
धोखे रहियो ना माड़ो के * जहँ लैलियो बापको दाव ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * रानी बचन करो परमान ॥
दंड बाँधि के मकरन्दी की * सातौ भाँवरि लिहौं डराय ॥
बिना बियाहे तुमहिं जो छाँड़ौं * तोमोहिं खाय कालिका माय ॥
धीरज राखौ अपने मन में * अब हम भाँवरि लिहौं डराय॥
चारि पहर बीते अंटा पर * बोली तुरत फुलामति रानि ॥
भोजन जेंइ लेउ अंटा पर * अब हम करैं रसोई जाय ॥
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर * रानी सुनो हमारी बात ॥
क्वाँरे भौजन हम जेंवैं ना * क्वाँर न धरैं सेज पर पाँव ॥
भोर भये पर हिरिया मालिनि * सतखन्डा पर पहुँची आय ॥
बोली फुलवा तब मालिनि ते * अब तुम इनहिं घरे लै जाउ ॥
भली मिलायो बहनौतिनि को * यह सुनिहिरिया चली लिवाय॥
उतरि के दोनों सत खंडाते * औ द्वारे पर पहुँचे आय ॥
चढ़े पालकी पर जल्दी ते * पलकी चली उदैसिंह क्यार ॥
हिरिया मालिनि संगै चलि भई * मकरंद ठाकुर कही सुनाय ॥
साँच बतावो हिरिया मालिनि * केहि को बेटी लाई चोराय ॥
संग पालकी हमरे करि देउ * भोरहिं दे हैं घर पहुँचाय ॥
हिरिया बोली तब मकरंद ते * यह बहनौतिनि लगे हमारि॥
फुलवा बुलवायो देखन को * सो हम फुलवै लाई दिखाय ॥
यह सुनि चलिभये मकरंदठाकुर* तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
काम बिगारो तुमने मालिनि * हम सब औते काम बनाय ॥
डंड बाँधि के मकरन्दी की * तुरतै लेते ब्याह कराय ॥
संग भेजि देतिउ मकरँद के * सब बनिजातो काम हमार ॥
ऊदनि पहुँचे जब मालिन घर * तब ढेबाने कही सुनाय ॥
संग तुम्हारो हमना करि हैं * हम तो करैं मर्द को संग ॥
सबते कहिहैं हम महुबे में * ऊदनि धरौ जनाना भेष ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

फुलवा रानी के देखिवे को * ऊदन डारी नाक छिदाय ॥
यह सुनि ऊदनि कायल होइगै * अपनी काढ़ी तुरत कटार ॥
चर्चा करिहौ जो महुबे में * अबहीं पेट मारि मरिजाउँ ॥
हँसिके देवा बोलन लागे * हम तो परचो लियो तुम्हार॥
हमने हँसी करी तुम्हरे सँग * तुमने मानि लई सतिभाउ॥
कछू न कहिहैं हम महुबे में * अब तुम हाल देउ बतलाय॥
कैसी गुजरी सत खंडा पर * फुलवा कही कौनसी बात ॥
हमहूं देखिहैं रनि फुलवा को * ताको कौनो करो उपाय ॥
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर * हम तुम जोगी भेष बनाय ॥
चलिकै देखैं रनि फुलवा को * तो सब काम सिद्धि होइजाय ॥
इतनी सुनतै नर देवाने * दोनों गुदरी लई निकारि ॥
रामानन्दी तिलक लगायो * देही में लइ भस्म रमाय ॥
सुघर मुन्द्रिका कानन पहिरी * अपनी बाँधि लई तलवारि ॥
ऊपर पहिरी जोग गूदरी * तुलसी माला लइ लटकाय ॥
लियो बँसुरिया बघऊदन ने * देवा खँभरी लई उठाय ॥
दोनों जोगी डगरत चलि भये * औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
अलख जगाई दरवाजे पर * बीच बजार में पहुँचे जाय ॥
राग रागिनी गावन लागे * अपने बाजा दियो बजाय ॥
देखै रूप जौन जोगिन को * तनकी सूरत देय बिसराय ॥
नाचत गावत दोनों आये * औ पनिघट पर पहुँचे आय॥
पानी भरती पनिहारिन जहँ * सो जोगिन तन रही निहारि॥
एकपहर पनिघट पर होइ गयो * तिरिया मोहि मोहि रहिजायँ॥
बाँदी सोचे चंपावाली * कहँ रानी ते कहिहौं जाय ॥
भरिके गागरि बाँदी चलिभई * औ महलन में पहुँची जाय ॥
आवत देखी जब बांदी को * तब रानी ने कह्यो रिसाय ॥
भीर लगाई क्यों पनिघट पर * बाँदी डरि हौं पेट फराय ॥
हाथ जोरि के बाँदी बोली * हमरी खता माफ होइ जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बालक आये दुइ जोगिन के * शोभा कछू कही ना जाय ॥
रूप जोगियन के देखेते * तनकी सूरत जाय बिसराय ॥
हुक्म होय जो रानी हमको * अबहीं महलनलावौं लिवाय ॥
यहसुनि रानी बोलन लागी * अबहीं महलन लावौजाय ॥
बाँदी चलिभइ तब जल्दी ते * औ जोगिनको चली लिवाय ॥
गावत गावत जोगी आये * औ ड्योढ़ी में पहुँचे आय ॥
कान अवाज पड़ी राजा के * तब जोगिनको लियोबुलाय ॥
जोगी आये जब समुहें पर * बाँयें हाथसे करी सलाम ॥
राजा बोले तब गुस्सा होय * इन जोगिनको देउ निकारि ॥
बायें हाथसे करी बन्दगी * हमरी करी आय अपमान ॥
इतनी सुनिके ऊदनि तड़पे * औ राजाते लगे बतान ॥
जौन हाथ ते जपैं सुमिरिनी * नितउठि लेयँ रामको नाम ॥
तौन हाथते करैं बन्दगी * हमरो जोग भंगहोइ जाय ॥
यहसुनि राजा बहुत खुशीभे * औ जोगिनेत कही सुनाय ॥
गुस्सा दूरि करो अपनो तुम * जोगिन साँचो ज्ञान तुम्हार ॥
तान सुनाय देउ अपनी तुम * औ तुम नाच देउ दिखलाय ॥
इतनी सुनिकै बघ ऊदनि ने * अपनी बँसुरी दई बजाय ॥
बजी खंझरी नर ढेबा की * शोभा कछू कहीना जाय ॥
राग रागिनी गावन लागे * नाचन लगे उदयसिंह राय ॥
जितने क्षत्री बँगला बैठे * ते सब मोहि २ रहिजायँ ॥
डारि मोहनी दइ ऊदनि ने * नाहीं मसातलक मन्नाय ॥
नचै कंचनी वा बँगला में * तिनको नाच बन्दहोइ जाय ॥
तान मरोरा ऊदनि गावैं * पक्के महल उठे झन्नाय ॥
बहुत खुशी हो राजा बोले * जोगिन आज करौ बिसराम ॥
करै रसोई ब्राह्मण हमरो * सो तुम जेंय लेउ जेंउनार ॥
बोले ऊदनि तब राजा ते * कहँ महराज तुम्हारो ज्ञान ॥
करैं रसोई ब्रह्माण तुमेरा * जो लागिजाय हाथमें दागु ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ब्रह्माण दोष लगै हमको तब * हमरो जोगभंग होइजाय ॥
क्वाँरे भोजन हम जेंवत हैं * कन्या करे रसोई त्यार ॥
तोहम भोग लगाय महल में * अपने चले रास्ता जायँ ॥
बोले राजा तब मकरन्द ते * फुलवा करे रसोई त्यार ॥
हुक्म सुनायो तब मकरन्द ने * फुलवा करन रसोई लाग ॥
करी रसोई जब फुलवा ने * तब जोगिनको लियो बुलाय॥
चौका बैठे दोनों जोगी * फुलवा भोजन धरे अगार ॥
फुलवै देखो जब ढेबाने * तब ऊदनि ते कही सुनाय ॥
याही फुलवा के कारण तुम * अपनी डारौ नाक छेदाय ॥
महा सुन्दरी यह फुलवा है * मानहु इन्द्र अप्सरा आय ॥
भरि कै गडुवा गंगाजल ते * सो जोगिनपर दियोधराय ॥
करी अधीनी उन जोगिन ते * अब तुम जेंइलेउ जेंउनार ॥
ऊदनि सोचे अपने मनमें * औ मनमें यह कियोविचार॥
क्वाँरे भोजन जो हम करिहैं * तो सब क्षत्री धर्म नशाय ॥
ऊदनि गिरिगै तब चौका में * आँखिन पुतरी लई चढ़ाय ॥
स्वाँस साधिलई बघऊदन ने * लोटैं पोटैं औ रहिजायँ ॥
देखि हाल यह चम्पारानी * नर ढेबाते लगी बतान ॥
रूप देखिके मेरी बेटी को * जोगी गिरिगयो खाय पछार ॥
अबहिं बुलैहौं मकरन्दी को * तुरतै पेट दिहौं फरवाय ॥
बोलो ढेबा तब रानी ते * रानी बोलो बचन सम्हार ॥
पकरिचुरैलन लियो जोगी को * ताते गिरो भरहरा खाय ॥
भरी चुरैलैं हैं तुम्हरे घर * तिन जोगीको पकरी आय ॥
छोटे जोगी जो मरि जैहै * तुरतै तुमको दिहौं सराप ॥
ऐसे वैसे हम जोगी नहिं * जोकछु बात कहे डरि जायँ ॥
यह सुनि डरि गइ चम्पारानी * नाउत बैद लियो बुलवाय॥
अपनी अपनी करि हारे सब * कोउ जतन पेश ना जाय ॥
चम्पा रानी रोवन लागी * तब फुलवा ने कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कौन बातको माता रोवै * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
रानी बोली तब फुलवा ते * हमते कछू कही ना जाय ॥
कौर उठावत जोगी गिरिगयो * सिगरो कारज गयो नशाय ॥
महलन जोगी जो मरि जैहैं * तो जग होइहैं हँसी हमार ॥
इतनी सुनिके फुलवा बोली * हम जोगीको दिहैं जगाय ॥
फुलवा आई बघ ऊदनि पै * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
काहे मक्कर कियो महल में * जो सुनि पैहैं भाइ हमार ॥
बाँधि पैठैहैं तुमहिं दहक में * औ सब जैहैं काम नशाय ॥
अब तुम लौटि जाउ महुबे को * इतनी मानो कही हमारि ॥
साजि बरात लाय महुबे ते * सातो भाँवर लेउ डराय ॥
यहसुनि ऊदनि उठि ठाढ़ भै * औ चलिभयो उदय सिंहराय ॥
संगै ढेबा बघ ऊदनि दोउ * फाटक निकरि गयो बापार ॥
तुरतै पहुँचि गये मालिन घर * जोगिन गुदरी धरी उतारि ॥
रानी पूछे तब फुलवा ते * योगी गिरयो कौन से हेत ॥
बोली फुलवा तब रानी ते * माता सुनो हमारी बात ॥
कोऊ सुहागिन ऊपर झाँकी * छाया परो थार पर जाय ॥
ताते योगी तुरतै गिरि गयो * राखौ आजु लाज भगवान ॥
हियाँ की बातैं तो हियँ छाँड़ो * अब ऊदनि को सुनो हवाल ॥
बोले ऊदनि नर ढेबाते * अब कछु जतन देउ बतलाय ॥
माया लाये जो महुबे ते * सो नरवर में दई गँवाय ॥
ढेबा बोले तब ऊदनि ते * तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय ॥
पागल बनिकै चलो महोबे * हम सब लेहैं काम बनाय ॥
हम समुझैहैं परिमालै को * औ आल्हाको दिहैं समझाय ॥
कठिन चुरैलैं गढ़ नरवर में * सो ऊदनि के गईं समाय ॥
हिकमत बहुत करी नरवर में * औ सब माया दई लुटाय ॥
यह मन भाई बघ ऊदनि के * बहुतक हरदी लई बँटाय ॥
सो लगवाय लई देही में * औ महुबे को करौ पयान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सात रोजकी मंजिल करिके * सागर तीर पहुँचे जाय ॥
कीरति सागर निकट बागमें * अपनी तम्बू दियो लगाय ॥
पँलगा बिछिगा बव ऊदनि को * तापर परे उदैसिंह राय ॥
चलि भयो ढेबा तब तम्बू ते * औ राजा पै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी परिमालै को * तब राजा ने कही सुनाय ॥
कैसे घोड़ा तुम लै आये * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले ढेबा तब राजा ते * घोड़ा सागर दियो बँधाय ॥
घोड़ा सुन्दर हम लाये हैं * चलिकै देखिलेउ महराज ॥
तब मँगवाई तुरत सवारी * तापर चढ़े रजा परिमाल ॥
जहँ पर तम्बू रहे ऊदनि को * पहुँचे तहाँ चँदेले राय ॥
सूरति देखो जब ऊदनि को * तब राजाने कही सुनाय ॥
कैसे जरद भई देही यह * ढेबा हमहिं देउ बतलाय ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागे * राजा सुनो हमारी बात ॥
कठिन चूरैलैं गढ़ नरवर की * सो देही में गई समाय ॥
नाउत बैद सबै बुलवायो * सिगरी माया दई लुटाय ॥
देखि आसरा ना जीवै को * तब महुबे में पहुँचे जाय ॥
इतनी बात सुनी ढेबा की * राजा बहुत गये घबराय ॥
सुनी खबरिया जब आल्हा ने * सोऊ तहाँ पहूँचे जाय ॥
बोले आल्हा चन्देले ते * तुमहिं पठायो लहुरवा भाय ॥
छोटा भैया जो मरि जैहैं * महुबे आगी दिहौं लगाय ॥
खबरि पहूँची जब देवै को * माता बिलखि २ रहिजाय ॥
पूछे सोनवाँ तब देवै ते * काहे रोवै सासु हमारि ॥
हाल बतायो जब देवै ने * तब सुनवाँ ने कही सुनाय ॥
तुम बुलवावो हियँ ऊदनि को * अबहीं चुरैलैं दिहैं उतारि ॥
रुपनै बुलवायो देवै ने * औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
रुपना चलि भये दश पुरवाते * औ सागर पर पहुँचो जाय ॥
बोले रुपना परिमालै ते * दादा सुनो हमारी बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

देवै बुलवायो ऊदन को * भेजो तुरत हमारे साथ ॥
तुरत पालकी तहँ धरवाई * तापर ऊदनि को पौढ़ाय ॥
चली पालकी बघऊदनि की * दशपुरवा में पहुँची जाय ॥
रानी सोनवाँ के द्वारे पर * तुरत पालकी धरी उतारि ॥
उतरी सोनवाँ सतखंडा ते * औ पलकी पै पहुँची जाय ॥
हाथ पकरि कै उदैसिंह को * सतखंडा पर गई लिवाय ॥
लियेबिजिनियाँ कर फूलनकी * सो ऊदन पर करै बयारि ॥
सोनवाँ रानी पूछन लागी * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
रानी फुलवातुम देखो कहुँ * ताते मक्कर करै बनाय ॥
तुरतै ऊदनि ने हँसि दीन्ही * औ सोनवाँ ते कही सुनाय॥
कैसे जानि गई भौजी तुम * फुलवामिली हमहिंतहँजाय ॥
गंगा उठवाई हमते त्यहिं * सातौं भाँवरि लेउ डराय ॥
यहसुनि सोनवाँ बोलन लागी * को नरपति घर करै विवाह ॥
क्यहिको छाती है बज्जुर की * जो निज प्रान देनको जाय ॥
काठको घोड़ा बान अजीता * जिनघर शेलशनीचर आय॥
हिरिया मालिनहै जालिम तहँ * अपनी जादू देत चलाय ॥
बोले ऊदनि तब सोनवाँ ते * भउजी हम मनिवे के नाहिं ॥
ब्याह न होइहैं जो नरवर में * तो मैं पेट फारि मरि जाउँ ॥
सोनवाँ बोली तब ऊदनि ते * देवर धीर धरो मन माहिं ॥
सोवत आल्हा रहे जहना पर * सोनवाँ तहाँ पहुँची जाय ॥
चन्दन छिरक दियो आल्हा पर * सोनवाँ ठाढ़ी करै बयारि ॥
आल्हा जागि परे तुरतै तब * औसोनवाँ को लियो बिठाय॥
बोले आल्हा तब सोनवाँ ते * काहे हमहिं जगायो आय ॥
कौन काम तुम्हरो अटको है * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
हाथ जोरि कै सोनवाँ बोली * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
हमने बुलवायो ऊदनि को * औ सब जानलियो अहवाल॥
फुलवा बेटी जो नरपति की * सो ऊदनि को परी निगाह ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ब्याह करनको कहि आये हैं * तुमसे करो बहाना आय ॥
ब्याह रचो अब तुम भैया को * इतनी मानो कही हमार ॥
यहसुनि आल्हा बोलन लागे * हमते यह होइबेको नाहिं ॥
फौज कटावे को नरवर में * को नरपति घर करै विवाह ॥
कौन दुसरिहा मकरंदा को * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बिनती करि कै सोनवाँ बोली * औ आल्हाते लगी बतान ॥
न्योता भेजो नैनागढ़ में * तुरतै आवैं भाइ हमार ॥
ब्याह करायलेयँ ऊदनि को * नरवर गर्द देयँ करवाय ॥
न्योता पठवो पथरी गढ़को * औ दिल्ली को देउ पठाय ॥
न्योता भेजिदेउ बौरी गढ़ * औ गढ़ झूना देउ पठाय ॥
खबरि भेजिदेउ गढ़सिरसा को * जोचढ़ि आवैं बीर मलिखान॥
बोले आल्हा तब सोनवाँ ते * यह हमरे मन नाहिं समाय ॥
तब तो सोनवाँ बोलन लागी * तुम धरिलेउ जनाना भेष ॥
चुरिया बिछिया स्वामी पहिरो * औ सब छोरि धरो हथियार ॥
जाय बिराजो मम पलका पर * हम ऊदनि को लैहैं ब्याहि॥
जैसे पान में चूना लागे * डारे खैर लाल होइ जाय ॥
तैसेइ बात लगी आल्हा के * औ सोनवाँ ते कही सुनाय ॥
जो कछु रानी हमते कहि हौ * सो सब मनिहौं बात तुम्हार॥
बोली सोनवाँ तब आल्हा ते * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
न्योता पठवौ तुम राजन के * औ मलिखे को लेउ बुलाय॥
ब्याह रचावौ तुम ऊदनि को * इतनी मानो कही हमार॥
सुनतै चलिभये सुनिआल्हातब * औ ड्योढ़ी में पहुँचे जाय ॥
रुपना बारी को बुलवायो * औ सिरसा को दियो पठाय ॥
संगै लावो तुम मलिखे को * यहसुनि रुपना कियो पयान॥
जाय पहूँचे गढ़ सिरसा में * औ मलिखे पै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी नरमलिखे को * औ आल्हा को कह्यो सँदेश॥
सुनतै घोड़ी को मँगवायो * औ चढ़िचले बीर मलिखान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मलिखे आये दश पुरवा में * औ आल्हा पै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी नर मलिखे ने * औ आल्हाते लगे बतान ॥
काहे दादा तुम बुलवायो * सो सब हाल देउ बतलाय ॥
आल्हा बोले तब मलिखेते * भैया कछू कहीना जाय ॥
घोड़ा खरीदन गये काबुल को * ऊदनि भेजदियो परिमाल ॥
पहुँचे ऊदनि जब नरवर गढ़ * जहँपर नरपति को है राज ॥
फुलवा बेटी जो नरपति की * सो ऊदनिकी परी निगाह ॥
ब्याह करनको यह कहिआयो * सो कैसे अबहोय विवाह ॥
कौनसो क्षत्री है दुनियां में * जो नरवरगढ़ करै विवाह ॥
इतनी सुनिके मलिखे बोले * दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
मोहरा मरिहैं हम नरपति को * औ ऊदन को लैहैं ब्याहि ॥
ऊदन ब्याहन को रहिहैं ना * यहदिन कहिबेको रहिजाय ॥
न्योता पठै देउ राजन को * औ बरात को करो तयार ॥
इतनी सुनतै सुनिआल्हा ने * यक हरकारा लियो बुलाय ॥
तुरतै भेजदियो भूना गढ़ * यक बौरी गढ़ दियो पठाय ॥
न्योता भेज्योगढ़ दिल्ली को * औ नैनागढ़ दियो पठाय ॥
जितने ब्योहारी आल्हा के * सबको न्योता दियो पठाय ॥
यक हरकारा गयो सिरसा गढ़ * औ सुलखेते कह्यो हवाल ॥
करी तयारी तब सुलखे ने * मन्ना गूजर लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो तब लश्कर में * सिगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजो तब लश्कर में * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
घोड़ा सज्जा को सजवायो * मन्ना गूजर भयो सवार ॥
घोड़ा हिरौंजिनि त्यार कराई * तापर चढ़े बीर सुलिखान ॥
लश्कर चलि भयो गढ़ सिरसाते * औ महुबे में पहुँचा जाय ॥
डेरा परिगे मदन ताल पर * अपने तम्बू दियो लगाय ॥
सूरज आये भूना गढ़ ते * सागर डेरा दियो लगाय ॥
आये यादव बौरी वाले * औ सागरपर करो मुकाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

लश्कर आयो नैना गढ़ ते * परो बैरागी ताल पर जाय ॥
आये राजा व्योहारी सब * जहँतहँ डेरा दियो लगाय ॥
बोले मलिखे नुनि आल्हा ते * अपनो पंडित लेउ बुलाय ॥
साइति पूछि लेउ जल्दी ते * औ बरात को करो तयार ॥
भयो बोलौवा चूड़ामणि को * सो ड्योढ़ी में पहुँचे आय ॥
साइत देखत पंडित बोले * अबहीं तेल लेउ चढ़वाय ॥
आँगन लिपवायो जल्दी ते * मोतिन चौकदियो पुरवाय ॥
कलश सुबरन को धरवायो * तापर दीपक दियो धराय ॥
भए बोलौआ बघऊदनि को * औ पाटा पर दियो बिठाय ॥
पंडित बेद उचारन लागे * गौरीगणपति दियो पुजाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * चढ़िगयो तेल लहुरवा क्यार॥
कंगन बँधिगयो बघऊदनि को * औ सबनेग दियो करवाय ॥
नीमा जामा ऊदनि पहिरो * शिरपर मौर धरे तहँ जाय ॥
सेरवा लैके चन्द्रावलि तब * राई लोन उतारन लागि ॥
आई पालकी दरवाजे पर * तापर चढ़े उदय सिंहराय ॥
नाऊ बारी भाट पुरोहित * चारो नेगी संगै जाय ॥
चली पालकी बघऊदनि की * औ कुअँटा पर राखो जाय ॥
जिनको ब्याही चन्द्रावलि रहे * तिनको इन्द्रसेन असनाम ॥
गोद उठायो उन ऊदनि को * औ कुअँटा पर राखो जाय ॥
रानी मल्हना परिमाले की * कुअँटा पाँव दियो लटकाय ॥
पहुँचे ऊदनि तब कुअँटापर * औ धरिबहियाँ लियो उठाय॥
प्राणदान माता दीन्हे हम * माता बचन करो परमान ॥
मल्हना रानी बोलन लागी * जुग २ जियो लड़ैते लाल ॥
चलि भै ऊदनितब कुअँटा ते * औ पलकी में बैठे आय ॥
चली पालकी बघ ऊदनि की * औ लश्कर में पहुँची जाय ॥
सजी बरायत तब महुबे ते * शोभा एक कहीना जाय ॥
लश्कर पहुँच गये मलिखे तब * औ क्षत्रिनते लगे बतान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जिनहिं पियारी घर तिरिया हैं * सो सब तलब लेउ घरजाउ ॥
जिनहिं पियारी परम भगौती * सो बरात को होउ तयार ॥
शूर सिपाही ईजति वाले * दहिनी धरे मुच्छपर हाथ ॥
पाँव पिछारी हम धरिहैं ना * चाहे तन धजी २ उड़िजाय ॥
इतनी कहिकै नर मलिखे ने * लश्कर डंका दियो बजाय ॥
बजो नगारा गढ़ महुबे में * सिगरी फौज भई तैयार ॥
अपने अपने सब घोड़न पर * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथी चढ़िगे * कोऊ गजरथ भये सवार ॥
कोऊ नालकिन कोउ पालकिन * क्षत्री सबै भए असवार ॥
हाथी पचशाबद मँगवायो * तापर आल्हा भए सवार ॥
घोड़ी कबुतरी पर मलिखे हैं * घोड़ी हिरौंजिन पर सुलखान ॥
मन्ना गूजर है सब्जा पर * ढेबा मनोरथा पर असवार ॥
ताल्हन सैयद बनरस वाले * घोड़ी सिंहनि पर असवार ॥
जितने राजा न्योते आये * सो सब साजि भए तैयार ॥
चली बरायत गढ़ महुबे ते * औ नरवरकी पकरी राह ॥
आठ रोजकी मंजिल करिके * नरवर आठ कोस रहिजाय ॥
डेरा डारि दियो धूरे पर * अपनो तम्बू दियो लगाय ॥
सब्ज बनातन के तम्बू हैं * सब्जी रही फौज में छाय ॥
फेटैं छुटगइं रजपूतन की * हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
जीन उतारि दियो घोड़न के * क्षत्रिन छोरि धर हथियार ॥
बारह कोशी के गिरदा में * लश्कर परी महोबे क्यार ॥
चढ़ी रसोइया उमरायनकी * शोभा कछू कही ना जाय ॥
कहूँ गवैया गान सुनावैं * कहुँ २ नाच कंचनिन क्यार ॥
राति बसेरो करि बरात में * भोरहिं उठे बीर मलिखान ॥
भयो बोलौआ तब पंडित को * अबहीं सायति देउ बताय ॥
बोले पंडित नर मलिखे ते * ऐपनवारी देउ पठाय ॥
मलिखे बुलवायो रूपना को * औ रुपनाते कही हवाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

ऐपनवारी तुम लैजावो * औ बरात को कह्यो हवाल ॥
बोल्यो रुपना तब मलिखे ते * हमना शीश कटैहैं जाय ॥
धोखे न रहियो नैनागढ़ के * जहँ आल्हाको करो विवाह ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * रुपना कहाँ तुम्हारो ध्यान ॥
ऊदनि व्याहन को रहिहैं ना * यहुदिन कहिबे को रहिजाय ॥
मुहँते हीनी तुम बोलत हो * ऐसी तुमहिं सुनासिब नाहिं ॥
यह सुनि रुपना बोलन लागे * पाग बैजनी देउ मँगाय ॥
घोड़ा बेंदुला को मँगवाओ * ऊदनि केरि ढाल तलवार ॥
ऐपनवारी हम लै जैहैं * सब सामान देउ मँगवाय ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * घोड़ा बेंदुला दियो सजाय ॥
पाग बैंजनी ऊदन वाली * सो रुपनाको दई गहाय ॥
भाला दीन्ही नागदौनि को * औ दैदई ढाल तलवार ॥
ऐवनवारी लै रुपना ने * औ घोड़ा पर भयो सवार ॥
चलि भयो रुपना तब लश्करते * औ नरवरगढ़ पहुँचो जाय ॥
जबहीं पहुँचो दरवाजे पर * दरबानी ने कही सुनाय ॥
कौन कामको तुम आये हो * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
यह सुनि रुपना बोलन लागे * दरवानी ते लगो बतान ॥
हमतो आये हैं महुबे ते * जहँपर बसैं रजा परिमाल ॥
व्याहन आये हम ऊदनि को * रूपना बारी नाम हमार ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * राजे खबर सुनावौ जाय ॥
नेग हमारो जल्दी भेजैं * सो हम तुमहिं देयँ बतलाय ॥
चारिघरी भरि चलो शिरोही * द्वारे बहे रक्तकी धार ॥
इतनी सुनिके दरवानी ने * राजे खबर सुनाई जाय ॥
बारी आयो है महुबे ते * ऐपनवारी लीन्हे ठाढ़ ॥
नेग आपनो वहु मागत है * द्वारे कठिन चले तलवार ॥
सुनो हाल जब यह नरपति ने * तब मकरंदको लियो बुलाय ॥
बाँधिकै लावो तुम बारी को * हमरी नजर गुजारो आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनि के मकरंद चलिभै * तौलो रुपना पहुँचो आय ॥
करी बन्दगी तब नरपति को * ऐपनवारी दई चलाय ॥
लगी कचहरी तहँ नरपति को * क्षत्री बैठे आठ हजार ॥
राजाविजयसिंह सिलहट को * तासे नरपति कही सुनाय ॥
मारो मारो या बारी को * विजयसिंग लई सांग उठाय ॥
चोट चलाई तब रुपना पर * सो रुपना ने लई बचाय ॥
भाला लैके तब रुपना ने * विजयसिंह पर दियो चलाय ॥
लागो भाला विजयसिंह के * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
हल्ला करि दियो सब क्षत्रिन ने * औ रुपना को घेरो जाय ॥
सुमिरन करिके रामचन्द्र के * लै बजरंग बली को नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ रुपना ने * औ क्षत्रिन में गयो समाय ॥
गड़बड़ करि दियो तब रुपनाने * बहुतक क्षत्री दियो गिराय ॥
ज्वान पांचसौ रुपना मारे * रुपना रक्त बरन होइ जाय ॥
करी बन्दगी तब नरपति को * ऐपनवारी लई उठाय ॥
ऐंड लगाय दई घोड़ा के * फाटक निकरि गयो बापार ॥
आवत देखो जब रुपना को * हँसिकै कही बीर मलिखान ॥
कैसी गुजरी नरवर गढ़ में * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोला रुपना तब मलिखे ते * हम से कछू कही न जाय ॥
कठिन मारु है नरवरगढ़ को * द्वारे खूब चली तलवारि ॥
देवीशारदा दाहिन होइ गइ * हम करि आये काम तुम्हार ॥
हियाँ कि बातैं तौ हियँ छाड़ो * अब नरपति को सुनो हवाल ॥
बोले नरपति मकरन्दा ते * रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
जिनघर नेगी ऐसे जालिम * तिन क्षत्रिन के कौन हवाल ॥
व्याहु मुनासिब नहिं महुबेमें * ओछी जाति बनाफरराय ॥
यह सुनि मकरंद बोलन लागे * दादा धीर धरो मन माहिं ॥
मारि भगैहौं मैं आल्हा को * लश्कर कटा दिहौं करवाय ॥
इतनी कहिकै मकरंद चलिभै * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोलि नगरची को बीरा दै * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजी नगारा नरवर गढ़ में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लियो हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
घोड़ा हरियल त्यार करायो * मकरंद तुरत भये असवार ॥
मारू डंकाके बाजत खन * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो आगे को दई जोताय ॥
चारि घरी के तब अरसा में * लश्कर खेत पहूंचा जाय ॥
यक हरकारा को बुलवायो * औ आल्हा पै दियो पठाय ॥
सुनी खबरिंजब नुनि आल्हाने * तब मलिखेको लियो बुलाय॥
खबरि सुनतही नरमलिखे ने * लश्कर डंका दियो बजाय ॥
मारू डंका के बाजत खन * क्षत्री साजि भये तैयार ॥
जितने राजा आये बराती * सबने बाँधि लिये हथियार ॥
अपनी अपनी असवारिन पर * सिगरे क्षत्री भये सवार ॥
कूंच कराय दियो लश्कर को * मारू डंका दियो बजाय ॥
लश्कर पहुंचो जब खेतन में * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
घोड़ी बढ़ाय दई मलिखे ने * औ मकरंद पै पहुँचे जाय ॥
आगे बढ़िके मकरंद बोले * औ मलिखे ते लगे बतान ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे तब मकरंद ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
नगर महोबे ते आये हम * जहँ पर बसत रजा परिमाल ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * औ मलिखे है नाम हमार ॥
ब्याहन आये हम ऊदनि को * राजे खबरि देउ करवाय ॥
सुनिके बातें नर मलिखे की * गुस्सा गई देह में छाय ॥
बोले मकरँद तब मलिखे ते * चुप्पै लौटि महोबे जाउ ॥
धोखे न रहियो नैनागढ़ के * जहँ आल्हा को करो विवाह ॥
मारि भगैहौं मैं महुब लौं * सबके शीश लिहौं कटवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह सुन मलिखे बोलन लागे * जानो नाहीं हाल तुम्हार ॥
जेहिकी बिटिया नीकी देखैं * जोरा जोरी करैं विवाह ॥
हमते दुसरी जो कोउ राखै * मौरैं राज्य भंग होइजाय ॥
फौज आपनी क्यों कटवैहो * सातो भाँवरि देउ डराय ॥
कही हमारी मकरँद मानो * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनतै मकरँद जरिगै * औ यह हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दै देउ मेरि तोपन में * इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर * तुरतै बत्ती दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लौ * सविता रहे धुन्ध में छाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
अरर गोला छूटन लागे * सरसर परी तीरकी मारु ॥
सननन सननन गोला छूटे * कह २ करै अँगिनियाँ बान ॥
गोला लागै ज्यहिं हाथी के * मानौ च्वार सेंधि दैजाय ॥
गोला लागै जौन ऊँट के * सो गिरि परै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै ज्यहि घोड़ा के * चारौ सुम्म गर्द होइ जाय ॥
गोला लागै ज्यहिं छत्री के * सो गिरि परै भरहरा खाय ॥
बंकको गोला जिनके लागे * तिनको हाड़ मास छुटि जाय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागे * सो लत्ता अस जाय उड़ाय ॥
बानको डंडा जिनके लागे * तिनके दुइखंडा होइ जाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ॥
तोपैं धै धै लाली होइ गइँ * ज्वानन हाथ धरे नाजाय ॥
तोप लड़ाई पीछे परिगई * लंबे बन्द करैं हथियार ॥
दोनों फौजैं संगम होय गईं * रहि गयो डेढ़ कदम मैदान ॥
झुके सिपाही दोनों दलके * अपनी खैंचि लईं तलवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * ब्वालै छपक २ तलवार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * कटि २ गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
चले जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चले बिलायत क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

उठैं कबंध बोर रण खेलैं * घैहा उठे कराहि कराहिं ॥
चारो बयरियन को मसका है * कौधा चाल चलै तलवारि ॥
घैहा डारे रण में लोटैं * जिनके प्यास २ रटलागि ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * जिनके मारु २ रटलागि ॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगये * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
पैदल के सँग पैदल अभिरे * औ असवारन ते असवार ॥
हाहाकारी रण में बीते * कोऊ रँधे भात ना खाय ॥
चहला उठिगे हैं चर्बिन के * औ लोथिन के लगे पहार ॥
ढालैं डारीं जो लोहू में * मानो कछुआ सी उतरायँ ॥
पगिया डारीं जो लोहू में * जनु नद्दी में परी सेवार ॥
परी सिरोही है क्षत्रिन की * मानो नागिनसी मन्नाय ॥
कोऊ रोवत है तिरियन को * अबहीं लाये गौनवाँ चार ॥
कोऊ रोवै घर लरिकन को * कोऊ पुरिखन को चिल्लाय ॥
चारि घरी भरि चली सिरोही * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * औ रनदुलहा चले बराय ॥
भाँग उतरिगइ भंगेड़िन की * गाँजा वाले चले बराय ॥
झुके अफीमी रणके भीतर * पलकैं उघरैं औ रहिजायँ ॥
लंबी धोतिन के पहिरैया * तिन नारन की पकरी राह ॥
कोउ कोउ क्षत्री करै बहाना * रण में डारि दिये हथियार ॥
माटी लैके सब देही में * डरिकै लेय बिभूति रमाय ॥
हमैं न मारौ हमैं न मारौ * हम भिक्षा के मागन हार ॥
हम बैरागी हैं काशी के * आगे हिंगलाज को जायँ ॥
भिक्षा माँगन हम आये रहे * तौलों चलन लगी तलवारि ॥
कोउ २ क्षत्री रोजगारी बनि * ढालैं लेय पीठि पर लादि ॥
हमहिं नमरियो हमहिं नमरियो * हम ढालन के बेचन हार ॥
नीचे क्षत्री ऊपर मुरदा * रणमें लेटि रहे चुप साधि ॥
हाथी बिचले रणके भीतर * क्षत्रिन ऊपर धरिदे पाँव ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बिनही मारे वे मर जावैं * हाय बिनमारे मौति होइजाय ॥
भगे सिपाही नरवर गढ़ के * अपने डारि डारि हथियार ॥
घोड़ा बढ़ायो मकरंदी ने * औ मलिखे पै पहुँचो जाय ॥
बोले मकरँद नर मलिखे ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
दश दश रुपया के नौकर हैं * काहे डरिहौ शीश कटाय ॥
हम तुम खेलैं समर खेत में * दुइमां एक कुरी रहि जाय ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
बोले मलिखे मकरंदी ते * पहिली चोट करो तुम आय ॥
घोड़ा बढ़ायो मकरंदी ने * औ यह कही सुनो मलिखान ॥
सम्हरिके बैठो तुम घोड़ी पर * तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
इतनी सुनतै घुंडी खोली * छाती रोंप दई मलिखान ॥
तीर चलायो मकरंदी ने * दहिने निकरि गयो वापार ॥
बचिगयो लरिका बच्छ राजको * दहिने भई शारदा माय ॥
बोले मकरँद नर मलिखेते * अबहूं लौटि महोबे जाउ ॥
इतनी बात सुनी मकरँद ते * तब हँसिकही बीर मलिखान ॥
चोट अपनी औरो करिलेउ * मनकी मेटि लेउ अरमान ॥
गुस्सा होइ कै तब मकरँद ने * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका जब समुहें पर * मलिखे दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही मकरँद मारी * उनके अंग न आयो घाव ॥
घोड़ी बढ़ाई नर मलिखे ने * मकरन्दी ते कही सुनाय ॥
सम्हरौ मकरँद अब घोड़ा पर * तुमपर आय गयो मलिखान ॥
गुर्ज उठायो नर मलिखे ने * सो मकरँद पर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के * मकरँद घोड़ा गये भगाय ॥
पहुँचे मकरँद रंग महल में * बान अजीता लियो उठाय ॥
काठ का घोड़ा शेल शनीचर * सो मकरंद ने लियो उठाय ॥
जायके पहुँचे तब हिरिया घर * औ हिरिया ते कही सुनाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * लश्कर कटा दई करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

निमक हमारो तुम खायो है * अब गाढ़े में आवो काम ॥
लज्जा राखि लेउ हमरी तुम * अबही चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनिके मालिन चलिभई * अपनी जादू लई उठाय ॥
मकरँद पहुँचे जब लश्कर में * मालिन जादू दई चलाय ॥
शेल शनीचर बान अजीता * सो मकरँद ने दियो चलाय ॥
लश्कर विचलि गयो महुबे को * क्षत्री सुन्न सान होइ जायँ ॥
देखि हाल यह नर मालिखे ने * अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
सांग उठाई नर मालिखे ने * मकरन्दी पर दई चलाय ॥
काठका घोड़ा उपर उड़ि गयो * नीचे सांग गिरा अरराय ॥
शेल चलायो मकरन्दी ने * सो घोड़ी के लागो जाय ॥
घोड़ी कबुतरी लँगरी होय गई * मलिखे उतरि पेर अरगाय ॥
मलिखे पहुँचे पच पेड़वा लग * मकरँद कटा दई करवाय ॥
जितने राजा आये बराती * सबको कैद लई करवाय ॥
सो पठवाय दियो नरवर गढ़ * नाहीं मसातलक मन्नाय ॥
तड़पे आल्हा तब ऊदनि ते * तुम करि दई बंशकी हानि ॥
याही दिनको हम हटको रहै * नाहीं मानो कही हमारि ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * दादा धीर धरो मन माहिं ॥
मौर उतारि धरो ऊदानि ने * सिरपर बाँधी बैजनी पाग ॥
कछनी बाँधी वघ ऊदनि ने * कम्मर दुइ बाँधी तलवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो * तापर फाँदि भये असवार ॥
ऊदनि आये तब लश्कर में * देखी फौज महोबे केरि ॥
सोचन लागे ऊदन बाँकुड़ा * अपनो मया मोह बिसराय ॥
खैंचि शिरोही लियो कम्मरते * लश्कर धसे उदैसिंह राय ॥
जैसे पान तमोली कतरे * जैसे खेती लुने किसान ॥
तैसेइ ऊदनि दल में बिचले * बहुतक क्षत्री दिये गिराय ॥
बाइस हौदा खाली करिके * मकरन्दी पर पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करो जड़ाका मकरन्दी पर * मकरँद दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गई गैंड़ावाली * सोने फूल गिरे झहनाय ॥
बोले मकरँद तब ऊदनि ते * अब तुम खबरदार होइजाउ ॥
गुर्ज उठायो तब मकरन्द ने * तब हिरियाने कही सुनाय ॥
हाथ न डरियो तुम लरिका पर * इतनी मानो कही हमारि ॥
काम तुम्हारो पूरन होइहैं * यह कहि जादू लियो उठाय ॥
जादू डारि दियो मालिनि ने * घोड़ा तुरत खड़ा रहिजाय ॥
तबतो मकरँद आगे बढ़िगे * औ ऊदनि को लीन्ही बाँधि ॥
मकरन्द ऊदनि को सँग लैके * नरवर गढ़ में पहुँचो जाय ॥
देखि हाल यह ढेबा चलि भौ * औ आल्हा पै पहुँचो जाय ॥
बोले ढेबा तब आल्हा ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
ऊदनि बाँधि लिये मकरँद ने * औ नरवर में राखो जाय ॥
सुनो हाल जब यह आल्हा ने * मनमें बहुत गये घबराय ॥
भैया जल्द जाउ महुबे को * सोनवें खबरि सुनावो जाय ॥
चलि भयो ढेबा तब नरवर ते * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
देवै ठाढ़ी दरवाजे पर * हेरे बाट बरायत क्यार ॥
तौलौ ढेबा दाखिल होइ गयो * पहुँचो रंग महल में जाय ॥
साजि आरती देवै माता * सो ढेबा पर धरो उतारि ॥
हृदय लगाय लियो ढेबा को * बेटा हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ बरायत तुमने छोड़ी * सो तुम हमहिं कहौ समुझाय ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागो * हमते कछु कही ना जाय ॥
जितने राजा गै बरात में * मकरँद लीन्हें कैद कराय ॥
घायल घोड़ी भइ मलिखे की * औ बँधि गयो उदैसिंह राय ॥
जादू डारि दियो मालिनि ने * लश्कर सुन्नसान होइ जाय ॥
बहुतक क्षत्री मकरंदी ने * रण खेतन में दियो गिराय ॥
अकिले आल्हा हैं लश्कर में * हमको पठयो नगर महोब ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनतै परलै होइ गई * देवै गिरी मूर्छा खाय ॥
जोकहुँ ऊदनि मारे जैहैं * बेड़ा कौन लगैहैं पार ॥
सुनी खबरि जब यह सोनवाँ ने * तब देवै पै पहुँची जाय ॥
पूछन लागी नर ढेबाते * देवर हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ बरायत तुमने छोड़ी * सो तुम हमसे कहौ सुनाय ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लाग्यो * भौजी सुनो हमारी बात ॥
जितनो लश्कर रहे महुबे को * सब नरवर में दियो गँवाय ॥
हिरिया मालिनि नरवर गढ़ की * ताने जादू दियो चलाय ॥
घोड़ी घायल भइ मलिखे की * लश्कर रैन बैन होइ जाय ॥
मकरन्द बाँधि लियो ऊदन को * औ नरवर गढ़ राखो जाय ॥
इतनी सुनतै रनि सोनवाँ ने * रनि देवै ते कही सुनाय ॥
इन्दल बेटा यहु छोटो है * नहिं मैं देती तुरत पठाय ॥
काम बने हौं मैं अपनो सब * सासुल धीर धरो मन माहिं ॥
सब सामान लियो पूजाको * औ यक साथ लई तलवार ॥
सुनवाँ चलिभइ रंग महल ते * औ मठिया में पहुँची जाय ॥
करिकै पूजन श्रीदेवी को * अपनो शीश चढ़ावन लागि ॥
आभा बोली तब देवी को * अपनो कारज देउ बताय ॥
हाथ जोरि तब सोनवाँ बोली * माता सुनो हमारी बात ॥
ऊदनि ब्याहन गये नरवरगढ़ * मकरँद लीन्हीं कैद कराय ॥
जितनी बरायत गइ महुबे ते * सब पर जादू दियो चलाय ॥
कठिन मवासी नरवर गढ़ के * कैसे बनै हमारो काम ॥
बोली देवी तब सुनवाँ ते * बान अजीता दिहौं हटाय ॥
काठको घोड़ा शेल शनीचर * सोऊ तुरतै लिहौं छिपाय ॥
लैके अमृत दियो देवी ने * जादू पुरिया दई गहाय ॥
बोली देवी रनि सोनवाँ ते * तुम्हरो काम सिद्धि हुइजाय ॥
यह सुनि चलि भइ सुनवाँ रानी * श्रीदेवी को माथ नवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आयके पहुँची नर ढेबा पै * औसबहाल कह्यो समुझाय ॥
अमृत दियो रह जो देवी ने * सो ढेबाको दियो पकराय ॥
जल्दी जावो तुम नरवर को * भई सहाय शारदा माय ॥
इन्दल बिचले संग जैबे का * तबसोनवाँने दियो समुझाय ॥
चलिभयो ढेबा दसपुरवा ते * औ नरवर में पहुँचे आय ॥
आल्हा बैठे रहे तम्बू में * ढेबा करी बन्दगी जाय ॥
देवी पहुँची गढ़ नरवर में * शेलशनीचर लियो उठाय ॥
काठको घोड़ा निर्बल करिदियो * बान अजीता लियो छिपाय ॥
बोले आल्हा नर ढेबा ते * भैया हाल देव बतलाय ॥
हाल सुनायो तब ढेबा ने * औ अमृतको दियो गहाय ॥
देवी शारदा दाहिन होइगई * पूरन होइहै काम तुम्हार ॥
बोले आल्हा तब ढेबा ते * अब मलिखे को लावो जाय ॥
ढेबा चलिभयो तब जल्दी ते * पहुँचे जहाँ बीर मलिखान ॥
तुमहिं बुलायो नुनि आल्हाने * जल्दी चलो हमारे साथ ॥
मलिखे आये पँच पेड़वा ते * औ आल्हापै पहुँचे आय ॥
मलिखे उतरि परे घोड़ा ते * औआल्हा को कियो प्रणाम ॥
हाल सुनायो तब आल्हा ने * भई सहाय शारदा माय ॥
हाथी पचशावद सजवायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा पपीहा को सजवायो * तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
घोड़ा मनोरथा पर ढेबा चढ़ि * पहुँचे तुरत फौजमें जाय ॥
अमृतछिड़कि दियो आल्हाने * लश्कर उठा बनाफर क्यार ॥
सब उठि बैठे महुबे वारे * जिनके मारु २ रटलागि ॥
हुक्म दैदियो तब आल्हाने * लश्कर आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * औ फाटकपर पहुँचे जाय ॥
यक हरकारा बदलत आयो * औ मकरँद ते कही सुनाय ॥
लश्कर आयो है महुबे को * औ फाटकको घेरो आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनतै चलिभै मकरँद ठाकुर * अलगा परी ढाल तलवारि ॥
पहुँचे मकरँद तब लश्कर में * तुरतै डंका दियो बजाय ॥
चोब नगारा के सुनतै खन * लश्कर सजा बिसेने क्यार ॥
मकरँद चलिभै फिर लश्करते * औ बंगला में पहुँचे जाय ॥
बान अजीता शेलशनीचर * सो तहँ नाहीं परो दिखाय ॥
काठको घोड़ा निर्बल देखो * मकरँद गये सनाका खाय ॥
घोड़ा मँगायो मकरँद ठाकुर * तापर तुरत भये असवार ॥
हिरिया मालिनको सँग लीन्ही * औ लश्कर में पहुँचो जाय ॥
आये मकरंद रण खेतन में * तबमलिखे बढ़ि कही सुनाय ॥
कैद छाँड़िदेउ तुम ऊदनि को * सातो भाँवरि देउ डराय ॥
गरि बढ़ावत हौ नाहक तुम * दूजी करत हमारे साथ ॥
इतनी सुनतै मकरंदी ने * लश्कर हुक्म दियो फरमाय ॥
मारि गिरावो इनपाजिन को * सबको कटा देउ करवाय ॥
बढ़े सिपाही नरवर वाले * अपनो खैंचि लई तलवार ॥
पैदल अभिरि गये पैदल संग * औ असवारन ते असवार ॥
खटखट तेगा बाजन लागो * छूटन लगे अगिनियाँ बान ॥
चलै जुनब्बी और अहिगर्बी * ऊना चले विलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के * कटि २ गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
चारि घरी भरिचली शिरोही * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
झुके सिपाही पहुबे वाले * दोनों हाथ करैं तलवार ॥
भगे सिपाही नरवर वाले * अपनो डारि २ हथियार ॥
भगत सिपाही मकरँद देखे * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले पकरँद नर मलिखे ते * अबतुम खबरदार होइजाउ ॥
गुर्ज चलायो मकरंदी ने * मलिखे लीन्ही चोट बचाय ॥
बोले मकरँद तब हिरिया ते * अब क्यों राखी देर लगाय ॥
इतनी सुनतै हिरिया मालिनि * अपनी जादू लई उठाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तकि तकि जादू मालिन मारे * सो मलिखे पर ना अनियाय॥
बोले मलिखे तब हिरिया ते * हमरो बचन करो परमान ॥
पुष्य नक्षत्र माहिं जन्मा हूं * बरहैं परो बृहस्पति आय ॥
जादू टोनाको गिनती क्या * शंका हमहिं कालको नाहिं॥
यह कहि मलिखे गै हिरिया पै * औ मालिनि को दियो गिराय॥
जूरा काट लियो जल्दी ते * जादू सबै झूठि परिजाय ॥
यह गति देखो मकरंदी ने * मनमें बहुत गये घबराय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो आगे को * अपनी खैंचिलई तलवार ॥
करो जड़ाका नर मलिखे पर * मलिखे लीन्ही चोट बचाय ॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी * औ मकरँद को दियो गिराय॥
मकरँद गिरि गै जब धरती पर * घोड़ा सात कदम हटि जाय ॥
तुरतै मकरँद को बाँधो तहँ * औ आल्हा पै पहुँचो जाय ॥
फौज भागगइ नरवर गढ़ की * राजै खबरि पहूँची जाय ॥
खबरि सुनतहीं राजा नरपति * बहुत गरीबी भेष बनाय ॥
आये नरपति सुनि आल्हा पै * औ आधीनी कही सुनाय॥
तुम सब लायक महुबे वाले * सातौ भाँवरि दिहौं डराय ॥
कैद छाँड़ि देव मकरन्दी की * तुम्हरे काम सिद्ध होइ जाय ॥
इतनी सुनिकै आल्हा बोले * तुम ऊदनि को देउ छोड़ाय ॥
कैद छाड़ि देउ सब राजन को * सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
यह सुनि तुरतै राजा नरपति * सबको कैद दई छोड़वाय ॥
कैदते छूटिकै ऊदनि ठाकुर * सो आल्हा पै पहुँचे जाय ॥
आल्हा छाँड़ि दियो मकरन्द को * तब नरपति ने कही सुनाय॥
सायति पूछ लेउ पंडित ते * आल्हा पंडित लियो बुलाय ॥
चूड़ामणि पंडित तब आये * औ आल्हा ते लगे बतान ॥
देवा लग्न बहुत नीको है * अबही त्यारी लेव कराय ॥
इतनी सुनकै नरपति चलि भये * पहुँचे रंग महल में जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मँडवा छवायो है जल्दी ते * मोतिन चौक दियो पुरवाय ॥
कलश सूबरन को धरवायो * औ सखियन को लियो बुलाय॥
सखियां मंगल गावन लागीं * पंडित बेद उचारन लाग ॥
तौलो आये माहिल राजा * सो नरपति ते लगे बतान ॥
ब्याह जो करिहौ तुमऊदनिसँग * कोउ न पिये घड़ाको पानि ॥
दागु लागिहैं रजपूती में * ओछी जात बनाफर क्यार ॥
यतन बतावैं हम तुमको यक * सो तुस करो बिसेने राय ॥
जितने घरौआ हैं महुबे के * सो मड़ये में लेउ बुलाय ॥
शूर कोठरियन में बैठाओ * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
बात मानिलई यह माहिल की * छत्री दुइ हजार बुलवाय ॥
तिनहिं छिपाय दियो कोठरिनमें * मकरन्दी को दियो पठाय ॥
मकरन्द पहुँचे तब बरात में * औ आल्हा ते कही सुनाय॥
जितने घरौआ हैं तुम्हरे संग * सो सब चलो हमारे साथ ॥
चली पालकी तब ऊदनि की * संगहिं चले घरौआ ज्वान ॥
जबहीं पहुँचे सब महलन में * फाटक बन्द दियो करवाय ॥
अहनी ताले उन डरवाये * औफिरि नेग होनसब लाग॥
कन्या दान होन लागो तहँ * पंडित गाँठि दई जोरवाय ॥
पंडित होम करावन लागे * भाँवरि परन लगो ज्यहिकाल॥
पहिली भाँवरि कै परतै खन * मकरन्द खींचि लई तलवार ॥
चोट चलाई जब ऊदन पर * मलिखे दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
दुसरी भाँवरि के परतै खन * छत्रिन खैंचिलई तलवार ॥
चली शिरोही तब मडये तर * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
टूक टूक मड़ये के होइगे * खंभा गिरो भूमि पर जाय ॥
मड़वा गड़ो तबै साँगन को * ढालन मंडप दियो छवाय ॥
कैद कर लियो मकरंदी को * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
हाथ जोरिके नरपति बोले * तुम समरथ बनाफर राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कैद छाड़िदेउ मकरंदा को * अबहीं बिदादिहौं करवाय ॥
मकरँद छोड़े तब आल्हा ने * औ राजाते कही सुनाय ॥
भात खवाय देउ हमको तुम * औफिरि बिदा देउ करवाय ॥
यहसुनि खबरकरी महलन में * तुरतै भयो भात तैयार ॥
बोले नरपति तब आल्हा ते * तुम चलि जेंइलेउ ज्योनार ॥
इतनी सुनिके अपने अपने * सबने बाँधि लियो हथियार ॥
बोले नरपति तब बिनती करि * हमरे कुला यहै ब्योहार ॥
दुसरो करिहैं ना तुमते हम * तुम सब छोरिधरो हथियार ॥
बोले मलिखे तब नरपति ते * तुम घटिकरो हमारे साथ ॥
गंगा कीन्हीं तब नरपति ने * तब उनछोरि धरे हथियार ॥
लैके गडुआ चले धरौआ * औ चौका में बैठे जाय ॥
भात परोसे सबके आगे * मकरँद छत्री लियो बुलाय ॥
भात खान नहिं तिनपायो रहै * तौलौ चलन लगी तलवार ॥
लैके गडुआ उठे महोबिया * औ छत्रिन को मारन लाग॥
तीनि घरीभरि गडुअन मारो * सबने पाटा लियो उठाय ॥
हनिके पाटा ज्यहि के मारैं * त्यहिं धरतीमें देयँ गिराय ॥
छत्री भागि गये नरवर के * तब नरपति ने कही सुनाय ॥
अब हम जानी अपने मनमें * तुम गाढ़े में ऐहौ का ॥
ऐसे छत्री महुबे उपजे * काहे न राज करैं परिमाल ॥
बोले आल्हा तब नरपति ते * अपने नेगी लेउ बुलाय ॥
नेगी बुलाये तब राजा ने * आल्हा गहना दियो बँटाय ॥
आई पालकी दरवाजे पर * फुलवा बिदाहोन तब लाग॥
तोड़ा सातलियो मोहरन को * सो ढेबाने दियो लुटाय ॥
बिदाभई तब रनिफुलवा को * पलकी चली बरायत जाय ॥
जबहीं पहुँचे सब लश्कर में * मलिखे मेख दई उखराय ॥
तम्बू लदिगे सब छकरन में * लश्कर कूच दियो करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

आइ बरायत जब सागर पर * सबने डेरा दियो डराय ॥
रुपना बारी गयो महुबे में * मल्हनै खबरि सुनाई जाय ॥
भई खबरि तब रंग महल में * आये ब्याहि उदैसिंहराय ॥
सखियाँ बुलवाई मल्हना ने * महलन होय मंगलाचार ॥
भयो बोलौआ बघ ऊदनिको * आवै साथ फुलामति रानि ॥
आई पालकी दरवाजे पर * परिछन करी मल्हनदे रानि॥
बहू उतारी रनि मल्हना ने * औ महलनमें राखी जाय ॥
दान दक्षिना दे सबही को * घरघर भयो मंगलाचार ॥
अनँद बधाई बाजन लागी * महुबे दगन सलामी लागि ॥
जितने राजा आये बराती * तिनको बिदा दई करवाय ॥
ऐसे ब्याह भयो ऊदनि को * सो हमलिखिके दियो सुनाय॥
कोउ कोउ गावतहैं अम्मरगढ़ * पै यह साँची भयो विवाह ॥
सुमिरन करिकै नारायण को * करिहौं इन्दल ब्याह बखान ॥
कान लगाय सुनो यारो सब * जैसे भयो युद्ध मैदान ॥
समय समयपर आल्हा गावौ * नित उठिलेव नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * सीताराम केर धरि ध्यान ॥

॥ इति नरवरगढ़ की लड़ाई ऊदनका ब्याह समाप्त ॥

-******-

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ इन्दल हरण ॥

दो०-सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

आल्हा ।

सुमिरन करके नारायन को * जगदम्बे के चरण मनाय ॥
इन्दल हरन लिखौं आगे मैं * होउ सहाय शारदा माय ॥
करौं ध्यान अब श्रीगंगे को * निशिदिन पापहरनिमहरानि॥
सब अस्नान करत भक्ती ते * तीर्थन माहिं पुनीत बखानि ॥
जेठ दशहरा की पर्वी है * बुड़की लेन गंगकी धार ॥
देश देशके राजा चलिभै * लीन्हें साथ शूर सरदार ॥
यात्री बोले जैगंगा की * जय २ शब्द होय चहुँओर ॥
वही समैया ऊदन ढेबा * बनमें खेलन गये शिकार ॥
मेला देखो जब ऊदनि ने * तब ढेबाते कही सुनाय ॥
कहाँ जात है यह मेला सब * दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले ढेबा तब ऊदनि ते * मेला यह बिठूर को जाय ॥
पर्व दशहरा को भारी है * यह सुनि कही उदैसिंह राय ॥
बुड़की लेहैं हम बिठूर को * हमहूँ जैहैं गंग नहान ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागो * जेठो भाई बाप समान ॥
आल्हा पठवैं जो नहान को * तो तुम करो गंग अस्नान ॥
ढेबा ऊदनि दोनों चलि भै * औ आल्हा पै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिके ऊदनि बोले * दादा हुक्म देउ फरमाय ॥
जेठ दशहरा की पर्वी है * हमहूँ जैहैं गंग नहान ॥
बोले आल्हा तब ऊदनि ते * भैया मानो बात हमारि ॥
काम तुम्हारो ना जैबे को * करिहो तहाँ बखेड़ा जाय ॥
माहिल बैठे थे बँगला में * सो अल्हा ते लगे बतान ॥
गंग नहैबे को हटकोना * काहे करैं बखेड़ा जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले आल्हा तब माहिलते * तुमहूँ जाउ लहुरवा साथ ॥
करी तयारी तब ऊदनि ने * लीन्हें संग माहिल परिहार ॥
ढेबा ऊदनि दोनों सजिगे * अपनो डंका दियो बजाय ॥
सुनो नागरा जब इन्दलने * तब ऊदनि पै पहुँचा जाय ॥
बोले इन्दल तब ऊदनि ते * चाचा हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ कि त्यारी चाचाँ कीन्ही * तब ऊदनि ने कही सुनाय ॥
जेठ दशहरा की बुड़की है * बुड़की लेन गंगकी जायँ ॥
करी तयारी हम बिठूर की * यह सुनि इन्दल कही सुनाय ॥
संग तुम्हारे हमहू चलिहैं * बुड़की लिहैं गंग की धार ॥
यह सुनि बोले ऊदन ठाकुर * जान न देहैं बाप तुम्हार ॥
संग तुमहिं हम नाहीं लेहैं * यह सुनि इन्दल लियो कटार ॥
अपनी छाती पर धरि लीन्हों * औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
संग हमहिं जो ना ले चलिहौ * तौ मैं पेट मारि मरिजाउँ ॥
यह सुनि साथ लियो इन्दलको * औ आन्हापै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिके ऊदनि बोले * दादा सुनो हमारी बात ॥
इन्दल मचले हैं मेला को * आज्ञा होय संग लेजायँ ॥
बोले आल्हा तब ऊदनि ते * साथ न लीजो पुत्र हमार ॥
जादूगर ऐहैं मेलेमें * अपनी जादू दिहैं चलाय ॥
चलिभये ऊदनि तब बँगलाते * औ सँगलेइ इँदलसिंह क्याँर ॥
कूच करायो तब बिठूर को * मानी कही न आल्हा क्यार ॥
जबही पहुँचे गंग घाट पर * अपनो डेरा दियो डराय ॥
लाखनि राना कनउज वाले * सोऊ तहाँ पहुँचे आय ॥
डंका बजत रहैं ऊदन को * सुनिके लाखनि कही सुनाय ॥
कोहको डंका यहु बाजत है * अबहीं बंद देउ करवाय ॥
धावन पहुँचा तब ऊदन पै * औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
हुक्म कनौजी को गालिब है * डंका बंद देउ करवाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * तुम रानाते कहौ सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऊदन आये हैं महुबे ते * डंका बन्द होन को नाहिं ॥
लौटि जवाब दियो धावन ने * तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
आये महोबिया मोहबे वाले * डंका बन्द होन को नाहिं ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना * अपनी मुर्चा दियो लगाय ॥
सुनी खबरि जब यह ऊदनि ने * तिनहू मुर्चा दियो लगाय ॥
बत्ती धरिबे को बाकी रह * तौलौ सैयद पहुँचे आय ॥
बोले सैयद तब लाखनि ते * हमरे बचन करो परमान ॥
बड़ो लड़ैया ऊदनि ठाकुर * है जो देव कुँवरि को लाल ॥
लड़े न जितिहौ तुम ऊदनि ते * ताते धीर धरौ मन माहिं ॥
मेला देखन तुम आये हौ * काहे देहौ कटा कराय ॥
ढेबा समुझावैं ऊदन को * भैया अक्किल गई तुम्हारि ॥
आल्हा हटको है याही को * सोई बात परा यह आय ॥
बन्द कराय देउ डंका को * औचलिमिलौ कनौजी साथ ॥
अजैपाल राजा कनउज में * जिनको उदय अस्तलौं राज ॥
तिनघर उपज्यो यहु लाखनिहै * राजा रती भान को लाल ॥
बेनचकवै को नाती है * जानत जिनहिं सकल संसार ॥
दुसरी राखौ ना लाखनि ते * यह तुम मानौ कही हमारि ॥
होय बड़ाई देश देश में * जो लाखनि ते मिलिहौजाय ॥
बात मानलइ तब ऊदन ने * पाँच दुसाला लियो मँगाय ॥
हीरा पाँच लिये ऊदन ने * औ चलि भयो लहुरवा भाय ॥
पाँच कदम जब लाखनि रहिगै * ऊदन झुकिके करी सलाम ॥
देखौ नजराना लाखनि ने * लै हँसि कही कनौजी राय ॥
तुम सब लायक ऊदन ठाकुर * राजा दस्सराज के लाल ॥
डंका अपनो तुम बजवाओ * यह कहि छाती लियो लगाय ॥
भई मित्रता तब दोनों में * शोभा कछु कही ना जाय ॥
हियाँकी बातें तो यहँ छाँड़ो * अब आगेको सुनौ हवाल ॥
बलख बुखारा के राजा की * चितरेखा है राज कुमारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

सोऊ मचली जब मेलाको * अभिनन्दन ने फही बुझाय ॥
बेटी जावो ना मेला को * इतनी मानो कही हमार ॥
लाखनि ऐहैं तहँ कनउज के * ऐहैं तहाँ महोबिया ज्वान ॥
बात बिगरि जैहै काहु ते * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
एक न मानी जब बेटी ने * तब राजाने दियो पठाय ॥
हंसा बेटा संग पठायो * अपनो लश्कर दियो सजाय ॥
करी तयारी तब बेटीने * केसरि नटनी संग लेवाय ॥
पिंजरा सोने के लै लीन्हा * अपनो कूच दियो करवाय ॥
पहुँची बेटी जब गंगा पर * अपने डेरा दियो लगाय ॥
ब्याह भयो है जब धाँधू को * इन्दल गये बरायत माहिं ॥
इन्दल देखे तहँ बेटी ने * तबते मनमें करै बिचार ॥
यातो ब्याह होय इन्दल संग * नातर क्वाँरि रहौं संसार ॥
यहै सोच बेटीको निस दिन * कैसे मिले इन्दलसिंह क्वाँर ॥
इन्दल मिलिहै गंगाधर पर * ताते गई गंग दरबार ॥
राति बसेरा करि गंगा पर * सूरज उदैभये जब आय ॥
मेला देखन को जल्दी ते * चित्तर रेखा भई तयार ॥
रूप बनाय लियो नटनी को * केसरि नटनी संग लेवाय ॥
संग लै लियो सब सखियन को * मेला करन तमाशा लागि ॥
मेला टिको जहाँ महुबे को * तहँ पर करी तमाशा जाय ॥
नाच तमाशा देखन लागे * छत्री मोहि मोहि रहि जायँ ॥
जादू लीन्हों जब नटिनी ने * ढेबा तुरत गयो पहिचान ॥
बोले ढेबा तब ऊदनि ते * जल्दी इनहिं देउ निकराय ॥
अब जो देखिहौ इन नटिनीको * तो सब जैहै काम नशाय ॥
सुनत मोहरैं दे नटिनिन को * औ तम्बू ते दियो निकारि ॥
देखिके बेटी गइ डेरा में * मनमें बसे इन्दलसिंह क्वाँर ॥
बुड़की लेन चले ऊदनि जब * ढेबा इन्दल संग लेवाय ॥
छत्री एक हजार साथ लै * नंगी लिये हाथ तलवार ॥

CC-0, Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गोदी लैके तब इन्दल को * बुड़की लई उदैसिंहराय ॥
गंगा पुत्री तब बुलवाये * दान दक्षिणा दई बताय ॥
मोहरैं पाँच दई खेवट के * ऊदनि नौकालई मँगाय ॥
सो ढिलवाई उदय सिंह ने * पहुँची बीच धार में जाय ॥
चलि भइ बेटी अभिनन्दन की * पहुँची गंग किनारे जाय ॥
मोहरैं दैके मल्लाहन को * बेटी नाव लई मँगवाय ॥
केसरि नटिनी को सँग लैके * बैठी बीच नाव में जाय ॥
पिंजरा लैके कर सोने को * तुरतै नाव दई छोड़वाय ॥
नाव पहूँची बीच धारमें * नौका जहाँ महोबियन क्यार ॥
चितरेखा तब देखन लागी * औ इन्दल तन रही निहारि ॥
लैके जादू भैरव वाली * सो ऊदनि पर दई चलाय ॥
नजरि बन्द होयगइ ऊदन की * मुर्च्छित भये उदयसिंह राय ॥
दूसरि पुरिया बेटी लैके * नर ढेबा पर दई चलाय ॥
ढेबा गिरिगौ तब नौका पर * देही की सुधि गई भुलाय ॥
तिसरी जादू बेटी लैके * सो इन्दल पर दई चलाय ॥
सुवा बनाय लियो इन्दलको * औ पिंजरा में राखो जाय ॥
नाव किनारे पर लगवाई * तुरतै उतरि परी अरगाय ॥
आय पहूँची जब लश्कर में * अपनो कूच दियो करवाय ॥
जादू उतरि गयो ऊदनि को * औ ढेबाको आयो होश ॥
नहीं दिखाय परे इन्दल कहुँ * तब ढेबाते कही सुनाय ॥
काहे दादा यह कैसी भइ * देखि न परे परेउना लाल ॥
ऊदनि ढेबा दोनों चलि भये * औ मेलामें ढूँढ़न लाग ॥
सिगरो मेला जब मथि डारे * तब उन जाल लियो मँगवाय ॥
सो डरवाय दियो गंगा में * फँसिगै मगर मच्छ तहँ आय ॥
पेटु फरायो सब जीवन को * तबहु न मिले इन्दलासिंहराय ॥
ऊदनि बोले तब ढेबाते * अबहम करिहैं कौन उपाय ॥
मुख दिखैहैं कस दादा को * करिहैं कौन बहाना जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

माहिल बोले तब ऊदनि ते * अपनो सोच देउ बिसराय ॥
हम कहि दे हैं यह आल्हा ते * कोउ जादू करि गयो लेवाय ॥
तुम कहिदीजो हाथ जोरिके * जल्दी ढूँढ़ मिलैहैं आय ॥
मोहलतिमँगियो पाँच मास की * औ इन्दल को ढूँढ़ियो जाय ॥
इतनी सुनिके बघऊदनि ने * तुरतै कूच दियो करवाय ॥
आय पहुँचे मदन ताल पर * अपनो तम्बू दियो लगाय ॥
आगे पहुँचे माहिल राजा * औ आल्हा ते लगे बतान ॥
हाल सुनो तुम सब मेला को * मारो गयो पेरउना लाल ॥
गोता मारो जब इन्दल ने * ऊदनि मारि दई तलवार ॥
शीश काटि के उन इन्दल को * सो गंगा में दियो बहाय ॥
सुनतै आल्हा बोलन लागे * काहे बोलत झूठ बनाय ॥
हमहिं पियारे थोरे इन्दल * औ ऊदन को बहुत पियार ॥
बात हमारी साँची जानो * हमना बोलत झूठ बनाय ॥
कसम हमहिं है इकलौता की * जो हम कहा होय कछु झूठ ॥
साँचो बान मानि माहिल को * आल्हा गये क्रोध में छाय ॥
माहिल चलिभे तब महुबे ते * औ उरई में पहुँचे आय ॥
बोले ऊदन नरदेवा ते * भैया तुम बँगला लौं जाउ ॥
हाल सुनावौ तुम मेला को * औ आल्हा समुझावौ जाय ॥
चलिभौ ढेबा तब डेराते * औ बँगला में पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी जब आल्हा को * आल्हा पीठी लई फिराय ॥
बोले ढेबा तब आल्हा ते * काहे न हमरी लई सलाम ॥
खता हमारी को बतलावो * तब आल्हा ने कही सुनाय ॥
जल्दी लावो तुम ऊदन को * हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
ढेबा लौटो तब बँगला ते * औ डेरा पर पहुँचो आय ॥
बोलो ढेबा बघऊदन ते * अबही चलो हमारे साथ ॥
तुमहिं बुलायो है आल्हा ने * यह सुनि कही उदैसिंह राय ॥
दादा मँगिहैं जब इन्दल को * तब हम दे हैं कौन जवाब ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ढेबा समुझायो ऊदन को * तुम यह कहियो बात सुनाय॥
जादूगर आये मेला में * हरि लेगयो परेउना लाल ॥
मोहलति दै देउ पाँच मासकी * लावैं ढूँढ़ि इन्दलसी कवाँर ॥
बात मानिके तब ढेबा की * तुरतै उठे उदैसिंह राय ॥
दूबको बौंड़ा मुख में दाबो * नंगे पाँय गरीबी भेष ॥
हाथ अँगौछा ते बँधवाये * औ चलि भये उदै सिंहराय ॥
पहुँचे ऊदन जब आल्हा पै * झुकिके ऊदन करी सलाम ॥
तीन बार उन करी बन्दगी * आल्हा ने नहिं लियो सलाम॥
हाथ जोरिके ऊदन बोले * दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
खता हमारी तुम बतलावौ * काहे रूठि गयो यहि काल ॥
आल्हा बोले तब गुस्सा होय * तुम घटि करी हमारे साथ ॥
साथ लै गयो पुत्र हमारो * औ गंगापर डारो मारि ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * दादा बचन करो परमान ॥
जादूगर आये मेला में * काहू जादू दियो चलाय ॥
साथ लैगयो कोउ इन्दलको * हम सब मेला लियो ढुँढ़ाय ॥
पता न लागो कहुँ बेटाको * तब हम कूच दियो करवाय ॥
मोहलति दै देउ पाँच मास की * लैहौं ढूँढ़ि परेउना लाल ॥
गुस्सा होइ कै आल्हा बोले * तुम घटि करी हमारे साथ ॥
साँची कहिगै माहिल मामा * तुमने मारो पुत्र हमार ॥
एक न मनिहौं बात तुम्हारी * डरिहौं तुमहिं जानते मार ॥
ऊदन ढेबा दोनों मिलि कै * आल्है बहुत कही समुझाय॥
बात न मानो कछु आल्हा ने * गुस्सा गई देह में छाय ॥
डंड बाँधिके बघ ऊदन को * औ खंभामें दियो बँधाय ॥
हरबाँस आल्हा मँगवाये * औ ऊदन को मारन लाग ॥
रुधिर बहन लागी देही ते * पीठी लाल बरन होइ जाय ॥
खबरि पहुँचो जब देवै को * सो बँगला में पहुँची आय ॥
बोली देवै तब आल्हा ते * काहे दइ बाँस की मारु ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बेटा छाँड़ि देउ ऊदन को * इतनी मानौ कही हमारि ॥
बोले आल्हा तब देवै ते * इनने मारो पुत्र हमार ॥
जियत छोड़िहौं ना ऊदन को * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
देवे लौटि गई सोनवाँ पै * औ ऊदन को कह्यो हवाल ॥
कही न मानी कछु आल्हा ने * अपने कंथ मनावो जाय ॥
सोनवाँ पहुँची तब फाटक पर * औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
बहुत पियारे रहे बघऊदन * काहे दई बांस की मारु ॥
कोखिको भाई तुम मारत हौ * ऐसो तुमहिं सुनासिब नाहिं॥
सुनतै आल्हा बोलन लागे * जानौ नाहीं हाल तुम्हारि ॥
छलिकै लैगे ये इन्दल को * औ गंगा पर डारौ मारि ॥
जियत न छोड़िहौं हम ऊदनको * जौ चाहौ सो करो उपाय ॥
हाथ जोरिके सोनवां बोली * स्वामी पैयां परौं तुम्हारि ॥
हम तुम रहिहैं जो दुनियां में * इन्दल आय लिहैं अवतार ॥
पीठि को भाई फिर ना मिलिहैं * स्वामी समुझि लेउ मनमाहिं॥
यादि करो तुम नैना गढ़ को * तुम्हरी कैद छोड़ाई जाय ॥
जो कहुँ मरि हौ तुम ऊदन को * तो माटी के मोल बिकाउ ॥
अबही गुस्सा करि मारत हौ * पीछे पछतैहौ महराज ॥
जबहीं सुनिहैं दिल्ली वाले * तुरत महोबा लिहैं लुटाय ॥
बोले आल्हा तब सोनवां ते * रानी कोटिन कहौ बनाय ॥
जियत छोड़िहौं ना ऊदनि को * अबहीं दिहौं जान ते मारि ॥
बोले ऊदनि रनि सोनवां ते * भौजी पानी देउ पिआय ॥
खैके गड़ुआ सोनवाँ चलि भइ * औ ऊदनि को दियो पकराय ॥
लात से गड़ुआ आल्हा मारो * पानी सबै दियो ढरकाय ॥
आल्हा सोनवैं मारन लागे * तुम मरवायो पुत्र हमार ॥
भागी सोनवां तब फाटक ते * औ फुलवा पै पहुँची जाय ॥
बोली सोनवाँ रनि फुलवा ते * अपनो कंथ छोड़ावो जाय ॥
खिरकी पर ते फुलवा बोली * दादा बिनती मानि हमारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अबना मारौ तुम भैया को * बेड़ा कौनु लगैहैं पार ॥
बोले आल्हा तब फुलवा ते * बैठी राज करौ घरमाहिं ॥
ऊदनि मारो है इन्दल को * इनको दिहैं जानते मारि ॥
सुनतै गुस्सा होय ऊदनि ने * तुरतै खंभा लियो उखारि ॥
सोचन लागे उदन बाँकुड़ा * जेठो भाई बाप समान ॥
हाथ चलावैं जो आल्हा पर * तो रजपूती धर्म नशाय ॥
मारत मारत आल्हा थकिगै * तब जल्लाद लिये बोलवाय ॥
आल्हा बोले जल्लादन ते * जल्दी ऊदन को लैजाउ ॥
नयन करेजे को निकारि कै * हमरी नजर गुजारौ आय ॥
इतनी सुनिके उदय सिंह को * लै जल्लाद चले तत्काल ॥
पहुँचे ऊदन जब ड्योढ़ी में * जहँ पर खड़ी सोनमदे रानि ॥
बोली सोनवाँ जल्लादन ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
हाथ चलैयो ना ऊदन पर * इनको छाँड़ि देउ तुम जाय ॥
अबैतो मारत हैं गुस्सा में * पीछे पछितै हैं महराज ॥
ताते हिरना यक मारौ तुम * लाओ नैन करेज निकारि ॥
जाय दिखावौ तुम स्वामी को * इतनी मानौ कही हमारि ॥
यहकहि हार उतारि गरे को * जल्लादन को दियो पकराय ॥
लै जल्लाद चले आगे को * तब फुलवा ने कही सुनाय ॥
हाथ न डारियो तुम स्वामी पर * यह कहि तोड़ा दियो गहाय ॥
तब जल्लाद चले आगे को * पहुँचे झार खंड में जाय ॥
बोले ऊदनि जल्लादन ते * हमको छुरिया देउ गहाय ॥
नैन करेजे अपने करते * अबहीं तुमको देयँ निकारि ॥
इतनी बात सुनी ऊदनि की * तब जल्लाद ने कही सुनाय ॥
जहाँ तुम्हारे मनमें भावे * तहँको ऊदनि जाउ पराय ॥
नगर महोबे को जैयो ना * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
जानते आल्हा हमको मरिहैं * सो तुम जानिलेउ मन माहिं ॥
हिरना मारौ एक जंगल में * नैन करेजा लियो निकारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जाय दिखायो सो आल्हा को * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
खबरि सुनाई परिमालै को * सुनि परिमाल गयो घबराय ॥
आय मूर्छा गइ राजा को * भुइँमें गिरे तड़ाका खाय ॥
खबरि पहूँची जब महलन में * सिगरो रोय उठो रनिवास ॥
हाहाकार परो मन्दिर में * को गाढ़े में ऐहैं काम ॥
पलकी मँगवाई राजा ने * तापर चढ़े चँदेले राय ॥
राजा पहुँचे दसपुरवा में * जहँ दरबार बनाफर क्यार ॥
राजै देखो जब आल्हा ने * तुरतै उठे भरहरा खाय ॥
करी बन्दगी तब राजा को * ना राजाने लियो सलाम ॥
गुस्सा होइके राजा बोले * औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
तुमने मरवायो ऊदन को * नैन करेजा लौ निकराय ॥
पीठिको भाई तुम मरवायो * तुमको बार बार धिक्कार ॥
बिन ऊदन के या महुबे में * को गाढ़े दिन ऐहैं काम ॥
बज्रकी छाती है ऊदन की * जो दिल्ली में करो विवाह ॥
आल्हा मनमें कायल होइ गये * मुखते कछू न आई बात ॥
तब ललकारो चन्देले ने * औ हत्यारे बात बनाउ ॥
इन्दल बेटाके कारण तुम * अपनो भाई दियो गँवाय ॥
आँखिन पट्टी आल्हा बाँधी * ऊभै गिरे अंध मुख जाय ॥
मुख दिखरै हैं ना काहू को * यहगति भई बनाफर क्यार ॥
हियाँ कि बातैं तो हियँ छाँड़ो * अब आगे को सुनो हवाल ॥
ऊदनि सोचे अपने मनमें * सिरसा बसे बीर मलिखान ॥
करैं नौकरी अब मलिखे की * कछुदिन समय गुजारैं जाय ॥
सोचिकै चलिभे ऊदन ठाकुर * औ सिरासाकी पकरी राह ॥
सोनवाँ बोलवायो ढेबाको * औ सबहाल कह्यो समुझाय ॥
खबरि लै आवो झारखण्ड ते * हमको खबरि सुनावौ आय ॥
इतनी सुनतै ढेबा चलि भयो * घोड़ा मनोरथ पर असवार ॥
धारको ठकुर उदयो तोमर * सोऊ चलो साथ में जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दोनों पहुँचे झारखंण्ड में * गाय बरदिया रहे चराय ॥
तिनते ढेबा पूछन लागे * तुम ऊदनि को देउ बताय ॥
एक बरदिया बोलन लागो * अबही गये उदैसिंहराय ॥
मूड़ उघोर नंगे पायन * सिरसा ओर गये घबराय ॥
ताही रस्ता दोनों चलिभै * अब ऊदनिको सुनो हवाल ॥
ऊदनि पहुँचे जब सिरसा में * दरबानी ते लगे बतान ॥
खबरि सुनावो तुम मलिखे को * द्वारे खड़े उदैसिंहराय ॥
गयो दरबानी तब मलिखे पै * औ यह हाल सुनायो जाय ॥
बोले मलिखे दरबानी ते * फाटक बन्द देव करवाय ॥
दरबानी आयो द्वारे पर * फाटक बन्द दिये करवाय ॥
हुक्म नहीं है नर मलिखे को * तौलो ढेबा पहुँचो आय ॥
ढेबा पूछें तब ऊदनि ते * कहँ जानेको करो बिचार ॥
बोले ऊदनि तब ढेबाते * दादा कछू न पूछो बात ॥
सोनवाँ भौजी दहिने होगइ * हमरो लीन्हो प्राण बचाय ॥
बड़ो भरोस रहै मलिखे को * कछु दिन करैं गुजारा जाय ॥
सोऊ रूठि गये हमते अब * फाटक बन्द दिये करवाय ॥
कोऊ न साथ देत बिपदा में * यह हम जानिलियो सबभाँति ॥
हितू कुटुम्ब सबै रूठे हैं * हम पर रूठि गयो भगवान ॥

कुण्डलिया ।

सुखते बिपदा है भली, जो थोरे दिन होय ।
इष्टमित्र बांधव जिते, जानि परत सब कोय ॥
जानि परत सबकोय, बात नहिं पूछे कोई ।
जब संकट परि जाय, मित्र होवै रिपु सोई ॥
नारायन धरि ध्यान, आप मन को समुझावै ॥
कछुदिन में सुखहोय, सदानहिं बिपति सतावै ।

आल्हा ।

यह सुनि ढेबा बोलन लागे * भैया धीर धरो मन माहिं ॥
बिपति दूरि होइहैं जल्दी ते * हमरो बचन करौ परमान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

साथ तुम्हारो हमना छोड़ि हैं * रहिहैं सदा तुम्हारो संग ॥
ऊदनि बोले तब ढेबाते * दादा हमहि देउ बतलाय ॥
हमरो बैरी हैं चारो दिशि * क्यहि घर करैं गुजारा जाय ॥
ढेबा बोले तब ऊदनि ते * अब नरवरको होउ तयार ॥
करैं गुजारा मकरन्दी घर * कछुदिन समय काटिहैं जाय ॥
यह मन भाय गइ ऊदनि के * औ चलिबे को भये तयार ॥
धारको ठाकुर उदया तोमर * सोऊ साथ भयो तैयार ॥
तीनौं चलिभे गढ़ सिरसा ते * नरवर गढ़ में पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदनि नर ढेबा ते * दादा ख्याल करौ मनमाहिं ॥
व्याहन आये थे नरवर जब * लाये साथ आपने फौज ॥
आजु आपदा हम पर परिगइ * नाहीं पास ढाल तलवारि ॥
एक कुवाँ पर ऊदन बैठे * तौलौ मालिनि निकसी जाय ॥
हिरिया मालिन पूछन लागी * औ परदेशी बात बताउ ॥
कौन देश के तुम बासी हौ * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले ऊदन तब मालिन ते * बासी नगर महोबे क्यार ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * औ ऊदन है नाम हमार ॥
लाये संपदा रेह नरवर में * सो तुम्हरे घर दई गँवाय ॥
तुमहूँ भूलिगई बिपदा में * हमको सब जानत संसार ॥
यह सुनि हिरिया पूछन लागी * साँची कहौ उदयसिंह राय ॥
फौज कटीला तुम कहँ छाड़ी * औ कहँ तज्यो बेंदुला घ्वाड़ ॥
बात बनावन लगे उदयसिंह * औ हिरिया ते लगे बतान ॥
चढ़ो पिथौरा दिल्ली वाला * सिगरो महुबा लियो लुटाय ॥
सोनवाँ फुलवा को डोला लै * हमरे लूटि लिये हथियार ॥
घोड़ा बेंदुला गज पचशावद * सो लै गयो पिथौरा राय ॥
प्राण आपने लै भागे हम * औ नरवर गढ़ पहुँचे आय ॥
इतनी सुनिकै हिरिया चलिभई * पहुँची रंग महल में जाय ॥
हाल सुनायो सब रानी को * रानी बहुत गई घबराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोली रानी तब हिरिया ते * हमरे मन यह नहीं समाय ॥
ज्यहि दिन ऊदनि नखर ऐहैं * तादिन होय दिवसकी राति॥
हिरिया समुझावे रानी को * रानी बचन करो परमान ॥
देवा ऊदनि दोनों आये * कहो तौ अबहिं दिखावों लाय ॥
तौलौ आये मकरंदी तहँ * तब रानी ने कही सुनाय ॥
जिनहिं बिवाही फुलवा बेटी * सुनियत आये उदय सिंहराय॥
जल्दी जावो तुम कुँअना पर * हमको खबरि सुनावो आय ॥
चलिभै मकरंद तब महलन ते * औ कुँअटा पर पहुँचे आय॥
सूरत देखी जब ऊदनि को * तुरतै छाती लियो लगाय ॥
पूछन लागे मकरन्दी तब * छाँड़ो कहाँ बेंदुला घ्वाड़ ॥
फौज कटीली कहँ छाड़ी तुम * औ कहँतजा ढाल तलवारि ॥
ऊदन बोले तब मकरँद ते * हमते कछू कही ना जाय ॥
आये पृथीराज दिल्ली के * महुबे लूटि लई करवाय ॥
बहिनि तुम्हारी औ सोनवाँ के * तुरतै डोला लियो फँदाय ॥
यह सुनि बोले मकरँद ठाकुर * औ ऊदन ते लगे बतान ॥
जियत तुम्हारे डोला लैगयो * तुम्हरे जीवन को धिरकार ॥
अबहीं चलौ साथ हमरे तुम * करिहौं अपनी फौज तयार ॥
चलिकै दिल्ली को लुटवैहों * दोनों डोला लेहौं फँदाय ॥
बात सुनी यह मकरन्दी की * ऊदन बहुत खुशी होइ जाय॥
परो भरोसा तब ऊदन को * मिलिहैं हमहिं इन्दलसीं क्वाँर॥
चलिभै मकरँद तब कुँअटा ते * तीनों छत्री संग लेवाय ॥
तुरतै पहुँचे रंग महल में * रानी करी रसोई त्यार ॥
चारो बैठे जब जेवन को * सुन्दर भोजन धरे अगार ॥
कौर उठायो जब ऊदन ने * नैनन बहो नीर को धार ॥
देखि हाल यह रानी बोली * धीरज धरो उदयसिंह राय ॥
पृथीराज लूटी महुबो जो * तोहम दिल्ली लिहैं लुटाय ॥
बोले ऊदन तब रानी ते * हमने करी बहाना आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

रैयति सुखी सबै महुबे को * बैठे राज्य करैं परिपाल ॥
अपनी पीठी खोलि उदयसिंह * रानिहिं तुरत देखावन लाग॥
इन्दल हरिगे जो बिठूर में * सो सब हाल दियो बतलाय॥
बाँसन मारु दई आल्हा ने * सो रानीते कही बुझाय ॥
जियत महोबे हम जैहैं ना * कागा मरे हाड़ले जाय ॥
तब रानी समुझावन लागी * बेटा धीर धरो मन माहिं ॥
संकट कटि जैहैं जल्दी ते * औ सब होइहैं काम तुम्हार ॥
ऊदन चलिभै तब चौकाते * औ ड्योढ़ी में पहुँचे जाय ॥
पूछन लागे तब ढेबा ते * दादा मतो देउ बतलाय ॥
कैसे मिलिहैं बेटा इन्दल * ताको अब कछु करो उपाय ॥
बोले ढेबा तब ऊदन ते * भैया गुदरी लेउ सिलाय ॥
जोगी बनिकै चलो हियाँ ते * तौमिलि जाय परेउनालाल ॥
थान मँगाये तब मलमल के * चारि गुदरिया लई सिलाय ॥
बीस पर्त की बनी गुदरिया * जिनमें छिपै सबै हथियार ॥
टोपी बनवाई जोगिन की * सब में हीरा दिये जड़ाय ॥
भस्म रमाई तब चारों ने * रामा नन्दी तिलक लगाय ॥
यक यक गुदरी सबने पहिरी * ऊदन बँसुरी लई उठाय ॥
डमरू लीन्हों मकरन्दी ने * ढेबा खंजरी लई उठाय ॥
बजो मर्जीरा तब ऊदया के * गावन लागे राग मलार ॥
कान अवाज परी रानी के * सो द्वारे पर पहुँची जाय ॥
सूरति देखि जबै जोगिन की * रानी मोहि मोहि रहिजाय ॥
बोली रानी तब जोगिन ते * जोगिन डेरा देउ गिराय ॥
बहुत पिआरे हमको लागौ * तब मकरंद ने दियो जवाब ॥
तुमने माता पहिचानौ ना * कुन्छा लिये रही नौ मास ॥
भेष बनाया हम जोगी को * ढूँढ़ि हैं जाय इँदलसि क्वाँर ॥
रानी बोली मकरंदी ते * तुम्हरो काम सिद्धि होइ जाय॥
पहिले जैयो तुम झूनागढ़ * जहँ सेनापति ससुर तुम्हार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तहँ तुम ढूँढ़ियो तुम्हि इन्दलको * जासों होवै काम तुम्हार ॥
कुसुमा रानी मकरन्दी की * सो भीतर ते लगी बतान ॥
घर घर जादू मोरे मैके में * तिरिया जादू दिहै चलाय ॥
देखि जो पैहैं कोउ ऊदन को * अपनी जादू दिहैं चलाय ॥
चारो पुरिया तुम सब रखियो * मकरंदी को दई गहाय ॥
मुखमें पुरिया तुम सब रखियो * तुम पर जादू ना अनियाय ॥
चारौ चलिभै तब महलन ते * अपनो मया मोह बिसराय ॥
राह पकरि लइ झूनागढ़ की * पहुँचे पाँच रोज में जाय ॥
जोगी पहुँचे जब पनिघट पर * अपने बाजा दियो बजाय ॥
राग रागिनी गावन लागे * मोहित भये तहाँ नरनारि ॥
सब पनिहारी मोहित होइ गईं * पानी भरिबो गईं भुलाय ॥
काहू दीन्हों माला सुँदरी * काहू छल्ला दियो निकारि ॥
एक पहर पनिघट पर होइ गयो * बाँदी सोचि सोचि रहिजाय ॥
लैके गागर बाँदी चलि भई * रंग महल में पहुँची जाय ॥
बाँदी पहुँची जब महलन में * सबसखियन को कह्यो हवाल ॥
चारि जोगिया ऐसे आये * तिनके रूप न बरने जायँ ॥
उमिरि बीतगई झूना गढ़ में * ना अस जोगी परे देखाय ॥
यह सुनि अपने अपने घरते * सब ठकुरानी भईं तयार ॥
चलिके देखें उन जोगिन को * सबने थार लिये मँगवाय ॥
सो भरवाय लिये मेवाते * औ कुँअटा पर पहुँची जाय ॥
लै लै पुरिया जादूवाली * देखे रूप योगियन क्यार ॥
कोऊ बात करै ऊदन ते * कोउ ढेबाते लगी बतान ॥
कोऊ पूछे मकरंदी तें * काहे डारयो मूड़ मुड़ाय ॥
तकि तकि जादू उनपर छाँड़े * सोजोगिन पर नाअनिआय ॥
बोलीं सखियाँ तब आपुस में * अब हम करिहैं कौन उपाय ॥
अपने कर्तब के पक्के हैं * हैं यह जोगी बुरी बलाय ॥
सिगरी सखियाँ यक ठोरी होय * पहुँची रंग महल में जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोलीं सखियाँ रनिकुशलाते * रानी सुनो हमारी बात ॥
तीनि जोगिया ऐसे आये * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
बोली रानी सब सखियन ते * तुम जोगिनको लावो बुलाय ॥
सखियाँ लौटि गईं जोगिन पै * औ जोगिन को लाई बुलाय ॥
जोगी आये दरवाजे पर * गावन लागे राग मलार ॥
रूप देखिके तिन जोगिन को * रानी मोहि मोहि रहिजाय ॥
रानी बोली सेनापति की * काहे डारो मूड़ मुड़ाय ॥
कौन तपस्या खंडित होगई * सोतुम हमहिं देउ बतलाय ॥
कौन देशते तुम आये हौ * आगे कौन देशको जात ॥
जोगी बोले तब रानी ते * रानी सुनो हमारी बात ॥
कर्म हमारे जोग लिखा है * ताको कोऊ मिटैया नाहिं ॥
देश हमारा बंगाला है * आगे हिंगलाज को जायँ ॥
फिरिकै रानी बोलन लागी * जोगिउ डेरा देउ डराय ॥
बोले ऊदन तब रानी ते * रानी अक्किल कहाँ तुम्हारि ॥
रमता योगी बहता पानी * इनको कौन सके बिलमाय ॥
आजु रमानी तुमरे ड्योढ़ी * भोगहिं हमहिं रमानी राट ॥
रानी बोली फिर जोगिन ते * महलन करैं रसोई त्यार ॥
तनिक बेलमि जाउ तुम ड्योढ़ीमें * जोगिउ जेयँ लेउ ज्योनार ॥
तब फिर मकरँद बोलन लागे * माता सुनो हमारी बात ॥
धोखे रहियो ना जोगिन के * हमरो मकरँद है अस नाम ॥
ऊदन ढेबा उदया ठाढ़े * यह सुनि रानी लगी बतान ॥
मूड़ मुड़ाये तुम काहे को * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
हाल सुनायो सब मकरँद ने * तब रानी ने कही सुनाय ॥
देवी पूजन करो हियाँ तुम * पूछो हाल मात ते जाय ॥
यह मन भाई बघऊदन के * तब महलन में करो निवास ॥
खबरि सुनी जब सेनापति ने * तुरतै लिये योगियन आय ॥
साले काँतामल मकरँद के * सोऊ मिले योगियन आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चलिभै ऊदन रंग महल ते * औ मठिया में पहुँचे जाय ॥
पूजा करिके श्रीदेवी को * ऊदन हाथ जोरि रहिजाय ॥
इन्दल हरिगये हैं बिटूर ते * माता पता देउ बतलाय ॥
आभा बोली तब देवी की * अब तुम बलख बुखारे जाउ ॥
है जो बेटी अभिनन्दन की * चित्तर रेखा राज कुमारि ॥
सोई इन्दल को हरिले गई * दिनमें सुअना लेति बनाय॥
इन्दल बेटा तुमको मिलिहैं * जल्दी जाउ उदयसिंह राय ॥
इतनी सुनिके ऊदन चलिभै * औ रानी पै पहुँचे जाय ॥
हाल सुनायो सब रानी को * तब रानी ने कही सुनाय ॥
जादू बहुत प्रगट तहवाँ पर * ताते बहुत रहेउ हुशियार ॥
काँतामल को तुरत बुलायो * रानी कहन लागि तत्काल ॥
संग जाउ तुम मकरंदी के * औ इन्दल ढुँढ़वावो जाय ॥
इतनी सुनतै काँतामल ने * अपनी गुदरी लई उठाय ॥
पुरिया जादू की लै लीन्हीं * अपनो कूच दियो करवाय ॥
पन्द्रह दिनकी मंजिल करिके * बलख बुखारे पहुँचे जाय ॥
अलख जगाई तब फाटक पर * दरबानी ने कही सुनाय ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैयो * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
सुनतै बोले ऊदन ठाकुर * दरबानी को दियो बताय ॥
देश हमारा बंगाला है * आगे हिंगलाज को जायँ ॥
नाम सुनो हम अभिनन्दन को * तब हम अलख जगाई आय ॥
फाटक खोलो तुम जल्दी ते * माँगैं शहर तुम्हारो जाय ॥
खोलो फाटक दरबानी ने * योगी निकरि गये बापार ॥
जबहीं पहुँचे गलियारिन में * अपने बाजा दिये बजाय ॥
बजो एकतारा काँतामल को * डेबाकि बाजन खँजरी लाग ॥
डमरू बाजी मकरन्दा की * बँसुरी बजो उदयसिंह क्यार ॥
बजे मजीरा तहँ उदया के * गावन लाग राग मलार ॥
डारि मोहिनी दइ जोगिन ने * मोहित भये सबै नरनारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

काहू दीन्हों रुपया पैसा * काहू माला दियो गहाय ॥
काहु दीन्हों साल दुसाला * छला मुँदरी दिये उतारि ॥
जोगी आये जब पनिघट पर * मोहित भई सबै पनिहार ॥
तारा बाँदी जो रानी की * मनमें सोच २ रहि जाय ॥
डेढ़ पहर पनिघट पर हुइ गयो * का रानी ते कहिहौं जाय ॥
बाँदी पहुँची रंग महल में * तब रानी ते दइ ललकार ॥
डेढ़ पहर पनिघट पर बीती * सिगरो प्यास मरै रनिवास ॥
हाथ जोरिके बाँदी बोली * मेरी खता माफ होइ जाय ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये * जिनको रूप न बरनो जाय ॥
नीके नाचत हैं पनिघट पर * तासों देरभई महरानि ॥
अज्ञा पाऊँ जो तुम्हरी मैं * तो जोगिन को लाउँ बोलाय॥
हुक्म दै दियो तब रानी ने * तू जोगिन को लाउ बोलाय ॥
चलि भइ बाँदी तब जल्दी ते * औ जोगिन को लाइ बुलाय॥
जोगी आए जब द्वारे पर * अपने बाजा दिये बजाय ॥
सूरति देखि जबै जोगिन की * रानी गई सनाका खाय ॥
बोली रानी तब बाँदी ते * तेरो डरिहैं पेटु फराय ॥
जोगी के लरिके ये नाहीं * ये राजन के राज कुमार ॥
गजगज भरिकी इनकी छाती * औ नयनन में बैर मसाल ॥
चढ़ा उतारू मोरवा इनके * मारू सिंह बरन करिहाँय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * रानी बोलो बात सम्हारि ॥
हम हैं जोगी बंगाले के * हैं गोरखपुर कुटी हमारि ॥
बाप हमारे बारे मरिगै * माता बारेपन भइ राँड ॥
देश हमारे सूखा परिगयो * माता बेचो जोगिन हाथ ॥
रूप विधाता हमको दीन्हीं * सो हम राखैं कहाँ छिपाय ॥
यह सुनि रानी बोलन लागी * जोगिय हमहिं देउ बतलाय॥
जड़े जवाहिर हैं गुदरिन में * सो कहँ पाई देउ बताय ॥
बोले ऊदनि तब रानी ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

राजा जैचन्द हैं कनउज में * तहँ हम अलखजगाई जाय ॥
देखि तमाशा राजा मोहे * तब यह गुदरी दई सिलाय ॥
बोली रानी तब जोगिन ते * अब हम जाने हाल तुम्हार ॥
तनिक ठहरि जावो द्वारे पर * बेटी देखि तमाशा लेय ॥
बाँदी भेजी तब रानी ने * तू बेटीको लाउ बुलाय ॥
बाँदी पहुँची सतखंडा पर * औ बेटी ते कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलायो है रानी ने * सो तुम चलो हमारे साथ ॥
बेटी चलिभइ तब बाँदी सँग * औ माता पै पहुँची आय ॥
रानी देखो जब बेटी को * तब जोगिन ते लगी बतान ॥
नाच दिखाय देउ बाबा तुम * जोगिन बाजा दिये बजाय ॥
राग रागनी गावन लागे * नाचन लगे उदयसिंह राय ॥
बेटी उठिकै गइ ऊदन पै * तुरतै बीरा दियो गहाय ॥
बीरा चाबो बघऊदनि ने * औ बेटी तन करी निगाह ॥
रूप देखि चित्तर रेखा को * ऊदन गिरे मूर्छा खाय ॥
हाल देखि यह रानी बोली * इनको पेटु दिहौं फरवाय ॥
जोगी नाहीं ये भोगी हैं * इन छलकरो हियाँपर आय ॥
रूप देखिकै मोरि बेटी को * जोगी गिरो भूमि मुर्झाय ॥
यह सुनि देवा बोलन लागे * रानी कटिगयो ज्ञान तुम्हार ॥
बीरा दियो आय बेटी ने * तामें करुइ तमाखू डारि ॥
पीकलागि गइ यह जोगी के * ताते गिरो भूमि परजाय ॥
तीनि पहर को भूखो जोगी * पायो नाहिं अन्न जलपान ॥
नाचत गावत तीनि पहर भै * ताते शीश गयो भन्नाय ॥
बेटी बोली तब रानी ते * माता आज्ञा होय तुम्हारि ॥
धरी मिठाई सतखंडा पर * सो जोगी को लावों जिंवाय ॥
बोली रानी तब बेटी ते * अबहीं जोगी लाउ जिंवाय ॥
तुरतै उठिकै बेटी चलि भै * ऊदन को लियो संग लेवाय ॥
बेटी पहुँची सतखंडा पर * औ पिंजरा को लियो उतारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुआ निकारो त्यहि पिंजराते * तुरतै मानुष लियो बनाय ॥
बोली बेटी तब इन्दल ते * हमने जानी थी मनमाहिं ॥
तुम्हरि बराबरि कोउ सुन्दरना * सो तुम देखो दृष्टि पसारि ॥
कैसो सुन्दर यह जोगी है * याको रूप दियो भगवान ॥
इन्दल देखा जब ऊदन को * तब बेटीते कही सुनाय ॥
धोखे रहियो ना जोगी के * समुहें चाचा खड़े हमार ॥
परदा करिलेउ तुम जल्दी ते * आए अँटा उदैसिंहराय ॥
बोले ऊदन तब इन्दल ते * बेटा मानो कही हमारि ॥
परदा करवैयो वाही दिन * जादिन होय तुम्हारो ब्याह ॥
जो अभिनन्दन यह सुनि पैहैं * आये यहाँ बनाफर राय ॥
घरलौ जैबो मुश्किल होइहैं * सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं ॥
जोगी होइकै घरते निकसे * तुम्हरे कारन मूँड़ मुँड़ाय ॥
देश देश में हम फिरि आये * पायो तुम्हिं यहाँपर आय ॥
बहु दुख छायो है महुबे में * जल्दी चलो हमारे साथ ॥
हाथ जोरिके इन्दल बोले * चाचा सुनो हमारी बात ॥
हमहिं माँगिलेउ तुम रानी ते * अबहीं चलौं तुम्हारे साथ ॥
ऊदन बोले तब बेटी ते * माँगे देउ परेउना लाल ॥
बोली बेटी तब ऊदन ते * चाचा बचन करो परमान ॥
कठिन तपस्या हम कीन्हीं हैं * तब बरमिलो मोहिं संसार ॥
ब्याह कराय लेउ अबहीं तुम * हमरो डोला लेउ फँदाय ॥
अपने पंडित को बुलवावौ * सब सामान लेउ मँगवाय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
चोरी चोरा ब्याह न करिहैं * करिहैं ब्याह धूम के साथ ॥
ज्यहिदिन ब्याहन इन्दल ऐहैं * चलिहैं अँधाधुंध तलवारि ॥
यह सुनि बोली चित्तर रेखा * ना जानो है हाल तुम्हार ॥
धोखे रहियो ना माड़ौ के * जहँ लैलियो बापको दाउँ ॥
सातो भैया हमरे जालिम * जालिम जोर हमारो बाप ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कठिन मवासी बलख बुखारा * जहँ है जादू को अधिकार ॥
लड़े न जितिहौ मोरे बाप ते * कैसे करिहौ आय विवाह ॥
यहसुनि तड़पे उदन बाँकुड़ा * औ बेटीते लगे बतान ॥
दतिया मारि उड़ैसा मारी * बाजी सेत बंदलौं टाप ॥
गर्व न राखो हम काहू को * हमको जानत सकल जहान॥
सातो भैया तुम्हरे बाँधौं * औ राजाको तुरत बँधाय ॥
सातौ भाँवरि मैं डरवाऊँ * तौ तो नाम उदैसिंह राय ॥
जेहिकी बेटी नीकी देखौं * जोरा जोरी करौं विवाह ॥
साँचो २ यहु हमरो प्रण * सोतुम जानिलेउ मनमाहिं ॥
बेटी बोली तब ऊदन ते * चाचा गंगा लेउ उठाय ॥
गंगा करि लइ तब ऊदन ने * जल्दी ब्याह लिहौं करवाय ॥
सुआ बनायो तब इन्दल को * बेटी पिंजरा दियो गहाय ॥
मानुषवाली पुरिया लैके * सो ऊदन को दइ पकराय ॥
शहर लाँघि जैयो जबहीं तुम * तबहीं मानुष लियो बनाय ॥
ऊदन चलिभै तब पिंजरा लै * औ नीचे को पहुँचे आय ॥
भिक्षा लैके तब रानी ते * अपनो कूच दियो करवाय ॥
शहरके बाहर मानुष करिके * इन्दलको लियो संगलेवाय ॥
आयके पहुँचे गढ़ सिरसा में * उदया ठाकुर गयो अगार ॥
खबरि सुनाई नर मलिखे को * मलिखे आये पँवरि दुवार ॥
चरण लागिकै नर मलिखेके * ऊदन माथे लियो लगाय ॥
हाल सुनायो सब इन्दल को * जैसे मिले परेउना लाल ॥
फिरिके ऊदन बोलन लागे * दादा सुनो बीर मलिखान ॥
बाँसन मारो म्वहिं आल्हा ने * सौंप्यो जल्लादन के हाथ ॥
सोनवाँ भौजी दाहिनि होइगइ * हमरो लीन्हीं प्रान बचाय ॥
दुखमें पीठी तुमहूँ दैगये * फाटक बन्द लिये करवाय ॥
सब कोउ साथी हैं संपति में * ना बिपदा में कोउ सहाय ॥
बड़ा भरोसा रहा हमरे मन * सिरसा बसत बीर मलिखान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

अब तुम इन्दल को लैजावो * औ दादाको मिलावौ जाय ॥
हम अब जैहैं नरवर गढ़ में * जबहीं लैहैं साजि बरात ॥
तब हम मिलि जैहैं बरात में * दादा बचन करो परमान ॥
इन्दल बिचले तब ऊदन ते * हमना तजिहैं साथ तुम्हार ॥
ऊदन समझायो इन्दल को * बेटा सुनो लड़ैते लाल ॥
जबहिं बरायत तुम्हरी ऐहैं * तबहम चलिहैं साथ तुम्हार ॥
पाती लिखि दइ बघऊदन ने * सो इन्दल को दई पकराय ॥
हाल बतैयो ना काहू को * कीम्बहिं मिले उदयसिंहराय ॥
दुसरी पाती ऊदन लिखिकै * सो मलिखे को दई गहाय ॥
पहिली पाती सोनवैं दीजो * फिरि इन्दलहि मिलैयो जाय ॥
इतनी कहिके उदन बाँकुड़ा * नरवर गढ़ की पकरी राह ॥
मकरँद ठाकुर औ काँतामल * सोऊ चले साथ में जाय ॥
मलिखे चलिभये गढ़ महुबेको * इन्दल देवा संग लेवाय ॥
एक पहर के तब अरसा में * गढ़ महुबे में पहुँचे जाय ॥
जहाँ कचहरी परिमालै को * पहुँचे तहाँ बीर मलिखान ॥
आगे खड़ा कियो इन्दल को * औ राजाको करी सलाम ॥
सूरति देखो जब इन्दल को * तब राजा ने कही सुनाय ॥
इन्दल देउ जाय आल्हा को * वे ऊदन को देयँ मँगाय ॥
जो नहिं मँगवैहैं ऊदन को * तो दशपुरवा दिहैं फुँकाय ॥
इतनी सुनिके मलिखे चलिभै * औ इन्दल को संग लेवाय ॥
संगहिं चलिभै चंदेले तब * दशपुरवा में पहुँचे जाय ॥
गई पालकी चंदेले की * जहँ दरबार बनाफर क्यार ॥
बोले इन्दल नरमलिखे ते * चाचा सुनो हमारी बात ॥
बहुत दुखी है चाची हमरी * कहोतो हाल देउँ बतलाय ॥
हुक्म दियो तब नर मलिखे ने * जल्दी खबरि सुनावो जाय ॥
इन्दल पहुँचे रंगमहल में * रनि सोनवाँ पै गये नियराय ॥
दोउ करजोरे इन्दल ठाढ़ * सोनवाँ लीन्हीं शीश लचाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इन्दल बोले तब सोनवाँ ते * माता काहे रही रिसाय ॥
बात न पूछी तुम हमरी कछु * आये बहुत दिना में माय ॥
गुस्सा होइके सोनवाँ बोली * हमरे आगे ते हटि जाउ ॥
तुम्हरे कारण ऊदनि देवर * मारे गये बिना अपराध ॥
इतनी सुनिके इन्दल बोले * माता धीर धरो मन माहिं ॥
पाती पाई जो मलिखे ते * सो इन्दल ने दइ पकराय ॥
दुसरी पाती इन्दल लैके * रनि फुलवा को दइ पकराय ॥
पढ़ी हकीकति रनि सोनवाँ ने * फूली अँग में नाहिं समाय ॥
बहुत खुशीभइ फुलवा रानी * सो मैं कहँ लग करौं बखान ॥
इन्दल उतरे सतखण्डा ते * औ मलिखे पै पहुँचे आय ॥
चलि भये मलिखे तब आल्हापै * नंगी हाथ लिये तलवारि ॥
पहुँचे मलिखे जब आल्हा पै * तब इन्दल को कियो अगार ॥
बोले मलिखे सुनि आल्हा ते * दादा देखो दृष्टि पसारि ॥
तुम्हरे समुहें इन्दल ठाढ़ * तुम ऊदनि को देउ मँगाय ॥
जो ना देहौ तुम उदनि को * तो दश पुरवा दिहौं फुँकाय ॥
समुहें देखो जब इन्दल को * तुरतै आल्हा गये लजाय ॥
कायल होइकै सुनि आल्हा ने * अपनी लई कटारी काढ़ि ॥
हमने ऊदनि को मरवायो * अबही पेटु मारि मरिजाउँ ॥
छीनि कटारी लइ मलिखे ने * औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
सुनौ हाल तुम अब इन्दल को * पीछे करियो और उपाय ॥
बलख बुखारे के अभिनन्दन * जो नैनेजी के सरदार ॥
तिनकी बेटी चित्तर रेखा * हरि लैगई परेउना लाल ॥
सपना दीन्हों मोहिं देवी ने * हम जोगी बनि पहुँचे जाय ॥
अलख जगाई बलख बुखारे * औ इन्दल को लाये ढूँढ़ि ॥
ब्याह करन को हम कहि आये * ताको जल्दी करो उपाय ॥
हमहिं दिखावो मर्दूमी तुम * औ इन्दल को करो विवाह ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बिना लहुरवा के देखें हम * कैसे भाँवरि लिहौ डगाय ॥
यहि बिधि कीन्हीं बहुत बतकही * औ चलि भये बीर मलिखान ॥
चलि भये राजा चंदेले तब * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
मलिखे पहुँचे गढ़ सिरसा में * आल्हा सोचि २ रहि जाय ॥
बहुत अनमने आल्हा होइ गै * औ पलकी पर लेटे जाय ॥
उतरी सोनवाँ सतखंडा ते * औ आल्हा पै पहुँची जाय ॥
कौन नींदमें तुम सोवत हौ * औ लरिका को करो विवाह ॥
बोले आल्हा तब सोनवाँ ते * हमते यह होइबे को नाहिं ॥
प्राण हमारो ना भारू है * जो हम बलख बुखारे जायँ ॥
यह सुनि बोली सोनवाँ रानी * स्वामी पैयाँ परों तुम्हार ॥
करो तयारी तुम बरात को * औ इन्दल को करो विवाह ॥
ब्याह न करिहौ जो लरिका कै * तो जग होइहैं हँसी तुम्हार ॥
न्योता भेजो सब राजन को * औ बरात को होयँ तयार ॥
खबरि पठावो तुम सिरसा में * आवैं साजि बीर मलिखान ॥
तापर ज्वाब दियो आल्हा ने * रानी बैठि रहो अरगाय ॥
कठिन मवासी बलख बुखारा * जहँ पर जादू की अधिकार ॥
प्राण गँवावै हम ना जैहैं * हमते ब्याह होन को नाहिं ॥
तड़पी सोनवाँ तब आल्हा ते * तुम्हरी मति मारी भगवान ॥
याही पौरुष पर स्वामी तुम * ऊदन देवर दिये मराय ॥
अब तुम पहिरौ लहँगा लुगरी * औ धरि लेव जनाना भेष ॥
चुरिया बिछिया पहिरि लेउ तुम * औ पलकी पर बैठो जाय ॥
अपने कपड़ा हमको दै देउ * औ दै देउ ढाल तलवारि ॥
साजि बरायत मैं लै जैहौं * औ इन्दल को लैहौं ब्याहि ॥
जैसे पान में चूना लागे * डारे खैर लाल होइ जाय ॥
तैसेइ लगी बात आल्हा के * सुखी निकरि गई वापार ॥
बोले आल्हा तब सोनवाँ ते * रानी मानी बात तुम्हारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जो तुम कहिहौ सोई करिहैं * तुम्हरे बचन करैं परमान ॥
कागद लैके कल्पी वालो * अपनो कलमदान लै हाथ ॥
पाती लिखि २ सब राजन को * भेजो तुरत बनाफर राय ॥
यक हरकारा दिल्ली भेजो * यक झूनागढ़ दियो पठाय ॥
यक हरकारा नरवर भेजो * यक बौरीगढ़ दियो पठाय ॥
यक हरकारा नैनागढ़ को * भेजी तुरत बनाफर राय ॥
देश देश के सब राजन को * न्योता [illegible] ॥
पाती लिखि भेजी सिरसा को * आवो बेगि मलखान ॥
चिट्ठी पाई जब मलिखे ने * औ घोड़ी भये सवार ॥
चारघरी के तब अरसा में * दश पु सैंबे पहुँचे जाय ॥
देश देश के राजा आये * तिनने जहँ तहँ करो मुकाम॥
इन्दल हरन क्यार आल्हा यह * हमने लिखिकै दियो सुनाय॥
इन्दल व्याह क्यार आल्हा हम * आगे लिखिके दि हैं सुनाय ॥
समय समय पर आल्हा गावो * नित उठि नाम लेउ भगवान॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति इन्दलहरण समाप्त ।

—:****:—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ बलखबुखारे की लड़ाई ॥

अर्थात् ।

(इन्दल का ब्याह)

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

आल्हा ।

राम बामादेवी सोनन्दनी * राजत लषण दाहिनी ओर ॥
शोभाशील रूप गुण आगर * बायँ भरत शत्रुहन जोर ॥
रत्न जटित सिंहासन सोहै * सोहै राजछत्र भगवान ॥
ठाढ़े हनूमान जोरे कर * जग कल्याणकरन यह ध्यान॥
करौ ध्यान यह रघुनन्दन को * जासो होय भक्ति भगवान ॥
नित नित बाढ़ै भवन सम्पदा * अंतिम मिलेमुक्ति निर्बाह ॥
रामचन्द्र को ध्यान मनोहर * पंचायतन रूप करतार ॥
जो कोउ सुमिरन करे निरंतर * होवै जगत भक्त सरदार ॥
देखौ करनी हनूमान की * है जो पवन पुत्र बलवान ॥
निशदिन सेवा कीन्ह राम को * तासों प्रगट नाम संसार ॥
भोलानाथ मनाय हियेमहँ * सीताराम स्वामि पद ध्याय ॥
लिखौंब्याह यह अब इन्दलको * यारो सुनियो कान लगाय ॥
हुक्म दैदियो सुनिआल्हा ने * लश्कर साजि होय तैयार ॥
बोलि नगरची को बीरा दै * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजो नगारा दसपुरवा में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
करी तयारी सब क्षत्रिन ने * औ बरातको भये तयार ॥
भयो बुलौआ तब पण्डित को * पंडित बेदी दई बनाय ॥
चौक पुराय दियो मोतिन को * सोने कलश दियो धरवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मल्हना देवे तिलका रानी * रानी सबै चँदेले क्यार ॥
नेग जोग कीन्हे सबने मिलि * लागे होन मंगलाचार ॥
तुरत बुलाय लियो इन्दल को * चंदन चौकी दियो बिठाय ॥
कलश प्रतिष्ठा करि पंडित ने * गौर गणेश दियो पुजवाय ॥
तेल चढ़ायो सात सुहागिन * औ स्नान दियो करवाय ॥
कपड़ा पहिराये इन्दल को * शिरपर मौर दियो धरवाय ॥
आइ पालकी सजि द्वारे पर * तापर इन्दल बैठ जाय ॥
कुँवा बियाह्यो रानी सोनवाँ * सातौ भाँवरि दई डराय ॥
उठी पालकी तब इन्दल की * औ बरात में पहुँची जाय ॥
मारू डंका के बाजत खन * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
कूच करायो दशपुरवा ते * औ नरवर में पहुँचे जाय ॥
खबरि कराई मकरन्दी को * जल्दी चलो बरायत साथ ॥
बोले ऊदन मकरन्दी ते * अब इन्दलका करौ विवाह ॥
सुनतै चलिभै मकरन्दी तब * लश्कर डंका दियो बजाय ॥
लश्कर सजिगयो मकन्दी को * तुरतै कूच दियो करवाय ॥
मकरँद मिलेजाय आल्हा को * तब बरात सब भई तयार ॥
चली बरायत नौरँग गढ़ते * पहुँची बलख़ बुखारे जाय ॥
जबहीं पहुँच गये घूरे पर * तहँ पर डेरा दिये डराय ॥
भयो बोलौआ तहँ पंडित को * ब्याहकि सायति देउ बताय ॥
चूणा मणि पंडित तब आये * पत्रा खोलि विचारन लाग ॥
बोले पण्डित तब बिचारि के * ऐपनवारी देउ पठाय ॥
रुपना बारी को बुलवायो * बोले तुरत बीर मलिखान ॥
ऐपनवारी तुम लै जावो * तब रुपना ने कही सुनाय ॥
मोरे भरोसे तुम रहियो ना * हमना शीश कटैहैं जाय ॥
कठिन मवासी बलख बुखारा * जहँ है जादू को अधिकार ॥
मलिखे बोले तब रुपना ते * भैया अक्किल गई तुम्हारि ॥
इन्दल ब्याहन को रहि हैं ना * यहुदिन कहिबे को रहिजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ बलखबुखारे की लड़ाई ॥

अर्थात् ।

(इन्दल का व्याह)

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

आल्हा ।

॥

राम बामदिशि सोन नन्दनी * राजत लषण दाहिनी ओर ॥
शोभाशील रूप गुण आगर * बायें भरत शत्रुहन जोर ॥
रत्न जटित सिंहासन सोहै * सोहै राजछत्र भगवान ॥
ठाढ़े हनूमान जोरे कर * जग कल्याणकरन यह ध्यान ॥
करौ ध्यान यह रघुनन्दन को * जासो होय भक्ति भगवान ॥
नित नित बाढ़ै भवन सम्पदा * अंतिम मिलेमुक्ति निर्बाह ॥
रामचन्द्र को ध्यान मनोहर * पंचायतन रूप करतार ॥
जो कोउ सुमिरन करे निरंतर * होवै जगत भक्त सरदार ॥
देखौ करनी हनूमान की * है जो पवन पुत्र बलवान ॥
निशदिन सेवा कीन्ह राम को * तासों प्रगट नाम संसार ॥
भोलानाथ मनाय हियेमहँ * सीताराम स्वामि पद ध्याय ॥
लिखौंब्याह यह अब इन्दलको * यारो सुनियो कान लगाय ॥
हुक्म दैदियो नुनिआल्हा ने * लश्कर साजि होय तैयार ॥
बोलि नगरची को बीरा दै * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजो नगारा दसपुरवा में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
करी तयारी सब क्षत्रिन ने * औ बरातको भये तयार ॥
भयो बुलौआ तब पण्डित को * पंडित बेदी दई बनाय ॥
चौक पुराय दियो मोतिन को * सोने कलश दियो धरवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मल्हना देवै तिलका रानी * रानी सबै चँदेले क्यार ॥
नेग जोग कीन्हे सबने मिलि * लागे होन मंगलाचार ॥
तुरत बुलाय लियो इन्दल को * चंदन चौकी दियो बिठाय ॥
कलश प्रतिष्ठा करि पंडित ने * गौर गणेश दियो पुजवाय ॥
तेल चढ़ायो सात सुहागिन * औ स्नान दियो करवाय ॥
कपड़ा पहिराये इन्दल को * शिरपर मौर दियो धरवाय ॥
आइ पालकी सजि द्वारे पर * तापर इन्दल बैठे जाय ॥
कुँवा बियाह्यो रानी सोनवाँ * सातौ भाँवरि दई डराय ॥
उठी पालकी तब इन्दल की * औ बरात में पहुँची जाय ॥
मारू डंका के बाजत खन * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
कूच करायो दशपुरवा ते * औ नरवर में पहुँचे जाय ॥
खबरि कराई मकरन्दी को * जल्दी चलो बरायत साथ ॥
बोले ऊदन मकरन्दी ते * अब इन्दलका करौ विवाह ॥
सुनतै चलिभै मकरन्दी तब * लश्कर डंका दियो बजाय ॥
लश्कर सजिगयो मकन्दी को * तुरतै कूच दियो करवाय ॥
मकरँद मिलेजाय आल्हा को * तब बरात सब भई तयार ॥
चली बरायत नौरँग गढ़ते * पहुँची बलख बुखारे जाय ॥
जबहीं पहुँच गये घूरे पर * तहँ पर डेरा दिये डराय ॥
भयो बोलौआ तहँ पंडित को * ब्याहकि सायति देउ बताय ॥
चूणा मणि पंडित तब आये * पत्रा खोलि विचारन लाग ॥
बोले पण्डित तब बिचारि के * ऐपनवारी देउ पठाय ॥
रुपना बारी को बुलवायो * बोले तुरत बीर मलिखान ॥
ऐपनवारी तुम लै जावो * तब रुपना ने कही सुनाय ॥
मोरे भरोसे तुम रहियो ना * हमना शीश कटे हैं जाय ॥
कठिन मवासी बलख बुखारा * जहँ है जादू को अधिकार ॥
मलिखे बोले तब रुपना ते * भैया अक्किल गई तुम्हारि ॥
इन्दल ब्याहन को रहि हैं ना * यहुदिन कहिबे को रहिजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

तुमको नेगी हम समझैं ना * तुम तो भैया लगो हमार ॥
बोलो रुपना तब मलिखे ते * घोड़ा हमहिं देउ मँगवाय ॥
इन्दल वालो तेगा दै देउ * तो हम बलखबुखारे जायँ ॥
जो जो माँगो रूपन बारी * सो २ मलिखे दियो मँगाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठो * ऐपनवारी लई उठाय ॥
रुपना चलिभयो तब बरात ते * पहुँचो बलख बुखारे जाय ॥
जबहीं पहुँचो दरवाजे पर * दरबानी ने कही सुनाय ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहो * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना दरबानी ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
नगर महोबे यक बस्ती है * जहँ पर बसैं चँदेले राय ॥
व्याहन आये हम इन्दल को * रुपनबारी नाम हमार ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * राजे खबरि सुनावो जाय ॥
नेग हमारो जो द्वारेको * राजा तुरत देउँ मँगवाय ॥
चारि घरी भरि चलै हिरोही * औ बहि चले रक्तकी धार ॥
यहै नेग हमरो द्वारे को * सो तुम खबरि देउ पहुँचाय ॥
यहसुनि चलिभयो दरबानी तब * औ राजा पै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी तहँ राजा को * औ रुपना को कह्यो हवाल ॥
तुरत बुलायो हंसामनि को * औ यह हुक्म दियो करवाय॥
मारि गिरावो तुम बारी को * तुरतै मूड़ लेउ कटवाय ॥
तौलो रुपना समुहें पहुँचो * औ राजा को करो सलाम ॥
तीन कदम जब गद्दी रहि गई * ऐपनवारी दई चलाय ॥
बोलो रुपना अभिनन्दन ते * हमरो नेगु देउ मँगवाय ॥
गुस्सा होइके तब राजा ने * सातो बेटा लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो तब क्षत्रिन को * याको घोड़ा लेउ छँड़ाय ॥
रुपनै घेरो तब क्षत्रिन ने * तुरतै चलन लगी तरवारि ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ रुपना ने * बहुतक क्षत्री दियो गिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चली सिरोही चारि घरी भरि * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
ऐंड लगाय दियो घोड़ा के * द्वारे कलशा लिये उतारि ॥
करी बन्दगी अभिनंदन को * ऐपनवारी लई उठाय ॥
नेग आपनो हम भरि पायो * दायज लिहैं बनाफर राय ॥
यहकहि चलिभयो रुपना बारी * फाटक निकरि गयो वापार ॥
रुपना चलिभयो तब बरातको * पहुँचा तब बरातमें जाय ॥
रंग बिरंगो रुपना देखो * तब हँसि कही बीर मलिखान ॥
कैसी गुजरी दरवाजे पर * सो सब हाल देउ बतलाय ॥
चली शिरोही चारिघरी भर * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
हियाँ कि बातैं तौ हियँ छाड़ो * अब आगेको सुनो हवाल ॥
सातौ बेटा तब बुलवाये * औ राजाने कही सुनाय ॥
छापा मारौ तुम बरात में * अबहीं लूटि लेउ करवाय ॥
यह सुनि चलिभै सातौ बेटा * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
बोलि नगरची को बीरादै * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजो नगारा तब लश्कर में * लश्कर साजि भयो तैयार ॥
घोड़ा सजवाये सातौ ने * तिनपर फाँदि भये असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो आगेको दई बढ़ाय ॥
लश्कर पहुँचो सो धूरेपर * डंका होत गोलमें जाय ॥
सुनी खबरि जब नरमलिखे ने * तुरतै हल्ला दियो कराय ॥
डंका बजवायो जल्दी ते * सिगरी फौज भई तैयार ॥
भयो सामना द्वौ फौजन को * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
आल्हन बेटा अभिनंदन को * ताने घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले आल्हन नरमलिखे ते * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
कौन काम तुम्हरो अटको है * सो तुम हमें देउ बतलाय ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * हमरो नाम बीर मलिखान ॥
इन्दल ब्याहन हम आये हैं * सो तुम ब्याह देउ करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बिना ब्याहके हम जैहैंना * चाहै कोटिन करो उपाय ॥
गुस्सा होइकै तब आल्हन ने * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी तब दोउ दलमें * धुअनाँ रह्यो सरग मंड़राय ॥
अररर अररर गोला छूटैं * गोला मन्न मन्न मन्नाय ॥
बान अगिनियाँ छूटन लागे * सर सर परी तीरकी मारु ॥
गोला लागै ज्यहि हाथी के * दलमें डौंकि २ रहिजाय ॥
गोला लागै जौन ऊँटके * दलमें गिरे चकत्ता खाय ॥
गोला लागै ज्यहि छत्री के * सो गिरिपरे धरनि भहराय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागे * तिनके हाड़ मास छुटजाय ॥
बंबके गोला जिनके लागै * वे लत्ता अस जायँ उड़ाय ॥
छोटी गोली जिनके लागै * मानहु गिरह कबूतर खाय ॥
एक पहर भरि गोला बरस्यो * तो पैं लालबरन होइ जायँ ॥
चढ़ी कमनियाँ पानी होइगई * चुटकिनके गै मास उड़ाय ॥
मारु बंदभइ तब तोपन की * लम्बे बंदकरैं हथियार ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके * रहिगयो सात कदम मैदान ॥
मारु होनलागी बरछिन की * भाला चलन लाग तत्काल ॥
तीनघरी भरि बजो साँगड़ा * अब आगेको सुनो हवाल ॥
दोनों फौजन के अंतर में * रहिगयो डेढ़ कदम मैदान ॥
झुके सिपाही दोनों दलके * अपनो खैंचिलई तलवारि ॥
खट खट खट खट तेगा बाजे * बोलै छपक छपक तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ अहिगर्बी * ऊना चलै विलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के * कटि कटिगिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
पैदल अभिरि गये पैदल सँग * औ असवारन ते असवार ॥
हौदा मिलिगये हैं हौदा सँग * हाथिन अड़ो दाँतसे दाँत ॥
पैदल गिरिगये पैग पैग पर * उनके दुइदुइ पैग असवार ॥
हाथी डारे बिसे बिसे पर * छोटे पर्वत की अनुहार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मुर्चन मुर्चन नचै कबुतरी * मलिखे कहें पुकारि पुकारि ॥
भागि न जैयो कोउ समुहें ते * रखियो धर्म चँदेल क्यार ॥
सदा तुरैया ना बन फूले * यारो सदा न सावन होय ॥
सदा न माता उरमें धरि हैं * यारो जन्म न बारम्बार ॥
इन्दल ब्याहन को रहि हैं ना * यहुदिन कहिबेको रहिजाय ॥
दियो बढ़ावा जब मलिखे ने * क्षत्रिन धरे अगारी पाँव ॥
भगे सिपाही अभिनन्दन के * अपनो डारि डारि हथियार ॥
यहगति देखी अभिनन्दन ने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले अभिनन्दन मलिखे ते * काहे धुरो दबायो आय ॥
यहसुनि मलिखे बोलन लागे * पर्यो परो दशहरा क्यार ॥
बेटी तुम्हरी गइ बिठूर को * गंगा केरि करन अस्नान ॥
इन्दल बेटा को हरि लाई * जादू करिकै सुआ बनाय ॥
ऊदन आये जोगी बनिकै * सो इन्दल को गये लेवाय ॥
उठवाई गंगा बेटी ने * सातौ भाँवरि लेउ डराय ॥
सो हम आये चढ़ि बरात लै * सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
बिना बियाहे हम जैहैं ना * चाहै प्राण रहै की जाय ॥
इतनी सुनतै अभिनन्दन ने * नर मलिखे को दियो जवाब ॥
धोखे रहियो ना दिल्ली के * नाहीं सजे बीर चौहान ॥
करी लड़ाई ना पिरथी ने * मन बढ़िगये बनाफर राय ॥
चुप्पै लौटि जाउ महुबे को * नाहक प्राण गँवाये आय ॥
तापर ज्वाब दियो मलिखे ने * हमको जानत सकल जहान ॥
जेहि की बेटी नीकी देखें * जोरा जोरी करें विवाह ॥
सातौ बेटा तुम्हरे बँधिहौं * तुम्हरो मुश्क लिहौं कसवाय ॥
जोरा जोरी ब्याह करे हैं * सातौ भाँवरि लिहौं डराय ॥
यहसुनि गुस्सा ह्वै अभिनन्दन * सातौ बेटा लिये बुलाय ॥
मारि भगावो इनपाजिन को * लश्कर कटा देउ करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनते सातौ बेटा * अपनो खोंचलियो तलवारि ॥
झुके सिपाही अभिनन्दन के * दोनों हाथ करें तलवारि ॥
देखि बीरता अभिनन्दन की * मुर्चा हटा महोबियन क्यार ॥
भगे सिपाही महुबे वाले * देखो हाल बीर मलिखान ॥
रुपना बारीको बुलवायो * औ यह कहा बीर मलिखान ॥
जल्दी जावो तुम ऊदन पै * औ यह हाल सुनावौ जाय ॥
इतनी सुनते रुपना चलि भये * औ ऊदन पर पहुँचो जाय ॥
बोलो रुपना बघ ऊदन ते * लश्कर घिरे बीर मलिखान ॥
तुमहिं बुलायो नरमलिखे ने * जल्दी चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनते बघऊदनि ने * मकरन्दी ते कही सुनाय ॥
करौ तयारी अब लरिबे को * लश्कर सबै लेउ सजवाय ॥
मकरँद ऊदन दोनों चलि भये * औ मठिया में पहुँचे जाय ॥
पूजन करिकै जगदम्बा को * औ फिरिहोम दियो करवाय ॥
हाथ जोरिके ऊदन बोले * माता राखो धर्म हमार ॥
आभा बोली तब देवी की * तुम्हरो काम सिद्धिहोइ जाय ॥
बिनती करिकै दोनों चलिभये * औ लश्कर में पहुँचे आय ॥
बोलि नगरची को बीरा दै * तुरतै डंका दियो बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्कर में * छत्री साजि भये तैयार ॥
फौज सजाई काँतामल ने * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
मकरँद ऊदन औ काँतामल * पहुँचे समर भूमि में जाय ॥
रुपना बारी तुरतै आयो * औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
ऊदन मकरँद औ काँतामल * पहुँचे समर भूमि में आय ॥
दाबे घोड़ा ऊदन आये * समुहें गोल गये समुहाय ॥
लश्कर मारो अभिनन्दन को * औ आल्हा पै पहुँचे आय ॥
ऐंड़ लगाई रस बेंदुलि के * पचशावद पर बाजी टाप ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी * सोने कलशा दियो गिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले आल्हा तब मलिखे ते * यहु क्षत्री है बुरो बलाय ॥
थोरी उम्मिरि को लरिका है * रण में कठिन करे तलवारि ॥
तौलौ ऊदनि समुहें आये * करमें आल्हा लियो कमान ॥
मलिखे बोले तब आल्हा ते * दादा कटि गये ज्ञान तुम्हार ॥
ऊदनि ठेढ़ हैं समुहें पर * तुमने लीन्हों हाथ कमान ॥
सुनतै धरि कमान हौदा में * आल्हा छाती लियो लगाय ॥
बिना बेंदुला के चढ़वैया * ऐसी कौन करे तलवार ॥
ऊदनि बोले तब अल्हा ते * दादा धन्य तुम्हारो ज्ञान ॥
मामा माहिल के कहिबे ते * तुमने मारो हमहिं बँधाय ॥
सौंप दियो फिरि जल्लादन को * दहिने भई शारदा माय ॥
जोगी बनिके हमने ढूँढो * इन्दल महुबे दियो पठाय ॥
सायिति बीती अब भौरिन की * क्यों नहिं ब्याह लियो करवाय ॥
याही पौरुष पर दादा तुम * म्वहि जल्लादन दियो गहाय ॥
बैठो दादा अब हौदा में * अबहीं भाँवरि लिहौं डराय ॥
आल्हा बोले तब कायल होय * झूठी कहि माहिल परिहार ॥
गंग उठाय लियो माहिल ने * तब हमरे मन गई समाय ॥
हम जब चलिहैं अब महुबे में * उरई घर घर लिहैं लुटाय ॥
ऊदन चलि भये तब लरिबेको * बीच गोल में गये समाय ॥
काँतामल उत्तर में पहुँचे * पश्चिम गये बीर मलिखान ॥
पूर्व ओर को मकरँद घेरो * ढेबा दक्खिन पहुँचो जाय ॥
पाँचौं शूर पैठि दल भीतर * दोनों हाथ करें तलवारि ॥
हौदन हौदन नचै बेंदुला * भाला नाग दौनि को हाथ ॥
बत्तिस हौदा खाली करिके * हंसामनि पै गयो नियराय ॥
तब ललकारो हंसामनि ने * ऊदन खबरदार होइ जाउ ॥
खैंचि कमनियाँ हंसामनि ने * समुहें छाँड़ि कैबरी दीन्ह ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने होइ गयो * कैबर निकरि गयो वा पार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खैंचि शिरोही लइ ऊदनि ने * तब मलिखे ने कही सुनाय ॥
हाथ न डारियो हंसामनि पर * इतनी मानो कही हमार ॥
धक्का दैके तब ऊदन ने * हंसामनि को दियो गिराय ॥
डंड बाँधिके हंसामनि को * अपने लश्कर दियो पठाय ॥
मोहन बेटा अभिनन्दन को * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
चोट चलाई बघ ऊदन पर * ऊदन लीन्ही चोट बचाय ॥
गाफिल करिके तब मोहन को * ऊदन लियो जँजीरन बाँधि ॥
देखि हाल यह सुक्खा बेटा * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
तौलौं ढेबा समुहें पहुँचो * औ सुक्खा को दइ ललकार॥
लई शिरोही तब सुक्खा ने * औ ढेबा पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लियो ढेबा ने * औ सुक्खाको लिये बँधाय ॥
सातो बेटा अभिनन्दन के * नर मलिखे ने लिये बँधाय ॥
बढ़े सिपाही महुबे वाले * रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
राम बनावैं तो बनि जावै * बिगरी बनत २ बनिजाय ॥

इति बलख बुखारे की लड़ाई समाप्त ।

-*****-

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ अभिनन्दन की लड़ाई ।

* आल्हा *

सुमिरन करिके नारायण को * भोलानाथ क्यार धरिध्यान ॥
लिखौं लड़ाई अभिनन्दन की * शारद मोको होउ सहाय ॥
सुनो हाल जब अभिनन्दन ने * सातों बेटा बँधे हमार ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * रणमें होत युद्ध घमसान ॥
हाथि बढ़ायो अभिनन्दन ने * औ यह हुक्म दियो करवाय॥
जान न पावै कोउ महुबे को * सबको कटा देउ करवाय ॥
झुके सिपाही अभिनन्दन के * खट २ चलन लगी तलवारि॥
मलिखे बोले तब चौड़ाते * ब्राह्मण सावधान होइ जाउ ॥
इतनी सुनतै चौड़ा ब्राह्मण * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई राजाको * अब तुम खबरदार होइ जाव॥
सेल धमकी तब चौड़ा ने * राजा लीन्ही चोट बचाय ॥
गुर्ज उठाये अभिनन्दन ने * सो चौड़ा पर दियो चलाय ॥
लगी चपेटा जब पुट्ठा पर * हाथी भगा चौड़िया क्यार॥
मलिखे आये तब दहिने पर * अपनो सेल धमको आय ॥
चोट बचाई अभिनन्दन ने * अपनो दीन्ही गुर्ज चलाय ॥
लगी चपेटा जब घोड़ी के * घोड़ी सात कदम हटिजाय ॥
दाबे घोड़ा ऊदन आये * मकरन्दी ते कही सुनाय ॥
जोनहिं व्याह होय इन्दल को * तो जग होइहै हँसी हमारि ॥
ऊदन ढेबा मकरँद ठाकुर * तीनों चले एकही साथ ॥
मुर्चन मुर्चन खबरि जनाई * क्षत्रिउ धर्म तुम्हारे हाथ ॥
जंग जीतिकै जो घर चलिहौ * सोने कड़ा दिहौं डरवाय ॥
दियो बढ़ावा जब क्षत्रिन को * क्षत्रिन मारु मारु रट लागि ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * रणमें कठिन करैं तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आल्हा आये पचशावद पर * घोड़ी कबुतरी पर मलिखान॥
घेरो राजा अभिनन्दन को * चारो ओर चले तलवारि॥
दाबे बेंदुला ऊदन आये * अभिनन्दन पै पहुँचे जाय॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी * सोने कलशा दियो गिराय॥
ऊदन पहुँचे फिरि आल्हा पै * औ आल्हा ते कही सुनाय॥
तुम्हरी बरनी कै अभिनन्दन * दादा लेउ जँजीरन बाँधि॥
हाथि बढ़ायो तब आल्हा ने * अभिनन्दन ते लगे बतान॥
या तो व्याह करो बेटीको * या तुम हाथ लेउ हथियार॥
गुस्सा होइकै अभिनन्दन तब * अपनो लीन्ही लाल कमान॥
हिकरा डटिकै तब आल्हा को * समुहें छाड़ि कैबरी दीन्ह॥
सूंड़ि उठाई पचशावद ने * कैबर निकरि गयो वा पार॥
हाथि बढ़ायो तब आल्हा ने * हौदा हौदाते मिलिजाय॥
दोनों शूर भिरे दंगल में * हौदा कठिन चले तलवारि॥
खोलि जँजीर दई आल्हा ने * पचशावद को दइ पकराय॥
बैरी समुहें यहु ठाढ़ो है * याको लेउ जँजीरन बाँधि॥
साँकल फेरी तब हाथी ने * सब दल रेन बेन होइ जाय॥
भगे सिपाही अभिनन्दन के * अपने डारि डारि हथियार॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जो रण दुलहा चले बराय॥
लम्बी धोतिन के पहिरैया * तिन नारन की पकरी राह॥
बाँधि जँजीरन अभिनन्दन को * आल्हा खुशी भये मनमाहिं॥
कठिन लड़ाई भे धूरे पर * औ बहिचली रक्तकी धार॥
जबहीं बाँध्यो अभिनन्दन को * जीतिको डंका दियो बजाय॥
रुपना बारी को बुलवायो * औ इन्दल को लीन बुलाय॥
चली पालकी तब इन्दलकी * औ लश्कर में पहुँची आय॥
भयो बुलौआ चूड़ामणि को * व्याहकी सायति देउ बताय॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले * अबही भाँवरि लेउ डराय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करी तयारी तब आल्हाने * चारौ नेगी संग लवाय ॥
जितने धरौआ हैं आल्हाके * काँतामलको लीन्हें साथ ॥
खबरि करायदई महलन में * अबही भाँवरि लिहैं डराय ॥
त्यारी करवाई महलन में * साँगनको दियो खंभ गड़ाय ॥
मड़वा छाय दियो डालनकी * पंडित बेदी रचो बनाय ॥
गौरि गणेश केरि पूजनकरि * फिरि गठिबन्धनदियोकराय ॥
सखियाँ मंगल गावनलागीं * पंडित वेद उचारन लाग ॥
हाथजोरि बोले अभिनन्दन * पूरन होइ गयो काम तुम्हार ॥
कैद छाड़िदेउ तुम सबहीको * तुम सब योग्य बनाफरराय ॥
इतनी सुनतै बघ ऊदन ने * सबकी कैद दई छोड़वाय ॥
कन्यादान दियो राजा ने * ऊदन नेग दियो बँटवाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * सातो भाँवरि लई डराय ॥
बोले आल्हा ते अभिनन्दन * तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
तुम बुलवावो सब नेगिन को * औ गहने को देउ बँटाय ॥
इतनी कहिके पुनि आल्हाने * सिगरे नेगी लियो बुलाय ॥
गहना बाँटि दियो सबहीको * दान दक्षिणा दियो बँटाय ॥
ऊदन बोले तब राजा ते * बेटिहि बिदा देउ करवाय ॥
भई तयारी तब महलन में * बेटी बिदा दई करवाय ॥
चित्तररेखा भेंटन लागी * माता लीन्हीं कंठ लगाय ॥
फिरि २ भेंटी सब सखियन को * सखियाँ रोय रोय रहिजायँ ॥
जाय पालकी में बैठी जब * पलकी चली बरायत माहिं ॥
बारह तोड़ा मोहर लैकै * सो ऊदनिने दिये लुटाय ॥
आइ पालकी जब बरात में * दीन्हा हुक्म बीरमलिखान ॥
मेख उखारि देउ तँबुअनकी * लश्कर कूच देउ करवाय ॥
कूचको डंका जब बजवायो * तबुँअन मेख दई उखराय ॥
लदे सलीता जब ऊँटनपर * छकड़न तम्बू दिये लदाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कूच कराय दियो लश्करको * जीतिको डंकादियो बजाव ॥
बारह दिनको मंजिल करिके * भूनागढ़ में पहुँचे जाय ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे मकरंद * काँतामलको संग लवाय ॥
तुरते पहुँचे राजसभा में * सेनापति को करी सलाम ॥
बोले आल्हा सेनापति ते * राजा सुनो हमारी बात ॥
काँतामलम्वहिं दहिने होइगये * इन्दलहमको दियो मिलाय ॥
करी बड़ाई तब राजा ने * तुम सब लायक राजकुमार ॥
दुइमुकाम करिके भुन्ना गढ़ * तिसरे कूच दियो करवाय ॥
सातदिना की मंजिलकरिके * पहुँचे नगर महोबे जाय ॥
खबरि भेजिदई रंगमहल में * आये ब्याह इन्दलसी क्वाँर ॥
आरति सजवाई मल्हना ने * सखियाँ करैं मंगला चार ॥
आइ पालकी दरवाजे पर * परछनि करी मल्हनदेरानि ॥
बहू उतारी रनि सोनवाँ ने * दान दक्षिणा दियो बँटाय ॥
दगी सलामी गढ़ महुबे में * घरघर भयो मंगलाचार ॥
ऊदनि भेंटे तहँ सबहिन ते * मनमें खुशी भयो नरनारि ॥
ऐसे ब्याह भयो इन्दलको * सोहमलिखिके दियो सुनाय ॥
आल्हानिकासीअब लिखिहौं मैं * यारो सुनियो कान लगाय ।
समय समय पर आल्हागावौ * नितउठि लेउ नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * सीताराम क्यार धरिध्यान ॥

इति बलखबुखारे की लड़ाई (इन्दलकाव्याह समाप्तः)

-****-

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ आल्हा निकासी ॥

दो०—सदाभवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

आल्हा ।

सुमिरन करिके नारायण को * ले बजरङ्गबली को नाम ॥
लिखौं निकासी अब आल्हाको * मनमें सुमिरि राम घनश्याम ॥
एकदिन बिपत परत सबही पर * यारो सुनियो कान लगाय ॥
बिपतपरी यकदिन रघुपति को * सीता हरी विपिन खलआय ॥
बिपति परी है राजानल को * खुटिया लीलो नौलख हार ॥
बिपदा परिगई महादेव पर * खल भस्मासुर परो पिछार ॥
बिपति परी यकदिन आल्हा पर * चन्देले ने दियो निकारि ॥
कसम दिलाई परिमालै ने * सो सब हाल लिखौं बिस्तार ॥
यक दिन सोचे अपने मनमें * माहिल उरई के परिहार ॥
खोज मिटै जब परिमालै को * तब छाती को डाह बुझाय ॥
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठे * औ दिल्ली की पकरी राह ॥
पाँच दिना मारग में बीते * पहुँचे गढ़ दिल्ली में जाय ॥
गये सामुहें माहिल राजा * जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
उतरि बछेरी ते भुइँ आये * घोड़ी थामि लई थनवार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * माहिल रहिगये माथ नवाय ॥
नजरि बदलिगई पृथीराज की * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरईवाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल पृथीराज ते * बैठे राज करौं महराज ॥
क्षेम कुशल है मेरि उरई में * पै दिन रात अँदेशा मोहिं ॥
किला बनायो नर मलिखे ने * सबके धूरे लिये दबाय ॥
बड़ो वीर है सिरसा वालो * जाके नाम कहत मलिखान ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब * अब महुबे को कहो हवाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले माहिल पृथीराज ते * तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबे के * जिनते लड़े पार ना जाय ॥
पाँच बछेरा हैं महुबे में * तासै जीति सकै ना कोय ॥
घोड़ करेलिया औ हरनागर * हंसामनि प्रसिद्ध है घ्वाड़ ॥
घोड़ बेंदुला और पपीहा * पाँचो घोड़ा लेउ मँगाय ॥
ऐंड़ लगवातही घोड़ा के * उड़िके आसमान लौं जात ॥
ऐसे घोड़ा हम देखे ना * सो तुम समुझि लेउ महराज ॥
घोड़ी कबुतरी औ पचशावद * हाथी तुरत लेउ मँगवाय ॥
पहिले इनको तुम मँगवावो * पीछे महुबो लेउ लुटाय ॥
बंश नशावौ इन तीनों को * आल्हा ऊदल औ मलिखान ॥
तिनते रिस्ता नहिं नीको है * सो तुम जानि लेउ महराजा ॥
बात सुनी जब यह माहिल की * पृथीराज मन गई समाय ॥
लैके कागद कल्पी वारो * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
लिखि सरनामा पृथीराज ने * चन्देले को लिखी जोहार ॥
लिखो हाल फिरि यह पाती में * मानौ बात रजा परिमाल ॥
घोड़ा हरनागर हंसामनि * पपिहा और बेंदुला घ्वाड़ ॥
घोड़ करेलिया घोड़ी कबुतरी * हथि पचशावद देउ पठाय ॥
काम हमारो कछु अटको है * फिरि पीछे ते दिहैं पठाय ॥
ऐसी पाती लिखि राजा ने * सो धावन को दई पकराय ॥
पाती लैके धावन चलि भयो * औ महुबे की पकरी राह ॥
चारि रोज को धावा करिके * पहुँचो नगर महोबे जाय ॥
जहाँ कचहरी परिमालै की * धावन तहाँ पहूंचो आय ॥
साँकल खैंचत साँडिनि बैठी * धावन उतरि परो अरगाय ॥
करी बन्दगी परिमालै को * पाती गही दई चलाय ॥
नजरि बदलिगइ चन्देले की * तुरतै पाती लई उठाय ॥
पाती बाँची परिमालै ने * औ आल्हाको लियो बुलाय ॥
आल्हा ऊदन दोनों आये * चन्देले को करी सलाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथ जोरि के आल्हा बोले * काहे हमहिं लियो बुलवाय ॥
राजा बोले तब आल्हा ते * पाती आई पिथौरा क्यार ॥
उड़न बछेरा बड़ी राशिके * सो मँगवाय पिथौरा राय ॥
काम कछू उनको अटको है * सो तुम जल्दी देउ पठाय ॥
सुनतै आल्हा बोलन लागे * हम सब मानत हुक्म तुम्हार॥
पै यक अर्ज सुनौ दादा तुम * औ निज मनमें लेउ बिचारि॥
जिन घोड़न पर चढ़ैं चँदेले * तिन पर चढ़ैं शूर चौहान ॥
तुमहिं हँसौआ को डर नाहीं * सुनिके हँसिहैं सकल जहान॥
डरि गै चन्देले महुबे के * अपने घोड़ा दिये पठाय ॥
इतनी सुनतै कही चँदेले * बेटा सुनो हमारी बात ॥
शब्द बेध राजा दिल्ली को * है नर नाह बीर चौहान ॥
नहीं पैठैहौं जो घोड़न को * होइ है यहाँ बखेड़ा आय ॥
तुमना जितिहौ पृथीराज ते * ताते घोड़ा देउ पठाय ॥
इतनी सुनतै ऊदल तड़पे * नैनन गई लालरी छाय ॥
करै बखेड़ा जो हमरे सँग * मारौं राज्य भंग होइ जाय ॥
जो कोउ देखै यहि महुबे तन * ताको लेउ शीश कटवाय ॥
ब्याह कियो जब ब्रह्मानँद को * तब कहँ हते बीर चौहान ॥
मोहरा मारो चौहानन को * सातो भाँवरि लई डराय ॥
सो क्या भूलि गये राजा तुम * अब क्या डरत आप महराज॥
गर्ब न राखो कोहु राजाको * हमको जानत सकल जहान॥
बावन गढ़ हमने सर कीन्हें * सिगरे राजा गये थर्राय ॥
हाल तुम्हारो ना जानो है * दादा मनमें करो बिचार ॥
पहले घोड़ा वे माँगत हैं * पीछे लैहैं फौज सजाय ॥
घोड़ा होइ हैं जब हम पर ना * तब हम करि हैं कौन उपाय॥
ताते मानौ कही हमारी * लिखिके भेजि देउ इनकार ॥
इतनी सुनि गुस्सा होइकै तब * बोले तुरत रजा परिमाल ॥
कही हमारी तुम मानौ ना * खाली करो हमारो गाँव ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पानी पीहौ दशपुरवा में * तो तुम पियो रक्तकी धार ॥
भोजन करिहौ जो पुरवा में * तो तुम खाउ गऊकी मास ॥
सय्या सोइहौ जौ नारी सँग * मानौ परे मात के साथ ॥
दई तिलाकैं चन्देले ने * सो आल्हा हिय गई समाय॥
दोनों चलि भये तब बँगलाते * दश पुरवा में पहुँचे जाय ॥
रुपना बारी को बुलवायो * औ यह हुक्म दियो फरमाय॥
फौज हमारी दश हजार है * तुरतै सो तुम लेउ सजाय ॥
चलि भयो रुपना तब जल्दी ते * लश्कर सबै सजावन लाग ॥
बोले ऊदन सुनि आल्हा ते * दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
कौन देशको तुम चलि हौ अब * करिहौ कहाँ गुजारा जाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदन ते * बैरी बसत चारिहू ओर ॥
कहीं गुजारा ना हमरो है * भैया परो बिपति अब आय॥
बोले ऊदन तब आल्हा ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
राजा जैचँद हैं कनउज में * जिनको उदय अस्तलौंराज॥
भयो बखेड़ा ना तिनते है * तिनघर चलिके करो मुकाम॥
मोहिं भरोसा है जैचँद को * रखिहैं शरण आपनी माहिं ॥
सुनी बात जब यह ऊदन की * आल्हा के मन गई समाय ॥
यक हरकारा आल्हा भेजो * औ ढेबा को लियो बुलाय॥
आल्हा बोले तब ढेबा ते * भैया सगुन देउ बतलाय ॥
त्यारी हमरी है कनउज की * राजा जैचँद के दरबार ॥
बोले ढेबा तब आल्हा ते * दादा हाल देउ बतलाय ॥
काहे त्यारी है कनउज की * सोतुम हमहिं कहो समुझाय॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे * हमपर रूठि गये परिमाल॥
तीनि तिलाकैं हमको दीन्ही * औ भादोंमें दियो निकारि॥
हाल बताय दियो गुस्सा को * तब ढेबाने कही सुनाय ॥
साथ तुम्हारो हमना छाड़ि हैं * दादा सोच करो कछु नाहिं॥
खोलि पत्तरा तब ढेबा ने * अपनो सगुन दियो बतलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कूच कराय देउ जल्दी ते * तुम्हरे काम सिद्धि होजायँ ॥
यहसुनि चलिभये आल्हाऊदन * पहुँचे रंग महल में जाय ॥
बोले इन्दल बघ ऊदन ते * चाचा हाल देउ बतलाय ॥
कहाँकी त्यारी तुमने कीन्ही * सो तुम हमहिं कहौ समुझाय ॥
बोले ऊदनि तब इन्दल ते * बेटा कछु न पूछो हाल ॥
तीनि तिलाकैं राजा दीन्हो * दसपुरवा ते दियो निकारि ॥
करी तयारी हम कनउज को * तुमहूं जल्दी होउ तयार ॥
जहाँ दिवलदे माता बैठी * आल्हा तहाँ पहूँचे जाय ॥
हाथ जोरिके आल्हा बोले * डोला सबै लेउ सजवाय ॥
हमहिं निकारो परिमालै ने * हम कनउज को भये तयार ॥
बोली देवै तब आल्हा ते * बेटा मेरे लड़ैतेलाल ॥
बुरो न मानो तुम राजा को * बूढ़े भये चन्देलेराय ॥
रानी मल्हना तुमको पाली * ताते बिलग न मानो बात ॥
बोले अल्हा तब माता ते * नाहीं जानो हाल तुम्हार ॥
उड़न बछेरा बड़ी राशिके * सो मँगवाये बीर चौहन ॥
घोड़ कबुतरी हथि पचशावद * सो मँगवायो पिथौरा राय ॥
बहुत बतकही हमते होइगई * हमने साफ करी इनकार ॥
तापर राजा गुस्सा होइगये * हमको दई तिलाकैं तीनि ॥
पानी पीवो जो पुरवा में * तो तुम पिओ रुधिर कीधार ॥
भोजन करौ आज पुरवा में * तो तुम खाउ गऊको मास ॥
सेजमें जावो जो तिरिया को * तो तुम चढ़ो मातुकी सेज ॥
तीनि तिलाकैं यह राजा की * हमरे गई करेजे सालि ॥
हमना रहि हैं अब पुरवा में * माता बचन करौ परमान ॥
इतनी सुनतै रनि देवेके * गुस्सा गई देहमें छाय ॥
डोला सजवाये बहुअन के * औ सब माया लई लदाय ॥
हाथी पचशावद सचवायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो * तापर ऊदनि भये सवार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घोड़ा करेलिया पर इन्दल हैं * ढेवा मनोरथा पर असवार ॥
घोड़ पपीहा औ हंसामनि * लीन्हे साथ बनाफर राय ॥
कूच करायो दशपुरवा ते * औ चाले भये बनाफर राय ॥
सिगरी रइय्यत रोवन लागी * बेड़ा कौन लगै है पार ॥
जबहीं पहुँचे गढ़ महुबे में * डोला सबके धरे उतारि ॥
महलनिकट है जगनायक को * जगनिक एक न पूछी बात ॥
सुनी हाल जब रनिमल्हना ने * चले रिसाय बनाफरराय ॥
मल्हना आई दरवाजे पर * सो आल्हा ते लगी बतान ॥
काहे रिसाय चले बेटा तुम * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
जो तुम छाड़ि दिहौ महुबे को * लेहैं पृथीराज लुटवाय ॥
बोले ऊदन तब मल्हना ते * नाहीं कछू हमारी लागि ॥
भादों चिरैया ना घर छोड़ै * ना बनिजरा बनिजको जाय ॥
काह बिगारो हम राजा को * जो भादों में दियो निकारि ॥
तीनि तिलाकैं दइ राजा ने * हमरे गई करेजे सालि ॥
आज्ञा दैदेउ तुम माता म्वहि * महुबे हम रहिबे को नाहिं ॥
यह सुनि बोली रानी मल्हना * बेटा मानो बचन हमार ॥
मति सठिआय गई राजा की * सो तुमसमुझि लेउमनमाहिं ॥
जो तुम छाँड़ि दिहौ राजा को * तुमको हँसिहैं सकलजहान ॥
आई चन्द्रावलि द्वारे पर * सो ऊदनि ते लगी बतान ॥
तुमना जावो गढ़ महुबेते * बीरन बारबार बलिजाउँ ॥
बड़ो भरोसा म्वहिं तुम्हरो है * को गाढ़े में ऐहैं काम ॥
ऊदनि बोले जन्द्रावलि ते * बहिनी सुनो हमारी बात ॥
दई तिलाकैं हैं राजा ने * औ भादों में दियो निकारि ॥
तासे रहिहौं ना महुबे में * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
रोय रोय मल्हना समुझायो * आल्हा एक न मानी बात ॥
बारह रानी चन्देले की * सोऊ बहुत रहीं समुझाय ॥
बात न मानी आल्हा ऊदनि * औ चलिबे को भये तयार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चरण लागिके सब काहुको * आल्हा कूच दियो करवाय ॥
सिगरी रैयति रोवन लागी * बिपदा कछू कही ना जाय ॥
बिना बीरका महुबा रहि गयो * बेड़ा कौन लगै हैं पार ॥
चले बनाफर गढ़ महुबे ते * धावन चलो महोबे क्यार ॥
धावन पहुँचो सो सिरसा में * जहँ दरबार बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी नरमलिखे को * औ आल्हा को कह्यो हवाल ॥
आल्हा रूठि चले महुबे ते * तिनको राखि लेउ समुझाय ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * घोड़ि कबुतरी लई मँगाय ॥
सो सजवाय लई जल्दी ते * औ चढ़ि चले बीर मलिखान ॥
मलिखे पहुँचे जहँ आल्हा हैं * औ आल्हा को करी सलाम ॥
हाथ जोरि बोले नर मलिखे * दादा काहे चले रिसाय ॥
बोले आल्हा तब मलिखे ते * भैया कछू कही ना जाय ॥
पाँच बछेरा बड़ी राशिके * सो मँगवाये पिथौरा गय ॥
हथि पचशावद घोड़ी कबुतरी * माँगी सोऊ बीर चौहान ॥
कही देन को चन्देले ने * हमने साफ करी इनकार ॥
तापर गुस्सा होय राजा ने * हमको दई तिलाकैं तीनि ॥
तासो रहिहौं ना महुबे हम * भैया समुझि लेउ मनमाहिं ॥
इतनी सुनि के मलिखे बोले * दादा चलो हमारे साथ ॥
बैठे राज करो सिरसा में * नित उठि सेवा करौं तुम्हारि ॥
यहसुनि आल्हा बोलन लागे * भैया सुनो हमारी बात ॥
सिरसा रजधानी महुबे की * नहिं हम करैं अन्नजल पान ॥
मलिखे बारबार समुझायो * दादा मानो बात हमारि ॥
बास करौ तुम गढ़ सिरसा में * या धूरे पर करो मुकाम ॥
किला दूसरा हम बनवावैं * जहँ है भूमि कनौजी क्यार ॥
बहुतक समुझायो मलिखे ने * आल्हा एक न मानी बात ॥
हाथ जोरिके ऊदन बोले * दादा सुनो बीर मलिखान ॥
कहै कोऊ नहिं अस बैरी ते * जैसी कही रजा परिमाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तासे रोको ना दादा तुम * हमना करिहैं यहाँ मुकाम ॥
गुस्सा होइके तब अपने मन * सिरसा चले बीर मलिखान ॥
आल्हा चलिभये तब आगेको * औ कनउज की पकरी राह ॥
नदिया बेतवै पर पहुँचे जब * तब तहँ होन उतारा लाग ॥
उतरि काफिला गये नदिया ते * औ झाबर में पहुँचे जाय ॥
कबहुँक बादल गर्जन लागे * कबहुँक तपै सुर्यको घाम ॥
दो०-काँटाबुरा करील को, औ बदरी को घाम ॥
सौति बुरी है चूनकी, औ साझेको काम ॥ १ ॥

* आल्हा *

लगो घाम जब तहँ बदरी को * सबके बदन गये कुम्हलाय ॥
गरम बयारी चले रेत में * सबके प्यास प्यास रटलागि ॥
भये पियासे इन्दल बेटा * ना कहुँ पानी परै देखाय ॥
मुँह कुम्हिलाय गये रानिन के * बिपदा एक न बरनी जाय ॥
बहुत कलेश सही रेती में * औ जमुना पर पहुँचे जाय ॥
डेरा डारे तब रेती में * छत्री करन रसोई लाग ॥
राति बसेरा कीर जमुना पर * भोरहिं कूच दियो करवाय ॥
घाट कालपी उतरि गये जब * पहुँचे सब परहुल में जाय ॥
तिनि रोज परहुल में रहिकै * सियरमऊ को करो पयान ॥
जबहीं पहुँचे सियर मऊ में * अपने डेरा दिये लगाय ॥
फेटैं छुटि गइँ रजपूतन की * बागन तम्बू दियो तनाय ॥
एक महीना सियर मऊ में * आल्हा ऊदन कियो मुकाम ॥
यक दिन ऊदन बोलन लागे * औ आल्हा ते लगे बतान ॥
काहे दादा तुम गाफिल हो * अब कनउज को करो पयान ॥
चलिकै भेंटो अब जैचँद ते * नाहीं देर करन को काम ॥
इतनी सुनतै सुनि आल्हा ने * हथिपचशावद लियो मँगाय ॥
सो सजवाय लियो जल्दी ते * यकसौ शूर लिये सजवाय ॥
कूच कराय दियो डेराते * औ कनउज में पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जबही पहुँचे दरवाजे पर ❀ दरवानी ने कही सुनाय ॥
कौन देश के तुम राजाहो ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोले आल्हा दरवानी ते ❀ हमहैं महुबे के सरदार ॥
भेंट करन आये राजाको ❀ औ आल्हा है नाम हमार ॥
इतनी सुनते गयो दरवानी ❀ औ जयचंद को करी सलाम ॥
आल्हा आये हैं महुबे ते ❀ सो ठढ़े हैं पवरि दुआर ॥
यह सुनि जैचँद बोलन लागे ❀ फाटक जल्द देउ खोलवाय ॥
अबहीं लावौ तुम आल्हा को ❀ हमरो नजरि गुजारो आय ॥
लौटो दरवानी द्वार पर ❀ फाटक तुरत दियो खोलवाय ॥
बोला दरवानी आल्हाते ❀ अबही चलो हमारे साथ ॥
चलिभै आल्हा तब द्वारते ❀ औ राजा पै पहुँचे जाय ॥
गये सामुहें जब जैचँद के ❀ आल्हा झुकिके करी सलाम ॥
मूरति देखी जब आल्हा को ❀ ऊँची चौकी दई डराय ॥
पूछन लागे राजा जैचँद ❀ कैसे बसत रजा परिमाल ॥
खबरि बताय देउ महुबे की ❀ अपनो हाल कहो समुझाय ॥
बोले आल्हा तब जैचँद ते ❀ बैठे राज्य करैं परिमाल ॥
कुशल छेम है गढ़ महुबे में ❀ हमपर परी आपदा आय ॥
हमहिं निकारो चन्देले ने ❀ सो हम तुमहिं जुहारे आय ॥
ठौर बताय देउ हमको कहुँ ❀ तहँ हम करैं गुजारा जाय ॥
इतनी सुनिकै जैचँद बोले ❀ तुम सुनि लेउ बनाफर राय ॥
तुमहिं निकारी चन्देले ने ❀ तासों हम रखिबे के नाहिं ॥
इतनी सुनतै आल्हा चलिभै ❀ औ हाथी पर भये सवार ॥
कूच कराय दियो कनउज ते ❀ औ डेरा पर पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदन तब आल्हा ते ❀ दादा हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ ठौर जैचँद बतलाई ❀ तब आल्हाने कही सुनाय ॥
सुख के साथी सब कोऊ है ❀ दुखमें कोउ न होय सहाय ॥
जाय ठौर माँग्यो राजाते ❀ राजा साफ करी इनकार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

परी आपदा जब पंडनपर ❀ तब बिराट घर रहे छिपाय ॥
परी बिपति श्रीरामचंद्र पर ❀ निश्चर हरी सिया वनमाहिं ॥
विपति परी यकदिन शंकरपर ❀ खल भस्मासुर परो पिछार ॥
आजु आपदा हमपर परिगइ ❀ कोउ न हमको होय सहाय ॥

दो०—तुलसी पर घर जायके, दुःख न कहिये रोय ।
आपन भरम गँवाइये, बाँटि न लैहैं कोय ॥

आल्हा ।

यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
परत आपदा सब काहू पर ❀ सब दिन विपति रहत है नाहिं ॥
एक महीना के बीते पर ❀ एक दिन ऊदन कियो बिचार ॥
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❀ तापर फाँदिभये असवार ॥
यकसौ सूर साथ सजवायो ❀ औ चलिभये उदयसिंहराय ॥
बाला पीर जहाँ कनउज में ❀ ऊदन तहाँ पहूँचे जाय ॥
न्याज नजरि चढ़वाय पीरको ❀ तोशा तुरत दियो बँटवाय ॥
तहँते चलिभये उदन बाँकुड़ा ❀ पहुँचे फूलमती ढिंगजाय ॥
होम करायो तहँ देवी को ❀ कन्या सातक दई जेंवाय ॥
करि प्रणाम श्रीफूलमती को ❀ ऊदन पहुँचे बीच बजार ॥
जिती दुकानैं हलवाइन की ❀ सो ऊदनने लई लुटाय ॥
गड़बड़ होगयो तब बजार में ❀ रैयत भगी कनौजी क्यार ॥
जाय पुकार करी डयोढ़ी में ❀ जहँ दरबार कनौजी क्यार ॥
लूटि बजार लई ऊदन ने ❀ औ महराज कनौजी राय ॥
अजैपाल कनउज में होइगै ❀ तब ना लूटी केहु बजार ॥
सुनतै जैचँद गुस्सा होइके ❀ औ लाखनिते लगे बतान ॥
तोपैं लगवावो धूरे पर ❀ औ ऊदन को देउ उड़ाय ॥
ऐसे क्षत्री को उपज्यो है ❀ हमरो कनउज लेय लुटाय ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना ❀ तोपैं आगे दई जोताय ॥
खबरि पायके सैयद आये ❀ औ जैचँद को करी सलाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले सैयद तब जैचंद ते ❀ तोपैं कहाँ दई पहुँचाय ॥
जैचँद बोले तब सैयद ते ❀ ऊदन लूटी आय बजार ॥
यह सुनि सैयद बोलन लागे ❀ तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
जीति न पैहो तुम ऊदन को ❀ कलहा देव कुँवरि को लाल ॥
बारह बरस केरि उम्मिरि में ❀ ऊदन लियो बापको दाउँ ॥
पृथीराज दिल्ली के राजा ❀ तहँ ब्रह्मा को करौ विवाह ॥
हाथि पछारी दरवाजे पर ❀ तुरतै भाँवरि लई डराय ॥
आल्हा ब्याहे नैपाली घर ❀ इन्दल बलख बुखारे माहिं ॥
मलिखे ब्याहे पथरी गढ़ में ❀ सुलखे शहर कमाथूँ माहिं ॥
ऊदन ब्याहे हैं नरपति घर ❀ सो तुम जानि लेउ महराज ॥
बड़े बली हैं आल्हा ऊदन ❀ कलहा दस्सराज के लाल ॥
यह सुनि जैचँद बोलन लागे ❀ सैयद सुनो हमारी बात ॥
जौरा भौंरा जो हाथी है ❀ तिनको मदिरा देउ पिलाय ॥
दोनों हाथी मतवारे करि ❀ दरवाजे पर देउ ढिलाय ॥
सुनी बात जब यह सैयद ने ❀ दोनों हाथी लिये मँगाय ॥
फूल पिलाय दियो दोनों को ❀ औ द्वारे पर दियो ढिलाय ॥
खबरि सुनाई जब जैचँद को ❀ तब जैचँद ने कही सुनाय ॥
अब बुलवाय लेउ ऊदन को ❀ द्वारे हाथी देयँ पछारि ॥
गयो हरकारा सियर मऊका ❀ औ आल्हा ते कह्यो हवाल ॥
करी तयारी तब आल्हा ने ❀ अपनो हाथी लियो मँगाय ॥
मस्तक रँग दियो पचशावदको ❀ मखमल झूल दई डरवाय ॥
रेशम रस्सा ते कसवायो ❀ हौदा धरी सूबरन क्यार ॥
तामें झालरि है मोतिन को ❀ शोभा कछू कही ना जाय ॥
झब्बा लटकैं अम्बारी में ❀ जिनमें जड़े जवाहिर लाल ॥
सब हथियार सजे आल्हा ने ❀ औ हाथी पर भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो ❀ तापर ऊदन भये सवार ॥
कूच करायो सियरमऊ ते ❀ औ कनउज में पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जबहीं पहुँचे दरवाजे पर ❀ आये तहाँ कनौजी राय ॥
बोले जैचँद सुनि आल्हा ते ❀ सुनिये दस्सराज के लाल ॥
हाथि पछारे तुम दिल्ली में ❀ सो हाथी यह देउ पछारि ॥
इतनी सुनतै बघ ऊदन ने ❀ भाला लियो आपने हाथ ॥
उतरि बेंदुला ते भुइँ आये ❀ औ हाथी पै पहुँचे जाय ॥
भाला मारो यक जोरा के ❀ औ धरती में दियो गिराय ॥
दाँत पकरिकै यक भोंरा को ❀ तुरते ऊदन दियो पछारि ॥
देखि हाल यह राजा जैचँद ❀ तब सैयद ते लगे बतान ॥
अबहम जानि लियो अपनेमन ❀ साँचे दस्सराज के लाल ॥
रिजिगिरि रजधानी छोटीसी ❀ सो आल्हा को दई इनाम ॥
करी बन्दगी तब आल्हा ने ❀ औ ऊदन ने करी सलाम ॥
दोनों चलि भये तब ड्योढ़ी ते ❀ औ रिजिगिरि में पहुँचे आय ॥
फौज आपनी तहँ मँगवाई ❀ सब सामान लियो मँगवाय ॥
आल्हा रहन लगे रिजिगिरिमें ❀ ईश्वर विपदा दई नशाय ॥

❀ कुण्डलिया ❀

सुखते विपदा है भली ❀ जो थोरे दिन होय ॥
इष्टमित्र अरु बन्धु गण ❀ जानि परै सब कोय ॥
जानि परै सब कोय ❀ बात नहिं पूँछे कोई ॥
जब संकट टरि जाय ❀ मित्र होवै रिपु सोई ॥
नारायण धरि ध्यान ❀ आप मनको समुझावै ॥
कछु दिन में सुख होय ❀ सदा नहिं विपति सतावै ॥

❀ आल्हा ❀

आल्हा निकासी यह पूरी भइ ❀ सोहम लिखिके दई सुनाय ॥
आगे व्याह लिखौं लाखनिको ❀ यारो सुनियो कान लगाय ॥
समय समय पर आल्हा गावो ❀ नित उठि लेउ नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीताराम क्यार धरिध्यान ॥

❀ इति आल्हा निकासी समाप्तः ❀

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बूँदी (कामरूबंगाला देश) की लड़ाई

(लाखनिराना का विवाह)

दो०--सदा भवानी दाहिनी, खन्मुख रहैं गणेश।
पाँचदेव रक्षाकरैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ २ ॥

आल्हा।

बजी बासुरी वृन्दाबनमाँ ❀ औ मधुबनमें कुहकै मोर ॥
मोहित होइ गये जीव चराचर ❀ औ ध्वनि छायरही चहुँओर ॥
उठि उठि धाईं सबै गोपिका ❀ जबहीं सुनीं कृष्णकी बैन ॥
उलटे भूषण बसन धारिकै ❀ पहुँची जहाँ कृष्ण छबि ऐन ॥
कीन्हों रासविलास श्यामने ❀ त्रिभुवनमाँहि रह्यो यश छाय ॥
कृष्णचन्द्र छबि परम मनोहर ❀ निशदिन ध्यानकरौ मनलाय॥
देश कामरू बंगालेमें ❀ बूँदी शहर एक सरनाम ॥
तहँके महराजा गंगाधर ❀ जिनको जानत सकल जहान॥
बेटी कुसमा गंगाधरकी ❀ जाको रूप न बरणो जाय ॥
तेरह बरस केरि बेटी भइ ❀ तब राजाने कियो बिचार ॥
ब्याह करौं अब या बेटीकी ❀ होइगइ ब्याहयोग्य सुकुमारि ॥
दुइ बेटा हैं गंगाधर के ❀ मोती और जवाहिरसिंह ॥
तुरत जवाहिरको बुलवायो ❀ औ गंगाधर कही सुनाय ॥
टीका लैजावो बहिनीको ❀ केहु राजाके देउ चढ़ाय ॥
सुन्दर लरिका ज्यहि क्षत्रीको ❀ त्याहेघर टीका जाउ लेवाय ॥
आल्हा ऊदन हैं महुबे में ❀ ओछी जाति बनाफर राय ॥
ना लैजैयो तहँ टीका तुम ❀ इतनी मनियो कही हमारि ॥
इतनी कहिकै गंगाधरने ❀ चारो नेगी लिये बुलाय ॥
थार सूबरनको भारीलै ❀ मिसरूवाले थान मँगाय ॥
एक नारियल पाँच दुशाला ❀ मोहनमाला लियो मँगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

तोड़ा पाँच लिये मोहरन के ❀ औ नौ हीरा लिये मँगाय ॥
तीनि लाखको टीका लैके ❀ सो नेगिनको दियो गहाय ॥
नाऊ बारी भाट परोहित ❀ चारो नेगी संग लिवाय ॥
टीका लैके चले जवाहिर ❀ गढ़ दिल्ली की पकरी राह ॥
सातदिनाकी मंजिल करिके ❀ दिल्लीगढ़ में पहुँचे जाय ॥
जहाँ कचहरी पृथीराज की ❀ पाती तहाँ जवाहिर जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को ❀ पाती गद्दीदई चलाय ॥
पाती लैके टीकावाली ❀ सो पढ़िलई बीर चौहान ॥
पाती फेरिदई राजा ने ❀ औ यह कही पिथौराराय ॥
ब्याहु न करि हैं हम बूँदी में ❀ टीका अनत चढ़ावौ जाय ॥
चले जवाहिर तब दिल्ली ते ❀ पथरीगढ़ की पकरी राह ॥
जबहीं पहुँचगये पथरीगढ़ ❀ जहँ गजराजा को दरबार ॥
गये जवाहिर जब समुहें पर ❀ गजराजाको करी सलाम ॥
लेके पाती टीका वाली ❀ सो गद्दी पर दई चलाय ॥
नजरि बदलिगइ गजराजा की ❀ तुरतै पाती लई उठाय ॥
पढ़ी हकीकति सब पातीको ❀ पाती तुरत दई लौटाय ॥
ब्याहु न करिहैं हम बूँदी में ❀ जहँ है जादू को अधिकार ॥
चले जवाहिर तब बिसहिनते ❀ बौरी गढ़की पकरी राह ॥
आठ दिना मारग में लागे ❀ पहुँचे बीरशाह दरबार ॥
करी बन्दगी बीरशाह को ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची ❀ तुरतै पाती दई फिराय ॥
टीका लैहैं ना बूँदी को ❀ ना हम फौज कटैहैं जाय ॥
इतनी सुनिके चले जवाहिर ❀ औ अपने मन कियो विचार ॥
अजैपाल कनउज में होइगे ❀ तिनघर उदै अस्तलौं राज ॥
राजा जैचँद हैं कनउज में ❀ तिनघर टीका देउ चढ़ाय ॥
यह बिचारि मन चले जवाहिर ❀ औ कनउज की पकरी राह ॥
आठ रोजकी मंजिल करिकै ❀ पहुँचे गढ़ कनउज में जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कनउज शहर देखि मनमें तब ❀ भये प्रसन्न जवाहिर सिंह ॥
गये जवाहिर जब फाटक पर ❀ दरबानी ने कही सुनाय ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोले जवाहिर दरबानी ते ❀ हमरो नाम जवाहिर सिंह ॥
टीका लाये हम बूँदी ते ❀ सो कनउज में दिहौं चढ़ाय ॥
इतनी सुनिकै गय दरबानी ❀ औ जैचँद को करी सलाम ॥
हाल सुनायो दरवाजे को ❀ तब राजा ने कही सुनाय ॥
जल्दी लावौ दरवाजे ते ❀ हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
गय दरवानी तब द्वारेपर ❀ औ यह हुक्म सुनायो जाय ॥
तुमहिं बुलायो है राजाने ❀ अबहीं चलो हमारे साथ ॥
चले जवाहिर दरवाजे ते ❀ पहुँचे बीच कचहरी जाय ॥
करी बन्दगी महाराज को ❀ तब जैचँदने कही सुनाय ॥
कौन देशते तुम आये हो ❀ क्यहिं राजाके राज कुमार ॥
बोले जवाहिर तब राजा ते ❀ बंगाला है देश हमार ॥
पिता हमारे गंगाधर हैं ❀ बूँदी शहर केर महराज ॥
टीका लाये हम बहिनी को ❀ हमको लरिका देउ बताय ॥
यह कहि पाती ले टीका को ❀ सो गद्दी पर दई चलाय ॥
पाती बांची राजा जैचँद ❀ आंकुइ आंकुनजरिकरि जाय ॥
बोले जैचँद चिट्ठी पढ़िके ❀ ना बूँदी में करिहौं ब्याह ॥
काठिन लड़ाई बंगाले को ❀ जहँ है जादू को अधिकार ॥
बैठे ऊदन तहँ बँगला में ❀ सो जैचँद ते लगे बतान ॥
नाम तुम्हारो है दुनियाँ में ❀ तुमको जानत सकल जहान ॥
सो तुम हीनी मुखते भाखो ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
टीका फेरत हौ घरते तुम ❀ यह नहिं धर्म क्षत्रियन क्यार ॥
घर आये टीका नहिं फेरो ❀ इतनी मानो कही हमारि ॥
जो कहुँ फेरि दिहौ टीका को ❀ तो जग होइहैं हँसी तुम्हारि ॥
चर्चा होइहैं यह घर घर में ❀ की डरि गये कनौजी राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

टीका चढ़ैहैं हम लाखनि को ❀ औ बूँदी में करिहैं व्याह ॥
यहसुनि जेचँद बोलन लागे ❀ तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय ॥
जो कछु तुम्हरे मनमें आवे ❀ सोई करो बनाफर राय ॥
बोले ऊदन तब राजा ते ❀ अबहीं पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडित को ❀ पंडित आय गये तत्काल ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❀ अबहीं टीका लेउ चढ़ाय ॥
खबरि कराई तब महलन में ❀ त्यारी करी तिलकदे रानि ॥
चौक पूरि दइ तब मोतिन के ❀ चन्दन चौकी दई डराय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❀ पंडित बेद उचारन लाग ॥
लाखनि रनाको बुलवायो ❀ औ चौकी पै दियो बिठाय ॥
मंगल पाठ कियो पंडित ने ❀ गौरि गणेश दिये पुजवाय ॥
तुरत जवाहिर को बुलवायो ❀ सो आँगन में पहुँचे आय ॥
चारो नेगी संगे आये ❀ औ सब साथ लिये सामान ॥
राजा जैचँद अ.ल्हा ऊदन ❀ सोऊ तहाँ बिराजे आय ॥
भयो रोचना जब लाखनि को ❀ तौलो काहू छींको आय ॥
देखि हकीकति तिलका रानी ❀ तुरतै सबते कही सुनाय ॥
असगुन होइ गयो रंग महल में ❀ अबहीं टीका देउ फिराय ॥
बोले ऊदन तब तिलका ते ❀ माता सुनो हमारी बात ॥
सगुन बिचारैं बनियाँ बाटू ❀ जो धरि मौर विवाहन जायँ ॥
सगुन बिचारैं ना क्षत्री ह्वै ❀ जो रण चढि के लोह चबायँ ॥
गिरे पसीना जहँ लाखनि को ❀ तहँ दै देउँ रक्त की धार ॥
तौ मैं बेटा दस्सराज को ❀ सातौ भाँवरि लेउँ डराय ॥
बिना बियाहे जो मैं लौटौं ❀ तो म्वहि खाय कालका माय ॥
यह कहि ऊदन बोलन लागे ❀ औ पंडित ते लगे बतान ॥
ब्याहकि सायत तुम बतलावो ❀ जामें काम सिद्धि होइ जाय ॥
खोलिके पतरा पंडित बोले ❀ सुन्दर फागुन मास पुनीत ॥
कृष्ण पक्षकी शिव तेरसि को ❀ दिनमें ब्याह लेउ करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सायति सुनिके कही जवाहिर * नेगी अपने देउ बुलाय ॥
आये नेगी तब राजा के * तिनको गहना दियो बँटाय ॥
चारो नेगी बूँदी वाले * जैचँद गहना दियो बँटाय ॥
शाल दुशाला मोहन माला * सो नेगिनको दियो गहाय ॥
चले जवाहिर तब कनउज ते * औ बूँदी की पकरी राह ॥
मंजिल २ के चलिबे में * अपने शहर पहुँचे आय ॥
हाल बतायो गंगाधर को * बहिनि को टीका आये चढ़ाय॥
अजयपाल होइगै कनउज में * जिन घर उदै अस्तलौं राज ॥
देवी फूलमती तहँ कहिये * अरु है गोबर्धन अस्थान ॥
करी रसोई जहँ सीता ने * अरु सिन्दोहिनिकी अस्थान॥
नीचे धारा है गंगा की * ऊपर किला कनौजी क्यार ॥
भारी राजा है कनउज को * लागत बावन जहाँ बजार ॥
राजा जैचँद हैं कनउज में * जिनके लाखन के ब्योहार ॥
टीका चढ़ायो हम लाखन को * जो हैं लाखन में सरदार ॥
बेटा कहिये रतीभान को * नाती बैन चकवै क्यार ॥
लाखन भूपन में यक सुन्दर * जाको रूप न बरनो जाय ॥
सुनिके बोले तब गंगाधर * हमरे मनमें गयो समाय ॥
नीको घर बर तुमने ढूँढ़ो * अब सामान करो तैयार ॥
त्यारी करन लगे राजा तब * ढूँढ़न लागे ब्याह समान ॥
हियाँकी बातैं तो हियँ छाँड़ो * अब कनउज को सुनो हवाल ॥
पूस महीना के बीते पर * लागो माघ महीना आय ॥
त्यारी करत करत बीते दिन * फागुन मास रह्यो नियराय ॥
देश देश के सब राजन घर * न्योता भेजि दियो तत्काल ॥
जितने राजा ब्योहारी हैं * सो कनउज में पहुँचे आय ॥
कोडहरि वाले गंगा ठाकुर * मामा जौन कनौजी क्यार ॥
साजिके आये गढ़ कनउज में * बागन डेरा दियो डराय ॥
मरहुल वाले परशू राजा * सो कनउज में पहुँचे आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

आये रूपन सिरउज वाले * आये देश देश सरदार ॥
करी तयारी आल्हा ऊदन * औ बरात सब लई सजाय ॥
बड़ि २ तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर लियो सजाय॥
हाथी सजवायो आल्हा ने * औ घोड़न को लियो सजाय॥
खंभा गाड़ि गयो रंगमहल में * लागे होन मंगला चार ॥
तेल चढ़ायो सात सुहागिन * पीछे उपटन दियो लगाय ॥
फिरि अस्नान कराय चौक में * नहखुर होन लाग तत्काल ॥
कुवाँ बियाह्यो रनि तिलका ने * लाखनि पलकी बैठे जाय ॥
चली पालकी तब लाखनि को * शोभा कछू कही ना जाय ॥
भुरुही हथिनी को सजवायो * तापर जैचँद भये सवार ॥
छत्र बिराजत महाराज पर * ऊपर चौर दुरै गजगाह ॥
हाथी पचशावद सजवायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
मीरा सैयद बनरस वाले * घोड़ी सिंहनि पर असवार ॥
धनुआँ तेली जो बनरस को * घोड़ि बिलंदिनि पर असवार॥
लला तमोली कनउज वाला * घोड़ा सब्जा पर असवार ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवा कर * तापर ऊदन भयो सवार ॥
घोड़ा मनोरथा को सजवा कर * तापर ढेबा भये सवार ॥
अपनी अपनी असवारिन पर * सिगरे शूर भये असवार ॥
मारू डंका के बाजत खन * सजिगे तीनि लाख असवार ॥
पैदल सजिगे चार लाख सब * डंका होन गोल में लाग ॥
चली बरायत तब कनउज ते * झंडन रही लालरी छाय ॥
बारह दिन की मंजिल करिके * देश कामरू पहुँचे जाय ॥
बूँदी शहर केर धूरे पर * अपने डेरा दिये डराय ॥
तम्बू तनिगे बन्नातन के * हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
फेटैं छुटि गईं रजपूतन की * घोड़न जीन धरे उतराय ॥
चढ़ी रसोई उमरायन की * कोऊ करन गये अस्नान ॥
नाच होन लागो तम्बुन में * शोभा कछू कही ना जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले आल्हा तहँ जैचँद ते * अपनो पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडित को * पंडित तुरतै पहुँचे आय ॥
बोले राजा तब पंडित ते * ब्याह कि सायति देउ बताय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले * ऐपनवारी देउ पठाय ॥
बोले आल्हा तब रुपना ते * ऐपनवारी तुम लै जाउ ॥
हाथ जोरिकै रुपना बोलो * दादा हम जैबे के नाहिं ॥
कठिन देश यह बंगाला है * जहँ है जादू को अधिकार ॥
आल्हा बोले तब रुपना ते * भैया अकिल गई तुम्हारि ॥
नगर महोबे के रहवैया * मुखते कहत न बात सम्हारि ॥
ब्याह होनको यहु रहि हैं ना * यह दिनकहिबे को रहि जाय ॥
यह सुनि रुपना बोलन लागो * घोड़ा बेंदुला देउ मँगाय ॥
भाला दै देउ ऊदन वाला * औ दै देउ ढाल तलवारि ॥
जो जो माँगो रुपना बारी * सो सो आल्हा दियो मँगाय ॥
चलि भयो रुपना तब बरात से * औ बूंदी में पहुँचो जाय ॥
जबहीं पहुँचो दरवाजे पर * दरबानी ने दियो जवाब ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहो * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना दरबानी ते * ब्याहन आये कनौजी राय ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * रूपन बारी नाम हमार ॥
खबरि सुनावो तुम राजा को * हमरो नेग देयँ मँगवाय ॥
इतनी सुनिकै गय दरबानी * पहुँचो राज सभा में जाय ॥
करी बन्दगी गंगाधर को * दरवाजे को कह्यो हवाल ॥
देर देखिकै तब रुपना ने * घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
जायके पहुँचो राज सभा में * औ राजा को करी सलाम ॥
कुन्नस हरिके पाँच कदम ते * ऐपनवारी दई चलाय ॥
पूछो राजा तब रुपना ते * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कौन देश ते तुम आये हो * यहँ पर काह तुम्हारो काम ॥
इतनी सुनि के रुपना बोल्यो * औ राजा ते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हम आये हैं गढ़ कनउज ते * औ लाखनि को करनविवाह॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * रूपन बारी नाम हमार॥
आल्हा आये गढ़ महुबे ते * जैचँद रिजागिरि दियो इनाम॥
अगुआ आल्हा हैं बरात में * तिन म्वहिं आगे दियो पठाय॥
नेग हमारो जो द्वारे को * सो तुम जल्द देउ मँगवाय॥
काह नेग तुम्हरो द्वारे को * सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
चलै शिरोही चारि घरी भरि * औ बहि चले रक्त की धार॥
यहै नेग हमरे द्वारे को * सो तुम नेग देउ चुकवाय॥
इतनी सुनतै राजा जरिगै * नैना अग्निज्वाल हुइ जाय॥
बोले गंगाधर रुपना ते * ओछी जाति बनाफर राय॥
आल्हा आये क्यों बरात में * काहे आये हमारे द्वार॥
हुक्म दैदियो गंगाधर ने * फाटक बन्द देउ करवाय॥
मारि गिरावो या बारी को * तुरतै शीश लेउ कटवाय॥
जान न पावै यह बारी कहुँ * टुटुआ टायर लेउ छँड़ाय॥
यहसुनि रुपना बोलन लाग्यो * राजा बोलो बात सम्हारि॥
ऐसो क्षत्री को तुम्हरे हैं * हमरो घोड़ा लेय छँड़ाय॥
यहु घोड़ा है चन्द्रबंश को * सोतुम जानि लेउ महराज॥
इतनी सुनतै क्षत्री झपटे * अपनी खैंचि २ तलवाँरि॥
खैंचि शिरोही लइ रुपना ने * लै बजरंग बली को नाम॥
बत्तिस क्षत्री रुपनै मारे * औ तहँ गड़बड़ दियो मचाय॥
झालरि तोरि लई मोतिन को * ऐपनवारी लई उठाय॥
बाकी नग लिहौं भौरिन में * यहकहि चलोमहोबिया ज्वान॥
ऐंड लगाय दई घोड़े को * फाटक निकरि गयो बापार॥
चारि घरी केरे अरसा में * पहुँचा तब बरात में जाय॥
रंग बिरंगो रूपना देखो * तब ऊदन ने कही सुनाय॥
कैसी गुजरी दरवाजे पर * रूपना हमहिं देउ बतलाय॥
बोलो रुपना तब ऊदन ते * दहिने भई शारदा माय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

काम तुम्हारो पूरन होइगयो * रहिगयो धर्म चँदेले क्यार ॥
बत्तिस क्षत्री हमने मारे * द्वारे बही रक्तकी धार ॥
हियाँकि बातैं तौ हियँ आड़ो * अब बूँदीको सुनो हवाल ॥
गंगाधर सोचे अपने मन * औ आपस में लगे बतान ॥
जिनके नेगी ऐसे जालिम * तिन क्षत्रिनको कौन हवाल ॥
मोति जवाहिर दोनों बेटा * तिनते राजा कही सुनाय ॥
लड़े न जितिहौ तुम आल्हा ते * तासे तुमहिं देउँ बतलाय ॥
चारौ नेगी तुम बुलवाओ * औ बरात को जाउ लिवाय ॥
जायके कहियो तुम आल्हा ते * अकिलो लरिका देउ पठाय ॥
देश हमारे यहे रीति है * आवै साथ नाहिं क्वउ शूर ॥
छलिकै लावो तुम लरिका को * औ खंदक में देउ डराय ॥
आल्हा अगुआ हैं बरात के * ओछी जाति बनाफर राय ॥
ब्याहु जो होइहैं कहुँ बेटीको * कोउ न पिये घड़ाको पानि ॥
इतनी सुनिकै लरिका चलिभै * चारो नेगी संग लिवाय ॥
दोनों पहुँचे जब बरात में * तहँ क्षत्रिन ते पूछन लाग ॥
कौन सो तम्बू है राजा को * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
तम्बू बतलायो काहु ने * तहँ पर दोनों पहुँचे जाय ॥
सोने सिंहासन जैचँद बैठे * तिनको झुकिके करी सलाम ॥
मोती जवाहिर बोलन लागे * हम बूँदी के राजकुमार ॥
हमहिं पठायो है राजा ने * औ यह कही बुंदेले राय ॥
देवालग्न बहुत नीकी है * अकिलो लरिका देयँ पढाय ॥
संग न भेजैं कोउ लरिका के * हमरे कुला यहै व्योहार ॥
बोले आल्हा तब लरिका ते * हमरे रीति यही चलि आय ॥
जैहे सहबोला लरिका सँग * औ नेगी सब जैहैं साथ ॥
नेग झगरि हैं वे मड़ये तर * हमरे बचन करो परमान ॥
भेष बनायो तब नेगिन को * ऊदन शूर लिये सजवाय ॥
काहुइ दीन्हों आसा बल्लम * काहुइ पंखा दौ पकराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मुरछल दै दीन्हों काहू को * काहुइ झंडी दई गहाय ॥
सजी पालकी तब लाखनि की * संगै ऊदन भये सवार ॥
चली पालकी तब लाखनि को * औ द्वारे पर पहुँची जाय ॥
शूर तीनसौ बूँदी वाले * सो पहिले ते दियो छिपाय ॥
बोले मोती तब लाखनि ते * अब हियँ छोरि धरो हथियार॥
नेगी भीतर जान न पैहैं * हमरे कुला यहै व्योहार ॥
बोले ऊदन तब मोती से * तुम घटि करौ हमारे साथ ॥
गंगा उठाई तब मोती ने * मनको भरम देउ बिसराय ॥
बात मानिके लाखनि ऊदन * अपनो छोरि धरे हथियार ॥
दोनों चलिभये तब भीतर को * फाटक बन्द दियो करवाय ॥
फिरिके मोती बोलन लागे * हमरे कुला यहै व्योहार ॥
पहिले भोजन करो महल में * पीछे भाँवरि दिहैं डराय ॥
बिछो गलीचा तहँ पलँगा पर * लाखनि ऊदन बैठे जाय ॥
थार सूबरन को आगे धरि * तिनमें भोजन दिये परसाय ॥
कौर उठायो जब दोनों ने * क्षत्रिन खैंचिलई तलवारि ॥
बोले ऊदन तब मोती ते * तुम घटि करी हमारे साथ ॥
छलिकै लायो हम दोनों को * झूठी गंगा लई उठाय ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी * नाहीं लेन दिये हथियार ॥
इत उत दोनों देखन लागे * ना कहुँ देखि परी हथियार ॥
पलँगा देखो एक महल में * ताकी पाटी लई निकार ॥
पाटिन मारु करो दोनों ने * बहुतक क्षत्री दिये गिराय ॥
मारि भगायो सब क्षत्रिन को * क्षत्री लै लै भगे परान ॥
यह गति देखी मोती सिंहने * अपनो खैंचिलई तलवारि ॥
जायके घेरो बघ ऊदन को * ऊदन पाटी दई चलाय ॥
खाली हाथ परो ऊदन को * मोतीसिंह ने दियो गिराय ॥
घैहा करिके तब ऊदन को * मोतीसिंह ने लियो बँधाय ॥
झुके जवाहिर तब लाखनि पर * लाखनि पाटी मारी आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खाली हाथ परो लाखनि को * औ झुकिपरे भूमि परजाय ॥
घैहा करिकै तब लाखनि को * तुरत जवाहिर लियो बँधाय ॥
लाखनि ऊदन दोनों बाँधिगे * राजे खबरि दई करवाय ॥
हुक्म दै दियो गंगाधर ने * चुंगल दहक देउ डरवाय ॥
मोती लैके गै दोनों को * चुंगल दहक माहिं डरवाय ॥
शिला धरि दई तब ऊभे पर * पहरा विकट दियो बैठारि ॥
देखि हाल यह मालिनचलिभइ * सतखंडा पर पहुँची जाय ॥
हाल बतायो सब बेटी को * औ मालिनियहकहीसुनाय ॥
ब्याहन आये लाखनि राना * आये संग उदयसिंह राय ॥
घैहा करिकै तिन दोनों को * औ ऊभे में दियो डराय ॥
यह नहिं चहियेथा राजाको * जो घटिकरीकनौजी साथ ॥
रूप दिये तिनको बिधना ने * मानहु रामलषण द्वय भाय ॥
यह सुनि सोची कुसुमा बेटी * थार सूबरन लियो मँगाय ॥
भोजन धरि कै एक थार में * जलको गडुआ लियो मँगाय ॥
रेशम रस्सा लियो साथ में * औ ऊभे पर पहुँची जाय ॥
आधि रातिके तब अमलामें * दरबानी को दियो इनाम ॥
जितने क्षत्री हैं पहरा पर * सबको मोहरैं दइ पकराय ॥
हाल बतैयो ना काहू को * आई यहँ पर राजकुमारि ॥
बेटी पहुँची जब ऊभे पर * बजुर पिहनियाँ दइ सरकाय ॥
रेशम रस्सा को लटकायो * औ यह कही कुसुमदे रानि ॥
निकसौ स्वामी तुम ऊभे ते * बजुर पिहनियाँ दइ सरकाय ॥
बोले लाखनि तब ऊभेते * रानी घटिहा पिता तुम्हार ॥
भैया तुम्हेर द्वय घटिहा हैं * गंगा करी हमारे साथ ॥
सब हथियार धराय द्वार पर * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
घैहा करिके हम दोनों को * दाहक माहिं दियो डरवाय ॥
तुम्हरे निकरे जो हम निकरैं * तो सब क्षत्री धर्म नशाय ॥
भोजन करि हैं ना ऊभे में * नहिं यह धर्म क्षत्रियनक्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हमको चाहौजो रानी तुम * आल्है खबरि देउ पहुँचाय ॥
इतनीसुनिके कुसुमा चलिभइ * सतखंडा पर पहुँची जाय ॥
भोर होत खन पाती लिखिके * सो मालिनिको दइ पकराय ॥
लैके डलिया मालिनि चलिभई * तामें पाती लई छिपाय ॥
मालिन पहुँची जब बरात में * आल्हा पूंछि पहूँची जाय ॥
पाती दीन्ही तब मालिन ने * आल्हा पाती बाँचन लाग ॥
बाँचिकै पाती आल्हा बोले * मालिन सुनो हमारी बात ॥
धीरज देउ जाय बेटी को * अबहीं कैदलिहैं छोड़वाय ॥
मालिनि चलिभइ तब बरातसे * औ बेटी पै पहुँची जाय ॥
कह्यो सँदेशा तब आल्हा को * बेटी धीर धरो मन माहिं ॥
आल्हा बोले नर ढेबा ते * लश्कर तुरत लेउ सजवाय ॥
घटिहा राजा है बूँदी को * झूठी गंगा लई उठाय ॥
लाखनि ऊदन को धोखादे * चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
इतनी सुनतै ढेबा चलि भै * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
बोलि नगरची को बीरा दे * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजो नगरा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथि चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
हाथी पचशावद सजवायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ मनोरथ त्यार करायो * तापर ढेबा भयो सवार ॥
मीरा सैयद बनरस वाले * घोड़ी सिंहानि पर असवार ॥
धनुआँ तेली लला तमोली * सोऊ साथ भये तैयार ॥
लश्कर चलिभये रणखेतन में * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
खबरि पहूँची गंगाधर पै * शिर पै फौज पहुँची आय ॥
मोति जवाहिरको बुलवायो * औ यह हुक्म दियोफरमाय ॥
जान न पावैकोउ कनउज को * सबकी कटा देउ करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनतै दोनों चलि भये ❀ औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
हुक्म दै दियो तब लश्कर में ❀ जल्दी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा तब बूँदी में ❀ लश्कर साजि भयो तैयार ॥
मोति जवाहिर दोनों सजिगे ❀ अपने घोड़न भये सवार ॥
लश्कर पहुँचा जब खेतन में ❀ मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो मोती ने ❀ औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
कही हमारी आल्हा मानो ❀ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
बोले आल्हा तब मोती से ❀ तुम छल करो हमारे साथ ॥
कटा करिदिहौं मैं लश्कर को ❀ औ बूँदीको लिहौं लुटाय ॥
लाखनि ऊदन छलिकै लैगे ❀ औ ऊभे में दियो डराय ॥
भलो आपनो जो तुम चाहो ❀ सातो भाँवरि देउ डराय ॥
इतनी सुनतै मोती बोले ❀ आल्हा बोलो बात सम्हारि ॥
धोखे न रहियो तुम दिल्ली के ❀ जहँ ब्रह्माको करो विवाह ॥
नाम जो लेहौ तुम भौरिन को ❀ मुखमें धाँसि दिहों तलवारि ॥
इतनी सुनतै आल्हा बोले ❀ क्या कमबख्ती लगी तुम्हारि ॥
हटिजा कायर तू समुहें ते ❀ घटिहा बंश बुँदेले क्यार ॥
धोखे न रहियो कोहु कायर के ❀ नाहीं परो मर्द ते काम ॥
सिगरी बूँदी मैं लुटवैहौं ❀ कारे पाखें दिहौं कराय ॥
इतनी सुनतै मोती जरिगे ❀ तुरतै गोलंदाज बुलाय ॥
हुक्म दै दियो मोती सिंहने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
हुक्म पायकै मुझे खलासी ❀ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लो ❀ सविता रहे धुंधि में छाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में ❀ गोला चले दनाक दनाक ॥
ओला के सम गोला बरसै ❀ गोली मघा बूंद झरिलाय ॥
तीरन मारैं जे कमनैता ❀ गोलिन मारैं बरकंदाज ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरन होइ जायँ ॥
लागे गोला ज्याहि हाथी के ❀ मानों च्वार सेंधिकै जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गोली लागे ज्यहि घोड़ा के ❀ चारौं सुम्भ गर्द होइ जाय ॥
जौने ऊँटके गोला लागे ❀ सो गिरि परे चकत्ता खाय ॥
गोला लागै ज्याहि क्षत्री के ❀ सो गिरि परे भूमि भहराय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागे ❀ तिनकी त्वचा सरग मँड़राय ॥
बंबके गोला जिनके लागे ❀ तिनके हाड़ मास छुटि जाय ॥
छोटी गोली जिनके लागे ❀ मानौ गिरह कबूतर खाय ॥
चुके मसाला जब तोपन के ❀ तोपैं छाँड़ि दई तत्काल ॥
खैंचि शिरोही ली क्षत्रिन ने ❀ खटखट चलन लगी तलवार ॥
बोले आल्हा बढ़ि सैयद ते ❀ घटिहा बंश बुँदेले क्यार ॥
लाखनि ऊदन को छलिलै गे ❀ चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
इतनी सुनते सैयद झपटे ❀ लैके खुदा नबी को नाम ॥
धनुआँ तेली लला तमोली ❀ तिनहूँ खैंचि लियो तलवारि ॥
दोनों फौजें संगम होइ गईं ❀ क्षत्रिन मारु मारु रटलागि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै बिलायति क्यार ॥
चटकैं तेगा बर्दवान के ❀ कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
हौदा के सँग हौदा मिलिगै ❀ हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
चलै शिरोही सात कोस लौ ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
पैदल गिरिगै पैग पैग पर ❀ उनके दुइदुइ पैग असवार ॥
हाथी डारे बिसे बिसे पर ❀ छोटे पर्वत की उनहार ॥
एक लाख जूझे बूँदी के ❀ रण में बही रक्तकी धार ॥
तीनि लाख जूझे कनउज के ❀ ऐसी कठिन चली तलवार ॥
आधी नदी में लोहू बह ❀ लोथिन ऊपर लोथि दिखाय ॥
मारत मारत दोउ दल थकिगै ❀ संझाकाल रह्यो नियराय ॥
बन्द लड़ाई भइ दोनों दल ❀ क्षत्रिन छोरि धरे हथियार ॥
जितने बेहा जीवे लायक ❀ सो आल्हा ने लिये उठाय ॥
लश्कर घटि गये कनवजिया को ❀ आल्हा सोचि २ रहि जाय ॥
बड़े लड़ैया बूँदी वाले ❀ रणमें कठिन करी तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पहुँचे आल्हा सोचि समझ के ❀ पूजन करन अम्बिका क्यार ॥
होम करायो जगदम्बा को ❀ बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
ब्याहु न होइहैं जो लाखनि को ❀ तो जग होइहैं हँसी हमारि ॥
आजु आपदा हमपर परिगे ❀ अब गाढ़े में आवौ काम ॥
बोली आभा तब देवी को ❀ आल्हा सुनो हमारी बात ॥
पाती भेजो तुम सिरसा को ❀ औ महुबे को देउ पठाय ॥
मलिखे ब्रह्मा दोनों ऐहैं ❀ तब लाखनिको होइहैं ब्याह ॥
चरण लागिके तब देवी के ❀ आल्हा लश्कर पहुँचे आय ॥
पाती लिखी एक मलिखे को ❀ दूजी ब्रह्मै लिखी हवाल ॥
लाखनि राना ब्याहन आये ❀ सो बूँदी में लाये बरात ॥
गंगा करिके लाखनि ऊदन ❀ इन दोनों को गये लेवाय ॥
धोखा दैके गंगाधर ने ❀ चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
जटा कराय दई लश्कर को ❀ अब गाढ़े में आवो काम ॥
बड़े लड़ैया बूँदी वाले ❀ तिनसे कछू न पार बसाय ॥
जल्दी लश्कर लै आवो तुम ❀ तब लाखनिको होय विवाह ॥
तुमहिं बुलायो राजा जैचँद ❀ सो संकट में होउ सहाय ॥
दोनों पाती लिखि आल्हा ने ❀ औ धावन को दई गहाय ॥
दीन्हों पाती यक ब्रह्मा को ❀ दुसरी देउ बीर मलिखान ॥
धावन चलिभय तब पाती लै ❀ गढ़ महुबे में पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी थी ब्रह्मा की ❀ धावन उतरि परो अरगाय ॥
करी बन्दगी ब्रह्मानँद को ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
पढ़ी हकीकति जब ब्रह्मा ने ❀ तब धावन ते कही सुनाय ॥
माता मल्हना बहुत मनायो ❀ तुम नहिं जाउ बनाफर राय ॥
हटको मानो ना माता को ❀ औ कनउज को गये रिसाय ॥
जो कछु कीन्हा सो भरिपायो ❀ अब तहँ हमरी जाय बलाय ॥
चलो साँड़िया तब सिरसा को ❀ पहुँचो जहाँ बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी नर मलिखे को ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खोलिके पाती मलिखे बाँची ❀ तुरतै पाती लई दबाय ॥
सोचत मनमें मलिखे चलिभे ❀ पहुँचे रंग महल में जाय ॥
आवत देखो जब मलिखे को ❀ तब रानी ने कही सुनाय ॥
कौन सोचमें तुम स्वामी हौ ❀ काहे बदन गयो मुरझाय ॥
हाल बतायदेउ साँचो तुम ❀ बालम पैयाँ परों तुम्हारि ॥
बोले मलिखे गज मोतिन ते ❀ रानी कछू कह्यो ना जाय ॥
लाखनि ब्याहन गै बूँदी को ❀ साथै गये उदयसिंह राय ॥
लाखनि ऊदन को गंगा करि ❀ बूँदी वाले गये लिवाय ॥
घायल करिके तहँ दोनों को ❀ चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
कटा कराय दई लश्कर को ❀ आल्हा पाती दई पठाय ॥
हमहिं बुलायो है बूँदी में ❀ की असने में आवो काम ॥
याही दिनको हम हटको है ❀ औ धूरे पर रोके जाय ॥
बहुत मनायो हम आल्हा को ❀ मानो नाहिं हमारी बात ॥
कही हमारी उन मानी ना ❀ अब मलिखेकी जाय बलाय ॥
यह सुनि बोली गजमोतिनतब ❀ स्वामी सुनो हमारी बात ॥
तुम जब ब्याहन गै हमरे घर ❀ तबकी याद करो सब बात ॥
बाप हमारे ने दाहक में ❀ तुमको बाँधि दियो डरवाय ॥
तुमहिं निकारी तब ऊदन ने ❀ सो क्यों भूलिगयो सब बात ॥
जो कहुँ ऊदन मारे जैहैं ❀ तो जग होइहैं हँसी तुम्हार ॥
पीछे पछितैहौ स्वामी तुम ❀ सोतुम समुझिलेउ मनमाहिं ॥
जल्दी जावो तुम बूँदी को ❀ इतनी मानो कही हमारि ॥
यह मन भायगई मलिखे को ❀ बोले तुरत बीर मलिखान ॥
जो कछु कहिहौ सोई करि हैं ❀ रानी मानी बात तुम्हारि ॥
इतनी कहिकै मलिखे चलिभये ❀ औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
बोलि नगरची को बीरा दै ❀ सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजे नगारा हमरे दल में ❀ लश्कर जल्द होय तैयार ॥
डंका बाजो तब सिरसा में ❀ छत्री सबै भये हुशियार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पहिले डंका में जिन बंदी ❀ दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन ❀ छत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथि चढ़ैया हाथी चढ़िगै ❀ बाँके घोड़न के असवार ॥
त्यार कराय कबुतरी घोड़ी ❀ तापर चढ़े वीर मलिखान ॥
खुनखुन कोरी मन्ना गूजर ❀ मदन गड़ेरिया भयो सवार ॥
तीनों शूर चले मलिखे सँग ❀ जो मरिबे को नाहिं डेराय ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ पहुँचे नगर महोबे जाय ॥
डेरा डारे मदनताल पर ❀ आगे बढ़े बीर मलिखान ॥
जहाँ कचहरी ब्रह्मानँद की ❀ पहुँचे जाय बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी ब्रह्मानँद को ❀ ब्रह्मा चौकी दई डराय ॥
बोले ब्रह्मा तब मलिखे ते ❀ अपनी कुशल देउ बतलाय ॥
कौन सोच है तुम्हरे जिय में ❀ काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
बोले मलिखे तब ब्रह्मा ते ❀ सिरसा कुशलक्षेम सब भाँति ॥
राज करत हौं मैं सिरसा में ❀ है यह सब परताप तुम्हार ॥
काज हमारो कछु अटको नहिं ❀ पै यक अर्ज सुनो मनलाय ॥
लाखनि ब्याहन गै बूँदी में ❀ सँगै गये उदैसिंह राय ॥
छलिके लैगे बूँदी वाले ❀ लाखनि ऊदन संग लिवाय ॥
घायल करिके तिन दोनों को ❀ चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
कटा कराय दई लश्कर की ❀ हमको पाती दई पठाय ॥
सो हम त्यार भये बूँदी को ❀ तुमहूँ चलो हमारे साथ ॥
असमै परिगयो है आल्हा को ❀ सो गाढ़े में आवौ काम ॥
जो नहिं चलिहौ तुम हमरे सँग ❀ तुमको हँसिहैं सकल जहान ॥
इतनी सुनतै तब ब्रह्मानँद ❀ तुरतै साथ भये तैयार ॥
तुरत नगरची को बुलवायो ❀ चीरा कलँगी दियो इनाम ॥
डंका बाजा गढ़ महुबे में ❀ लश्कर साजि भयो तैयार ॥
खबरि पायके मल्हना रानी ❀ नर मलिखेको लियो बुलाय ॥
आवत देखो जब मलिखे को ❀ तब मल्हना ने कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

नित उठि हेरौं बाट तुम्हारी ❋ आवत आजु बीर मलिखान ॥
सुधि बिसराय दई हमरो तुम ❋ अब कहँ त्यारी दई कराय ॥
हाथ जोरिके मलिखे बोले ❋ माता सुनो हमारी बात ॥
लाखनि ब्याहन गै बूँदी को ❋ सँगै गये उदैसिंह राय ॥
बूँदी वाले छलिकै लै गये ❋ चुंगल दहक दियो डखाय ॥
धैया होइगै लाखनि ऊदन ❋ ऊभे परे मूर्छा खाय ॥
पाती भेजी राजा जैचंद ❋ लिखके आल्हा दई पठाय ॥
मलिखे ब्रह्मा दोनों आवैं ❋ तो बूँदी में होय विवाह ॥
भारी संकट है आल्हा पर ❋ हम बूँदी को भये तयार ॥
संग हमारे ब्रह्मा जैहैं ❋ माता हुक्म देउ फरमाय ॥
इतनी सुनतै मल्हना बोली ❋ अबहीं जाउ लड़ैते लाल ॥
ब्याह करावो तुम लाखनि को ❋ औ ऊदनको लेउ छोड़ाय ॥
चरण लागिके रनि मल्हना के ❋ मलिखे कूच दियो करवाय ॥
बोले मलिखे ब्रह्मानँद ते ❋ अबना राखो देर लगाय ॥
कूच कराय देव जल्दी ते ❋ गुजरै घरी घरी पर वार ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मा भये सवार ॥
करि तैयार कबुतरी घोड़ी ❋ तुरतै चढ़े बीर मालखान ॥
कूच कराय दियो महुबे ते ❋ औ बूँदी की पकरी राह ॥
सात रोज का धावा करिके ❋ बूँदी शहर गये नियराय ॥

❋ इति लाखनिराना का विवाह समाप्तः ❋

—:❋❋❋❋❋:—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

अथ मलिखान और ब्रह्मानँद का

❀ बूँदी पहुँचना—आल्हा ❀

सुमिरन करिके नारायण को ❀ लै बजरंग बली को नाम ॥
लिखौं लड़ाई अब बूँदी को ❀ होउ सहाय राम घनश्याम ॥
लाखनि ऊदनि बूँदी पहुँचे ❀ अब आल्हा को सुनो हवाल ॥
बूँदी रहि गइ सात कोस जब ❀ मलिखे डेरा दियो डराय ॥
बोले आल्हा तब जैचँद ते ❀ तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
लश्कर थोरा है कनउज को ❀ आये नाहिं बीर मलिखान ॥
अब तुम लौटि चलो कनउजको ❀ लावैं साथ बीर मलिखान ॥
संगै लेहैं ब्रह्मानँद को ❀ तब लाखनिको होय विवाह ॥
बोले जैचँद तब आल्हा ते ❀ अबहीं कूच देउ करवाय ॥
अकिले पैदल क्या लरिहैं अब ❀ ताते अबहीं करौ पयान ॥
हुक्म दे दियो तब आल्हा ने ❀ लश्कर चलै कनौजी क्यार ॥
जितने घैहा हैं लश्कर में ❀ सो डोलिन में लिये बिठाय ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ औ कनउज की पकरी राह ॥
लश्कर देखो जब मलिखे ने ❀ यक हरकारा लियो बुलाय ॥
लावौ खबरि जाय अबहीं तुम ❀ आवत फौज बुँदेले क्यार ॥
लैकै तोपैं अष्टधातु की ❀ सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
लश्कर देखो जब आल्हा ने ❀ तब ढेबा ते कही सुनाय ॥
आगे लश्कर है बूँदी को ❀ जल्दी मुर्चा देउ लगाय ॥
इतनी सुनतै नरढेबा ने ❀ मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की ❀ सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
तौलोधावन दाखिल होइ गयो ❀ धावन देखि महोबे क्यार ॥
बत्ती धरिबे को बाकी रहि ❀ ढेबा बन्द दियो करवाय ॥
धावन पहुँचि गयो आल्हा पै ❀ औ आल्हा को करी सलाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खबरि बताई ब्रह्मानँद की ❀ आये साथ बीर मलिखान ॥
सुनी खबरि जब ब्रह्मा मलिखे ❀ लश्कर फिरो कनौजी क्यार ॥
लियो सजाय कबुतरी घोड़ी ❀ तुरते तापर भये असवार ॥
घोड़ी हरनागर सजवायो ❀ ब्रह्मा फाँदि भये असवार ॥
दोनों पहुँचे तुरत जहाँ पर ❀ आल्हा और कनौजी राय ॥
करी बन्दगी तिन दोनों को ❀ आल्हा छाती लियो लगाय ॥
मोह आगयो तब आल्हा को ❀ नैनन बहे नीर की धार ॥
बोले मलिखे तब आल्हा ते ❀ दादा धीर धरो मन माहिं ॥
मारि शिरोहिन चहला करिहौं ❀ सातौ भाँवर लिहौं डराय ॥
बोले मलिखे तब ढेबा ते ❀ भैया सुनो हमारी बात ॥
उत्तर आप जाय बूँदी के ❀ अपनो मुर्चा देउ लगाय ॥
जबहीं राजा करै चढ़ाई ❀ पाछे लश्कर दियो हटाय ॥
जै हैं दक्खिन हम बूँदी के ❀ औ फाटकको दिहैं गिराय ॥
ढेबा चलि भये उत्तर पाटी ❀ घेरिके मुर्चा दियो लगाय ॥
पाँच कोस को फेरु खायके ❀ दक्खिन गये बीर मलिखान ॥
अपने मुर्चा पर ढेबा ने ❀ सिगरी तोपैं दई लगाय ॥
लै बारूद डराय सबन में ❀ ऊपर गोला दिये डराय ॥
बत्ती दै दइ सब तोपन में ❀ धुँअना रह्यो सरग मँड़राय ॥
भयो दनाका जब तोपन को ❀ गंगाधर ने सुनी अवाज ॥
मोती जवाहिर को बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दी ते ❀ सबको कटा देउ करवाय ॥
मोती जवाहिर दोनों चलि भये ❀ अपनो डंका दियो बजाय ॥
लश्कर सजन लगो बूंदीको ❀ छत्री साजि भये तैयार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ मोती जवाहिर की लड़ाई ॥

* आल्हा *

सुमिरन करिके नारायण को * औ गणपतिके चरन मनाय॥
मोती जवाहिर केरि लड़ाई * लिखिहौं सुमिरि शारदा माय॥
मोती जवाहिर दोनों लरिका * अपने घोड़न भये सवार ॥
चली सवारी तब दोनों की * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
जाय पहूँचे जब खेतन में * मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
अररर गोला छूटन लागे * चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय॥
जबही गोला छूटन लागे * ढेबा मुर्चा लियो हटाय ॥
मुर्चा लगवायो पाछे हटि * लश्कर बढ़ो बुँदेले क्यार ॥
बढ़िगे आगे बूँदी वाले * फिरिके ढेबा हटो पिछार ॥
हटैं पिछारू ज्यों २ ढेबा * त्यों त्यों बढ़े बुँदेली फौज ॥
सात कोश पीछेको हटिके * ढेबा मुर्चा दियो लगाय ॥
दक्खिन पाटी मलिखे घेरी * औ तोपन को दियो लगाय॥
मारे गोला दरवाजे पर * तुरतै फाटक दियो गिराय ॥
धावा करिकै बीच किलामें * पहुँचे जाय बीर मलिखान ॥
आई रानी रंग महल ते * औ मलिखे ते लगी बतान ॥
हाथ चलैयो ना तिरिया पर * तुम समरत्थ बनाफर राय ॥
बड़े लड़ैया हो महुबे के * तुम्हरो जग जाहिर तलवारि॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * धर्मकि माता लगौ हमार ॥
घटिहा राजा बूँदी वाला * जो घटि करी हमारे साथ ॥
छलिके लाये लाखनि ऊदन * तिनको ऊभे दियो डराय ॥
कौन से ऊभे में दोनों हैं * सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
बोली रानी तब मलिखे ते * महलके नीचे परत दिखाय ॥
ताही खंदक में दोनों हैं * तिनको अबहिं लेउ निकराय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मलिखे पहुँचे तब दाहक पर * बजुर पहनियाँ दई हटवाय ॥
जितने बीर रहे पहरा पर * सबकी कटा दई करवाय ॥
बोले मलिखे बघ ऊदन ते * निकसो तुरत उदैसिंह राय ॥
हम चढ़िआये हैं सिरसा ते * संगै ब्रह्मा राज कुमार ॥
इतनी सुनतै ऊदनि बोले * हमरे लगी करेजे घाव ॥
कैसे निकसैं हम चुंगल ते * दादा सुनो बीर मलिखान ॥
बोले मलिखे तब ऊदन ते * भैया सुरति करो मन माहिं ॥
हमको व्याहन गै पथरी गढ़ * हम जब परे दहक में जाय ॥
तुम जब पहुँचे थे दाहक पर * हमको तहाँ पुकारो जाय ॥
तुरतै निकसे हम ऊभे ते * सो सुधि करो लहुरवा भाय ॥
बाना राखो रजपूती का * क्या बलघटा तुम्हारा आज ॥
इतनी सुनतै बात लागि गइ * मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ॥
तड़पि के ऊदन बाहर आये * औ मलिखे को करी सलाम॥
चरण लागिकै ब्रह्मानँद के * ऊदन माथे लिये लगाय ॥
बोले मलिखे फिर लाखनि ते * निकसौ बेगि कनौजी राय ॥
यहसुनि लाखनि सोचन लागे * बहुतै लागी घाव हमार ॥
कसक करेजै पर भारी है * पसुरी कसकि २ रहिजाय ॥
उजरुजो करिहैं हम हियनापर * हँसिहैं हमहिं बीर मलिखान ॥
तड़पिके निकसे लाखनिराना * लै बजरंग बली को नाम ॥
तुरत पालकी तब मँगवाई * लाखनि ऊदन को बैठाय ॥
संग पालकी लइ दोनों की * लश्कर गये बीर मलिखान ॥
घाव सिलाये तिन दोनों के * मलहम पट्टी दई बँधाय ॥
फौज बढ़ाय दियो आगे को * हाहाकारी बीतन लागि ॥
ऊत्तर घेरो ढेबा बहादुर * पश्चिम सैयद लियो घिराय ॥
पूरब बढ़िगै हैं ब्रह्मानँद * दक्षिण ओर बीर मलिखान ॥
बीचमें घिरिगे बूंदीवाले * जूझन लगे सुघरुआ ज्वान ॥
पाँच कोस के चौफेरा में * चारो ओर चले तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बड़े लड़ैया महुबे वाले * सबके मारु २ रट लागि ॥
एक पहर भरि चली शिरोही * तहँ बहि चली रक्तकी धारि ॥
तीनि लाख क्षत्री बूंदी के * महुबे वारेन दिये गिराय ॥
भगे सिपाही बूँदी वाले * अपने डारि २ हथियार ॥
यह गति देखि जवाहिर मोती * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
मोतीसिंह पहुँचे ब्रह्मा पै * औ ब्रह्माते कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर * यहकहि लीन्ही लालकमान ॥
तीर चलायो ब्रह्मानँद पर * ब्रह्मा दीन्ही बाग मरोरि ॥
बायेंते घोड़ा दहिने होइगयो * कैबर निकरि गयो वापार ॥
खैंचि शिरोही तब मोतीमल * ब्रह्मानँद पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दियो ब्रह्माने * उनकी टूटि गई तलवारि ॥
आगे बढ़िगे ब्रह्मानँद तब * औ मोतीको दियो गिराय ॥
तुरतै बाँधि लियो मोती को * देखो हाल जवाहिर सिंह ॥
आगे बढ़िकै गै ब्रह्मा पै * समुहें आय गये मलिखान ॥
खैंचि शिरोही लई जवाहिर * सो मलिखेपर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाई तब मलिखे ने * उनकी टूटि शिरोही जाय ॥
ढालकि औझड़ मलिखे मारी * औ धरती पर दियो गिराय ॥
बाँधि जवाहिर सिंह मलिखेने * अपने लश्कर दिये पठाय ॥
सुनो हाल जब गंगाधर ने * दोनों लड़िका बँधे हमार ॥
मन घबराने बूँदी वाले * अबधौं काह करैं करतार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ गंगाधरकी लड़ाई आल्हा ।

सुमिरन करिके नारायण को * औ गणपतिके चरण मनाय ॥
लिखौं लड़ाई गंगाधर की * सारद मोपर होउ सहाय ॥
धीरज धरिके गंगाधर ने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
समुहें पहुँचे जब मलिखे के * तब मलिखे ने कही सुनाय ॥
छलिके बुलवायो लरिका तुम * औ ऊमे में दियो डराय ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहींथी * जो छलकरी हमारे साथ ॥
अबहूँ तुम्हरो कछु बिगरी ना * सातौ भाँवर देउ डराय ॥
ब्याह किये बिनहम जैहैं ना * चाहे प्राण रहे की जाय ॥
इतनी सुनते गंगाधर ने * अपने जादू लिये उठाय ॥
तकि तकि जादू राजामारे * सो मलिखे पर ना अनियाय ॥
बोले मलिखे गंगाधर ते * तुम सुनिलेउ बुँदेले राय ॥
पुष्य नछत्तर में जन्मा हूँ * बरहें परो बृहस्पति आय ॥
तुम्हरे जादूकी क्या गिनती * शंका हमहिं कालकी नाहिं ॥
बोले मलिखे सुनि आल्हा ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
तुम्हरी बरनी गंगाधरकी * अबहीं लेउ जँजीरन बाँधि ॥
गजै बढ़ायो तब आल्हा ने * गंगाधरको दइ ललकार ॥
यातौ ब्याह करो बेटी को * या तुम आय लड़ो मैदान ॥
सुनतै भाला लै गंगाधर * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
चोट बचाय लई आल्हा ने * भाला गिरो धरनिमें जाय ॥
मनमें सोचे तब गंगाधर * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगये * अपनो खैंचिलई तलवारि ॥
सोधरि धमकी सुनिआल्हा पर * छतुरी टूक टूक होइजाय ॥
डंडा कटिगै अम्बारी के * आल्हे राखि लियो भगवान ॥
तड़पे आल्हा तब हौदा ते * गंगाधर को लियो बँधाय ॥
तब गंगाधर बोलन लागे * सुनिल्यो देव कुँवरिके लाल ॥
हौ सब लायक महुबे वाले * तुम्हरो जग जाहिर तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऐसे छत्री महुबे प्रगटे * क्यों ना राज करैं परिमाल ॥
कैदछाँड़िदेउ तुम लरिकन को * अबहीं भाँवरि दिहौं डराय ॥
बात मानि के गंगा धर की * मलिखे कैद दियो छोड़वाय ॥
लौटो लश्कर महुबे वालो * खेतन डेरा दियो डराय ॥
करी तयारी तब गंगा धर * मड़वा तुरते दियो गड़ाय ॥
भयो बोलौआ तब पंडित को * पंडित तुरते पहुँचे आय ॥
चौक पुराय दियो मोतिन की * सोने कलशा दियो धराय ॥
मोती जवाहिर को बुलवायो * औ यह कही बुन्देले राय ॥
शूर बुलाय लेव जल्दी ते * सो कोठरिन में देउ छिपाय ॥
जबहीं आवैं महुबे वाले * सबको कटा देउ करवाय ॥
व्याह करैं हैं जो महुबे के * तो जग होइ हैं हँसी हमार ॥
दुइ हजार छत्री बुलवाने * सो महलन में दियो छिपाय ॥
मोती चलिभे तब बूँदी ते * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी तहँ जैचंद को * औ राजा ते कही सुनाय ॥
सायति नीकी है लगिन की * जल्दी लरिकै देउ पठाय ॥
आइ पालकी तब लाखनि की * तापर लाखनि भयो सवार ॥
आल्हा सैयद मलिखे ढेबा * पचयें ब्रह्मा भये तयार ॥
चली पालकी तब लाखनि की * दरवाजे पर पहुँची जाय ॥
चारौ नेगी संगै पहुँचे * लरिकै मड़ये लियो बुलाय ॥
चन्दन चौकी लाखनि बैठे * गौरि गणेश दियो पुजवाय ॥
कुसमा बेटी को बुलवायो * चन्दन पाटा दियो बिठाय ॥
हुक्म दैदियो गंगाधर ने * सबको कटा देउ करवाय ॥
छत्री निकरे तब कोठरिन ते * अपनी खैंचि २ तलवारि ॥
उठे महोबिया तब जल्दी ते * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
जितने बीर रहे बूँदी के * सबको काटि कियो खरिहान ॥
दोनों लड़िका गंगाधर को * कन्यादान दियो करवाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
नेग जोग सबही करवाये * गंगाधर ते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बिदा करो तुम अब बेटीको * तब गंगाधर लगे बतान ॥
सालके भीतर गौना दै हैं * हमरे कुलका यह ब्योहार ॥
बोली रानी गंगाधर की * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * जिनके बाट परी तलवारि ॥
लड़े न जितिहौ इन लरिकन ते * ताते भरम देव बिसराय ॥
हँसी खुशीते इनहिं पठावो * दाइज देउ बुँदेले राय ॥
बोले गंगाधर रानी ते * रानी मानी बात तुम्हारि ॥
सवालाख को लहर पटोरा * अस्सी मोहर लई मँगाय ॥
सो बहँडोर धरौ राजा ने * औलाखनिको लियो बुलाय ॥
फिरि लहकौरि खवाय प्रेमते * मोहन माला दई पहिराय ॥
द्वारो रोको जब सरहज ने * लाखनि हार दियो पहिराय ॥
रूप देखिकै उन लरिकन को * [illegible] मोहि २ रहिजायँ ॥
धनि २ कहिये इनकी माता * [illegible] कोखिलियो अवतार॥
हँसी खुशी ते दायज दैके * कीन्हो बिदा बुँदेले राय ॥
चली पालकी तब द्वारे ते * औ लश्कर में पहुँची जाय ॥
कूँच करायो तब बूँदी ते * औ कनउज की पकरी राह ॥
बारह दिनकी मंजिल करि कै * पहुँचे घाट कालपी जाय ॥
मलिखे ब्रह्मा अज्ञा लैके * गढ़ महुबे की पकरी राह ॥
आइ बरायत जब कनउज में * महलन खबरि दई करवाय ॥
करी तयारी रनि तिलका ने * सखियाँ करैं मंगला चार ॥
आइ पालकी दरवाजे पर * परिछन करी तिलकदे रानि ॥
भीतर पहुँचे लाखनि राना * दान दक्षिणा दियो बँटाय ॥
दगी सलामी गढ़ कनउज में * शोभा कछु कही ना जाय ॥
ऐसे ब्याह भये लाखनि को * सोहम लिखिके दियो सुनाय॥
कहौं लड़ाई अब गांजर की * यारो सुनियो कान लगाय ॥
समय समय पर आल्हा गावो * नित उठि लेउ नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * सीताराम पयार धरिध्यान ॥

इति बूंदी कामरूपदेश (बंगाला) की लड़ाई लाखनिराना का ब्याह समाप्त।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ गाँजर की लड़ाई।

॥ ऊदन बिजय ॥

—※※—

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहें गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥

॥ आल्हा ॥

सुमिरन करिके नारायण को ※ औ गणपति के चरण मनाय॥
लिखौं लड़ाई अब गाँजर की ※ शारद मोको होउ सहाय ॥
सिंहासन जैचन्द विराजैं ※ भारी लागि रही दरबार ॥
ऊपर ढुरै चौंर राजा के ※ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
बोले मंत्री महाराज ते ※ तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
अटको पैसा बहु गाँजर में ※ ताको करि हैं कौन उपाय ॥
यह सुनि सोचे राजा जैचँद ※ औायक कलशलियोमँगवाय ॥
सो धरवाय दिवो बंगला में ※ तापर बीरा दियो धराय ॥
कौन शूरमा है कनउज में ※ जो गाँजर पर पान चबाय ॥
पैसा अटको जो गाँजर में ※ ताको तुरत लेय भरवाय ॥
भारी खिलत दिहैं ताको हम ※ करिहैं माफ लूटिको माल ॥
पहर एक बीरा को होगयो ※ कोऊ पान चबावै नाहिं ॥
तड़पे ऊदन तब बँगला में ※ औ बीराको लियो उठाय ॥
पान चबाय लियो गाँजर पै ※ औ जैचँदते कही सुनाय ॥
ठढ़े पैसा हम भरवै हैं ※ गाँजर गर्द दिहैं करवाय ॥
यह कहि चलिभै ऊदन ठाकुर ※ औ लाखनि पै पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदन तब लाखनि ते ※ जल्दी फौज लेउ सजवाय ॥
बीरा चाभो हम गाँजर पर ※ ठढ़े पैसा लिहैं भराय ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना ※ लश्कर डंका दियो बजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

फौज सजाय लई कनउज की * भारी हुक्म कनौजी क्यार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
पैदल सजिगे सब लश्कर के * अपने बाँधि सबै हथियार ॥
भूरी हथिनी तब सजवाई * तापर लाखनि भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो * ऊदन फाँदि भये असवार ॥
इन्दल चढ़िगे हँसामनि पर * ढेवा मनोरथा पर असवार ॥
दस हजार हाथी सजवाये * सजिगये तीनि लाखअसवार ॥
चारि लाख पैदल सजवाये * कूचको डंका दियो बजाय ॥
साले आल्हा के आये थे * जोगा भोगा जिनको नाम ॥
सोऊ त्यार भये गाँजर को * अपने बाँधि लिये हथियार ॥
घोड़ा पपिहा त्यार करायो * तापर जोगा भये सवार ॥
सज्जा घोड़ा को सजवायो * तापर भोगा भयो सवार ॥
लश्कर चलिभयो गढ़कनउजते * कूचको डंका दियो बजाय ॥
मारू बाजा बाजन लागे * क्षत्री बीररूप होइजायँ ॥
मंजिल मंजिल के चलिबे में * गोरख पुर में पहुँचे जाय ॥
पाँच कोस बिरियागढ़ रहिगयो * अपने डेरा दिये डराय ॥
तम्बू तनिगे तब ऊँचे पर * औ खाले में लगी बजार ॥
हौदा उतरि गयो हाथिन के * घोड़न जीन दिये उतराय ॥
फेटैं छुटिगइं सब क्षत्रिन की * सबने छोरि धरे हथियार ॥
तीनि दिना होइगे धूरे पर * मनमें ऊदन कियो बिचार ॥
पाती भेजैं अब बिरिया गढ़ * यह सुनि कलमदान लै हाथ ॥
सिद्धि श्रीनारायण लिखि के * ता पीछे ते लिखी जोहार ॥
लिखो हाल तब बघऊदनि ने * हमेर बचन करो परमान ॥
तुम तहसील करी गाँजर की * औ जैचँदको दियो न दाम ॥
बारह बरस क्यार पैसा है * तुम ना दीन्ही एक छदाम ॥
हमहिं पठायो राजा जैचँद * लाखनि राना हमरे साथ ॥
हम हैं क्षत्री गढ़ मढ़बे के * औ ऊदन है नाम हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पैसा भेजिदेउ जल्दी तुम ❀ इतनी मानौ कही हमारि ॥
जो नहिं इच्छा होय देनकी ❀ तो तुम आय लड़ो मैदान ॥
चिट्ठी लिखिके यह ऊदन ने ❀ हरकारा को दइ पकराय ॥
चलिभयो धावन तब लश्कर ते ❀ औ बिरियागढ़ पहुँचो जाय ॥
हरिसिंह बिरसिंह बँगला बैठे ❀ धावन करी बन्दगी जाय ॥
पाती दैदई बघऊदन की ❀ सो पाती लै बाँचन लाग ॥
पढ़ी हकीकति जब पाती को ❀ गुस्सा गई देह में छाय ॥
बोलि नगरची को बीरा दै ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा जब लश्कर में ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले नगारा में जिन बन्दी ❀ दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे नगारा के बाजत खन ❀ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथि चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न के असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपें अष्टधातु की ❀ सो आगे कौ दई बढ़ाय ॥
कूचको डंका तब बजवायो ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में ❀ पहुँचो फौज खेत में जाय ॥
यक हरकारा बदलाति आयो ❀ औ ऊदनते कह्यो हवाल ॥
लश्कर आयो बिरियागढ़ को ❀ सो तुम खबरदार होइजाव ॥
सुनी खबरि जब यह ऊदन ने ❀ तुरतै डंका दौ बजवाय ॥
चोब नगारा के बाजत खन ❀ क्षत्रिन बाँधि लिये हथियार ॥
सजिगयो लश्कर कनउजवालो ❀ तुरतै कूच दियो करवाय ॥
आधकोस जब लश्कर रहिगयो ❀ हरिसिंह हाथी दियो बढ़ाय ॥
आगे बढ़िके हरिसिंह बोले ❀ क्यहिं बिरियागढ़ घेरो आय ॥
क्यहि की माता नाहर जायो ❀ सो समुहें होय देय जवाब ॥
बोले ऊदन तब आगे बढ़ि ❀ औ हरिसिंह ते कही सुनाय ॥
हमरो माता नाहर जायो ❀ हमने घेरो गाँव तुम्हार ॥
हमहिं पठायो राजा जैचँद ❀ औ ऊदन है नाम हमार ॥
बारह बरस क्यार पैसा है ❀ सो तुम दाम देउ भरवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

नीके देहौ नीके लेहौं ❀ नाहीं कठिन करौं संग्राम ॥
यहसुनि हरिसिंह बोलन लागे ❀ औ ऊदनको दियो जवाब ॥
चढ़ि चढ़ि आये राजा जैचँद ❀ हमना दीन्हीं एक छदाम ॥
धोखे रहियो ना काहू के ❀ सबके शीश लिहौं कटवाय ॥
भागे बचिहौना कनउज लौं ❀ ताते लौट कनौजै जाउ ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने ❀ नाहीं जानौ हाल हमार ॥
अपन दुसरिहा हम देखोना ❀ जो समुहें होय देय जवाब ॥
धोखे रहियो ना जैचँद के ❀ कौड़ी कौड़ी लिहौं भराय ॥
दूजी करियो जो हमते तुम ❀ मारौं गर्द बर्द होइ जाय ॥
हम हैं क्षत्री गढ़ महुबे के ❀ राजा दस्सराज के लाल ॥
पैसा लिये बिना लौटैं ना ❀ चाहे प्राण रहे की जाय ॥
बातन २ बतबढ़ होइ गयो ❀ औ बातन में बाढ़ी रारि ॥
गुस्सा होइकै हरिसिंह ठाकुर ❀ अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दैदेउ मोरि तोपन में ❀ इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❀ सुम्बा मारैं बारम्बार ॥
रंजक धरिके तिन प्यालन पर ❀ ऊपर बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोउ ओरते ❀ दलमें रही अँधेरिया छाय ॥

—:❀❀❀❀:—

—:❀❀❀❀❀:—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ हरिसिंह बीरसिंह की लड़ाई।

—:❀❀❀❀:—

अरर गोला छूटन लागे ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
गोला छूटैं दोनों दल में ❀ रणमें होय दनाक दनाक ॥
गोला लागे ज्यहिं हाथी के ❀ मानौं च्वार सेंधिकै जाय ॥
जौन ऊँटके गोला लागे ❀ सो गिरिपरे धरनि भहराय ॥
गोलालागै जिन घोड़न के ❀ चारों सुम्म गर्द होइजायँ ॥
गोलालागै जिन क्षत्रिन के ❀ सो गिरिपरै धरनि भहराय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❀ तोपै लालबरन होइ जायँ ॥
क्षत्रिन छोड़ि दई तोपैं तब ❀ लम्बे बन्द करें हथियार ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के ❀ क्षत्रिन खैंचिलई तलवारि ॥
हल्ला होइगयो दोउ लश्करमें ❀ खट २ चलनलगी तलवारि ॥
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❀ हाथिन अड़ो दाँतसे दाँत ॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगये ❀ औ असवारनते असवार ॥
पैदल गिरिगये पैग पैग पर ❀ उनके दुइ दुइ पैग असवार ॥
हाथी गिरिगै बिसे बिसेपर ❀ छोटे पर्वत की अनुहार ॥
पहर एक भरि चली शिरोही ❀ औबहि चली रक्तकी धार ॥
कटे भुसुंडा हैं हाथिन के ❀ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
कल्ला कटिगये हैं घोड़न के ❀ अंधाधुंध चली तलवार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
सदा तुरैया ना बनफूलै ❀ यारो सदा न सावन होय ॥
सदा न माता उरमें धरिहैं ❀ यारो जन्म न बारम्बार ॥
जैसे पात गिरे तरुवरते ❀ गिरिकै बहुरि न लागैडार ॥
मानुष देही यह दुर्लभ है ❀ आवे समय न बारम्बार ॥
पाँव पिछारी तुम धरियोना ❀ रखियो धर्म कनौजी क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जीतिके चलिहौ जो गाँजरते ❀ दूनी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दै दै पानी रजपूतन को ❀ ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही ऊदनि वाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
भगे सिपाही बिरिया वाले ❀ अपने डारि २ हथियार ॥
गड़बड़ परिगयो तब लश्करमें ❀ सबदल रेनु बेनु होइ जाय ॥
देखिहाल यह तब हरिसिंहने ❀ अपने हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले हरिसिंह बघ ऊदन ते ❀ अब तुम खबरदार होइजाव ॥
काल तुम्हारो नियरानो है ❀ सुनिल्यो दस्सराजके लाल ॥
इतनी सुनतै बघ ऊदन ने ❀ अपनी छाती दई अड़ाय ॥
चोट आपनी हरिसिंह करिलेउ ❀ मनते मेटिलेउ अरमान ॥
इतनी सुनतै हरीसिंह ने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई बघऊदन पर ❀ ऊदन दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
बचिगयो बेटा दस्सराज को ❀ हरिसिंह लीन्हों गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो बघ ऊदन पर ❀ ऊदन लैगये चोट बचाय ॥
कावा दैकै तब ऊदन ने ❀ रसबेंदुलको दियो बढ़ाय ॥
तड़पिके पहुँचि गये मस्तकपर ❀ औहरिसिंहको लीन्हों बांधि ॥
यहगति देखी जब बिरसिंह ने ❀ अपनी हाथी दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई आगे बढ़ि ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
खबरदार घोड़ा पर रहियो ❀ तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
इतनी कहिके गुर्ज उठायो ❀ सो ऊदनि पर दियो चलाय॥
बायेंते घोड़ा दहिनें होइगयो ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गुस्सा होइके तब बिरसिंह ने ❀ अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब ऊदनि पर ❀ बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
तीनि शिरोही बिरसिंह मारी ❀ ऊदनि लीन्हीं चोट बचाय ॥
टूटि शिरोही गइ बिरसिंह की ❀ खाली मूठ हाथ रहिजाय ॥
घोड़ा बेंदुला को धरिदाबो ❀ गज मस्तकपर बाजी टाप ॥
औझड़ मारो एक ढालकी ❀ सोने कलशा दियो गिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

रस्सा काटि दिये हौदा की ❋ बिरसिंहगिरे धरनि पर आय ॥
बड़ि २ कुश्ती बिरसिंह मारी ❋ जीते बड़े बड़े बलवान ॥
गजभरि छाती है बिरसिंह की ❋ देखत शूर ताहि भयखाय ॥
देही बहुत गठी बिरसिंह की ❋ दोनों नयनन बरै मसाल ॥
ताल ठोंकि बोला ऊदन ते ❋ कुश्ती लड़ौ हमारे साथ ॥
ऊदन उतरे रस बेंदुलाते ❋ औ समुहें पर पहुँचे जाय ॥
झपटि उठाय लियो ऊदन को ❋ बीरसिंह यह कही सुनाय ॥
कहँपर फेंक देउँ तुमको मैं ❋ तब ऊदन ने दियो जवाब ॥
फेंकिदेउ जल्दी हमको तुम ❋ जहँ पर मर्जी होय तुम्हार ॥
यहसुनि बहुत दूरि फेंकन को ❋ बिरसिंह मनमें कियो बिचार ॥
ऊदन पेचकरी ऊपरते ❋ औ छाती पर भये सवार ॥
डंड बाँधिलइ तब बिरसिंह को ❋ माल खजाना लियो लुटाय ॥
किला जीति लियो बिरिया गढ़को ❋ जीति को डंका दियो बजाय ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❋ पट्टी धुरो दबायो जाय ॥

—:❋❋❋❋❋:—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

अथ पट्टीके महाराज सातनि की लड़ाई।

❀ आल्हा ❀

सुमिरन करिके रामचन्द्र को ❀ लै बजरंग बली को नाम ॥
लिखौं लड़ाई अब सातनि की ❀ होउ सहाय कृष्ण घनश्याम॥
रात बसेरा करि धूरे पर ❀ भोरहिं उठे उदौसिंह राय ॥
कागद लैके कल्पी वालो ❀ अपनी कलमदान लै हाथ ॥
पहिले लिखिके सरनामा को ❀ ता पीछेतें लिखी जोहार ॥
लिखी हकीकति फिरि ऊदन ने ❀ सातनि मानो कही हमारि ॥
पैसा तहसीली गांजर को ❀ नाहीं दीन्ही एक छदाम ॥
बारह बरस क्यार पैसा है ❀ सो सब दाम देउ भखवाय ॥
हमको भेजो राजा जैचँद ने ❀ लाखनि राना हमरे साथ ॥
नगर महोबे के रहवैया ❀ बघऊदन है नाम हमार ॥
हरिसिंह बिरसिंह बिरियाँ वाले ❀ तिनको दंड लई बँधवाय ॥
बारह बरस क्यार पैसा सब ❀ ठाढ़े दाम लियो भखवाय ॥
दाम चुकाय देउ तुमहूँ सब ❀ नाहीं कठिन करौं संग्राम ॥
जो नहिं इच्छा होय देनको ❀ तौ तुम निकसि होय मैदान॥
ऐसी पाती लिखि ऊदन ने ❀ हरकारा को दई गहाय ॥
चलिभयो धावन तब लश्करते ❀ औ पट्टीगढ़ पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी रहि सातनिकी ❀ धावन उतरि परो अरगाय ॥
करी बंदगी तहँ राजाको ❀ पाती गही दई चलाय ॥
खोलिकै पाती राजा बाँची ❀ मनमें गये सनाका खाय ॥
ऊँचे चढ़ि देखी धूरे पर ❀ लश्कर डटा बनाफर क्यार ॥
बोलि नगरची को बीरा दे ❀ सोने कड़ा दियो डखवाय ॥
डंका बाजे हमरे दल में ❀ सब दल साजि होय तैयार ॥
बजो नगारा गढ़ पट्टी में ❀ क्षत्रिन बाँधि धरे हथियार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की ❀ सो आगे को दियो बढ़ाय ॥
तीनिलाख दल तुरते सजिगयो ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
भूरा हाथी तब सजवायो ❀ सातनि राजा भये सवार ॥
चारि घरी केरे अरसा में ❀ रण खेतन में पहुँचे आय ॥
लश्कर पहुँचो जब खेतन में ❀ मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
हाथी रेल्यो सातनि राजा ❀ आगे जाय दई ललकार ॥
कौन शूरमा चढ़ि आयो है ❀ सो समुहें होय देय जवाब ॥
देखि फौज सातनि राजाकी ❀ ऊदन लश्कर लियो सजाय ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो ❀ तापर फाँदि भये असवार ॥
आगे बढ़िकै ऊदन बोले ❀ औसातनि को दियो जवाब ॥
हम चढ़ि आये हैं कनउजते ❀ जैचँद हमको दियो पठाय ॥
देश हमारो नगर महोबा ❀ जहँ पर बसैं रजापरिमाल ॥
छोटे भैया हम आल्हा के ❀ औ ऊदन है नाम हमार ॥
बावन गढ़ के राजा जीते ❀ जीते बड़े बड़े सरदार ॥
नाम हमारो जग जाहिर है ❀ लाखनि राना हमरे साथ ॥
भला आपनो जो तुम चाहो ❀ पैसा जल्दी देउ चुकाय ॥
बातन २ बतबढ़ होइ गयो ❀ औ बातन में बाढ़ी रारि ॥
हुक्म दीदियो तब सातनि ने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❀ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ धुँअना रह्यो सरग मड़राय ॥
अरर गोला छूटन लागे ❀ गोला मन्न मन्न मन्नाय ॥
भाला बरछी छूटन लागे ❀ सरसर परी तीर की मारु ॥
पहर एक भरि गोला बरसो ❀ अन्धाधुन्ध तोप की मारु ॥
तोपैं धैं धैं लाली होय गइँ ❀ ज्वानन हाथ धरेना जाय ॥
तोपैं छोड़ि दई ज्वानन ने ❀ लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
हाथी बढ़वायो सातनि ने ❀ औ क्षत्रिनते कही पुकारि ॥
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

निमक हमारो तुम खायो है ❀ सो हाड़न में गयो समाय ॥
आजु अखाड़े में बरनी है ❀ सन्मुख लरो शत्रुके साथ ॥
जान न पावैं कनउज वाले ❀ सबके मुण्ड लेउ कटवाय ॥
झुके सिपाही तब पट्टी के ❀ रहि गयो पाँच यैाग मैदान ॥
झुरमुट होइ गयो दोनों दलको ❀ क्षत्रिन खैंचिलई तलवारि ॥
खटखट तेगा बाजन लागो ❀ ब्वालै छपक २ तलवारि ॥
चले जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै बिलायति क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के ❀ कटिकटिगिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
चलै कटारी बूँदी वाली ❀ अबना सूझै अपन बिरान ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही ❀ औ बहिचली रक्तकी धार ॥
बड़े लड़ैया गांजर वाले ❀ जिनके मारु मारु रटलागि ॥
हटो मूरचा बघऊदन को ❀ ऊदन घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदन ने ❀ सो सातनि पर राखो जाय ॥
ढाल अड़ाय दियो सातनि ने ❀ तुरतै लीन्हीं चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो सातनि राजा ❀ बघऊदन पर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा रस बेंदुल के ❀ घोड़ा पाँच कदम हटिजाय ॥
ऐंड़ लगाई रस बेंदुल के ❀ औ मस्तक पर बाजी टाप ॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी ❀ सोने कलशा दियो गिराय ॥
गुर्ज उठायो तब सातनि ने ❀ घोड़ा भगो उदयसिंह क्यार ॥
हाथी पचशावद ठाढ़ो तहँ ❀ ऊदन तासु आड़ होइ जाय ॥
बोले इन्दल तब आल्हा ते ❀ दादा अबकछु करौ उपाय ॥
अकिले सातनिकी धमकिन में ❀ कोऊ कुँवर न आड़े पाँव ॥
डंड बाँधिलेउ तुम सातनि को ❀ अबना राखौ देर लगाय ॥
हाथी रेल्यो तब आल्हा ने ❀ औ सातनि ते कही सुनाय ॥
करौ सामना अब हमरो तुम ❀ मनके मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी सुनतै सातनि राजा ❀ करमें लीन्हीं लाल कमान ॥
कैबर छाड़ि दियो आल्हा पर ❀ आल्हा हाथी लियो हटाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आल्हा बचिगै तब हौदा पर * कैबर निकरि गयो वापार ॥
साँग उठाई तब सातनि ने * सो आल्हापर धमको जाय ॥
हाथी हटिगयो लुनि आल्हाको * नीचै साँग गिरी अरराय ॥
दोनों चोटैं खाली परिगईं * सातनि हाथी दियो बढ़ाय ॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगयो * सातनि खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई जब आल्हा पर * आल्हा लीन्हीं चोट बचाय ॥
बोले सातनि तब आल्हा ते * अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
धोखे रहियो ना माड़ौ के * जहँ लै लियो बापको दाउँ ॥
जितने आये हौ महुबे ते * सबके शीश लिहौं कटवाय ॥
बोले आल्हा तब सातनि ते * राजा बोलो जीभ सम्हार ॥
दाम लिये बिन हमना जैहैं * चाहे प्राण रहे की जाय ॥
बिना दाम के हम नौकर हैं * तासो हम लौटन के नाहिं ॥
इतनी कहिकै लै जंजीर तब * औ हाथी को दई गहाय ॥
बाँधि जँजीरन लेउ सातनि को * यह हाथी ते कही सुनाय ॥
साँकल फेरी तब हाथी ने * तुरतै हौदा दियो गिराय ॥
गिरिगै सातनि जब धरती पर * दुसरो घोड़ा लियो मँगाय ॥
तापर चढ़िगे सातनि राजा * अपनी खैंचिलई तलवार ॥
जोगा भोगा के समुहें पर * सातनि राजा कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर * तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
इतनी बात सुनी राजा की * जोगा खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई तब सातनि पर * सातनि दीन्हीं ढाल अड़ाय॥
खाली मूठि रही जोगा की * सातनि खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब जोगा पर * जोगा भूमि गिरो मुरझाय ॥
यह गति देखी जब भोगाने * अपनो खैंचिलई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब सातनि पर * बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
तीनि शिरोही भोगा मारी * तुरतै टूटि गई तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खैंचि शिरोही सातनि मारी * भोगा गिरो धरनिपर जाय ॥
जोगा भोगा दोनों जूझे * घायल भयो पपीहा घ्वाड़ ॥
देखि हकीकति यह इन्दल ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बढ़िकै सातनि को ललकारो * ठाकुर खबरदार होइजाव ॥
ढालकि औझड़ इन्दल मारी * सातनि राजा दियो गिराय ॥
उतरिकै घोड़ा ते इन्दल ने * सातनि राजै लियो बँधाय ॥
तुरतै भेजवायो लाखनि पै * जीतिको डंका दियो बजाय॥
लूटि कराई गढ़ पट्टी को * पहरा अपनो दियो बिठाय ॥
जोगा भोगा नैनागढ़ के * साले जौन बनाफर क्यार ॥
तिनकी यादि करत आल्हा के * नैनन बहै नीर की धार ॥
कूच कराय दियो पट्टी ते * पहुँचे कामरूप में जाय ॥
डेरा डारि दिये धूरेपर * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कामरूपकेराजा कमलापतिकी लड़ाई।

सुमिरन करिकै नारायण को * औ गणपति के चरण मनाय ॥
कहौं लड़ाई कमला पति की * यारो सुनियो कान लगाय ॥
राति बसेरा करि घूरे पर * भोरहिं उठे उदैसिंह राय ॥
पाती लिखिकै बघऊदन ने * हरकारा को दई गहाय ॥
पाती लैके धावन चलि भयो * पहुँचो काम रूप में जाय ॥
जहाँ कचहरी कमला पति को * धावन उतरि परो अरगाय ॥
करी बन्दगी कमला पति को * धावन उतरि परो अरगाय ॥
पाती बाँची कमलापति ने * मनमें गये बहुत घबराय ॥
ऊँचे चढ़ि देखो कमला पति * लश्कर डटा बनाफर क्यार ॥
तुरत नगरची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
हुक्म दे दियो कमलापति ने * लश्कर जल्द होय तैयार ॥
बजो नगारा कामरूप में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंका में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथि चढैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
बड़ि २ तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
डेढ़लाख दल तुरतै सजि गयो * कट्टर फौज गँजरहन क्यार ॥
जबरजंग और जबर्दस्तखाँ * जे मरिबे को नाहिं डराय ॥
सोऊ त्यार भये लश्कर सँग * अपने घोड़न भये सवार ॥
करी तयारी कमला पति ने * पहुँचे रंग महल में जाय ॥
घट भरवायो गंगाजल को * तासे तुरत करो अस्नान ॥
डारि आसनी रेशम वाली * तापर बैठ गये अरगाय ॥
चन्दन रगरो मलयागिरि को * कनक कटोरा धरो उतारि ॥
करिके पूजन श्रीगणपात को * लै बजरंग बली को नाम ॥
दैके चंदन भुजदंडन पर * औ माथे में लियो लगाय ॥
लंग बाँधिके रेशमवाली * धोती पहिरि पोतिया क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पहिरि पैजामाँ मिसरूवाला * जामां पहिरि दुदामी क्यार ॥
ताके ऊपर बख्तर पहिरे * जामें तेग नाहिं अनियाय ॥
पागबैंजानी शिर पर बाँधी * शोभा कछू कही ना जाय ॥
बारह छुरिया कम्मर बाँधी * राजा दुइ बाँधी तलवारि ॥
अगल बगलपर दुइ पिस्तौलैं * दहिने सिंहिनि मूठि कटार ॥
भाला लीन्हों नाग दौनि को * बायें भुजा गैंड़की ढाल ॥
मोती चूरकि कलँगी लागी * भाला चमकि २ रहिजाय ॥
सजिकै कमलापति ठाढ़े भे * अपनो हाथी लियो मँगाय ॥
गद्दा डारि दियो मखमल को * रेशम रस्सा दियो कसाय ॥
धरि अम्बारी सोनेवाली * चमकै कलश सुबरन क्यार ॥
होदा धरिदियो है चुम्बक को * जामें सेल बिलौंचा खाय ॥
रेशम रस्सा ते हाथी कासि * चन्दन सिढ़िया दई लगाय ॥
सिढ़ियन २ चढ़ि कमलापति * हौदा बीच पहुँचे जाय ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्र को * लै बजरंगबली को नाम ॥
कूँच कराय दियो लश्कर को * मारू डंका दियो बजाय ॥
बजत नगारा दल में आवै * घुमरत आवै लालनिशान ॥
तीनि घरी केरे अरसा में * रण खेतन में पहुँचे आय ॥
मुर्चा बन्दी तब करवाई * पाई खबरि उदैसिंह राय ॥
डंका बजवायो ऊदन ने * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
गजै बढ़यो कमलापति ने * आगे जाय दई ललकार ॥
कौन शूरमा चढ़ि आयो है * सो समुहें होय देय जवाब ॥
ध्वाड़ बड़ायो तब ऊदनि ने * कमला पतिको दियो जवाब ॥
देश हमारो नगर महोबा * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * औ ऊदनि है नाम हमार ॥
हमहिं पठायो है जैचँद ने * लाखनि राना हमरे साथ ॥
बीरा चाबो हम गाँजर पर * सिगरे दाम लिहौं भरवाय ॥
हरिसिंह बिरसिंह बिरियाँ वाले * तिनते दाम लिये भरवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सातनि राजा पट्टी वाल * तिनहू को लइ कैद कराय ॥
बारह बरस क्यार पैसा है * सो तुम जल्दी देउ चुकाय ॥
लाखनि राना हैं हमरे सँग * तिनके नजरि गुजारो आय ॥
गुस्सा होइके कमलापति ने * बघऊदनि को दियो जवाब ॥
गीदड़ मारे हौ जंगल के * बगुला मोर सागर ताल ॥
जादिन पारे हैं काम मर्द ते * मुँहको थूँक बंद होइ जाय ॥
धोखे रहियो ना काहू के * सबके शीस लिहौं कटवाय ॥
ताते लौटि जाव महुबे को * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * कमला पतिको दियो जवाब ॥
हाल तुम्हारो ना जानो है * ताते बातें करत बनाय ॥
दतिया मारि उड़ैसा मारे * बाजी सेत बन्दलौं टाप ॥
मोहरा मारो हम पिरथी को * औ ब्रह्मा को करो विवाह ॥
बावन गढ़ के राजा जीते * जीते बड़े बड़े सरदार ॥
अपन दुसरिहा हम राखोना * जो समुहें होय देय जवाब ॥
दाम चुकाय देउ जल्दी तुम * तौ हम लौटि कनौजे जायँ ॥
दाम लिये बिन हम जैहैं ना * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
नीके देहौ नीके लेहैं * नाहीं कैद लिहैं करवाय ॥
इतनी सुनतै कमलापति ने * अपनो हुक्म दियो फर्माय ॥
बत्ती दैदेउ मेरि तोपन में * इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
हल्ला होइ गयो दोनों दल में * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
अरर गोला छूटन लागे * गोला मघाबूँद झरिलाय ॥
भाला बरछा छूटन लागी * सरसर परी तीरकी मारु ॥
हाहाकारी बीतन लागी * कह २ करैं अगिनियाँ बान ॥
चारिघरी भरि गोला बरसो * भारी भई तोप की मारु ॥
तोपैं धैं धैं लाली होइगई * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
तोपैं छोड़ि दई क्षत्रिन ने * लंबे बन्द करैं हथियार ॥
दोनों फौजन के अन्तर में * रहिगयो पाँच पैग मैदान ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के * अपनो खैंचि २ तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खटखट खटखट तेगा बाजे * बोले छपकि छपकि तलवारि ॥
चली जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चले बिलायति क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * कटि २ गिरे सुघरुआ ज्वान ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * जिनके मारु २ रट लागि ॥
भगे सिपाही कामरूप के * अपने डारि २ हथियार ॥
तब कमलापति मनमें सोचे * अपने जादू लये उठाय ॥
जादू मारी तब लश्कर पर * जादू सबै झूठ परिजाय ॥
गजै बढ़ायो तब कमलापति * अपनो भाला लियो उठाय ॥
यक ललकार दई कमलापति * औ ऊदनपर पहुँचे जाय ॥
चोट चलाई बघऊदन पर * ऊदन लीन्हीं चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो फिरि कमलापति * औ ऊदनपर दियो चलाय ॥
बायँते घोड़ा दहिने होइ गयो * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
बोले कमलापति ऊदन ते * अबहूँ लौटि महोबे जाव ॥
चोट तीसरी में बचिहौ ना * ताते लौटि जाउ महराज ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * राजा बोलो बचन सम्हारि ॥
धर्म नहीं है यह क्षत्रिन को * जो हटि धरे पिछारी पाँव ॥
तिसरि उचौनी औरो करि लेउ * मनको मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी सुनकै कमलापति ने * तुरतै खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका बघऊदन पर * बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
ढाल फाटिगइ गैंड़ा वाली * चाँदी फूल गिरे झहनाय ॥
बचिगयो बेटा दस्सराज को * दहिने भई शारदा माय ॥
घोड़ा फेंक्यो तब ऊदन ने * पहुँचे आसमान में जाय ॥
जैसे बाज कुहीपर टूटै * तैसे गिरे उदयसिंह राय ॥
हौदा घेरो कमलापति को * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब हौदा पर * हौदा टूक २ होइ जाय ॥
करिकै दुचिता कमलापति के * तुरतै दण्ड लई बँधवाय ॥
हुक्म कराय दियो लश्कर में * माल खजाना लियो लुटाय ॥
जीति कामरू कामक्षा को * आगे बढ़े उदैसिंह राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बंगालेके राजागोरखा की लड़ाई।

-****-

* आल्हा *

सुमिरन करिके नारायण को * औ गणपतेके चरण मनाय॥
लिखौं लड़ाई बंगॉले की * यारो सुनियो कान लगाय॥
फौजें पहुँचीं बंगाले में * धूरे डेरा दियो डराय॥
लिखिकै पाती बवऊदन ने * हरकारा को दई गहाय॥
धावन चलि भयो तब धूरते * औ गढ़ माहिं पहूँचो जाय॥
जहाँ कचहरी थी राजा को * धावन उतरि परो तहँ जाय॥
करी बन्दगी तब राजा को * पाती गद्दी दई चलाय॥
पाती बाँची जब राजा ने * मनमें गये सनाका खाय॥
ऊँचे चढ़ि देखो धूरे पर * झंडन रही लालरी छाय॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डखाय॥
बजो नगारा तब लश्कर में * क्षत्रिन बाँधि लियो हथियार॥
मारू डङ्का के बाजत खन * लश्कर साजि भयो तैयार॥
करी तयारी भूप गोरखा * अपनो हाथी लियो मँगाय॥
सो सजवाय लियो जल्दी ते * तापर तुरतै भयो सवार॥
कूच कराय दियो लश्कर को * अपनो डङ्का दियो बजाय॥
लश्कर पहुँचो जब धूर पर * मुर्चा बन्दी दई कराय॥
देखि फौज राजा गोरख की * ऊदन लश्कर दियो सजाय॥
गजहि बढ़ाय दियो राजाने * औ यकजाय दई ललकार॥
कौनसो क्षत्री चढ़ि आयो है * सो समुहें होय देव जवाब॥
घोड़ बढ़ायो तब ऊदन ने * औ राजा को दियो जवाब॥
हम हैं क्षत्री महुबे वाले * हमरो उदयसिंह है नाम॥
हम चढ़ि आये हैं कनउज ते * लाखनि राना हमरे साथ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बारह बरस क्यार पैसा भयो * तुमना दीन्हों एक छदाम ॥
जितनो पैसा तुमपर चहिये * सो सब दाम देउ भरवाय ॥
नीके देहो नीके लेहौं * नाहीं कैद लिहैं करवाय ॥
इतनी सुनते गुस्सा होइ कै * राजा हुक्म दियो करवाय ॥
मारि भगावौ इनपाजिन को * सबकी कटा देउ करवाय ॥
झुके सिपाही तब राजा के * खटखट चलन लगी तलवारि॥
चलै जुनब्बी औ अहिगबी * ऊना चले बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के * कटिकटि गिरनलगे बहु ज्वान॥
बोले ऊदन सब क्षत्रिन ते * यारौ रखिये धर्म हमार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला * ऊदन कहैं पुकारि पुकारि ॥
जीतिकेचालहौ जो कनउजको * दूनी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
झुके सिपाही महुबेवाले * दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही बंगाले के * अपने डारि डारि हथियार ॥
हाथी रेल्यो तब गोरख ने * औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर * तुमरो काल रह्यो नियराय ॥
यह कहि गुर्ज लियो राजाने * सो ऊदन पर दियो चलाय ॥
घोड़ा बेंदुला ऊपर उड़ि गयो * नीचे गिरौ गुर्ज अरराय ॥
ऐंड़ लगाई तब घोड़ा के * औ मस्तक पर बाजी टाप ॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी * सोने कलशा दियो गिराय ॥
करिकै दुचितो तब राजा को * ऊदन लियो जँजीरन बाँधि ॥
धावाकरि दियो गढ़भीतर को * माल खजाना लियो लुटाय ॥
जीतिको डंका तब बजवायो * लश्कर आगे दियो बढ़ाय ॥

—*****—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कटक, जिन्सी, गोरखपुर पटना आदिके
राजाओं की लड़ाई।

सुमिरन करिके नारायण को ❋ औ गणपतिके चरण मनाय॥
लिखौं लड़ाई अब आगे को ❋ यारो सुनियो कान लगाय॥
लश्कर चलिभै बँगाले ते ❋ पहुँचो कटक धुरे पर जाय॥
हुक्म दैदियो बघ ऊदन ने ❋ तुरतै कटक लियो घिरवाय॥
फाटक बन्दी तब करवाई ❋ अपने पहरा दियो बिठाय॥
मुरलि मनोहर दोनौं भैया ❋ तिनको कैदलियो करवाय॥
माल खजाना सब लै लीन्हों ❋ सो छकरन में लिये लदाय॥
कूच करायो कटक शहर ते ❋ जगमनि राजा लियो घिराय॥
खबरि कराय दियो जिन्सी में ❋ जगमनि गये सनाका खाय॥
हुक्म दै दियो तब लश्कर में ❋ जल्दी फौज होय तैयार॥
बजो नगारा तब जिन्सी में ❋ लश्कर साजि भयो तैयार॥
हाथी सजवायो जगमनि ने ❋ तुरतै तापर भया सवार॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❋ औ धूरे पर पहुँचो जाय॥
आगे बढ़िके जगमनि बोले ❋ काहे धुरो दबायो आय॥
कौनसो क्षत्री चढ़ि आयो है ❋ सो समुहें होय देय जवाब॥
ऊदन बढ़िके बोलन लागे ❋ हमको जैचँद दियो पठाय॥
छोटे भैया हम आल्हा के ❋ औ ऊदन है नाम हमार॥
लाखनि राना साथ हमारे ❋ तुमसे दाम लिहैं भरवाय॥
बारह वर्ष को पैसा मारो ❋ तुमना दीन्ही एक छदाम॥
इतनी सुनतै जगमनि राजा ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय॥
जान न पावे कोउ कनउजको ❋ सबको कटा देउ करवाय॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के ❋ खटखट चलनलगी तलवारि॥
तीन घरी भरि चली शिरोही ❋ मुर्चा हटा गँजरहन क्यार॥
ऐंड़ लगाई रस बेंदुला के ❋ ऊदन घोड़ा दियो बढ़ाय॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी ❋ औ जगमनिको दियो गिराय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बाँधिजँजीरनलियो जगमनिको ❀ मालखजाना लियो लुटाय ॥
आगे बढ़ि गै रुसनी गढ़ में ❀ चिन्ता ठाकुर लियो बँधाय ॥
लूटि कराय लई रुसनी को ❀ आगे लश्कर दियो बढ़ाय ॥
गोरखपुर में सूरज राजै ❀ ऊदन तुरतै लियो बँधाय ॥
माल खजाना ले आगे बढ़ि ❀ पटना शहर लियो घिरवाय ॥
पूरन राजा को तहँ बाँधो ❀ औ काशी में पहुँचे जाय ॥
हंसामनि राजा को बाँधो ❀ माल खजाना लियो बँधाय ॥
गाँजर वाले बारह राजा ❀ जीते तिनहिं उदैसिंहराय ॥
कैदी करके सब राजन को ❀ जीतिको डंका दियो बजाय ॥
तीनि महीना औ तेरह दिन ❀ गाँजर कठिन चली तलवारि ॥
कूच करायो सब लश्कर को ❀ औ कनउज की पकरी राह ॥
पगिया बदली लाखनि राना ❀ औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
जादिन जैहौ तुम महुबे को ❀ हमहूँ चलिहैं तुम्हरे साथ ॥
लश्कर पहुँचो गढ़ कनउज में ❀ सबने छोरि धरी हथियार ॥
आल्हा ऊदन लाखनि राना ❀ पहुँचे बीच कचहरी जाय ॥
बारह राजा जो कैदी रहैं ❀ सो जैचँदको दियो गहाय ॥
माल खजाना जो लाये थे ❀ सो जैचँदको दियो बताय ॥
सब सौंपाय दियो राजा को ❀ बहुतै खुशी भये महराज ॥
बोले जैचँद तब ऊदन ते ❀ धनि धनि दस्सराजके लाल ॥
तुम सब लायक हौ महुबे के ❀ रानी देव कुँवरि के लाल ॥
कठिन काम हमरो तुम कीन्हा ❀ अब तुम जाय करो विश्राम ॥
करि अधीन अपने जैचँद को ❀ सब राजन को दियो छोड़ाय ॥
इतनि लड़ाई भइ गाँजर में ❀ सिरसा समर सुनो मनलाय ॥
समय समय पर आल्हा गावो ❀ नित उठिलेउ नाम भगवान ॥
भोला नाथ मनाय हियेमहँ ❀ सीताराम क्यार धरिध्यान ॥

इति गाँजरकी लड़ाई (ऊदन विजय) समाप्त !

—:❀❀❀❀❀:—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

❀ श्रीः ❀

लाखनि का गौना ।

* सुमिरनी *

बजी बांसुरी बृन्दाबन में ❀ औ मधुबन में कुहकै मोर ॥
मोहित हुइगये जीव चराचर ❀ औ ध्वनि छायरही चहुँओर ॥
उठि २ धाईं सबै गोपिका ❀ जबही सुनीं कृष्ण के बैन ॥
उलटे भूषण बसन धारिके ❀ पहुँची जहाँ कृष्ण छबिऐन ॥
कीन्हों रास विलास श्याम ने ❀ त्रिभुवन माहिं रह्यो यशछाय ॥
कृष्णचन्द्र छबि परम मनोहर ❀ निशदिन ध्यानकरो मनलाय॥
छोड़ि सुमिरनी आगे लिखिहौं ❀ लाखनि केर गौनवां चार ॥
नारायण परसाद को आल्हा ❀ चितदे सुनहु यार यहि बार ॥
माहिल चुगुल केर चुगुली में ❀ राजा बिगरि गये परिमाल ॥
मानिके चुगुली चुगुल खोरकी ❀ आल्हा ऊदन दिये निकाल॥
दोनों भाई गढ़ कनउज में ❀ सुखसों रहन लगे दिनरात ॥
सुनि खिसियाने माहिल राजा ❀ औ अपने मन कियो बिचार॥
काहू बिधि कनउज में छलसों ❀ मोरे जाएँ बनाफर राय ॥
हमरो काम बने तबही सब ❀ अपनो महुबे लेउँ छिनाय ॥
लिह्वी घोड़ी पर चढ़ माहिल ❀ गढ़ कनउज में पहुँचे जाय॥
मिलेजाय पहले लाखनि ते ❀ लाखनि देखत करी जुहार ॥
बैठिके माहिल तब चुपके से ❀ काना फूसी लगे बतान ॥
सुनो बात अपने हितकी तुम ❀ हमरे बचन करो परमान ॥
क्यों तुम राखे आल्हा ऊदनि ❀ इनको गढ़ते देउ निकारि ॥
भले जो होते दोनों भाई ❀ क्यों चन्देले देत निकारि ॥
यहसुनि गुस्सा हुइ लाखनि ने ❀ नृप माहिल को दइ ललकार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हौतुम छलिया उरई वाले ❀ जहँ तहँ फिरत करावत रारि ॥
सुनतै चलिभै माहिल राजा ❀ औ तिलका पै पहुँचे जाय ॥
बहुत बुराई करि ऊदन की ❀ औ रानी से कही सुनाय ॥
बेगि निकारि देउ कनवज से ❀ नाहिं नशि जैहैं राज तुम्हार ॥
यह सुनि तिलका बोलन लागी ❀ हमरे मनमें नाहिं समाय ॥
तुम्हरे गुन हमको जाहिर हैं ❀ तुम समुहें से जाउ बराय ॥
सुनिखिसियाय चले माहिलतब ❀ औ जैचंद कचहरी जाय ॥
सूरति देखी जब जैचँद ने ❀ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरई वाले ❀ अपनी कुशल कहौ परिहार ॥
कुशल छेम है मेरि उरई में ❀ बैठे राज करौं महराज ॥
जैचँद पूछी तब माहिल से ❀ केहि हित आवन भयो तुम्हार॥
माहिल बोले तब राजा से ❀ हम आये थे गंग नहान ॥
कातिक पूनोंकी बुड़की थी ❀ सो बिठूर में पहुँचे जाय ॥
मिलो जवाहिर हमहिं तहाँतब ❀ जो बूँदी को राजकुमार ॥
बात चले पर हमसे बोल्यो ❀ तुम जैचँद से कहियो जाय ॥
गवनमें लै हैं जो आल्हा को ❀ तो सब जैहैं काम नशाय ॥
ताते मानो कही हमारी ❀ गौन को बीरा देउ धराय ॥
जौन शूर बीरा को चाबै ❀ सोइ गौन को देय कराय ॥
बहुत शूर हैं गढ़ कनउज में ❀ तुमको कौन परी परवाह ॥
सुनतै जैचँद शूर बुलाये ❀ औ बीरा को दियो धराय ॥
है कोइ छत्री गढ़ कनउज में ❀ जो गौने पर पान चबाय ॥
चारि घरी बीरा को हुइगइ ❀ काहू पान चबायो नाहिं ॥
तौलों आये उदनि बाँकुड़ा ❀ औ राजा को करी जुहार ॥
सुनो हाल तहँ जब बीराको ❀ तुरतै बीरा लियो उठाय ॥
बोले माहिल तब जैचँद से ❀ इनते बीरा लेउ छिनाय ॥
तापर ज्वाब दियो जैचँद ने ❀ कलहा देव कुँवरिको लाल ॥
जो बिगार करि हैं ऊदन से ❀ तो सब जै हैं काम नशाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यहसुनि माहिल खिसियाने बहु ❀ तुरतै लिल्ली भये सवार ॥
बारह दिनको धावँ करिके ❀ बूँदी शहर पहूँचे जाय ॥
जहां कचहरी गंगाधर को ❀ माहिल तहांगये नागिचाय ॥
गंगाधर देखो माहिल को ❀ ऊंची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो माहिल राजा ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
हाथ जोरिके माहिल बोले ❀ बैठे राज करौं महराज ॥
एक बात अनहोनी हुइगइ ❀ सोहम तुमहिं देइँ बतलाय ॥
गढ़ कनउज में राजा जैचँद ❀ गौन को बीरा दियो धराय ॥
बीरा चाबो है ऊदन ने ❀ ओछी जाति बनाफर राय ॥
जोकहुँ ऐ हैं आल्हा ऊदन ❀ कोउ न पिये घड़ाको पानि ॥
तेहिते तुमको समुझावतहौं ❀ अबकी बहुत रहेउ हुशियार ॥
छलिके लैयो घरके भीतर ❀ दोनों भाइन दिओ मराय ॥
सुनिके बोले गंगाधर तब ❀ तुमने दीन्ही नीक सलाह ॥
जियत न छुड़िहैं हम दोनोंको ❀ औ भकसी में दिहैं डराय ॥
माहिलचलिभे बहुतखुशी हुइ ❀ औ उरई में पहुँचे जाय ॥
सुनौहाल अब गढ़ कनवजकी ❀ बीरा चाबि उदैसिंह राय ॥
हाथ जोरि बोले जैचँद ते ❀ अपनो पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडितको ❀ सो पत्रा लै पहुँचे आय ॥
राजा बोले तब पंडित ते ❀ गौन कि साइति देउ बताय ॥
खोलि पत्तरा बेनी माधव ❀ अच्छी साइति दई बताय ॥
मार्ग शुदी एकादशि गुरुदिन ❀ चौबिस दिना रहे महराज ॥
करौ तयारी अब जल्दी से ❀ परसौं कूच देउ करवाय ॥
ऊदन बोले तब जैचँद से ❀ ओ महराज कनौजी राय ॥
लिखौ अधीनी सब राजनको ❀ गौन कि चिट्ठी देउ पठाय ॥
लिखा हालु जल्दी साइतिकी ❀ बूँदी शहर मिलौ सब आय ॥
चिट्ठी भेजो परिमालै को ❀ औ मलिखेको लेउ बुलाय ॥
इतनी सुनते राजा जैचँद ❀ अपनो मुन्शी लियो बुलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चिट्ठी लिखवाई सबही को ❀ सबको न्योता दियो पठाय ॥
हुक्म सुनाय दियो सबहीको ❀ जलदी त्यार होय सामान ॥
ऊदन उठिके गये लाखनिपै ❀ औ सब हाल दियो बतलाय ॥
त्यारी होन लगी गौने की ❀ महलन खबरि दई पहुँचाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❀ लागे होन मंगला चार ॥
बोलि नगड़चीको बीरादौ ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
सबै दरोगा बुलवाये तहँ ❀ चीरा कलँगी दई इनाम ॥
गंग पँवारे जो कुडहरि के ❀ मामा लागे लाखनि क्यार ॥
साजिके आये सो कुडहरि से ❀ औ कनवजमें पहुँचो आय ॥
परशू राजा परहुल वारो ❀ सोऊ साजिके पहुँचो आय ॥
रूपन राजा सिरउँज वारो ❀ पत्थूंजा के मदन गोपाल ॥
जितने राजा थे नगीच के ❀ सो कनवजमें पहुँचे आय ॥
डंका होन लगी लश्कर में ❀ लश्कर सजनलाग तत्काल ॥
हाथी घोड़ा बहुत सजाये ❀ बड़ि बड़ि तोपैं लई सजाय ॥
जितने सिपाही थे लश्करमें ❀ तिनमें शूर लिये सजवाय ॥
भूरा हाथी को सजवायो ❀ सोनेको हौदा दियो कसाय ॥
जैचँद बैठे त्याहि हाथी पर ❀ ऊपर चौंर दुरे गजगाह ॥
भुरुही हथिनी त्यार कराई ❀ तापर लाखनि भये सवार ॥
हाथी पचशावद सजवायो ❀ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार खड़ोथो ❀ ऊदन फांदि भये असवार ॥
मीरा सैयद बनरस वारे ❀ घोड़ी सिंहिनिपर असवार ॥
मनोरथा पर ढेबा बैठे ❀ रुपना टाँगन पर असवार ॥
धनुआँ तेली रिजिगिरिवारो ❀ घोड़िबिलन्दिनिपर असवार ॥
लला तमोली रति कालेको ❀ सब्जा घोड़ा पर असवार ॥
अपनी अपनी असवारिनपर ❀ सिगरे शूर भये असवार ॥
मारू डंका के बाजत खन ❀ साजिगये तीनिलाख असवार ॥
पैदलसाजिगै चारि लाख सब ❀ डंका होन गोल में लाग ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चारिलाख लश्कर राजनको ❀ इकलख फौज बनाफर राय ॥
बारह लाख फौज संगलेके ❀ तब कनउज से कियो पयान ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ झंडन रहो लालरी छाय ॥
सत्रह दिनको मंजिल करिकै ❀ देश कामरू पहुँचे जाय ॥
बूँदी शहर केर धूरे पर ❀ अपने डेरा दिये डराय ॥
तम्बू तनि गये बन्नातन के ❀ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
फेटैं छुटि गईं रजपूतन की ❀ घोड़न जीन धरे उतराय ॥
चढ़ी रसोई उमरायन की ❀ क्षत्री करन गये अस्नान ॥
नाच होन लागो तम्बुन में ❀ शोभा कछू कहीना जाय ॥
बोले आल्हा तहँ जैचँद से ❀ बूँदी खबरि देउ पहुँचाय ॥
तापर ज्वाब दियो जैचँद ने ❀ पाती लिखके देउ पठाय ॥
हुक्म पायके तब आल्हा ने ❀ अपनो कलमदान मँगवाय ॥
पहले लिखिके सरनामा को ❀ ता पाछेसे लिखी जुहार ॥
साइति लिखिदइ फिर गौनेकी ❀ औ रूपन को दई गहाय ॥
रूपना पहूँचो जब लश्कर से ❀ औ बूँदी में पहुँचो जाय ॥
जाय पहूँचो जब फाटक पर ❀ दरबानी तब पूछन लाग ॥
कहाँसे आये औ कहँ जैहौ ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना दरबानी से ❀ राजै खबरि देउ पहुँचाय ॥
चिट्ठी लाये हम कनउज को ❀ सुनि हरकारा गयो तत्काल ॥
करीबन्दगी महराजा को ❀ औ द्वारे को कहा हवाल ॥
तौलौ रुपना दाखिल हुइ गयो ❀ झुकि राजा को कियो प्रणाम ॥
नजरि बदलि गइ गंगाधर की ❀ औ रुपना से पूछन लाग ॥
कहाँ कि पाती तुम लायेहौ ❀ औ रुपनाने दियो जवाब ॥
आल्हा आये गढ़ महुबे से ❀ जैचँद रिजिगिर दई इनाम ॥
अगुआ आल्हा हैं लश्कर में ❀ तिन यह पाती दई इनाम ॥
यह कहि पाती लै रुपना ने ❀ सो गद्दी पर दई चलाय ॥
खोलि के पाती राजा बाँची ❀ औ रुपना से कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आल्हा आये क्यों हमरे यहँ ❀ ओछी जाति बनाफर क्यार ॥
अबहीं जाय कहो आल्हा से ❀ अपनो कूच जायँ करवाय ॥
गौनों दीहैं तब बेटी को ❀ यह जैचँदसे कहियो जाय ॥
इतनी सुनिके रुपना चलि भौ ❀ औ लश्कर में पहुँचो आय ॥
हाल सुनायो सब पाती को ❀ सुनके आल्हा बहुत रिसाय ॥
बोले ऊदन नृप जैचँद से ❀ तुम सुनलेउ कनौजी राय ॥
दूजी करि हैं जो गंगा धर ❀ बूँदी शहर लिहौं लुटवाय ॥
बोले जैचँद तब ऊदन से ❀ धीरज धरो उदैसिंह राय ॥
यह कहि कलमदान मँगवायो ❀ पाती लिखन लाग निजहाथ ॥
स्वस्ति श्री नारायण लिखिके ❀ ता पीछे से लिखी जुहार ॥
ताके पीछे लिखी हकीकति ❀ पढ़िओ याहि बुँदेले राय ॥
नीकी साइति पर गौना दे ❀ हँसिके करो सुयशको काम ॥
बैर कियेते कछु बनिहैं ना ❀ सोतुम समुझिलेउ मन माहिं ॥
आल्हा ब्याहे नैना गढ़ में ❀ नृप नैपाली हैं सरनाम ॥
मलिखे ब्याहे पथरी गढ़ में ❀ गजराजा घर कियो विवाह ॥
ऊदन ब्याहे नरवर गढ़ में ❀ नरपति राजा के घर माहिं ॥
सुलिखे ब्याहे शहर कमायूँ ❀ जहँ हैं रतनसिंह नरराय ॥
नगर बुखारा के महराजा ❀ जो रणधीर सिंह बलवान ॥
तिनके घरमें धाँधू ब्याहे ❀ जिनको जानत सकल जहान ॥
ब्रह्मानँद ब्याहे दिल्ली में ❀ अगुआ रहे बनाफर राय ॥
इन्दल ब्याहे बलख बुखारे ❀ जहँ अभिनंदन को है राज ॥
जो शुभ लक्षण हैं क्षत्रिन में ❀ सो आल्हा में परत दिखाय ॥
कौन बात में वो ओछे हैं ❀ सो तुम समुझि लेउ महराज ॥
लड़े न जितिहो तुम आल्हा से ❀ ताते मानो कही हमार ॥
हँसी खुसी से गौना दै देउ ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी लिखिकै नृप जैचँद ने ❀ पाती रुपनै दई गहाय ॥
चलिभौ रुपना तब लश्कर से ❀ औ फाटक पर पहुँचो आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाल बतायो दरबानी को ❀ बीच कचहरी गयो समाय ॥
करी बंदगी गंगाधर को ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची ❀ मनमें बहुत गयो खिसिआय ॥
ज्वाब लिखो राजा जैचँद को ❀ पढ़ियो याहि कनौजी राय ॥
सहजमें गौनों हम दीहैं ना ❀ चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
आल्हा ऊदन को संग लाये ❀ सो तुम इनहिं देउ पठवाय ॥
देश देश में सब जानत हैं ❀ ओछी जात बनाफर राय ॥
हमरी हानी जग में हुइ है ❀ ऐ हैं इहाँ बनाफर राय ॥
हँसी खुशी हमसे चाहे जो ❀ तौ आल्हा को लेउ निकारि ॥
कही हमारी जो मानौ ना ❀ तो तुम लौटि जाउ महराज ॥
यहिबिधि पाती लिखि गंगाधर ❀ सो रुपना को दई पकराय ॥
पाती लैके रुपना चलिभौ ❀ औ लश्कर में पहुँचो आय ॥
पाती बाँची राजा जैचँद ❀ गुस्सा गई देह में छाय ॥
बोले जैचँद तहँ आल्हा से ❀ लश्कर तुरत लेउ सजवाय ॥
काम न बनिहैं अब लड़िबे बिन ❀ ताते जल्द होउ तैयार ॥
इतनी सुनते आल्हा चलि भै ❀ औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
बोलि नगड़ची को बीरा दौ ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा दल के भीतर ❀ क्षत्री सजन लगे ततकाल ॥
पहले डंका में जिन बन्दी ❀ दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन ❀ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
अपनी अपनी असवारिन पर ❀ सिगरे शूर भये असवार ॥
इतते फौज चली कनवज को ❀ उतते फौज बुँदेले क्यार ॥
लगि गइँ तोपैं दोनों दलमें ❀ मुर्चा बंदी दई कराय ॥
हुक्म हो गया दोनों दल में ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी सब तोपन पै ❀ तुरतै बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ धुँअना रहो सरग मँड़राय ॥
अरर गोला छूटन लागे ❀ सरसर परी तीर की मारु ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सननन सननन गोला छूटे ❋ कह कह करै अगिनियाँ बान ॥
दोनों फौजन के संगम में ❋ अंधाधुन्ध तोपकी मारु ॥
गोला लागै जेहि हाथी के ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहि जाय ॥
गोला लागै जेहि घोड़ा के ❋ चारौ सुम्म गर्द हुइ जाय ॥
गोला लागै जौन ऊँट के ❋ सो गिरि परे चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जेहि क्षत्री के ❋ ताकी त्वचा सरग मड़राय ॥
गोला जँजिरहा ज्यहिके लागै ❋ ताके हाड़ मास छुटि जाय ॥
कम्ब को गोला जेहिके लागै ❋ सो लत्ता अस जाय उड़ाय ॥
बानको डण्डा ज्यहि के लागै ❋ ताके दुइ खण्डा हुइ जाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ कोई कुँवर न टारै पाँव ॥
तोपैं धै धै लाली हुइ गइँ ❋ चुटकिन के गये मास उड़ाय ॥
तोप रहकला पीछे छाँड़े ❋ रहिगौ चारि कदम मैदान ॥
झुके सिपाही दोनों दल के ❋ लम्बे बन्द करें हथियार ॥
साँगैं चलन लगीं दोनों दल ❋ ऊपर बर्छिन की भइ मारु ॥
छुटे पिचिका हैं लोहुन के ❋ औ बुबकारिन बोले घाव ॥
हौदा भरिगे तहँ लोहू से ❋ चरबी अंग गई लपटाय ॥
भारी मारु भई बर्छिन की ❋ भारी भई साँगि की मारु ॥
टूटिके भाला दुइ खण्डा भये ❋ लटुआ कटि बर्छिन की जायँ ॥
दोनों फौजन के अंतर में ❋ रहिगौ डेढ़ कदम मैदान ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै ❋ बोलै छपक छपक तलवार ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के ❋ कटि कटि गिरैं केसरिहा ज्वान ॥
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❋ औ असवारन से असवार ॥
हौदा मिलिगे हैं हौदा सँग ❋ हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
सात कोस के चौ फैरा में ❋ चारौ ओर चलै तलवार ॥
पैग पैग पर पैदल गिरि गये ❋ तिनके दुदुइ पैग असवार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

रेख उठंते छत्री कटि गये ❀ तिनघर तिरियनकौनहवाल ॥
हाथी डारे बिसे बिसे पर ❀ छोटे पर्वत की उनहार ॥
कटे भुसुंडा जिन हाथिन के ❀ धरती गिरे करौटा खाय ॥
कटि गये कल्ला जिन घोड़नके ❀ सो गिरि परे भूमि भहराय ॥
कटि भुजदण्डै रजपूतन की ❀ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
डारी ढालैं जो लोहू में ❀ मानौ कछुआसी उतरायँ ॥
पगिया डारीं जो लोहू में ❀ मानौ फेन रहा उतराय ॥
परे दुशाला हैं लोहू में ❀ जनु नद्दी में परी सेवार ॥
हैं बंदूकें जो लोहू में ❀ मानौ नाग रहे मन्नाय ॥
डारे घैहा हैं खेतन में ❀ जिनके प्यास २ रटलागि ॥
मुहर कटोरा पानी हुइ गौ ❀ रणमें कोइ न पूछे बात ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदन कहै पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहींहौ ❀ तुम सब भैया लगो हमार ॥
जीतिके चलिहौ जो बूँदी से ❀ दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
झुके सिपाही कनवज वारे ❀ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
उत्तर घेरो नुनि आल्हाने ❀ दक्खिन झुके उदैसिंह राय ॥
पच्छिम पहुँचे मीरा सैयद ❀ पूरब ढेबा पहुँचो जाय ॥
बीच में लश्कर बूँदी वारो ❀ चारो ओर चले तलवारि ॥
चारिलाख लश्कर बूँदी को ❀ कनउज वारेन दियो गिराय ॥
डेढ़ लाख जूझे कनवज के ❀ ऐसी कठिन चली तलवार ॥
बचे बचाये जो बूँदी को ❀ अपने लै लै भगे परान ॥
मोती जवाहिर ने जब देखो ❀ हमरो लश्कर गये बिलाय ॥
घोड़ा फेंक्यो तब मोती ने ❀ औ ऊदन तर पहुँचे आय ॥
बोले मोती बघ ऊदन से ❀ अब तुम लड़ो हमारे साथ ॥
यह मन भाय गई ऊदन के ❀ औ समुहें पर पहुँचे आय ॥
लई कमनियाँ तब मोती ने ❀ अपनो लीन्हों तीर निकारि ॥
चेहरा मारो बघ ऊदन को ❀ ऊदन घोड़ा दियो उड़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कावा दैके रस बेंदुल को ❋ फिरिके सन्मुख पहुँचे आय ॥
खैचि शिरोही लइ मोती ने ❋ औ ऊदन पर राखो जाय ॥
पाँच शिरोही हनि हनि मारी ❋ ऊदन दीनों ढाल अड़ाय ॥
टूटि शिरोही गइ मोती की ❋ मोती मनमें सोचन लाग ॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी ❋ औ मोतीको दियो गिराय ॥
डण्ड बाँधिके तहँ मोती को ❋ औ लश्कर में दियो पठाय ॥
देखि हाल यह कुँवर जवाहिर ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लइ जल्दी से ❋ औ ऊदन पर पहुँचे जाय ॥
तौलौं ढेबा दाखिल हुइगौ ❋ आगे बढ़िके कही सुनाय ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ हमसे खेलौ जूझ अघाय ॥
इतनी सुनतै तुरत जवाहिर ❋ समुहें हूलि दई तलवार ॥
बाँयेसे घोड़ा दहिने हुइगौ ❋ ढेबा लीन्हीं चोट बचाय ॥
कियो जवाहिरको गाफिल तब ❋ तुरतै डंड लई बँधवाय ॥
सो पठवाय दियो लश्कर में ❋ जीतिको डंका दियो बजाय ॥
मुर्चा फेरि दियो क्षत्रिनने ❋ औ डेरनमें पहुँचे आय ॥
भई लड़ाई यह नवमी में ❋ अगहन शुदी भूमि सुतवार॥
यक दिन बीच रह्यो गौने को ❋ जीते जंग बनाफर राय ॥
ताही दिन ब्रह्मानँद आये ❋ आये साथ बीर मलिखान ॥
राजा आये सब गाँजर के ❋ बारह कुँवर बनौधे क्यार ॥
डेरा परिगै तहँ कोसन लौं ❋ तम्बू तने बनातन क्यार ॥
छाय लालरी गइ तम्बुन की ❋ शोभा कछू कहीना जाय ॥
सुनी खबरि जब गंगाधरने ❋ दोनों बाँधि गये पुत्र हमार ॥
मन सकुचाने गंगाधर तब ❋ देबी कि मठिया पहुँचे जाय ॥
होम कराय दियो देबी को ❋ अस्तुति करनलाग करजोरि ॥
जयजय माता सब दुख हारिनि ❋ तारनहार सकल संसार ॥
आजु आपदा हमपर परिगइ ❋ दोनों बाँधिगये पुत्र हमार ॥
होउ सहायक अब माता तुम ❋ हमरो संकट देउ मिटाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोली आभा तब देवी को ❀ तुम सुनि लेउ बुँदेले राय ॥
समुझ तुम्हारी ना नीकी है ❀ तुम हठ करत वृथा बिनकाज ॥
आल्हा बरदानी हमरो है ❀ है बरदानि बीर मालिखान ॥
बड़ो भक्त हमरो ऊदन है ❀ तैसोइ ब्रह्मानँद सरदार ॥
इनसे लड़िके तुम जितिहौ ना ❀ ताते मानौ बचन हमार ॥
हँसी खुशी से दायज दैके ❀ बेटी बिदा देउ करवाय ॥
सुनिके कायल भये गंगाधर ❀ समुहें रहिगये शीश नवाय ॥
तुरतै कूच कियो मठिया ते ❀ औ महलन में पहुँचे जाय ॥
आवत देखो जब राजा को ❀ रानी पास पहूँची आय ॥
हाथ जोरिके पाँयन परिगई ❀ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
बड़े लड़ैया महुबे वारे ❀ जिनसे हारि गई तलवारि ॥
थोड़ी उमरि में इन लड़िकन ने ❀ माड़ौ लिये बापके दाँय ॥
आल्हा व्याहे नैपाली घर ❀ ऊदन नरवर कियो बिवाह ॥
जालिम राजा है बिसहिन को ❀ ताकी बेटी लाये बियाहु ॥
बलख बुखारेके अभिनन्दन ❀ तहँ इन्दलको करो बियाहु ॥
कठिन जादवा बैरी वारे ❀ तहँते चौथि लई करवाय ॥
रचो स्वयंबर जब दिल्ली पति ❀ तब चढ़ि गये बनाफर राय ॥
हाथि पछारे दरवाजे पर ❀ औ ब्रह्माको करो बियाह ॥
लड़न जितिहो इन लरिकन से ❀ बालम मानौ कही हमारि ॥
गौना दै देउ हँसी खुशी से ❀ नहिं सब जै हैं काम नशाय ॥
इतनी सुनिके राजा बोले ❀ रानी मानिहौं कही तुम्हार ॥
चलि भये राजा तब महलन से ❀ औ दरबार पहूँचे आय ॥
कागज लैके कलपी वारो ❀ अपनो कलम दान लै हाथ ॥
पाती लिखन लगे जैचँद को ❀ राजा मानो बचन प्रमान ॥
सिद्धि श्रीनारायण लिखि के ❀ ता पीछे से लिखो प्रणाम ॥
मोति जवाहिर जो लरिका हैं ❀ तिनको मुश्क देउ छुड़वाय ॥
हँसी खुशी से गौना दी हैं ❀ अबना रखिहैं देर लगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यहि बिधि पाती लिखि गंगाधर ❀ सो धामन को दई गहाय ॥
धामन चलिभो तब बूँदी से ❀ औ लश्कर में पहुँचो जाय ॥
पाती दीन्हीं गंगाधर की ❀ जैचँद पाती बाँचन लाग ॥
बाँचिके पाती राजा जैचँद ❀ आल्है तुरत लियो बुलवाय ॥
हाल सुनाय दियो पाती को ❀ तब आल्हा ने कही सुनाय ॥
मुश्क खोलिदेउ दोउ लरिकनकी ❀ तुरतै मुश्क दई खुलवाय ॥
बोले जैचँद दोउ लरिकन से ❀ गौने कि त्यारी देउ कराय ॥
कूच कराय दि हैं परसौं हम ❀ सुनतै लरिकन करी जुहार ॥
तहँते चलि भये मोती जवाहिर ❀ औ अपने घर पहुँचे जाय ॥
खबरि कराय दई महलन में ❀ लागे होन मंगला चार ॥
अपने पंडित को बुलवायो ❀ औ वेदी को कियो बिचार ॥
मंडप सजवायो आँगन में ❀ कदली खम्भ दियो गड़वाय ॥
कलश सोबरन के मँगवाये ❀ गंगाजल से दियो भराय ॥
तिनपर दीपक बारि धराये ❀ मणि चमकीली दई सजाय ॥
रंग बिरंगे दीपक हुइ गये ❀ शोभा कछू कही ना जाय ॥
बन्दनवार बँधी द्वारन पर ❀ झालर लगी मोतियन क्यार ॥
रौशन चौकी कहुँ कहुँ बाजे ❀ कहुँ कहुँ बजन नगाड़ा लाग ॥
इन्द्रधामसम राजमहल सब ❀ सोहै तहाँ बुंदेले क्यार ॥
भयो बुलौआ है गौने को ❀ भारी भीर लगी नृपद्वार ॥
आये क्षत्री कनउज वारे ❀ महुबे केर शूर सरदार ॥
राजा जैचँद लाखनि राना ❀ बारह कुँवर बनौधे क्यार ॥
गाँजर वारे सिगरे राजा ❀ एक से एक सूर सरदार ॥
आल्हा ऊदन मलिखे इन्दल ❀ गंगा आदि शूर बलवान ॥
रघुबंशी ठाकुर यदुबंशी ❀ आये अग्निबंश चौहान ॥
भदवरिया गहलौत रुहेले ❀ कछवाहे राठौर पँवार ॥
गौतम बैस सजे मण्डप तर ❀ वीर बघेले औ परिहार ॥
भयो बुलौआ तब कुसुमा को ❀ औलाखनिको लियो बुलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गाँठ जोरि बैठाय चौकपर ❀ गणपति गौरि दिये पुजवाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❀ पंडित बेद उचारन लाग ॥
नेग जोग हुइगे सबही बिधि ❀ आल्हा नेगी लिये बुलाय ॥
गहनौ बाँटि दियो सबही को ❀ दान दक्षिणा दई बँटाय ॥
साजि पालकी तहँ मँगवाई ❀ कुसुमकि बिदा लई करवाय ॥
दायज दीन्हों पाँच लाखको ❀ राजा हाथ जोरि भा ठाढ़ ॥
करी अधीनी नृप जैचँद से ❀ हमरो खता माफ हुइ जाय ॥
सब लायक हैं देवे वारे ❀ हमसे चूक भइ यहि बार ॥
करी बड़ाई तब जैचंद ने ❀ औ राजा से कही सुनाय ॥
तुम सब लायक बूँदी वारे ❀ गुरु ये नातेदार हमार ॥
खता माफ कीन्ही हमने सब ❀ मनमें करो न सोच बिचार ॥
पाँच लाखको दायज लैके ❀ सब छकड़न में दियो भराय॥
कूँच कराय दियो बूँदी से ❀ औ कनवज में पहुँचे आय ॥
ब्रह्मा मलिखे गे महुबे को ❀ निज घरगये न्योतहा ज्वान ॥
तिलका आई रंग महल से ❀ परछनि करी बहूकी आय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❀ महलमें बहुअरि गई लिवाय॥
यहिबिधि गवनभयो लाखनिको❀ सोहमलिखिकै दियो सुनाय ॥

❀ इति लाखनि का गौना समाप्त ❀

—:❀❀❀❀❀:—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ सिरसागढ़ की लड़ाई।

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश॥

लाज गई बच्छराज के साथ तलवारिगई मलिखान अकेले॥
काढ़िके तेग फिरो दलमें पृथिराज को फौजन मारिकै ठेले॥
लोहूके नार पनारे चले मानौ रँगरेज कुसुम्भ सनेले॥
ठाढ़ी कहै मलिखान कि नारि हैं आवत कंथ बसंत सो खेले॥

❀ आल्हा ❀

सुमिरन कीजै श्री गणपति को ❀ हैं जो ऋद्धि सिद्धि दातार॥
बहुरि मनैये जगदम्बे को ❀ भूले अक्षर लेहिं सँभारि॥
सदा सुमिरिये शिवशंकर को ❀ जो दीननपर सदा दयाल॥
जो कोउ भक्ति करे शंकर की ❀ ताको तुरतै करैं निहाल॥
फूलमती देवीको सुमिरौं ❀ सुमिरौं बहुरि संकटामाय॥
बहुरि सरस्वति को सुमिरौं मैं ❀ माता कंठ बिराजौ आय॥
समर लिखौं मैं गढ़ सिरसाको ❀ होउ सहाय शारदा माय॥
तुम्हरे अखाड़े में गावत हौं ❀ बेड़ा पार करो मनलाय॥
कमल न प्रगटै कहु पर्वत पै ❀ मोती लगत न देखे डार॥
गई जवानी फिरि बहुरै ना ❀ माँगे रूप न मिलै उधार॥
माहिल राजा उरई वाले ❀ है जो चुगुलन में सरदार॥
यकदिन सोचे अपने मन में ❀ खाली भूमि महोबे क्यार॥
देउँ बढ़ावा अब पिरथी को ❀ महुबो नगर लेउ लुटवाय॥
सोचि समझिके तब माहिल ने ❀ लिल्ली घोड़ी लई मँगाय॥
कूदि बछेरीपर चढ़ि बैठे ❀ औ दिल्ली की पकरी राह॥
पाँच दिनाकी मंजिलि करिके ❀ पहुँचे गढ़ दिल्ली में जाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जहाँ कचहरी पृथीराज की * माहिल तहाँ पहूँचे जाय ॥
उतरि बजेरी ते मुँइ आये * घोड़ी थामि लई थनवार ॥
लगी कचहरी पृथीराज की * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
सोने सिंहासन राजा बैठे * ऊपर चौंर ढुरे गजगाह ॥
करी बन्दगी पृथ्वीराज को * माहिल रहिगै माथ नवाय ॥
नजर बदलिगई पृथीराज की * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ आवौ उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
हाल सुनावौ तब महुबे को * कैसे बसैं रजा परिमाल ॥
बोले माहिल तब राजा ते * तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
सबै कुशल है मोरि उरई में * बैठे राज्य करौं महराज ॥
एक अँदेशा है हमरे जिय * खटकत रातदिना महराज ॥
किला बनाय लियो धूरे पर * सबके धूरे लिये दबाय ॥
एक बात हम तुमहिं बतावैं * सो तुम मानौ बचन हमार ॥
आल्हा ऊदन कनउज छाये * सुनी परी महोबा गाँव ॥
लश्कर सजवावौ जल्दी ते * ऐसा समय न बारम्बार ॥
अकिले मलिखे हैं सिरसामें * तुमते लड़े न पैहैं पार ॥
पहिले लूटिलेउ सिरसा को * फिरि महुबे को लेउ लुटाय ॥
इतनी सुनते पृथीराज ने * अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
बजे नगारा मेरे दल में * लश्कर साजि होय तैयार ॥
बजो नगारा जब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै * बाँके घोड़न के असवार ॥
कोउ नालकिन कोउ पालकी * कोऊ गजरथ भये सवार ॥
लश्कर साजिगयो दिल्ली वालो * डंका होन गोलमें लाग ॥
आदि भयंकर जो हाथी रहै * सो सजवायो बीर चौहान ॥
अपनो साजकरो दिल्लीपति * शोभा एक न बरनी जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पहिरि पैजामा मिसरुवाला * जामां पहिरि दुदामी क्यार ॥
दुइ पिस्तौलैं अगल बगल पर * बायें सिंहिनि मूठि कटार ॥
बारह छुरियां कम्मर बाँधी * लीन्हें हाथ ढाल तलवारि ॥
पाग सेंदुरी सिरपर सोहै * कलँगी मोतीचूर के लागि ॥
गजभरि छाती पृथ्वीराज की * मानो नैनन बैर मसाल ॥
सजिकै पृथीराज ठाढ़े भै * मानों इन्द्र अखाड़े जाय ॥
सिढ़ियन सिढ़ियन पिरथी चढ़िगै * धरिधरि कुस्मकरिन पर पाँव ॥
सजी सवारी पृथीराज की * शोभा कछू कही ना जाय ॥
हाथी यकदंता सजवायो * तापर चढ़ो चौड़िया राय ॥
ताहर बेटा पिरथी वाला * भा दल गंजन पर असवार ॥
भौरानँद हाथी सजवायो * तापर धाँधू भयो सवार ॥
पारथ बेटा पृथीराज को * अपने घोड़ा भयो सवार ॥
चन्दन बेटा जो पिरथी को * सो घोड़ा पर भयो सवार ॥
हाथी सजवायो जल्दी ते * तापर धीरसिंह असवार ॥
दुइसै हाथी खूनी साजे * दुइसै मुड़िया लिये सजाय ॥
दुइसै हाथी मस्ता सजिगै * दुइसै भूरा लिये सजाय ॥
कट्टर हाथी दुइसै कहिये * सो सजवाय पिथौरा राय ॥
नौसै हाथी के हलका में * झूमै आदभयंकर ठाढ़ ॥
तीनि लाख पैदल सजवाये * साजे चार लाख असवार ॥
सात लाख ते पिरथी चलिभै * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
सात दिनाकी मंजिल करिके * पहुँचे गढ़ सिरसा में जाय ॥
चारिकोस जब सिरसा रहिगयो * अपने डेरा दिये डराय ॥
चौड़ा ब्राह्मण को बुलवायो * औ यह कही पिथौरा राय ॥
किला गिराय देउ सिरसा को * जल्दी कूच जाउ करवाय ॥
हाथी यकदन्ता सजवायो * तापर चौड़ा भयो सवार ॥
कूच कराय दियो जल्दी ते * सिरसा गढ़ को घेरो जाय ॥
यक हरकारा बदलत आयो * औ मलिखे पै पहुँचो आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करि सलाम बोला मलिखे ते * तुम पर चढ़े बीर चौहान ॥
सिरसा घेरि लियो चौड़ाने * सो तुम खबरदार होइ जाव ॥
यह सुनि बुलवायो सुलखे को * औ यह कही बीरमलिखान ॥
फौज सजाय लेउ जल्दी ते * अब ना राखो देर लगाय ॥
इतनी सुनते सुलखे चलि भये * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
हुक्म फेर दियो सब लश्कर में * जल्दी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा तब सिरसा में * क्षत्री बाँधि चले हथियार ॥
सजिगै क्षत्री सिरसा वाले * जिनको सजत न लागीबार ॥
घोड़ी हिरौंजिन को सजवायो * सुलखे फाँदि भये असवार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई * तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
जबही चढ़न लगे घोड़ी पर * सन्मुख छींक भई ठहनाय ॥
ब्रह्मा माता बोलन लागी * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
अशकुन होइगयो है घरही ते * तुम ना जाउ युद्ध मैदान ॥
बोले मलिखे तब माता ते * माता सुनो हमारी बात ॥
सगुन मनावत बनियां बाटू * जो धरि मैार बियाहन जात ॥
शगुन मनावैं क्या क्षत्री है * जो रण चढ़िके लोह चबात ॥
हमना जावैं जो दंगल में * लूटे शहर पिथौरा राय ॥
आशीर्वाद देउ माता तुम * अपनो हुक्म देउ फरमाय ॥
हुक्म दे दियो तब माता ने * जुग २ जिओ लड़ैते लाल ॥
चरण लागिकै तब माता के * तुरतै चले बीर मलिखान ॥
पहुँचे जाय तुरत धूरे पर * लश्कर साथ बीर सुलखान ॥

चौड़ाब्राह्मणसेबीरमलिखानकीलड़ाई।

* आल्हा *

सुमिरन करिकै रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
लिखौं लड़ाई अब चौड़ा की * जीते जंग बीर मलिखान ॥
समुहें देखो जब मलिखे को * तब चौड़ा ने कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हुक्म दियो है पृथीराज ने * सिरसा किला देउ गिरवाय ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * ब्राह्मण सुनो हमारी बात ॥
अपने बल हम किला बनायो * सो कैसे अब देउँ गिराय ॥
होय पराक्रम पृथ्वीराज में * हमरो किला देयँ गिरवाय ॥
मारौं खोद खोद दिल्ली लौं * टटुआ टायर लेउँ छँड़ाय ॥
गुस्सा होइकै तब चौड़ा ने * अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दै देउ सब तोपन में * औ सिरसा को देउ उड़ाय ॥
इतनी सुनतै झुके खलासी * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * धुअनां रह्यो सरग में छाय ॥
तोपैं छुटन लगीं तुरतैं तब * गोली होय दनाक दनाक ॥
बाण अगिनियां छूटन लागे * सरसर परी तीर की मारु ॥
चारि घरी भरि गोला बरस्यो * तोपैं लाल बरन होइ जायँ ॥
तोपैं छोड़ी तब ज्वानन ने * लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
दोनों फौजैं इकमिल होइ गईं * क्षत्रिन खैंचि लईं तलवारि ॥
खटखट तेगा बाजन लागी * बोले छपक छपक तलवारि ॥
चलै जुनव्वी औ गुजराती * ऊनां चले बिलायति क्यार ॥
बाजै तेगा बर्दवान के * कटिकटि गिरैं केसरिहाज्वान ॥
मुर्चन मुर्चन नचै कबुतरी * मलिखे कहँ पुकारि पुकारि ॥
भागि न जैयो कोउ मोहरा ते * यारो धर्म तुम्हारे हाथ ॥
मोर जैहो जो खेतन में * होइहैं जुगन जुगन लौनाम ॥
खटिया परिके जो मरि जैहौ * कलिमें कोउ न लै हैं नाम ॥
दै दै पानी रजपूतन को * मलिखे आगे दिये बढ़ाय ॥
घोड़ी कबूतरी दाबे आवैं * करमें नग्न लिये तलवारि ॥
जैसे भेड़िन भेड़हर पैठे * ज्यों गौवन में छूटै बाघ ॥
जैसे सुआ सुपारी कतरैं * जैसे खेती लुनै किसान ॥
तैसे रण में मलिखे पैठे * क्षत्रिन काटि करैं खरिहान ॥
अकिले मलिखे की धमकिन में * सबदल रैन बेन होइ जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भगे सिपाही चौड़ा वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब चौड़ाने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई मलिखे को * अबतुम खबरदार होइ जाउ ॥
यहसुनि मलिखे बोलन लागे * पहली चोट करो तुम आय ॥
साँग उठाई तब चौड़ा ने * सो मलिखे पै दई चलाय ॥
घोड़ी कबुतरी दहिने होय गई * नीचे साँग गिरी अरराय ॥
खैंचि शिरोही लइ मलिखे ने * औ चौड़ा पर पहुँचे जाय ॥
चोट चलाई तब हौदा पर * हौदा टूक टूक होइ जाय ॥
मलिखे मनमें सोचन लागे * हम ना करैं बिप्र को घात ॥
बाँधि जँजीरन लियो चौड़ा को * अपने दलमें राखो जाय ॥
चुरिया बिछिया त्यहि पहिराई * औ करि दियो जनाना भेष ॥
माथे बेंदी दई चौड़ा के * नाक नथुनियाँ दइ पहिराय ॥
डंड बाँधिकै उन चौड़ा के * सेंदुर माँग दई भरवाय ॥
एक पालकी तुरत मँगाई * तामें ताहि दियो बैठाय ॥
परदा डारि दियो पलकी पर * दुई हरकारा लिये बुलाय ॥
बहु समुझाय दियो मलिखे ने * पृथीराजते कहियो जाय ॥
चौड़ा जीति गयो सिरसा में * सिरसा किला दियो गिरवाय ॥
डोला फँदायो चन्द्रावलि को * तुम्हरे पास दियो भिजवाय ॥
इतनी सुनतै चलो साँडिया * पलकी उठी चौड़िया क्यार ॥
पलकी आई पृथीराज पै * मनमें बहुत खुशी चौहान ॥
जो जो बात कही मलिखेने * सो हरकारा कही सुनाय ॥
खोलिके पलकी राजा देखो * तामें चौड़ा परो दिखाय ॥
मन खिसियाने पृथीराज तब * दाँतन अँगुरी रहे दबाय ॥
बड़ो बीरहैं सिरसा वाले * जासे हारि गई तलवारि ॥
डंड खोलिके तब चौड़ा के * मनमें सोचि रहे चौहान ॥
बोला पारथ तब पिरथीते * दादा धीरधरौ मन माहिं ॥
मारि गिरैहौं मैं मलिखे को * नाहक सोच करतहौ आप ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ पारथ और मलिखानकी लड़ाई

* आल्हा *

सुमिरन करिके नारायण को * औ गणपति के चरण मनाय ॥
लिखौं लड़ाई अब पारथ को * यारो सुनियो कान लगाय ॥
सूरज उदै भये पूरब में * किरणन कीन जगत उजियार॥
पारथ बीर उठा पलकीते * लश्कर हुक्म दियो फरमाय ॥
बजे नगारा हमरे दल में * जल्दी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजो तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़िया हाथी चढ़िगै * बाँके घोड़न के असवार ॥
पैदल सजिगै सब लश्कर के * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
सुनी खबरि जब नरमलिखे ने * अपनो लश्कर लियो सजाय ॥
घोड़ी कबुतरी को सजवायो * तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * औ धूरे पर पहुँचे जाय ॥
बोले पारथ नर मलिखे ते * अब तुम खबदार होइजाव ॥
सम्हरि के बैठो तुम घोड़ी पर * तुमरो काल रह्यो नियराय ॥
यहसुनि मलिखे बोलन लागे * समुहें लड़ौ आय मैदान ॥
होय पराक्रम जो देही में * सो तुम हमें देउ दिखलाय ॥
इतनी सुनतै पारथ ठाकुर * तुरतै हल्ला दियो कराय ॥
खट खट तेगा बाजन लागो * क्षत्रिन मारु २ रट लागि ॥
मलिखे पारथ दोनों भिड़ि गये * अपनी अपनी चोट चलाय ॥
कबहुंक तेगा पारथ मारै * कबहुंक हनैं बीर मलिखान ॥
बज्र समान देह दोनों की * तामें तेग नाहिं अनिआय ॥
दिन भर बीते लड़त २ तहँ * संध्या काल बन्द होइ जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भोर होतखन दोनों अभिरें * यहिबिधि बीतिगयो दिनरात ॥
यकदिन मलिखे सोचन लागे * औ रानी पै पहुँचे आय ॥
बोली रानी तब मलिखे ते * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
कौन बातको तुम सोचत हौ * सो तुम हमें देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे तब रानी ते * हमते कछू कही ना जाय ॥
पत्थर देही है पारथ की * जामें तेग नाहिं अनिआय ॥
सात दिना बीते दंगल में * मारे न मरे पिथौरा लाल ॥
बोली गजमोतिनि मलिखे ते * हमयक जतन देउँ बतलाय ॥
दिनभर देही पाथर कहिये * संध्यासमय मोम सम जान ॥
काल्हि लड़ाई करो रात में * तुम्हरोकाम सिद्धिहोइ जाय ॥
हालजानि यह नरमलिखे तब * मनमें बहुत खुशीहोइ जाइ ॥
भोर होतखन धावा करि दियो * दोनों लड़न लगे मैदान ॥
चारि पहर बीते दंगल में * संध्याकाल रह्यो नियराय ॥
मुर्चा फेरि दियो पारथ ने * तबहँसिकही बीर मलिखान ॥
भारी योधा हो परथ तुम * क्यों समुहें ते चले बराय ॥
धर्म नहीं है यह क्षत्रिन के * जो हटि धरे पिछारू पाँव ॥
जूझ अघाय करो हमरे सँग * हो तुम बीर पिथौरा लाल ॥
तेहा आय गयो पारथ को * समुहें लड़न लाग तत्काल ॥
करी चोट जबही मलिखे पर * मलिखे लीन्हीं चोट बचाय ॥
सेल उठाई तब मलिखे ने * सो पारथ पर दई चलाय ॥
तुरतै गिरगे पारथ ठाकुर * मलिखे खैंचि लई तलवारि ॥
मूड़ काटि लियो तब पारथ को * औ लश्करको दियो भगाय ॥
सुनी खबरि जब पृथीराज ने * पारथ जूझि गयो मैदान ॥
बहुत सोच कीन्हों पिरथी तब * भारी शूर बीर मलिखान ॥

—:****:—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ धीरसिंह व मलिखान की लड़ाई।

—:*****:—

* आल्हा *

सदाभवानी दाहिनि कहिये * औ सन्मुख पर रहैं गणेश ॥
रक्षाकरैं पाँच देवता मिलि * नित प्रति ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
जूझे पारथ जब खेतन में * पाई खबरि पिथौरा राय ॥
तुरतै बुलवायो धाँधू को * साँतउ शूर लियो बुलवाय ॥
करी सलाहैं महाराज ने * बीरा तुरतै दियो धराय ॥
कौनसो क्षत्री है हमरे दल * लावै बाँधि बीर मलिखान ॥
मुश्क बाँधिके नर मलिखे को * हमरी नजरि गुजारै आय ॥
पहर एक बीराको हुइगयो * सबके भूलि गये औसान ॥
कोउ न देखे वा बीरा तन * तब पिरथी मन सोचनलाग ॥
धीरसिंहको तुरत बुलायो * औ यह कही बीर चौहान ॥
बाँधिलैआवो तुम मलिखे को * यह तुम मानो कही हमार ॥
बात मानिकै धीर सिंहने * तुरतै बीरा लियो चबाय ॥
चढ़े धीरसिंह तब हाथी पर * चौबिस लीन्हें साथ सवार ॥
तीनि घरी मारग में बीते * औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
कहा धीरसिंह दरबानी ते * फाटक तुरत देउ खोलवाय ॥
बोले दरबानी धीरज ते * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
हाथी चढ़िके जान न देहौं * नाहीं हुक्म बीर मलिखान ॥
उतरे धीर सिंह हाथी ते * औ घोड़ा पर भये सवार ॥
दुसरे फाटक पर पहुँचे जब * तब दरबानी कही सुनाय ॥
कोउ न जावे घोड़ा चढ़िके * है यह हुक्म बनाफर क्यार ॥
यह सुनि धीरसिंह सोचेमन * कीन्हा यह प्रबन्ध मलिखान ॥
बाँधो घोड़ा तब फाटक पर * पैदल चला धीर सरदार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भीतर बँगला में पहुँचे जब * चौबिस लिये संग सरदार ॥
देखी शोभा जब बँगला की * बहुतै खुशी भयो सरदार ॥
खंभ अट्ठासी के बँगला है * जहँपर बना जड़ाऊ काम ॥
बिछे गलीचा हैं मखमल के * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
सिंहासन सोहे सोने को * बीच में बैठे बीर मलिखान ॥
हीरा दमके है माथे पर * ऊपर चौंर ढुरे गजगाह ॥
नचे कंचनी वा बँगला में * शोभा कछु कही ना जाय ॥
मचिया के सँग मचिया रगड़ैं * मोढ़ा रगड़ि २ रहि जाय ॥
एक हजार ज्वान पंजाबी * काबुल के हजार सरदार ॥
सिंह कि बैठकु क्षत्री बैठे * सबके बीच बीर मलिखान ॥
सँगके क्षत्री बाहर छोड़े * अकिला गयो धीर सरदार ॥
पाँच कदम जब मलिखे रहिगे * धीरसिंह ने करी जोहार ॥
नजरि बदलिगइ नरमलिखे की * ऊँची चौकी दई डराय ॥
बैठे धीर सिंह चौकी पर * औ मलिखे ते लगे बतान ॥
हमको भेजा है पिरथी ने * की मलिखे को लावौ साथ ॥
संग हमारे जो चलिहौ तुम * होइहैं खुशी बीर चौहान ॥
राज्य करो बैठे सिरसा में * चलिकै मिलो पिथौरा साथ ॥
बीरा चाभो हम लावन को * सो तुम राखो लाज हमारि ॥
संग न चलिहौ जो हमरे तुम * तो जग होइहै हँसी हमार ॥
यहसुनि मलिखे बोलन लागे * सुनिये धीरसिंह महराज ॥
शीश झुकैहौं परमेश्वर को * जाने जन्म दियो संसार ॥
करै अधीनी जो क्षत्री होय * ताको माता को धिरकार ॥
हमतो मिलिहैं तेगधार ते * सो तुम बचन करौ परमान ॥
बोले धीरज फिरि मलिखे ते * मलिखे मानौ बात हमार ॥
चलिके मिलिहौ पृथीराज ते * तुम्हरे देहैं प्राण बचाय ॥
फिरिके ज्वाब दियो मलिखे ने * हठना करौ हमारे साथ ॥
सात लाख ते पिरथी आये * चाहे चढ़े पचासी लाख ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करैं अधीनी ना पिरथी की * हमको कौन परी परवाह ॥
तुमतो मित्र लगत आल्हा के * आल्हा भैया लगत हमार ॥
ताते तुमको समुझावत हौं * करिहौं नाहिं अधीनी जाय ॥
काल बिराजत है सबके शिर * कोऊ आज मरे कोउ काल्ह ॥
करैं खुशामद जो काहू की * हमरो क्षत्री धर्म नशाय ॥
हमहिं भरोसा है अपने बल * जब तक हाथ रहै तलवारि ॥
हम नहिं जैहैं पृथीराज पै * चाहौ कोटि करौ परकार ॥
यह कहि दीजो पृथीराज ते * मनके मेटि लेउ अरमान ॥
सुनी बात जब यह मलिखे की * गुस्सा भयो धीर सरदार ॥
तुरतै उठिकै साँग उठाई * औ बँगला में धमकी जाय ॥
सात तवा सोनेके कहिये * तिनके वारपार होइ जाय ॥
बोले धीरसिंह गुस्सा होय * मलिखे सुनो हमारी बात ॥
सांग उखारौ या हमरे तुम * या तुम चलो हमारे साथ ॥
मलिखे सोचे अपने मनमें * है यह धीर बीर सरदार ॥
है बरदानी यहु देवी को * याको जानत सकल जहान ॥
बोले मलिखे तब धीरज ते * धीरज धरो धीर सरदार ॥
करिके सुमिरन जगदम्बे को * मनियां सुमिरि महोबे क्यार ॥
मारी ठोकर नर मलिखे ने * लैके साँग दई पकराय ॥
देखि हाल यह नर मलिखे को * धीरज गये सनाका खाय ॥
चलिभै धीरज तब सिरसा ते * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
आवत देखो धीरसिंह को * पृथीराज ने कही सुनाय ॥
हाल बताय देउ धीरज तुम * यहसुनि धीर बतावन लाग ॥
बड़ा बहादुर सिरसा वालो * जाको जग जाहिर तलवार ॥
बहुतक हमने तहँ समुझायो * मलिखे एक न मानी बात ॥
साँग गाड़ि दइ हम बँगला में * सो मलिखे ने दई उखारि ॥
जीति न पैहौ तुम मलिखे को * है तरवारि धनी मलिखान ॥
सुनो हाल जब यह पिरथी ने * मनमें गये सनाका खाय ॥
हारि मानिगये मन अपने में * है बड़ धीर बीर मलिखान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ मलिखान बिजय और सुलखान का स्वर्गबास।

—***—

दो०—सिरसा में बहु युद्ध करि, लड़े बीर सुलखान।
त्यागि प्राण रण खेतमें, पायो पद निर्वान॥

* आल्हा *

सुमिरन करि के नारायण को * लैके रामचन्द्र को नाम॥
बिजय सुनाऊँ अब मलिखे की* बर्णन करौं मरण सुलखान॥
हुक्म दे दियो पृथीराज ने * लश्कर साजि होय तैयार॥
डंका बाजी तब लश्कर में * छत्रिन बाँधि लियो हथियार॥
आदि भयंकर हाथी साजो * तापर चढ़े बीर चौहान॥
ताहर चढ़िगे दल गंजन पर * सब दल साजि भयो तैयार॥
चन्दन बेटा पृथीराज को * सोऊ साथ भयो तैयार॥
धांधू त्यार भये लरिबे को * भैरानँद पर भये सवार॥
हाथी यकदन्ता सजवायो * तापर चढ़ा चौड़िया राय॥
कूच कराय दियो लश्कर को * मारू डंका दियो बजाय॥
चारि चौंसधे के धूरे पर * पहुँची फौज पिथौरा क्यार॥
सुनी खबरि जब नरमलिखे ने * घोड़ी कबुतरी लियो सजाय॥
फाँदि बेछरी पर चढ़ि बैठे * औ लश्कर को लियो सजाय॥
घोड़ी हिरौंजिनि त्यार कराई * तापर चढ़े बीर सुलखान॥
कूच कराय दियो लश्कर को * औ धूर पर पहुँचे जाय॥
समुहें देखो नर मलिखे को * पिथी हाथी दियो बढ़ाय॥
बोले पृथीराज मलिखे ते * क्यों यहकिला लियो बनवाय॥
किला गिराय देउ अबही तुम * इतनी मानौ कही हमारि॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनतै नर मलिखे ने * पृथीराज को करी सलाम ॥
बोले मलिखे पृथीराज ते * तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
किला बनायो हम अपने बल * सो हम कैसे देयँ गिराय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं * तातें कहौ समुझि के बात ॥
धरती बज्जर हम यह देखो * तब यह किला लियो बनवाय ।
काम तुम्हारो कछु अटकोना * काहे रारि बढ़ाई आय ॥
इतनी सुनिके पृथीराज ने * नर मलिखे ते कही सुनाय ॥
किला गिरैहौ जो अबहीं ना * सिरसा गर्द दिहौं करवाय ॥
तापर ज्वाब दियो मलिखे ने * क्यों तुम वृथा करत बकवाद ॥
गर्व न राखो हम काहू को * हमको जानत सब संसार ॥
गये बरायत लै ब्रह्मा को * द्वारे हाथी दियें पचारि ॥
सातौ लरिका तुम्हरे बाँधे * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
सिरसा छीनि लियो पारथ ते * तब कहँ हते बीर चौहान ॥
इतनी सुनके पृथीराज ने * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
बत्ती दैदेउ इन तोपन में * अबहीं किला देउ गिरवाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर * तुरतै बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * चहुँदिशि धुवाँ रह्यो मँडराय ॥
अररर गोला छूटन लागे * रणमें होय दनाक दनाक ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * तो पैं लाल बरन होइ जायँ ॥
तोपैं छाड़ि दई ज्वानन ने * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
दोनों फौजन के अन्तर में * रहिगयो तीनि पैग मैदान ॥
खटखट तेगा बाजन लागो * जूझन लगे अनेकन ज्वान ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके * सबके मारु मारु रट लागि ॥
पैदल अभिरि गये पैदल सँग * औ असवारन ते असवार ॥
हौदा के सँग हौदा मिलिगये * हाथिन अड़ो दाँतसे दाँत ॥
सूँड़ि लपेटा हाथी होइगे * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
चन्दन बेटा जो पिरथी को * ताने घोड़ा दियो बढ़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जहँ पर लरत रहे नरसुलखे * चन्दन तहाँ पहुँचे जाय ॥
बोले चन्दन नर सुलखे ते * तुम्हरो काल पहुँचो आय ॥
यह कहि गुर्ज लियो चन्दन ने * सो सुलखे पर दियो चलाय ॥
चोट बचाय लई सुलखे ने * चन्दन खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका जब सुलखे पर * सुलखे दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही चन्दन मारी * सुलखे लीन्हीं चोट बचाय ॥
बोले सुलखे तब चन्दन ते * अब तुम खबरदार होइ जाव ॥
खैंचि शिरोही लइ सुलखे ने * सो चन्दन पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाई तब चन्दन ने * तापर भयो जड़ाका जाय ॥
ढाल फाटिगइ तब चन्दन की * उनको छूटि जनेवा जाय ॥
चन्दन जूझि गये खेतन में * ताहर गये सनाका खाय ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ताहर ने * औ सुलखे को दई ललकार ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर * तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
इतनी सुनिके तब सुलखे ने * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका तब ताहर पर * ताहर दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
गुर्ज उठायो तब सुलखे ने * औ ताहर पर दियो चलाय ॥
घोड़ा हटि गयो तब ताहर को * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गुस्सा होइ के तब ताहर ने * अपनो खैंचि लई तलवार ॥
चोट चलाई नर सुलखे पर * सुलखे दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली * सोने फूल गिरे झहनाय ॥
सुलखे जूझि गये खेतन में * पाई खबरि बीर मलिखान ॥
घोड़ी बढ़ाई तब मलिखे ने * औ ताहर पै पहुँचे जाय ॥
भाला लैके नर मलिखे ने * सो ताहर पर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के * ताहर घोड़ा गयो भगाय ॥
मोह आय गयो तब भाई को * सोचन लाग बीर मलिखान ॥
सुमिरन करिके रामचन्द्रको * मलिखे खैंचि लई तलवार ॥
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठे * ज्यों गौवन में छूटै बाघ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पान तमोली जैसे कतरे * जैसे खेती लुनै किसान ॥
तैसे रण में मलिखे पैठे * बहुतक क्षत्री दियो गिराय ॥
राजा अंगद नौमिषार को * सो मलिखे ने दिये गिराय ॥
राजा सूरत हाड़ा वाला * औ दिल्ली के तीनि सरदार ॥
राजा चन्द्रसेन बाँदा को * मारो तुरत बीर मलिखान ॥
अकिले मलिखेके डपटिन में * सबदल रेनबेन होइ जाय ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * अपने डारि २ हथियार ॥
मुर्चा हटि गयो पृथीराज को * लश्कर आठकोस भगि जाय ॥
मारत आवैं मलिखे ठाकुर * हाहा कार परी रणमाहिं ॥
सोचे पृथीराज अपने मन * है तलवार धनी मलिखान ॥
बड़ो लड़ैया सिरसा वाला * जासे कछु न पार बसाय ॥
पहुँचे पृथीराज दिल्ली में * सिरसा आय गये मलिखान ॥
मोहरा मारो पृथीराज को * जीते जंग बीर मलिखान ॥

—:****:—

बीर मलिखान का धोखेसे माराजाना।

और गजमोतिन का सती होना।

—:****:—

॥ दोहा ॥

सिरसा में अति युद्ध करि, महाबीर मलिखान।
धोखा दे मारो गयो, जीति गयो चौहान ॥ १ ॥

राम बनावैं सो बनिजावै * बिगरी बनत २ बनिजाय ॥
मलिखे मारे गये धोखे ते * यारो सुनियो कान लगाय ॥
माहिल राजा उरई वाले * जो परिहार गोटैया टार ॥
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठे * औ सिरसा को भये तयार ॥
सोचत चलिभये माहिल राजा * पहुँचे गढ़ सिरसा में जाय ॥
महल जौनु रहै रनिब्रह्म को * द्वारे गये महिल परिहार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खबरि सुनाई तब बाँदी ने * माहिल ठाढ़े पँवरि दुआर ॥
तुरत बुलाय लियो माहिल को * रंग महलमें पहुँचे जाय ॥
बोली ब्रह्मा तब माहिल ते * बीरन हाल देउ बतलाय ॥
कहौ क्षेम तुम गढ़ उरई में * औ अभई को कहौ हवाल ॥
बोले माहिल तब ब्रह्मा ते * बहिनी सुनो हमारी बात ॥
कुशल क्षेम है सब उरई में * बैठे राज्य करौं गढ़ माहिं ॥
देन बधाई हम आये हैं * मलिखे जीति लियो मैदान ॥
पै यक बिगरी बात यहाँ पर * रणमें जूझि गये सुलखान ॥
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागी * बीरन सुनो हमारी बात ॥
नहिं कोउ क्षत्री है दुनियां में * जीते जौनु बीर मलिखान ॥
जबलौ पाँव पद्म कायम है * जीवत रहे बीर मलिखान ॥
है बरदानी जगदम्बे को * साँची मानौ बात हमारि ॥
इतनी सुनिके माहिल राजा * मनमें बहुत खुशी होइ जाय॥
जोई रोगी को भावति रहे * सोई बैद बताई आय ॥
भेद लेन माहिल आये रहे * सो ब्रह्माने दियो बताय ॥
चलि भये माहिल तब सिरसाते * औ दिल्ली की पकरी राह ॥
पहुँचे माहिल दिल्ली गढ़ में * जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
उतरि बछेरी ते भुइँ आये * घोड़ी थामि लई थनवार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * माहिल रहिगे माथ नवाय ॥
नजरि बदलि गइ पृथीराज की * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो आवो उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल पृथीराज ते * भई सहाय शारदा माय ॥
गये रहैं हम गढ़ सिरसा को * ब्रह्मा हाल दियो बतलाय ॥
पायँ पद्म है नर मलिखे के * ताते जीति सके ना कोय ॥
पद्म फाटि जाय जो तरवा को * तौ मरि जाय बीर चौहान ॥
जतन बतावैं हम तुमको अब * सोई करो बीर चौहान ॥
ऊभे खुदवावौ धूरे पर * तामें साँगें देउ गड़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पद्म फाटि जैहैं जबहीं तब * सब बनि जैहैं काम तुम्हार ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब * साहिब भली बताई आय ॥
हुक्म दे दियो तब पिरथी ने * दुइसै ऊभे होय तैयार ॥
गढ़ सिरसा केरे धूरे पर * ऊभे तुरत लेउ खुदवाय ॥
खुले रहैं सुरंग एक सौ * यकसौ पटपर होय तयार ॥
भाला बर्छी तिनमें गड़ियो * साँग कटारी देउ गड़ाय ॥
यह सुनि चलिभे सुरँग खां दैया * औ सिरसागढ़ पहुँचे जाय ॥
उभे त्यार करे धूरे पर * भाला बर्छी दिये गड़ाय ॥
हुक्म दियो रहे जो पिरथी ने * तैसेइ ऊभे करे तयार ॥
खबरि कराई पृथीराज को * ऊभे सबै भये तैयार ॥
इतनी सुनिके पृथीराज ने * तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
हुक्म दे दियो महाराज ने * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
डंका बाजो तब लश्कर में * छत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजन खन * छत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै * बाँके घोड़न के असवार ॥
आदि भयंकर को सजवायो * तापर चढ़े बीर चौहान ॥
हाथी यक दंता सजवायो * तापर चढ़ा चौड़िया राय ॥
घोड़ा दलगंजन सजवायो * तापर ताहर भये सवार ॥
भौरानँद हाथी सजवायो * तापर धाँधू भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * सिरसा धुरो दबायो जाय ॥
डेरा डारि दिये धूरे पर * अपने तम्बू दिये लगाय ॥
कागद लैके कलपी वाला * अपनो कलम दान लै हाथ ॥
लई लेखनी कर कंचन की * पिरथी लिखनलागु अहवाल ॥
लिखो हाल यह पृथीराज ने * पढ़ियो याहि बीरमलिखान ॥
किला गिराय देउ सिरसा को * इतनी मानो कही हमारि ॥
किला गिरैहो ना जल्दी जो * तुम्हरे प्राण बचन के नाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

"आल्हखण्ड"

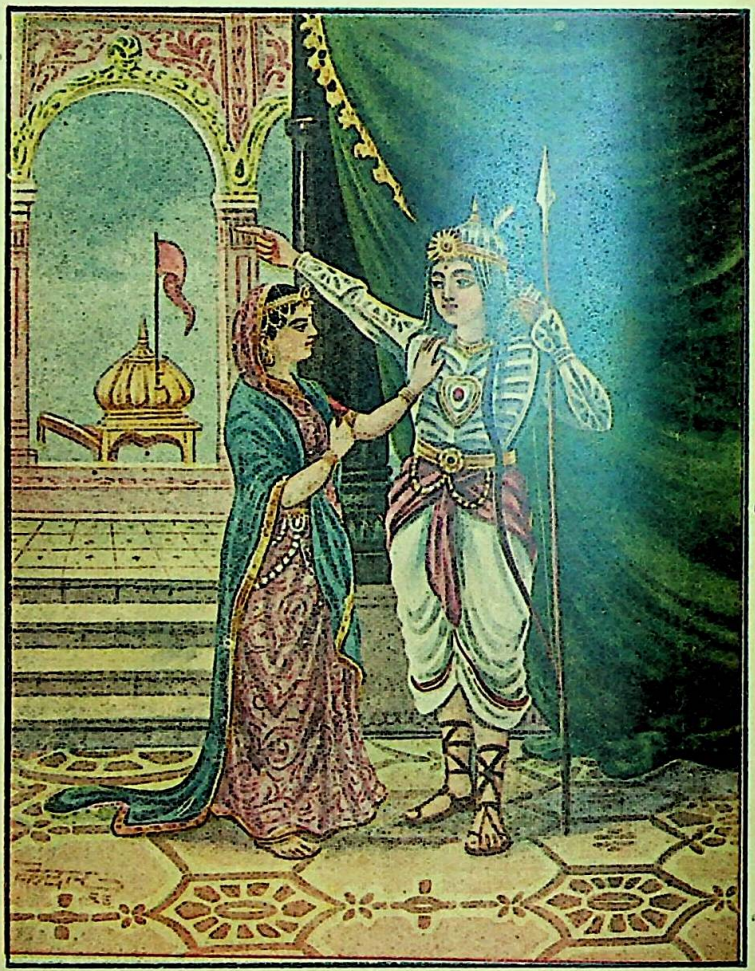

असगुन होइगयो है समुहें पर, तुम घर बैठि रहो मलिखान
मलिखे बोले तब माता ते, माता बोलो बात सम्हार

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऐसी पाती लिखि पिरथी ने ❀ सो धावन को दइ पकराय ॥
चलौ साँड़िया तब लश्कर ते ❀ औ सिरसा में पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी रहै मलिखे को ❀ धावन उतरि परो अरगाय ॥
करी बन्दगी नर मलिखे को ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती मलिखे बाँची ❀ हरकारा को दियो जवाब ॥
जाय सुनावो यह पिरथी को ❀ सिरसाकिला गिरनको नाहिं ॥
होय पराक्रम जो तुम्हरे में ❀ तो तुम किला देउ गिरवाय ॥
यहकहि हुक्म दियो मलिखेने ❀ लश्कर जल्द होय तैयार ॥
बजो नगारा तब सिरसा में ❀ लश्कर साजि भयो तैयार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई ❀ तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
समुहें छींक भई मलिखे के ❀ तब ब्रह्माने कही सुनाय ॥
असगुन होइगयो है समुहेंपर ❀ तुम घर बैठिरहो मलिखान ॥
मलिखे बोले तब माता ते ❀ माता बोलौ बात सम्हारि ॥
बैरी चढ़ि आयो सिरसा पर ❀ कैसे बैठि रहैं घर माहिं ॥
जो हम बैठि रहैं घर भीतर ❀ हमरोजियत मरन होइ जाय ॥
सगुन बिचारैं बनियें बाटू ❀ जो धरि मौर बियाहन जायँ॥
सगुन बिचारैं क्या क्षत्री है ❀ जोरण चढ़िके लोह चबायँ ॥
सदा न जीवत कोऊ रहि है ❀ कोऊ आजु मरै कोउ काल्हि ॥
जो मरि जैहैं खटिया परिके ❀ जग में कोउ न लेहैं नाम ॥
जो मरि जैहैं रण खेतन में ❀ होइहैं जुगन जुगन लौनाम ॥
सोचि समुझि यह आज्ञा दैदेउ ❀ माता बचन करौ परमान ॥
समुहें गज मोतिन ठाढ़ी थी ❀ सो मलिखे से लगी बतान ॥
माता हटकति हैं जैबे को ❀ तुमना जाउ समर मैदान ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ रानी अकिल गई तुम्हारि ॥
लश्कर लै पिरथी चढ़ि आये ❀ कैसे बैठि रहैं घर माहिं ॥
हँसी हमारी जगमें होइ है ❀ बुड़िहै सात साखिको नाम ॥
रानी बैठो रंग महल में ❀ मन में धीर धरो महरानि ॥
इतनी कहिके मलिखे चलि भै ❀ मारू डंका दियो बजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कूच कराय दियो लश्कर को ❀ औ धूरेपर पहुँचे जाय ॥
घोड़ी बढ़ायो तब ताहर ने ❀ औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
किला गिराय देउ जल्दी ते ❀ है यह हुक्म पिथौरा क्यार ॥
गुस्सा होय तब मलिखे बोले ❀ औ ताहर ते कही सुनाय ॥
एक पिथौरा की गिनती क्या ❀ कोटिन चढ़े पिथौरा राय ॥
मारि भगैहैं हम दिल्ली लों ❀ कारे पाखें दिहौं कराय ॥
किलाके समुहें जो कोउ देखिहैं ❀ मुखमें धाँसि दिहैं तलवार ॥
देउ चुनौती पृथीराज को ❀ हमरो किला देयँ गिरवाय ॥
मारि शिरोहिन के मुँह तोरौं ❀ जौलों रहे हाथ तलवारि ॥
होय पराक्रम जो क्षत्री हौ ❀ तो मरदूमी देउ देखाय ॥
देखैं कैसे तुम क्षत्री हो ❀ सन्मुख लड़ौ आय मैदान ॥
इतनी सुनिकै ताहर जरिगै ❀ गुस्सा गई देह में छाय ॥
हुक्म दे दियो तब ताहर ने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❀ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ धुँअना रह्यो सरग मँडराय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❀ सर सर परी तीर की मारु ॥
सननन सननन गोला छूटै ❀ कह कह करैं अगिनियाँ बान ॥
डेढ़ पहर भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरन होइ जायँ ॥
तोपैं छोड़ि दई ज्वानन ने ❀ लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
खैंचि सिरोही लइ क्षत्रिन ने ❀ खटखट चलन लगी तलवार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ सबके मारु मारु रटलागि ॥
खैंचि शिरोही मलिखे ठाकुर ❀ समुहें गोल गये समुहाय ॥
पैग पैग पर पैदल गिरि गये ❀ उनके दुइ दुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे ❀ छोटे पर्वत की अनुहार ॥
लोथें डारीं जो लोहू में ❀ मानौ मगर मच्छ उतराय ॥
डारीं पगिया जो लोहू में ❀ जनु नदी में परो सिवार ॥
ढालैं डारीं जो लोहू में ❀ मानो कछुआ सी उतरायँ ॥
पहर एकभरि चली सिरोही ❀ क्षत्री लैलै भगे परान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भगे सिपाही दिल्ली वाले ❋ मुर्चा हटो पिथौरा क्यार ॥
अकिले मलिखे की धमकिनमें ❋ सबदल रेन बेन होइ जाय ॥
बाइस हौदा खाली करके ❋ पृथीराज को करी जोहार ॥
बोले मलिखे पृथीराज ते ❋ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
आजु अखाड़े में बरनी है ❋ अबतुम खेलो जूझ अघाय ॥
सोचे पृथीराज अपने मन ❋ है यह महाबीर मलिखान ॥
जौलौं बाण लेउँ हम करमें ❋ तौलों मारि देय तलवारि ॥
सोचि समुझि यह पिरथी बोले ❋ औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
बरनी तुम्हरी है ताहर ते ❋ सो तुम खेलो जूझ अघाय ॥
यह मन भाई नर मलिखे के ❋ घोड़ी कबुतरी दई बढ़ाय ॥
ऐंड़ लगाय दई घोड़ी के ❋ ऊभे फाँदि गई वा पार ॥
पटपर ऊभेपर जबहीं गई ❋ जाते घोड़ी गई समाय ॥
लगी साँग जब पाँव पदुम में ❋ तरवा फटो बीर मलिखान ॥
मुर्छित होन लगे मलिखे जब ❋ सोचे मनहिं बीर मलिखान॥
काल हमारो अब आयो है ❋ धोखा दियो पिथौरा राय ॥
धोखा देवै जो काहू को ❋ ताको बार बार धिक्कार ॥
सन्मुख लड़तो जो हमरे कोउ ❋ मरतों बीर धनी चौहान ॥
मन की बात रही मनही में ❋ यहिबिधि रोय कहै मलिखान॥
तड़पी घोड़ी नरमलिखेकी ❋ औ ऊभेते लाइ निकारि ॥
देखि लाश तब नर मलिखे की ❋ धावन खबरि दई पहुँचाय ॥
सुनी खबरि जब माता ब्रह्मा ❋ भुइँ में गिरी तड़ाका खाय ॥
बाँदी पहुँची सतखंडा पर ❋ औ रानी ते कही सुनाय ॥
बदी उड़ानी है राजा की ❋ सुनियत जूझे कंथ तुम्हार ॥
सुनतै रानी गई द्वारे पर ❋ औ धामन ते पूछो हाल ॥
हाल सुनायो सब धामन ने ❋ सुनतै डोला लियो मँगाय ॥
तुरत सवार भई डोला पर ❋ माता ब्रह्मा संग लेवाय ॥
डोला पहुँची गजमोतिन की ❋ जहँपर लाश बीर मलिखान ॥
माता ब्रह्मा बहुतै रोवै ❋ लैलै नाम बीर मलिखान ॥
लाश जहाँ पर थी मलिखे की ❋ तहँ पर गये पिथौरा राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तब ललकारो गजमोतिन ने ❀ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
तुम यह जानी अपने मनमें ❀ मारे गये बीर मलिखान ॥
खेदिके मरिहौं मैं दिल्ली लौं ❀ लश्कर कटा दिहौं करवाय ॥
अबहीं शाप दिहौं तुमको मैं ❀ तुरतै यहाँ भस्म होइजाव ॥
ताते मानो कही हमारी ❀ दिल्लिहिं लौटिजाउ महराज ॥
सत्तु बिधाता हमको दीन्हा ❀ होइहौं सती कंथ के साथ ॥
काम न कीन्हा तुम नीको यह ❀ जो धोखा दे दियो मराय ॥
तुमहिं सुनासिब यह नाहीं थी ❀ कीन्हों दगा हमारे साथ ॥
पाँच महीना तेरह दिन में ❀ नदिया बहै रक्तकी धार ॥
नगर महोबे ते दिल्ली लो ❀ होइहैं सबै सोहागिन राँड ॥
अब तुम देखोना सिरसातन ❀ अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
इतनी सुनिके गजमोतिन ते ❀ मनमें डरे पिथौरा राय ॥
मुर्चा फेरो तब जल्दी ते ❀ दिल्ली कूच दियो करवाय ॥
हुक्म फेरिदियो तब गजमोतिन ❀ चन्दन लकड़ी लई मँगाय ॥
जितनो खजाना है सिरसा को ❀ सो सब पुण्य करो महरानि ॥
माता ब्रह्मा प्राण छोड़ि दिये ❀ ताकी क्रिया दई करवाय ॥
चारि चौसधें के धूरे पर ❀ तुरतै चिता लई रचवाय ॥
सबने समुझायो रानी को ❀ बैठी राज्य करो महरानि ॥
तापर ज्वाब दियो रानी ने ❀ करिहौं राज्य कंथके साथ ॥
यह कहि सुमिरि मात देवी को ❀ बैठी तुरत चितापर जाय ॥
सुमिरन करिके सत मल्हनाको ❀ सरमें आगी दई लगाय ॥
सती पुकारे सरके ऊपर ❀ जागो जागो कंथ हमार ॥
सती होयगइ गजमोतिन तब ❀ आल्हा ऊदन को ले नाम ॥
ऐसी सती भई जगमोतिनि ❀ पहुँची स्वर्ग लोकमें जाय ॥
यहि बिधि पूरन भयो समर यह ❀ सोहम लिखिकै दियोसुनाय ॥
आगे लड़ाई है सागर पर ❀ यारो सुनियो कान लगाय ॥
आल्हा गावौ पावस ऋतु में ❀ सुमिरन करौ नित्य भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❀ सीताराम क्यार धरिध्यान ॥

इति सिरसा समर समाप्त ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कीरति सागर पर भुजरियों की लड़ाई।

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश॥

❀ आल्हा ❀

सुमिरन करिके नारायण को ❀ लैके रामचन्द्र को नाम॥
लिखौं लड़ाई अब सागर की ❀ शारद मोको होउ सहाय॥
लगो महीना जब सावन को ❀ घर घर होय तीज त्योहार॥
परे हिंडोला हैं घर घर में ❀ सखियाँ गावैं राग मलार॥
बेटी चन्द्रावलि मल्हना की ❀ जो महुबे की राज कुमारि॥
झूला झूलै सावन गावै ❀ लै लै नाम बनाफर क्यार॥
करै याद आल्हा ऊदन की ❀ नैनन बहै नीर की धार॥
नाम लेय जब नर मलिखे की ❀ तबहीं रोय उठे तत्काल॥
चलि भये माहिल गढ़ उरई ते ❀ औ दिल्ली की पकरी राह॥
पाँच रोजकी मंजिल करिके ❀ गढ़ दिल्ली में पहुँचे जाय॥
जहाँ कचहरी पृथीराज की ❀ माहिल तहाँ पहुँचे जाय॥
करी बन्दगी महाराज को ❀ राजा चौकी दई डराय॥
आवौ आवौ उरई वाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय॥
बोले माहिल पृथीराज ते ❀ अबना राखौ देर लगाय॥
चलिकै लूटि लेउ जल्दी ते ❀ सूनो परो महोबा गाँव॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने ❀ अपनो हुक्म दियो फरमाय॥
फौज सजाय लेउ जल्दी ते ❀ लश्कर जल्द होय तैयार॥
बजो नगारा तब दिल्ली में ❀ सिगरी फौज भई तैयार॥
आदि भयंकर को सजवायो ❀ तापर चढ़े पिथौरा राय॥
चौड़ा धाँधू ताहर सूरज ❀ सरदनि मरदनि भये तयार॥
सजिकै भूप टंकवै आयो ❀ भूरा मुगल भयो तैयार॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सात लाख ते पिरथी साजे ❀ लैके खुरासान गुजरात ॥
कूच कराय दियो दिल्ली ते ❀ औ महुबे की पकरी राह ॥
सात रोजकी मंजिल करि के ❀ महुबे धुरो दबायो जाय ॥
लश्कर बाँटि दियो पिरथी ने ❀ औ महुबे को लियो घेराय ॥
कनवाँ खेरे पर धाँधू ने ❀ अपने डेरा दियो डराय ॥
चंदन बगिया में पिरथी ने ❀ अपने तम्बू दिये तनाय ॥
कोऊ परि गयो मदन तालपर ❀ कोउ बैरागि तालपर जाय ॥
खजुहा गढ़में कोऊ परि गयो ❀ कोऊ लोहर गाँव मैदान ॥
बारह कोसी चौगिर्दा में ❀ झंडन रही लालरी छाय ॥
सिगरी रैयति गढ़ महुबे की ❀ मनमें काँपि काँपि रहिजाय ॥
रानी मल्हना सोचन लागी ❀ अबना रहिहैं धर्म हमार ॥
लई आरती औ सामग्री ❀ देवी को मठ पहुँची जाय ॥
करि के पूजा जगदम्बे को ❀ मल्हना होम दियो करवाय ॥
हाथ जोरि के मल्हना बोली ❀ माता राखो धर्म हमार ॥
पिरथी घेरो नगर महोबे ❀ संकट परो नगर पर आय ॥
होउ सहायक अब माता तुम ❀ औ गाढ़े में आवौ काम ॥
सपना देउ जाय ऊदन को ❀ माता मेरि अम्बिका माय ॥
आभा बोली तब देवी को ❀ रानी धीर धरो मन माहिं ॥
काम तुम्हारो पूरन होइ हैं ❀ ऊदन ऐहैं नगर महोब ॥
मल्हना चलिभइ तब महलनको ❀ कनउज गई शारदा माय ॥
आधी राति केर अमला में ❀ सपना दियो अंबिका माय ॥
ऊदन सोवत थे बंगला में ❀ तिनते देवी लगी बतान ॥
पृथीराज घेरो महुबे को ❀ संकट परो नगर पर आय ॥
थर थर काँपै सिगरी रैयति ❀ कोऊ रिंधे भात ना खाय ॥
फाटक बन्दी है महुबे में ❀ बहिरो आवै न भितरो जाय ॥
तुम सोवतहौ सुख निदिया में ❀ है दुख नींद रजा परिमाल ॥
जल्दी पहुँचौ तुम महुबे को ❀ राखौ धर्म चँदेले क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0..Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पवनि करावो चन्द्रावलि को ❀ औ भुजरिनको देउ सेखाय॥
यहि बिधि सपने में देवी ने ❀ कहिदियो हाल महोबे क्यार॥
सुनतै सपना यह सोवत में ❀ ऊदन उठे भरहरा खाय॥
ढेबा बहादुर ते सपने की ❀ सबियाँ हाल कह्यो समुझाय॥
पिरथी घेरो नगर महोबा ❀ दादा सगुन देउ बतलाय॥
पवनी खोटी जो होइ जैहैं ❀ तो जग होइहैं हँसी हमारि॥
ढेबा बोले तब ऊदन ते ❀ जल्दी कूच देव करवाय॥
करो बहाना तुम आल्हा ते ❀ लाखनि राना संग लिवाय॥
करौ तयारी अब जल्दी ते ❀ गुजरे घरी २ पर वार॥
करि सलाह दोनों चलि पहुँचे ❀ जहँ पर हते कनौजी राय॥
करी बन्दगी बघ ऊदन ने ❀ औ लाखनि ते कह्यो हवाल॥
सपना दियो हमहिं देवी ने ❀ हमरे काम सिद्ध होइ जाय॥
होत सलीनों है महुबे में ❀ ऐसी कहूं होत है नाहिं॥
बोले लाखनि तब ऊदन ते ❀ महुबा हमहिं देउ दिखलाय॥
ऊदन बोले तब लाखनि ते ❀ जान न दिहैं तुमहिं महराज॥
ताते चर्चा ना करियो तुम ❀ की हम नगर महोबे जाहिं॥
करो बहाना तुम गाँजर को ❀ कीहम खेलन जात शिकार॥
यह सलाह करि तीनों चलिभये ❀ औ जयचन्द कचहरी जाय॥
करी बन्दगी महाराज को ❀ तब जैचँद ने कही सुनाय॥
कहाँकि त्यारी तुमने कीन्हीं ❀ यह सुनि कही उदैसिंह राय॥
संग जात हैं हम लाखनि के ❀ गाँजर खेलन जायँ शिकार॥
आज्ञा दैदेउ तुम लाखनि को ❀ तब जैचन्द ने दियो जवाब॥
जो कछु तुम्हरे मनमें आवै ❀ सोई करो उदैसिंह राय॥
हुक्म पाय यह तीनों चलिभये ❀ त्यारी करन लगे तत्काल॥
पूछो आल्हा तब ऊदन ते ❀ कहँ जैबे को भये तयार॥
बोले ऊदन तब आल्हा ते ❀ लाखनि खेलन चले शिकार॥
संग जात हैं हम लाखनि के ❀ दादा हुक्म देउ फरमाय॥

CC-0..Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले आल्हा तब ऊदन ते ❀ भैया खेलन जाउ शिकार ॥
पै नहिं जैयो नगर महोबे ❀ यहसुनि ऊदन दियो जवाब॥
जियत महोबे हम जैहैं ना ❀ कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
यह कहि चलिभै उदन बाँकुड़ा ❀ औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
हुक्म कराय दियो लाखनि ने ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्कर में ❀ सिगरी फौज भई तयार ॥
ठाढ़ी देवै दरवाजे पर ❀ सो ऊदन ते लगी बतान ॥
कहाँकि त्यारी तुमने कीन्ही ❀ तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
साथ जात हैं हम लाखनि के ❀ गांजर खेलिहैं जाय शिकार ॥
बोली देवै तब ऊदन ते ❀ तुमना जैयो नगर महोब ॥
चरण लागिकै तब माता के ❀ तुरतै चले उदय सिंहराय ॥
सोनवाँ ठाढ़ी थी खिरकी में ❀ ऊदन तहाँ पहूँचे जाय ॥
पूछन लागी सोनवाँ रानी ❀ कहँको डंका दियो बजाय ॥
बोले ऊदन तब सोनवाँ ते ❀ भौजी सुनो हमारी बात ॥
हाल बतैयो ना दादा ते ❀ जियतै होइहैं मरन हमार ॥
जो सुनि पैहैं दादा आल्हा ❀ हमको घर ते दिहैं निकारि ॥
महुबा घेरो पृथीराज ने ❀ बहिरो आव न भितरो जाय ॥
पृथीराज लुटिहैं महुबे को ❀ तौ जग होइहैं हँसी हमारि ॥
करी तयारी हम महुबे की ❀ लाखनि ढेबा हमरे साथ ॥
यहसुनि सोनवाँ बहुत खुशीहो ❀ बघऊदन ते लगी बतान ॥
धन्य धन्य हमरे देवर तुम ❀ तुमबिन कौन करे यहकाम ॥
जल्दी जावो तुम महुबे को ❀ भारी विपदा देउ नशाय ॥
चलिभै ऊदन तब आगे को ❀ औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
ढेबा बहादुर आगम जानैं ❀ जोगिन गुदरी लई सिलाय ॥
कूच कराय दियो कनउज ते ❀ औ महुबे की पकरी राह ॥
तीनि रोजकी मंजिल करिके ❀ नदि बेतवे पर पहुँचे जाय ॥
छकड़न गेरू तहँ मँगवाई ❀ सो घोरवाय लियो तत्काल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कपड़ा रँगवाये जोगिन के * लश्कर जोगी लियो बनाय ॥
राति बसेरा करि नद्दी पर * भोरहिं होन उतारा लाग ॥
नदी पार होइकै जोगिन ने * अपने डेरा दियो डराय ॥
मीरा सैयद लाखनि राना * ढेबा ऊदन भये तयार ॥
गुदरी पहिरिलई जोगिन की * अपने बाजा लिये उठाय ॥
लियो यकतारा मीरा सैयद * ढेबा खँभरी लई उठाय ॥
लई बाँसुरी बघऊदन ने * लाखन डमरू लियो उठाय ॥
चारो योगी गावत चलि भै * शोभा कछू कही ना जाय ॥
बार्ह ऊदन नर ढेबा ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
पहिले देखि हैं गढ़ सिरसा हम * पीछे चलिहैं नगर महोब ॥
इतनी कहिकै चारो जोगी * गढ़ सिरसा में पहुँचे जाय ॥
ऊजर खेरा देखि उदैसिंह * मनमें ऊदन सोचन लाग ॥
देखो फाटक गढ़ सिरसा का * उड़ि उड़ि काग बसेरा लेयँ ॥
हते बरदिया जो बगिया में * सो जोगिन ते लगे बतान ॥
यहँ पर आये तुम काहे सब * कोऊ भीख दिवैया नाहिं ॥
सिरसा गढ़ केरो मालिक जो * मारो गयो बीर मलिखान ॥
इतनी सुनैते ऊदनि रोये * ढेबा छोड़ि दई डिडकार ॥
देखि बरदिया बोलन लागे * बाबा हाल देउ बतलाय ॥
काहे बाबा तुम क्यों रोये * क्या वे भाई लगैं तुम्हार ॥
बोले ऊदनि तब धीरे ते * वे गुरु भैया लगत हमार ॥
मोह आय गयो हमहिं यहाँपर * देखि न मिले बीरमालिखान ॥
कैसे मरण भये मलिखे को * सो तुम हमें देउ बतलाय ॥
बोले बरदिया तब ऊदन ते * बाबा सुनो हमारी बात ॥
पृथीराज दिल्ली ते आये * लश्कर सात लाख लै साथ ॥
मारि भगायो नर मलिखे ने * तबतो लौटि गये चौहान ॥
देन बधाई माहिल आये * ब्रह्मा हाल दियो बतलाय ॥
माहिल हाल कह्यो पिरथी ते * है पद पद्म बीर मलिखान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चढ़ो पिथौरा फिर दिल्ली ते * औ धूरे पर करो मुकाम ॥
ऊभे खोदवाये धूरे पर * तिनमें सांगें दई गड़ाय ॥
घास फूस डरवाय ऊपर ते * पटपर भूमे दई करवाय ॥
खाली राखे आधे ऊभे * तहँ पर खड़े पिथौरा राय ॥
ऊभे पार खड़े ताहर रहे * मारत आये बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * तब पिरथी ने कही सुनाय ॥
तुम्हरी ताहर की बरनी है * सो तुम खेलो जूझ अघाय ॥
मलिखे जाना यह धरती है * घोड़ी आगे दई बढ़ाय ॥
फाँदिके घोड़ी गई पटवा पर * तुरते भीतर गई समाय ॥
घाव सांगको लगो पद्म में * तरवा फोटा बीर मलिखान ॥
घोड़ी कबुतरी घायल होगई * मूर्च्छित भये बीर मलिखान ॥
तड़पी घोड़ी तब भीतर ते * औ ऊपर को लाई निकारि ॥
सुलखे मारे गये पहिले ही * ब्रह्मा छांड़ि दिये तहँ प्रान ॥
रनि गज मोतिन सत्ती हो गई * आल्हा ऊदन को लै नाम ॥
रैयति जितनी थी सिरसा की * सो सब जहँ तहँ गई बराय ॥
धोखा दैके पृथीराज ने * यहिबिधि मारिदिये मलिखान ॥
बोले बरदिया ते ऊदन तब * सति को चौरा देउ बताय ॥
ठौर बताई तब ऊदन को * जोगी तहाँ पहूँचे जाय ॥
देखिके ऊदन रोवन लागे * हादैया गति कही न जाय ॥
आभा बोली तब मलिखे की * अबना मिलिहैं भाय तुम्हार ॥
रोये तुम्हरे कछु होइ है ना * अब तुम जावौ नगर महोब ॥
रोयके ऊदन बोलन लागे * हमना जैहैं नगर महोब ॥
थोरी दूर पर रहैं चन्देले * क्योंना तुम्हरी करी सहाय ॥
जियत महोबे हम जैहैं ना * कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
बोली आभा गज मोतिन की * देवर सुनो उदैसिंह राय ॥
जल्दी जावो तुम महुबे को * यहँ क्यों खाक बटोरी आय ॥
पृथीराज लुटिहैं महुबे को * तुम्हरे जीवे को धिक्कार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पवनी खोटी जो होइ जैहैं * तो जग होइहैं हँसी तुम्हारि ॥
ताते जल्द जाउ महुबे को * उनकी पवनी देउ कराय ॥
जो तुम महुबे को जैहो ना * देहौं शाप भस्म होइ जाव ॥
इतनी सुनते जोगी चलिभे * औ महुबे की पकरी राह ॥
जबही पहुँचे वे फाटक पर * दरबानों ने कही सुनाय ॥
हुक्म नहीं है महाराज को * भीतर जान दिहैं हम नाहिं ॥
बोले ऊदन तब जल्दी ते * भीतर भिक्षा मँगिहैं जाय ॥
नाम सुनौ हम गढ़ महुबे को * महुबे बसत रजा परिमाल ॥
पारस पूजा है जिनके घर * लोहा छुवत सोन होइ जाय ॥
फाटक खोलि देउ जल्दी ते * यह कहि अलख जगावन लाग॥
डारि मोहनी दइ द्वारे पर * फाटक तुरत लियो खोलवाय ॥
गावत २ जोगी चलि भये * औ पनघट पर पहुँचे जाय ॥
मोहित होइ गईं सब पनिहारी * देखत एक पहर होइ जाय ॥
नैवा बाँदी रनि मल्हना की * सो अपने मन सोचन लागि ॥
एक पहर पनिघट पर होइ गयो * सिगरो प्यास मरे रनिवास ॥
बाँदी चलि भइ तब पनिघट ते * रंग महल में पहुँची जाय ॥
रानी मल्हना जब गुस्सा भइ * तब बाँदी ने कही सुनाय ॥
चारि जोगिया हैं पनिघट पर * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
देखि तमासा लउ तिनको तुम * रानी पैयाँ परौं तुम्हारि ॥
बोली मल्हना तब गुस्सा होय * हम पर विपति परी है आय ॥
नाच रंग तोका भावत है * हमरे नैन ओट होइ जाउ ॥
हाथ जोरि तब बाँदी बोली * रानी बार बार बलि जायँ ॥
बड़े तेज धारी जोगी हैं * तुमरो काम सिद्धि होइ जाय॥
आज्ञा दै दइ तब मल्हना ने * जल्दी जोगिन लाउ बुलाय॥
आई बाँदी तब जोगिन पै * औ जोगिन ते कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलायो है रानी ने * अबहीं चलो हमारे साथ ॥
आये जोगी तब ड्योढ़ी में * देखो महल कनौजी राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बहुत खुशी भये लाखनि राना * शोभा देखि देखि रहि जाय ॥
रूप देखिके उन जोगिन को * मल्हना रानी उठी रिसाय ॥
पेटु फैरहैं बाँदी तेरो * तू छलियनको लाइ बुलाय ॥
ये हैं लरिका पृथीराज के * इनछल करी हियाँ पर आय॥
बोले ऊदन तब रानी ते * धर्मकि माता लगो हमारि ॥
हमतो लरिका हैं जोगिन के * दुबिधा छोड़ि देउ महरानि ॥
कुटी हमारी है गोरखपुर * हमको रूप दियो करतार ॥
फिरिकै मल्हना बोलन लागी * रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
तुमहौ लरिका क्यहु राजा के * साँची हमहिं देउ बतलाय ॥
कहाँ गुदरिया यह तुम पाई * जिनमें जड़े जवाहिर लाल ॥
कानन कुंडल हैं सोने के * सो कहँ तुमहिं मिले महराज॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * माता सुनो हमारी बात ॥
कियो तमासा गढ़ कनउज में * राजा जैचँद को जहँराज ॥
होय प्रसन्न तहँ महाराज ने * हमको गुदरी दई सिलाय ॥
तिलका रानी मोहित होगइ * सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
तहँते पहुँचे हम रिजिगिर में * जहँ पर बसत बनाफर राय ॥
आल्हा ऊदन दुइ भैया हैं * तहँ हम कियो तमाशा जाय ॥
कुण्डल पहिराये ऊदन ने * चीरा कलँगी दई इनाम ॥
नाम सुनो जब बघऊदन को * रोवन लगी मल्हन दे रानि॥
बेटा ऊदनको पाऊँ कहँ * जो गाढ़े में आवै काम ॥
जोगिओ जैयो तुम कनउजको * हमरी खबरि सुनैयो जाय ॥
याही दिनको हम पालो रह * जो असनै में ऐहैं काम ॥
कुआँ बियाह्यो जब ऊदन ने * तब हमते यह कियो करार ॥
प्राण निछावरि माता कीन्हे * सो क्या भूलि गये यह बात ॥
तुमसुख निदिया में सोवत हो * हम पर बिपति परी अबआय ॥
फिरिकै ऊदन पूछन लागे * माता हाल देउ बतलाय ॥
कौन आपदा तुम पर परि गई * जो तुम रोय २ रहि जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

बोली मल्हना तब ऊदन ते * पिरथी घेरो नगर महोब ॥
धरी भुजरिया है महलन में * सागर कौन देय सिरवाय ॥
कौन दुसरिहा पृथीराज को * को ऊदनि बिन करै सहाय ॥
तौलो आइ गई चन्द्रावलि * सो मल्हना ते लगी बतान ॥
छोरो जोगी ऐसो लागे * मानो मेरो लहुरवा भाय ॥
बोली मल्हना चन्द्रावलि ते * बेटी सुनो हमारी बात ॥
काहे होइहैं ऊदनि जोगी * जिनकी जगजाहिर तलवारि ॥
करो इशारा तब लाखनि ने * ऊदन नाम देउ बतलाय ॥
बोले ऊदन तहँ लाखनि ते * नाहीं अबहिं बतैहैं नाम ॥
बोले ऊदनि रनि मल्हना ते * पवनी तुम्हरो दिहैं कराय ॥
मल्हना बोली तब जोगिन ते * तुम भिक्षा के माँगन हार ॥
क्यागति जानो तुम लरिबे की * कैसे पवनी देहौ कराय ॥
ऊदन होते जो महुबे में * पवनी देते हमहिं कराय ॥
होते मलिखे या सिरसा में * तो बनिजातो काम हमार ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * माता बचन करो परमान ॥
हम जोगी हैं बँगाले के * पवनी तुम्हरी दिहैं कराय ॥
मारि भगैहैं हम पिरथी को * हम जोगी हैं बुरी बलाय ॥
बोली चन्द्रावलि ऊदन ते * जो तुम गंगा लेउ उठाय ॥
तौ हम जाने अपने मन में * हमरो पवनी दिहौ कराय ॥
गंगा कीन्हीं तब ऊदन ने * तौलौ माहिल पहुँचे आय ॥
देखि हकीकत माहिल लौटे * पृथीराज पै पहुँचे जाय ॥
जोगी चलिभे रंगमहल ते * अपने लश्कर पहुँचे जाय ॥
बोले माहिल पृथीराज ते * हमते कछु कहीना जाय ॥
आये जोगी बंगाले के * जादू पढ़े बीर बैताल ॥
गंगा कीन्हीं उन महुबे में * पवनी तुम्हरी दिहैं कराय ॥
लड़े न जितिहौ तुम जोगिन ते * तासे कूच जाउ करवाय ॥
चुगली करिकै परिमाले ते * हम निकराये बनाफर राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तब ना लूटो तुम महुबे को * अब सब बिगरिगयो है काम ॥
पृथीराज तब पूछन लागे * अब कछु जतन देउ बतलाय ॥
कैसे लूटैं नगर महोबा * तब माहिलने कही सुनाय ॥
होय पराक्रम जो तुम्हरे में * तो जोगिन को देउ भगाय ॥
पाछे लूटि लेउ महुबे को * यह सुनि पृथीराज चौहान ॥
चौड़ा धाँधू को बुलवायो * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
जल्दी जावो तुम झाबर को * औ जोगिनते कहो सुनाय ॥
कूच कराय जाउ जल्दी ते * नहिं कछु यहाँ तुम्हारो काम ॥
चौड़ा धाँधू दोनों चलिभे * औ जोगिन पै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिके दोनों बोले * बाबा कूच जाउ करवाय ॥
बोले ऊदन तब दोनों ते * हम पन्द्रह दिन करैं मुकाम ॥
देखि सलीनो गढ़ महुबे की * तब हम कूच दिहैं करवाय ॥
तापर ज्वाब दियो चौड़ा ने * बाबा मानो बात हमार ॥
पृथीराज घेरो महुबे को * चढ़िके महुबा लिहैं लुटाय ॥
गर्द बर्द बाबा होइ जैहो * ताते कूच देउ करवाय ॥
गुस्सा होय तब ऊदन बोले * क्यों नहिं बोलत बात सम्हारि ॥
जल्दी चले जाउ समुहें ते * क्यों हम कूच जायँ करवाय ॥
आगे बढ़िगे चौड़ा धाँधू * लश्कर देखो जोगिन क्यार ॥
मन घबराय गये दोनों तब * पृथीराज पै पहुँचे आय ॥
हाल कह्यो सब बैरागिन को * है बैरागी बुरी बलाय ॥
फौज परी है आठ कोस लौ * तँबुअन रही लालरी छाय ॥
जो मुँह लगिहैं उन जोगिन के * तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
पेर रहन देउ तुम जोगिन को * अपनो लीजो काम बनाय ॥
यहि बिधि बीते दिन संकट में * अब दिन परी सलीनो जाय ॥
ठाढ़ी मल्हना सतखंडा पर * देखै बाट जोगियन क्यार ॥
पहर एक होइ गयो अंत पर * नाहीं जोगी परे दिखाय ॥
बोली चन्द्रावलि मल्हना ते * पवनी कौन दिहैं करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गंगा करि गै रहैं जोगी हियँ * सोऊ नाहीं परत दिखाय ॥
मल्हना समझावै बेटी को * बेटी मानो बात हमारि ॥
लेउ भुजरिया तुम महलन ते * सो कुँवटा में देउ सिराय ॥
रोवन लागी तब चन्द्रावलि * लै लै नाम बीर मलिखान ॥
माहिल आये तब महलन में * सो मल्हना ते लगे बतान ॥
डाँड़ पठाय देउ पिरथी को * अपनो करो सलीनो जाय ॥
बोलन लागी रानिमल्हना तब * क्या हम डाँड़ देयँ पठवाय ॥
माहिल बोले तब मल्हना ते * यह कहि दियो बीर चौहान ॥
हार नौलखा शहर ग्वालियर * लै हैं उड़न बछेड़ा पाँच ॥
बैठक लेहैं खजुहा गढ़ की * डोला लेहैं चन्द्रावलि क्यार ॥
ब्याह रचे हैं सो ताहर संग * पारस पूजा लिहैं अगार ॥
इतनो डाँड़ पठाय देउ तुम * बहिनी मानौ बात हमारि ॥
यहसुनि मल्हना रोवन लागी * औ माहिल ते कही सुनाय ॥
डोला देहौं ना बेटी को * चाहे लाख चढ़े चौहान ॥
पेटुमारि अपनो मरि जैहौं * देहौं मया मोह बिसराय ॥
बोली चन्द्रावलि मल्हना ते * यह ब्रह्मा ते कहो हवाल ॥
चलि भै माहिल रंग महल ते * पीछे चली मल्हनदे रानि ॥
लीन्हों संगै चन्द्रावलि को * औ ब्रह्मा पै पहुँची जाय ॥
चरण लागिकै तब माता के * ब्रह्मा माथे लियो लगाय ॥
बोले ब्रह्मा तब माता ते * आई यहाँ कौन से हेत ॥
बोली मल्हना तब ब्रह्मा ते * बहिनि कि पवनी देउ कराय ॥
धरी भुजरिया रंग महल में * सो सागर में देउ सिराय ॥
सुनतै ब्रह्मा बोलन लागे * हमना मूँड़ कटै हैं जाय ॥
तुमहिं भरोसा दियो जोगिन ने * सोई पवनी दिहैं कराय ॥
यहसुनि मल्हना रोवन लागी * बेटी छाँड़ि दई डिंडकार ॥
देखि हाल यह अभई बोले * बेटा जौन माहिल परिहार ॥
पवनी तुम्हरी हम करवै हैं * अपनी त्यारी लेउ कराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दई चुनौती पृथीराज को * हमते डोला लेयँ छुड़ाय ॥
बोले माहिल तब अभई ते * बेटा अकिल गई तुम्हारि ॥
जन्म के बैरी महुबे वाले * तिनकी ओर लड़न ना जाव ॥
कहा हमारी बेटा मानो * घरमें बैठि रहो चुप साधि ॥
तापर ज्वाब दियो अभई ने * दादा सुनौ हमारी बात ॥
दोनों राजा हमहिं बराबर * जगमें पृथीराज परिमाल ॥
पृथीराज मनमें जानो यह * कोऊ मर्द नगर में नाहिं ॥
बात कहि चुके अब मल्हना ते * पवनी इनकी दिहैं कराय ॥
यह कहि अभई उठि ठाढ़ भै * तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो तब अभई ने * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
डंका बाजो तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै * बाँके घोड़न के असवार ॥
कोउ नालकिन कोउ पालकिन * कोऊ गजरथ भये सवार ॥
बेटा रञ्जित परिमाले को * सोऊ साथ भयो तैयार ॥
घोड़ी हिरौंजिनि त्यार कराई * तापर रंजित भये सवार ॥
सज्जा घोड़ा को सजवायो * तापर अभई भये सवार ॥
खबरि कराई रंगमहल में * सिगरे डोला लेउ सजाय ॥
डोला त्यार भये सखियन के * चहुँदिशि सज्जा परै दिखाय ॥
सज्ज नालकी सज्ज पालकी * तिनपर डारी सज्ज उहार ॥
सज्जै झालरि है रेशम की * वरदी सज्ज कहारन क्यार ॥
सज्ज भुजरिया सब सखियनकी * सज्जै झूला लिये सजाय ॥
सज्जै रस्सा रेशम वाले * सो झूलन को लिये धराय ॥
जतनकरी यक मल्हना रानी * सोऊ सुनि लेउ कान लगाय ॥
जहर बुझाई यक यक छुरिया * सब सखियन को दइ पकराय ॥
मटुका यकयक बारूदन के * सब पलकिन में दियो धराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पत्थर चकमकले मल्हना ने ❀ सबसखियनको दियो गहाय ॥
डोला लूटें पृथीराज जो ❀ तो तुम जहर खाय मरिजाय ॥
जहर न लाय मिले तुमको जो ❀ तो तुम पेटु मारि मरिजाउ ॥
आगि लगायलिओ डोलनमें ❀ यह मल्हनाने दियो सिखाय ॥
यहसुनि सखियाँ बोलनलागीं ❀ हम सब दे हैं प्राण गँवाय ॥
जैहैं नाहिं जियत दिल्लीको ❀ माता बचन करो परमान ॥
चौदह से डोला सब सजिगे ❀ डोला बीच चन्द्रावलि क्यार ॥
डोला आगे रनि मल्हना को ❀ बारह रानि चँदेले क्यार ॥
आये डोला जब फाटक पर ❀ अभई रंजित चले अगार ॥
चलते छींक भई समुहें पर ❀ तब रानीने कही सुनाय ॥
असगुन होइगयो चलते पर ❀ तुमना चलो हमारे साथ ॥
बोले अभई तब मल्हना ते ❀ हमना मनिहैं कही तुम्हार ॥
सगुन चाहिये उन बनियनको ❀ जे धरि मौर बियाहन जायँ ॥
सगुन चाहिये ना क्षत्रीको ❀ जे रणचढ़िके लोह चबायँ ॥
करौ भरम नाहिं तुम अपनेमन ❀ दुबिधा छाँड़ि देउ तत्काल ॥
चलि भै डोला तब महुबे ते ❀ सखियाँ गावें राग मलार ॥
माहिल पहुँचे तब बगिया में ❀ औ पिरथी ते कही सुनाय ॥
रंजित अकिले हैं डोलन पर ❀ डोला सबै लेउ लुटाय ॥
बोले पृथीराज चौड़ा ते ❀ अबहीं डोला लेउ लुटवाय ॥
चलो चौढ़िया तब बगियामें ❀ औ लश्कर में पहुँचो जाय ॥
लश्कर सजवायो जल्दी ते ❀ यकदंता पर भयो सवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ औ सागर पर पहुँचो जाय ॥

अभई रंजितकी चौड़ा आदि से लड़ाई ।

❀ आल्हा ❀

सुमिरन करिके नारायणको ❀ लैके रामचन्द्र को नाम ॥
लिखौं लडाई अब सागरकी ❀ अभई रंजित को संग्राम ॥
देखो समुहें जब अभई को ❀ डोलन संग चौड़िया राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोलो चौड़ा तब अभई ते ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ कि त्यारी तुमने कीन्हो ❀ क्या यह डोला तुम्हरे साथ ॥
यह सुनि अभई बोलन लागे ❀ है त्योहार महोबे क्यार ॥
आज सुलीनों है महुबे में ❀ हम सागर को भये तयार ॥
हैं रखवारे हम डोलन के ❀ डोला संग मल्हनदे क्यार ॥
बीचमें डोला चन्द्रावलि की ❀ अपनी लिये भुजरियाँ जाय॥
सखियाँ सिगरी हैं बेटी की ❀ सोऊ चली साथमें जायँ ॥
सुनि यह बात कही चौड़ाने ❀ डोला हियाँ देउ धरवाय ॥
पाँव बढ़ैयो ना आगे को ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय॥
बोले अभई तब चौड़ाते ❀ मुखते बोलो बात सम्हारि ॥
समुहें देखै जो डोलन के ❀ ताके नैन लेउँ निकराय ॥
गुस्सा होय तब चौड़ा ब्राह्मण ❀ लश्कर हुक्म दियो करवाय॥
डोला लूटि लेउ जल्दी ते ❀ अबना राखो देर लगाय ॥
इतनी सुनतै सब क्षत्रिन ने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❀ खट खट चलनलगीतलवारि ॥
पैदल अभिरिगये पैदल सँग ❀ औ असवारन ते असवार ॥
हौदा मिलिगै तब हौदासँग ❀ हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
तीनि घरीभरि चली शिरोही ❀ औ बहिचली रक्तकी धार ॥
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ रनमें कठिन करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही चौड़ावाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब चौड़ाने ❀ तब हाथी को दियो बढ़ाय ॥
समुहें जाय कही अभई ते ❀ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
गुर्ज उठाय लियो चौड़ाने ❀ सो अभई पर दियो चलाय ॥
सज्जा घोड़ा आगे बढ़िगयो ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
घोड़ा बढ़ायो तब अभई ने ❀ औ मस्तकपर बाजी टाप ॥
करो जड़ाका यक हौदा पर ❀ छतुरी टूक टूक होइजाय ॥
सोने कलश गिरे धरती पर ❀ चौड़ा हाथी दियो भगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हटिगयो मुर्चा जब चौड़ा को ❀ लश्कर तिड़ी बिड़ी होइजाय॥
सुनो हाल जब यह पिरथी ने ❀ सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
जल्दी चले जाउ सागर पर ❀ डोला सबै लेउ लुटवाय ॥
डोला लावौ चन्द्रावलि को ❀ हमरो नजरि गुजारौ आय ॥
यहसुनि चलिभै तब सूरजमल ❀ लश्कर तीनि लाख सजवाय॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ राजा टंक संग सजवाय ॥
जबही पहुँचि गये सागर पर ❀ सूरज बढ़िकै कही सुनाय ॥
डोला धरिदेउ चन्द्रावलि को ❀ सुनि अभई ने दियो जवाब॥
नाम लेहौ जो तुम डोला को ❀ मुँहमें धाँसि दिहौं तलवारि ॥
समुहें दिखिहौ जो डोलन के ❀ दोनों नैन लिहौं निकराय ॥
इतनी सुनतै सूरज जरिगै ❀ गुस्सा गई देह में छाय ॥
हुक्म दैदियो तब लश्कर में ❀ सब की कटा देउ करवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने ❀ खटखट चलन लगी तलवारि॥
चारि घरी भरि चली शिरोही ❀ लोथिन ऊपर लोथ दिखाय ॥
सूरज मल आगे को बढ़िगै ❀ औ रंजिततें लगे बतान ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर ❀ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
यह कहि गुर्ज लियो सूरज ने ❀ सो रंजित पर दियो चलाय॥
घोड़ी हटि गई तब रंजित की ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
लई शिरोही तब सूरजने ❀ सो रंजित पर दई झुकाय ॥
तीनि शिरोही सूरज मारी ❀ रंजित लीन्हीं चोट बचाय ॥
कावा दैके तब रंजितने ❀ अपनी लई शिरोही काढ़ि ॥
चेहरा मारो तब सूरजको ❀ बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
ढाल फाटि गइ सूरजमल की ❀ धरनी गिरे जाय मुरझाय ॥
देखि हाल यह टंकराज ने ❀ आगे हाथी दियो बढ़ाय ॥
सम्हरौ ठाकुर तुम घोड़ा पर ❀ यह कहि लीन्ही साँग उठाय ॥
अभई आय गये समुहें पर ❀ औ राजा ते कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❀ दुइमें एक आँकु रहि जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

साँग उठाई टंकराज ने ❀ सो अभई पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई अभई ने ❀ अपनो भाला लियो उठाय ॥
दियो चलाय टंक राजा पर ❀ सो तोंदी में गयो समाय ॥
मूर्छित होइकै गिरे टंक तब ❀ लश्कर तिड़ी बिड़ी होइजाय ॥
चलो साँडिया तब लश्कर ते ❀ पृथीराज पै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को ❀ औ लश्कर को कह्यो हवाल ॥
बिकट लड़ाई भइ सागर पर ❀ सूरज टंक जूझिगे जाय ॥
लाश उठाय लेउ दोनों की ❀ सुनि घबराय गये महराज ॥
सरदनि मरदनि औ ताहर को ❀ तुरतै राजा लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो पृथीराज ने ❀ अपनो लश्कर लेउ सजाय ॥
सूरज टंक परे खेतन में ❀ जायके लाश लेउ उठवाय ॥
इतनी सुनि कै तीनों चलि भै ❀ लश्कर तुरत लियो सजवाय ॥
अपने अपने तब घोड़न पर ❀ तुरतै फाँदि भये असवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ मारू डंका दियो बजाय ॥
लश्कर पहुँचि गयो सागर पर ❀ दोनों लाशैं लइ उठवाय ॥
सो पठवाय दई बगिया के ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई ताहर ने ❀ कौने मारो भाय हमार ॥
बोले अभई तब आगे बढ़ि ❀ हमने मारो भाय तुम्हार ॥
करन सलीनों हम आये हैं ❀ क्यों तुम लाये फौज चढ़ाय ॥
तापर ज्वाब दियो ताहर ने ❀ डोला देउ चन्द्रावलि क्यार ॥
बोले अभई तब ताहर ते ❀ अपनो जीभ लोटि मुँह दाबु ॥
अब जो नाम लिहो डोला को ❀ तुम्हरो शीस लिहों कटवाय ॥
यह सुनि ताहर गुस्सा होइगयो ❀ औ क्षत्रिन ते कही सुनाय ॥
अबहीं लूटि लेउ डोला सब ❀ सबकी कटा देउ करवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने ❀ क्षत्री बीर रूप होइ जाय ॥
भुरमुट होइ गयो दोनों दलको ❀ खटखट चलन लगी तलवार ॥
भुके सिपाही दोनों दलके ❀ सबके मारु मारु रटलागि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आगे बढ़िगयो ताहर ठाकुर ❀ औ रंजित ते लगे बतान ॥
डोला धरिदेउ चन्द्रावलि को ❀ जो जीते सो लेय उठाय ॥
गुस्सा होइके तब रंजित ने ❀ अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
चोट चलाई तब ताहर पर ❀ बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
तीनि शिरोही रंजित मारो ❀ ताहर लीन्हीं चोट बचाय ॥
टूटि शिरोही गइ रंजित की ❀ ताहर खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका तब रंजित पर ❀ रंजित जूझि गये मैदान ॥
यहगति देखो जब अभई ने ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई ताहर को ❀ अब तुम खबरदार होइ जाव ॥
खैंचि शिरोही लइ अभई ने ❀ सो ताहर पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ताहर ने ❀ अपनो लीन्ही चोट बचाय ॥
कावा देके तब ताहर ने ❀ तुरतै मारि दई तलवारि ॥
अभई गिरिगये जब धरती ते ❀ ताहर लीन्ही शीस उतारि ॥
मल्हना रोयउठी तुरतै तब ❀ औ बेटी ते कही सुनाय ॥
बात हमारी तुम मानो ना ❀ औ सागरपर आइ लिवाय ॥
दोनों लरिका खेत जूझिगे ❀ अबकी रखिहैं धर्म हमार ॥
बोली आभा तब दोनों की ❀ ब्रह्मै खबरि देउ पहुँचाय ॥
जौलौ ब्रह्मा हियँ ऐहैं ना ❀ तौलौ रुंड करै तलवारि ॥
जगे रुंड अभई रंजित के ❀ रणमें कठिन कियो संग्राम ॥
मुर्चा फेरि दियो ताहर को ❀ छत्री लै २ भगे परान ॥
यक हरकारा ते मल्हना ने ❀ भेजो खबरि महोबे माहिं ॥
चलो साँडिया तुरत फौज ते ❀ औ ब्रह्मापै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी ब्रह्मानँद को ❀ औ सागरको कह्यो हवाल ॥
अभई रंजित रनमें जूझे ❀ चलिकै लाश लेउ उठवाय ॥
ताहर मारो है अभई को ❀ औ रंजितको दियो गिराय ॥

अथ ब्रह्मानन्दकी लड़ाई आल्हा ।

सुमिरन करिके रामचन्द्र को ❀ लैके नाम बीर हनुमान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

युद्ध बखानौं ब्रह्मानंद को ❀ कायर सुनत होय बलवान ॥
पाई खबरि जबहिं लश्कर को ❀ ब्रह्मानंद मन कियो विचार ॥
अब जो जैहौं ना सागर पर ❀ हँसिहैं हमहिं सकल संसार ॥
कियो उचित नहिं पृथीराज ने ❀ जो हियँ आय बढ़ाई रार ॥
आजु सामना करि सागर पर ❀ मरिहौं खेदि खेदि चौहान ॥
सोचि समझि यह ब्रह्मानंद ने ❀ तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
बीरा दैके हुक्म दियो यह ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
डंका बाजो तब लश्कर में ❀ सिगरी फौज भई तैयार ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❀ तापर ब्रह्मा भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ औ सागर की पकरी राह ॥
चलिभै क्षत्री बीररूप होय ❀ डंका होत गोल में जाय ॥
हियाँ कि बातैं तो हियँ छोड़ो ❀ अब ताहर को सुनो हवाल ॥
ताहर आये फिरि मुर्चापर ❀ भूरा मुगल शूर लै साथ ॥
कठिन मारु देखी रुंडन को ❀ तब भूराते कही सुनाय ॥
लीलको झंडा फेरि देउ तुम ❀ भुई में गिरे रुंड भहराय ॥
यह सुनि झंडा लियो लीलको ❀ सो रुंडन पर दियो फिराय ॥
रानी मल्हना के डोला पर ❀ दोनों रुंड गिरे भहराय ॥
तौलौं पहुँचे ब्रह्मानंद तहँ ❀ दोनों रुंड लिये उठवाय ॥
तुरतै भेजदिये महुबे को ❀ औ क्षत्रिन ते लगे बतान ॥
निमक हमारो तुम खाये हौ ❀ सो हाड़न में गयो समाय ॥
पाँव न धरियो तुम पाछे को ❀ हमरो पवनी देउ कराय ॥
धर्म राखि लेहौ हमरो जो ❀ तौ हम तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दियो बढ़ावा रजपूतन को ❀ क्षत्री बीर रूप होइ जायँ ॥
सुमिरन करिके नारायण को ❀ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
सुमिर भवानी जगरानी को ❀ लैके हनूमान को नाम ॥
खैंचि शिरोही लई ब्रह्मानंद ❀ खटखट चलनलगी तलवारि ॥
भेड़हा पैठे जस भेड़िन में ❀ ज्यों बन सिंह बिड़ारे गाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

त्यों ब्रह्मानंद रण में पैठे ❀ क्षत्रिन काटि करी खरिहान ॥
मुर्चन मुर्चन नाचै घोड़ा ❀ ब्रह्मा कहैं सुनाय सुनाय ॥
भागि न जैयो कोउ समुहें ते ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥
ब्रह्मानँद की तहँ धमकिन में ❀ सबदल तिड़ीबिड़ी होयजाय॥
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही पृथीराज के ❀ अपने छाँड़ि छाँड़ि हथियार॥
यह गति देखी जब ताहर ने ❀ मन में बहुत गये घबराय ॥
दपटनि झपटनि ब्रह्मानँद की ❀ ताहर देखि देखि रहि जाय ॥
समुहें देखैं जब ब्रह्मा के ❀ ब्रह्मा काल रूप दिखरायँ ॥
सोचि समुझिके तब ताहर ने ❀ यक हरकारा दियो पठाय ॥
खबरि सुनावो तुम राजा को ❀ जल्दी लावैं फौज चढ़ाय ॥
जो नहिं ऐहैं वे सागर पर ❀ तो सब जैहैं काम नशाय ॥
चलो साँड़िया तब लश्कर ते ❀ औ बगिया में पहुँचो जाय ॥
तौलौ आये माहिल राजा ❀ सो पिरथी ते लगे बतान ॥
जौहर कीन्हें ब्रह्मानँद ने ❀ रण में कठिन करी तलवारि ॥
करौ चढ़ाई अब ब्रह्मा पर ❀ तुरतै मुश्क लेउँ बँधवाय ॥
डोला लैके चन्द्रावलि को ❀ महुबा नगर लेउ लुटवाय ॥
सुनतै पिरथी उठि ठाढ़े भे ❀ चौड़ा धाँधू लिये बुलाय ॥
हुक्म दैदियो तब जल्दी ते ❀ अबहीं फौज होय तैयार ॥
डंका बाजो तब लश्कर में ❀ सिगरो लश्कर भयो तयार ॥
दुइसौ हाथी भूरा साजो ❀ दुइसौ मकुनी लियो सजाय ॥
यक सौ हाथी खूनी साजे ❀ यकसौ मुड़िया लियो सजाय ॥
दुइसौ हाथी मुकुट बन्दनी ❀ सो सजवायो बीर चौहान ॥
एक सौ हाथी मस्ता कहिये ❀ सो सजवाय पिथौरा राय ॥
आदि भयंकर को मँगवायो ❀ ताको तुरत लियो सजवाय ॥
चकमक पत्थर को हौदा धरि ❀ रेशम रस्सा दिये कसाय ॥
सिढ़ी लगाई मलया गिरिको ❀ औ चढ़ि गये बीर चौहान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

नौसे हाथी के हलका में ❀ आदि भयंकर झूलन लाग ॥
हाथी यकदन्ता सजवायो ❀ तापर चौड़ा भयो सवार ॥
हाथी भौरानँद सजवायो ❀ तापर धाँधू भयो सवार ॥
मारू डंका के बाजत खन ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
हाहाकारी बीतन लागी ❀ मानौ भई दिवस की राति ॥
लश्कर आयो जब सागर पर ❀ लश्कर जहाँ महोबे क्यार ॥
हुक्म दियो तब पृथीराज ने ❀ डोला तुरत लेउ लुटवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने ❀ तुरतै चलन लगी तलवारि ॥
लश्कर देखी पृथीराज को ❀ ब्रह्मा मयामोह दियो छाँड़ ॥
प्राण हथेरी पर धरि लीन्हों ❀ दलमें घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
ज्यों किसान खेती को काटैं ❀ कतरे जैसे तमोली पान ॥
तैसे ब्रह्मा क्षत्री काटे ❀ क्षत्री लैलै भगे परान ॥
झपटनि दपटनि ब्रह्मानँद को ❀ देखैं खड़े बीर चौहान ॥
सोचे पृथीराज अपने मन ❀ धनि २ ब्रह्मा राजकुमार ॥
बड़े २ शूर रहे महुबे में ❀ एक ते एक बीर सरदार ॥
देखि लड़ाई ब्रह्मानंद की ❀ गुस्सा भयो चौड़िया राय ॥
समुहें जाय कह्यो ब्रह्मा ते ❀ अबतुम खबरदार होइजाव ॥
यहकहि गुर्ज लियो चौड़ा ने ❀ सो ब्रह्मा पर दियो चलाय ॥
घोड़ा हटिगयो ब्रह्मानँद को ❀ नीचे गुर्ज गिरयो अरराय ॥
सोचन लागे ब्रह्मानँद तब ❀ समुहें ब्राह्मण खड़ा हमार ॥
हाथ चलैहौं जो ब्राह्मण पर ❀ तो रजपूती धर्म नशाय ॥
सोचि समुझि यह ब्रह्मानँद ने ❀ दियो समोहन बाण चलाय ॥
मूर्छित होइतब चौड़ा गिरिगयो ❀ मुर्चा हटो चौड़िया क्यार ॥
धाँधू आये तब समुहें पर ❀ औयह मनमें सोचन लाग ॥
ब्रह्मा भैया हमरो लागे ❀ कैसे करौं युद्ध ब्योहार ॥
जो नहिं लड़ौं साथ ब्रह्मा के ❀ गुस्सा होयँ पिथौरा राय ॥
यह मन समुझि लड़े धाँधू तब ❀ ब्रह्मा दीन्हों बाण चलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धाँधू गिरि गै तब हौदामें * सरदनि मरदनि पहुँचे आय ॥
सरदनि बोले तब ब्रह्मा ते * समुहें डोला देउ धराय ॥
बोले ब्रह्मानँद सरदनि ते * सरदनि अपनी जीभ सँभारु ॥
नामजो लेहै अब डोलाको * मुँहमें ठाँसि दिहों तलवारि ॥
गुस्सा होइकै तब सरदनिने * अपनी लीन्हीं तेग निकारि ॥
चोट चलाई ब्रह्मानँदपर * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ सरदनिकी * ब्रह्मा खैंचि लई तलवारि ॥
चेहरा मारो तब सरदनि को * सरदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटिगइ गैंड़ा वाली * सरदनि गिरे धरनिपर जाय ॥
जूझे सरदनि जब खेतन में * मरदनि खैंचिलई तलवारि ॥
चोट चलाई तब ब्रह्मापर * ब्रह्मा लीन्हों चोट बचाय ॥
धार लौटिगइ तब तेगाकी * ब्रह्मा दीन्ही तेग चलाय ॥
छूटि जनेवा गयो मरदनिको * ताहर घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
भई लड़ाई तहँ दोनों ते * ब्रह्मा भाला दियो चलाय ॥
घोड़ी भगाय गये ताहर तब * देखैं खड़े बीर चौहान ॥
चन्द्रभाट बोला पिरथी ते * ब्राह्मण भक्त ब्रह्म सरदार ॥
जीति न सकिहैं कोउ ब्रह्माते * ताते हाथ लेउ हथियार ॥
यहसुनि सोचे पृथीराज तब * धीरसिंह ते कहो सुनाय ॥
बाँधि लेउ तुम ब्रह्मानँदको * औ सब डोला लेउ लुटाय ॥
यहसुनि चलिभै धीरसिंह तब * औ ब्रह्मापै पहुँचे जाय ॥
आवत देखो धीरसिंह को * तब ब्रह्मा मन कियो बिचार ॥
आजु अखाड़े में बरनी है * आवत धीरसिंह सरदार ॥
बड़ो भक्त है यहु देबीको * भारी शूर जगत सरनाम ॥
बोले धीरसिंह ब्रह्माते * तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
डोला धरिदेउ तुम खेतन में * है यह हुक्म पिथौरा क्यार ॥
यहसुनि ब्रह्मा बोलन लागे * सुनियो धीरसिंह बलवान ॥
करो सामना तुम हमरो यहँ * ऐसो तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हो तुम परममित्र आल्हाके * आल्हा भैया लगत हमार ॥
धन्य नीति है पृथीराजको * हमपर लाये फौज चढ़ाय ॥
बेटी ब्याही है हमरे सँग * फिरि क्यों भूमि मझाई आय॥
लानति ऐसी रजपूती पर * पानी पीवे को धिरकार ॥
मरजी होवै जो लड़ने को * तो तुमकरो सामना आय ॥
जो नहिं इच्छा होय लड़नकी * तो समुहेंते जाउ बराय ॥
सुनतै गुस्सा होय धीरजने * अपनी साँग चलाई आय ॥
चोट बचाई तब ब्रह्मा ने * लीन्ही गुर्च धीर सरदार ॥
गुर्ज धमको जब ब्रह्मा पर * ब्रह्मा लैगै चोट बचाय ॥
गुस्सा होय तब धीरसिंह ने * अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब ब्रह्मा पर * ब्रह्मा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
बोले ब्रह्मा धीरसिंह ते * हमहूँ भक्त अम्बिका क्यार ॥
जितने शस्त्र होय तुम्हरे संग * सो हम पर सब लेउ चलाय ॥
यह सुन सोचे धीरसिंह तब * है यह बड़ा शूर सरदार ॥
चोटैं हमरी खाली पर गईं * ब्राह्मण भक्त धन्य संसार ॥
हाथी लौटायो धीरजने * देखैं खड़े पिथौराराय ॥
देखि हाल यह पृथीराज तब * दाँतन रहे अँगुरिया दाबि ॥
हाथी बढ़ायो पृथीराजने * औ ब्रह्माको घेरो जाय ॥
हुक्म दैदियो महाराजने * सिगरे डोला लेउ लुटाय ॥
चौंड़ा ताहर दोनों चलिभै * औ डोलनको लिये घेराय ॥
चौड़ा घेरिलियो मल्हनाको * डोला सबै लिये घिरवाय ॥
डोला घेरो चन्द्रावलिको * ताहर जौन पिथौराल्राल ॥
दुइसै जोड़ा बजैं नगारा * बाजैं तोरही औ कंडाल ॥
कान अवाजपरी लाखनिके * सो ऊदनते लगे बतान ॥
हमरे मनमें अस आवत है * सागर चलत विषम तलवारि ॥
जल्दी त्यार होउ लड़िबेको * अबना राखौ देर लगाय ॥
ऊदन बोले तब ढेबाते * दादा हाल देउ बतलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले ढेबा तब ऊदन ते * भैया जल्द होउ तैयार ॥
हुक्म दैदियो तब लाखनि ने * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्कर में * क्षत्री तुरत भये हुशियार ॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्रिन धरे रकाबन पाय ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै * बाँके घोड़न के असवार ॥
भरुही हथिनी त्यार कराई * तापर लाखनि भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो * तापर ऊदन भये सवार ॥
घोड़ा मनोरथा त्यार करायो * तापर ढेबा भयो सवार ॥
मीरा सैयद बनरस वाले * घोड़ी सिंहिनि पर असवार ॥
लला तमोली धनुआँ तेली * सोऊ साथ भये असवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * औ सागर में पहुँचे जाय ॥
लगी मोरचा जहँ धाँधू को * पहुँची फौज योगियन क्यार ॥
बोला धाँधू तब जोगिन ते * नाहक प्राण गँवाये आय ॥
पाछे लौटि जाउ झाबर को * इतनी मानौ कही हमारि ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * औ लाखन ते लगे बतान ॥
कठिन लड़ाई है सागर की * दादा बहुत रहेउ हुशियार ॥
हुक्म दैदियो तब लाखनि ने * क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
झुके सिपाही दोनों दलके * खटखट चलनलगी तलवारि ॥
सुमिरन करिके नारायण को * मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदन ने * समुहें गोल गये समुहाय ॥
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठे * ज्यों बन सिंह बिडारे गाय ॥
तैसे ऊदन दलमें पैठे * भाला नागदौनि लै हाथ ॥
बाइस हौदा खाली करिकै * औ धाँधू पै पहुँचे जाय ॥
धाँधू देखो जब ऊदन को * अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो बघ ऊदन पर * ऊदन लैगे चोट बचाय ॥
ऐंड़ लगाई तब घोड़ा के * औ मस्तक पर पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ढालकि औझड़ ऊदनमारी * सोने कलशा दियो गिराय ॥
धाँधू सोचे तब अपने मन * है यह जोगी बुरी बलाय ॥
मुर्चा लौटि गयो धाँधू को * लश्कर रेन बेन हुइजाय ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * अपने डारि २ हथियार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जे रणदुलहा चले बराय ॥
लम्बी धोतिन के पहिरैया * तिन नारेन की पकरी राह ॥
जिनहिं पियारी घरमें तिरिया * अबहीं लाये गौनवां चार ॥
भस्म रमाई तिन देही में * अपने डारि दिये हथियार ॥
हमको मरियो ना क्षत्रिउ तुम * हम भिक्षाके माँगन हार ॥
कहँलग बरनों मैं क्षत्रिन को * क्षत्री लैलै भगे परान ॥
यह गति देखी जब ऊदन ने * आगे लश्कर दिये बढ़ाय ॥
चौड़ा पहुँचो रनिमल्हना पै * औ मल्हना ते कही सुनाय ॥
हुक्म दियो है पृथीराज ने * रनिमल्हना को लेउ लुटाय ॥
सो हम मानत अदब तुम्हारो * तासे गहना देउ उतारि ॥
यहसुनि मल्हना बोलनलागी * यह पिरथी ते कहियो जाय ॥
धर्म क्षत्रियन के नाहीं यह * जो तिरियन पर डारैं हाथ ॥
काहे नाहीं तब चढ़ि आये * जब यहँ हते उदैसिंह राय ॥
यह सुनि बोलो चौड़ा ब्राह्मण * हमना सुनिहैं बात तुम्हारि ॥
हार नौलखा हमको दैदेउ * अबना राखो देर लगाय ॥
इतनी सुनतै मल्हना रानी * मनमें बहुत गई घबराय ॥
हाथ जोरिके आसमान को * तहँपर लागीकरन बिलाप ॥
हे नारायण दीनबन्धु प्रभु * स्वामी जगत केर करतार ॥
होउ सहायक यहि समया पर * राखो आजु हमारो लाज ॥
ऊदनि मिलैं कहाँ हमको अब * जो असने में आवें काम ॥
होउ सहायक यहि समया पर * हमपर फाटि परो अरराय ॥
तौलो ऊदन आये बाँकुड़ा * औ मल्हना पै पहुँचे आय ॥
ठाढे देखो जब चौड़ा को * घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जोगी रूप देखि मल्हनाने * अपने मनमें कियो बिचार ॥
भये सहायक नारायन अब * आई फौज जोगियन क्यार ॥
चौड़ा देखो जब जोगिन को * तब जोगिन ते कही सुनाय ॥
चले शिरोही आठ कोस लों * काहे प्राण गँवाये आय ॥
इतनी सुनतै बघ ऊदन ने * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
ऐंड लगाई रसबेंदुल के * समुहें गोल गये समुहाय ॥
बाइस हौदा खाली कर दियो * औ चौड़ापै पहुँचे जाय ॥
डपटो घोड़ा बघऊदन ने * औ मस्तक पर बाजी टाप ॥
ढालकि औझड़ तुरतै मारो * सोने कलशा दिये गिराय ॥
मुर्चा हटिगयो तब चौड़ा को * सोचन लाग चौड़िया राय ॥
बड़े लड़ैया ये जोगी हैं * इनते हम जीतन को नाहिं ॥
मल्हना रानी को डोला जहँ * तहँ पर ऊदन पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदन रनि मल्हना ते * भिक्षा हमहिं देउ मँगवाय ॥
हाथ जोरिके मल्हना बोली * हम पर बाबा होउ सहाय ॥
हमरो डोला पिरथी लुटि हैं * फिरि महुबे को लिहैं लुटाय ॥
डोला लैके चन्द्रावलि की * पच पेड़न पै राखो जाय ॥
ब्रह्मै घेरो है पिरथी ने * सो तुम बिपदा देउ हटाय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * तुम्हरी पवनी दिहें कराय ॥
धीरज राखो अपने मनमें * यह कहि चले उदैसिंह राय ॥
बोले ऊदन नर ढेबाते * दादा बहुत रहेउ हुशियार ॥
लाखनि सैयद को सँग लैके * पँच पेड़न पै पहुँचे जाय ॥
बोले ताहर तब जोगिन ते * काहे प्राण गँवाये आय ॥
ऊदन बोले तब ताहर ते * हमने गंगा लई उठाय ॥
कौल हारि गये हैं मल्हनाते * तुम्हरी पवनी दि हैं कराय ॥
डोला धरिदेउ तुम ठौरे पर * इतनी मानौ कही हमारि ॥
हुक्म दैदियो तब ताहर ने * इन जोगिन को देउ भगाय ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * रणमें चलन लगी तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ताहर बढ़िगै खैंचि शिरोही * सो लाखनि पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई लाखनि ने * अपनी लीन्ही गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो तब ताहर पर * ताहर घोड़ा गये भगाय ॥
ऊदन डोला चन्द्रावलि को * लै मल्हनापै राखे जाय ॥
बोले ऊदन तब लाखनि ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
पृथीराज घेरो ब्रह्मा को * चलिके खबर लेउ तत्काल ॥
लाखनि ऊदनि तब धाये तहँ * अब ब्रह्माको सुनो हवाल ॥
कठिन लड़ाई लखि ब्रह्माकी * सोचन लगे बीर चौहान ॥
बोला चन्द्रभाट पिरथीते * अब ब्रह्माको देउ गिराय ॥
सोचि समझि तब पिरथीराज ने * अपनी लीन्ही लाल कमान ॥
तब ब्रह्मानँद सोचन लागे * जैसे हमहिं रजा परिमाल ॥
तैसेइ हमको पृथीराज हैं * पै यह हरत हमारे प्रान ॥
अब चुप साधनको बेरिया नहिं * है यह शब्दबेधि चौहान ॥
सोचि समझि यह ब्रह्मानँद ने * लीन्हों मोहन बाण उठाय ॥
धनुष तानि मारो पिरथी को * हौदा गिरे बीर चौहान ॥
हाहाकार होन लागो तहँ * मूर्छित भये पिथौरा राय ॥
तौलो ऊदन दाखिल होइगये * लाखनि सैयद संग लेवाय ॥
चारिहु राजा गांजर वाले * धनुआँ तेली सँग तैयार ॥
लला तमोली संगहिं आयो * बारह कुँवर बनौधे क्यार ॥
राउ गोरखा बंगाले को * सातनि पट्टी के सरदार ॥
मुरली मनोहर कलपी वाले * औ पत्यंउजके मदनगोपाल ॥
रूपन राजा सिरउंज वाले * जगमनि जिन्सी के सरदार ॥
चंदन राजा दतिया वाले * पूरन पूराके सरदार ॥
मधुकर राजा गढ़ चितौर के * चिन्ता रुसनी के सरदार ॥
मोहन राजा हद्दीगढ़ के * चिन्तामनि गोरखपुर केर ॥
लश्कर बढ़िगयो उन जोगिनको * कीरति सागर के मैदान ॥
देखो लश्कर जब जोगिन को * ब्रह्मा लौटि परे तत्काल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मूर्छा जागो पृथीराज को * आदि भयंकर दियो बढ़ाय ॥
हुक्म दैदियो फिरि पिरथी ने * लश्कर कटा देउ करवाय ॥
हल्ला होइ गयो दोनों दलमें * क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
खटखट तेगा बोलन लागे * कटि २ गिरन लगे बहु ज्वान॥
रंग बिरंगी घोड़ा होइ गये * क्षत्री रक्त बरन होइ जायँ ॥
बिजुली चमके ज्यों बादल में * त्यों रण चमकि रही तलवारि॥
लाखनि भुरुही दाबे आये * जहँ पर खड़े पिथौरा राय ॥
टक्कर मारी तब भुरुही ने * आदि भयंकर दियो हटाय ॥
सोचे पृथीराज अपने मन * हमरो हाथी दियो हटाय ॥
क्या बिजरासिनि यह हथिनी है* है यहु जोगी बुरी बलाय ॥
तौलौ ऊदन समुहें आये * जूझको कंगन परो दिखाय ॥
दक्खिन पारिन पर सागर के * लश्कर परी पिथौरा क्यार ॥
उत्तर पाटी में सागर के * लश्कर परी कनौजी क्यार ॥
डोला पहुँचि गेय सागर के * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
लेउ भुजरिया अब बहिनी तुम * सो सागर में देउ सिराय ॥
लई भुजरिया तब चन्द्रावलि * सो सागर में दई सिराय ॥
बोले माहिल पृथीराज ते * सगुन को दोना लेउ मँगाय ॥
हुक्म दै दियो तब चौड़ा को * जल्दी दोना लावौ जाय ॥
बढ़ो चौड़िया तब आगे को * तब चन्द्रावलि कही सुनाय ॥
चौड़ा लैहैं जो दोना यहु * खोटी पवनी होय हमारि ॥
ऊदन भैया जो होते यहँ * तो यह दोना लौते उठाय ॥
यहसुनि लाखन बोलन लागे * ऊदन दोना लेउ उठाय ॥
ऊदन झपटे जब दोना पर * तब चौड़ाने कही सुनाय ॥
हाथ चलैयो ना दोना पर * नाहीं लैहौं शीश उतारि ॥
बोले ऊदन तब गुस्सा होय * चौड़ा बोलो बात सम्हारि ॥
दोना पैहो ना सागर पर * चाहे कोटिन करो उपाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भाला लैके तब चौड़ा ने * बघ ऊदन पर दियो चलाय ॥
चोट बचाई तब ऊदन ने * दोना लीन्हो डपटि के हाथ ॥
सो पकराय दियो बहिनी को * तब चन्द्रावलि लगी बतान ॥
कहँ मैं पाऊँ अब ऊदन को * क्यहि के घुरसि भुजरियां देउँ ॥
जबहिं भुजरियां मैं घुसरति रहौं * म्वहिं मुँह माँगा देत मँगाय ॥
बोली मल्हना चन्द्रावलि ते * बेटी सुनो हमारी बात ॥
समुहें तुम्हरे जोगी ठाढ़े * तिन यह पवनी दई कराय ॥
धर्म हमारो इन राखो है * जानो इनहिं लहुरवा भाय ॥
इनके घुरसौ जाय भुजरियाँ * यह तुम मानो कही हमारि ॥
यह सुनि तुरतै लई भुजरियाँ * सो ऊदन के घुरसन लागि ॥
बोले ऊदन चन्द्रावलि ते * धर्मकि बहिनी लगो हमारि ॥
जेठो जोगी यह ठाढ़ो है * पहिले घुरसि देउ तुम जाय ॥
ताके पीछे हमरे घुरसौ * इतनी मानो कही हमारि ॥
लई भुजरियाँ चन्द्रावलि तब * सो लाखन के घुरसौ जाय ॥
हथिनी चालिस चन्द्रावलि को * दीन्हीं बिहँसि कनौजी राय ॥
लई भुजरियाँ फिरि चन्द्रावलि * सो ऊदन के घुरसी जाय ॥
कंगन अपनो ऊदन लैके * चन्द्रावलि को दियो पकराय ॥
देखो कंगन जब चन्द्रावलि * तब मल्हना ते लगी बतान ॥
यह तौ कंगन है ऊदन को * माता देखि लेउ पहिचानि ॥
कैसे पायो इन जोगिन ने * सुनि हँसि दियो उदैसिंहराय ॥
चमकी बिजुली तब दाँतन में * मल्हना तुरत गई पहिचानि ॥
मिलन लगी तुरतै चन्द्रावलि * नयनन बही नीर की धार ॥
बोली चन्द्रावलि मल्हना ते * हमने पहिलेइ ली पहिचानि ॥
ड्योढ़ी पहुँचे हैं जोगी जब * तबही हमने दियो बताय ॥
छोटो जोगी ऐसो लागे * मानो मेरो लहुरवा भाय ॥
बिना बेंदुला के चढ़वैया * को पिरथी को देय हटाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मल्हना रानी औ सखियन को ❀ तुरतै मिले उदैसिंहराय ॥
दोना लैकै सब काहूने ❀ सो सागरमें दिये सिराय ॥
बोले पृथीराज धाँधू ते ❀ बीर भुगंते कही सुनाय ॥
एकतौ दोना तुमले आवो ❀ हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
दोनों शूर चले सुनते यह ❀ तब लाखनि ने कही सुनाय ॥
एकौ दोना दिल्ली जैहैं ❀ तो सब जैहैं काम नशाय ॥
हुक्म दै दियो तब ऊदन ने ❀ क्षत्रिन खबरदार होइ जाव ॥
जान न पावैं दिल्ली वाले ❀ सबको लूटि लेउ करवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने ❀ तुरतै चलन लगी तलवारि ॥
हाथी बढ़ायो तब धाँधू ने ❀ औ सिढ़ियन पर पहुँचोजाय ॥
हाथ चलैयो ना दोनन पर ❀ यह ऊदन ते कही सुनाय ॥
दपटो घोड़ा तब ऊदन ने ❀ औ हाथीपर राखौ जाय ॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी ❀ सोना कलशा दिये गिराय ॥
सोंचे धाँधू तब अपने मन ❀ यहु जोगी है बुरी बलाय ॥
मुर्चा फेरि दियो अपनो तब ❀ बीर भुगंता गयो बराय ॥
लीन्हों भाला बघऊदन ने ❀ नोकसे दोना लिये उठाय ॥
पैदल डेढ़लाख पिरथी के ❀ जूझे सागर के मैदान ॥
हाथी नौसे रणमें जूझे ❀ जूझे दश हजार असवार ॥
राजा टंक शूर पिरथी को ❀ जूझे समर खेत में आय ॥
सरदनि मरदनि सूरज जूझै ❀ ऐसो विषम चली तलवारि ॥
बोले माहिल पृथीराज ते ❀ तुम सुनि लेउ पिथौरा राय ॥
जीति न पैयो तुम ऊदनि ते ❀ ताते कूच जाउ करवाय ॥
जबही ऊदन कनउज जैहैं ❀ तुरतै खबरि दिहौं पहुँचाय ॥
तीस हजार फौज महुबे की ❀ कटि गई सागर के मैदान ॥
हाथी बासठ गढ़ महुबे के ❀ जूझे घोड़ा एक हजार ॥
रंजित अभई दोनों जूझे ❀ जिनके रुंड़ करो तलवार ॥
सुनी खबरि जब चन्देले ने ❀ पबनी ऊदन दई कराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुरत पालकी तब मँगवाई ❀ ओचलि भये रजा परिमाल ॥
झूला झूलन लगि चन्द्रावलि ❀ लैलै बघ ऊदन को नाम ॥
बोले ऊदन तब बहिनी ते ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
पवनी करवाई लाखनि ने ❀ तिनको नाम लेउ यहिकाल ॥
नाम बखानो तब लाखनि को ❀ गावन लागी राग मलार ॥
तौलौ पालकि चन्देले की ❀ आई सागर के मैदान ॥
देखि पालकी चन्देले की ❀ ऊदन उठे भरहरा खाय ॥
चरण लागिकै परिमालै के ❀ ऊदन माथे लिये लगाय ॥
आँसू बहन लगे नैनन ते ❀ राजा छाती लियो लगाय ॥
बोले चन्देले तब ऊदन ते ❀ बेटा मेरे उदैसिंह राय ॥
सुधि बिसराय दई हमरी तुम ❀ औ कनउज को गये रिसाय ॥
बिना तुम्हारे ऊदन बेटा ❀ हम पर चढ़े पिथौरा राय ॥
अब तुम छाड़ो ना महुबे को ❀ इतनी मानौ कही हमारि ॥
खबरि भेजिकै तुम कनउजको ❀ आल्हे तुरत लेउ बुलवाय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब ❀ दादा सुनिल्यो बात हमारि ॥
भादौं चिरैया ना घर छाँड़ ❀ नाबनिजरा बनिज को जाय ॥
तब तुम सोची क्या अपने मन ❀ जो भादौं में दियो निकारि ॥
बात मानिकै तुम माहिल को ❀ हमपर रूठि कियो अपमान ॥
तीनि तिलाकैं दइ हमको तुम ❀ हमरे गई कलेजे साल ॥
जियत महोबे हम जैहैं ना ❀ कागा मेरे हाड़ लै जाय ॥
यहसुनि मल्हना रोवन लागी ❀ औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
ऊदन तुमको हमने पालो ❀ कुचको दूध पिलाय पिलाय ॥
तुम जब जैहौ गढ़ कनउज को ❀ चढ़िहैं तुरत बीर चौहान ॥
नगर महोबा वे लुटवैहैं ❀ डोला लिहैं चन्द्रावलि क्यार ॥
आगे करिकै ब्रह्मानँद को ❀ औ ऊदनते कही सुनाय ॥
हौ रखवारे तुम ब्रह्मा के ❀ अबना लौंटि कनउजै जाउ ॥
करौ राज्य बैठे महुबे में ❀ तब ऊदन ने दियो जवाब ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धीरज राखो अपने मन में ❀ हमरे बचन करो परमान ॥
छिपिकै आये हम आल्हा ते ❀ हमने करौ बहाना जाय ॥
संग जातहैं हम लाखनि के ❀ गाँजर खेलन हेत शिकार ॥
ऐसे छिपिकै हम आये हैं ❀ तासो हम रहिबे के नाहिं ॥
लश्कर लावैं पृथीराज तब ❀ तुरतै दीजौ खबरि कराय ॥
तब फिरि ऐहैं हम महुबे को ❀ लाखनि रानै संग लिवाय ॥
बोली मल्हना तब लाखनिते ❀ तुम यह पवनी दई कराय ॥
बिछुरे ऊदन हमहिं मिलाये ❀ धनिधनि रतीभानके लाल ॥
लाखनि बोले तब बिनती करि ❀ माता सब परताप तुम्हार ॥
आज्ञा लैके रनि मल्हना ते ❀ लाखनि कूच दियो करवाय ॥
सबको लैके रनिमल्हना तब ❀ रंग महल में पहुँची जाय ॥
इतनो युद्ध भयो सागर पर ❀ सोहमलिखिके दियो सुनाय ॥
आल्हा मनौआ आगे कहिहौं ❀ यारो सुनियो कान लगाय ॥
समय पाय तुम आल्हा गाओ ❀ नित उठिलेउ नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीताराम क्यार धरिध्यान ॥

इति (सागरपर) भुजरियों की लड़ाई समाप्त ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ आल्हा मनौआ ॥

दो०--सदाभवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

आल्हा ।

सुमिरन करके नारायण को ❋ औगणपतिके चरण मनाय ॥
लिखौं मनौआ अब आल्हाको ❋ शारद मोको होउ सहाय ॥
माहिल राजा की चुगुली में ❋ बारह बाट भये परिमाल ॥
आल्हा छाये गढ़ कनउज में ❋ महुबे विपति रही सब काल ॥
माहिल चलिभे गढ़ उरई ते ❋ औ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
जहाँ कचहरी पृथीराज की ❋ माहिल उतरि परे अरगाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को ❋ माहिल रहिगये माथ नवाय ॥
नजरि बदलिगइ पृथीराज की ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरई वाले ❋ जियको भेद देउ बतलाय ॥
यहसुनि माहिल बोलन लागे ❋ सुनिये पृथीराज महराज ॥
लौटि गये ऊदन कनउज को ❋ कोऊ मर्द महोबे नाहिं ॥
सूनी परी सबै बस्ती है ❋ चलिकै लूटि लेउ करवाय ॥
बात मानिकै तब माहिल की ❋ पिरथी हुक्म दियो करवाय ॥
डंका बाजे गढ़दिल्ली में ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्कर में ❋ क्षत्री सबै भये असवार ॥
पहले डंका में जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथि चढ़िया हाथिन चढ़िगै ❋ बाँके घोड़न के असवार ॥
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❋ कोऊ गजरथ भये सवार ॥
ताहर गोपी चन्दन बेटा ❋ तीनों साजि भये असवार ॥
हाथी साजो आदि भयंकर ❋ तापर चढ़े बीर चौहान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

लश्कर सजिगयो सातलाख ते ❀ कूचको डंका दियो बजाय ॥
लश्कर चलिभयो पृथीराज को ❀ डंका होन गोल में लाग ॥
हाहाकारी बीतन लागी ❀ सबिता रहे धुंधि में छाय ॥
सात रोज की मंजिल करिके ❀ महुबो धुरो दबायो आय ॥
महुबा घेरि लियो जल्दी ते ❀ फाटक बन्दी दई कराय ॥
बाहर को भीतर आवै ना ❀ ना भीतर ते बाहर जाय ॥
क्या दुखबरणों तेहि समया को ❀ बिपदा कछु कही ना जाय ॥
राम बनावै सो बानिजावै ❀ बिगरी बनत बनत बनिजाय ॥
तम्बू तनिगै पृथीराज के ❀ कीरति सागर के मैदान ॥
कोऊ परि गयो खजुहा गढ़ में ❀ कोऊ मदन ताल की पारि ॥
क्वउ २ परि गयो कनवाँ खे रे ❀ कोउ बैरागि ताल पर जाय ॥
तानिगै तम्बू सब लस्किन के ❀ चन्दन बगिया के मैदान ॥
बोले पृथीराज माहिलते ❀ अब तुम रंगमहल लौं जाउ ॥
कहौं सँदेशा रनिमल्हना ते ❀ अब तुम डाँड़ देउ भरवाय ॥
डाँडु न पैहैं पृथीराज जो ❀ तो महुबे को लिहैं लुटाय ॥
माहिल चलिभै तब लश्कर ते ❀ पहुँचे रंग महल में जाय ॥
चढ़िगइ मल्हना सतखंडा पर ❀ देखी फौज पिथौरा क्यार ॥
नीचे उतरी रानी मल्हना ❀ औ राजा को लियो बुलाय ॥
तौलौं आये माहिल राजा ❀ औ मल्हनाते लगे बतान ॥
हमहिं पठायो पृथीराज ने ❀ यह कह दई पिथौरा राय ॥
डाँड़ पठाय देउ हमरो तुम ❀ नहिं हम महुबो लिहैं लुटाय ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❀ बीरन हमहिं देउ बतलाय ॥
काह डाँड़ चहिये पिरथी को ❀ ब्योरेवार कहो समुझाय ॥
बोले माहिल तब मल्हना ते ❀ बहिनी सुनो हमारी बात ॥
हार नौलखा पिरथी माँगत ❀ सिगरो शहर म्वालियर क्यार ॥
उड़त बछेरा सब माँगत हैं ❀ डोला लिहैं चन्द्रावलि क्यार ॥
पारस पूजा को माँगत है ❀ खजुहा गढ़ बैठक सुखसार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह सब माँगत पृथीराज हैं ❀ सो तुम डाँड़ देउ पहुँचाय ॥
सुनतै मल्हना रोवन लागी ❀ औ माहिल ते लगी बतान ॥
यह कहि दीजो पृथीराज ते ❀ कापर चढ़े बीर चौहान ॥
क्यों नहिं आये पृथीराज तब ❀ जब घर हते उदैसिंह राय ॥
हाथि पछारे दरवाजे पर ❀ औ ब्रह्मा को करौ बिवाह ॥
सातो बेटा पृथीराज के ❀ बाँधे तुरत उदैसिंह राय ॥
कलश उतार लिये द्वारके ❀ तब कहँ हते बीर चौहान ॥
तिनहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❀ जो सूने में घेरो आय ॥
नहिं मरदूमी यह राजा की ❀ जो तिरियन पर डारैं हाथ ॥
मोहलति दै देउ पन्द्रह दिनकी ❀ सोरहें डाँड दिहैं भरवाय ॥
सुनतै चलिभै माहिल राजा ❀ फाटक निकरि गये वापार ॥
जबही पहुँचे पृथीराज पै ❀ सिगरी हाल बतायो जाय ॥
माँगी मोहलति पन्द्रह दिनकी ❀ सोरह डाँड़ दिहैं भरवाय ॥
बात मानि लइ तब पिरथी ने ❀ अब मल्हना का सुनो हवाल ॥
आधीरात के तब समया में ❀ मल्हना पलकी लई मँगाय ॥
दुइ हरकारा लिये साथ में ❀ अपनी कूच दियो करवाय ॥
चली पालकी रनि मल्हना की ❀ जगनेरी में पहुँची जाय ॥
गयो हरकारा गजनायक पै ❀ औ जगनिकते कही सुनाय ॥
मल्हना आई दरवाजे पर ❀ जल्दी चलो हमारे साथ ॥
जगनिक आये दरवाजे पर ❀ मल्हना छाती लियो लगाय ॥
रोयके मल्हना बोलन लागी ❀ हम पर चढ़े बीर चौहान ॥
घर घर महुबो उन घेरवायो ❀ फाटक बन्द दियो करवाय ॥
बिपति हमारी तुम मिटवायो ❀ आल्है खबरि सुनावौ जाय ॥
बोले जगनिक तब मल्हना ते ❀ तुम सुनिलेउ धर्मकी बात ॥
तीनि तलाकैं दइँ राजा ने ❀ औ भादों में दियो निकारि ॥
हम जो जैहैं उन आल्हा पै ❀ हमको मरि हैं तुरत बँधाय ॥
ताते कनउज हम जैहैं ना ❀ हमरो करो भरोसा नाहिं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह सुनि मल्हना रोवन लागी ❀ अबको राखिहैं धर्म हमार ॥
सबकोउ साथ देत सुखमें जग ❀ दुखमें कोउ न होत सहाय ॥
बड़ो भरोसा ग्वाहि तुम्हरो है ❀ को अब खबरि सुनावै जाय ॥
सुनि यह बातें रनि मल्हना की ❀ तब जगनिक ने कही सुनाय ॥
घोड़ा हरनागर तुम देदेउ ❀ तो हम खबरि सुनावैं जाय ॥
संग लियो तब जगनायक को ❀ मल्हना महुवे पहुँची जाय ॥
तुरत बुलायो ब्रह्मानँद को ❀ तौ लौं आये महिल परिहार ॥
बोली मल्हना ब्रह्मानँद ते ❀ घोड़ा अपनो देउ मँगाय ॥
जगनिक जैहैं गढ़ कनउज को ❀ आल्हे खबरि सुनैहैं जाय ॥
बोले माहिल तब ब्रह्मा ते ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
जिन घोड़न पर भयो बखेड़ा ❀ आल्हा कनउज गये रिसाय ॥
जगनिक लै जैहैं घोड़ा जब ❀ आल्हा लैहैं तुरत छँड़ाय ॥
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❀ हमना दिहैं आपनो घ्वाड़ ॥
काढ़ि कटारी लई मल्हना ने ❀ सो छाती से लई लगाय ॥
घोड़ा अपनो जो देहौ ना ❀ तो मैं पेट मारि मरिजाउँ ॥
देखि हाल यह ब्रह्मानँद ने ❀ तुरतै घोड़ा दियो मँगाय ॥
चिट्ठी लिखन लगी मल्हनातब ❀ नैनन बहै नीर की धार ॥
सात लाख ते चढ़ो पिथौरा ❀ लैके खुरासान गुजरात ॥
जहाँ रसोइयाँ रहै देवै को ❀ तहँपर मुगल पछारैं गाय ॥
पीपर कटिगै हैं आल्हा के ❀ कटिगै आम महुरवा क्यार ॥
घर घर महुबो पिरथी घेरो ❀ फाटक बन्द दियो करवाय ॥
तुमबिन बिपता हमपर परिगई ❀ बेटा हमको होउ सहाय ॥
नगर महोबा जब लुटि जैहैं ❀ तब का खाक बटोरिहौ आय ॥
मोहलत माँगी पन्द्रह दिन की ❀ सोरहैं लुटि हैं नगर महोब ॥
तुरतै आय जाउ बेटा तुम ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
दूलह बनि हैं पृथीराज जब ❀ दुलहिन बनैं मल्हन दे रानि ॥
डोला जैहैं चन्द्रावलि को ❀ तब चलि जैहैं पाग तुम्हारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

याही दिन को हम पाले हैं ❀ की असने में ऐहो काम ॥
सो तुम छाय रहे कनउज में ❀ हमपर परी आपदा आय ॥
देखत चिट्ठी के आवौ तुम ❀ राखो धर्म चँदेले क्यार ॥
यहिबिधि पाती लिखि मल्हनाने ❀ जगनायक को दई गहाय ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❀ तापर जगनिक भये सवार ॥
चलिभै जगनिक तब महुबे ते ❀ अब माहिल को सुनो हवाल ॥
माहिल पहुँचे पृथीराज पै ❀ औ पिरथी ते लगे बतान ॥
उड़न बछेरन में हरनागर ❀ जगनिक चढ़े कनौजे जात ॥
घोड़ा छीनि लेउ जल्दी ते ❀ औ सब घाट लेउ घिरवाय ॥
आल्हा ऊदन महुबे ऐहैं ❀ तौ ना बनिहैं काम तुम्हार ॥
इतनी सुनिके पृथीराज ने ❀ चौड़ा धाँधू लिये बुलाय ॥
हुक्म दै दियो तब दोनों को ❀ सिगरे घाट लेउ घिरवाय ॥
घोड़ा लावौ तुम जगनिक ते ❀ हमरी नजरि गुजारो आय ॥
यह सुनि चौड़ा धाँधू चलिभै ❀ औ लश्कर को लियो सजाय ॥
चलिके पहुँचे जब बेतवा पर ❀ सिगरे घाट लिये रोकवाय ॥
जगनिक पहुँचे जब नदिया पर ❀ तब चौड़ा ने कही सुनाय ॥
चुप्पै उतरि परो घोड़ा ते ❀ नदिया उतरि जाउ वापार ॥
यहसुनि जगनिक बोलन लागे ❀ ब्राह्मण बोलो बात सम्हारि ॥
कौन शूर है सो तुम्हरे दल ❀ हमरो घोड़ा लेय छँड़ाय ॥
गुस्सा होइकै तब चौड़ा ने ❀ अपनो लीन्हीं लाल कमान ॥
तीर निकारि लियो तरकस ते ❀ औ जगनिक ते कही सुनाय ॥
जल्दी उतरौ तुम घोड़ा ते ❀ नाहीं देहौं तुरत गिराय ॥
इतनी सुनतै जगनिक झपटे ❀ औ मस्तक पर पहुँचे जाय ॥
ढालकि औझड़ जगनिक मारी ❀ सोने कलशा दिये गिराय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो आगे को ❀ तब धाँधू ने दइ ललकार ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर ❀ तुम्हरो काल रह्यो मड़राय ॥
घोड़ा फेंक्यों तब जगनिक ने ❀ औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धोखा दैके तब धाँधू को * शिरकी कलँगी लई उतारि ॥
जगनिक घोड़ा तिरछे हाँको * नदिया निकरि गयो वापार ॥
बोले धाँधू जगनायक ते * भैने सुनो चँदेले क्यार ॥
हमरी कलँगी हमको दैदेउ * इतनी मानौ बात हमारि ॥
बोले जगनिक तब धाँधू ते * हम ना कलँगी दि हैं तुम्हारि॥
यह दिखलै हैं हम आल्हा को * यह कहि घोड़ा दियो बढ़ाय॥
देखि हाल यह चौड़ा ब्राह्मण * मनमें सोचि सोचि रहिजाय।
तनिकसा लरिका महुबे वाला * सो कलँगी लै गयो उतारि ॥
हियाँकि बातें तो हियँ छाड़ो * अब आगेको सुनो हवाल ॥
राम बनावें सो बनि जावै * बिगरी बनत बनत बनिजाय॥
जगनिक पहुँचे तब कोडहरि में * देखो पेड़ बरगदा क्यार ॥
तहँपर उतरि परे घोड़ाते * अपनो लीन्हीं जीन बिछाय॥
बाँधो घोड़ा तुरत पेड़ में * सोवनलाग महोबिया ज्वान॥
आयो माली जो बगिया में * सो घोड़ा तन रह्यो निहारि ॥
माली चलिभयो तब बगियाते * औ गंगा पै पहुँचो आय ॥
करी बन्दगी तब राजा को * औ घोड़ा को कह्यो हवाल ॥
उमिरि बीतगई मोरि कोडहरि में * ऐसो तुरँग न परो दिखाय ॥
यह सुनि गंगा तुरतै चलिभे * औ बगिया में पहुँचो जाय॥
सोवत देखो जगनायक को * तुरतै घोड़ा लिये चोगय ॥
सो बँधवाय दियो महलन में * औ यह हुक्म दियो करवाय॥
नाम जो लेहै कोउ घोड़ा को * तो हम ले हैं शीश कटाय ॥
जागे जगनिक जब बगिया में * तब ना घोड़ा परो दिखाय ॥
सोचन लागे जगनायक तब * हमरे घोड़ा आय पिछार ॥
टाप देखिके फिरि घोड़ा की * जगनिक कोडहरि पहुँचेजाय॥
पानी भरती रहि पनिहारी * सो आपुस में लगी बतान ॥
ऐसो घोड़ा हम देखो ना * जैसो राजा लिये चोराय ॥
कान अवाजपरी जगनिक के * जगनिक बीच कचहरी जाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करी बंदगी तब गंगा को * सो जगनिक ते लगे बतान ॥
कहां ते आये औ कहँ जैहो * अपनो हालदेउ बतलाय ॥
बोले जगनिक तब गंगा ते * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
हम तो आये हैं महुबे ते * औ कनउजको कियो पयान॥
हैं हम भैने चन्देले के * औ जगनायक नाम हमार ॥
घोड़ा लाये तुम बगिया ते * सो तुम हमहिं देउ मँगवाय ॥
घोड़ा हमरो जो देहौ ना * तो मैं पेटुमारि मरिजाउँ ॥
गुस्सा होय तब गंगा बोले * जगनिक अकिलगई तुम्हारि॥
चोर बनावत क्यों हमको तुम * ना हम करत चोरके काम ॥
बहुत बछेरा हैं हमरे घर * जो चाहौ सो लेउ खोलाय ॥
जैसे भैने चन्देले के * तैसेइ भैंने लगौ हमार ॥
बोले जगनिक तब गंगा ते * हमरो घोड़ा देउ मँगाय ॥
दुसरो घोड़ा हमहिं न चहिये * आवै कौन हमारे काम ॥
जो ना देहौ तुम घोड़ा को * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनतै गंगा ठाकुर * जगनायक को लियो बँधाय॥
डेढ़पहर जब राति बीति गई * तब तहँ रानी परी दिखाय ॥
जगनिक बोले तब बिनती करि * रानी सुनो पँवारे क्यार ॥
महुबो घेरो पृथीराज ने * मल्हना पाती लिखौ बनाय ॥
दैके पाती हमहिं पठायो * हम कनउज की पकरी राह॥
आल्हा ऊदन को लैहैं हम * राजा घोड़ा लिया चोराय ॥
जो सुनि पैहैं आल्हा ऊदन * तुरतै कोड़हरि लिहैं लुटाय ॥
यह सुनि रानी बोलन लागी * घोड़ा तुम्हरी दिहैं दिवाय ॥
भोर होत ही घोड़ा दै दियो * जगनिकबहुत खुशीहोइजाय॥
रखि लियो कोड़ा सवालाख को * तब जगनिक ने कहीसुनाय॥
बदला लेहैं हम कोड़ा को * लौटत कोड़हरि लिहैं लुटाय ॥
यहकहि तुरतै जगनिक चलिभै * पहुँचे गढ़ कनउज में जाय ॥
पाँच दिना मारग में लागे * जगनिक पहुँचे बीच बजार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जगनिक पूछैं हलवाइन ते * तुम आल्हाको देउ बतलाय ॥
कहँ पर मिलिहैं ऊदन ठाकुर * सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
करो बहाना हलवाइन ने * आल्हा शहर केर कोतवाल ॥
दुसरे आल्हा यक तेली है * तीजे रहा महोबे क्यार ॥
सो वे आल्हा ऊदन दोनों * गाँजर लड़न गये चढ़ि धाय॥
सो वे मारेगये गांजर में * यहसुनिजगनिकसोचनलाग॥
बड़ा भरोसा करि आये हम * सो यहकाह भयो भगवान ॥
धक्का लागि गयो जियरामें * जगनिक बहुत गये घबड़ाय ॥
फिरिधरि धीरज आगे बढ़िगे * औ लरिकनते पूछन लाग ॥
कहँपर मिलि हैं आल्हाऊदन * साँची हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले लरिका तब जगनिक ते * ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
अबहिं कचहरी ते आल्हा गै * रिजिगिर पहुँचे होइहैं जाय ॥
यहसुनि लौटे जगनायक तब * हलवाइन को लूटन लाग ॥
भागे हलवाई तुरतै तब * औ जयचंद कचहरी जाय ॥
हालसुनायो तहँ जगनिक को * औ राजाते करो पुकार ॥
हुक्म दैदियो तब जयचँद ने * औ लाखनि ते कही सुनाय ॥
जल्दी जायबाँधि लरिका को * हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
भुरुहीं हथिनी पर लाखनि चढ़ि * लीन्हे साथ बीस असवार ॥
चलिभै लाखनि तब बँगला ते * औ बजार में पहुँचे जाय ॥
समुहें देखो जगनायक को * लाखनि राना कहा सुनाय ॥
हथिनी मस्ता यह हमरी है * अपनो घोड़ा जाउ हटाय ॥
सुनतै जगनिक बोलन लागे * तुम सुनिलेउ कनउजी राय ॥
कट्टर घोड़ा ना हटिबे को * अपनो हथिनी जाउ हटाय ॥
लालिकमान लई लाखनि तब * औ जगनिकते कही सुनाय ॥
पाँव बढ़ैहो जो आगे को * तोहम घोड़ा लिहैं छँड़ाय ॥
बोले जगनायक गुस्सा होय * राना सुनो हमारी बात ॥
नगर महोबा यक बस्ती है * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हम हैं भैने चन्देले के * औ जगनायक नाम हमार ॥
है यह घोड़ा ब्रह्मानँद को * भेजो हमहिं मल्हनदे रानि ॥
जाय मनै हैं हम आल्हा को * अटको काज चँदेले क्यार ॥
कौन शूरमा है धरती पर * जो यह घोड़ा लेय छँडाय ॥
सुनी बात जब यह जगनिककी * लाखनि मनमें गौखिसियाय॥
बोले लाखनि तब जगनिकते * भैने सुनो हमारी बात ॥
यहना कहियो तुम आल्हाते * की लाखनिने गही कमान ॥
ताना दे हैं हमहिं उदैसिंह * होइहैं जियतै मरन हमार ॥
बोले लाखनिते जगनिक तब * ना हम हीनी कहैं तुम्हारि ॥
इतनी कहिकै करी बन्दगी * औरिजिगिरकी पकरी राह ॥
लाखनि पहुँचे तब बँगलामें * औ राजाते कह्यो हवाल ॥
जगनिक पहुँचे जबरिजिगिरिमें * फाटक बीस कदम रहिजाय ॥
तुरतै धावन गय आल्हा पै * औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
जगनिक आये हैं द्वारे पर * सो हरनागर पर असवार ॥
सुनतै आल्हा बोलन लागे * हमहिंन साँची परत दिखाय ॥
जगनिक औतेजो रिजिगिरिको * लौते घोड़ा तुरत फँदाय ॥
देर लागिगै जब धावन को * जगनिक घोड़ा दियो फँदाय॥
जहाँ अखाड़ा रहे इन्दल को * जगनिक तहाँ पहुँचे जाय ॥
जबही देखो जगनायक को * इन्दल बहुत खुशी हो जाय ॥
इन्दल पूँछो जगनायक ते * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले जगनिक तब इन्दल ते * पहिले आल्है देउ मिलाय ॥
कुशल छेम कहि हैं पीछे हम * यह सुनि इन्दलचले लेवाय ॥
सूरति देखी जब जगनिककी * आल्हा छाती लियो लगाय ॥
आल्हा पूँछी जगनायक ते * सबकी कुशल देउ बतलाय ॥
यह सुनिपाती मल्हना वाली * खोलिके आल्है दइ पकराय ॥
पाती बाँचो सुनि आल्हा ने * आल्हा मनमें गै घबराय ॥
पूँछन लागे बघऊदनि तब * काहे बदन गयो मुरझाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले आल्हा तब ऊदनि ते * महुबो पिरथी लियो घिराय ॥
खाली कर दियो दश पुरवाको * जल्दी तुम महलन लौ जाउ ॥
त्यार कराय लेउ भोजन तुम * यह सुनि गये उदैसिंह राय ॥
त्यार रसोई तहँ करवाई * जगनिक को लीन्हें बुलवाय ॥
बोले जगनायक आल्हा ते * अबहीं फौज लेउ सजवाय ॥
त्यारी करिदेउ जब चलिबे को * तब हम जेयँ लिहैं ज्योंनार ॥
सुनतै हुक्म दियो आल्हा ने * अबहीं फौज होय तैयार ॥
आल्हा ऊदन ढेवा इन्दल * औ जगनायक संग लेवाय ॥
पाँचो पहुँचि गये चौका में * सोनवाँ परसै थार अगार ॥
लई बिजनियाँ कर फूलन को * देवै करने लगी बयारि ॥
कौर उठावतही जगनिक के * जबसुधि आइ बीर मलिखान ॥
नैनन आँसु ढरकन लागे * तब देवै ने कही सुनाय ॥
धीरज राखो जगनिक बेटा * गढ़ महुबे को लिहैं बचाय ॥
बोली सोनवाँ तब जगनिक ते * तुम सिरसाको कहौ हवाल ॥
तब जगनायक ने सिरसा को * सिगरी हाल दियो बतलाय ॥
माहिल राजा उर्इ वाले * तिनसब लीन्हो भेद बनाय ॥
सीधे जियकी ब्रह्मानी * तिन सब भेद दियो बतलाय ॥
माहिल पहुँचे तब दिल्ली में * सिगरो भेद कह्यो समुझाय ॥
करी चढ़ाई फिरि पिरथी ने * सिरसा धूरो लियो दबाय ॥
ऊभे खोदवाये धूरे पर * तिनमें साँगैं दई गड़ाय ॥
घास बिछाय दियो तिन भीतर * ऊपर पटपर दियो कराय ॥
धोखा दैके नर मलिखे को * अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥
ऊभे पार खड़े ताहर थे * तिनसो लड़न चले मलिखान ॥
घोड़ी पैठि गई ऊभे में * घोड़ी घायल भई बनाय ॥
पद्म फाटि गयो नरमलिखे कै * जूझे खेत बीर मलिखान ॥
मदन गड़रिया मन्ना गूजर * सुलखे जूझि गये मैदान ॥
सती होइ गइ रनि गजमोतिनि * ब्रह्मा दीन्हें प्राण गँवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनते परलै होइ गइ * रोवन लगे उदैसिंह राय ॥
आल्हा ढेबा इन्दल जगनिक * रोवन लागे जार बेजार ॥
हाहा करि सब रोवन लागे * सिगरौ रोय उठो रनिवास ॥
आल्हा आये दरवाजे पर * घोड़न जीन दिये उतराय ॥
तौलौ जगनिक गये द्वारे पर * औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
काहे जीन उतारि दियो तुम * सो तुम हाल देउ बतलाय ॥
बोले आल्हा तब जगनिक ते * घटिहा बसैं रजा परिमाल ॥
मलिखे मारेगे सिरसा में * नाहीं खबरि दई पहुँचाय ॥
हमहिं निकारि दियो भादौ में * कीन्हों रहे कौन अपराध ॥
जियत न जैहैं हम महुबे को * कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
बोले जगनिक तब आल्हा ते * जल्दी त्यारी लेउ कराय ॥
जोना चलिहौ तुम महुबे को * तो मैं पेट मारि मरि जाउँ ॥
देवै समुझावै आल्हा को * बेटा मानो बात हमारि ॥
जल्दी चले जाउ महुबे को * राखौ धर्म चँदेले क्यार ॥
बात न मानी तब आल्हा ने * देवै गई उदैसिंह पास ॥
बोली देवै तहँ ऊदन ते * बेटा चलहु महोबे जाउ ॥
बहुतै समझायो आल्हा को * तिनना मानो कही हमारि ॥
सुनतै ऊदन बोलन लागे * माता सुनो हमारी बात ॥
जेठो भैया बाप बरोबरि * आल्हा पठवैं तो हम जायँ ॥
देवै बोली तब ऊदन ते * पालो तुमहिं मल्हनदे रानि ॥
जो लुटि जैहैं नगर महोबा * जगमें होइहैं हँसी तुम्हार ॥
याही दिनको मल्हना पालो * की गाढ़े में ऐहैं काम ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * माता सुनो हमारी बात ॥
कही न मनिहैं हम आल्हा को * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
यह सुनि देवै बोलन लागी * रोवन लागी जार बेजार ॥
होती बेटी जो हमरे यक * कोहु राजाको जाती ब्याहि ॥
कुम्मक लौती त्यहि राजाते * औ महुबे को देति पठाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनी बात जब यह देवै ते * मानहु लग्यो करेजे बान ॥
बोलन लाग्यो उदनि बाँकुड़ा * माता मनिहौं बात तुन्हारि ॥
अकिलो जैहौं मैं महुबे को * यहकहि चले उदैसिंह राय ॥
ऊदन पहुँचे जब आल्हा पै * औ आल्हा ते लगे बतान ॥
जल्दी साजि चलो दादा तुम * अबना राखो देर लगाय ॥
गुस्सा होइके आल्हा बोले * हमना जैहैं नगर महोब ॥
घटिया राजा चन्देला है * सिरसा जूझिगये मलिखान ॥
खबरि पठाई नहिं हमरे ढिग * औ भादौं में दियो निकारि ॥
सुनतै ऊदन बोलन लागे * दादा सुनो हमारी बात ॥
बाँसन मारो तुमदादा म्वहिं * जल्लादन को दियो गहाय ॥
तापर गुस्सा भये चँदेले * औ भादोंमें दियो निकारि ॥
जब रिस दूरि भई राजा की * तब जगनिक को दियो पठाय ॥
जल्दी त्यार होउ दादा तुम * इतनी मानो कही हमारि ॥
गुस्सा होय तब आल्हा बोले * चाहै कोटिन करौ उपाय ॥
जियत महोबे हमना जैहौं * कागा मरे हाल लै जाय ॥
तड़पे ऊदन तब आल्हा ते * आधी फौज देउ बँटवाय ॥
संग पठावौ तुम इन्दल को * माया लेउ तिहाई बाँटि ॥
हँसी खुशी ते जो ना देहौ * तो मैं कठिन करौं तलवारि ॥
हम तो जैहौं गढ़ महुबे को * रखिहैं धर्म चँदेले क्यार ॥
ढेवा समुझायो आल्हा को * मानो बात उदैसिंह क्यार ॥
आल्हा बोले तब ढेवा ते * जान न दिहैं कनौजीराय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * तुम जैचंद कचहरी जाउ ॥
अज्ञा माँगि लेउ राजाते * औ महुबे को होउ तयार ॥
हाथी मँगवायो आल्हा ने * तापर तुरत भये असवार ॥
आल्हा पहुँचे जब बँगला में * औ जैचँद को करी सलाम ॥
नजरि बदलिगइ तब जैचँदकी * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो यहँ आल्हा तुम * अपनो हाल देउ बतलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथ जोरि आल्हा बोले तब * औ महुबे को कह्यो हवाल ॥
जगनिक आये हैं महुबे ते * अज्ञा देउ महोबे जायँ ॥
गुस्सा होय तब जैचँद बोले * औ आल्हा ते लगे बतान ॥
लुटि करी जो तुम गाँजर में * सो महुबे में दई पठाय ॥
खायके मोटभये रिजिगिर में * तब महुबे को भये तयार ॥
लेखा देउ सबै गाँजर को * यहकहि कैद दई करवाय ॥
आल्हा भेज्यो तब रुपना को * तुम ऊदनि ते कहो हवाल ॥
उनहीं पायन रुपना चलिभयो * औ ऊदन पै पहुँचो आय ॥
हाल सुनायो तब आल्हा को * जैचँद आल्हे लियो बँधाय ॥
लेखो माँगत हैं गाँजर को * जल्दी उनहिं देउ समझाय ॥
इतनी सुनतै बघऊदन ने * घोड़ा बेंदुला लियो सजाय ॥
देवै माता पूछन लागी * अबतुम कहँको भये तयार ॥
बोले ऊदनि तब देवै ते * माता सुनो हमारी बात ॥
आल्हा गये रहे जैचँद पै * औ महुबे को कह्यो हवाल ॥
अज्ञा माँगो जब जैबे को * तब उन कैद लई करवाय ॥
लेखो माँगत हैं गाँजर को * सो हम उन्हे दिहैं समुझाय ॥
दुसरी करि हैं जो हमरे संग * तो सब जै हैं काम नशाय ॥
तब देवै समुझावन लागी * बेटा करो अधीनी जाय ॥
अज्ञा लैके हँसी खुशीते * तब महुबे को होउ तयार ॥
संग लेउ तुम जगनायक को * तब जगनिकते कही सुनाय ॥
सुथरी बैठक है जैचँद को * मैले कपड़ा भये हमार ॥
कपड़ा मँगवायो इन्दल के * सो जगनिक को दै पकराय ॥
कपड़ा पहिरे सो जगनिक ने * औ हरनागर लिये सजाय ॥
दोनों चढ़िगे तब घोड़न पर * गलियनघोड़ नचावत जायँ ॥
जितनी सखियां हैं छज्जन पर * सो सब मोहि २ रहिजायँ ॥
सुनी खबरि जब राजा जैचँद * द्वारे हाथी दियो ढिलाय ॥
जबहीं पहुँचे दरवाजे पर * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथि पछारिदेउ जगनिक तुम ❀ जगनिक उतरिपरे अरगाय ॥
भाला लैलियो जगनायक ने ❀ औ हाथीको दियो पछारि ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे ❀ फाटक निकरि गये बापार ॥
जगनिक ऊदन दोनों पहुँचे ❀ जहँ दरबार कनौजी क्यार ॥
उतरे ऊदन रसबेंदुलते ❀ औ जगनिकते लगे बतान ॥
जबहिं बुलावैं तुमहिं कनौजी ❀ करियो तबहिं बन्दगी जाय ॥
तवा सात राजा गड़वाये ❀ तिनपरसांग धमकियो आय ॥
यह कहि ऊदन आगे बढ़िगे ❀ औ राजा के समुहें जाय ॥
करी बन्दगी बघऊदनने ❀ औबिनती करि कही सुनाय ॥
सातलाख ते चढ़ो पिथौरा ❀ महुबो नगर लियो घिरवाय ॥
चिट्ठी भेजी रनि मल्हनाने ❀ आज्ञा देउ महोबे जाँय ॥
तुरत बचैहैं हम महुबे को ❀ रखिहैं धर्म चँदेले क्यार ॥
सुनतै जैचन्द बोलन लागे ❀ अब तुम ऊदन गये मुटाय ॥
गंगाजल पीयो कनउजमें ❀ नित गंगाको करि अस्नान ॥
गेहूँ खाये तुम गाँजरको ❀ लूटिकि माया लइ पँजियाय॥
लेखा बतलावो गाँजर को ❀ तब महुबेको होउ तयार ॥
तब फिरि ऊदन बोलन लागे ❀ राजा सुनो हमारी बात ॥
बारह बरस लड़े गाँजरमें ❀ तुम नहिं पाई एक छदाम ॥
धन्यकि छाती है आल्हाकी ❀ गाँजर पैसा लियो भराय ॥
सिगरे राजा गाँजरवाले ❀ बाँधिके तुमको दे सौंपाय ॥
दौलति लाये जो गाँजरते ❀ औतै तुम्हरे धरी अगार ॥
तीनि महीना औ तेरह दिन ❀ तंग न छुटे बछेरन क्यार ॥
लाज तुम्हारी हमने राखी ❀ सिगरे राजा लिये बँधाय ॥
घोड़ा पपिहा घायल होइगयो ❀ ताकी मोल देउ मँगवाय ॥
जोगा भोगा दोनों जूझे ❀ तिनको अब तुम देउ जिआय॥
लेखा यहु है गाँजरवाला ❀ सोतुम समुझि लेउ महराज ॥
कैद कराई क्यों आल्हाको ❀ सो तुम हाल देउ बतलाय ॥
घोड़ा पपिहा के बदले में ❀ भुरही हाथिनी लिहौं खोलाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जोगा भोगा के बदले में ❀ जैहों लाखनि साथ लिवाय ॥
गंगा कीन्ही लाखनि राना ❀ महुबे चलिहैं संग तुम्हार ॥
हँसी खुशी ते आज्ञा दै देउ ❀ नाहीं कठिन करों तलवारि ॥
बोले जैचँद तब ऊदनिते ❀ हमने करी हँसौआ आज ॥
साँची जानी बघऊदन तुम ❀ धनि २ दस्सराजके लाल ॥
जबहीं जैहौ तुम महुबे को ❀ अपनी लश्कर दिहौं सजाय ॥
छकरन माया तुमको देहौं ❀ तुरतै जैयो नगर महोब ॥
लाखनि ह्वै हैं रनि तिलका घर ❀ तिनते माँगि लेउ तुम जाय ॥
कौन खबरि लायो महुबे को ❀ सो तुम अबहीं लेउ बुलाय ॥
तुरत बुलायो तब जगनिकको ❀ सो समुहें पर पहुँचे आय ॥
करी बन्दगी जगनायक ने ❀ तब हँसि कही कनौजीराय ॥
भैने आवो चन्देले के ❀ औ सब हाल कहौ समुझाय ॥
कै यह बखतर माँगिकै लाये ❀ या काहू के लिये उठाय ॥
तापर ज्वाब दियो जगनायक ❀ राजा सुनो हमारी बात ॥
माँगिके नाहीं यह लाये हम ❀ ना हम बख्तर लिये उठाय ॥
बड़े बड़े जोधा हमने जीते ❀ तिनके बख्तर लिये उठाय ॥
इतनी कहिकै साँग धमकी ❀ सातो तवा तोरि धँसि जाय ॥
देखि हाल यह राजा जैचँद ❀ मुँहमें रहे अँगुरिया दाब ॥
बड़े बड़े जोधा हैं महुबे में ❀ जिनते हारिगई तलवारि ॥
हाल सुनायो फिरि जगनिकते ❀ औ हँसि चले उदैसिंहराय ॥
जाय पहूँचे दोउ लाखनि पै ❀ औ लाखनि ते लगे बतान ॥
चढ़ो पिथौरा दिल्ली वालो ❀ घर २ महुबो लियो घिराय ॥
चिट्ठी पठई रनि मल्हना ने ❀ हम महुबे को भये तयार ॥
जल्दी त्यार होउ हमरे सँग ❀ अबना राखो देर लगाय ॥
तब हँसि लाखनि बोलनलागे ❀ हमना छोड़ि हैं संग तुम्हार ॥
पै तुम पूँछि लेउ तिलकाते ❀ तब हमचलिहैं संग तुम्हार ॥
दोनों चलिभै तब महलनको ❀ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
पूछैं रानी बघऊदन ते ❀ कहां कि त्यारी भई तुम्हारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथ जोरि बोले ऊदन तब ❋ माता सुनो बात धरिध्यान ॥
सात लाख ते चढ़ो पिथौरा ❋ महुबा नगर लियो घिरवाय ॥
संकट परि गये चन्देले पर ❋ मल्हना पाती दई पठाय ॥
सो हम जैहैं नगर महोबे ❋ लाखनि जैहैं संग हमार ॥
अज्ञा दैदेउ सो माता तुम ❋ तब तिलकाने कही सुनाय ॥
बारह रानिन के इकलौता ❋ औ सोरह को सर्व सिंगार ॥
आस लकरिया यक राजाकी ❋ सो तुम मानो कही हमारि ॥
संग लेउ जनि तुम लाखनि को ❋ रानी देव कुँवरि के लाल ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने ❋ माता सुनो हमारी बात ॥
लाखनि प्यारे बहुत तुमहिं हैं ❋ सो तुम घरमें लेउ बिठाय ॥
हमना प्यारे हैं देवै के ❋ जो गाँजर को लियो भराय॥
तंग न छूटो क्यहु घोड़ा को ❋ साढ़े तीन मास लगजाय ॥
गंगा कीन्ही हमते लाखनि ❋ महुबे चलिहैं साथ तुम्हार ॥
कायल होय तब तिलका बोली ❋ बेटा सुनो हमारी बात ॥
तबलौ बालक मात पिताको ❋ जौलौं होय न वाको ब्याह ॥
ब्याहभये पर तिरिया मालिक ❋ तासे पूछि लेउ तुम जाय ॥
सुनतै लाखनि तहँ बाँदी ते ❋ औ अंटा पर पहुँचे जाय ॥
बोले लाखनि तहँ बाँदी ते ❋ ऊपर खबरि देउ पहुँचाय ॥
बाँदी चढ़िगइ तब ऊपर को ❋ रानी सोयरही त्यहिं देखि ॥
सोचकै बाँदीने तुरतै तब ❋ सुन्दर चन्दन लियो उतारि ॥
सोइ लगाय दियो माथे पर ❋ औ ऊपरते करी बयारि ॥
ठंढक पहुँची तब माथेपर ❋ तुरतै नैना दिये उघारि ॥
समुहें देखो जब बाँदी को ❋ तब कुसुमाने कही रिसाय ॥
तूने कांची नींद जगायो ❋ तब बाँदी ने दियो जवाब ॥
हमहिं पठायो है तिलका ने ❋ नीचे ठाढ़े कंथ तुम्हार ॥
खोलि खिरिकिया तब देखतही ❋ मनमें बहुत खुशी होइजाय ॥
सब सिंगार करे रानी ने ❋ औ बाँदी ते कही सुनाय ॥
जल्दी लावौ तुम बालम को ❋ बाँदी तुरत पहूँची जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोली बाँदी तब लाखनि ते ❀ ऊपर जाउ कनौजी राय ॥
लाखनि चढ़िगे तब ऊपर को ❀ चारौ नैन एक होइ जाय ॥
मूर्छित होइगै लाखनि राना ❀ तब रानी ने कही सुनाय ॥
नैन को मारे तुम मूर्छित मे ❀ रण तुम काह करो तलवारि ॥
जगी मूर्च्छा जब लाखनि की ❀ तब रानी यह पूछन लागि ॥
कौन हेत दिनमें आये हो ❀ सो तुम हमे देउ बतलाय ॥
बोले लाखनि तब रानी ते ❀ पिरथी घेरो नगर महोब ॥
पाती भेजो रनि मल्हना ने ❀ आल्हा जैहैं नगर महोब ॥
हमहूँ संग जात ऊदन के ❀ सो तुम हुक्म देउ फरमाय ॥
सुनतै कुसुमा बोलन लागी ❀ स्वामी सुनो हमारी बात ॥
बादल उमड़त हैं चारौ दिशि ❀ निशिमें रहत अँधेरिया छाय ॥
जब सुधि ऐहैं हमहिं तुम्हारी ❀ तब हम करि हैं कौन उपाय ॥
झींगुर दादुर बोली बोलिहैं ❀ लागिहैं हिये काम को बान ॥
बिरह हूक उठि हैं जियरा में ❀ तब को हरि हैं पीर हमारि ॥
घटा छायरहि है सबही दिशि ❀ अकिले नींद न ऐ हैं माहिं ॥
बिजुली चमकि चमकि रहिजैहैं ❀ जियतै होइहैं मरन हमार ॥
ताते अबहिं न जाउ कंथ तुम ❀ इतनी मानो कही हमारि ॥
पिरथी घेरो नगर महोबा ❀ तुम ना जायो कंथ हमार ॥
तुम घिरि जैहो दल के भीतर ❀ तब तुम करिहौ कौन उपाय ॥
बोले लाखनि तब कुसुमाते ❀ रानी सुनौ हमारी बात ॥
खड़ग बिजुलिया हम दे जैहैं ❀ सोई जनियो कंथ हमार ॥
तापर रोय कही रानी ने ❀ ओसय कैसे बुझै पियास ॥
हमहूँ चलिहैं संग तुम्हारे ❀ महुबे दिखिहैं जूझ अघाय ॥
गुस्सा होय तब लाखनि बोले ❀ रानी अकिल गई तुम्हारि ॥
संगमें डोला जो लै जैहैं ❀ हमको हँसिहैं सकल जहान ॥
तीनि घरीके हम पाहुन हैं ❀ ताते खेलौ पंसासार ॥
लैके चौसरि तब कुसुमा ने ❀ तुरतै तहँ पर दई बिछाय ॥
खेलत होइ गयो डेढ़ पहर तब ❀ लाखनि उठे भरहरा खाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पूछन लागी रानी कुसुमा ❀ काहे तुरत उठे महराय ॥
बोले लाखनि तब रानी ते ❀ नीचे खड़े उदैसिंह राय ॥
डेढ़ पहर बीतो अंटा पर ❀ तबही उझकि देखिकै रानि ॥
बोलन लागी बघ ऊदन ते ❀ तुम सुनि लेउ उदैसिंह राय ॥
हठ ना ठानौ तुम बालम सँग ❀ ना लैजाउ आपने साथ ॥
चुरियाँ हमरी अम्मर करि देउ ❀ इतनी मानौ कही हमारि ॥
ना ये जानैं कठिन लराई ❀ नाकहुँ करी कठिन तलवारि॥
ताते मानौ बात हमारी ❀ ना लैजावो कंथ हमार ॥
माया चहिये जो तुमको कछु ❀ सो हम छकरन देयँ भराय ॥
फौज कटीली जो चहिये कछु ❀ सो लैजाउ आपने साथ ॥
पै नहिं संग लेउ बालम को ❀ इतनी मानौ बिनय हमारि ॥
जो कहुँ बालम मारे जैहैं ❀ बेड़ा कौन लगैहैं पार ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने ❀ रानी सुनो कनौजी क्यार ॥
पगिया बदली राज घाट में ❀ औ छाती लग गंग मँझाय॥
कौल करार कियो लाखनि ने ❀ हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार ॥
सो हम ले जैहैं लाखनि को ❀ रखिहैं धर्म चँदेले क्यार ॥
तबतो कुसुमा बोलन लागी ❀ आल्हे डसै कालिया नाग ॥
भरी जवानी इन्दल मरियो ❀ तुमहू मरौ उदैसिंह राय ॥
जो मैं जनती ऐसो होइहै ❀ औतै देती तुमहिं निकारि ॥
जोड़ी हमरी तुम बिछुराई ❀ घटिहा पूत दिवल दे क्यार॥
बोले ऊदन तब गुस्सा होय ❀ लाखनि सुनो हमारी बात ॥
रूप देखिकै तुम रानी को ❀ मोहित होइगै हमहिं भुलाय ॥
अब तुम बैठि रहौ अंटा पर ❀ अपने छोरि धरो हथियार ॥
जब सुधि ऐहैं तमहिं यहांकी ❀ तब धरि दिहो ढाल तलवारि॥
कायल होइकै तब लाखनि ने ❀ पांसे तुरतै दिये फिंकाय ॥
तुरतै लाखनि त्यारि कीन्ही ❀ तब कुसुमा ने हाथ उठाय ॥
ऊपर चितै कही ब्याकुल होय ❀ बहिनि बदरिया होउ सहाय ॥
कारि बदरिया तुमको सुमिरौं ❀ कौंधा बीरन को बलि जाउँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

झिमकि के बरसौ तुम अंटापर ❀ कंथा आजु रैनि रहि जायँ ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनि ने ❀ रानी अकिल गई तुम्हार ॥
कारि बदरिया सारी लागै ❀ कोंधा लागे सार हमार ॥
डारि मोमियां देउँ भुरुही पर ❀ बदरै देत चुनौती जायँ ॥
देर न करिहैं हम अंटा पर ❀ बीतै घरी घरी पर ब्यार ॥
फिरिकै रानी बोलन लागी ❀ कंथा सुनो हमारी बात ॥
पिंजरा साथलेउ चिड़ियन के ❀ जिनको प्यार करौ दिनराति॥
खिरकी खोलि दई लाखनि ने ❀ औ सब दीन्हे लाल उड़ाय ॥
दावन पकरौ तब कुसुमा ने ❀ औ लाखनि ते कही सुनाय॥
सोई पृथीराज दिल्ली के ❀ जिनने कठिन करो संग्राम ॥
डोला लैगै संयोगिनि को ❀ काहे न कियो सामना जाय॥
गुस्सा होय तब लाखनि बोले ❀ औ रानी को दियो जवाब ॥
दासी कन्या संयोगिनि को ❀ पृथीराज लेगये चोराय ॥
बदला लेहौं मैं ताही को ❀ तब छाती को डाहु बुझाय ॥
रही उमिर तब तीन बरस की ❀ नाहीं कमर धरी तलवारि ॥
तब क्या करते ना समुझी में ❀ सोई अब हम भये तयार ॥
डोला लेहैं हम अगमा को ❀ रानी धीर धरो मन माहिं ॥
फिरिकै कुसुमा बोलन लागी ❀ स्वामी दृध धरो बिलखाय ॥
करै रसोई माता तिलका ❀ सो तुम जेंइ लेउ ज्योंनार ॥
यह सुनि लाखनि बोलनलागे ❀ हमको भोजन जहर समान ॥
रुधिरधार सम हमहिं दूध है ❀ कैसे जेंइ लेयँ ज्योंनार ॥
नदि बेतवैपर हमरि रसोई ❀ परसै हमहिं चौड़िया राय ॥
सोई खैहैं हम नदिया पर ❀ फिरि कुसुमा ने कही सुनाय॥
चटक चूनरी ना मैली भइ ❀ ना धोबी घर गयो पटोर ॥
लाज न छूटी मेरे नैनन की ❀ कंथा छाड़ि चले परदेश ॥
अबके बिछुरे फिरिकब मिलिहौ ❀ स्वामी हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले लाखनि तब रानी ते ❀ रानी सुनो हमारी बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चारि महीना के बीते पर ❋ पचयें हेरिओ बाट हमारि ॥
सुनतै कुसुमा बोलन लागी ❋ हमरो जोबन गयो कुम्हिलाय ॥
सगुन हमारो खाली परिगयो ❋ अबना मिलिहैं कंथ हमार ॥
थोरे दिन की यह जोड़ी है ❋ सो ब्रह्माने दइ बिछुराय ॥
बारी उमिरि मोर बिरहिन की ❋ बेड़ा कौनु लगे हैं पार ॥
हाय बिधाता यह कैसी भइ ❋ यह दुख हमहिं दियो करतार ॥
लाखनि समुझायो रानीको ❋ मनमें धीर धरौ महरानि ॥
बिना मीच कोऊ मरि है नहिं ❋ सोतुम समुझि लेउ मनमाहिं ॥
स्वर्ग मड़ैया सब काहू को ❋ कोऊ आजु मरे कोउ कालि ॥
शूर प्राण खोवत रण सन्मुख ❋ कायर भागत प्राण बचाय ॥
काज पराये जो मरि जैहैं ❋ होइहैं नाम प्रगट संसार ॥
घरमें रहिके जो मरि जैहैं ❋ कोऊ न लेहैं नाम हमार ॥
यहसुनि कुसुमा बोलन लागी ❋ स्वामी खेलौ जूझ अघाय ॥
काम बनावो चन्देले को ❋ पै यक बचन सुनौ दैकान ॥
पाँव पिछारू ना धरियो तुम ❋ नहिं क्षत्रीपन जाय नशाँय ॥
मोहिं कसम माता तिलकाकी ❋ औ जैचँदके रक्त नहाउँ ॥
कटि कटि मांस गिरे धरनीपर ❋ पै ना धरौं पिछारी पाँव ॥
फिरि यह बोली कुसुमा रानी ❋ परहुल दिया बुझाये जाउ ॥
जो अंटाते देखि परत है ❋ ताको खटका देउ मिटाय ॥
जो सुनिपैहैं भगे कनौजी ❋ तो मैं पेट मारि मरि जाउँ ॥
रणके सन्मुख जो मरिजैहो ❋ होइहौं सती तुम्हारे साथ ॥
यहसुनि हँसिके लाखनि बोले ❋ रानी बचन करो परमान ॥
इन्द्र डोलिजायँ इन्द्रासन ते ❋ औ शिवडोलि जायँ कैलास ॥
लाखनि डोलन के नाहीं हैं ❋ चाहेतन धजीधजी उड़िजाय ॥
सिंहा ठाकुर परहुल वाला ❋ ताको खटका हमहिं सिवाय ॥
बोले लाखनि तब रानी ते ❋ पहले दिया दिहैं बुझवाय ॥
धीरज दैके रनि कुसुमा को ❋ औ चलिभये कनौजी राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

संगै चलिभै उदन बाँकुड़ा ❀ लाखनि डंकादियो बजाय ॥
कान अवाज परी तिलका के ❀ सो ड्योढ़ीपर पहुँची आय ॥
पूँछे तिलका तब लाखनि ते ❀ कहँकी त्यारी दई कराय ॥
बोले लाखनि हाथ जोरि कै ❀ हम महुबे को भये तयार ॥
यह सुनि बोली रानी तिलका ❀ कुसुमै संग लिवाये जाउ ॥
बोले लाखनि तब तिलकाते ❀ माता बोलो बात सम्हारि ॥
हँसी हमारी जगमें होइहै ❀ यह कहि हँसिहै सकल जहान॥
बेन चक्कवै को नाती है ❀ डोला संग पद्मिनी क्यार ॥
पृथीराज यह ताना देहैं ❀ कुसुमा रानी तुम्हरे साथ ॥
यहकहि चलिभै लाखनि राना ❀ औ जैचँद पै पहुँचे जाय ॥
ऊदन लाखनि करी बन्दगी ❀ हाथजोरि यह कही सुनाय ॥
आज्ञा देदेउ हँसी खुशी ते ❀ महुबे कूच जायँ करवाय ॥
सोन सिंहासन जैचन्द बैठे ❀ बैठे बड़े बड़े उमराव ॥
गाँजर वाले चारिहु राजा ❀ बारह कुँवर बनौधे क्यार ॥
लला तमोली धनुआँ तेली ❀ मीरासैयद बनरस क्यार ॥
यह सब बैठे थे बँगला में ❀ सबसे जैचँद कही सुनाय ॥
सबको सौंपतहौं लाखनि को ❀ हमको फेरि मिलैयो आय ॥
इतनी सुनतै मीरा सैयद ❀ तुरतै लियो कुरान उठाय ॥
चारौ राजा गाँजर वाले ❀ बारहु कुँवर बनौधे क्यार ॥
धनुआँ तेली लला तमोली ❀ सबने गंगा लई उठाय ॥
पहले जुझिहैं हम खेतन में ❀ ता पीछेते पुत्र तुम्हार ॥
जहाँ पसीना गिरे कुँवर को ❀ तहँ देदेउँ रक्त की धार ॥
ठाढ़ी तिलका जो बँगला पर ❀ त्यहि ऊदनको लियो बुलाय ॥
बोली तिलका बघऊदन ते ❀ बेटा सुनो हमारी बात ॥
तुमको सौंपतिहौं लाखनिको ❀ खेलियो युद्ध एकही साथ ॥
लाय मिलैयो फिरि बेटाको ❀ औ गाढ़े में दीजो संग ॥
सुनतै ऊदन बोलन लागे ❀ माता सुनौ हमारी बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सौंपत नाहीं कोउ क्षत्रीको * निसदिन रहत कालको साथ ॥
पै हम बचन देत माता को * हमरे बचन करौ परमान ॥
गिरै पसीना जहँ लाखनि को * तहँ मैं देउँ रक्त की धार ॥
भाई समुझत हौं हिरदे से * सो तुम जानि लेउ महरानि ॥
इतनी सुनतै रनि तिलका ने * भुरुही हथिनी लई मँगाय ॥
मस्तक पूजिदियो हथिनी को * औलाखनि को लियो बुलाय ॥
हाथ पकरिकै तब लाखनि को * औ भुरुही ते कही सुनाय ॥
तुमको सौंपतिहौं लाखन को * नहिं तुम धरियो पाँव पिछारि ॥
रोचना करि के तब तिलका ने * औ छातीते लियो लगाय ॥
चरण छुये माता तिलका के * औ माथेते लियो लगाय ॥
भुरुही हथिनी तब सजवाई * तापर लाखनि भये सवार ॥
बोले लाखनि तब क्षत्रिन ते * यारो सुनौ हमारी बात ॥
घरमें तिरिया जिनहिं पियारी * सो सब तलब लेउ घर जाउ ॥
जिनहिं पियारी परम भगौती * सो सजि चले हमारे साथ ॥
बोले क्षत्री तब लाखनि ते * हमना धरिहैं पाँव पिछार ॥
कटि कटि बोटी गिरैं खेत में * पै ना तजिहैं साथ तुम्हार ॥
गंगा कीन्ही सब हिन्दुन ने * औ तुर्कन ने करौ कुरान ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना * अपनी कूच दियो करवाय ॥
लश्कर चलिभयें गढ़कनउजते * संगे चले बनाफर राय ॥
आल्हा चलिभै तबरिजिगिरिते * संगे मिलो काफिला जाय ॥
साथमें डोला सब रानिन के * संगे चले महोबिया ज्वान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ सिंहाठाकुरसे लाखनिकी लड़ाई।

* आल्हा *

सुमिरन करिकै नारायण को * औ गणपति के चरन मनाय ॥
सिंहा ठाकुर औ लाखनि को * लिखिहौं कछुक लड़ाई गाय ॥
होत सबेरे परहुल पहुँचे * तब लाखनि ने कही सुनाय ॥
हम करार कीन्हा रानी ते * परहुल दिया दिहौं बुझवाय ॥
आल्हा बोले तब लाखनि ते * धीरज धरौ कनौजी राय ॥
पाती लिखि कै हम सिंहा को * अबहीं दिया दिहैं बुझवाय ॥
लैके कागद कलपी वालो * अपनो कलमदान लै हाथ ॥
पहले लिखि कै सरनामा को * औ पीछे ते लिखी हवाल ॥
पाती पढ़ियो सिंहा ठाकुर * गालिब हुक्म कनौजी क्यार ॥
दिया बुझाय देउ अटा को * औ सजि चलो हमारे साथ ॥
लाखनि आये हैं कनउज ते * गढ़ महुबे को कियो पयान ॥
लिखिके पाती नुनि आल्हा ने * हरकारा को दइ पकराय ॥
गयो हरकारा तब कोडहरि में * औ सिंहा को करी सलाम ॥
पाती धरि दइ तहँ गद्दी पर * सिंहा पाती लई उठाय ॥
पाती बाँचत गुस्सा आई * नैनन रही लालरी छाय ॥
तुरत नगरची को बुलवायो * तुरतै डंका दियो बजाय ॥
फौज त्यार भइ सब परहुल की * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
हाथी सजवायो सिंहाने * तुरतै तापर भये सवार ॥
जायके पहुँचो जब धूरे पर * तब सिंहाने कही सुनाय ॥
कौन शूरमा चढ़ि आयो है * सो समुहें होय देय जवाब ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदन ने * औ सिंहा को दियो जवाब ॥
लाखनि आये हैं कनउज ते * आगे जै हैं नगर महोब ॥
दिया बुझाय देउ अटा को * औ सजि चलौ कनौजी साथ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनतै सिंहा ठाकुर * तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
बत्ती देदेउ सब तोपन पै * सबको कटा देउ करवाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पै * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * चहुँदिशि धुवाँ रह्यो मड़राय ॥
अरर गोला छूटन लागे * गोला मन्न मन्न मन्नाय ॥
पहर एक भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन होइ जायँ ॥
आगे बढ़ि कै सब क्षत्रिन ने * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
झुके सिपाही कनउज वाले * खटखट चलनलगी तलवारि ॥
भगे सिपाही परहुल वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब सिंहाने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
सिंहा ठाकुर बोलन लागो * समुहैं खेलो जूझ अघाय ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना * आगे भुरुही दई बढ़ाय ॥
गुस्सा होइ कै तब सिंहाने * अपनो लीन्ही गुर्ज उठाय ॥
चोट चलाय दई लाखनि पर * लाखनि लीन्ही चोट बचाय ॥
आगे बढ़िकै तब लाखनि ने * सिंहा ठाकुर को लौ बाँधि ॥
लाखनि पहुँचै सतखंडा पर * करमें लैके लाल कमान ॥
तीर चलाय दियो लाखनिने * औ दीपक को दियो गिराय ॥
फौज साथ लीन्हा सिंहा की * औ सिंहा को साथ लेवाय ॥
कूच कराय दियो आगे को * कोडहरि धुरो दबायो जाय ॥

—*******—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ गंगाठाकुर से आल्हाकी लड़ाई।

आल्हा।

सुमिरन करिकै नारायण को * औ गणेशको चरण मनाय ॥
लिखौं लड़ाई अब गंगा की * यारो सुनियो कान लगाय ॥
बोले जगनायक ऊदन ते * हमरे बचन करो परमान ॥
कोडहरि वाले गंगाठाकुर * हरनागर लै गये चोराय ॥
उठे सोयके जब देखो हम * ना कहुँ घोड़ा परो दिखाय ॥
चिन्ह देखिके तब ठापन के * हम कोड़हरि में पहुँचे जाय ॥
घोड़ा माँगा हम गंगाते * तबहीं गंगा उठे रिसाय ॥
बिनती कीन्ही हम रानी को * तब उन घोड़ा दियो मँगाय ॥
कोड़ा हमरो सवा लाख को * सो नहिं दियो पँवारे राय ॥
हम चलि दीन्हे यह कहिकै तब * लौटत लेहौं नगर लुटाय ॥
सो तुम कोड़ाको मँगवावो * नहिंम्वहि हनैं रजापरिमाल ॥
सुनतै ऊदन बोलन लागे * औ लाखनिते कही सुनाय ॥
कोड़ा लेबे के बदले में * हम कोडहरि को लिहैं लुटाय ॥
बोले लाखनि तब ऊदन ते * धीरज धरौ उदैसिंहराय ॥
अबहीं पाती हम भेजत हैं * यह कहि कलमदान लै हाथ ॥
लैके कागद कलपी वालो * लाखनि पाती लिखी बनाय ॥
मामा हमरे तुम लागत हौ * सो तुम मानौ कही हमारि ॥
जगनिक ठाकुर महुबेवाले * तिनकी कोड़ा लियो उठाय ॥
सो पठवाय देउ जल्दी ते * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
पाती लिखिके यह लाखनिने * हरकारा को दइ पकराय ॥
पाती लैके गयो हरकारा * औ कोडहरि में पहुँचोजाय ॥
जहाँ कचहरी है गंगा की * धावन नैके करी सलाम ॥
पाती दीन्ही लाखनि वाली * पाती पढ़ी पँवारे राय ॥
तुरत नगरची को बुलवायो * औ यह हुक्म दियो करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बजै नगारा हमरे दल में * सिगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजो तब कोड़हरि में * लश्कर साजि भयो तैयार ॥
हथिनी सजवाई गंगा ने * तापर तुरत भये असवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * औ धूरे पर पहुँचे आय ॥
गंगा बढ़िके बोलन लागे * को यह धुरो दबायो आय ॥
लाखनि भुरुही दाबे आये * औ गंगा ते लगे बतान ॥
मामा हमरे तुम लागत हो * काहे रार करत बिन काज ॥
आल्हा ऊदन महुबे वाले * जिनको जानत सकलजहान ॥
तिनको कोड़ा तुम मँगवावो * औ आल्हा ते करो मिलाप ॥
दुसरी करिहो जो आल्हा ते * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
रारि बढ़ावो ना मामा तुम * इतनी मानौ बात हमारि ॥
तापर ज्वाब दियो गंगा ने * हैं क्या चीज बनाफर राय ॥
देत चुनौती हम आल्हा को * हमते कोड़ा लेयँ मँगाय ॥
बातन बातन बतबढ़ होइ गयो * औ बातन में बाढ़ी रारि ॥
हुक्म देदियो गंगा ठाकुर * तोपन आगी देउ लगाय ॥
दगी सलामी तब दोऊ दल * चहुँदिशि रही अँधेरी छाय ॥
गोला गोली छूटन लागे * छूटन लाग अगिनियाँ बान ॥
क्यागतिबरणौं त्यहि समयाकी * रणमें परी तोप की मारु ॥
तोपैं धैं धैं लाली होइ गइं * ज्वानन हाथ धरेना जायँ ॥
मारु बन्द भइ तब तोपन की * क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
भगे सिपाही कोडहरि वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
आगे बढ़िकै लाखनि बोले * मामा मानौ बात हमारि ॥
अबहूं मानौ कही हमारी * कोड़ा तुरत देउ मँगवाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * जिनते तुम जीतनके नाहिं ॥
नगर तुम्हारो सब लुटवै हैं * कलहा दस्सराज के लाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बात न मानी गंगा ठाकुर * अपनी हथिनी दई बढ़ाय ॥
गंगा बोले सुनि आल्हा ते * काहे देहौ प्राण गँवाय ॥
ऊदन बोले तब गंगा ते * अबही कोड़ा देउ मँगाय ॥
कोड़ा देहौ ना हमरो तुम * कोड़हरि तुमरो लिहौं लुटाय ॥
यह सुनि गुस्सा होय गंगाने * अपनो लीन्हो गुर्ज उठाय ॥
चोट चलाई बघ ऊदन पर * ऊदन लैगे चोट बचाय ॥
ऐंड़ लगाई तब घोड़ा के * औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी * सोने कलसा दियो गिराय ॥
ऊदन झपट गये आल्हा पै * औ आल्हा ते लगे बतान ॥
तुम्हरी बरनी के गंगा हैं * तुरतै लेउ जँजीरन बाँधि ॥
बढ़िगे आल्हा तब आगे को * औ गंगा ते कही पुकारि ॥
कोड़ा हमरो ना देहौ जो * तो तुम खबरदार होइ जाव ॥
खैंचि शिरोही लइ गंगा ने * लै बजरंग बली को नाम ॥
करो जड़ाका जब समुहें पर * आल्हा दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
सात शिरोही गंगा मारी * आल्हा लीन्ही चोट बचाय ॥
बोले आल्हा तब गंगा ते * उसरिन खेलो जूझ अघाय ॥
लैके सांकल तब आल्हा ने * पचशावद को दइ पकराय ॥
सांकल फेरी जब हाथी ने * तब गंगा को लियो बँधाय ॥
ऊदन पहुँचे तब कोडहरि में * सिगरी लियो बजार लुटाय ॥
खबरि पायके बौना ठाकुर * सो कोड़ा लै पहुँचो आय ॥
करी अधीनी तब आल्हा को * औ कोड़ा लै धरो अगार ॥
हाथ चलैयो ना गंगा पर * हौ समरत्थ बनाफर राय ॥
लैके कोड़ा तब आल्हा ने * जगनायक को दौ पकराय ॥
कैद छोड़ि दइ तब गंगा की * गंगाको लौ साथ लेवाय ॥
लश्कर साथ लियो गंगा को * औ चलिभये बनाफर राय ॥
कूच करायो तब लश्कर को * जमुना निकट पहूँचे जाय ॥
डेरा डारि दियो नदिया पर * भोरहिं उतरि गये वापार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जबहीं पहुँचे शहर कालपी * आये जबहीं बीच बजार ॥
लूटि बजार लई लाखनि तब * बोला उदैसिंह बलवान ॥
क्यों बजार तुमने लूटिवाई * तब हँसि कही कनौजी राय॥
कोडहरि तुमने क्यों लुटवाई * गंगा मामा लगत हमार ॥
बदला लीन्हो हम मामाको * सो तुम समुझि लेउमन माहिं॥
ढेबा बोलो तब ऊदन ते * भैया भूलि जाउ सब बात ॥
संग आपने तुम लाये हौ * ताते बैठि रहौ चुप साधि ॥
दूजा करिहौ जो लाखनि ते * तो जग होइ हैं हँसी तुम्हार ॥
काम बनावौ चन्देले को * नदिया खेलौ जूझ अघाय ॥
यह सुनि ऊदन चुपके होइगे * अपने डेरा दियो डराय ॥
शहर कालपी के धूरे ते * नदिया बेतवै के मैदान ॥
लश्कर परिगयो बहुत दूरिलो * झंडन रही लाऊरी छाय ॥
बोले जगनायक आल्हा ते * मल्हनै खबरि सुनावैं जाय ॥
सुनते पाती लिखि ऊदन ने * सो जगनिक को दई गहाय॥
जगनिक चलिभे तब लश्कर ते * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
मल्हना देखो जब जगनिक को * तब छाती ते लियो लगाय ॥
तौलौ माहिल दाखिल होइगै * जगनिक करन बहाना लाग ॥
पाती दीन्ही जो हमको तुम * सो आल्हा पढ़ि दई फेंकाय ॥
बात न मानी कछु आल्हा ने * हमने बहुत मनायो जाय ॥
यह सुनि मल्हना रोवन लागी * तब माहिल यह लगे बतान॥
बात हमारी बहिनी मानौ * अब तुम डांड़ देउ भरवाय ॥
बोले जगनिक तब माहिलते * माँगत डांड़ काह चौहान ॥
माहिल बोले तब जगनिक ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
सिगरे शहर ग्वालियर माँगत * माँगत उड़न बछेड़ा पाँत्र ॥
बैठक माँगत खजुहा गढ़की * मल्हना क्यार नौलखा हार ॥
पारस पूजा को माँगत हैं * डोला लें चन्द्रावलि क्यार ॥
बोले जगनायक माहिल ते * अबहीं डाँड़ दिहैं भरवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पारस पूजा है कोठरी में * सो तुम लावो प्रथम उठाय ॥
गये कोठरिया में माहिल जब * जगानिक बन्द दियो करवाय॥
पाती लैके ऊदन वाली * सो मल्हना को दई गहाय ॥
पाती बाँची रनि मल्हना ने * औ राजा को लियो बुलाय ॥
हाथ में पाती दइ राजा के * राजा पाती बाँचन लाग ॥
बहुत खुशी भये पाती पढ़िके * मल्हना बहुत खुशीहोइ जाय ॥
माहिल बोले तब कोठरी ते * बिछुरे लरिका मिले तुम्हारि ॥
कैद छोड़ि देउ अब बहिनी तुम * ना घटि करिहौं साथ तुम्हारि ॥
चुगुली करिहौं ना तुम्हरी कछु * सो तुम मानौ कही हमारि ॥
दाया करिकै तब मल्हना ने * तुरतै माहिल दिये निकारि ॥
चलिभै माहिल तब महलन ते * औ बगिया में पहुँचे जाय ॥
हाल सुनायो पृथीराज को * आये यहाँ बनाफर राय ॥
साथ लै आये हैं लाखनि को * औ नदिया पर करो मुकाम॥
घाट बयालिस अब रोकवाओ * अपनो पहरा देउ बिठाय ॥
सुनतै राजा पृथीराज ने * सिगरो घाट लिये रोकवाय ॥
पहरा अपने तहँ बैठाये * कोउ न जाय नदी के पार ॥
आल्हा मनौआ यह पूरो भयो * सो हम लिखौ सुमिरि करतार॥
आगे लड़ाई है बेतवा पर * सो हम लिखिकै दिहैं सुनाय॥
कठिन लड़ाई भइ पिरथी सँग * जीते जंग कनौजी राय ॥
समय पाय आल्हा गावौ तुम * नित उठि लेउनाम भगवान॥
भोलानाथ मनाय हिये में * सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति आल्हामनौआ ।

समाप्तः ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ नदियाबेतवे की लड़ाई।

लाखनि बिजय

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहें गणेश।
पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा विष्णु महेश॥ १॥

सवैया।

होत प्रकाश दिवाकर को तब चन्द्रप्रकाश लखाय परैना॥
सिंहको शब्द सुनाय परै तब मत्तगयन्द दिखाय परैना॥
शूर सिंगारकरैं रणको तब नारि सिंगार पै ध्यान धरैना।
बात यही समरत्थन केरि कि भाभीं टरै पर बात टरैना॥

आल्हा

सुमिरन करिके रामचन्द्रको ❀ लै बजरंग बलीको नाम॥
कहौं लड़ाई अब बेतवैकी ❀ यारौ सुनौ छोड़ि सबकाम॥
बाग चिरैया बिन सूनो है ❀ सूनो कमल बिना है ताल॥
बिना पात को तरुवर सूनो ❀ सूनो बिना मंत्रि भूपाल॥
बिन विद्याको ब्राह्मण सूनो ❀ सूनो बिना पुरुष को नारि॥
रैनि तो सूनी है चन्दाबिन ❀ ठाकुरबिन सूनो चौपारि॥
सूनो मन्दिर निशि दीपकबिन ❀ सूनो बिना पुत्र परिवार॥
अकिले ऊदनके जियराबिन ❀ सूनो भूमि चँदेले क्यार॥
सुनी खबरि जब यह ऊदनने ❀ पिरथी घाट लियो रुकवाय॥
बोले ऊदन तब आल्हाते ❀ दादा अब कछु करो उपाय॥
घाट बयालिस पिरथीरोके ❀ तब आल्हाने कही सुनाय॥
धीरज राखो तुम अपने मन ❀ अबहीं देहौं जतन कराय॥
कलश मँगाय लियो सोने को ❀ औ यकबीरा लियो मँगाय॥
सो धरवाय दियो कलशापर ❀ औ आल्हा यह कही सुनाय॥
कौन सूरमा है दोनोंदल ❀ जो बेतवा पर पान चबाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मारि भगावै चौहाननको ❀ पृथीराज को देय हटाय ॥
यहसुनि क्षत्री चुपसे होइगये ❀ सबने शीश लियो औंधाय ॥
घरी एक बीराको होइगये ❀ तब ऊदन उठि कही सुनाय ॥
मारि भगैहौं चौहाननको ❀ पृथीराजको दिहौं हटाय ॥
घाट बयालिस मैं छुटवैहौं ❀ अबहीं बीरा लिहौं चबाय ॥
यहसुनि आल्हा बोलन लागे ❀ तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय ॥
गांजर उसरी रहे तुम्हारी ❀ अबयहँ काम कनौजीक्यार ॥
इतनी सुनिकै मीरा सैयद ❀ सो लाखनिते लगे बतान ॥
बात सुनाई जो आल्हाने ❀ सो तुम समुझिलेउ महराज ॥
पान चबाय लेउ बेतवापर ❀ हम चलि दे हैं साथ तुम्हार ॥
धनुआँ तेली बोलन लागो ❀ सैयद साँची कही सुनाय ॥
याही दिनको तुम आयेहो ❀ लाये ऊदन संग लेवाय ॥
राजपाट अपनो छाँड़ो तुम ❀ घरमें तजो पद्मिनी नारि ॥
बीरा चाबिलेउ जल्दी तुम ❀ लश्कर तुरत लेउ सजवाय ॥
हम छुटवैहौं घाट बयालिस ❀ नाहिं छोड़ि हैं साथ तुम्हार ॥
सुनतै उठिके लाखनि राना ❀ नदियापर लियो पान चबाय ॥
हुक्म दैदियो तब लाखनिने ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री साजि भये तैयार ॥
बोले ऊदन तब लाखनिते ❀ हमहूँ चलैं तुम्हारे साथ ॥
तब हँसि लाखनि बोलन लागे ❀ तुमना कहौ मर्मकी बात ॥
ना मोरि भुरुही बूढ़ी होगइ ❀ ना बलघटा पखौरन क्यार ॥
बात कहा तुम संग चलनको ❀ सो हमरे मन नाहिं समाय ॥
मारि भगैहौं मैं पिरथीको ❀ औ धूरे लौ हनौं निशान ॥
यहकहि चलि भयेलाखनि राना ❀ औ सैयद ते लगे बतान ॥
अब तुम कूच करौ लश्करलै ❀ तब सैयदने कही सुनाय ॥
पाँजि लगाय लेउ नदियाको ❀ सिगरी फौज होय वापार ॥
यहकहि चलिभै मीरा सैयद ❀ लाखनि धनुआँ संग लेवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

राह पकरिलइ तब नदिया की ❀ लश्कर साथ कनौजी क्यार ॥
नौसै हथिनी लिये साथमें ❀ मुपनापानि पियावन जाय ॥
घाम बदरिया को दुपहर में ❀ लागत तनमें तीर समान ॥
सबियाँ हथिनी व्याकुल ह्वैके ❀ नदि बेतवै में गईं मँझाय ॥
नदिया पार गई हथिनी जब ❀ तब हरकारा बढ़ो अगार ॥
खबरि सुनाई सो चौड़ा को ❀ हथिनी आई नदीके पार ॥
नौसै हथिनी है लाखनिको ❀ ताको अब कछु करौ उपाय ॥
इतनी सुनतै चौड़ा ब्राह्मण ❀ अपनो हाथी लियो सजाय ॥
तुरत सवार भयो हाथी पर ❀ औ बेतवापर पहुँचो जाय ॥
नौसै हथिनी जोलाखनि को ❀ सो चौड़ाने लई खिदाय ॥
भगो महाउत तब नदियाते ❀ औ लाखनि पै पहुँचो आय ॥
हाल बतायो सब हथिनिनको ❀ चौड़ा हथिनी लई खदाय ॥
सुनतै गुस्साहोय लाखनिने ❀ आगे लश्कर दियो बढ़ाय ॥
जबही पहुँचि गये नदिया पर ❀ औघट घोड़ा दियो चलाय ॥
हाथी होले दियो घाटन पर ❀ लश्कर उतरि गयो वापार ॥
नौसे हथिनी अपनी जहँ पर ❀ रहा सातसै चौड़ा क्यार ॥
हथिनी सोरहसै लाखनि ने ❀ गुस्सा हुइ सब लइ खिदाय ॥
खबरि पहूँची तब चौड़ाको ❀ लाखनि हथिनी लई खिदाय ॥
सुनतै चलिभयो चौड़ा ब्राह्मण ❀ लश्कर डंका दियो बजाय ॥
चौड़ा पहुँचो चढ़ि हाथी पर ❀ नदिया बेतवे के मैदान ॥
कछुक दूरि जब लाखनि रहिगै ❀ तब चौड़ा यह कही सुनाय ॥
कहाँते आये औ कहँ जैहौ ❀ काहे करो उतारा आय ॥
नाम आपनो तुम बतलावो ❀ हियँपर कौन तुम्हारो काम ॥
बोले लाखनि तब चौड़ाते ❀ ब्राह्मण सुनो हमारी बात ॥
संगमें आये हम ऊदन के ❀ आगे दिखिहैं नगर महोब ॥
नाम हमारो लाखनि राना ❀ औ कनउज है देश हमार ॥
हमहैं लरिका रतीभान के ❀ नाती बेनचक्कवै क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह सुनि चौड़ा बोलन लागे ❀ लाखनि सुनो हमारी बात ॥
सँगमें आये ना जैचँदके ❀ ना बुलवायो रजापरिमाल ॥
साथमें आये तुम आल्हाके ❀ जगमें ह्वै हैं हँसी तुम्हारि ॥
ताते लौटि जाउ कनउजको ❀ इतनी मानो बात हमारि ॥
तापर ज्वाब दिये लाखनिने ❀ चौड़ा ब्राह्मण बात बनाउ ॥
सुनी बड़ाई हम महुबे को ❀ तब यह देश मँझायो आय ॥
तासों दिखिहैं हम महुबे को ❀ नाहीं मनिहैं बात तुम्हारि ॥
फिरिकै चौंड़ा बोलन लागो ❀ लाखनि मानौ कही हमारि॥
जैसेइ लरिका रतीभान के ❀ तैसेइ लरिका लगौ हमारि ॥
ताते तुमको समुझावत हौं ❀ लाखनि लौटि कनौजै जाउ ॥
सात लाखते चढ़ो पिथौरा ❀ लैके खुरासान गुजरात ॥
घाट बयालिस रोकवाये हैं ❀ सोतुम करो उतारा आय ॥
चढ़िहैं लश्कर पृथीराजको ❀ जब चौरासी बंब बजाय ॥
तुम घिरि जैहौ तब लश्कर में ❀ ना ठहरैगो पाँव तुम्हार ॥
कुशल आपनो जो चाहो तुम ❀ चुप्पै लौटि कनौजै जाउ ॥
इतनी बात सुनी चौड़ाकी ❀ हँसिकै कही कनौजी राय ॥
इन्द्र डोलजाय इन्द्रासनते ❀ औशिव डोलिजायँ कैलास ॥
लाखनि डोलनके नाहीं हैं ❀ हमरे बचन करौ परमान ॥
बार बार चौड़ा समुझायो ❀ मानौ नाहिं कनौजी राय ॥
बातन बातन बतबढ़ होइगो ❀ औ बातनमें बढ़िगई रारि ॥
रिसहा होइके तब चौड़ा ने ❀ तुरतै दीन्हीं ढाल चलाय ॥
तौ हम जानैं तुम जोरावर ❀ जो यह ढाल लेउ उठवाय ॥
बोले लाखनि तब धनुआँ ते ❀ अबहीं लाओ ढाल उठाय ॥
बोल्यो चौड़ा तब धाँधू ते ❀ हमरी लावो ढाल उठाय ॥
हाथी बढ़ायो तब धाधू ने ❀ औ धनुआं ते कही सुनाय॥
आगे बढ़िहो जो धनुआँ तुम ❀ अबहीं भाला दिहौं चलाय ॥
इतनी बात सुनत धाँधू की ❀ धनुआँ घोड़ी दई बढ़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भाला मारा तब धाँधू ने ❀ धनुआँ लीन्हीं चोट बचाय ॥
ढाल उठाय लई जल्दी ते ❀ सो लाखनिक्को दीन्ही आय ॥
हँसिके लाखनि बोलन लागे ❀ धनितुम शूर कनौजी क्यार ॥
लाखनि राना ने खेतन में ❀ अपनो दियो कटार चलाय ॥
बोले लाखनि तब चौड़ा ते ❀ अबहीं लेउ कटार उठाय ॥
बोलो चौड़ा तब भूरा ते ❀ अबहीं लेउ कटार उठाय ॥
लाखनि बोले तब सैयद ते ❀ जल्दी लेउ कटार उठाय ॥
भूरा मुगल कढ़ो आगे को ❀ तब सैयद ने कही पुकारि ॥
पाँव बढ़ैहो जो आगे को ❀ तो हम लेहैं शीश उतारि ॥
झुरमुट होइ गयो तब दोनों को ❀ सैयद लीन्ही झपटि कटार ॥
आयकै दीन्ही सो लाखनि को ❀ तब हँसि कहौ कनौजीराय ॥
अब हम जानी अपने मनमें ❀ तुम असने में ऐहौ काम ॥
यह गति देखीजब लाखनि को ❀ चौड़ा बहुत गयो खिसियाय ॥
हुक्म दैदियो तब चौड़ाने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❀ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी तब दोउ दल में ❀ धुँअना सरग रहो मँडराय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❀ गोली मघा बूँद झरियाय ॥
गोला ओला के सम बरसै ❀ रणमें होय दनाक दनाक ॥
बरछी भाला छूटन लागे ❀ सरर परी तीरकी मारु ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरन होइ जायँ ॥
तोपैं छोड़ि दई ज्वानन ने ❀ लम्बे बन्द करें हथियार ॥
आगे बढ़िके तब क्षत्रिन ने ❀ अपनी खींचि लई तलवार ॥
खट खट तेगा बाजन लागो ❀ औ बूँदी की चलै कटार ॥
पैदल अभिरे तहँ पैदल सँग ❀ औ असवारन ते असवार ॥
हौदा मिलिगे तहँ हौदा सँग ❀ सबके मारु मारु रट लागि ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
दबी बायसी तहँ लाखनि की ❀ मुर्चा हटो चौड़िया क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भगे सिपाही चौड़ा वाले ❋ औ समुहें ते गये बराय ॥
यह गति देखी जब चौड़ाने ❋ अपनी हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोला चौड़ा तब लाखनि ते ❋ अब तुम खबरदार होइ जाव ॥
दोबे भुरुही लाखनि आये ❋ औ समुहें पर पहुँचे आय ॥
समुहें देखो जब लाखनि को ❋ चौड़ा लीन्ही लाल कमान ॥
कैबर छाड़ि दियो लाखनि पर ❋ लाखनि लीन्ही चोट बचाय ॥
भाला अपनी लै हाथे महँ ❋ मनमें सोच कनौजी राय ॥
मारो मस्तक तब हाथी को ❋ औ धरती में दियो गिराय ॥
पाँव पियादे चौड़ा रहि गयो ❋ तब लाखनिने कही सुनाय ॥
पाँव पियादे अब तुम रहिगे ❋ दुसरो हाथी लेउ मगाय ॥
हाथ चलैहैं ना तुम पर हम ❋ ताते हाथी लेउ मँगाय ॥
यहगति देखो जब लाखनिको ❋ चौड़ा मनमें गयो सकाय ॥
मुर्चा फेरि दियो अपनो तब ❋ जीते जंग कनौजी राय ॥

आल्हा ।

सुमिरन करिके नारायण को ❋ औ गणेशके चरण मनाय ॥
लिखौं लड़ाई अब लाखनि को ❋ ज्याहिबिधि लड़े पिथौराराय ॥
सुनी खबरि जब पृथीराज ने ❋ मुर्चा हटो चौड़िया क्यार ॥
लाखनि आये हैं कनउज ते ❋ नदिया करो उतारा आय ॥
हुक्म दैदियो पृथीराज ने ❋ ताहर बेटा को बुलवायँ ॥
बजै नगारा हमरे दल में ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
ताहर पहुँचे तब लश्कर में ❋ तोप दरोगा लियो बुलाय ॥
हुक्म दैदियो यह ताहर ने ❋ सिगरी तोपैं लेउ सजाय ॥
हाथिन वाले को बुलवायो ❋ औयह हुक्म दियो फरमाय ॥
हाथी सजवायो जल्दी ते ❋ मुड़िया हौदा देउ धराय ॥
तुरत नगरची को बुलवायो ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
डंका दैदेउ तुम लश्कर में ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्कर में ❋ छत्री सजन लगे तत्काल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दुइसै हाथी खूनी सजिगये ❋ दुइसै भूरा भये तयार ॥
दुइसै सजिगे मुकुटबन्दनी ❋ एकसौ मस्ता भये तयार ॥
दुइसै सजिगै मकुना हाथी ❋ सबके माथा दिये रँगाय ॥
आदि भयंकर हाथी सजिगयो ❋ सजिगये तुरत बीर चौहान ॥
नौसै हाथिन के हलका में ❋ झूमै आदि भयंकर ठाढ़ ॥
चढ़िगे पृथीराज हाथी पर ❋ शोभा कछू कहीना जाय ॥
पाग बैजनी शिरपर सोहे ❋ कलँगी मोतीचूरकि लागि ॥
गजभरि छाती पृथीराज की ❋ औ नैननमें बरै मशाल ॥
पृथीराज बैठे हाथी पर ❋ मानो इन्द्र अखाड़े जाय ॥
सजिगये लश्कर पृथीराज को ❋ तुरतै कूच दियो करवाय ॥
मारू डंका बाजन लागो ❋ ढाढ़ी करखा बोलन लाग ॥
हाहाकारी बीतन लागी ❋ घूमन लागे लाल निशान॥
तीनघरी के तब अरसा में ❋ पहुँचे आय समर मैदान ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ताहर ने ❋ ताहर कर्ण क्यार औतार ॥
लाखनि रहिगे बीस कदम जब ❋ तब ताहर यह कही पुकार ॥
कहाँते आये हो कहँ जैहो ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
घाट बयालिस हम रोकवाये ❋ तुम क्यों करो उतारा आय॥
काम तुम्हारो क्या अटको है ❋ सोतुम हमहिं कहो समुझाय ॥
बोले लाखनि तब ताहर ते ❋ बेटा सुनो पिथौरा क्यार ॥
हम आये हैं गढ़ कनउज ते ❋ आगे देखिहैं नगर महोब ॥
जायकै मिलिहैं हम राजाको ❋ लाखनि राना नाम हमार ॥
सुनतै ताहर बोलन लागे ❋ लाखनि सुनौ हमारी बात ॥
महुबो घेरो दिल्लीपति ने ❋ तुम क्यों देहौ प्राण गँवाय ॥
काम तुम्हारो ना अटको कछु ❋ ताते लौटि कनौजे जाउ ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनि ने ❋ ताहर सुनो हमारी बात ॥
देखन आये हम महुबे को ❋ मिलिहैं जाय रजा परिमाल ॥
तुम चढ़ि आये क्यों महुबे पर ❋ काहे रारि बढ़ाई आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हम नहिं लौटैंगे देखे बिन ❋ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
इतनी सुनिलइ जब ताहर ने ❋ तब गुस्सा होयकही सुनाय ॥
कही हमारी अबहूँ मानौ ❋ लाखनि लौटि कनौजै जाउ ॥
प्राण तुम्हारो क्यों भारू हैं ❋ जो नदियापर दिहौ गँवाय ॥
सुनतै लाखनि बोलन लागे ❋ ताहर अकिल गई तुम्हारि ॥
आगे बढ़िके हम आये हैं ❋ अब क्यों धरैं पिछारी पाँय ॥
धर्म क्षत्रियन के नाहीं यह ❋ जो मुर्चातें जाय बराय ॥
लाखनि लौटन के नाहीं हैं ❋ चाहे प्राण रहे की जाय ॥
मर्द बनाये मरि जैबे को ❋ खटिया परिके मरे बलाय ॥
होय पराक्रम जो तुम्हरे में ❋ सोतुम हमहिं देउ दिखलाय ॥
बात बनैवे को औसर नहिं ❋ गुजरे घरी घरी पर वार ॥
गुस्सा होइके तब लाखनि पर ❋ ताहर हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दैदेउ तुम तोपन में ❋ इन पाजिनको देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
मुर्चा लगिगयो दोनों दल में ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
राजा कालनेमि दक्खिन को ❋ पृथीराजको जो सरदार ॥
त्याहि के मुर्चा पर गंगा ने ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥
भूरा मुगुल केर मुर्चा पर ❋ सैयद मुर्चा दियो लगाय ॥
पटना के राजा पूरनसिंह ❋ तिन उन मुर्चा दियो लगाय॥
तिनके समुहें पर सिंहाने ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥
धाँधू ठाकुर के मुर्चा पर ❋ धनुआँ मुर्चा दियो लगाय ॥
रहिमत सहिमत दोनों जोधा ❋ तिनउत मुर्चा दियो लगाय ॥
हरिसिंह बीरसिंह बिरिया गढ़के ❋ तिन इत मुर्चा दियो लगाय॥
देबी मरहटा दक्खिन वाला ❋ अपनो मुर्चा दई लगाय ॥
भूप गोरखा बंगाले का ❋ इतते मुर्चा दियो लगाय ॥
बंशगोपाल केर मुर्चा पर ❋ अंगद मुर्चा दियो लगाय ॥
यहि बिधि मुर्चा लगे सबन के ❋ सो मैं कहँलग करौं बखान॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ताहर ठाकुर के समुहँ पर * मुर्चा लगो कनौजी क्यार ॥
अररर गोला छूटन लागे * कह कह करैं आगेनियां बान॥
सननन गोला छूटन लागे * सर सर परी तीरकी मारु ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * तो पैं लालबरन होइ जायँ ॥
मारु बन्दकरि तब तोपन की * अपनो खेंचिलई तलवारि ॥
दोनों फौजैं यकमिल होइगईं * खटखट चलनलगी तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊनाचलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * कटि २ गिरैं सुघरुवा ज्वान ॥
मुर्चा लौटि गयो ताहर को * देखें खड़े बीर चौहान ॥
आगे बढ़िगे पृथीराज तब * अपनो लश्कर दियो चलाय॥
नौसे हाथी के हलका में * घिरिगयो बीर कनौजी राय॥
लश्कर सात लाख दिल्ली को * सो बेतवा पर पहुँचो आय ॥
चलै शिरोही आठकोस लो * सबके मारु मारु रटलागि ॥
पैदल गिरिगै पैग पैग पर * उनके दुइ दुइ पैग असवार ॥
हाथी गिरिगे बिसे बिसे पर * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
भुरुही घिरिगइ तहँ लाखनि की * पृथीराज ने घेरो आय ॥
आधी नदिया में पानी बहे * आधी बहे रक्त की धार ॥
मीरा सैयद धनुआँ तेली * दोनों मनमें गये डेराय ॥
मुर्चा छोड़ि दिये दोउन ने * औ समुहें ते गये बराय ॥
जितने चढ़वायक लाखनि के * सब मुर्चा ते चले बराय ॥
भुरुही हथिनी लाखनि वाली * सो मुर्चा ते लौटन लागि ॥
यक ललकार दई लाखनि ने * भुरुही खबरदार होइ जाय ॥
मस्तक पूजो जब माता ने * तब तुमते यह कही सुनाय ॥
तुमको सौंपतिहौं लाखनि को * तुमना धरियो पाँव पिछार ॥
याही दिनको रनितिलका ने * पालो तुमहिं बहुत दुलराय ॥
चहुँदिशि लाखनि देखन लागे * कोउना आपन परो दिखाय॥
सँगमें जितने राजा आये * सब मोहरा ते गये बराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धनुआँ तेली लला तमोली * सोऊ ना कहुँ परत लखाय ॥
बड़ो आसरा रहे सैयद को * सोऊ रनते गये बराय ॥
सोचे लाखनि अपने मनमें * को असने में ऐहैं काम ॥
सुपना महावत जो भुरुही को * तासे लाखनि लगे बतान ॥
कोऊ सहायक ना हमरे सँग * जो गाढ़े में आवै काम ॥
राजा जैचँद ने हटको रहे * ना महुबे को करो पयान ॥
रानी कुसुमाने हटको रहै * तुमना जावो कंथ हमार ॥
तुम घिरि जैहो दलके भीतर * तब तुम करिहो कौन उपाय ॥
सातलाख ते पिरथी घेरो * हमते परो साबिका आय ॥
साँची बात भई रानी की * हम अब करिहैं कौन उपाय॥
बोला सुपना तब लाखनि ते * कहो तो कनउज चलौं लेवाय ॥
तब ललकारो लाखनि राना * सुपना अपनी जीभ सँभारु ॥
जो हम भागजायँ मुर्चाते * बूड़े सात साखिको नाम ॥
कोउ न अमर भये दुनियाँ में * हैं क्या अमर कनौजीराय ॥
रणके सन्मुख जो मरि जैहैं * जगमें चलिहैं नाम हमार ॥
बड़े बड़े राजा जगमें होइगे * कोउ न अमर भये जगमाहिं ॥
क्या हम अम्मर हैं दुनियां में * जो मुर्चा ते जाउँ बराय ॥
लाखनि उतरि परे भुरुही ते * चौबिस बोतल फूल मँगाय ॥
सो पियाय दीन्हो भुरुही को * भाँग मिठाई दई खवाय ॥
गोटा देदिया फिरि अफीम को * राती माती दई बनाय ॥
अहदू डारि दियो हथिनी के * औ भुरुही ते कही सुनाय ॥
पाँव पिछारू तुमना धरियो * रणमें रखियो धर्म हमार ॥
चहूँ ओर लश्कर पिरथी को * सो तुम जौहर देउ दिखाय ॥
लैके साँकल लाखनि राना * सो भुरुही को दइ पकराय ॥
सुमिरन करिके रामचन्द्र को * लैके अजैपाल को नाम ॥
प्राण हथेरी पर धरि लीन्ही * अपना माया मोह बिसराय ॥
खैंचि शिरोही लाखन राना * बीच गोलमें गये समाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जैसे भिड़हा भेंड़िन पैठे * जैसे सिंह बिडारै गाय ॥
त्यों दल पैठे लाखनि राना * अपनो नग्न लियो तलवारि ॥
सांकल फेरै भुरुही हथिनी * सब दल रेनबेन हुइ जाय ॥
अकिले लाखनिकी डपटनि में * कोऊ कुँवर न आड़े पाँव ॥

* सवैया *

लाखन भूपन में यक सुन्दर रूप सुघर लखि काम लजावै ॥
लाखनि की गिनती दल में अरु लाखन शूरन में चलि जावै ॥
लाखन वीर हनै क्षणमें लखि ताहि भगे रिपु प्राण बचावै ॥
ऐसो महाबलवान सो लाखनि लाखन में तलवारि चलावै ॥

* आल्हा *

एक पहर भरि चली शिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * मुर्चा हटी पिथौरा क्यार ॥
लाखनि राना ढाल उठाये * रणमें देत फिरैं ललकार ॥
है कोउ क्षत्री दिल्ली वाला * समुहें लड़े आय मैदान ॥
हियाँकी बातैं तो हियँ छाँड़ो * अब आगे को सुनो हवाल ॥
घोड़ी पियावन रुपना आयो * नदिया बहै रक्त की धार ॥
ऊँचे चढ़ि तब रुपना देखै * औ घाटन तन रहो निहारि ॥
ज्योंबादल बिच बिजुली दमके * तैसेइ चमकि रही तलवारि ॥
चलिभये रुपना तब नदियासे * औ डेरन पर पहुँचो आय ॥
ठाढ़ी देवै जो तम्बू में * सो रुपना ते पूछन लागि ॥
कौन सोच में तुम रूपन हो * जियको भेद देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना तब देवै ते * माता कछु न पूछो हाल ॥
कठिन लड़ाई भइ नदिया पर * अंधा धुन्ध चले तलवारि ॥
मनहिं हमारे यह आवत है * जूझे तहाँ कनौजी राय ॥
खबरि मँगाय लेउ लाखनि को * माता मानौ कही हमार ॥
सुनतै चलि भइ देवै माता * औ आल्हा के तम्बू जाय ॥
देखी सूरति जब माता की * आल्हा उठिके कियो प्रणाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथ जोरिके आल्हा बोले * माता हाल देउ बतलाय ॥
कौन काम को तुम आई हो * तब देवै ने कही सुनाय ॥
लाखनि आये हैं तुम्हरे सँग * सो तुम अकिले दिये चढ़ाय ॥
है इकलौता रतीभान को * नाती बेन चकवे क्यार ॥
जो कहुँ लाखनि मारे जैहै * तो जग होइहैं हँसी तुम्हारि ॥
का जवाब देहौ जैचँद को * सो तुम खबरिलेउ तहँ जाय ॥
चढ़ो पिथौरा सात लाखते * अंधा धुन्ध चलै तलवारि ॥
लावौ खबरि जाय लाखनि को * बेटा मानौ बात हमारि ॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे * माता सुनौ बात धरिध्यान ॥
तीनि महीना औ तेरह दिन * तंग न छूट बघेरन क्यार ॥
कठिन लड़ाई भइ गाँजर में * ठाढ़े पैसा लियो भराय ॥
गाँजर उसरि रहै ऊदन की * नदिया उसरि कनौजी क्यार ॥
लाखनि परे रहे तँबुअन में * ऊदन लड़े गजरहन साथ ॥
जो कहुँ ऊदन मारे जाते * तो कहँ मिलतो भाइ हमार ॥
लाखनि चढ़िगे हैं बेतवा पर * क्यों हम जायँ जंग मैदान ॥
इतनी सुनि कै देवै चलि भई * पहुँची जाय उदैसिंह पास ॥
हाल सुनायो तब लाखनि को * औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
जल्दी धावौ तुम नदिया पर * औ लाखनि का करौ गुहार ॥
हम समुझायो बहु आल्हा के * उनना मानी बात हमारि ॥
बोले ऊदन तब देवै ते * आल्है पठवैं तो हम जायँ ॥
जेठो भैया बाप बरोबरि * माता समुझिलेउ मन माहिं ॥
यह सुनि देवै बोलन लागी * बेटा सुनो हमारी बात ॥
बारह रानिन को इकलौता * औ सोरहके सर्ब सिंगार ॥
आश लकड़िया है जैचँद की * सो तुम अकिले दियो पठाय ॥
राजा जैचँद रनि तिलका ने * सौंपा तुमहिं कनौजी राय ॥
सो तुम सुखते यहँ बैठे हौ * ऐसा तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
जो कहुं लाखनि मारे जैहैं * तुमको हँसि हैं सब संसार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मित्र तुम्हारो मारे जैहैं * तुम्हरे जीवन को धिरकार ॥
ताते समुझि लेउ अपने मन * जल्दी खबरि लेनको जाउ ॥
बोले ऊदन तब देवै ते * हमरे मनमें नाहिं समाय ॥
बड़े लड़ैया लाखनि राना * नकुला पंडाको अवतार ॥
संकट परि है जब लाखनि पर * तब दे खबरि दिहैं पहुँचाय ॥
फिरिकै देवै ने समुझायो * बेटा सुनो हमारी बात ॥
पूरे क्षत्री जो दुनियाँ में * सो दै देत आपनो प्राण ॥
संकट लाखनि सहि शिर ऊपर * पैनहिं खबरि करत सकुचाय ॥
कही हमारी ऊदन मानौ * अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
खबरिलैआवो तुम लाखनि को * इतनी मानौ कही हमारि ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * आल्हा भेजैं तो हम जायँ ॥
कहे तुम्हारे हमना जैहैं * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
यह सुनि देवै रोवन लागी * लागी कहन मर्मकी बात ॥
हुक्म न मानत तुम माता को * है कलयुगहा पुत्र हमार ॥
हमने जानी थी अपने मन * हमरे दोनों पूत सपूत ॥
कही न मानी तिन दोनों ने * हमरे जीवन को धिरकार ॥

* सवैया *

जो दशपुत्र जने गदही तो कहा दश पुत्र जने सुखपावै ॥
लादत लादत बोझ सबै विधि आयु घटे परसो मरिजावै ॥
सिंहिनि एकहिं पुत्र जनै बनमें सुखते सब आयु बितावै ॥
पूत सपूत सदा सुखदेत कपूत सदा दुखको सरसावै ॥ १ ॥

* आल्हा *

रामचन्द्र त्रेता में उपजे * जिनको नाम प्रगट संसार ॥
सौती माता के कहिबे ते * चौदह वर्ष कीन्ह बनबास ॥
पूत सपूत होय कुंछा में * मानै हुक्म मातु मितु क्यार ॥
पूत कपूत होय कुंछा में * तिन दुखदेय सबहिं संसार ॥
बिटिया होती जो मोरे यक * केहु राजा के देती ब्याह ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कुम्मक लौती त्याहि राजा की * औ लाखनिको लेति बचाय ॥
यह सुनि ऊदन कायल होइगे * औ मातासे लगे बतान ॥
बिना बुलाये हम लाखनि के * कैसे जायँ समर मैदान ॥
देवै पहुँची तब सोनवाँ पै * औ लाखनिको कह्यो हवाल ॥
दोनों भैयनको समुझायो * उनना मानी बात हमारि ॥
कही हमारी अब तुम मानो * औ ऊदन को देउ पठाय ॥
भेजा सोनवां तब बाँदी को * औ ऊदनको लियो बुलाय ॥
चौकी डारि दई सोनवाँ ने * ऊदन सोनवैं कियो प्रणाम ॥
जबहीं बैठि चुके चौकी पर * तब सोनवाँ ने कही सुनाय ॥
मित्र कनौजी अस मिलिहैं ना * भाइ न मिलै बीर मलिखान ॥
माता देवैसी मिलि हैं ना * चाहे धरो लाख औतार ॥
क्यों नहिं खबरिलई नदियाकी * जहँ घिरिगये कनौजी राय ॥
बारह रानिन को इकलौता * औ सोरह को सर्व सिंगार ॥
यक अधार रानी तिलका को * सो तुम अकिले दिये पठाय ॥
बैठक छाँड़ी जिन जैचन्द की * घरमें तजी पद्मिनी नार ॥
दर्शन छोड़े फूलमती के * छोड़े गंगा के अस्नान ॥
साथ तुम्हारे पै छाँड़ो ना * औ चलि भये पराये काज ॥
प्रीति पतिंगा की साँची है * जो जरिजात दियाके साथ ॥
प्रीति कनौजी की साँची है * जिननहिं छाँड़ो संग तुम्हार ॥
लावो खबरि जाय जल्दी ते * देवर मानो कही हमारि ॥
जो नहिं इच्छा होय तुम्हारी * तो तुम धरो जनाना भेष ॥
लहँगा लुगरी पहिरि लेउ तुम * औ दै देउ बेंदुला घाड़ ॥
अबहीं जैहौं मैं नदिया पर * लैहौं खबरि कनौजी क्यार ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * भौजी सुनो हमारी बात ॥
बड़े बली हैं लाखनि राना * नकुला पंडा के अवतार ॥
खेदिकै मरि हैं पृथीराज को * औ दिल्ली लौ दिहैं भगाय ॥
जोपै आज्ञा है माता की * औ है भौजी हुक्म तुम्हार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तो हम जैहैं समर भूमि में * लै हैं खबरि कनौजी क्यार ॥
यह कहि चलिभे उदन बांकुडा * घोड़ा बेंदुला लियो मँगाय ॥
सो सजवाय लियो जल्दी ते * तापर तुरत भये असवार ॥
ऊदन पहुँचे पुनि आल्हा पै * हाथ जोरि कै कही सुनाय ॥
सुनी खबरि हमलाखनिघिरि गै * नदिया बेतवै के मैदान ॥
मोरे जै हैं जो लाखनि तहँ * तौ जग होइहै हँसी हमार ॥
ताते त्यार भये नदिया को * लै हैं खबरि कनौजी क्यार ॥
तुमहूँ त्यार होउ जल्दी ते * तुरतै फौज लेउ सजवाय ॥
हुक्म देदिया तब आल्हा ने * सिगरी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्कर में * लश्कर साजि भयो तैयार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * आगे चले उदय सिंह राय ॥
लीन्हें साठि सवार साथ में * जो मरिबे को नाहिं डेरायँ ॥
चारो राजा गाँजर वाला * बारह कुँवर बनौधे क्यार ॥
धनुआं तेली मीरा सैयद * सब मुर्चा ते आय बराय ॥
राह में मिलिगये उदन बाँकुड़ा * सो सैयद ते पूछन लाग ॥
कहँपर छाँड़ो तुम लाखनिको * सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
बोले सैयद तब ऊदन ते * नदिया चलै विषम तलवारि ॥
नौसै हाथी को हलका है * बीचमें घिरे कनौजी राय ॥
कठिन मारु है पृथीराज की * हम मुर्चाते आये बराय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * चाचा अकिल गई तुम्हारि ॥
अकिले छोड़िदियो लाखनिको * ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
जो कहुँ लाखनि मोरे जै हैं * तो तुम सबको दिहौं उड़ाय ॥
बोला धनुआँ तब सैयद ते * जैचँद पूछिहैं हाल हवाल ॥
कौन जवाब दिहौ तबही तुम * जियतै होइहैं मरण हमार ॥
ताते लौटि चलो अबही तुम * औ लाखनिको करो सहाय ॥
यह सुनि सैयद धनुआँ लौटे * अपनो मरण ठानि मनमाहिं ॥
देखत लौटि परे राजा सब * औ मुर्चन पर पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऊदन पहुँचि गये दङ्गल में * समुहें गोल गये समुहाय ॥
राम बनावै तो बनिजावे * बिगरी बनत बनत बनिजाय॥
ऊदन पहुँचे इत नदिया पर * अबलाखनि को सुनोहवाल ॥
मुर्चा हटि गयो जब पिरथी को * तब लाखनि ने करी पुकार ॥
है कोउ जोधा दिल्ली वालो * समुहें लड़े हमारे साथ ॥
ढाल अड़ाये लाखनि राना * रणमें देत जाय ललकार ॥
भुरुही हथिनी दाबे आये * पृथीराज पै पहुँचे आय ॥
टक्कर मारी तब हथिनी ने * आदि भयंकर हटो पिछार ॥
पृथीराज तब सोचन लागे * गर्ह्यो गाज कनौजी क्यार ॥
भुरुही हथिनी है जोरावर * हमरो हाथी दियो हटाय ॥
तब लाखनि को पृथीराज ने * मोहन माल दियो पहिराय ॥
हँसिके बोले पृथीराज तब * लाखनि सुनलेउ बात हमारि॥
जैसेइ लरिका रतीभान के * तैसेइ लरिका लगौ हमार ॥
योग्य मित्रता है समान ते * पै नहिं योग कपट बर्ताव ॥
करी मिताई तुम ऊदन ते * तुम्हरे योग्य नाहिं यह बात ॥
संग छांड़िके तुम आल्हा को * हमते मिलौ कनौजी राय ॥
हम तुम लूटैं नगर महोबा * जहँ है पारस को अधिकार ॥
सो तुम लीन्हेउ पारस पूजा * लोहा छुवत सोन होइजाय ॥
खोटी संगति छांड़ि देउ तुम * घटिहा दस्सराज के लाल ॥
जबहीं आल्हा तुमते बिचलैं * ठाढ़े कनउज लिहैं लुटाय ॥
सुनतै ज्वाब दियो लाखनिने * ऐसि न कह्यो पिथौराराय ॥
हमरे मनमें यह भावत नहिं * जो तुम कहत बीर चौहान ॥
घाट करत जो कोउ काहू ते * ताको नाश होत संसार ॥
धर्म हमारो यहु नाहीं है * जो रणचढ़ि हम घूसैं खायँ ॥
होय हालजो कछु आल्हा को * सो गति होय हमारो आजु ॥
संग न छोड़िहैं हम आल्हाको * चाहे लाखन कहौ बनाय ॥
यह सुनि गुस्सा होयराजातब * औ लाखनिते लगे बतान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कौन दिनाते भये तरवरिहा * तब कहँ गई रहै तलवारि ॥
लाये सँयोगिनि हम कनउजते * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनि ने * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
उमिरि हमारी तीन बरष की * तब तुम चेरी लाय चोराय ॥
कौनि बीरता तुमने कीन्ही * जो बड़ि बात कहत महराज ॥
बदला लेवै हम आये हैं * डोला लिहौं अगमदे क्यार ॥
डाहु बुझैहै तब छाती को * सो तुम बचन करो परमान ॥
माहिल राजा तहँ ठाढे रहे * सो पिरथी ते लगे बतान ॥
छोटो लरिका यहु लाखनि है * बोली बोलत नाहिं सँभारि ॥
सही न जात बात हमसे यह * याको लेउ जँजीरन बाँधि ॥
जानते मारो या लरिका को * औ यहु खटका देउ मिटाय ॥
यह सुनि राजा पृथीराज ने * अपनी लीन्हीं लाल कमान ॥
हियांकि बातैं तो हिय छाँड़ो * अब आगे को सुनो हवाल ॥
उदन बाँकुड़ा ढूँढ़त डोलै * लश्कर डटा पिथौरा क्यार ॥
भुरुही देखि परो ऊदन को * खाली हौदा परो दिखाय ॥
सोचैं ऊदन तब अपने मन * मारे गये कनौजी राय ॥
पीछे हटि तब ऊदन देखो * औ लाखनि पर परी निगाह ॥
सन्मुख देखो पृथीराज को * करमें लीन्हें लाल कमान ॥
मनमें जानो तब ऊदन ने * अबना बचिहैं मित्र हमार ॥
खाली चोट जात इनकी नहिं * है यहु शब्द बेधि चौहान ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदन ने * अपनो मया मोह बिसराय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * हाथ जोरि के कही सुनाय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं * हौ तुम शब्द बेधि चौहान ॥
ना चढ़ि आये राजा जैचंद * ना चढ़ि आये रजा परिमाल ॥
तुम्हरी बरोबरि को नाहीं कोउ * केहिपर लीन्हीं लाल कमान ॥
जैसेइ लरिका रतीभान को * तैसइ लरिका लगे तुम्हार ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है * जो लाखनि पर गहौ कमान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हँसी तुम्हारी जगमें होइहैं * जो लरिकन पर डरिहौ हाथ ॥
कायल होइ गयो पृथीराज तब * अपनी धरदइ लाल कमान ॥
ऐंड लगाई तब घोड़ा के * औ मस्तक पर बाजी टाप ॥
कलश सूबरन को हौदा पर * सो ऊदन ने लियो उतारि ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं * तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
हमरो बरोबरि को नाहीं तुम * जौहर देतो अबहिं देखाय ॥
क्या सुधि भूलि गये द्वारे की * हम ब्रह्मको लाये बियाह ॥
हाथी पछारे दरवाजे पर * सातो भाँवरि लई डराय ॥
ऐसो देखैना काहू को * जो महुबे को लेइ लुटाय ॥
यह सुनिं सोचे पृथीराज तब * कलहा दस्सराज के लाल ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * गर्ई गाज कनौजी क्यार ॥
सोचि समझ यह पृथीराज ने * अपनो मुर्चा दियो हटाय ॥
रुधिर धारते लाखनि बूड़े * तिनहिं न कोउ सकै पहिचानि॥
बोले ऊदन तब लाखनि ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
अब तुम बैठि जाउ हौदा में * हमरी देखि लेउ तलवारि ॥
यह सुनि लाखनि बोलन लागे * काहे हँसी करत तुम आज ॥
क्या तुम हमहिं निबलजानतहौ * क्या बल रहो भुजनमें नाहिं ॥
बोले ऊदन हाथ जोरि तब * दादा धन्य कनौजी राय ॥
कौन शूर है या धरती पर * जो पिरथी को देय हटाय ॥
करो सामना तुम पिरथी को * औ मुर्चाते दियो हटाय ॥
हौ सब लायक महराना तुम * राखो धर्म चँदेले क्यार ॥
देह दुशाला ते पोछी तब * औ यह कही उदैसिंह राय ॥
बैठो दादा तुम हौदा में * यह सुनि लाखनि भये सवार॥
ऊदन चढ़िगै रस बेंदुल पर * आगे बढ़े कनौजी राय ॥
तौलो आल्हा लश्कर लैके * पहुँचे आय समर मैदान ॥
हल्ला होइ गयो रण खेतन में * छत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
बढ़े सिपाही आल्हा वाले * खट खट चलन लगी तलवारि॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धाँधू धनुआँ को मोहरा है * धनुआँ कठिन करी तलवारि ॥
मुर्चा फेरि दियो धाँधू को * श्याबासि कही कनौजी राय ॥
भूरा मुगुल केर मुर्चा पर * सैयद जीति लियो मैदान ॥
रहिमत सहिमतको दंगल में * हरिसिंह बिरसिंह दियो गिराय॥
लाखनि रानाने हनिडारे * दतिया वाले बंश गोपाल ॥
पैदल तीनि लाख पिरथी के * कनउज वाले दिये गिराय ॥
दुइसै हाथी दिल्लीवाले * जूझे एक लाख असवार ॥
कनउज वाले सत्तर हाथी * जूझे पाँच हजार असवार ॥
नदिया बेतवे पर लाखनि के * जूझे पैदल साठि हजार ॥
ताहर लाये बेंड़ा लश्कर * औ लाखनिं पै पहुँचे आय ॥
बोले ताहर तब लाखनि ते * अब तुम खबरदार होइजाव ॥
तेग निकारि लई ताहर ने * सो लाखनि पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई लाखनि ने * उनके अंग न आयो घाव ॥
गुस्सा होयके तब लाखनि ने * अपनो दीन्हीं गुर्ज चलाय ॥
लगो चपेटा यक घोड़ा के * ना रोकेते रुकी लगाम ॥
भागो घोड़ा जब ताहर को * लश्कर रेन बेन होइ जाय ॥
घाट बयालिस सोरह घाटी * तुरैत लाखनि लिये छुटाय ॥
लालि बैरखैं घूमन लागीं * जीतिको डंका दियो बजाय ॥
कूच करिदियो नदि बेतवै ते * चन्दन बगिया पहुँचे जाय ॥
तम्बू लगे जहाँ पिरथी के * तँबुअन रस्सा दिये कटाय ॥
लूटि होन लागी तबुँअन में * गालिब हुक्म कनौजी क्यार ॥
काहू लूटे शाल दुशाला * काहू शक्कर लई लदाय ॥
घीके कुप्पा काहू लूटे * काहू चावल लिये लुटाय ॥
हाथी घोड़ा ऊदन लूटैं * अपने लश्कर दिये पठाय ॥
कूच कराय दई पिरथी ने * औ दिल्लीकी पकरी राह ॥
मन खिसिआये माहिल राजा * तिन उरई की पकरी राह ॥
सुनो खबरि जब परिमालै ने * आये यहाँ कनौजी राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घाट बयालिस उन छुटवाये * औ महुबेको लियो बचाय ॥
पिरथी लौटिगये दिल्ली को * जीते जंग कनौजी राय ॥
लश्कर परिगयो है बगियामें * देखन ऐहैं नगर महोब ॥
यह सुनि खुशी भये राजा तब * औ ब्रह्माको लियो बुलाय ॥
हाल सुनायो नदि बेतवै को * औ यह हुक्म दियो करवाय ॥
दगै सलामी यह जल्दी ते * छुंछी दगन सलामी लागि ॥
सुनी खबरि जब मल्हनारानी * सिगरी सखियाँ लई बुलाय ॥
जितनी रानी चन्देले की * सो सब साजि भईं तैयार ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * घरघर भयो मंगलाचार ॥
हुक्म दियो फिरि परिमालैने * सिगरो नगर लेउ सजवाय ॥
चलिभये मंत्री तब राजाके * कूचागली दिये झरवाय ॥
कलश सूबरनके मँगवाये * द्वार द्वार प्रति दिये धराय ॥
बन्दनवार बँधे द्वारनपर * झालरिलगी मोतियन क्यार ॥
बिछे बिछौना गलियारेन में * ऊपर दिये गलीचा डारि ॥
इतर गुलाबन कै शीशीलै * गलियारेन में दौ छिरकाय ॥
नौबत बजनलगी महुबे में * अर्जुनरही लालरी छाय ॥
सजिगयो महुबा तब जल्दीते * मानो इन्द्रधाम दिखराय ॥
पलकी मँगवाई राजा ने * तापर चढ़े रजा परिमाल ॥
हरनागर पर ब्रह्मानँद चढ़ि * चलि बगियामें पहुँचे जाय ॥
जबहीं देखा चन्देले को * लाखनि उठिके करी सलाम ॥
हृदय लगाय लियो राजा ने * भेंटे ब्रह्मा राजकुमार ॥
आल्हा ऊदन इन्दल आये * औ राजाको करी सलाम ॥
चरण लागि कै चन्देले के * सो माथे में लियो लगाय ॥
मोह आय गयो परिमालै को * नैनन बहै नीरकी धार ॥
बहुते बात भई आल्हा ते * राजा लीन्हों शीस लगाय ॥
कायल होइकै चन्देले तब * तुरतै करन अधीनी लाग ॥
बसो महोबे में बेटा तुम * सुखते रहो छोड़ि दुखजाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सूनों नगर जानि घेरत है * नितउठि चढ़त पिथौरा राय ॥
हँसी खुशी ते चन्देले ने * सब लरिकनते कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलावन हम आये हैं * जल्दी चलो हमोरे साथ ॥
करी तयारी तब सबने मिलि * देखन चले महोबा गाँव ॥
आइ सवारी गलियारेन में * महुबे इन्द्रधाम दिखराय ॥
जितने राजा हैं लाखनि सँग * महुबे देखि २ रहिजायँ ॥
शोभा देखत गढ़महुबे की * पहुँचे राजमहल ढिग जाय ॥
अपनी अपनी असवारिन ते * सिगरे उतरि परे अरगाय ॥
मेल मिलाप भयो सबही को * सो हम कहँलग करैं बखान ॥
आदर करिकै चन्देले ने * सब काहू को दियो टिकाय ॥
आल्हा ऊदन दशपुरवागे * फिरके पुरवा लियो बसाय ॥
घर घर खुशी भये नारी नर * महुबे आये बनाफर राय ॥
पूरि लड़ाई भइ बेतवे की * सो हम लिखिके दई सुनाय ॥
ऊदन हरन लिखौं आगे मैं * यारो सुनियो कान लगाय ॥
समय पायकै आल्हा गावौ * नित उठिलेउ नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

* इति नदिया बेतवे की लड़ाई *

(लाखनिराना विजय)

समाप्त ।

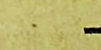

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ ऊदनहरन की लड़ाई ।

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥ १ ॥

* आल्हा *

सुमिरन करिके नारायण को * औ गणपति के चरण मनाय॥
ऊदन हरन कहौं यहि अवसर * यारो सुनियो कान लगाय ॥
पर्व दशहरा की बुड़की परि * औ दिन आनिपरा इतवार ॥
श्री बिठूर घाट गंगा के * मेला चलन लाग त्यहिकाल॥
सोनवाँ ठाढ़ी सतखंडा पर * मेला देखि देखि रहि जाय ॥
गंगा गंगा यात्री बोलैं * जय २ कहत चले सबजायँ ॥
उतरी सोनवाँ सतखंडा ते * औ ऊदन को पठयो बुलाय॥
आये ऊदन तब सोनवाँ पै * सोनवाँ चौकी दई डराय ॥
चरण लागिके ऊदन बैठे * तब सोनवाँ ने कही सुनाय ॥
मेला चलो जात गंगा को * हमहूँ चलिहैं गंग नहान ॥
बोले ऊदन तब सोनवाँ ते * भौजी सुनो हमारी बात ॥
आज्ञा लै लेयँ हम आल्हा को * तब तुम चलो हमारे साथ ॥
यहिकहि ऊदन उठि ठाढ़े भे * औ आल्हा पै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरि के ऊदन बोले * दादा सुनो हमारी बात ॥
गंग नहैहैं सोनवाँ भौजी * सो तुम हुक्म देउ फरमाय ॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे * करिहौ तहाँ बखेड़ा जाय ॥
ताते बैठि रहो धरही में * यह तुम मानौ कही हमारि ॥
बोले ऊदन तब आल्हा ते * दादा बचन करौ परमान ॥
धुरो हमारो कछु अटको ना * क्यों हम करैं बखेड़ा जाय ॥
बुड़की लैके घर फिरि ऐहैं * रहिहैं बिना काम तहँ नाहिं ॥
आज्ञा देदइ तब आल्हा ने * तुरतै उठे उदैसिंह राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खबरि पठाय दई सोनवाँ पै * भौजी जल्द होउ तैयार ॥
करी तयारी सोनवाँ रानी * फुलवा त्यारी लई कराय ॥
सोनवाँ फुलवा दोनों चलिभई * औ पलकी में भई सवार ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो * तापर चढ़े उदैसिंह राय ॥
साथ में लीन्हा जगनायक को * लश्कर सवालाख सजवाय ॥
कूच कराय दियो महुबे ते * औ बिठूर की पकरी राह ॥
मंजिल करके सात रोज की * गंगा घाट पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दिये रेती में * खाली एक देखि मैदान ॥
तम्बू तनवायो अपनो तहँ * तामें टिके उदैसिंहराय ॥
सोभिया नटिनी झुन्ना गढ़ की * रेती में डेरा दिये लगाय ॥
भोरहोत खन त्यहि सोभिया ने * सहुआ बीरन लियो बुलाय ॥
बोली तुरतै तब बीरन ते * त्यारी तुरत लेउ करवाय ॥
यह कहि संगलियो नटिनीको * औ मेला में पहुँची जाय ॥
राग रागिनी गावन लागी * मेलामें करन तमाशा लागि ॥
मेला जहाँ रहै महुबे को * शोभिया तहाँ पहूँची जाय ॥
पूछन लागी दरवानी ते * महुबे को मेला देउ बताय ॥
जहँपर तम्बू रहै ऊदन का * दरवानी ने दियो बताय ॥
नाचत आई सोभिया बेड़िन * औ तम्बू पै पहुँची आय ॥
जहाँ कचहरी थी ऊदन की * सोभिया करो तमाशा आय ॥
डारि मोहनी दइ सोभिया ने * क्षत्री मोहि मोहि रहिजाय ॥
देखो सोभिया जब सोनवाँ को * तब यह मनमें कियो बिचार ॥
जीति न पैहौं मैं सोनवाँ ते * ताते करिहौं कौन उपाय ॥
नब्बे लाखको गहना सोनवाँ * सो डब्बा में धरो उतारि ॥
लैके जादू तब सोभिया ने * त्यहि डब्बा पर दियो चलाय ॥
लैके भिक्षा नटिनी चलि भई * अपने डेरा पहुँची आय ॥
सोनवाँ फुलवा दोनों सजिगईं * संगे चले उदैसिंह राय ॥
गंगा स्नान करी सबही ने * दीन्हीं बहुत दक्षिणा दान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

लश्कर आयो जब यमुना पर * सोभिया डब्बा लियो मँगाय ॥
जादू डारि गई पहिले रहै * ताते तुरतै लियो उड़ाय ॥
उतरो सोनवाँ तब डोलाते * ना कहुँ डब्बा परो दिखाय ॥
मनमें डरिगइ सोनवाँ रानी * औ ऊदन को लियो बुलाय ॥
बोली सोनवाँ बघऊदन ते * देवर करिहौ कौन उपाय ॥
डब्बा भूली मैं बिठूर में * अब मैं देहौं कौन जवाब ॥
बोले ऊदन तब सोनवाँ ते * भौजी धीर धरो मन माहिं ॥
गहना लैहौं मैं बिठूर ते * जैहौं अबहिं गंग के घाट ॥
ऊदन बुलवायो जगनिक को * औ जगनिकते कही सुनाय ॥
डोला लैजाउ तुम महुबे को * अब हम गहना ढुँढ़िहैं जाय ॥
डोला चलिभै तब महुबे को * अकिले चले उदैसिंह राय ॥
ऊदन पहुँचे जब बिठूर में * मेला कहूँ न परो दिखाय ॥
कूच कराय गयो मेला सब * ऊदन गये सनाका खाय ॥
डेरा परो रहै सोभिया को * ऊदन तहाँ पहूँचे जाय ॥
पूँछन लागी सोभिया बेड़िन * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले ऊदन तब सोभिया ते * हम रहवैया नगर महोब ॥
छोटे भैया हैं आल्हा के * औ ऊदन है नाम हमार ॥
गहना भूले हम भौजी को * सो नाहीं कहुँ परत दिखाय ॥
बोली सोभिया तब ऊदन ते * हमते खेलौ पंसासार ॥
पता लगैहैं हम गहने को * ऊदन धीर धरौ मन माहिं ॥
घोड़ा बेंदुलाते उतरे तब * ऊदन बैठि गये निरशंक ॥
सोभिया मँगवाई चौपरि तब * सो सिरकिन में लई बिछाय ॥
खेलन लागे ऊदन ठाकुर * सोभिया जादू दीन्ही डारि ॥
सुआ बनाय लियो ऊदन को * औ पिंजरा में लौ बैठारि ॥
कूच कराय दियो दिल्ली को * औ दिल्ली में पहुँची जाय ॥
कही हकीकति तहँ पिरथी ते * पृथीराज ने दियो निकारि ॥
टिकन न दीन्हीं महराजा ने * सोभिया कूच दियो करवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जहँ जहँ पहुँचे सोभिया बेड़िन * काहू ठौर दिये त्यहि नाहिं ॥
झारखंड के तब झाबर में * सोभिया डेरा दियो लगाय ॥
सिरकी परिगइ ठौर ठौर पर * जादुकि चौकी दई बिठाय ॥
हियांकी बातैं तौ हियँछांड़ो * अब महुबे को सुनो हवाल ॥
डोला आये जब बिठूर ते * नाकहुँ ऊदन परे दिखाय ॥
आल्हा पूंछो जगनायक ते * छोड़ो कहाँ लहुरवा भाय ॥
हाल सुनायो तब जगनिक ने * आल्हा बैठि रहे अरगाय ॥
बहुत दिना बीते ऊदन को * आल्हा सोचकरन तबलाग ॥
पूछन लागे तब सुनवाँ ते * कहँ रहिगये उदैसिंह राय ॥
खबरि मिलीना कहुँ ऊदनकी * रहिरहि मेरो प्राण घबराय ॥
बोली सुनवाँ तब आल्हा ते * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
हमरे मनमें अस आवत है * काहू हरे उदैसिंह राय ॥
जादू करि कोऊ हरि लेगयो * सो हम देहैं ढूँढ़ि मिलाय ॥
बिना हमारे सो मिलिहैं ना * सो तुम बचन करो परमान ॥
लैके जादू सुनवां चलिभई * मुखमें गुटका लियो दबाय ॥
चिल्हिया बनिगई लोटिपोटि के * आधे सरग रही मँडराय ॥
घरघर खोज्यो तिन बिठूर में * ना कहुँ ऊदन परे दिखाय ॥
देश कामरू बंगाला सब * ढूँढ़ो जाय सुनमदेशानि ॥
झुन्नागढ़ नैनागढ़ नरवर * सबते ढूँढ़ो सुनमदेशानि ॥
सिगरे राजनके शहरन में * ढूंढ़े जाय उदैसिंह राय ॥
तब फिरि आई झारखंड में * सिरकिन डेरा परो दिखाय ॥
टँगा पींजरा यक इमिली में * तामें सुअना परो दिखाय ॥
सो पहिचान लियो सुनवाँने * तापर सुनवाँ बैठी जाय ॥
सोभिया पहुँची वा इमिलीतर * तुरतै पिंजरा लियो उतारि ॥
पलंग बिछाय लियो सोभियाने * तापर चौपरि लई बिछाय ॥
मानुष करिके बघऊदन को * पंसा सारी खेलन लागि ॥
आधी राति गई खेलतही * तब सोभियाने कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ब्याह करो ऊदन हमरे संग * औ नितलेउ खुदाको नाम ॥
बोले ऊदन तब सोभिया ते * हमते यह होइबे की नाहिं ॥
बहुतक समझायो सोभिया ने * ना ऊदन ने मानी बात ॥
रस्सा लैके तब सोभिया ने * बघ ऊदनको दियो बँधाय ॥
बाँसन मारु दई पीठी में * गाँठी पैठि पीठि में जाय ॥
बोले ऊदन तेहि सोभिया ते * चैतन धजी धजी उड़िजाय ॥
ब्याहु न करिहैं हम तुम्हरे सँग * ना हम लिहैं खुदाको नाम ॥
राम नाम आधार हमारे * सोई रखिहैं धर्म हमार ॥
राति रहिगई पहर एक जब * सोभिया सुअना दियो बनाय ॥
पिंजरा टाँगदियो इमिली में * अपने परिके सोवन लागि ॥
डारिमसान दियो सुनवाँ तब * पिंजरा तुरतै लियो उतारि ॥
दूसरे बनमें पिंजरा लाई * तुरतै मानुष लियो बनाय ॥
बोली सुनवाँ तब ऊदन ते * देवर क्या गति भई तुम्हारि ॥
बडे बड़े जोधा तुमने मारे * कबहुँ न लगो पीठिमें दागु ॥
जातिकी बेड़िनि तुमको मारे * क्योंना लियो खुदाको नाम ॥
बोले ऊदन तब सुनवाँ ते * है तरवारि गहेकी लाज ॥
धर्म नहीं है यह क्षत्रिन को * जो तजिदेय राम को नाम ॥
फिरिके सुनवां बोलन लागी * या नटिनीते करौ बिवाह ॥
बोले ऊदन तब सोनवां ते * भौजी यह होइबेको नाहिं ॥
हमैं चाह नाहीं नटिनी को * ना हम महुबे को लै जायँ ॥
तबफिरि सुनवां बोलन लागी * अब तुम चलो हमारे साथ ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * हमना जायँ तुम्हारे साथ ॥
चोरी चोरा जो जैहैं हम * हमरो क्षत्री धर्म नशाय ॥
खबरि सुनावो तुम आल्हा को * सो लश्करले पहुँचैं आय ॥
लड़िके भागिजाय नटिनी जब * तब हम चलें महोबे माहिं ॥
यहसुनि सुनवां ने ऊदन को * फिरते लीन्हों सुआ बनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सो बैठारि दीन पिंजरामें * औ इमिलीमें दीन्हो टाँगि ॥
चलिभई सुनवाँ झारखंडते * औ महुबेमें पहुँची आय ॥
खबरि सुनाई सब आल्हाको * औ सुनवाँने कही सुनाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दी ते * औ ऊदनको लेउ छुड़ाय ॥
संग तुम्हारे हमहूँ चलिहैं * औ सब जादू दिहैं हटाय ॥
पाती भेजो तुम जगनिक को * औ लैलेउ आपनो साथ ॥
यहसुनि पाती लिखि आल्हाने * जग नायक को लियो बुलाय॥
हाल बतायो सब ऊदनको * औ चलिबे को भये तयार ॥
तुरत नगरची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजै नगारा हमरे दल में * लश्कर जल्द होय तैयार ॥
डंका बाजो तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * अपनो हाथी लियो सजाय ॥
तापर बैठि गये आल्हा तब * ढेबा मनुरथा पर असवार ॥
घोड़ी हिरौंजिन पर जगनिकतब * तुरतै कूदि भये असवार ॥
घोड़ी करिलिया पर इन्दल चढ़ि * सबने कूच दियो करवाय ॥
गुटका मुँह में सोनवाँ दाबे * चिल्हिया बनि लश्करके साथ॥
चलिभइ सुनवाँ रंग महलते * झारखंड में पहुँची जाय ॥
आधी रातके तब अमला में * सुनवाँ गई इमिलिया पास ॥
लैके पिंजरा सुनवाँ चलिभई * बनके बाहर पहुँची जाय ॥
मानुष करिदिया बघ ऊदनको * तौलो आल्हा पहुँचे आय ॥
डेरा डारि दियो आल्हा ने * अपने तम्बू दिये लगाय ॥
ऊदन मिले जाय आल्हा को * औ आल्हाको करी सलाम ॥
पहरा बैठे रहैं रखवारे * तिन सोभियाते कही सुनाय॥
फौज आयगइ केहु राजाकी * घेरो चारि ओर ते आय ॥
यह सुनि सोभिया उठि ठाढ़ी भई * सहुआ बीरन लियो बुलाय॥
बोली बेड़िन तब बीरन ते * शिरपर दुश्मन पहुँचो आय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जल्दी त्यार होउ लड़िबे को * अबना राखो देर लगाय ॥
नौ हजार नट त्यार भये तब * अपने बाँधि बाँधि हथियार ॥
लै लै अपने जादू झोरा * औ मुर्चा पर पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदन तब आल्हा ते * दादा तोप देउ लगवाय ॥
हुक्म दैदियो तब आल्हाने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर * तोपन आगी दई लगाय ॥
दगी सलामी दोऊ ओरसे * अरर गोला छूटन लाग ॥
लागे गोला जौने नटके * सो लत्ताअस जाय उड़ाय ॥
गोला जंजिरहा ज्यहिके लागे * तुरतै हाड़ मास छुटि जाय ॥
बानको डंडा ज्यहिके लागे * ताके दुइ खंडा हुइ जाय ॥
छोटी गोली ज्यहिके लागे * सो गिरि परे करौंटा खाय ॥
नट हजार सब भुइँमा गिरिगे * सहुआ मनमें गयो डेराय ॥
लैके जादू बंगाले की * तब सहुआ ने दई चलाय ॥
गोल बाँधि सब झुके बेड़िया * अपनी मया मोह बिसराय ॥
खैंचि शिरोही नटवा आये * क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * खटखट चलन लगी तलवार ॥
पैदल गिरिगै पैग पैग पर * उनके दुदुइ पैग असवारि ॥
जहँ तहँ कटि कटि हाथी गिरिगे * छोटे पर्वत की अनुहारि ॥
क्या गति बरणौं तेहि समयाकी * अन्धा धुन्ध चलै तलवारि ॥
सहुआ सोभियाकी धमकिनमें * कोऊ कुँवर न आड़ै पाँव ॥
भगे सिपाही महुबे वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
बोले ऊदन तब क्षत्रिन ते * यारो समय न बारम्बार ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगो हमार ॥
भागि न जैयो कोउ मोहराते * यारौ रखिहौ धर्म हमार ॥
निमक हमारो तुम खायो है * सो हाड़न में गयो समाय ॥
मारि भगावो तुम नटवन को * औ रखि लेउ आपनो नाम ॥
सदा तुरैया ना बन फूले * यारो सदा न जीवन होय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मानुष देही यह दुर्लभ है * कोऊ आज मरै कोउ काल ॥
दियो बढ़ावा बघ ऊदन ने * सबको आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही तब महुबे के * दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
ऊंचे खाले कायर भागे * जे रन दुऊहा चले बराय ॥
लंबी धोती के पहिरैया * तिन नारेन की पकरी राह ॥
यह गति देखी जब सोभियाने * अपने जादू लेय उठाय ॥
जादू पढ़िके सोभिया मारी * रणमें आगि दई फैलाय ॥
ब्याकुल होइ गये महुबे वाले * क्षत्री लै लै भगे परान ॥
देखि हाल यह सुनवां रानी * अपनो जादू लियो उठाय ॥
पानी बरसायो जादू ते * तुरते आगी दई बुझाय ॥
आंधी की पुड़िया सोभियाछोड़े * सुनवां दई मसानी डारि ॥
बोले आल्हा तब क्षत्रिन ते * यारो राखौ धर्म हमार ॥
भागि न जैयो कोउ समुहें ते * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
सुनिके लौटे फिरि क्षत्री सब * रणमें चलन लगी तलवारि ॥
पूरब दाबिगै जगनायक तब * पश्चिम दबे उदयसिंह राय ॥
उत्तर पाटी ढेबा बहादुर * दक्षिण दबे इँदलसी क्वाँर ॥
मारि शिरोहिनि के मुँह फेरो * मुर्चा हटो बेड़ियन क्यार ॥
देखि हकीकत अपने दल की * सोभिया सोच सोच रहिजाय ॥
सिगरे जादू लै सोभिया ने * सो लश्कर पर दिये चलाय ॥
जो जो जादू सोभिया फेंकै * सो सो सुनवाँ देय हटाय ॥
तीनि पहर लो चली शिरोही * औ बहिचली रक्त की धार ॥
ताकि ताकि जादू सोभिया मारे * सोनवां काटि देय तत्काल ॥
बहुत लुड़ाई भइ सोभिया ते * पै सुनवां ने लियो बचाय ॥
बीर महमदा वाली पुरिया * सो सोनवां ने लई उठाय ॥
लैके जादू नारसिंह को * सुनवाँ चौकी दई बिठाय ॥
लैके जादू भैरो वाली * सोऊ सुनवैं दइ बैठारि ॥
है बिकराल कालिका जादू * सो बेडिन पर दई चलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भग बेड़िया तब लश्कर ते * सब मोहरा ते गये बराय ॥
लौटिके सोभिया देखन लागी * मनमें बहुत गई घबराय ॥
बचे बेड़िया जो हमरे रहैं * सो समुहें ते गये बराय ॥
सोभिया झपटा तब सुनवां पर * दोनों लड़न लगीं तत्काल ॥
नीचे सोभिया ऊपर सुनवाँ * तौलौ इन्दल पहुँचे जाय ॥
बोली सुनवां तब इन्दल ते * याको देउ जानते मारि ॥
बोले इन्दल तब सुनवां ते * माता सुनो हमारी बात ॥
हाथ न डरिहैं हम तिरिया पर * हमरो क्षत्री धर्म नशाय ॥
उतरे इन्दल तब घोड़ाते * औ सोभिया पै पहुँचे जाय ॥
छुरिया लैके जहर बुझाई * जूरा काटि लियो तत्काल ॥
सिगरे जादू झूठे परिगै * जियते छोड़ि दियो महरानि ॥
छूटिके भागी सोभिया बेड़िनि * गहना आल्हा लियो सम्हारि ॥
कूच करायो झारखंड ते * झुन्ना गढ़की पकरी राह ॥
जबही पहुँचे झुन्ना गढ़ में * आल्हा डेरा दियो लगाय ॥
गये हरकारा सेनापति पै * औ लश्कर को कह्यो हवाल ॥
कोऊ राजा चढ़ि आयो है * ताको अब कछु करो उपाय ॥
सुनतै धावन को बुलवायो * औ राजाने कही सुनाय ॥
जल्दी जावो तुम बागन में * औ सब खबरि सुनावो आय ॥
चलो सांडिया झुन्ना गढ़ते * औ बागन में पहुँचो आय ॥
सुनो हाल तबसब आल्हा को * तुरतै लौट परो अरगाय ॥
खबरि सुनाय दई राजा को * लश्कर परो महोबे क्यार ॥
इतनी सुनतै सेनापति ने * अपनी पलकी लई मँगाय ॥
तोड़ा पाँच लियो मोहरन के * औ नौ हीरा लिये मँगाय ॥
तुरत सवार भये पलकी पर * औ लश्कर की पकरी राह ॥
आगे मिले जाय आल्हा को * दीन्ही भेंट विसेने राय ॥
बोले सेनापति आल्हा ते * कहाँ की त्यारी दई कराय ॥
बोले आल्हा तब राजा ते * ऊदन गये थे गंग नहान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सोभिया बेड़िन जादू करिके * हरि लैगई उदैसिंह राये ॥
मोहरा मारो हम सोभिया को * औ ऊदन को लाये छुड़ाय ॥
यहसुनि राजा बहुत खुशीभये * हौ समरत्थ बनाफर राय ॥
जादूगरनी सोभिया बेड़िनि * तुमने लड़िके दई भगाय ॥
खातिर कीन्हा तब राजा ने * आल्हा कीन्हे तीनि मुकाम ॥
कूच करायो झूझा गढ़ते * औ महुबे की पकरी राह ॥
मंजिल मंजिल के चलिबे में * गढ़ महुबे में पहुँचे आय ॥
खबरि फैलिगई गढ़ महुबे में * महुबे आये उदैसिंह राय ॥
आनँद बधैया महुबे बाजी * तुरतै दगन सलामी लागि ॥
ऊदन भेंटे सब काहू को * शोभा कछू कहीना जाय ॥
ऊदन हरन भयो पूरो यह * सोहम लिखके दियो सुनाय ॥
आगे गौना है ब्रह्मा को * यारो सुनियो कान लगाय ॥
समय पाय आल्हा गावो तुम * नित उठि नाम लेउ भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हियेमहँ * सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

* इति ऊदन हरन समाप्त *

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ बेलाके गौनेकी पहिली लड़ाई ।

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

* सवैया *

कैटभसे नरकासुर से अरु भीषम द्रोण महायश खेवा ।
बालि बली बलिबाण दधीचि ययाति दिलीपहु से बल सेवा ॥
रावण और युधिष्ठिर भारत भीम महा बलवान सुदेवा ।
अन्त समय उबरे न कोउ क्षणमाहिं भये सब काल कलेवा ॥

* आल्हा *

सुमिरन करिके रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
गौना बेला को भाषत हौं * यारो सुनो छोड़ि सब काम ॥
सुमिरन करिये सब दुष्टन को * जिनको नाम प्रगट संसार ॥
हिरण्याक्ष हिरणाकुश हुइगै * सतयुग माहिं शूर सरदार ॥
त्रेता में रावण दशकन्धर * लड़िके बंश नाश करि दीन ॥
मुख नहिं मोरचोरण समुहें ते * रघुबर किये प्राणते हीन ॥
द्वापर प्रगट भयो कंसासुर * मारो ताहि कृष्ण भगवान ॥
कलियुग प्रगटे माहिल राजा * जाने क्षत्री कियो निदान ॥
चुगुली करि करि युद्ध कराये * लड़ि लड़ि मरे शूर सरदार ॥
बीर हीन भारत गारत भयो * बिगड़े सबै राज के काज ॥
भारत युद्ध कियो दुर्योधन * सोई पृथीराज भे आय ॥
क्यों ना करते युद्ध बादसों * माहिल दीन्ही बुद्धि फिराय ॥
बेटी ब्याहे जब ब्रह्मा सँग * तब क्यों कियो युद्ध सामान ॥
आल्हा ऊदन लाखनि सैयद * होते मित्र बीर मलिखान ॥
होता यवन राज नाहीं यह * मिलता कष्ट नाहिं संसार ॥
धन्य राज है अब दुनियां में * है अँगरेजन का अधिकार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

होय उखारी ना महुबे में ❀ महुबे धान पान अधिकार ॥
क्षत्री उपजै ना आल्हा से ❀ ना फिरि तपै चन्द्र सरदार ॥
लगी कचहरी प रिमालै की ❀ अजगर लागि रहो दरबार ॥
बड़े बड़े जोधा बँगला बैठे ❀ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
लाखनि राना मीरा सैयद ❀ आल्हा और उदै सिंहराय ॥
ढेबा इन्दल ब्रह्मा बैठे ❀ बैठे उरई के पारिहार ॥
माहिल बैठे थे समुहें पर ❀ सो राजा से लगे बतान ॥
लारिका आये अब तुम्हरे घर ❀ आये संग कनौजी राय ॥
ऐसो समय फेरि मिलि हैं ना ❀ गौनको बीरा देउ धराय ॥
इतनी सुनतै मारिमालै ने ❀ सोने कलशा लियो मँगाय ॥
बीरा लैके पाँच पान को ❀ सो कलसा पर दियो धराय ॥
है कोउ क्षत्री या बँगला में ❀ जो गौने पर पान चबाय ॥
भरी कचहरी क्षत्री बैठे ❀ सुनिके गये सनाका खाय ॥
कोऊ चलि भये दहिने बाँये ❀ कोऊ करन गयो अस्नान ॥
कोउ निहारे आसमान को ❀ काहू लीन्ही शीस लचाय ॥
कोउ न देखै वा बीरा को ❀ नाहीं मसातलक मन्नाय ॥
तड़पि कै ऊदन गै कलशा पै ❀ औ बीराको लियो उठाय ॥
गौना लै हैं हम ब्रह्मा को ❀ हमहीं बीरा लिहैं चबाय ॥
यह सुनि उठिके माहिल राजा ❀ ब्रह्मा नँद सो लगे बतान ॥
संग में जै है आल्हा ऊदन ❀ तो सब जै हैं काम नशाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है ❀ सोतुमसमुझि लेउ मन माहिं ॥
बीरा छीनि लेउ ऊदन ते ❀ औ गौना को होउ तयार ॥
साथ तुम्हारे चालि दिल्ली को ❀ तुरतै गौना दिहैं कराय ॥
बात मानिकै तब माहिल की ❀ ब्रह्मा बीरा लियो छिनाय ॥
कायल आल्हा बहुतै हुइगे ❀ ऊदन मनमें गये लजाय ॥
दोनों भैया उठि ठाढ़े भै ❀ दशपुरवा में पहुँचें जाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदनते ❀ तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बीरा छीन लियो मजलिस में ❀ हमरी दीन्ही हँसी कराय ॥
घटिया राजा परिमाले हैं ❀ कायल कियो हमहिं बुलवाय ॥
हमनहिं आवतथे कनउजते ❀ तुमना मानी कही हमारि ॥
लगो महीना जब अगहन को ❀ आये दिना गौवनां क्यार ॥
करी तयारी ब्रह्मानँद ने ❀ तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
डंका बाजै हमरे दल में ❀ सिगरी फौज होय तैयार ॥
बजा नगारा तब लश्कर में ❀ क्षत्री साजि भये तैयार ॥
सोचनलागी रानी मल्हना ❀ अकिले ब्रह्मा भये तयार ॥
आल्हा ऊदन जो जै हैं ना ❀ मारे जै हैं पुत्र हमार ॥
सोचि समझिके रानी मल्हना ❀ एक हरकारा लियो बुलाय ॥
सो पठवाय दियो लाखनि पै ❀ औलाखनि को लियो बुलाय ॥
देखी सूरति जब लाखनि कीं ❀ मल्हना रोय उठी तत्काल ॥
बोले लाखनि तब मल्हनाते ❀ माता हाल देउ बतलाय ॥
कौन बातको तुम रोईहौ ❀ सो सब हमते कहो सुनाय ॥
बोली मल्हना तब लाखनि ते ❀ बेटा सुनौ कनौजी राय ॥
आल्हा ऊदन रूठि गये हैं ❀ सो ना मानिहैं कही हमारि ॥
कौनसो जोधा है धरती पर ❀ जो पिरथी ते माड़ै रारि ॥
लाखनि बोले तब मल्हनाते ❀ धीरज धरो मल्हनदे माय ॥
मोहरा मरि हैं हम पिरथी को ❀ तुरतै बिदा लिहें करवाय ॥
यहकहि चलिभै लाखनि राना ❀ अपने दलमें पहुँचे जाय ॥
हुक्म देदिया तब लश्कर में ❀ हमरो फौज होय तैयार ॥
डंका बाजा तब लाखनि को ❀ क्षत्री होन लगे तैयार ॥
सुनी खबरि जब बघऊदन ने ❀ तब लाखनि पै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी उन लाखनि को ❀ पूछन लगे उदै सिंहराय ॥
कहाँकि त्यारी दादा कीन्ही ❀ सो तुम हमहिं देव बतलाय ॥
बोले लाखनि तब ऊदनि ते ❀ मल्हना रानी हमहिं बुलाय ॥
रोवन लागी हमरे आगे ❀ औ गौनेको कह्यो हवाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

आल्हा ऊदन हमसे रूठे ❀ को अब गौना देय कराय ॥
तब हम त्यार भये ब्रह्मा सँग ❀ उनको गौना दि हैं कराय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे ❀ तुमतो आये हमरे साथ ॥
अकिंले जावो ना ब्रह्मा सँग ❀ घटिया बंश चँदेले क्यार ॥
काम तुम्हारो ना जैबेको ❀ सो तुम मानो कही हमारि ॥
कही हमारी जो मनिहौ ना ❀ तो सब जै है काम नशाय ॥
बोले सैयद तब लाखनि ते ❀ बेटा छोरि धरो हथियार ॥
दूजी करौ नाहिं ऊदन सँग ❀ नंहिं कछुकाम बनैगो नाहिं ॥
इतनी सुनतै लाखनिराना ❀ सबको कमैरं दइँ खुलवाय ॥
त्यारी कीन्ही तब ब्रह्माने ❀ अपने लश्कर संग लिवाय ॥
बड़े बड़े जोधा लिये साथ में ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
संगै चलि भै माहिलराजा ❀ औ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दियो धूरेपर ❀ अपने तम्बू दिये लगाय ॥
फेटैं छुटिगइँ रजपूतन की ❀ सब क्षत्रिनने करो मुकाम ॥
जीन उतारि दिये घोड़न की ❀ हाथिन हौदा धेर उतारि ॥
चलिभै माहिल तब लश्कर ते ❀ पहुंचे जाय राज दरबार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को ❀ माहिल हाथ बाँधि रहिजाय ॥
नजरि बदलिगइ महाराज की ❀ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरईवाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल तब राजाते ❀ बैठे राज करो महराज ॥
आये ब्रह्मा हैं गौनेको ❀ अपनो लश्कर साथ लिवाय ॥
बीरा धरो गयो गौने को ❀ सो ऊदन ने लियो उठाय ॥
हमने कहिकै तब ब्रह्मा ते ❀ वा बीराको लियो छिनवाय ॥
करी तैयारी रहै लाखनि ने ❀ सो ऊदन ने लई रोकाय ॥
आकिले आये हैं ब्रह्मानँद ❀ डोला लेन विलम दे क्यार ॥
मनहिं तुम्हारे जैसी आवै ❀ तैसी करो बीर चौहान ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❀ माहिल सुनो हमारी बात ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गौने दे हैं हम पाछे को ❀ पहिले करि हैं युद्ध अघाय ॥
अपना क्षत्री पन दिखलावो ❀ यह ब्रह्मा कौ देउ सुनाय ॥
इतनी सुनिकै माहिल चलिभे ❀ औ ब्रह्मापै पहुँचे जाय ॥
बोले माहिल ब्रह्मानँद ते ❀ यह कहि दई पिथौरा राय ॥
गौना दे हैं हम पाछे को ❀ पहिले करि हैं युद्ध अघाय ॥
करैं तयारी वो लड़िबे की ❀ औ क्षत्रीपन देयँ दिखाय ॥
बिनालड़े गौना मिलिहैं ना ❀ सो तुम जानिलेउ मनमाहिं ॥
होय न इच्छा जो लड़िबे की ❀ तो तुम कूच जाउ करवाय ॥
पै यक मानो सीख हमारी ❀ सो हम तुमहिं देयँ बतलाय ॥
लौटिजो जैंहो तुम गौने बिन ❀ तुमको हँसिहैं सकल जहान ॥
आल्हा ऊदन हँसिहँसि कहिहैं ❀ क्योंनहिं आये गौन कराय ॥
ताते त्यार होय लड़िबे को ❀ रक्षा करै शारदा माय ॥
इतनी सुनितै ब्रह्मानँद ने ❀ अपनो कलम दान लै हाथ ॥
लैके कागद कलपी वालो ❀ चिट्ठी लिखो आपने हाथ ॥
सिद्धि श्रीनारायण लिखि के ❀ ता पाछे ते लिखी जोहार ॥
लिखी हकीकत फिरि गौनेकी ❀ पढ़ियो याहि पिथौरा राय ॥
लेन गौनवाँ हम आये हैं ❀ सो तुम बिदा देउ करवाय ॥
कही हमारी जो मनिहो ना ❀ तो हम कटा दि हैं करवाय ॥
बिदा करै हैं रनि बेलाकी ❀ ताते बिदा देउ करवाय ॥
बिदा कराये बिन जै हैं ना ❀ चाहे प्राण रहेकी जाय ॥
यहि बिधि चिट्ठी लिखी ब्रह्माने ❀ हरकारा को दइ पकराय ॥
चलो साँड़िया तब लश्कर ते ❀ औ दिल्ली में पहुँचो जाय ॥
धावन उतरि परो जल्दी ते ❀ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजरि बदलिगई पृथीराज की ❀ तुरतै पाती लई उठाय ॥
पाती पढ़तै महाराज ने ❀ ताहर बेटा लियो बुलाय ॥
चौड़ा धाँधू को बुलवायो ❀ गोपी बेटा लियो बुलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

औ बुलवायो टोडर मल को ❀ सबते कही बीर चौहान ॥
लश्कर सजवावो जल्दी ते ❀ औ धूरे पर पहुँचे जाय ॥
ब्रह्मा आये हैं गौने को ❀ सो तुम कटा देउ करवाय ॥
बाँधिके लावो ब्रह्मानँद को ❀ अबना राखो देर लगाय ॥
इतनी सुनतै ताहर चलि भये ❀ औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
तुरत नगरची को बुलवायो ❀ सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजे नगारा हमरे दल में ❀ लश्कर साजि होय तैयार ॥
डंका बाजे तब लश्कर में ❀ क्षत्री सजन लाग तत्काल ॥
पहिले डंका में जिन बन्दी ❀ दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन ❀ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै ❀ बाँके घोड़न के असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्ट धातु की ❀ सो आगे को दई जुताय ॥
घोड़ा दलगंजन सजवायो ❀ तापर ताहर भयो सवार ॥
सज्जा घोड़ा त्यार करायो ❀ तापर गोपी भये सवार ॥
टोडरमल चढ़िगै सुर्खा पर ❀ हाथी सजी चौड़िया क्यार ॥
भौंरा नँद हाथी सजवायो ❀ तापर धाँधू भये सवार ॥
अपनी अपनी असवारिन पर ❀ सिगरे क्षत्री भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ मारू डंका दियो बजाय ॥
चारि घरी के अरसा माहीं ❀ पहुँचे रण खेतन में जाय ॥
खबरि सुनी जब ब्रह्मानँदने ❀ आई फौज पिथौरा क्यार ॥
हुक्म फेरि दियो तब जल्दी ते ❀ लश्कर जल्द होय तैयार ॥
बजे नगारा तब लश्कर में ❀ क्षत्री साजि भये तैयार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की ❀ सो मुर्चा पर पहुँचो जाय ॥
लश्कर त्यार भयो ब्रह्माको ❀ औ मुर्चापर दई लगाय ॥
चढ़ि हरनागर पर ब्रह्मानँद ❀ पहुँचे समर भूमि में जाय ॥
ताहर घोड़ा. दाबे आये ❀ औ ब्रह्मापै पहुँचे जाय ॥
बोले ताहर ब्रह्मानन्द ते ❀ काहे धुरो दबायो आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

गरुई गाजैं हैं दिल्ली की ❀ नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
यहसुनि ब्रह्मानन्द बोले तब ❀ बहिनिको बिदा देउ करवाय ॥
बिदा कराये बिन जैहैं ना ❀ चाहे प्राण रहे की जाय ॥
गुस्सा होइकै तब ताहर ने ❀ तुरतै हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दैदेउ सब तोपन में ❀ इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❀ तुरतै आगी दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में ❀ धुआँना रह्यो सरगमें छाय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❀ सरसर परी तीरकी मारु ॥
बान अगिनियां छूटन लागे ❀ गोला मघा बूंद समजात ॥
गोला ओलाके सम बरसै ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
गोला लागै ज्यहिं हाथी के ❀ दलमें डौकि २ रहि जाय ॥
गोला लागै जौन ऊँटके ❀ सो गिरि परै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै ज्यहि घोड़न के ❀ चारो पाय देयँ फैलाय ॥
लागै गोला ज्यहि क्षत्री के ❀ सो गिरि परै धरनि भहराय ॥
छोटी गोली ज्यहिके लागे ❀ मानौ गिरह कबूतर खाय ॥
गोला जँजिरहा ज्यहिके लागै ❀ तुरतै हाड़ मास छुटि जाय ॥
बानको डंडा ज्यहि के लागे ❀ ताकै दुइ खंडा होइ जाय ॥
चारिघरी भरि गोला बरसो ❀ तो पैं लालबरन होइ जाय ॥
बन्द लड़ाई करि तोपन की ❀ ज्वानन खैंचिलई तलवारि ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के ❀ रहिगयो तीनकदम मैदान ॥
उठी शिरोही तब क्षत्रिन की ❀ खट खट चलन लगी तलवारि ॥
चले जुनब्बी औ अहिगर्बी ❀ ऊना चले बिलायत क्यार ॥
तेगा चटके बर्दवान कै ❀ कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगै ❀ उनके दुदुइ पैग असवारि ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे ❀ छोटे पर्वत की अनुहार ॥
सवा पहर भर चली शिरोही ❀ धूरे बही रक्त की धार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

डारे घैहा रण में लोटैं ❀ जिनके प्यास प्यास रटलागि ॥
पागिया डारी जो लोहू में ❀ मानों कमल फूल उतराय ॥
डारी ढालें जो लोहू में ❀ मानों कछुवासी उतराय ॥
भगे सिंपाही दिल्ली वाले ❀ अपने डारि डारि हाथियार ॥
देखि हाल यह गोपी बढ़िगे ❀ औ ब्रह्माते लगे बतान ॥
सम्हरो ब्रह्मा तुम घोड़ा पर ❀ तुम्हरो काल रह्यौ नियराय ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ब्रह्माने ❀ औ गोपी ते कही सुनाय ॥
पाहिली चोट करो अपनी तुम ❀ मनकी मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी सुनतै गोपी बढ़िगे ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई ब्रह्मानँद पर ❀ बायें उठी गैड़की ढाल ॥
तीनि शिरोही गोपी मारी ❀ ब्रह्मा लीन्ही चोट बचाय ॥
तब ललकारो ब्रह्मानँद ने ❀ औ तुम खबरदार हुइजाउ ॥
खैंचि शिरोही ब्रह्मा मारी ❀ गोपी दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली ❀ गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
छुटि जनेवा गयो गोपी को ❀ गोपी जूझि गये मैदान ॥
यह गति देखी जब टोडर मल ❀ तब ब्रह्मा को दइ ललकार ॥
खैंचि सिरोही टोडरमल ने ❀ ब्रह्मानँद पर दई चलाय ॥
चोट बचाई ब्रह्मानँद ने ❀ अपनी दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
टूटि शिरोही गइ टोडर की ❀ टोडर सोचि सोचि रहिजाय ॥
तब ललकार दई ब्रह्मानँद ❀ अपनो दीन्हो गुर्ज चलाय ॥
गुर्ज के लागत टोडर जूझे ❀ ताहर घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
लाश उठाय लई दोनों की ❀ सो दिल्ली को दई पठाय ॥
घोड़ा बढ़ायो ताहर ठाकुर ❀ औ ब्रह्माते कही सुनाय ॥
सम्हरि के बैठो तुम घोड़ा पर ❀ तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
चोट आपनी ब्रह्मा करि लेउ ❀ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिंताउ ॥
बोले ब्रह्मा तब ताहर ते ❀ हमरे बचन करो परमान ॥
पाहिल उचौनी हम ना खेलैं ❀ ना तिरिया पर डारैं हाथ ॥
भगे सिपाही को मारैं ना ❀ ना हम धरैं पिछारी पांव ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चोट आपनी ताहर करिलेउ ❀ मन के मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी सुनि ताहर गुस्सा होय ❀ अपनी लई शिरोही काढ़ि ॥
चोट चलाई ब्रह्मानँद पर ❀ ब्रह्मा दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
सात शिरोही ताहर मारी ❀ ब्रह्मा लैगे चोट बचाय ॥
सोचे ताहर तब अपने मन ❀ यह ब्रह्मा है बुरी बलाय ॥
साँग उठाई फिरि ताहर ने ❀ सो ब्रह्मा पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ब्रह्माने ❀ ताहर दीन्हों गुर्ज चलाय ॥
हटि गयो घोड़ा ब्रह्मानँद को ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
बोलो ब्रह्मानँद ताहर ते ❀ अब तुम खबरदार होइ जाउ ॥
गुर्ज उठायो ब्रह्मानँद ने ❀ सो ताहर पर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के ❀ ताहर घोड़ा गये भगाय ॥
यह गति देखी जब चौड़ा ने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
आगे बढ़ि ब्रह्मा ललकारो ❀ अपनो दीन्ही गुर्ज चलाय ॥
बायेंते घोड़ा दाहिने होइ गयो ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
साँग उठाई तब ब्रह्मा ने ❀ सो हाथी पर दियो चलाय ॥
हाथी हटि गयो तब चौड़ा को ❀ मुर्चा फिरो चौड़िया क्यार ॥
मुर्चा हटि गयो जब चौड़ा को ❀ धांधू हाथी दियो बढ़ाय ॥
धांधू आये जब समुहें पर ❀ तब ब्रह्मा ने कही सुनाय ॥
भैया हमरे तुम लागत हो ❀ पै जो लड़ो हमारे साथ ॥
तो तुम अपने बल पौरुष भरि ❀ लाड़िके मेटि लेउ अरमान ॥
काल समान देखि ब्रह्मा को ❀ धांधू तुरतै लगे बतान ॥
लागि हमारी कछु नाहीं है ❀ खायो निमक पिथौरा क्यार ॥
खैंचि सिरोही लइ इतना कहि ❀ सो ब्रह्मापर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ब्रह्माने ❀ तीनों चोटैं लई बचाय ॥
गुर्ज उठायो ब्रह्मानँदने ❀ औ धांधू पर दियो चलाय ॥
भागो हाथी तब धांधू को ❀ ब्रह्मा डंका दियो बजाय ॥
ताहर चौड़ा धांधू ठाकुर ❀ सब मुर्चा ते गये बराय ॥
फौज भागि गई पृथीराज की ❀ कोऊ शूर न परै दिखाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जहाँ कचहरी पृथीराज की ❀ ताहर तहाँ पहूँचे जाय ॥
हाल सुनायो सब ब्रह्मा को ❀ औ लश्करको कह्यो हवाल ॥
लड़े न जितिहैं हम ब्रह्माते ❀ है जो रणमें काल समान ॥
गोपी टोंडरको हनिडारो ❀ लश्कर काटिकरो खरिहान ॥
मारि भगायो हम सबही को ❀ सो तुम समुझिलेउ महराज ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❀ हमरो बंश नाशकरि दीन ॥
कौन उपाय करें ब्रह्मा सँग ❀ यहसुनि माहिल कही सुनाय ॥
जीति न पैहौ तुम ब्रह्माको ❀ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
सीख हमारी राजा मानो ❀ तो हम जतन देउँ बतलाय ॥
भेष जनाना ताहर धरिलेयँ ❀ औ डोलीमें होयँ सवार ॥
भेजो डोला तुम ब्रह्मा पै ❀ औ यह कहिके देउ पठाय ॥
डोला भेजो हम बेटी को ❀ सो तुम लेउ चँदेलेराय ॥
गाफिल करिकैं ब्रह्मानँदको ❀ तुरतै लेउ जँजीरन बाँधि ॥
लायके दिल्लीके खंदक में ❀ ब्रह्मानंदहिं देउ डराय ॥
यह उपाय हमने सोचो है ❀ सोई करौ बीर चौहान ॥
उड़न बछेरा है ब्रह्माको ❀ ताते और न चले उपाय ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❀ हमना धरें जनाना भेष ॥
धर्म क्षत्रियन को नाहीं यह ❀ जो क्षत्रीपन देयँ नशाय ॥
चौड़ा बोलो तब जल्दी ते ❀ हमधरि लैहैं जनाना भेष ॥
जायकै मरिहैं हम ब्रह्माको ❀ सिगरो झगड़ा दिहैं मिटाय ॥
यहकहि चलिभये चौड़ा ब्राह्मण ❀ औ महलनमें पहुँचो जाय ॥
भेष जनाना धरो तहाँ तब ❀ पाँय महाउर लियो लगाय ॥
गहना पहिर लियो तिरियनको ❀ घूँघट हाथ भरे की काढ़ि ॥
जहर बुझाई लई कटारी ❀ सो कम्मर में लई लगाय ॥
पलकी मँगवाई जल्दी ते ❀ तापर चौड़ा भयो सवार ॥
चली पालकी चोड़ा वाली ❀ हुमकत चलिभये आठ कहार ॥
संगै ताहर है घोड़ा पर ❀ लीन्हे साथ बीस सरदार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यक हरकाराको भेजो तब ❋ औ यह ताहर कही सुनाय ॥
खबरि सुनायो तब ब्रह्माको ❋ डोला भेजि दियो महराज ॥
ताहर आवत है डोलासँग ❋ आगे हमको दियो पठाय ॥
यह सुनि ब्रह्मा बहुत खुशी होय ❋ अपनो घोड़ा लियो सजाय ॥
तुरत सवार भये घोड़ा पर ❋ तौलौ डोला परो दिखाय ॥
बीस कदम जब ब्रह्मा रहिगै ❋ ताहर झुकिकै करी सलाम ॥
बोले ताहर ब्रह्मानँद ते ❋ डोला भेजि दियो महराज ॥
बात तुम्हारी राजा मानी ❋ अब तुम बिदा जाउ करवाय ॥
साँची मानिलई ब्रह्मा तब ❋ घोड़े ते उतरि परे अरगाय ॥
देखो दुचित्ता जब ब्रह्माको ❋ हाथ में लई कटारी काढ़ि ॥
उतरो चौड़ा तब पलकी ते ❋ बायें हनी कटारी जाय ॥
तुरत समाय गई हिरदे में ❋ मूर्च्छित भये चन्देले राय ॥
तीर खैंचि फिरि ताहर मारो ❋ सो माथे में गयो समाय ॥
साँग उठाई फिरि ताहर ने ❋ सो दहिने पर दियो चलाय ॥
घाव तीनि लागे ब्रह्मा के ❋ तौलौ धाँधू पहुँचे आय ॥
हाल देखिकै ब्रह्मानँद को ❋ गुस्सा गई देह में छाय ॥
बोले धाँधू तब ताहर ते ❋ ऐसी तुमहिं सुनासिब नाहिं ॥
धोखा दैके तुमने मारो ❋ नहिं यह धर्म क्षत्रियन क्यार ॥
लानति ऐसी रजपूती पर ❋ तेगा बँधिबे को धिरकार ॥
भागि गये रहौ तुम समुहेंते ❋ अब क्या कियो मर्दका काम ॥
ब्याह कियो रहै जब ब्रह्माते ❋ तब कहँ गई रहै तलवारि ॥
रांड करिदियो तुम बहिनीको ❋ अब नियरानो काल तुम्हार ॥
भेष जनाना चौड़ा करिकै ❋ धोखे ते हनि दियो कटार ॥
करी मर्दुमी ना चौड़ाने ❋ याके जीवन को धिरकार ॥
दियो बुझाय गयो महुबेको ❋ अबना बचे पिथौरा राय ॥
अब चढ़ि ऐ हैं आल्हा ऊदन ❋ मरि हैं बीनि २ सरदार ॥
बचिहैं कोऊ नहिं दिल्ली में ❋ हमरे बचन करो परमान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुने बचन जब यह धांधू के ❋ ताहर लीन्ही मूँड़ लचाय ॥
मन घबराय गयो चौड़ा तब ❋ सब दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
देखो मूर्छित ब्रह्मानँदको ❋ जगनिक तँबुआ गयो लिवाय ॥
जागी मूर्छा जब ब्रह्माकी ❋ तब जगनिक ते लगे बतान ॥
हमना जै हैं अब महुबे को ❋ तुम हरकारा देउ पठाय ॥
तब जगनिक ने हरकारा को ❋ गढ़ महुबे में दियो पठाय ॥
घाव सिलाय दिये ब्रह्माके ❋ मलहम पट्टी दियो कराय ॥
ताहर चौड़ा धाँधू पहुँचे ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
बोले धाँधू पृथीराज ते ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
समुहें जीते ना ब्रह्माते ❋ तब धोखेते दियो मराय ॥
बेटी ब्याही जब ब्रह्माको ❋ तब क्यों करी निरासिनि रांड ॥
काम मर्दको है नाहीं यह ❋ ना यह धर्म क्षत्रियन क्यार ॥
ऐसे महाबीर ब्रह्मा को ❋ बिन अपराध कियो संहार ॥
दिया बुझाय दियो महुबेको ❋ अपनी कियो सुयशको नाश ॥
ऐसेइ मारो तुम मलिखेको ❋ जग बदनामी भई तुम्हारि ॥
काल बुलाय लियो सबको तुम ❋ सांची मानो बात हमारि ॥
भई खबरि जब रंग महलमें ❋ ब्रह्मा हने चौड़िया राय ॥
रोवन लागी अगमा रानी ❋ चौड़ा तेरो बुरो हुइजाय ॥
भेष जनाना करिकै मारो ❋ तेरे जीवन को धिरकार ॥
गौन भयो नहिं मोरि बेटीको ❋ तू करिदियो निरासिनि राँड ॥
सुनी खबरि जबरानि बेलाने ❋ तुरते अग्निज्वाल होइजाय ॥
भूषण बसन त्यागि जौहरकरि ❋ बेला करन लगी अपघात ॥
महल दूसरे में बेला गई ❋ रोवन लागी जार बेजार ॥
जो हरकारा गयो महुबे में ❋ मल्हने खबरि सुनाई जाय ॥
दिल्ली जूझे पुत्र तुम्हारे ❋ सुनिके रोय उठी महरानि ॥
खबरि सुनतही परलै होयगई ❋ हाहाकार परो रानिवास ॥
हायहाय करि मल्हना रोवै ❋ औ सब रोय रोय रहिजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनी खबरि जब चन्देलेने ❀ रोवन लगे रजा परिमाल ॥
रैयत रोवै गढ़ महुबे की ❀ कोऊ गींधे भात न खाय ॥
खबरि फैलगई दशपुरवा में ❀ जूझे ब्रह्मा राज कुमार ॥
सिगरी रैयत रोवन लागी ❀ हा दैया गति कही न जाय ॥
देवै सुनवाँ फुलवा रानी ❀ सबने छाड़ि दई डिडकार ॥
हाय बिधाता यह कैसी भइ ❀ मारे गये चँदेले राय ॥
अगमा रानी बेला जाई ❀ त्यहि करि दई वंशकी हानि ॥
दिया बुझाय दियो महुबेको ❀ मरियो पुत्र पिथौरा क्यार ॥
होय निपूती अगमा रानी ❀ जैसे भई मल्हनदे रानि ॥
माहिल राजा तुम मारिजैयो ❀ औ उरईपर परियो गाज ॥
साथ लैगयो छल ब्रह्मा को ❀ औ धोखे ते दियो मराय ॥
सुनो हाल आल्हा ऊदन जब ❀ भुइँमें गिरे तड़ाका खाय ॥
रोवन लागे दोनों भैया ❀ नैनन बहै रक्तकी धार ॥
रोय रोय बोले बघ ऊदन ❀ सूनो हुइगयो नगर महोब ॥
हाय बिधाता यह कैसी भइ ❀ कैसे बचैं चँदेले राय ॥
भैया ब्रह्मा अब कहँ मिलिहैं ❀ करिहैं अब हम कौन उपाय ॥
धीरज धरि तब आल्हा बोले ❀ भैया सुनो हमारी बात ॥
मीच पराई कोउ मरैना ❀ सब कोउ मरै आपनो मीच ॥
जो कछु कर्म लिखो बिधनाने ❀ ताको कोउ मिटैया नाहिं ॥
कालआ गयो ब्रह्मानँद को ❀ तब उन बीरा लियो छँडाय ॥
अकिले चढ़िगे गढ़ दिल्ली को ❀ घटिहा बंश पिथौरा राय ॥
ऐसेइ मारो रहे मलिखे को ❀ सो गति करी चँदेले क्यार ॥
उन्हैं मुनासिब यह नाहीं थी ❀ जो घटिकरी चँदेले साथ ॥
घटिया राजा दिल्ली वाला ❀ घटिहा वंश चौहानन क्यार ॥
पहिली लड़ाई यह पूरी भइ ❀ आगे दुसरी दिहैं सुनाय ॥
आल्हा गावौ वर्षा ऋतु में ❀ नित उठि नाम लेउ भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति बेला के गौने की पहिली लड़ाई समाप्त ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ बेलाके गौनेकी दूसरी लड़ाई।

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

कुण्डलिया।

सबकी बाजी लग रही धर्मराज सों जान।
लैके फाँसी हाथ में यम घोटेंगे प्रान ॥
यम घोटेंगे प्रान जानि मन क्यों भरमावै।
मात पिता सुतनारि बन्धु कोउ काम न आवै ॥
नारायण धरु ध्यान बँध्यो यमपुर को जावै।
तब रोवै पछिताय नहीं कछु पार बसावै ॥ २ ॥

❋ सवैया ❋

ज्ञान घटै खल सङ्गतसे अरु रोष घटै मनके समुझाये।
पापघटै कछु पुण्यकरे अरु रोगघटै कछु औषधि खाये ॥
प्रीतिघटै नित मांगनते अरु नीरघटै ऋतुग्रीषम आये।
नारि प्रसङ्गते जोर घटै यमत्रास घटै हरिके गुनगाये ॥ ३ ॥

❋ आल्हा ❋

सुमिरन करिके नारायण को ❋ औ गणपतिके चरण मनाय ॥
दुसरी लड़ाई अब गौने की ❋ सो हम लिखिकै दिहैं सुनाय ॥
भुइयाँ गैये याहि खेरेकी ❋ माता भूलो नाम तुम्हार ॥
तुम्हरे अखाड़े में गावत हौं ❋ बेड़ा खेय लगैयो पार ॥
जो जो अक्षर माता भूलौं ❋ सो सब कंठ बैठि कहिजाउ ॥
शरण तुम्हारी मैं आयो हौं ❋ भूले अक्षर देउ बताय ॥
परत बिपति जगमें सबही को ❋ यारो बिपति धाम संसार ॥
यकदिन बिपति परी शंकरपर ❋ जब भस्मासुर परो पिछार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यकदिन परिगै रामचन्द्र पर ❀ बनमें हरी निशाचर नारि ॥
सोइ दिन परिगयो चन्देले पर ❀ जूझे ब्रह्मा राज कुमार ॥
महलन बिलखे बेला रानी ❀ सो वह विपति कही नाजाय ॥
कागद लैके कलपी बाला ❀ अपनी कलमदान लै हाथ ॥
सोचि समुझिके बेला रानी ❀ तुरतै लिखन हकीकत लागि ॥
पाहिले लिखिकै सरनामा को ❀ ता पीछे ते लिखे हवाल ॥
पाती पढ़ियो बघऊदन तुम ❀ औ आल्हा को देउ सुनाय ॥
सुनियत मल्हना तुमको पाली ❀ ऊदन यही दिना के काम ॥
सुखते सोये तुम महुबे में ❀ हमरे कंत दिये मरवाय ॥
लानति ऐसी रजपूती पर ❀ तेगा बँधिबे को धिरकार ॥
तेग तुम्हारी जग जाहिर है ❀ रणमें एक शूर सरदार ॥
सो तुम डरिगै क्या पिरथीको ❀ क्यों गौने ते गये बराय ॥
होउ जो पैदा दस्सराज ते ❀ हमरे कंथ देउ मिलवाय ॥
नाहीं आवो जो दिल्ली को ❀ तौ धरिलेउ जनाना भेष ॥
बाना छोड़ि देउ क्षत्री को ❀ औ सब छोरि धरौ हथियार ॥
बेला रानी रोय रोय यह ❀ बघऊदन को लिखी हवाल ॥
यहिबिधि चिट्ठी लिख ऊदन को ❀ फिरिआल्हाको लिखौ हवाल ॥
जेठ हमारे तुम आल्हा हो ❀ तुम ऊदनहिं देउ समुझाय ॥
बिदा कराय लेयँ हमरी सो ❀ हमरे कंथ देयँ मिलवाय ॥
खायजो कसम गये गौने की ❀ तौवे करैं चाकरी आय ॥
भरती करिहैं हम लश्कर को ❀ लावैं फौज उदौसिंह राय ॥
लिखिके पाती यह बेला ने ❀ हरकारा को दइ पकराय ॥
जल्दी चले जाउ महुबे को ❀ यह आल्हाको दीन्ह्यो जाय ॥
चलो साँड़िया तब दिल्ली ते ❀ दशपुरवा में पहुँचो जाय ॥
लगी कचहरी जहँ आल्हा की ❀ धावन उतरि परो अरगाय ॥
करी बन्दगी नुनि आल्हा को ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती आल्हा बाँची ❀ जियके होश बन्द होइजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सोचन लागे शिर नीचेकरि ❀ तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
कहाँ कि पाती यह दादा है ❀ सो तुम हाल देउ बतलाय ॥
कौन सोच आयो जियरा में ❀ काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदन ते ❀ भैया हाल कह्यो ना जाय ॥
चिट्ठी भेजी यह बेला ने ❀ तुरतै हमको पठ्यो बुलाय ॥
ब्रह्मा मारे गये दिल्ली में ❀ सो अब करिहौ कौन उपाय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे ❀ दादा बचन करो परमान ॥
बदला लेहैं हम ब्रह्मा को ❀ दिल्ली गर्द दिहैं करवाय ॥
डाहु बुझैहैं तब छाती को ❀ यह कहि उठे उदैसिंह राय ॥
ऊदन पहुँचि गये लाखनि पै ❀ औ यह कहीं उदैसिंह राय ॥
अब तुम त्यार होहु दिल्ली को ❀ दादा फौज लेहु सजवाय ॥
बिदा करैं हैं हम बेला को ❀ औ ब्रह्मा को दि हैं दिखाय ॥
बदला लेहैं हम भैया को ❀ तब छाती को डाहु बुझाय ॥
यहसुनि चलिभै लाखनि राना ❀ संगै चले उदैसिंह राय ॥
तुरतै पहुँचि गये लश्कर में ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय॥
डंका बाजै हमरे दल में ❀ लश्कर जल्द होउ तैयार ॥
जतन करी यह बघऊदन ने ❀ कारे कपड़ा लियो रँगाय ॥
कारे निशाना सब बनवाये ❀ कारे बाना करो तैयार ॥
बस्त्र बँटाय दिये क्षत्रिन को ❀ औ यह सबते कही सुनाय ॥
आयके पूछे जो तुमते कोउ ❀ कहियो फौज गँजरहन क्यार ॥
भरती होवै गढ़ दिल्ली में ❀ सो हम करन चाकरी जायँ ॥
डंका बाजो गढ़ महुबे में ❀ सजिगई फौज कनौजीक्यार ॥
लश्कर सजिगयो आल्हा वालो ❀ जाको सजत न लागी बार ॥
अपनी अपनी असवारिन पर ❀ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
आल्हा चढ़िगै पचशावद पर ❀ सैयद सिंहिनिपर असवार ॥
लाखनि चढ़िगै तब भरुही पर ❀ ढेबा मनोरथा पर असवार ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो ❀ ऊदन फाँदि भये असवार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धनुवाँ तेली कनउज वालो ❀ घोड़ी विलंदिनिपर असवार ॥
मारू डंका के बाजत खन ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
पाँच दिना मारग में बीते ❀ दिल्ली धुरो दखायो जाय ॥
डेरा डारि दियो बागन में ❀ लश्कर रही लालरी छाय ॥
चौड़ा आयो रहै बागन में ❀ सो लश्कर तन रहो निहारि ॥
कारो निशाना कारो बाना ❀ देखै खड़ा चौड़िया राय ॥
पूछन लागो बघऊदन ते ❀ कहाँ ते आई फौज तुम्हार ॥
कहँतक जैहो तुम आगे को ❀ सो सब हाल देउ बतलाय ॥
कौने राजा को लश्कर यह ❀ क्यों यह आप मझायो आय ॥
यह सुनि ज्वाब दियो ऊदन ने ❀ हरिसिंह बिरसिंह नाम हमार ॥
हम रहवैया हैं गांजर के ❀ करिहैं यहाँ नौकरी आय ॥
भरती सुनी शहर दिल्ली में ❀ रखिहैं हमें बिलम दे रानि ॥
बोल्यो चौड़ा तब ऊदन ते ❀ हरिसिंह सुनो हमारी बात ॥
करौ नौकरी जो तिरिया की ❀ तुम्हरो क्षत्री धर्म नशाय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे ❀ हमको यहाँ खर्च ते काम ॥
चाकर रखिहैं जो हम को यह ❀ करिहैं तहाँ चाकरी जाय ॥
बोल्यो चौड़ा तब ऊदन ते ❀ अब तुम चलो हमारे साथ ॥
यहसुनि चलिभै ऊदन ठाकुर ❀ संगै चले कनौजी राय ॥
जबहीं पहुँचे वे ड्योढ़ी पर ❀ तब चौड़ा ने कही सुनाय ॥
तलब बताय देउ हमको तुम ❀ सो राजा को देउँ सुनाय ॥
बोले ऊदन तब चौड़ा ते ❀ लेहैं तीस लाख महराज ॥
यह सुनि चौड़ा पृथीराज पै ❀ तुरतै करी बन्दगी जाय ॥
बोल्यो चौड़ा पृथीराज ते ❀ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
फौज कटीली गाँजर वाली ❀ सो हियँ आई चाकरी काज ॥
लाख रुपैया रोजाना है ❀ माँगत तीस लाख महवार ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❀ चौड़ा बैठिरहो चुपसाधि ॥
यहाँ खजाना ना इतनो है ❀ कैसे तलब सकैं दिलवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पारस पूजा है महुबे में ❋ लोहा छुवत सोन होइजाय ॥
राखि सकत हैं गढ़ महुबे में ❋ राजा चन्द्रवंश परिमाल ॥
यह सुनि चौड़ा बोलन लाग्यो ❋ ऐसि न कहौ बीर चौहान ॥
बड़े शूरमा हैं गाँजर के ❋ जो मरिबेको नाहिं डरायँ ॥
लड़े कनौजी बारह बरसलो ❋ तहूँ न पाई एक छदाम ॥
नौकर राखि लेउ पन्द्रह दिन ❋ औ महुबेको लेउ लुटाय ॥
काम सिद्धि तुम्हरो होइ जैहैं ❋ सोरहे दीन्हो नाम कटाय ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❋ अबही नाम देउ लिखवाय ॥
भयो बुलौआ तब ऊदन को ❋ औलाखनि को लियो बुलाय ॥
दोनों पहुँचे पृथीराज पै ❋ औ सब बातचीत होइ जाय ॥
लिखिगै चेहरा जब लश्कर के ❋ तब यह कही पिथौरा राय ॥
तुरत बुलायो जल्लादन को ❋ हाथी घोड़ा देउ मँगाय ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनि ने ❋ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
आज एकादशि हम बरती हैं ❋ पारन करिहैं काल्हि बनाय ॥
चमड़ा जरिहैं चौपायन को ❋ हमरो बरत भंग होइ जाय ॥
ताते मानौ बात हमारी ❋ परसों दीज्यो दाग देवाय ॥
सो सुनि मानिलियो राजाने ❋ औ चौड़ाते कही सुनाय ॥
बेला बेटी के महलन में ❋ इनकी चौकी देउ बिठाय ॥
चौकी उठवाओ मुगलन की ❋ खटका हमें उदैसिंह क्यार ॥
बोल्यो चौड़ा तब ऊदन ते ❋ हरिसिंह सुनौ हमारी बात ॥
हुक्म दियो है महाराज ने ❋ मंदिर जहाँ बिलमदे क्यार ॥
तहँ तुम जावो दरवाजे पर ❋ रहियो बहुत बहुत हुशियार ॥
इतनी सुनतै लाखनि ऊदन ❋ ढेबा सैयद भये तयार ॥
धनुआँ तेली उठि ठाढ़ो भयो ❋ सब द्वारे पर पहुँचे जाय ॥
चौकी बैठिगये द्वारे पर ❋ तब लाखनि ने कही सुनाय ॥
कौन काम खाली बैठन को ❋ ऊदन खेलो पंसासार ॥
खेलन लागे लाखनि ऊदन ❋ लैलै नाम बेलादे क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

होउ जो साँची बेला रानी ❀ पाँसा परे हमारे नाम ॥
कान अवाज परी बेला के ❀ तब बाँदीसे कही सुनाय ॥
लावो खबरि जाय द्वारे को ❀ पहरा कौन सिपाही क्यार ॥
नाम हमारो बारबार कहि ❀ द्वारे खेलत पंसासार ॥
यह सुनि आई रूपाबांदी ❀ औ द्वारे पर पूछन लागि ॥
हमको पठयो रनि बेलाने ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ॥
काहे नाम लेत हमरो है ❀ सो यह पूँछो बेलमदे रानि ॥
यहसुनि ऊदन बोलन लागे ❀ तुम बेलाते कहियो जाय ॥
आये ऊदनि गढ़ महुबे ते ❀ सो ठाढ़े हैं पँवरि दुआर ॥
जल्दी त्यार होउ चलिबे को ❀ गौना लिहैं तुम्हारो आज ॥
इतनी सुनतै बांदी लौटी ❀ औ बेलाते कही सुनाय ॥
ऊदन ठाढ़े हैं द्वारे पर ❀ सोतुम साजि होउ तैयार ॥
तब ललकारो रनिबेला ने ❀ काहे झूठी कही बनाय ॥
ऐहैं ऊदन जब दिल्ली में ❀ होइहैं तबहिं दिवस की राति ॥
चारहु ओरी फौज पिताकी ❀ कैसे आये उदैसिंह राय ॥
कैसी सूरति है ऊदन की ❀ बाँदी हमहिं कहौ समुझाय ॥
यह सुनि बाँदी बोलन लागी ❀ नैना हिरनाकी अनुहार ॥
मुख नरियारो देह सांवली ❀ औहै बहुत सुघरुआ ज्वान ॥
बोली बेला तब बाँदी ते ❀ हमरे मन यह नाहिं समाय ॥
अबहीं लौटिजाय द्वारे पर ❀ पूछो जाय ब्याहको हाल ॥
ब्याहे आये चन्देले को ❀ सो सब हाल देव बतलाय ॥
इतनी सुनिके बांदी लौटी ❀ औ द्वारेपर पहुँची जाय ॥
बोली बांदी फिरि ऊदन ते ❀ ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
हमको भेजो है बेलाने ❀ औ यह पूछो हाल हवाल ॥
ब्याहन आये चन्देले को ❀ सो सब हाल देयँ बतलाय ॥
इतनी सुनतै बघ ऊदन ने ❀ कोरा कागद लियो उठाय ॥
पहले लिखिके सरनामा को ❀ तापाछेते लिखो प्रणाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

लिखी हकीकत बघ ऊदन ने ❋ पढ़ियो याहि बेलमदेरानि ॥
ब्याहन आये हम ब्रह्मा को ❋ द्वारे चली बिषम तलवारि ॥
हाथी मस्ता खड़े द्वारे पर ❋ हम अरु मलिखे दिये पछारि ॥
द्वारेचार भयो जबहीं तहँ ❋ फिरि समधोरा लियाकराय ॥
मड़येके नीचे फिरि पहुँचे सब ❋ लागे होन नेग ब्योहार ॥
भाँवरि परतै भई लड़ाई ❋ खटखट चली कठिन तलवारि ॥
बाँधे तुरतै भैया तुम्हरे ❋ सातो भाँवरि लई डराय ॥
खान कलेवा गये ब्रह्मासँग ❋ चौड़ा धारि जनाना भेक ॥
छिपिके जाय बीच तिरियनके ❋ हमरे हनी कटारी आय ॥
घाव आय गयो मुर्छा आई ❋ तब तुम भई दाहिने आय ॥
प्राण हमारो तहँ राखो तुम ❋ ऐसे भयो ब्याहको काम ॥
ऐसे पाती लिखि ऊदन ने ❋ सो बाँदी को दई गहाय ॥
लैके पाती बांदी चलिभई ❋ औ बेलाको दीन्ही जाय ॥
पढ़ो हाल जब रनि बेलाने ❋ पाती छाती लई लगाय ॥
बोली बेला तब बाँदी ते ❋ तू ऊदनको लाउ लिवाय ॥
बाँदी आई दरवाजे पर ❋ औ ऊदनको चली लिवाय ॥
आये ऊदन रंगमहल में ❋ तब बेला ने कही सुनाय ॥
एक अँदेशा है हमको यह ❋ सो तुम धोखा देउ मिटाय ॥
ब्याहन आये रहो भाईको ❋ गो रे हते उदैसिंह राय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने ❋ गुस्सा भये रजा परिमाल ॥
हमहिं निकारि दियो भादौं में ❋ हम कनउजमें करो मुकाम ॥
करी तयारी हम गाँजर पर ❋ तहँ हम विषम करी तलवारि ॥
तीनि महीना तेरह दिनलो ❋ ना तंग छुटे बछेरन क्यार ॥
बस्तर पहिरे रहे रातदिन ❋ गोरी देह गई करियाय ॥
साँची मानो सो बेलाने ❋ तब ऊदन ते कही सुनाय ॥
जैसे हमरे तुम लागत हौ ❋ तैसी परदा करौं तुम्हार ॥
बोले ऊदन हाथ जोरिके ❋ धर्मकि माता लगौ हमारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मौसी हमरो मल्हना रानी ❀ ब्रह्मा भैया बड़े हमार ॥
देवर तुम्हरे हम लागत हौं ❀ सो तुम जानिलेउ महरानि ॥
इतनी सुनी बात बेला ने ❀ तुरतै परदा दियो लौटारि ॥
ऊँची चौकी तब डरवाई ❀ बैठे जाय ऊदयसिंह राय ॥
बोली बेला बघऊदन ते ❀ देवर हाल देउ बतलाय ॥
कैसी घाव लगी बालम को ❀ सो तुमहमें कहो समुझाय ॥
यहसुनि ऊदन बोलन लागे ❀ दहिने लागी सेलकी घाव ॥
लागी कैबर है माथे में ❀ गाँसी निकरि गई वापार ॥
बायें कुंक्षा लगी कटारी ❀ सो हियरे में गई समाय ॥
तीनि घाव लागे भैया के ❀ लोटैं पोटैं औ रहिजायँ ॥
व्याकुल ब्रह्मा पड़े पलंगपर ❀ कोऊ रन्धे भात न खाय ॥
सुनतै बेला रोवन लागी ❀ औ ऊदन ते लगी बतान ॥
तुम रणदूलह घरमें बैठे ❀ अकिले भेजो कंथ हमार ॥
सो मरवाय दिये दिल्ली में ❀ ऐसो तुमहिं सुनासिब नाहिं ॥
अबहीं शाप देउँ तुमको मैं ❀ तो तुम भस्म होउ तत्काल ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने ❀ हाथ जोरिके कही सुनाय ॥
बात धर्मकी माता सुनिल्यो ❀ नाहक हमे देउ कछु दोष ॥
लाग हमारी कछु नाहीं है ❀ सोतुम समुझिलेउ मनमाहिं ॥
यक दिन राजा चन्देले ने ❀ गौनेका बीरा दियो धराय ॥
काहु न लीन्हों वा बीरा को ❀ हमने बीरा लियो उठाय ॥
हुक्म दैदियो हम लश्कर में ❀ क्षत्री सबै होयँ तैयार ॥
तुरतै माहिल के कहिबे ते ❀ ब्रह्मा बीरा लियो छड़ाय ॥
अकिले त्यार भए दिल्ली को ❀ उनको काल रह्यो नियराय ॥
मीच पराई कोउ मरिहै ना ❀ अपनी मीचु मरै संसार ॥
लिखी बिधाता की को मेटै ❀ माता समुझिलेउ मन माहिं ॥
यहसुनि बेला बोलन लागी ❀ औ ऊदन ते लगी बतान ॥
सात जन्म हमरे खण्डित भै ❀ सो हम तुमहिं देउँ बतलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पहले जन्म भयो मछरी को ❀ मछरा भये चंदेलेराय ॥
तहाँ तपस्या खंडित होइ गइ ❀ ना हम कीन्हों भोग विलास॥
दुसरो जन्म भयो नागिनको ❀ नागा भये चंदेलेराय ॥
तहौं तपस्या खंडित होइगइ ❀ ना करिपायो भोग विलास ॥
तिसरो जन्म भयो चकई को ❀ चकवा भये चंदेलेराय ॥
रैनि बिछोहा तहँऊँ होइगयो ❀ हमना कीन्ही सुःख अघाय ॥
चौथा जन्म भयो हिरनी को ❀ हिरना भये चंदलेराय ॥
यहौ तपस्या खंडित होइगइ ❀ नाहम कीन्हों भोगविलास ॥
पंचयो जन्म भयो हंसिनि को ❀ हंसा भये चंदेलेराय ॥
तहौं आपदा हमपर परिगै ❀ नाकरि पायो भोगविलास ॥
छठयों जन्म भयो दुपदी को ❀ अर्जुन भये चंदेलेराय ॥
बैरी हमरे तहँ कौरव भे ❀ ना करिपायो राजअघाय ॥
सतयो जन्म भयो हमरो यह ❀ बैरी होइगै बाप हमार ॥
बालम हमरे उन मरवाये ❀ ना करिपायो भोग विलास ॥
अब तुम मानौ बात हमारी ❀ ऊदन लौटि महोबे जाउ ॥
लश्कर भारी मेरे बाप की ❀ काहे देहौ प्राण गँवाय ॥
जीति न पैहो तुम दादा को ❀ हमरो डोला लिहैं छड़ाय ॥
उमिरि तुम्हारी यह थोरी है ❀ तासे ऊदन जाउ बराय ॥
जीवत गौना तुम लेजाते ❀ कछुदिनकरती भोगबिलास ॥
अब जो गौना तुम लेजैहो ❀ तोक्या खाक बटोरिहौंजाय ॥
झांझरि नैया मेरिडोलति है ❀ बेड़ा कौनु लगैहैं पार ॥
ऊदन बोले तब बेला ते ❀ बेड़ा खेइ लगैहैं पार ॥
जौलौं जीहौं मैं दुनियाँ में ❀ बैठी राज करो महरानि ॥
तापर ज्वाब दियो बेला ने ❀ यह हमरे मननाहिं समाय ॥
अब तो बैठी मैं दिल्ली में ❀ जहँ मोतीके मोल बिकाउँ ॥
राह में डोला दादा छिनिहैं ❀ तब माटीके मोल बिकाउँ ॥
कौन शूर है साथ तुम्हारे ❀ सो तुम हमें देउ बतलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बोले ऊदन तब बेला ते ❀ लाखनि राना हमरे साथ ॥
हैं जो लरिका रतीभान के ❀ नाती बेनचक्कवै क्यार ॥
मीरा सैयद बनरस वाले ❀ जिनकी जगजाहिरतलवारि ॥
धनुआं तेली कनउज वाला ❀ जाको बेंड़ि बहै तलवारि ॥
ढेबा बहादुर हैं हमरे सङ्ग ❀ लश्कर साथ कनौजी क्यार ॥
लश्कर आयो है आल्हा सङ्ग ❀ तिन बागन में करो मुकाम ॥
यहसुनि झाँकी तब खिरकीते ❀ औ ऊदनते लगी बतान ॥
पाग बैगनी को बाँधे हैं ❀ गोरे बदन कौन सरदार ॥
दाढ़ी लटकति हाथ भरेकी ❀ सो यह ठाढ़ो कौन अगार ॥
बोले ऊदन तब बेला ते ❀ गोरे बदन कनौजी राय ॥
पाग बैजनी शिर पर बाँधे ❀ लाखनिराना इनको नाम ॥
दाढ़ी जिनकी हाथ भरे की ❀ सोई सैयद खड़े अगार ॥
तब बुलवायो बेला रानी ❀ दोनों तहाँ पहूँचे आय ॥
बीरा दीन्हों तब ऊदन ने ❀ सो दोनौंने लियो चबाय ॥
नैन बाण मारे बेला ने ❀ लाखनि गिरे धरनिभहराय ॥
बोली बेला तब ऊदन ते ❀ देवर देखौ दृष्टि पसार ॥
साथ लरिकवा तुम लाये यहु ❀ जो तिरियनको देखि डराय ॥
दबैं मतंगा दुर्योधन के ❀ करते छूटि परैं तलवारि ॥
तापर ज्वाब दियो सैयद ने ❀ तुरतै लीन्ही बात बनाय ॥
तलखि तमाखू है कनउज को ❀ बङ्गला पान महोबे क्यार ॥
पीक लागि गइसो लाखनिके ❀ तासे गिरे धरनि मुरझाय ॥
उठिके बोले लाखनि राना ❀ रानी सुनो चंदेले क्यार ॥
इन्द्र डोलि जायँ इन्द्रासन ते ❀ औ शिव डोलिजायँ कैलास ॥
देवी डोलै मृत्युलोक की ❀ धरती पांचकदम हटिजाय ॥
लाखनि डोलन के नाहीं हैं ❀ चहैतन धजीधजी उड़िजाय ॥
तापर ज्वाब दियो बेला ने ❀ अब कछु भयो भरोसा मोहिं ॥
कंथ हमारे तुम मिलवै हौ ❀ फिर सैयदते कही सुनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

देवर हमरे तुम लागत हौ ❀ क्यों सुधि हमरी दई बिसारि॥
बोले सैयद तब गुस्सा होय ❀ कहँको नाता लियो निकारि॥
बोली बेला तब सैयद ते ❀ तुम द्वापरको गये भुलाय॥
छोटे भैया दुस्सासन के ❀ तुमने चीर खिचायो आय॥
कीन्ही रक्षा नारायण ने ❀ चीर द्रौपदी दियो बढ़ाय॥
थकिगयो सभाबीच दुस्सासन ❀ राखो लाज कृष्ण भगवान॥
देवै पुत्र भयो दुस्सासन ❀ धांधू नाम प्रगट भा आय॥
पापके मारे तुम सैयद भें ❀ काशी माहिं प्रगट भे जाय॥
लाखनि राना जो ठाढ़े यह ❀ नकुला पंडा के औतार॥
तुमसे देवर हमरे लागैं ❀ औ हम भई निरासन राँड़॥
बालम हमरे जब मारेगे ❀ तब क्या खाक बटोरी आय॥
कही हमारी अब मानौ तुम ❀ लाखनि लौटि कनौजे जाउ॥
चढ़िहैं लश्कर जब दिल्ली को ❀ तुम पर मारु सही ना जाय॥
गरुई गाजैं मेरे बापको ❀ काहे देहौ प्राण गँवाय॥
तापर ज्वाब दियो लाखनि ने ❀ तुम्हरे कंथ दिहौं मिलवाय॥
मोहरा मरिहैं पृथीराज को ❀ तौतो लाखनि नाम हमार॥
यह सुनि बोली बेला रानी ❀ अबबिन कहे रह्यो ना जाय॥
डोला लाये संयोगिनि को ❀ आये जीति पिथौरा राय॥
बादिन लाखनि गै कहवाँ तुम ❀ क्योंना कठिन करी तलवारि॥
तापर ज्वाब दियो लाखनि ने ❀ नाहीं जानो हाल तुम्हार॥
नाहीं जैचंद मड़वो गाड़ी ❀ नाहीं दीन्हो कन्यादान॥
चोरी हरिके पिरथी लाये ❀ तब हम रहे बहुत नादान॥
अब हम लैहैं सो बदला यह ❀ डोला लिहैं अगमदे क्यार॥
तुम्हरो डोला हम लै जैहैं ❀ तँबुआ जहाँ चँदेले क्यार॥
देउँ चुनौती पृथीराज को ❀ हमते डोला लेयँ छिनाय॥
बोली बेला तब लाखनि ते ❀ अब हम मानी बात तुम्हारि॥
बात हमारी अब मानो तुम ❀ औफिरिसमुझिलेउमनमाहिं॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

डोला जैहैं जो चोरी ते ❋ हमरो परै भगोड़िनि नाम ॥
नाम तुम्हारो ओछो होइहै ❋ ताते सुनो हमारी बात ॥
नेगी जितने हैं राजा के ❋ सबको देउ नेग बुलवाय ॥
अधकर लावो तुम गौने को ❋ तब हम चलैं तुम्हारे साथ ॥
यह मन भायगई लाखनि के ❋ तब ऊदनते लगे बतान ॥
देउ नेग तुम सब नेगिन को ❋ अधकर लेउ उदैसिंह राय ॥
यह सुनि ऊदन उठि ठाढ़े भै ❋ घोड़ा बेंदुला लियो सजाय ॥
तोड़ा चारि लिये मोहरन के ❋ सो घोड़ा पर धरे अगार ॥
चलि भये ऊदन तब द्वारेते ❋ औ लाखनिते कही सुनाय ॥
रहियो खबरदार द्वारे पर ❋ जल्दी डोला लेउ सजाय ॥
पहुँचे ऊदन तब जल्दी ते ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
समुहें पहुँचे पृथीराज के ❋ तुरतै ऊदन करी सलाम ॥
तोड़ा लैगे थे मोहरन के ❋ सो गद्दी पर दिये चलाय ॥
बोले ऊदन पृथीराज ते ❋ गौनेको अधकर देउ मँगाय॥
नेगी बुलवावौ अपने तुम ❋ तिनको मोहरैं देउ बटाय ॥
गौना लेहैं हम बेला को ❋ हमरो उदैसिंह है नाम ॥
बैठे माहिल थे दहिने पर ❋ सो राजा ते लगे बतान ॥
शीश कटाय लेउ ऊदन को ❋ ऐसो समौ न बारम्बार ॥
अकिले ऊदन हियँ आये हैं ❋ राजा समो खोय पछिताय ॥
इतनी सुनतै पृथीराज तब ❋ बघऊदन ते लगे बतान ॥
उतरौ ऊदन तुम घोड़ाते ❋ अबहीं अधकर दिहैं मँगाय ॥
यहकहि महाराज पिरथीने ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥
बोले ऊदन हाथ जोरिके ❋ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
जैसे लरिका परिमालै के ❋ तैसेइ लरिका लगौं तुम्हार ॥
तुम्हरि बरोबरि ना बैठौं मैं ❋ तब राजा यह पूछन लाग ॥
हाथ में कंगन तुम बाँधे हो ❋ ताको हाल देउ बतलाय ॥
बोले ऊदन तब राजा ते ❋ तुम सुनिलेउ धनी चौहान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बहुत लराई हमने जीती * जीते बड़े बड़े उमराव ॥
जूझ को कंगना परिमालैने * तब हमरे कर दिये बँधाय ॥
यह सुनि कुंडल सातलाखके * पृथीराजने लियो मँगाय ॥
सो रखवाय दिये समुहे पर * औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
कुंडल रक्खे जो समुहें हैं * सो तुम ऊदन लेउ उठाय ॥
जाय दिखावौ परिमालै को * तुम्हरो नाम होय संसार ॥
यहसुनि ऊदन चौकन्ना होय * देखन लागे चारिहु ओर ॥
झपटि उठाये दोनों कुंडल * औ राजाको करो सलाम ॥
ऐंड लगाई रसबेंदुल के * फाटक निकरिगये बाघार ॥
उड़न बछेरा रहे ऊदन को * देखत रहे धनी चौहान ॥
राम बनावै सो बनिजावै * बिगरी बनत बनत बनिजाय ॥
सुनोहाल तुम अब बेलाका * बेला पलकी लई मँगाय ॥
बोली बेला तब लाखनिते * लाखनि सुनो हमारी बात ॥
माता अगमा के महलनमें * हमने गहना धरी उतारि ॥
गहना अपनो सो लेहैं हम * औ मातासे मिलिहैं जाय ॥
इतनी कहिके बेलारानी * त्यहि पलकीपर भई सवार ॥
लाखनि राना हैं भुरुहीपर * ढेवा मनोरथा पर असवार ॥
धनुआँ तेली मीरा सैयद * सोऊ साथ कनौजी राय ॥
चली पालकी रनिबेलाकी * औ अगमापै पहुँची जाय ॥
रानी अगमा के द्वारेपर * भुरुही अड़ी कनौजी क्यार ॥
देखो अगमा जब बेटी को * तब हिरदै से लियो लगाय ॥
रानी अगमा बोलन लागी * बेटी मानौ बात हमारि ॥
बैठी राजकरो दिल्ली में * काहे रोय रोय रहिजाउ ॥
रानी ताहरकी बोली तब * ननदी सुनो हमारी बात ॥
नासुख भोग्यो तुम बालमको * ना महुबे को जान्यो राज ॥
नाहक रोवौ तुम ब्रह्माको * अबतुम बैठिरहो चुपसाधि ॥
राजपाट की जो भूखीहौ * केहु राजाघर देउँ बियाहि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनतै बेलारानी * भौजाईते लगी बतान ॥
बिटिया होवै बादशाहके * सो मुगलन घर देउ पठाय ॥
हमपर मोहे ताहर भैया * हमरे कंथ दिये मरवाय ॥
समुहें लड़िके जो मरिजाते * तो कछु दुःख न होतो मोहिं॥
बालम मारेगे धोखेते * है नामर्द चौड़ियाराय ॥
भेष जनानो धरि चौड़ाने * मारे जाय चँदेले राय ॥
ताहर भैया गये सङ्ग में * तिनहूँ मारो तीर निकारि ॥
साँगको घाव दियो दहिने पर * नाहीं कियो मर्दको काम ॥
लानति ऐसी रजपूतीपर * तेगा बँधिबे को धिरकार ॥
अब हम देखिहैं कंथ आपनो * होइहैं सती कंथके साथ ॥
यहतुम जनियो ना अपने मन * बेला भई निरासिनि राँड़ ॥
घरघर दिल्ली रँड़िया होइहैं * मिलिहैं नाहिं सुहागिनकोय ॥
एक महीना तेरह दिनलौं * बहिहैं हियाँ रक्त की धार ॥
जैसि निपूती मल्हना होइ गई * तैसेइ होइ अगम दे रानि ॥
गंगा करैं राँड़ होवौ तुम * दिल्ली परै बज्रकी गाज ॥
रोरो यहि बिधि कहि बेलाने * गहना पहिरिलियो तत्काल ॥
चलि भइ बेला रंग महल ते * औ पलकी पर भई सवार ॥
चली पालकी दरवाजे ते * औ मठिया पै पहुँची जाय ॥
बोली बेला तब लाखनि ते * तुम सुनिलेउ कनौजी राय ॥
दर्शन करिहैं हम देवी के * सोतुमबिलमिजाउकछुकाल ॥
उतरि पालकी ते बेला तब * मठिया भीतर पहुँची जाय ॥
दर्शन करिके जगदम्बा के * औ फुलवाते लगी बतान ॥
मालिन जावौ तुम ताहर पै * यह बीरनते कहियो जाय ॥
लाखनि राना रनि बेलाको * डोला लिये कनौजे जात ॥
बदला लेहैं संयोगिनि को * सोतुम डोला लेउ छँड़ाय ॥
जो कहुँ डोला कनउज जैहे * बुड़िहैं सातसाखि को नाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनतै चलिभइ फुलवामालिनि* औ ताहर पै पहुँची जाय ॥
हाल सुनायो जब बेला को * ताहर अग्निज्वाल होइजाय ॥
दुइ हजार क्षत्री सङ्ग लैके * ताहर माठिया लई घिराय ॥
बोले ताहर आगे बढ़िकै * किन यह डोला लियो फँदाय ॥
कौन सूरमा चढ़ि आयो है * चोरी करी हियाँ पर आय ॥
आगे बढ़िके लाखनि बोले * नाहम चोरी करी तुम्हारि ॥
लाये डोला हैं बेलाको * सो ब्रह्मा पै दिहैं पठाय ॥
बदला लेहैं संयोगिनि को * फिरि कनउजमें रखिहैं जाय ॥
इतनी सुनतै ताहर जरिगै * गुस्सा गई देह में छाय ॥
हुक्म दैदियो सब क्षत्रिन को * अबही डोला लेउ छँड़ाय ॥
खैंचि शिरोही लइ कम्मर ते * तुरतै चलन लगी तलवार ॥
घोड़ा बढ़ायो ताहर ठाकुर * औ लाखनि पै राखौ जाय ॥
खैंचि शिरोही लइ कम्मर ते * औ लाखनि पै पहुँचो जाय ॥
चोट बचाय लई लाखनि ने * अपने लीन्हों गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो तब ताहर पर * घोड़ेके लगो चपेटा जाय ॥
घोड़ा भागि चलो ताहर को * ना रोकेते रुकी लगाम ॥
हटिगयो मुर्चा तब ताहर को * लाखनि डोला दियो बढ़ाय ॥
तौलो आये ऊदन ठाकुर * तिनते बेला पूछन लागि ॥
अधकर लाये क्या गौने की * सो तुम हमै देउ दिखलाय ॥
दोनों कुण्डल सातलाख के * सो ऊदन ने धरे अगार ॥
बहुत खुशी भइ बेला रानी * साँचे देव कुँवरि के लाल ॥
अब हम जानिलई अपने मन * बेड़ा खेइ लगैहो पार ॥
खबरि सुनी जब पृथीराज ने * डोला जात विलमदे क्यार ॥
तुरतै चौड़ा को बुलवायो * औ यह हुक्म दियो फरमाय॥
डोला छीनि लेउ जल्दी ते * हमरो नजरि गुजारौ आय ॥
सुनतै चौड़ा करी तयारी * तुरतै फौज लई सजवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कूच कराय गयो लाखनि पै * ओ लाखनि ते कही सुनाय ॥
डोला लायो को चोरी करि * सो समुहें होय देय जवाब ॥
बढ़िकै बोले लाखनि राना * चौड़ा अपनो जीभ सम्हारु ॥
डोला लाये हम बेला को * सो महुबे में दिहें पठाय ॥
बोल्यो चौड़ा तब गुस्सा होय * डोला अबही देउ धराय ॥
चुप्पे लौटि जाउ कनउज को * लाखनि मानौ बात हमार ॥
तापर जवाब दियो लाखनिने * काहे रारि बढ़ाई आय ॥
डोला लौटन को नाहीं यह * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
गुस्सा होइकै तब चौड़ाने * सब क्षत्रिन ते कही सुनाय ॥
डोला छीनि लेउ इनते तुम * सबको कटा देउ करवाय ॥
सुनतै बढ़िगै सबै शूरमा * अपनी खैंचि २ तलवारि ॥
डोला घेरि लियो बेला को * खटखट चलन लगी तलवारि ॥
चारि घरी भरिचली शिरोही * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
झुके सिपाही कनउज वाले * सबके मारु मारु रटलागि ॥
भगे सिपाही चौड़ा वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब चौड़ाने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
चौड़ा ब्राह्मण ने ललकारो * लाखनि खबरदार होइजाय ॥
यह कहि गुर्ज लियो चौड़ाने * औ समुहें पर दियो चलाय ॥
गुर्ज कि चोट लगी हौदा में * धक्का लगा बदन में आय ॥
गाफिल होइगै कछु लाखनि तब * चौड़ा डोला लियो घिराय ॥
कही चौड़ियाने सैयदते * सैयद सुनो बात मनलाय ॥
थाती लाये जो कनउजते * सो दिल्ली में दई गँवाय ॥
यह सुनि मीरा गै लाखनि पै * औ लाखनिते कही सुनाय ॥
काहे गाफिल भै हौदा में * सो तुम हमें देउ बतलाय ॥
यह सुनि लाखनि बोलन लागे * गुर्ज गाज चौड़िया क्यार ॥
धक्का लागि गयो देही में * तासे बदन गयो कुम्हिलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

बढ़िके लाखनि ने ललकारा * चौड़ा खबरदार हुइजाय ॥
लैकै भाला लाखनि मारो * औ हाथी को दियो गिराय ॥
पायँ पियादे चौड़ा रहिगयो * तब समुहेते गयो बराय ॥
डोला उठवायो लाखनि तब * सो आगेको दियो बढ़ाय ॥
सुनी खबरि जब यह पिरथीने * डोला नगर महोबे जात ॥
हाथी जूझो तहँ चौड़ाको * लश्कर तिड़ीबिड़ी होइजाय ॥
यह सुनि राजा पृथीराज ने * ताहर बेटा लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो तब ताहर को * लश्कर तुरत लेउ सजवाय ॥
डोला जैहै जो महुबे को * तौ जग होइहैं हँसी हमार ॥
चलिभै ताहर तब बँगला ते * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
तुरत नगरची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो पहिराय ॥
बजै नगारा हमरे दलमें * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
डंका बाजो तब दिल्ली में * छत्री साजि भये तैयार ॥
सजिगयो हाथी आदि भयंकर * तापर चढ़े पिथौरा राय ॥
घोड़ा दल गंजन सजवायो * तापर ताहर भये सवार ॥
हाथी भौरानँद सजवायो * तापर धाँधू भये सवार ॥
तांता लागो चारि कोसलो * मारू डंका दियो बजाय ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * आगे हाथी दियो बढ़ाय ॥
कौन सूर लायो डोलाको * चोरी करी महल में जाय ॥
बढ़िकै ज्वाब दियो लाखनि ने * हमना चोरी करी तुम्हारि ॥
अज्ञा दीन्हीं रनि बेलाने * तबहम डोला लियो खँदाय ॥
जहँ पर तम्बू है ब्रह्माके * तहँ यह डोला दिहें पठाय ॥
इतनी सुनिकै पिरथी बोले * लाखनि सुनिया बात हमारि ॥
जैसेइ लरिका रतीभान के * तैसेइ लरिका लगो हमार ॥
काम तुम्हारो ना अटको कछु * काहे यहाँ बढ़ाई रारि ॥
आल्हा ऊदन डोला लेते * खायो निमक चँदेले क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुम क्यों आये प्राण देनको * ताते लौटि कनौजै जाउ ॥
यहसुनि लाखनि बोलन लागे * ना कछु जानो हाल तुम्हार ॥
पगिया बदली हम ऊदन ते * आल्हा भैया लगत हमार ॥
आल्हा ऊदन गाँजर चढ़िगे * गाँजर कठिनकरी तलवारि ॥
तीनि महीना तेरह दिनलो * ना तँगछुटे बछेरन क्यार ॥
पैसा भरिलियो बारह बर्षको * राखो धर्म कनौजी क्यार ॥
संग न छोड़हैं हम आल्हाको * चाहे कोटिन करो प्रकार ॥
यहसुनि गुस्साभै पिरथी तब * औ यह हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दैदेउ सब तोपन में * इन पाजिनको देउ उड़ाय ॥
हुक्म पायके झुके खलासी * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * धुँअना रह्यो सरगमें छाय ॥
अररर गोला छूटन लागे * कहकह करैं अगिनियाँ बान ॥
गोला छूटे सननन सननन * सरसर परी तीरकी मारु ॥
भाला बरछी छूटन लागी * हाहाकारी बीतन लागि ॥
चारि घड़ी भरि गोला बरसो * तोपें लाल बरन होइजायँ ॥
छोड़ी तोपें तब क्षत्रिन ने * लम्बे बन्दकरें हथियार ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके * क्षत्रिन खैंचिलई तलवारि ॥
खटखट तेगा बाजन लाग्यो * ब्वालै छपक छपक तलवारि ॥
पैदल अभिरि गये पैदलसँग * औ असवारनते असवार ॥
चलै शिरोही मानाशाही * औ बूँदी की चलै कटार ॥
चटकैं तेगा बर्दवान के * कटि २ गिरें सुघरुआ ज्वान ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगे * उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसेपर हाथी गिरिगे * छोटे पर्वत के अनुहार ॥
चली शिरोही चारि घरीलौ * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
आधी जमुना में पानी बहै * आधि में बहै रक्तकी धार ॥
डारी लोथें जो जमुना में * मानौ कच्छ मच्छ उतराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

परी बन्दूकें हैं रण में जो * मानो रहे नाग मन्नाय ॥
डारी पगिया जो लोहू में * जनु नद्दी में बहै सिवार ॥
सबै बयरियन को मसका है * कोधा चाल चले तलवारि ॥
बढ़े सिपाही कनउज वाले * सबके मारु मारु रटलागि ॥
धनुआँ तेली के मुर्चा पर * लाखनिराना पहुँचे जाय ॥
बोले लाखनि तब धनुआँ ते * भैया धर्म तुम्हारे हाथ ॥
दबी बायसी तब लाखनि को * संगै बढ़े शूर सरदार ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * अपनो डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी पृथीराज तब * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले पृथीराज धाँधू ते * डोला तुरत लेउ घिरवाय ॥
हाथी बढ़ायो तब धाँधू ने * औ धनुआँको दई ललकार ॥
धरिदे तेली तू डोला को * काहे देहै प्राण गँवाय ॥
बोल्यो धनुआँ तब गुस्सा होय * तुमको कोल्हू दिहैं पेराय ॥
तेल काढ़िके हम तुम सबको * सो कनउज को दिहौं पठाय॥
ऐसे तेली हम जालिम हैं * क्यों तुम रारि बढ़ाई आय ॥
गुर्ज उठायो तब धाँधू ने * सो धनुआँपर दियो चलाय ॥
चोट बचाई तब धनुआँ ने * नीचे गुर्ज गिरी अरराय ॥
धोका दैके तब धाँधू ने * अपनो भाला दियो चलाय ॥
घाव आयगयो तब जंघा में * धनुआँ उतरि परो अरगाय ॥
घेरो डोला तब धाँधू ने * तुरतै बेला कही सुनाय ॥
पता नहीं है कहुँ ऊदन को * काहे हँसी कराई आय ॥
कान अवाज परी लाखनि के * तुरतै भुरुही दई बढ़ाय ॥
लाखनि उतरिपरे भुरुही ते * औ धनुआँ पै पहुँचे जाय ॥
बोले लाखनि तब धनुआँ ते * को गाढ़े में ऐहैं काम ॥
बड़ो भरोसा म्वहि तुम्हरे है * तुम्हरे लाग्यो जाँघमें घाव ॥
यहसुनि धनुआँ उठि ठाढ़ो भयो * अपनो लियो दुशाला हाथ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घाव बाँधिलियो कसिपट्टी ते * औ घोड़ापर भये सवार ॥
आगे बढ़िके गयो धाँधू पै * औ हौदापर पहुँचो जाय ॥
चोट चलाई धनुआँ तेली * सोने कलशा दियो गिराय ॥
मुर्चा हटिगयो तब धाँधू को * धनुआँ डोला लौ उठवाय ॥
सो लै राखेउ उन लाखनि पै * भारी शूर कनौजी क्यार ॥
देखि हाल यह पृथीराज ने * अंगद राजा लियो बुलाय ॥
जल्दी लावौ तुम डोलाको * भूरा मुगुल लेउ तुम साथ ॥
तुरते चलिभयो राजा अंगद * औ डोलाको घेरयो जाय ॥
गुर्ज उठायो अङ्गद राजा * सो धनुआँपर दियो चलाय ॥
लग्यो चपेटा यक घोड़ा के * धनुआँ घोड़ा गयो भगाय ॥
डोला उठवायो भूराने * तब लाखनिने कही सुनाय ॥
चाचा सैयद आगे बढ़िके * औ डोलाको लेउ छुड़ाय ॥
अली २ करि सैयद दौरे * औ डोलापै पहुँचे जाय ॥
सेल उठाय लियो सैयद ने * औ डोलापै पहुँचे जाय ॥
लग्यो चपेटा तब घोड़ीके * भूरा घोड़ी गयो मँगाय ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ताहर ने * औ डोला पै पहुँचे आय ॥
गाफिल देखो जब सैयदको * ताहर डोला लियो उठाय ॥
हथिनी बढ़ाई तब लाखनिने * औ ताहरते लगे बतान ॥
धरिदेउ डोला तुम खेतन में * जो जीते सो लेय उठाय ॥
यह सुनि बढ़िगै तारह ठाकुर * अपनो खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब समुहेंपर * लाखनि लैगै चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो तब लाखनि ने * सो ताहरपर दियो चलाय ॥
लग्यो चपेटा तब घोड़ा के * ताहर घोड़ा गये भगाय ॥
डोला उठवायो लाखनि तब * सो आगेको दियो बढ़ाय ॥
देखि हाल यह पृथीराज ने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले पिरथी तब लाखनि ते * लाखनि मानौ बात हमारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varánasi. Digitzed by eGangotri

अबहूँ लौटिजाउ कनउजको ❋ काहे देहौ प्राण गँवाय ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ डोला यह लौटनको नाहिं ॥
डोला लिये बिना जैहैं ना ❋ चाहे प्राण रहेकी जाय ॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने ❋ अपनी लीन्हीं लालकमान ॥
ऊदन लड़ते रहे मुर्चा पर ❋ तिनकी परगई तुरत निगाह ॥
झपटे ऊदन तब मुर्चा ते ❋ औ समुहें पर पहुँचे आय ॥
लाखनि राजाको देखो तब ❋ ऊदन गये सनाका खाय ॥
बोले ऊदन पृथीराजते ❋ तुम सुनिलेउ धनी चौहान ॥
हाथ न डरियो तुम लाखनि पर ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
तुम्हरी बरोबरिके नाहीं है ❋ जो तुम लीन्हीं लालकमान ॥
सोचिलेउ अपने मनमें तुम ❋ सबजग होइहैं हँसी तुम्हारि ॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने ❋ हौदा धरिदइ लाल कमान ॥
भुरुही बढ़ाई तब लाखनिने ❋ आदि भयंकर दियो हटाय ॥
हटिगयो हाथी पृथीराज को ❋ लाखनि डोला लियो उठाय ॥
जहँपर तम्बू रहै ब्रह्म को ❋ तहँ डोला को दौ धरवाय ॥
ऐसी लड़ाई भइ डोला पर ❋ सो हम लिखिके दई सुनाय ॥
आगे लड़ाई है बेला की ❋ सो हम लिखिके दिहैं सुनाय ॥
आल्हा गावौ समय पाय तुम ❋ नित उठिनाम लेउ भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

❋ इति बेलाके गौने की दूसरी लड़ाई समाप्त ❋

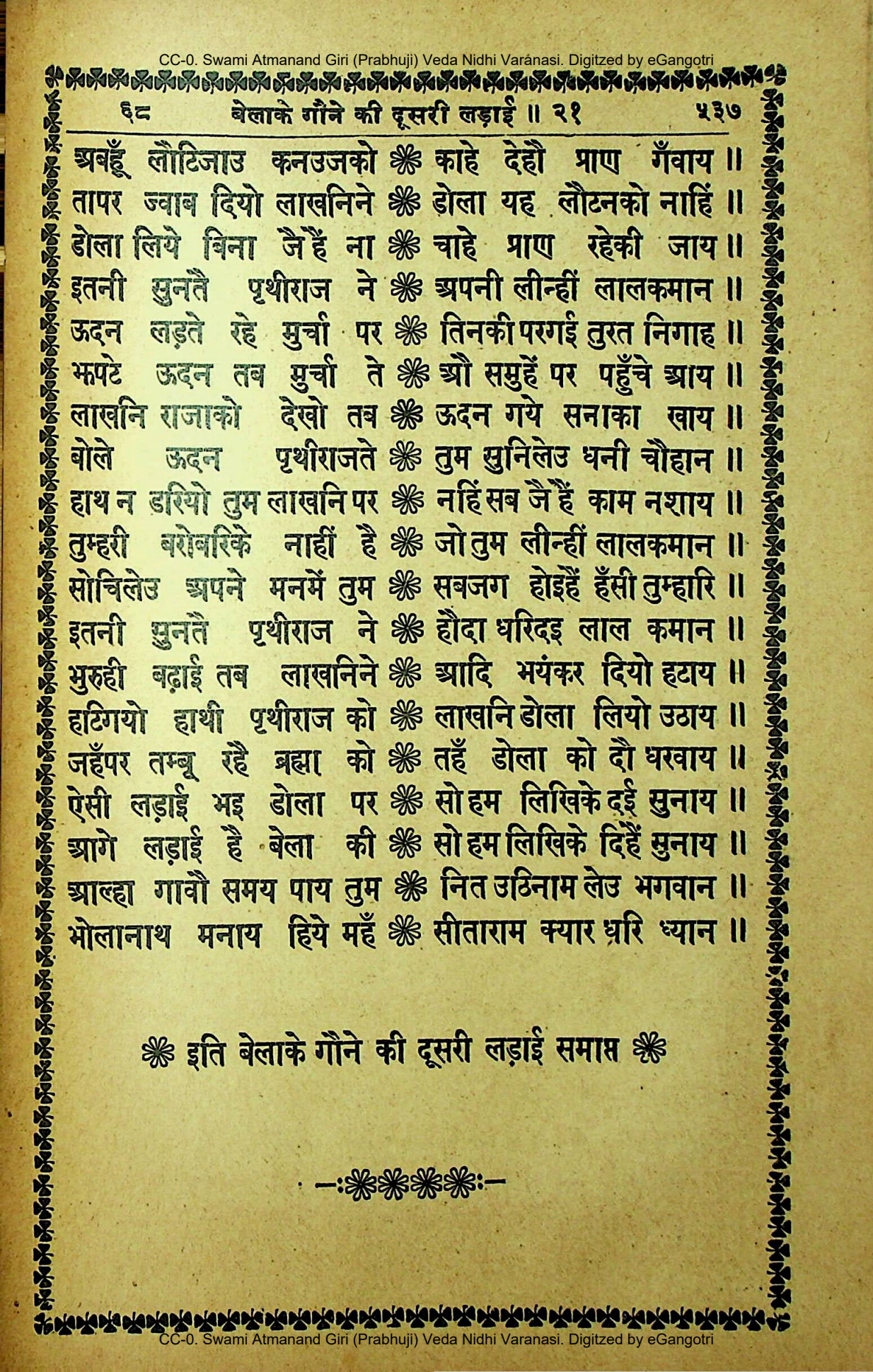

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ बेलासे ताहरकी लड़ाई।

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश॥ १॥

❀ कुण्डलिया ❀

यह मानुष मन चाहना, ऑड़त नाहिं नदान।
क्षण में राजा होतहैं, क्षण में रंक समान॥
क्षण में रंक समान, क्षणक में पण्डित भाई।
क्षण में रोवत आपु, क्षणक में हँसत ठठाई॥
क्षण में मानत मोर, धामधन बाम पियारी।
क्षण में होत उदास, मरण की करत तयारी॥

❀ सवैया ❀

माटी का घट फूटि गयो तब होत कहा है लाखके लाखे।
दाव चलाय दियो रिपु ने तब होत कहा बल पौरुष भाखे॥
धीरज छूटि गयो जबहीं तब होत कहा हथियार के राखे।
बातगई जगमें तुलसी फिरि होत कहा तन प्राण के राखे॥

❀ आल्हा ❀

सुमिरन करिके नारायण को ❀ जगदम्बा के चरण मनाय॥
लिखौं लड़ाई अब बेला को ❀ शारद मोको होउ सहाय॥
क्यहिकिअटरियापर दियनांजरे ❀ क्यहिकीफूल सेजकुम्हिलाय॥
क्यहि की रानी अंटा बिलखै ❀ कंथा रहे बिदेशों छाय॥
परहुल अटरिया पर दियनांजरे ❀ फुलवा फूलसेज कुम्हिलाय॥
कुसुमा रानी अन्टा बिलखै ❀ लाखनि छाय रहे परदेश॥
बेला पहुँची जब तम्बू में ❀ देखो हाल चँदेले क्यार॥
बिलखन लागी रनि बेला तब ❀ औ फिरि आरति धरी उतारि॥
लिये बिजनियाँ कर फूलनकी ❀ सो ब्रह्मा पर करै बयारि॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बेला रानी बोलन लागी ❋ जागो जागो कंथ हमार ॥
मुर्छा जागी ब्रह्मानँद को ❋ देखन लागो नैन उघारि ॥
समुहें ठाढ़े ऊदन ठाकुर ❋ तिनके ब्रह्मा लगे बतान ॥
क्यहि की तिरिया यह ठाढ़ी है ❋ सो तुम हमें देउ बतलाय ॥
हाथ जोरि बेला बोली तब ❋ मैं ठाढ़ीहौं नारि तुम्हार ॥
बेटी हौं मैं पृथीराज की ❋ औ बेला है नाम हमार ॥
गुस्सा होइकै ब्रह्मानँद ने ❋ बघऊदनते कही सुनाय ॥
घटिहा राजाकी बेटी है ❋ हमको मुख दिखरायो आय ॥
मारि निकारौ यहि तँबुआ ते ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
हाथ जोरि तब बेला बोली ❋ स्वामी सुनो हमारी बात ॥
लाग हमारी कछु नाहीं है ❋ बैरी होइगे बाप हमार ॥
राज उठाय लियो हमरो उन ❋ हमपर रूठि गयो भगवान ॥
अब जो हुक्म होय दासी को ❋ सोई करै काम मनलाय ॥
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❋ औ बेलाते कही सुनाय ॥
हमको चाहौ जो रानी तुम ❋ तो यह मानौ बात हमारि ॥
शीश काटि लावो ताहर को ❋ हमरो नजरि गुजारौ आय ॥
शीश देखिहैं जब ताहर को ❋ तादिन जियैं चँदेले राय ॥
होथ जोरिके बेला बोली ❋ तुम्हरे बचन करो परमान ॥
अपनो घोड़ा तुम दीजौ म्वहि ❋ दीजौ हमहिं ढाल तलवारि ॥
पाग बैजनी अपनो दीजौ ❋ तौ हम लैहैं शीश उतारि ॥
पहले जैहैं हम महुबे को ❋ लगिहैं चरण सासके जाय ॥
शीश काटिके फिरि ताहर को ❋ तुरते तुमहिं दिखैहौं आय ॥
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❋ अबहीं नगर महोबे जाउ ॥
पै नहिं जैयो सँग लाखनि के ❋ बदलालिहैं सँयोगिनि क्यार ॥
तापर ज्वाब दियो बेला ने ❋ हमना जायँ कनौजी साथ ॥
थोरी उम्मिरि के ऊदन हैं ❋ जैहौं ना ऊदन के साथ ॥
संग पठावौ तुम आल्हा को ❋ इतनी मानौ बात हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतनी सुनतै ब्रह्मानँद ने ❋ तुरतै आल्हे लियो बुलाय ॥
बोले ब्रह्मानँद आल्हा ते ❋ इनको महुबे देउ दिखाय ॥
बात मानिकै तब आल्हा ने ❋ हाथीपचशावद लियो सजाय ॥
डोला मँगवायो बेला ने ❋ तामें बेला भई सवार ॥
हाथी चढ़िगे पुनि आल्हा तब ❋ डोला चला ब्यलमदे क्यार ॥
खबरिपाय यह माहिल चलिभे ❋ औ पिरथी पै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को ❋ डोला जैहै नगर महोब ॥
चलिके डोला छीन लेउ तुम ❋ इतनी मानौ बात हमारि ॥
सुनतै बुलवायो चौड़ा को ❋ पृथीराज यह कही सुनाय ॥
डोला लिये जात आल्हा है ❋ सो तुम डोला लेउ छँड़ाय ॥
डोला लैके तुम बेटी को ❋ हमरो नजर गुजारौ आय ॥
हुक्म पाय तब चौड़ा चलिभये ❋ लश्कर तुरत लियो सजवाय ॥
जायके घेरि लियो डोला को ❋ औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
डोला धरिदेउ तुम बेला को ❋ चुप्पै लौटि महोबे जाउ ॥
बोले आल्हा तब चौड़ा ते ❋ तुम्हरी मति मारी भगवान ॥
बार बार घेरत डोला तुम ❋ पै नहिं चलत तुम्हारो दाव ॥
डोला लौटनको नाहीं यह ❋ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
ताते लौटि जाउ चौड़ा तुम ❋ नाहक रारि बढ़ाई आय ॥
यह सुनि चौड़ा गुस्सा होइके ❋ सब क्षत्रिनते कही सुनाय ॥
डोला छीनि लेउ जल्दी ते ❋ औ आल्हा को देउ भगाय ॥
हल्लाकरि दियो तब क्षत्रिन ने ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
डोला घेरिलियो सबही ने ❋ खट खट चलन लगी तलवारि ॥
हाथि चिघारा जब आल्हा को ❋ सुनो अवाज कनौजीराय ॥
बोले लाखनि तब ऊदन ते ❋ ऊदन मानौ बात हमारि ॥
खबरि ले आवो तुम आल्हा को ❋ मानौ घिरे बनाफर राय ॥
हमरे मन में यह आवत है ❋ जल्दी जाउ उदौसिंह राय ॥
तुरतै ऊदन उठि ठढ़े भै ❋ औ घोड़ा पर भये सवार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

नारे ककहरा के डाडेपर ❀ पहुँचे जाय उदैसिंह राय ॥
हाथी घिरो तहाँ आल्हा को ❀ ऊदन घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यह ललकार दई चौड़ा को ❀ चौड़ा खबरदार हुइ जाव ॥
ऐंड़ लगाई रस बेंदुल के ❀ औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी ❀ सोने कलशा दियो गिराय ॥
मुर्चा लौटो तब चौड़ा को ❀ ऊदन डोला दियो बढ़ाय ॥
सुनी खबरि यह पृथीराज ने ❀ मुर्चा हटो चौड़िया क्यार ॥
लश्कर सजवायो पिरथी तब ❀ आदि भयंकर लियो सजाय॥
तापर चढ़िगयो पृथीराज तब ❀ लश्कर कूँच दियो करवाय ॥
देखो लश्कर पृथीराज तब ❀ लाखनि फौज लई सजवाय॥
कूच कराय दियो जल्दी ते ❀ औ नारे पर पहुँचे जाय ॥
हल्ला होइगयो दोनों दल में ❀ खटखट चलनलगी तलवारि॥
भई लड़ाई तहँ डोला पर ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
कबहुँक डोला राजा छीने ❀ कबहुँक लाखनि लिये छुड़ाय ॥
देखि हाल यह बघऊदन ने ❀ पृथीराज ते कही सुनाय ॥
कही हमारी अब तुम मानौ ❀ औ महराज बीर चौहान ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❀ तुम चढ़ि रारि बढ़ावत आय ॥
नाहक डोला तुम रोकत हौ ❀ है यह तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
डोला जै है यहु महुबे को ❀ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
जबलौं रहिहै स्वास देहमें ❀ तबलों लड़ौं तुम्हारे साथ ॥
ताते लौटि जाउ दिल्ली को ❀ इतनी मानों बात हमारि ॥
यह सुनि सोचे पृथीराज मन ❀ इन लरिकनते जितिहैं नाहिं ॥
मुर्चा फेरो पृथीराज तब ❀ दिल्ली कूच गये करवाय ॥
ऊदन बोले तब आल्हा ते ❀ दादा कूच जाउ करवाय ॥
चलिभयो डोला तब बेला को ❀ बरइनि पुरवा पहुँचो जाय ॥
पूछन लागी रनि बेला तब ❀ क्या यहु महुबो परो दिखाय ॥
बोले आल्हा तब बेला ते ❀ बरइनि पुरवा परै दिखाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

है यह पुरवा परिमालै को ❀ रैयत बसे चन्देले क्यार ॥
आगे महुबो अब देखोगी ❀ जहँ पर बसत चँदेले राय ॥
डोला पहुँचो जब महुबे में ❀ तब आल्हाने कही सुनाय ॥
नगर महोबा अब देखो तुम ❀ यहसुनि बेला रही निहारि ॥
खबरि फैलगई रंग महल में ❀ डोला आये ब्यलमदे क्यार ॥
मल्हना आई दरवाजे पर ❀ तुरत आरती लई सजाय ॥
बारह रानी चन्देले की ❀ सोनवाँ फुलवा सङ्ग लिवाय ॥
देवै आई दरवाजे पर ❀ सबने आरती धरी उतारि ॥
तुरत उतारि लियो बेलाको ❀ औ महलन में गई लिवाय ॥
बैठी जाय सबै आँगन में ❀ बैठी बीच ब्यलम दे रानि ॥
मुख दिखराई रनिबेला को ❀ मल्हना दियो नौलखा हार ॥
चरण लागिके तब बेला ने ❀ अपनो कंगन दियो उतारि ॥
पूछन लागी मल्हना रानी ❀ कैसे भये पुत्रके घाव ॥
बोलन लागी रनि बेला तब ❀ दहिने लगी सेलको घाव ॥
गाँसी लागी है मस्तक पर ❀ कैवर निकरि गयो वापार ॥
बायें कटारी उनके लागी ❀ स्वामी जियन केर हैं नाहिं ॥
स्वाँसा बाकी है हिरदे महँ ❀ व्याकुल परे चँदेले राय ॥
यहसुनि मल्हना रोवन लागी ❀ सिगरो रोय उठी रनिवास ॥
क्यागति बरणौं त्याहि समयाकी ❀ हादैया गति कही न जाय ॥
बोली बेला चन्द्रावलि ते ❀ ननदी सुनो हमारी बात ॥
अपने बीरन को सतखंडा ❀ सोतुम हमहिं देउ दिखलाय ॥
सुनि चन्द्रावलि उठि ठाढ़ी भइ ❀ औ बेला को चली लिवाय ॥
जाय के पहुँची सतखण्डा पर ❀ देखन लगी ब्यलमदे रानि ॥
शोभा देखि देखि अन्टा की ❀ बेला सोचि सोचि रहिजाय ॥
नीचे सागर लेय हिलोरैं ❀ मानो बनो इन्द्रको धाम ॥
छाई छौनी मोरपंख की ❀ झालरि लगी मोतियन क्यार ॥
लागे खम्भा मलयागिरि के ❀ हीरा मानिक जड़े बनाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हंस हिलोरैं वा सागर में ❀ औ छज्जन पर नाचैं मोर ॥
कलश सुवरनके अन्टापर ❀ शोभा एक न बरनी जाय ॥
देखि देखि शोभा अन्टापर ❀ बेला बहुत दुखी हुइ जाय ॥
जियत कंथके गौना औती ❀ करती कुछ दिनभोग बिलास ॥
मरत समय आई महुबे हम ❀ हमरे कौन कामको राज ॥
बहुत सोच कीन्हीं बेला ने ❀ फिर महलन में पहुँची आय ॥
बेला बोली फिरि मल्हनोत ❀ अब फुलबगिया देउ दिखाय ॥
इतनी सुनते रनि मल्हना ने ❀ तुरतै डोला लियो सजाय ॥
चलिभै डोला सब रानिन के ❀ फुलबगिया में पहुँचे जाय ॥
बेला पहुँची जब बगिया में ❀ देखन लागि सबै फुलवारि ॥
बीच में बंगला है ब्रह्माको ❀ तापर चढ़ी व्यलमदे रानि ॥
चारो ओरी बेला देखे ❀ नैनन बहै नीरको धार ॥
उठैं सुगन्धी वा बगिया में ❀ औ केवड़ाको अजब बहार ॥
फूल गुलाबी दौना मरुआ ❀ बिच बिच फूल केतकी क्यार ॥
बेला और चमेली फूली ❀ शोभा देखि चित्त लहराय ॥
चुरिया तोरन बेला लागी ❀ बहुतै बेला करै बिलाप ॥
मल्हना समुझावै बेला को ❀ बहुअर धीर धरो मनमाहिं ॥
पारस पूजा है तुम्हरे घर ❀ लोहा छुवत सोन होइजाय ॥
बैठी राज करो महुबे में ❀ काहे रोय रोय रहिजाउ ॥
यह सुनि बेला बोलन लागी ❀ औ देवै ते लगी बतान ॥
तुम्हरे बेटा आल्हा ऊदन ❀ जिनकी जगजाहिर तलवार ॥
मुखते बैठे सो अपने घर ❀ आकिले बालम दियो पठाय ॥
उनहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❀ हमरे कंथ दिये मरवाय ॥
बोली देवै तब बेला ते ❀ नाहीं लागि लरिकवन क्यार ॥
यह सब कीन्हीं माहिल राजा ❀ सो सब हाल सुनो मनलाय ॥
करिके चुगुली उन माहिल ने ❀ हमरे लरिका दिये निकराय ॥
बिपति के मारे सो भादों में ❀ पहुँचे गढ़ कनउज में जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

द्वापर हाथी जैचंद छोड़े ❀ सो ऊदन ने दियो पछारि ॥
बहुत खुशी भये राजा जैचन्द ❀ अपनी रिजागिरि दई इनाम ॥
तहाँ बसैं संकट के मारे ❀ फिरि माहिलको सुनो हवाल ॥
लाय चढ़ाये पृथीराज को ❀ सिरसा तुरत लियो घिरवाय ॥
हाल पूछिकै तब ब्रह्मा ते ❀ तहँ मरवाये बीर मलिखान ॥
फिरि घिरवायो नगर महोबा ❀ लाये साथ बहुतसी फौज ॥
आये ऊदन तब कनउज ते ❀ संगे आये कनौजी राय ॥
मुर्चा मार्‌यो पृथीराज को ❀ दिल्ली लौटि गये चौहान ॥
ऊदन लौटिगये कनउज को ❀ फिरि माहिलने करो उपाय ॥
चुगुली करिकै पृथीराज ते ❀ फिरिकै लाये फौज चढ़ाय ॥
सब घिरवायो नगर महोबा ❀ बिपदा कछु कहीना जाय ॥
तब यह जतन करी मल्हना ने ❀ जगनायक को दियो पठाय ॥
आल्हा ऊदन को बुलवायो ❀ आये सङ्ग कनौजी राय ॥
धनि धनि बेटा रती भानको ❀ लाखनिराना जिनको नाम ॥
समुहैं लड़िकै नदि बेतवे पर ❀ पृथीराज को दियो हटाय ॥
फिरिकै आये माहिल राजा ❀ औ राजाते कही सुनाय ॥
बीरा धरवावो गौने को ❀ औ गौने को लेउ कराय ॥
बीरा धरवायो राजा ने ❀ सो ऊदन ने लियो उठाय ॥
सीख मानिके तब माहिल को ❀ ब्रह्मा बीरा लियो छड़ाय ॥
करी तयारी बघऊदन ने ❀ ब्रह्मा बन्द दई करवाय ॥
माहिल भूपति तू मरिजैयो ❀ उरई परै इन्द्रको गाज ॥
बन्श नसैबे को लागे थे ❀ सो करिदई वंशकी हानि ॥
लाग हमारो कछु नाहीं है ❀ यह सब कर्म माहिला क्यार ॥
बोली बेला तब देवै ते ❀ हमपर रूठिगयो भगवान ॥
लेख बिधाता को जैसे रहे ❀ ताको कौन मिटावन हार ॥
सागर बँगला जो स्वामी का ❀ सो हम अबहिं देखिहैं जाय ॥
तुम बुलवाय लेउ आल्हा को ❀ तब देवै ने लियो बुलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आये आल्हा रंग महल में * तब बेलाने कही सुनाय ॥
सागर बँगला जो बालम को * सोतुम हमहिं देउ दिखलाय ॥
तुरतै त्यार भये आल्हा तब * संगै चली व्यलमदे रानि ॥
पहुँची बेला तब सागर पर * चँदन नाव लई मँगवाय ॥
चढ़िगइ बेला त्याहि नौका पर * औ बँगलाको गइ नियराय ॥
उतरी बेला तब नौका ते * औ बँगलामें पहुँची जाय ॥
शोभा देखै बेला रानी * औ मन मोहि २ रहिजाय ॥
चौपरि देखी यक ताखे में * सो बेलाने लई उठाय ॥
बोली बेला तब आल्हा ते * आवो देवकुँवरि के लाल ॥
पंसासारी हम तुम खेलैं * आल्हा बैठि गये चुपसाधि ॥
अञ्चल खोलि दियो बेलाने * देखिके आल्हा गये लजाय ॥
रूप धरयो बेला डाइनिको * औ आल्हातन रही निहारि॥
लैके खंडा तब आल्हा ने * औ बेलाते लगे बतान ॥
धर्मकी माता हमरो लागो * तुमते हम डरपन को नाहिं ॥
असल रूप धरि तब बेलाने * पुनि आल्हाते कही सुनाय॥
हमने जान लियो अपने मन * साँचे दस्सराज के लाल ॥
पाप कछू नहिं है तुम्हरे मन * हो तुम धर्मराज औतार ॥
यह कहि पार आई सागर के * औ नौका में बैठी जाय ॥
नाव पार आई महलन में * तब डोला में बैठी जाय ॥
जितने ताल हते महलन में * देखे सबै बनाफर साथ ॥
आई बेला रंग महलन में * औ मल्हना ते कही सुनाय॥
आज्ञा दैदेउ अब माता तुम * सेवाकरैं कंथ को जाय ॥
मल्हना बोली तब बेला ते * बहुवर मानो कही हमारि ॥
राज करो तुम गढ़ महुबे में * रैयत मनिहैं हुक्म तुम्हार ॥
बोली बेला तब मल्हना ते * हमरे मनमें नाहिं समाय ॥
जीवत गौना हमरो औतो * तौ हम करती भोग बिलास ॥
नहीं भरोसा है स्वामी के * है सब वृथा राजधन धाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सेवा करिहौं जाय कंथ को * अपने जन्म सुफलके काज ॥
होतो कुँअना तो पटिजातो * केहिबिधि समुद पटायोजाय ॥
ना कोउ बेटा और तुम्हारे * जो हम करैं ताहिकी आस ॥
झाँझरि नैया मोरि डोलत है * को यह खेय लगैहैं पार ॥
उमिरि हमारी यह बारी है * ना नैननकी छूटी लाज ॥
जब सुधिऐहैं मोहि स्वामीको * तबहम करिहौं कौन उपाय ॥
मेघ गरजिहैं सावन भादो * रहिहैं रैनि अँधेरिया छाय ॥
बिरह सतैहैं सतखण्डा पर * जियरा हुकिहुकि रहिजाय ॥
पिउपिउपपिहा बोली बोलिहैं * हमपर बोल सहेना जाय ॥
ताते माता आज्ञा दैदेउ * अबना राखौ देर लगाय ।
हमें हुक्म दीन्हों स्वामी ने * लावो शीश शत्रुको जाय ॥
शीशकाटि अब हम ताहरको * सो स्वामीको दिखै हैं जाय ॥
देखत शीशजियें स्वामी जो * तो बनिजैहैं काम हमार ॥
इतनी सुनतै रनि मल्हना ने * तुरतै हुक्म दियो मनलाय ॥
चरण लागिके तब मल्हना के * बेला कूच दियो करवाय ॥
आल्हा चले संग बेला के * बेला सिरसा पहुँची जाय ॥
देखिके चौरा गजमोतिन को * बेला उतरि परी अरगाय ॥
पूजा करिके हाथ जोरि तब * बिनती करी ब्यलमदे रानि ॥
आभा बोली गजमोतिन की * काहे भरम गँवायो आय ॥
माहिल मामा बैरी होइगै * हमरे दीन्हे कंथ मराय ॥
सत्त हमे ब्रह्मा ने दीन्हों * हम जरिमरी कंथके साथ ॥
गढ़ दिल्ली ते औ महुबेलों * होइहैं सबै सुहागिन राँड़ ॥
धरती रक्त बरन होइहैं सब * हमरे बचन करो परमान ॥
यह सुनि बेला रोवन लागी * औ आभा ते कही सुनाय ॥
हमहूँ रँड़िया वादिन होइगइ * जूझे जादिन कंथ तुम्हारि ॥
बहुत आसरा रहै मोहू को * सिरसा बसत बीर मलिखान ॥
सो यह सिरसा सूनी होइगयो * देखत छाती फटै हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यहकहि पैकरमा कीन्हीं तब * औ चलिगई व्यलमदे रानि ॥
बेला पहुँचिगई तम्बू में * लागी तुरतै करन बयारि ॥
मूर्छा जागी ब्रह्मानँदकी * औ बेला पर परी निगाह ॥
बोले ब्रह्मा तब बेला ते * कहँ तुमलाई शीश उतारि ॥
बोली बेला हाथ जोरि तब * हम होय आई नगर महोब ॥
लाय शीश अब हम ताहरकी * तुमको बेगि दिखैहैं आय ॥
यह कहि चलि भइ बेला रानी * लश्कर डंका दियो बजाय ॥
लश्कर सजवायो ब्रह्मा को * अपनो साजि भई तैयार ॥
लांग चढ़ाय लई लहँगा को * तुरतै कमर कसी तत्काल ॥
पहिरि पैजामा पिसरू वाला * जामा पहिरि दुदामी क्यार ॥
मटुका बाँधि लियो ऊपर ते * शिरपर बाँधि बैजनी पाग ॥
दुइ पिस्तौलैं अगल बगल पर * दहिने सिंहिनि मूठि कटार ॥
बारह छुरियां कम्मर बाँधी * बेला दुइ बाँधी तलवारि ॥
कलँगी लागी मोती चूर की * हीरा चमकि २ रहिजाय ॥
टोप झलरिहा धरि माथे पर * बाँयें भुजा गैंड़ की ढाल ॥
भेष मर्द को बेला धरिके * दोनों नैना लिये उघारि ॥
घोड़ा सजवायो हरनागर * बेला फाँदि भई असवार ॥
बोले ऊदनि हाथ जोरि तब * हमहूँ चलें तुम्हारे साथ ॥
बोली बेला तब ऊदन ते * तुम तंबूमें रहो हुशियार ॥
काम बनैहैं हम स्वामी को * अबही लैहैं शीश उतारि ॥
यह कहिचलि भइ बेला रानी * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
लश्कर पहुँचो जब बागन में * तहँ पर डेरा दियो लगाय ॥
लैके कागद कलपी वालो * अपनो कलम दान लैहाथ ॥
लिखी हकीकत बेला रानी * पढ़ियो याहि बीर चौहान ॥
बेटी तुम्हरी गइ महुबे में * हमको ताने दियो जिआय ॥
अधकर बाकी जो गौने को * सो तुम तुरत देउ पहुँचाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अधकर देहौ जो नाहीं तुम * ठाढ़े दिल्ली लिहौं लुटाय ॥
यहि बिधि चिट्ठी लिखि बेलाने * सो धावन को दई गहाय ॥
लैके पाती धावन चलि भयो * औ दिल्ली में पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी दिल्लीपति की * धावन उतरि परो अरगाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * पाती गही दई चलाय ॥
नजरि बदलगई पृथीराज की * तुरतै पाती लई उठाय ॥
खोलिकै पाती जबहीं बाँची * पिरथी गये सनाका खाय ॥
तुरतै बुलवायो ताहर को * औ ताहर ते कही सुनाय ॥
बेला पहुँचि गई महुबे में * औ ब्रह्माको दियो जिआय ॥
आये ब्रह्मा हैं लश्कर ले * गवनको अधकर रहे मँगाय ॥
लावौ खबरि जाय ब्रह्मा को * अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
सुनतै ताहर उठि ठाढ़ भै * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
तुरत सजाय लियो लश्करतब * मारू डंका दियो बजाय ॥
घोड़ा दल गंजन सजवायो * अपना सजे पिथौरा लाल ॥
पाँव धरत ही काहू छींका * तब चौड़ाने कही सुनाय ॥
तुमना चलौ साथ लश्कर के * ताहर बैठि रहो चुप साधि ॥
खबरि ले ऐहैं हम ब्रह्मा को * तुमना चलौ हमारे साथ ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे * ब्राह्मण सुनो हमारी बात ॥
सगुन चाहिये उन बनियनको * जोधरि मौर बिवाहन जायँ ॥
सगुन चाहिये ना क्षत्रिन को * जो रण चढ़िके लोह चबायँ ॥
यह कहि ताहर चढ़ि घोड़ा पर * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
लश्कर आयो रण खेतन में * ताहर घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले ताहर आगे बढ़िके * को लायौ यह फौज बढ़ाय ॥
बोली बेला तब ताहर ते * गवनेको अधकर देउ मँगाय ॥
तोहम लौटि जायँ महुबे को * अबहीं सबै रारि मिटजाय ॥
तापर ज्वाब दियो ताहर ने * काहे प्राण गँवाये आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कही हमारी ब्रह्मा मानौ * चुप्पै लौटि महोबे जाउ ॥
बोली बेला तब ताहर ते * ताहर सुनौ हमारी बात ॥
बहिनि तुम्हारी ने भेजौ है * गवनको अधकरलावौ जाय ॥
सोतुम दैदेउ हँसी खुशी ते * नाहीं दिल्ली लिहौं लुटाय ॥
बोले ताहर तब ब्रह्मा ते * ब्रह्मा चलौ हमारे साथ ॥
भोजन करिहौ जब हमरे संग * तब हम अधकर दिहैं मँगाय ॥
बोली बेला तब ताहर ते * हौ तुम दगाबाज जल्लाद ॥
बात तुम्हारी हम मनिहैं ना * नाहम जायँ तुम्हारे साथ ॥
ठैर मँगाय देउ अधकर तुम * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
बातन बातन बतबढ़ होइगौ * औ बातन में बाढ़ो रारि ॥
गुस्सा होइकै ताहर बोले * औ क्षत्रिनते कही सुनाय ॥
बत्ती दैदेउ सब तोपन में * इन सबहुन को देउ उड़ाय ॥
बत्ती दैदइ सब तोपन में * धुँअना रह्यो सरग मँड़राय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * तोपैं चलन लगीं तत्काल ॥
अररर गोला छूटन लागे * गोला मन्न मन्न मन्नाय ॥
गोला बरसे तीनि घरीभरि * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
तोपैं आँड़ि दई ज्वानन ने * लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
खैंचि शिरोही लियो क्षत्रिन ने * खटखट चलन लगी तलवार ॥
क्यागति बरनौं त्यहि समयाकी * बेला बीररूप हुइ जाय ॥
अकिले बेलाकी धमकिन में * कोऊ कुँवर न आड़े पाँव ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब ताहर ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई ताहर ने * ब्रह्मा खबरदार हुइ जाउ ॥
खैंचि शिरोही लइ ताहर ने * सो बेला पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाई तब बेला ने * औझड़ लगी हाथ में जाय ॥
कटि अस्तीन गई जामा की * चुरियां खुलीं ब्यलम दे क्यार॥
देखि हाल यह तब चौड़ा ने * यह ताहर ते कही पुकारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथ चलयो ना बेला पर * है आगे यह बहिनि तुम्हारि ॥
सुनत दुचित्ते ताहर होइगै * बेला घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लइ बेला ने * औ ताहर पर दई झुकाय ॥
शीश काटि लीन्हों ताहरको * अपनो मुर्चा दियो बढ़ाय ॥
कूच कराय दियो तुरतै तब * औ ब्रह्मा पै पहुँची जाय ॥
चौड़ा आयो गढ़ दिल्ली में * जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
हाल सुनायो सब बेला को * सुनि सब गये सनाका खाय ॥
पृथीराज मनमें घबराने * पहुंची खबरि महल में जाय ॥
हाहाकार परो महलन में * अगमा रोय रोय रहिजाय ॥
अगमा रानी बहुते बिलखै * लैलै सब लरिकन के नाम ॥
याही दिनको बेला जन्मी * ज्यहिं करदई बन्सकी हानि ॥
खून कि प्यासी यह बेला है * कैसे लेय नीर की धार ॥
पानी दिवैया कोउ रहिगौ ना * दिल्ली दियना गयो बुझाय ॥
सिगरी रैयति रोवन लागी * लै लै नाम व्यलमदे क्यार ॥
याही दिनको तुम उपजी थी * जो करदई बन्शकी हानि ॥
पूर लड़ाई भइ बेला की * सो हम लिखिके दई सुनाय ॥
आगे लड़ाई है चन्दन की * ऊदन बगिया लाय कटाय ॥
सो हम लिखिकै तुमहिं सुनैहैं * यारो सुनियो कानलगाय ॥
समय पाय आल्हा गावौ तुम * नित उठि लेउ नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

* इति बेला और ताहर की लड़ाई समाप्त *

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji), Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ चन्दन बगिया काटने की लड़ाई

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥

* सवैया *

ज्ञान घटै खल संगतिते, अरु नीर घटै ऋतु ग्रीषम आये ॥
पाप घटै कछु पुण्य किये, अरु रोग घटै कछु औषध खाये ॥
प्रीति घटै नित मांगन ते, अरु रोग घटै मनके समुझाये ॥
नारि प्रसंगते जोर घटै, जम त्रास घटै हरिके गुन गाये ॥ २ ॥

* आल्हा *

बिपति बसेरा सब काहू को * यारो बिपति परे संसार ॥
यकदिन परिगयो रामचन्द्र पर * बनमें हरी निशाचर नारि ॥
सोइदिन परिगयो परिमालै पर * जूझे ब्रह्मा राजकुमार ॥
कहौं लड़ाई अब बगिया की * यारो सुनो सुमिरि करतार ॥
शीश काट लाई ताहर को * सो थारी में तुरत धराय ॥
जायके पहुँची ब्रह्मानँद पै * बेला ठढ़ी कैर बयारि ॥
बारबार तकि मुख स्वामी को * बेला रानी कहै पुकारि ॥
जागौ जागौ स्वामी मेरे * मैं ठढ़ी हौं नारि तुम्हारि ॥
शीश काटिलाई ताहर को * सो तुम देखो नैन उघारि ॥
जागी मुर्छा ब्रह्मानँद की * औ बेला तन रहे निहारि ॥
देखी शीश जबहि ताहर को * तब बेलाते लगे बतान ॥
डाहु बुझाय गयो छाती को * जो तुम बैरी दियो गिराय ॥
मनसा हमरो पूरन होइगइ * रानी सुनो हमारी बात ॥
जो इच्छा होय राजपाट की * तो महुबे को करो पयान ॥
होवै प्यारो जो नैहर यह * तो दिल्लीमें बैठो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

साथ हमारो जो चाहो तुम * हमरे संग सती हुइ जाउ ॥
इतनी कहिके ब्रह्मानँद ने * तुरतै दीन्हें प्राण गँवाय ॥
देखि हाल यह बेला रानी * भुइँमें गिरी तड़ाका खाय ॥
करुणा करिकरि रोवन लागी * बहुतै लागी करन बिलाप ॥
लैटैं उखारै चुनरी फारै * दांतन डारै हाथ चबाय ॥
हाय बिधाता यह कैसी भइ * बेड़ा कौन लगैहैं पार ॥
नातो छूटि गयो नैहर ते * ससुरे रही अँधेरिया छाय ॥
जो हम जनती की मरिजै हैं * क्यों भैयाको मरती जाय ॥
यहिबिधि बेला बहुते बिलपै * सो दुख कछुकह्यो नाजाय ॥
सोचे बेला अपने मनमें * अब हम करिहैं कौन उपाय ॥
बेला बुलवायो ऊदन को * औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
होइहौं सती संग स्वामी के * चन्दन बगिया लाव कटाय ॥
बोले ऊदन तब बेलाते * चहुँदिशिफौज पिथौराक्यार ॥
कही हमारी तासे मानौ * बैठी राज करौ महरानि ॥
गुस्सा हुइके बघऊदन ते * रानि बेलाने कही सुनाय ॥
जल्दी जावो तुम चन्दन को * नाहीं तुरतै दिहौं सराप ॥
यह सुनि घबराने ऊदन तब * औ लाखनि ते कहीसुनाय ॥
चन्दन माँगति है बेला अब * हुइहैं सती कंथ के साथ ॥
चलौ साथ हमरे दिल्ली को * चन्दन बगिया लेयँ कटाय ॥
यहकहिचलिभै लखिनि ऊदन * लश्करतुरतलियो सजवाय ॥
कूच कराय दियो नारेते * औ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
चंदन बगिया तुरत कटाई * सो छकरन में दई भराय ॥
माली खबरि करी राजा को * ऊदन बगिया लई कटाय ॥
चौड़ा धाँधू को बुलवायो * औ यह कही बीर चौहान ॥
चन्दन बगिया उदन कटाई * सो तुम चन्दन लेउ छँड़ाय ॥
फौज सजाय जाउ जल्दी तुम * सबको कटा देउ करवाय ॥
यह सुनि चौड़ा धाँधू चलिभै * सिगरो लश्कर लियो सजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कूच कराय दियो जल्दी ते ❋ औ छकरन को लियो घिराय ॥
गजै बढ़ाय दियो चौड़ा ने ❋ औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
काहे बगिया तुम कटवाई ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने ❋ होइ हैं सती व्यलमदे रानि ॥
हुक्म मानिकै हम बेला को ❋ चन्दन बगिया लई कटाय ॥
फिरिकै चौड़ा बोलन लागो ❋ ऊदन लौटि महोबे जाउ ॥
जान न दे हैं हम चन्दन लै ❋ चाहे लाखन करो उपाय ॥
बोले ऊदन तब गुस्सा होय ❋ नाहक रारि बढ़ाई आय ॥
अपने दुसरिहा हम राखोना ❋ दूजी करै हमारे साथ ॥
गुर्ज उठायो तब चौड़ाने ❋ सो ऊदन पर दियो चलाय ॥
हटिगयो घोड़ा बच ऊदन को ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
ऐंड लगाई रस बेंदुल के ❋ औ मस्तक पर बाजी टाप ॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी ❋ सोने कलशा दियो गिराय ॥
हाथी भागि चलो चौड़ाको ❋ मुर्चा हटो चौड़िया क्यार ॥
बीकानेरी बिजै सिंहने ❋ चंदन छकरा लियो घिराय ॥
लाखनि भेजे हरि सिंह बिरसिंह ❋ तुम छकरनको लेउ छड़ाय ॥
इतनी सुनतै दोनों झपटे ❋ विजय सिंहको दइ ललकार ॥
हुइगयो झुरमुट तहँ दोनों के ❋ हौदा चली विषम तलवारि ॥
हीरसिंह बिरसिंह दोनों जूझे ❋ लाखनि देखि गये घबराय ॥
तुरत बुलाय लियो गंगाको ❋ औ लाखनिने कही सुनाय ॥
मामा जावौ तुम जल्दी ते ❋ औ छकरनको लेउ छड़ाय ॥
हाथि बढ़ायो तब गंगाने ❋ बिजैसिंह को दइ ललकार ॥
छकरा छिनवाये जल्दी ते ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
करी जड़ाका विजैसिंह पर ❋ औ धरतीपर दियो गिराय ॥
यह गति देखी हीरामनि ने ❋ जो चरखारी के सरदार ॥
भाला मारो तब गंगा को ❋ गंगा लैगै चोट बचाय ॥
लियो गुर्ज तब गंगा ठाकुर ❋ हीरामनि पर राखौ जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जूझे हीरामनि तुरतै तब ❀ छकरा आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही तब दिल्ली के ❀ सबके मारु मारु रटलागि ॥
बढ़े महोबिया बीर रूप होय ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले ❀ औ मुर्चा ते गये बराय ॥
चौड़ा धांधू दोनों चलिभये ❀ मुर्चा हटो पिथौरा क्यार ॥
लैके छकरा लाखनि ऊदन ❀ जमुना पार पहूँचे आय ॥
जहँ पर तम्बू ब्रह्मानँद को ❀ तहँ सब छकरादो पहुँचाय ॥
डेरा डारि दियो बागन में ❀ फेटैं छुटी सिपाहिन क्यार ॥
जीन उतरिगै सब घोड़न के ❀ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
बोले ऊदन तब लाखनि ते ❀ बेलै खबरि सुनावो जाय ॥
बोले लाखनि तब ऊदन ते ❀ जल्दी हाल सुनावो जाय ॥
यहसुनि चलिभै ऊदन ठाकुर ❀ औ बेलापै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिके ऊदन बोले ❀ चन्दन बगिया लाये कटाय ॥
यहसुनि चलि भइ बेला रानी ❀ औ छकरनपै पहुँची आय ॥
देखिके चन्दन बेला बोली ❀ गीली चन्दन लाय लदाय ॥
चिता न जरिहैं या चन्दनते ❀ सूखा चन्दन लावौ जाय ॥
बोले ऊदन तब बेला ते ❀ औ बेलाते कही सुनाय ॥
चन्दन सूखा है कनउज में ❀ सोहम तुमहिं देउँ मँगवाय ॥
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❀ तौलोसेतु रहनको नाहिं ॥
लावो चन्दन तुम दिल्ली ते ❀ जहँ है पृथीराज दरबार ॥
बारह खम्भा हैं चन्दन के ❀ लावौ जाय अबहिं उखराय ॥
यहसुनि तड़पे उदन बाँकुड़ा ❀ औ बेलाते लगे बतान ॥
बात सम्हारि कहौ बेला तुम ❀ हैना भारू प्राणे हमार ॥
गुस्सा होय तब बेला बोली ❀ अबहम जानि लई सतिभाव ॥
देखि रूप हमरो मोहे तुम ❀ हमरे कंथ दिये मरवाय ॥
देखिकै पारस तुम महुबे में ❀ अकिले बालम दिये पठाय ॥
काम तुम्हारो पूरन होइ गयो ❀ सिगरी मनसाफली तुम्हारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यहना जनियों तुम अपने मन ❋ बेला भई निरासिनि राँड ॥
दिल्ली गढ़ते औ महुबे लौ ❋ होइहै सबैं सोहागिन राँड ॥
पायल बजिहैं ना पलका पर ❋ ना होय विछुवनकी झनकार ॥
घर घर महुबे आठ दिना में ❋ होइहैं सिगरी नगर निरास ॥
बीस दिनाके तब अरसा में ❋ दिल्ली परै बज्रकी गाज ॥
बाकी रहे पाँच दिन सतके ❋ जल्दी कूच जाउ करवाय ॥
चन्दन खंभा ना लैहौ जो ❋ तो सब जैहैं काम नशाय ॥
यह सुनि चलिभै उदल बाँकुड़ा ❋ औ लाखनि पै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी तब लाखनि को ❋ औसब हाल कह्यो समुझाय ॥
सोसुनि चलिभै लाखनि राना ❋ संगै आये उदैसिंह राय ॥
आये लाखनि जब बेलापै ❋ तब बेलाते कही सुनाय ॥
सती न होवै बेला रानी ❋ महुबे करो राजको काज ॥
आज्ञा मनिहैं हम तुम्हरी सब ❋ सेवा करैं बनाफर राय ॥
पारस पूजा है तुम्हरे घर ❋ लोहा छुवत सोन हुइजाय ॥
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❋ हमरे मन यह नाहिं समाय ॥
मन नहिं मानत समझाये ते ❋ समको सत्त दियो भगवान ॥
हुइहौं सती साथ स्वामी के ❋ हमरो जन्म सुफल हुइजाय ॥
या लै आवो चन्दन खंभा ❋ नातर छोरि धरो हथियार ॥
इतनी सुनतै लाखनि बोले ❋ औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
अब तुम त्यार होउ जल्दी ते ❋ शिरपर काल पहूँचो आय ॥
चन्दन खंभा हम तुम लैहैं ❋ या तहँ दे हैं प्राण गँवाय ॥
आगे लड़ाई है खंभन की ❋ सोहम लिखिके दिहैं सुनाय ॥
आल्हा गावौ समय पाय तुम ❋ औनित नाम लेउ भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति चन्दनबगिया की लड़ाई समाप्त ।

—:❋❋❋❋:—

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ चंदनखंभ उखाड़नेकी लड़ाई।

दो—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश॥

❋ आल्हा ❋

सुमिरन करके नारायण को ❋ लै बजरंगबली को नाम॥
लिखौं लड़ाई अब खंभन की ❋ यारो सुनौ छोड़ि सब काम॥
राम चले गये बनोबास को ❋ दशरथ दीन्हें प्राण गँवाय॥
सीतहिं हरि लीन्हों रावण ने ❋ प्रभु पर बिपतिपरी बनआय॥
तैसेइ बिपति परी बेला पर ❋ ब्रह्मा दीन्हें प्राण गँवाय॥
छाँड़ि आसरा जिन्दगानी को ❋ लाखनि और उदयसिंहराय॥
करी तयारी तब खम्भन की ❋ लश्कर तबै लियो सजवाय॥
कूच कराय दियो जल्दी ते ❋ औ दिल्ली में पहुँचे जाय॥
डेरा डारि दियो धूरे पर ❋ तुरतै तम्बू दिये तनाय॥
गाड़ि निशाना दिये लश्कर के ❋ झंडन रही लालरी छाय॥
लाखनि बुलवाये राजा सब ❋ औ सब शूर लिये बुलवाय॥
ढेबा जगनिक धनुआँ तेली ❋ लला तमोली पहुँचा आय॥
आये राजा गाँजर वाले ❋ तिनते लाखनि लगे बतान॥
छाँड़ि आसरा जिन्दगानी को ❋ अपनो मयामोह बिसराय॥
धावा मारौ तीन गोल होय ❋ चन्दन खम्भ लेउ खोदवाय॥
सुनतै धाये तीन गोल होय ❋ पहुँचे शूर राज दरबार॥
बारह खम्भा मलया गिरि के ❋ सो उखराय लिये लदवाय॥
मिली खबर जब बीर भुगंतै ❋ रमया दानव लियो बुलाय॥
लाख सवार साथ लीन्हें सब ❋ तुरतै धावा दियो कराय॥
खम्भा घेरि लिये दोनों ने ❋ औ आगे बढ़ि कही सुनाय॥
बीर भुगन्ता ने ललकारा ❋ किसने खम्भ लिये उखराय॥
काल बिराजतहै क्यहिके शिर ❋ सो समुहें होय देइ जवाब॥
घोड़ा रेलो तब ऊदन ने ❋ बीर भुगन्ते दियो जवाब॥
खम्भ मँगाये रनि बेलाने ❋ अपने सती होनके काज॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji), Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तब हम खम्भा यह उखराये ❋ है यह काज ब्यलमदे क्यार॥
काम हमारो ना अटको कछु ❋ तुम क्यों रारि बढ़ाई आय ॥
गुस्सा होय तब वीर भुगंता ❋ सब क्षत्रिय ते कही पुकारि ॥
जान न पावैं महुबे वाले ❋ सबकी कटा देउ करवाय ॥
हल्लाकरिदियो सब क्षत्रिनने ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
खट खट तेगा बाजन लाग्यो ❋ जूझनलगे सुघरुआ ज्वान ॥
रमया दानौ शूर युद्ध में ❋ बहुतै बिषम करै तलवारि ॥
लोथैं गिरनलगीं लोथिन पर ❋ सबके मारु मारु रटलागि ॥
राजा अङ्गद आगे बढ़िगे ❋ चन्दन खम्भा लिये घिराय ॥
लाखनि भेजो तब परशू को ❋ चंदन खम्भा लेउ छँड़ाय ॥
बढ़िके परशू ने ललकारा ❋ अङ्गद खैंचि लई तलवारि ॥
करा जड़ाका जब परशू पर ❋ परशू लीन्ही चोट बचाय ॥
खैंचि शिरोही लइ परशू ने ❋ सो अङ्गदपर दई चलाय ॥
अङ्गद जूझिगये खेतन में ❋ बीर भुगन्ता बढ़ो अगार ॥
भाला मारि दियो परशू के ❋ परशू जूझ गये मैदान ॥
बोले लाखनि तब ऊदन ते ❋ ऊदन खम्भा लेउ छड़ाय ॥
खम्भा जैहैं जो दिल्ली को ❋ तो जग होइहैं हँसी हमारि ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने ❋ दादा धीर धरौ मनमाहिं ॥
घोड़ा फेक्यों बघऊदन ने ❋ बीर भुगन्त दई ललकार ॥
झुरमुट होइगयो तहँ दोनोंको ❋ तुरतै दियऊदनो भगाय ॥
आगे बढ़िगयो रमया दानौ ❋ औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर ❋ तुम्हरो काल पहुँचो आय ॥
खैंचि शिरोही लइ रमया ने ❋ सो ऊदनपर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ऊदन ने ❋ अपनी दीन्ही गुर्ज चलाय ॥
गुर्जके लागत रमया जूझो ❋ ऊदन छकरा दियो बढ़ाय ॥
भुरुही दाबे लाखनि आये ❋ घेरो महल पिथौरा क्यार ॥
बदला लैहौं संयोगिनि को ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ॥
बोले जगानिक तब लाखनिते ❋ यह ना कही कनौजीराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji), Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जैसे हमको मल्हना रानी ❀ तैसेइ हमहिं अगमदे रानि ॥
नामनलीज्यो तुम अगमा को ❀ नहिं सबजैहैं काम नशाय ॥
तो लौं आये ऊदन ठाकुर ❀ सो जगनिकते लगे बतान ॥
तुमहिं सुनासिब यह नाहीं है ❀ दूजी करौ कनौजी साथ ॥
ऊदन समझायो जगनिक को ❀ औ लाखनिते कही सुनाय ॥
धीरज राखो तुम अपने मन ❀ अबही डोला लेउ खँदाय ॥
यहकहि चलिभै ऊदन ठाकुर ❀ पहुँचे रंग महल में जाय ॥
सूरति देखी जब ऊदन की ❀ अगमा बहुत गई घबराय ॥
बोली अगमा बघ ऊदन ते ❀ तुम सुनि लेउ उदैसिंहराय ॥
हाथ चलैयो ना काहू पर ❀ तुमतौ लरिका लगौ हमार ॥
बोले ऊदन हाथ जोरिके ❀ माता सुनो हमारी बात ॥
लाखनि बिचले हैं द्वारे पर ❀ बदलालिहैं संयोगिनि क्यार॥
कही हमारी माता मानौं ❀ बांदि को डोला देउ सजाय ॥
इतनी बात सुनी अगमा ने ❀ तुरतै डोला दियो सजाय ॥
डोला लैके ऊदनि चलिभयो ❀ दरवाजे पर पहुँचे आय ॥
बोले ऊदनि तब लाखनि ते ❀ दादा मानौ कही हमारि ॥
परन तुम्हारो पूरन हुइ गयो ❀ डोला आय अगम दे क्यार॥
डोला फेरि देउ अपनो करि ❀ तुम्हरो नाम होय संसार ॥
बात मानिलई तब ऊदन को ❀ लाखनि डोला दियो फिराय॥
बेड़ा लश्कर पृथीराज ने ❀ बिसहिनिजीति पहूँचो आय॥
सुनी खबरि यह पृथीराज ने ❀ ऊदन खम्भ लियो उखराय ॥
साथमें आये लाखनि राना ❀ लश्कर साथ कनौजी क्यार॥
इतनी सुनते पृथीराज ने ❀ चौड़ा धांधू लियो बुलाय ॥
हुक्म दैदियो तिन दोनों को ❀ चंदन खम्भा लेउ छड़ाय ॥
हाथि बढ़ाये तब दोनों ने ❀ आगे लश्कर दियो बढ़ाय ॥
आदि भयंकर झूमत आवै ❀ बैठे शब्द बेधि चौहान ॥
बोले पृथीराज आगे बढ़ि ❀ किसने खंभा लियो उखारि ॥
करी बन्दगी तब ऊदन ने ❀ औ समुहें होयदियो जवाब ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हुक्म पायके रनि बेलाको ❀ हमने खंभ लिये उखराय ॥
काज हमारो ना अटको कछु ❀ है यह काज ब्यलमदे क्यार ॥
फिरिके पिरथी बोलन लागे ❀ ऊदन लौटि महोबे जाय ॥
खंभ न पैहौ तुम हमरे यह ❀ नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
बोले ऊदन तब राजाते ❀ अबना मिलिहैं खंभ तुम्हार ॥
पृथीराज बोले धाँधू ते ❀ चन्दन खंभा लेउ छड़ाय ॥
हाथि बढ़ायो तब धाँधू ने ❀ चन्दन खंभा लियो घिराय ॥
बोले लाखनि तब धनुआँ ते ❀ खम्भा तुरतै लेउ छँड़ाय ॥
धनुआँ पहुँचो जब खंभन पै ❀ तब धाँधूने दइ ललकार ॥
झुरमुट होइगो तब दोनों के ❀ धनुआँ जूझिगयो रणमाहिं ॥
आगे बढ़िगयो ललातमोली ❀ सोउ जूझिगयो रणमाहिं ॥
मन घबराने लाखनि राना ❀ को असने में ऐहैं काम ॥
घोड़ा बढ़ायो बघऊदन ने ❀ औ धाँधूको दइ ललकार ॥
गुर्ज चलायो तब धाँधू ने ❀ ऊदन लैगै चोट बचाय ॥
मारी भाला जब ऊदन ने ❀ धाँधू हाथी गयो भगाय ॥
खैंचि शिरोही देवि मरहटा ❀ बघऊदन पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ऊदन ने ❀ अपनो खैंचि लई तलवारि ॥
चेहरा मारो तब देवी को ❀ देवी जूझि गये मैदान ॥
यह गति देखी पृथीराज जब ❀ तब लश्करको दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही दिल्ली वाले ❀ सबके मारु मारु रटलागि ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदन कहैं पुकारि पुकारि ॥
कोउ न भगियो रणसमुहें ते ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥
जंगजीति चलिहौं दिल्ली ते ❀ दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
समुहें रणके जो मरि जैहौ ❀ होइहैं जुगन जुगन लौं नाम ॥
खटिया परिके जो मरि जैहौ ❀ कोउ न लेहैं नाम तुम्हार ॥
दै दै पानी रजपूतन को ❀ ऊदन आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ अन्धा धुन्ध चले तलवारि ॥
चलै शिरोही आठ कोसलौं ❀ धूरे बही रक्तकी धार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

साँकल लैके लाखनि राना ❀ सो भुरुही को दई गहाय ॥
दबी बायसी पृथीराज की ❀ भुरुही राखो धर्म हमार ॥
लाखनि उदन दलमें बैठे ❀ क्षत्रिन काटि करो खरिहान ॥
भरे सिपाही दिल्ली वाले ❀ अपने छोड़ि २ हथियार ॥
करैं चाकरी ना दिल्ली में ❀ बनको बाँचे लकड़िया खाँय ॥
आये भेड़हा हैं महुबे के ❀ जे मानुष के करैं अहार ॥
भगत सिपाही पिरथी देखे ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
आगे बढ़िके पृथीराज को ❀ बघऊदन ने करी सलाम ॥
हाथ जोरिके उदन बोले ❀ तुम सुनि लेउ पिथौराराय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❀ तुम क्यों रारि बढ़ावत आय ॥
सत्ती होइहैं बेला रानी ❀ सो हम खंभ लिये उखराय ॥
जोतुम छिनिहो इन खंभनको ❀ तो जग होइहैं हँसी तुम्हारि ॥
जो तुम छिनिहो इन खंभनको ❀ है यह काज ब्यलमदे क्यार ॥
खंभ न देहैं हम तुमको अब ❀ चाहे प्राण रहे की जाय ॥
ताते मानो कही हमारी ❀ अपनो कूच जाउ करवाय ॥
इतनी सुनते पृथीराज ने ❀ अपनो मुर्चा दियो हटाय ॥
लाखनि ऊदन ने खंभन के ❀ छकरा आगे दिये बढ़ाय ॥
पृथीराज पहुँचे दिल्ली में ❀ पहुँचे रंगमहल में जाय ॥
हाल सुनायो रनि अगमाने ❀ बिचले यहाँ कनौजीराय ॥
बदला लेहैं संयोगिन को ❀ महलन आये उदैसिंहराय ॥
डोलासजाय लियो बाँदी को ❀ औ द्वारे पर गये लिवाय ॥
डोला फेरि दियो द्वारे ते ❀ औलाखनिको दियो बुझाय ॥
इतनी सुनिकै रनि अगमाते ❀ बहुतै खुशी भये महराज ॥
लाज हमारो ऊदन राखो ❀ धनि धनि दस्सराजके लाल ॥
बेला सती भई आगे अब ❀ सो हम लिखिके दिहैं सुनाय॥
समय पाय आल्हा गावो तुम ❀ नित उठिनाम लेउ भगवान॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति चन्दनखंभ उखाड़ने की लड़ाई समाप्त ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अथ बेलाके सती होनेकी लड़ाई ।

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

❋ सवैया ❋

कैटभ से नरकासुरसे अरु भीषण द्रोण महायश खेवा ।
बालिबली बलिबाण दधीचि ययाति दीलीपहुसे बलसेवा ॥
रावण और युधिष्ठिर भारत भीम महाबलवान मुदेवा ।
अन्त समय उबरे न कोऊ क्षणमाहिं भये सब काल कलेवा ॥

❋ आल्हा ❋

सुमिरन करिके नारायण को ❋ औ गणपतिके चरण मनाय ॥
लिखौं लड़ाई अब अखीरकी ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥
ऊदन पहुँचे रनि बेला पै ❋ औ बेलाते कही सुनाय ॥
चन्दन खम्भा हम लाये हैं ❋ आगे हुक्म देउ फरमाय ॥
बोली बेला तब ऊदन ते ❋ अबतुम सुनौ हमारी बात ॥
पहिलो धूरो गढ़ दिल्ली को ❋ दुसरो नगर महोबे क्यार ॥
तिसरो धूरो गढ़ कनउज को ❋ चौथा बलखबुखारे क्यार ॥
चारि चौसँधे के धूरे पर ❋ जल्दी चिता देउ रचवाय ॥
यही हुक्म हमरो आखिर है ❋ जल्दी चिता बनावो जाय ॥
सुनतै चलिभै ऊदन ठाकुर ❋ चन्दन छकरा दिये जुताय ॥
चारि चौसँधे के धूरेपर ❋ ऊदन सरा दिये रचवाय ॥
ऊदन बोले तब लाखनि ते ❋ दादा सुनो कनौजी राय ॥
मरन कि बेरा अब आई है ❋ सिगरी लश्कर लेउ सजाय ॥
खबरि पहूँची गढ़ महुबे में ❋ सत्ती होय व्यलमदे रानि ॥
रैयत धाई तब देखन को ❋ औ धूरेपर पहुँची आय ॥
सुनी खबरिया पृथीराज ने ❋ बेला सती होनको जाय ॥
लश्कर अपनो सब सजवायो ❋ औ चढि आये पिथौरा राय ॥
अगहन मास सुदी एकादशि ❋ सत्ती भई व्यलमदे रानि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चिता समीप गई बेला जब ❀ पतिकी लाशलई मँगवाय ॥
लाश धराई तुरत चिता पर ❀ बेला कीन्हें सब सिंगार ॥
करि पैकरमा जबही बैठी ❀ पृथीराज जब कही पुकारि ॥
होवै जो कोउ चन्द्रबंश में ❀ सर में आगी देय लगाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है ❀ सो ना जायँ चिताके पास ॥
आगे बढ़ि तब ऊदन बोले ❀ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
हुक्म दियो हमको बेलाने ❀ की तुम आगी देउ लगाय ॥
कोटि उपाय करो चाहे तुम ❀ आगी हमहीं दिहैं लगाय ॥
गुस्सा होइके पृथीराज तब ❀ तुरतै हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दै देउ सब तोपन में ❀ इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❀ तुरतै बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में ❀ धुँअना रह्यो सरग मँड़राय ॥
तोपैं छूटीं दोनों दल में ❀ रणमें होनलाग घमसान ॥
अररर अररर गोला छूटे ❀ कहकह करै अगिनियां बान ॥
रिमझिम रिमझिम गोली बरसै ❀ सननन परी तीरकी मारु ॥
तड़तड़ तड़तड़ तासे बाजे ❀ जंगी ढोल रहे झहनाय ॥
शंख तोरही औ रणसिंहा ❀ जहँ तहँ दमन बेलि घहराय ॥
तीर कमनियाँ जो मुलतानी ❀ कारी नागिन सी मन्नाय ॥
जैसे साँप बाँबि में जावै ❀ त्यों ज्वाननके तीर समाय ॥
दोनों फौजन के संगम में ❀ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ॥
लागै गोला ज्याहि हाथी के ❀ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय ॥
गोला लागै जौन ऊँट के ❀ दलमें गिरे चकत्ता खाय ॥
लागै गोला जिन घोड़नके ❀ चारौ सुम्म गर्द होइजाय ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिन के ❀ तिनकी त्वचा सरग मँड़राय ॥
बंबको गोला जिनके लागे ❀ तिनके हाड़मास छुटिजायँ ॥
गोला जंजिरहा जिनके लागै ❀ सो लत्ताअस जाय उड़ाय ॥
छोटी गोली जिनके लागै ❀ मानौ गिरह कबूतर खाय ॥
बान को डंका जिनके लागै ❀ तिनके दुइखंडा होय जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तोपैं धैं ध लाली हो गईं ❀ ज्वानन हाथ धरेना जाय ॥
चढी कमनियाँ पानी होइगईं ❀ चुटकिन के गै मास उड़ाय ॥
तोप रहँकला पीछे छाँड़े ❀ लम्बे बन्द करें हथियार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ रहिगै पाँच पैग असवार ॥
साँगैं चलन लगीं दोनों दल ❀ ऊपर बर्छिन की दइमारु ॥
छुटैं पिचक्का तहँ लोहू के ❀ औ बहिचली रक्तकी धार ॥
बूड़ि जुलफियां गईं क्षत्रिनकी ❀ चरबी अङ्ग गई लपटाय ॥
मानहुँ टेसू बनमें फूले ❀ ऐसी रही लालरी छाय ॥
हौदा भिरिगै हैं लोहू ते ❀ औ चुचुहात फिरै असवार ॥
चारिघरी भरि बजो साँगड़ा ❀ भारी भई सांगकी मारु ॥
टूटिकै भाला दोना होइगै ❀ सबिया हारि मानिगै ज्वान॥
दोनों फौजन के संगममें ❀ रहिगयो डेढ़ कदम मैदान ॥
खैंच शिरोही लइ ज्वाननने ❀ नंगी चलन लगी तलवारि ॥
खटखट खटखट तेगा बाजैं ❀ बोले छपक छपक तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै बिलायति क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के ❀ कटिकटि गिरैं सुघरुवा ज्वान ॥
पैदलके सँग पैदल अभिरे ❀ औ असवारनते असवार ॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगै ❀ ऊपर पेशकब्ज की मारु ॥
कटिकटि शीस गिरैं धरनी में ❀ उठिउठि रुंड करैं तलवारि ॥
आठकोस के तहँ गिरदा में ❀ अन्धाधुन्ध चलैं तलवारि ॥
पैग पैग पर पैदल गिरगे ❀ उनके दुइदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसेपर हाथी डारे ❀ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
कल्लाकटिगै जिन घोड़न के ❀ धरती गिरे भरहरा खाय ॥
कटे भुसुंडा जिन हाथिन के ❀ दलमें गिरे करौटा खाय ॥
कटि भुजदंडै रजपूतन की ❀ चेहरा कटै सिपाहिन क्यार ॥
दोनों सेना यकमिल होगईं ❀ ना तिलपरा धरनिमें जाय ॥
ज्यों सावनमें छुटै फोहारा ❀ त्योंही चलै रक्तकी धार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

परे दुशाला जो लोहू में ❀ जनु नद्दी में परो सेवार ॥
पगिया डारीं जे लोहू में ❀ मानौ ताल फूल उतराय ॥
परी शिरोही हैं ज्वानन की ❀ मानौं नाग रहे मन्नाय ॥
घैहा डारे रणमें लौटें ❀ जिनके प्यासप्यास रटलागि ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदन कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❀ तुम सब भैया लगो हमार ॥
पाँव पिछारी को धरियोना ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥
सन्मुख लड़िकै जो मरिजैहो ❀ होइहै जुगन जुगन लो नाम ॥
जो मरिजैहौ खटिया परिके ❀ कोउ न लिहैं तुम्हारो नाम ॥
दै दै पानी रजपूतन को ❀ ऊदन आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ जिनके मारु मारु रटलागि ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❀ जे रणदुला चले बर्राय ॥
लम्बी धोतिन के पहिरैया ❀ तिन नारेनकी पकरी राह ॥
भेष बदलिके क्षत्री भागे ❀ हा दैयागति कहो न जाय ॥
कोऊ रोवै है लरिकन को ❀ कोऊ पुरखिन को चिल्लाय ॥
कोउकोउ रोवै तहँ तिरियन को ❀ बेड़ा कौनु लगैहैं पार ॥
चौड़ा ब्राह्मण के समुहें पर ❀ ढेबा करो सामना जाय ॥
बिकट लड़ाई भइ दोनों में ❀ ढेबा जूझि गयो मैदान ॥
घोड़ि बढ़ाई जगनायक तब ❀ औ चौड़ाको दइ ललकार ॥
बहुत लड़ाई भइ दोनों में ❀ सो मैं कहँलग करौं बखान ॥
जगनिक जूझिगये खेतन में ❀ आगे बढ़ो चौड़ियाराय ॥
बोले पृथीराज भूराते ❀ भूरा सुनो हमारी बात ॥
जान न पावैं कोउ महुबेको ❀ सबकी कटा देउ करवाय ॥
भूरा मुगुल रहै काबुलको ❀ सो मुर्चापर पहुँचो जाय ॥
बोले लाखनि तब सैयदते ❀ मैं चाचाकी लेउँ बलाय ॥
बड़ो लड़ैया यह भूरा है ❀ याको शीस लेउ कटवाय ॥
अली अली करि सैयद झपटे ❀ औ भूराको दइ ललकार ॥
सुनतै गुस्सा होय भूराने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करी जड़ाका तब सैयदपर ❋ सैयद लीन्हीं चोट बचाय ॥
टूटि शिरोही गइ भूराकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
खैंचि शिरोही लइ सैयदने ❋ औ भूरापर दई चलाय ॥
शीश काटि लियो बाभूराको ❋ बीर भुगन्ता बढ़ो अगार ॥
बीर भुगन्ताने ललकारो ❋ सैयद खबरदार हुइजाव ॥
लई कमनियाँ बीर भुगन्ता ❋ समुहें कैबर दियो चलाय ॥
चोट बचाई तब सैयदने ❋ फिरित्याहिंभालादियोचलाय ॥
भाला लागत सैयद गिरिगये ❋ लाखनि गये सनाका खाय ॥
बोले लाखनि तब गंगाते ❋ मामा राखो धर्म हमार ॥
सैयद जूझिगये खेतन में ❋ को असने में ऐहैं काम ॥
लैके भाला बीरभुगन्ता ❋ सो गंगापर दियो चलाय ॥
चोट बचाय लई गंगाने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करी जड़ाका यक समुहेंपर ❋ बीरभुगंतै दिये गिराय ॥
यह गति देखी पृथीराज जब ❋ तब धाँधू ते कही सुनाय ॥
मारि गिरावो कनउजियन को ❋ सबके शीस लेउ कटवाय ॥
हाथि बढ़ायो तब धाँधू ने ❋ औ धाँधू यह कही सुनाय ॥
कौने मारौ बीरभुगन्ते ❋ सो समुहें होय देय जवाब ॥
हाथिनि बढ़ाई तब गंगाने ❋ औ धाँधू को दियो जवाब ॥
हमने मारो बीर भुगन्तै ❋ यहकहि हाथिनी दई बढ़ाय ॥
गुर्ज उठायो तब धाँधू ने ❋ सो गंगापर दियो चलाय ॥
चोट बचाय लई गंगाने ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
ढाल अड़ाय दियो धाँधू ने ❋ तापर भयो जड़ाका जाय ॥
टूटि शिरोही गइ गंगाकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
यह गति देखी जब गंगाने ❋ मनमें गये सनाका खाय ॥
जौनि शिरोही से गजकाटे ❋ औ घोड़नके चारो पाँव ॥
सोई शिरोही धोखा दैगइ ❋ हमरो कालरह्यो नियराय ॥
हाथी रेल्यो तब धाँधू ने ❋ औ भालाको दियो चलाय ॥
भाला लागत गंगा गिरिगयो ❋ लाखनि देखि गये घबराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भुरुहि बढ़ायो लाखनि आगे ❀ औ धाँधूको दइ ललकार ॥
खबरदार रहियो हाथी पर ❀ तुम्हरे काल रह्यो नियराय ॥
बोले धाँधू तब लाखनि ते ❀ पहले चोट करो तुम आय ॥
ज्वाब दियो लाखनि राना तब ❀ नहिं यह हुक्म कनौजी क्यार॥
पहले चोट करो अपनी तुम ❀ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥
इतनी सुनतै धाँधू ठाकुर ❀ अपनी लीन्हीं लाल कमान ॥
कैबर छाँड़ि दियो समुहें पर ❀ लाखनि लीन्हीं चोट बचाय ॥
भाला लैके तब धाँधू ने ❀ सोलाखनि पर दियो चलाय ॥
हथिनी हटिगई तब लाखनिकी ❀ भाला गिरो भूमिपर जाय ॥
ढाल अड़ाई लाखनि राना ❀ धाँधुकि टूटिगई तलवारि ॥
खैंचि शिरोही लई धाँधू तब ❀ औलाखनिपर दियो चलाय ॥
गुर्ज उठायो लाखनि राना ❀ सो धाँधू पर दियो चलाय ॥
लाग्यो गुर्ज जाय खोपरी में ❀ धाँधू जूझिगये मैदान ॥
देखि हाल यह पृथीराज तब ❀ मनमें बहुत गये घबराय ॥
बड़ा शूरमा यह मारोगो ❀ को गाढ़े में ऐहैं काम ॥
नौसै हाथी को हलका है ❀ आगे बढ़े पिथौराराय ॥
आदि भयंकर झूमत आवै ❀ बैठे शब्दबेधि चौहान ॥
बीचमें घिरगये लाखनि राना ❀ तबलाखनिमनसोचनलाग ॥
सिगरो लश्कर पिरथी लाये ❀ हमते करो सामना आय ॥
उतरे लाखनि तब भुरुही ते ❀ औ धरती पर पहुँचे आय ॥
फूल मँगाय लियो गगरीभरि ❀ सो हथिनीको दियो पिलाय ॥
भाँग मिठाई औ अफीमको ❀ गोटा दीन्हों तुरत खवाय ॥
हथिनी मस्तकरी लाखनिने ❀ औ साँकलको दइ पकराय ॥
बोले लाखनि तब हाथिनते ❀ भुरुही राखौ धर्म हमार ॥
यहकहि चढ़िगै लाखनिराना ❀ आगे हथिनी दई बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लई लाखनिने ❀ समुहें गोल गये समुहाय ॥
भुरुही साँकल फेरन लागी ❀ लश्कर तिड़ीबिड़ी हुइजाय ॥
अकिले लाखनिकी डपटनिमें ❀ सब दल रेन बेन हुइजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आगि लगन पाई ना सरमें ❀ बेला केश दिये छिटकाय ॥
लपटैं छूटीं तब बारनते ❀ जरने लगा सरा तत्काल ॥
ढाल अड़ाये लाखनि राना ❀ समुहे खड़े पिथौरा राय ॥
लाखनि बोले पृथीराजते ❀ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
है कोउ क्षत्री तुम्हरे दल में ❀ सन्मुख लड़े हमारे साथ ॥
यह सुनि पिरथी बोलन लागे ❀ लाखनि सुनो हमारी बात ॥
बारह रानिन को यकलौता ❀ औ सोलह को सर्व सिंगार ॥
आस लकड़िया है जैचँदकी ❀ नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
कही हमारी लाखनि मानौ ❀ तुम समुहेंते जाउ बराय ॥
घुन्डी खोली तब लाखनि ने ❀ समुहें छाती दई अड़ाय ॥
बोले लाखनि पृथीराज ते ❀ तुम सुनिलेउ पिथौराराय ॥
हिरणाकुश सतयुगमें होइगयो ❀ जाने कियो अखण्डित राज ॥
सो ना अमर भयो पृथिवीपर ❀ अब क्या अमर कनौजीराय ॥
त्रेतायुगमें रावण हुइ गयो ❀ जाके बीस भुजा दस भाल ॥
सो ना अमर भयो दुनियाँमें ❀ अब क्या अमर कनौजीराय॥
द्वापर में राजा दुर्योधन ❀ हुइगै बहुत बली सरनाम ॥
सो ना अमर भये धरती पर ❀ अब क्या अमर कनौजी राय॥
धर्म क्षत्रियन कै नाहीं है ❀ जो हठिधरें पिछारी पाँव ॥
फिरि समुझायो पृथीराज ने ❀ लाखनि मानौ कही हमार ॥
जैसेइ लड़िका रतीभान के ❀ तैसेइ लड़िका लगौ हमार ॥
ताते तुमको समुझावत हौं ❀ हमते नाहिं करो तकरार ॥
हाँसिके लाखनि बोलन लागे ❀ औ पिरथीको दियो जवाब ॥
धर्म नहीं है यहु क्षत्रिनको ❀ की घटिकरें काहुको साथ ॥
बोले पृथीराज गुस्सा होय ❀ तादिन कहाँरहे महराज ॥
लाये सँयोगिनि हम कनउजते ❀ अब बढ़ि करत सामुहें बात ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनि ने ❀ काहे बोलत बात बनाय ॥
नाहीं जैचँद मडवा गाड़ो ❀ नाहीं दीन्हों कन्या दान ॥
चोरी लाये तुम कनउज ते ❀ अब बढ़िकहत बात महराज ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

उमरि हमारी तब थोरी रहे ❋ तबना धरी कमर तलवारि ॥
बदला लेहौं संयोगिनि को ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ॥
इतनी सुनतै गुस्साहोय तब ❋ पृथीराज ने लई कमान ॥
तीर निकारि लिये तरकसते ❋ छाती डटी कनौजी क्यार ॥
बाइस तीर हते तरकस ते ❋ सो पिरथी ने दिये चलाय ॥
ढालफाटि लाखनि रानाकी ❋ छाती निकरिगये वा पार ॥
देह नहीं हाली लाखनि की ❋ पिरथी गये सनाका खाय ॥
बड़ो शूरमा यहु लाखनि है ❋ नाती बेन चक्कवे क्यार ॥
है यह बेटा रतीभान को ❋ यहु मोरते मरिहै नाहिं ॥
भुरुही हथिनी आगे बढ़िके ❋ आदि भयंकर दियो हटाय ॥
सोचे पृथीराज अपने मन ❋ गरुई गाज कनौजी क्यार ॥
बड़ी जोरावर यह हथिनी है ❋ हमरो हाथी दियो हटाय ॥
पीठी फेरी पृथीराज ने ❋ हौदा गिरे कनौजी राय ॥
हाथते गिरी ढाल लाखनि के ❋ सो चौड़ाने लई उठाय ॥
जहँ मुर्चापर उदैसिंह रहै ❋ तहँपर गयो चौड़िया राय ॥
चौड़ा बोल्यो हँसि ऊदन ते ❋ ऊदन देखो दृष्टि पसारि ॥
लाये थाती जो कनउज ते ❋ सो तुम रणमें दई गँवाय ॥
लाश पड़ी लाखनि राना की ❋ सो तुम जाय लेउ उठवाय ॥
काहू लूटी छुरी कटारी ❋ काहू लुटी बैजनी पाग ॥
हम लै आये गैड़ा वाली ❋ सो तुम देखिलेउ पहिचान ॥
देखि हाल ऊदनि पहिचाना ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जायके देखो जब लाखनि को ❋ ऊदन छाड़ि दई डिंडकार ॥
हाय विधाता यह कैसी भइ ❋ हमते बिछुरो मित्र हमार ॥
देखि न पाये मरती बेरियाँ ❋ मारे गये कनौजी राय ॥
अबकहँ मिलिहौ लाखनि राना ❋ सो तौ हमहिं देउ बतलाय ॥
बचन बँधे हमरे सँग आये ❋ यहँपर दीन्हें प्राण गँवाय ॥
माता मिलिहै ना देवैसी ❋ भाइ न मिलै बीर मलिखान ॥
मित्र कनौजी अस मिलिहै ना ❋ चाहे सात धरौं अवतार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दिया बुझाय गयो कनउजको * अबहम देहैं कौन जवाब ॥
हमते पुछिहैं रानी तिलका * पुछिहैं हमहिं कुसुमदे रानि ॥
कुसल बताय देउ राना की * तब हम करिहैं कौन उपाय ॥
मुख दिखलैबो भारी परिहैं * क्या जैचँदको दिहौं जवाब ॥
कहि आयेथे हम तिलकाते * पहिले मरै उदैसिंह राय ॥
बात हमारी झूठी होइगइ * हमरे जीवन को धिरकार ॥
सराके ठाढ़ ऊदन रोवैं * लैलै नाम ब्यलमदे क्यार ॥
याही दिनको तुम उपजी थी * तीनों दीपक दियो बुझाय ॥
दिल्ली कनउज औ महुबे को * तुमने दीन्हा दिया बुझाय ॥
आभा बोली तब बेलाकी * तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
लिखी बिधाता को मेटैको * जो कुछ कर्मलिखा सो होय ॥
गढ़ दिल्लीते औ महुबे को * होइहैं सबै सुहागिन राँड ॥
अब तुम रोवत हौ काहेको * काहे भरम गँवायो आय ॥
सुनतै चलिभये ऊदन तहँते * अपनो मरनठानि त्यहिकाल ॥
चौड़ा ब्राह्मण हमको मारै * हम बैकुण्ठ धामको जायँ ॥
सोचि समझि यह बघऊदनने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
ऊदन ललकारो चौड़ा को * ब्राह्मण खबरदार हुइजाय ॥
हम तुम खेलैं रणखेतन में * दुइमें एकु आंकु रहिजाय ॥
आजु अखाड़े में बरनी है * चौडा खेलौ जूझ अघाय ॥
इतनी सुनतै चौड़ा ब्राह्मण * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोल्यो चौड़ा तब ऊदन ते * तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
सम्हरो ऊदन तुम घोड़ा पर * यहकहि लीन्हीं लालकमान ॥
तीर निकारि लियो तरकसते * सो ऊदनपर दियो चलाय ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने होइगयो * कैबर निकरि गयो वापार ॥
साँग उठाई तब चौड़ाने * सो ऊदनपर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ऊदनने * नीचे साँग गिरो अरराय ॥
भाला मारा तब चौड़ा ने * सोऊ ऊदन गयो बचाय ॥
सोचे ऊदन तब अपने मन * हमने मरन करो अख्त्यार ॥
फिरि क्यों बृथा लड़त चौड़ाते * यह मन सोचि उदैसिंह राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऐंड़ लगाई रसबेंदुल के * औ हौदापर उरके जाय ॥
ढालकी औझड़ ऊदन मारी * सोने कलशा दिये गिराय ॥
हौदा मुड़िया भय चौड़ाको * चौड़ा गयो सनाका खाय ॥
खैंचि शिरोही लइ चौड़ातब * लैके रासचन्द्र को नाम ॥
करो जड़ाका बघऊदन पर * ऊदन दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटिगई गैंड़ावाली * सोने फूल गिरे झहनाय ॥
सीस काटलियो तब ऊदनको * ऊदन स्वर्गलोक को जाय ॥
देखिहाल यह इन्दल बोले * औ आल्हाते लगे बतान ॥
काहे दादा यह कैसी भइ * मारे गये उदैसिंह राय ॥
मारयो चाचै यहि चौड़ाने * ताको देउ जानते मारि ॥
हमरी बरनी को नाहीं है * नहिं करि देतेउँ खण्डा चारि ॥
सुनतै गुस्साहोय आल्हा ने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई चौड़ा को * चौड़ा खबरदार हुइजाउ ॥
हाथि बढ़ायो तब चौड़ाने * करमें लीन्हीं लाल कमान ॥
कैवर छांड़ि दियो समुहें पर * आल्हा लीन्हीं चोट बचाय ॥
साँग उठाई तब चौड़ाने * सो आल्हापर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई आल्हा ने * चौड़ा खैंचि लई तलवार ॥
चोट चलाय दई आल्हापर * आल्हा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही चौड़ा मारी * आल्हा लैगे चोट बचाय ॥
टूटि शिरोही गई चौड़ाकी * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
हाथि बढ़ायो तब आल्हा ने * औ अपने मन कियो बिचार ॥
है यह जालिम चौड़ा ब्राह्मण * द्रोणाचारज को औतार ॥
गिरि है रुधिर बुन्द धरतीपर * दुसरो चौड़ा होय तयार ॥
बाँह पकरि के तब चौड़ाको * त्यहि हौदाते लियो उतार ॥
मीजि माजिके चौड़ा मारयो * देखो हाल पिथौरा राय ॥
सोच आयगये पृथीराजको * मारोगयो चौड़िया राय ॥
बड़ो शूरमा यहु मारो गयो * को गाढ़ेमें ऐहैं काम ॥
हाय बिधाता यह कैसी भइ * कोउ न रह्यो शूर सरदार ॥
हाथि बढ़ायो पृथीराज तब * औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पृथीराज बोले आल्हाते * अब तुम खबरदार हुइजाउ ॥
सम्हरिके बैठो तुम हौदामें * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
इतनी सुनते सुनिआल्हाने * समुहें छाती दई अड़ाय ॥
घुंडी खोलिदई आल्हा जब * पिरथी लीन्हा लाल कमान ॥
तीर चलायो पृथीराज ने * लागो तीर भुजा में जाय ॥
लगत तीर के भुजदण्डनते * निकसी तुरत दूधकी धार ॥
देखिहाल यह पृथीराज तब * अपनो हाथी दियो हटाय ॥
मोह आयगो सुनिआल्हाको * मलिमलिहाथबहुतपछिताय ॥
अपने मनमें हम जानीथी * हमरे अमर उदैसिंहराय ॥
जो हम जनते हम अम्मर हैं * काहे मरत लहुरवा भाय ॥
खोली साँकल तब आल्हाने * पचशावदको दियो गहाय ॥
फेरी साँकल तब हाथीने * क्षत्रिन काटकरो खरिहान ॥
जब सुधि आई बघऊदनकी * आल्हा गये क्रोधमें छाय ॥
खड़ग दियो है जो देवीने * सो आल्हाने लियो निकाल॥
जहँलग आभा परी खड़गकी * क्षत्री भये सीसते हीन ॥
सीस उतरिगे सब शत्रुनके * रहिगे चन्द्रभाट पृथिराज ॥
ये दोनों रह वृक्ष ओटमें * तौलो गोरख पहुँचे आय ॥
हाथ पकरिके तब आल्हाको * गुरु गोरखजी लगे बतान ॥
बेटा तजिदेउ अब गुस्सा तुम * अपनी म्यान करो तलवारि ॥
खड़ग म्यानमें करि आल्हा तब * गुरुगोरखको कियो प्रणाम ॥
समुहें आये पृथीराज जब * देखत आल्हा गये रिसाय ॥
नाश करदिया इन भारतको * कीन्हों नाश क्षत्रिय न क्यार॥
चारिहु ओरको आल्हा देखो * कोऊ शूर न परो दिखाय ॥
लोथैं डारीं तहँ लोथन पर * चहुँदिशि देखिपरो सुनसान॥
मारनहित तब पृथीराज के * आल्हा खाँड़ा लियो उठाय ॥
पकरिलियो कर तब गोरखने * आल्हा मानो बात हमारि ॥
छोड़ि देउ तुम पृथीराज को * बनको चलो हमारे साथ ॥
धरिदियो खाँड़ा तब आल्हाने * पृथीराजपै गै नगिचाय ॥
लील छुवाय दियो आँखिनमें * अपनो करिके दयो लौटाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खबरि पहुँचिगइ गढ़महुबेको * सब कटि मरे सूर सरदार ॥
करत विलाप चली रानीसब * समुहें इन्दल परे दिखाय ॥
बोली सुनवाँ तब इन्दलते * बेटा हाल कहो समुझाय ॥
आल्हाऊदन को देखो होय * तौतुम हमहिं देउ बतलाय ॥
यहसुनि आल्हा कहि इन्दलते * तिरिया लेत कंथेका नाम ॥
राज छोड़िके तुम महुबे को * बनको चलो हमारे साथ ॥
बोले इन्दल तब सुनवाँ ते * ऐसो तुमहिं सुनासिब नाहिं ॥
समुहें दादा हमरे ठाढ़े * तुमने लियो कंथको नाम ॥
राख समेटि दई ऊदन को * इन्दल चौरा दियो बनाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे * औ आल्हा सँग भये तयार ॥
चलिभै आल्हा कजरी बनको * लटकति चली सोनमदेरानि ॥
पूँछि काटि दई तब हाथीकी * सुनवाँ गिरी भूमिपर आय ॥
आल्हा चले गये कजरीबन * सोनवाँ जरी कुण्डमें जाय ॥
फुलवा जरिगइ औ रानीसब * अपने दीन्हीं प्राण गँमाय ॥
मल्हना चलिभई पारसलैके * सागर होम दियो करवाय ॥
करिके पूजा वा पारसको * बोली हाथ जोरि महरानि ॥
चन्द्रबंश में जो कोउ होवे * महुबे आय लेय औतार ॥
ताघर ऐयो तुम पूजन हित * नाहीं तुमहिं औरते काम ॥
यह कहि पारस पत्थर लैके * सो सागर में दियो सराय ॥
लंघन करिके परिमालै ने * दुखते दीन्हें प्राण गँवाय ॥
सती होय गइ मल्हनारानी * महुबे दीपक गयो बुझाय ॥
आल्हखंड यह पूरो होइगयो * रहिगयो एक रामको नाम ॥
भूल चूक होइहैं यामें कछु * क्षमिहैं चूक सुजन गुणधाम ॥
पढ़ि प्रसन्न होइहैं सज्जन जन * निन्दा करिहैं क्रूर अजान ॥
आल्हखंड असली बातैं सब * हमने लिखी सुमिरि हनुमान ॥
आल्हा गावौ समय पाय तुम * नितउठि नाम लेउभगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ * सीताराम क्यार धरिध्यान ॥

इति बेलाके सती होने की लड़ाई समाप्त ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

* श्रीः *

अथ ढेबा का ब्याह

अर्थात्–

जलहरगढ़ की लड़ाई।

लेखक–

पं० श्रीलाल उपाध्याय के चरणानुरागी

पं० सुदर्शनलाल त्रिवेदी, 'चक्र' वैद्यशास्त्री,

जिला–फतेहपुरान्तर्गत कस्बा हथगाम निवासी।

* प्रकाशक *

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी।

बाबू बैजनाथ प्रसाद द्वारा–

श्री विश्वेश्वर प्रेस, काशी में

मुद्रित।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ओ३म तत्सत् ।

॥ अथ ढेबा का ब्याह ॥

सुमिरन ।

दो०—गुरु पद पंकज सुमिर उर, नर ढेबा को ब्याह ।
चक्र कबी बर्णन करत, आल्हा छन्द बिबाह ॥

छन्द चौपदी ।

जय त्रिभुवन बन्दन, सुर उर चन्दन, दुष्ट निकन्दन, सदा जये ।
विपति विभंजन, खल दल गंजन, जन मन रंजन, कृपा मये ।
जय जग जननी, भवभय हरनी, जग विस्तरनी, शिव वामा ।
जय बिषय निवारन, कलिमल हारन, अधम उधारन, सुख धामा ॥

कुण्डलिया ।

सबकी बाजी लग रही, धर्म्म राज सों जान ।
लइकै फांसी हाथ में यम घोटैंगे प्रान ॥
यम घोटैंगे प्रान जान जग की भरमावैं ।
मातु पिता सुत नारि बन्धु कोइ पास न जावैं ॥
'चक्र' कहैं संसार सकल यमपुर को जावैं ।
तब रोवैं पछिताय नहीं कुछ पार बसावैं ॥

॥ सुमिरन ॥

मैं पद वन्दौं विप्र वृन्दु के * जे श्रुति नीति शास्त्र बक्तार ॥
परम पियारे नारायण के * धारे विष्णु भक्त उर हार ॥
सुजन वृन्द के पद फिर बन्दौं * जे परकाज खड़े तइयार ॥
लड़ैं सदा पर उपकारे माँ * हरि गुण गड़े बड़े दातार ॥
कड़े न होवैं कबहुँ स्वप्न में * कबहुँ न पड़ैं विषय के जाल ॥
जड़े यथोचित निज धरमैं मा * नाहीं हर्ष शोक केहु काल ॥
फिर पद बन्दौं व्यास देव के * जिन अष्टारह रचे पुरान ॥
सेतु बनायो भव सागर को * धरिकै परब्रह्म का ध्यान ॥
फिर पद बन्दौं मैं तुलसी को * हुलसी पूत भक्त सिरताज ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आल्हा पँवारा को गावत हौं * रखियो नामलिहे की लाज ॥
कण्ठ में बैठो तुम कंठेश्वरि * जिह्वा बैठ सरस्वति माय ॥
देवी शारदा हृदय विराजौ * भूले अक्षर देहु बताय ॥
गावन वारे को गर देदो * औ बजवैय्यै देदो ताल ॥
तुम्हरे अखाड़े मे गावत हौं * माता तुमहिं करो प्रतिपाल ॥
छूट सुमिरनी गई देवन की * शाका सुनो सूरमन क्यार ॥
व्याह बखानै नर ढेवा को * जो महुबे का सूर सर्दार ॥

॥ कथारंभ ॥

चौड़ा राजा जलहर वारो * बकसी जौन पिथौरा क्यार ॥
तेहिके घर में कन्या उपजी * घर २ भए मंगला चार ॥
सुनी खबरिया जब चौड़ा ने * अपनो प्रोहति लीन्ह बुलाय ॥
हाल बतायो सब प्रोहित को * चौड़ा हाथ बंध रहि जाय ॥
लिखौ कुण्डली मोरि बिटियाकी * पंडित हाल देहु बतलाय ॥
कौन नक्षत्तर में जन्मी है * कैसे ग्रहा पड़े दिखराय ॥
पत्रा काढ़ो तब पंडित ने * अँगुरिन राशि लीन्ह बैठाय ॥
मीन मेष को भेद बिचारो * औ चौड़ा सन कही सुनाय ॥
शुभ मुहूर्त औ शुभ साइत में * सब ग्रह पड़े शुभै शुभ आय ॥
भाग्य शालिनी सब बिधि कन्या * पै इक अड़चन परै दिखाय ॥
व्याह होयगो जब कन्याको * तुमको कष्ट होय अधिकाय ॥
युद्ध होयगो महराजा बड़ * मरि हैं बड़े २ सर्दार ॥
शत्रू घर में कन्या जाई * यहिका सकैं न ब्रह्माटार ॥
हँसिके चौंड़ा बोलन लागो * जैसा राम रचैसो होय ॥
दई दक्षिणा—कुल प्रोहित को * उनको विदा दीन्ह करवाय ॥
दिन २ बाढ़न कन्या लागी * जैसे चन्द्र परै दिखराय ॥
चन्द्रकला तोहे नाम धरायो * चौड़ा मनमें गयो बढ़ाय ॥
सोलह बरसकी सो कन्या भइ * यारो सुनियो कान लगाय ॥
एक समइया की बातें हैं * सावन मास गयो नागिचाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

चन्द्रकला सखियन बुलवायो * झूलन हेत भई तय्यार ॥
भूषण पहिने अंग २ में * चहिये जौन जहाँ पर यार ॥
आगे अगेलिया पीछे पछेलिया * बिच २ बँगली दीन्ह डराय ॥
बाजू बन्द सेहेला सोहैं * टड़िया सोहि २ रहिजाय ॥
नाक नथुनियाँ भलसोहत है * तेहि पर लटकन करै बहार ॥
माथे खौर धरो सोनेको * झूमर पहिर जड़ाऊ दार ॥
करनफूल कानन में सोहैं * झुमका झूमि २ रहिजाय ॥
बाला बाली कितनिव पहिरीं * शोभा कही बूतना जाय ॥
दुलरी ऊपर तिलरी सोहै * तेहि पर चम्पकली को हार ॥
बध्धी और हुमेल सजाई * कण्ठा कण्ठ सूबरन क्यार ॥
बरदी पहिरी जब पेटी पर * हीरा चमक २ रहिजायँ ॥
हार नौलखा गर में सोहै * शोभा कही बूतना जाय ॥
कड़ा के ऊपर छड़ा बिराजैं * पाँयन पायजेब झनकार ॥
अनवठ बिछिया भल सोहति है * बाकैं अजब बनी रँगदार ॥
लहँगा पहिरो कीनखाबको * गोटा चमकि २ रहिजाय ॥
ओढ़ी चूनरी धुर दक्षिण की * सब्जै रंग पैर दिखराय ॥
अँगिया पहिनी तारकसी की * जामें छिपे जवाहिर लाल ॥
सोरा बरिस की सबकी उम्मिर * एक से एक सलोनी बाल ॥
पाँव महाउर सबके सोहै * बिच २ चिरियां धरीं सुधार ॥
हाँथन मेहदी नारनौल की * अपनी देती अजब बहार ॥
सब्ज पालकी सब्ज नालकी * सब्जै बाँस नालकिन क्यार ॥
सब्जै डंडा हैं हाथन में * सब्जै सबमें पड़े बहार ॥
सब्जै झालर है रेशम की * बरदी सब्ज कहारन क्यार ॥
सब्ज कियारी हैं धानन की * सब्जै पेड़न लगी कतार ॥
सब्जै रस्सा हैं रेशम के * सब्जै सखी झुलावन हार ॥
चन्द्रकला बागन में झूलै * सखियाँ गावैं मंगलाचार ॥
तेही समइया तेहि औसरमा * यारो सुनियो कान लगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

ढेबा ब्राह्मण महुबे वारो * बगिया बीच पहुँचिगो जाय॥
उतरि बछेड़ा से भुइँ आयो * घोड़ा बाँधि दियो हर्षाय॥
जीन बिछायो फिर घोड़े की * यारो सुनियो कान लगाय॥
ढेबा सोय गयो बगिया में * मनमें ध्याय शारदा माय॥
चन्द्रकला की एक सहेली * घूमत तहाँ पहुँची आय॥
सोवत देखो नर ढेबा को * शोभा देखि २ रहिजाय॥
चढ़ा उतारु भुजदण्डें हैं * मारू सिंहबरन करिहाय॥
माथा चमकै भल योधा का * देवता रूप परै दिखराय॥
मोहित ह्वैके अपने मनमाँ * सखियाँ सोच २ रहिजायँ॥
जायके पहुँची चन्द्रकला ढिंग * औ सब हाल दीन्ह बतलाय॥
पड़ो बहादुर एक बगिया में * ताको रूप न बरनो जाय॥
कैतो इन्द्र देव आए हैं * कैतो बरुण पधारे आय॥
मानुष कोऊ अस देखो ना * देवता सरिस रहो दिखराय॥
सुनिके बातैं ई सखिया की * चलिभइ चन्द्रकला हर्षाय॥
संग सहेली सब चलती भईं * पहुँची वही ठौर सब जाय॥
नूपुर की ध्वनि परम सुहावन * ढेबा कान परी तब जाय॥
निद्रा खुलगई नर ढेबा की * तुरतै उठा भरहरा खाय॥
सूरत देखी चन्द्रकला की * ढेबा सोचि २ रहिजाय॥
की तो आई है रति रानी * की या सची परै दिखराय॥
सूरत देखी नर ढेबा की * चन्द्रकला मोहित ह्वै जाय॥
नजर मिलत खन परलै होइगइ * यारो सुनियो कान लगाय॥
चन्द्रकला इत मुर्छित ह्वै गइ * ढेबा उतै गिरे भहराय॥
आय मूर्छा गइ दोनों को * सखियाँ मनैं गईं घबराय॥
चन्द्रकला को गोदी लइकै * सखियाँ करन लगीं उपचार॥
होश आयगो चन्द्रकला को * दोनों नैना दियो उघार॥
नजर उठाई चन्द्रकला ने * औ ढेबा तन रही निहार॥
देखो ढेबा मोहित ह्वै कै * दीन्ही तन मन सुरत बिसार॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

देखि हकीकत चन्द्रकला यह * मनमें सोचि २ रहिजाय ॥
तुरतै उतरि परी गोदी से * औ ढेबा ढिग पहुँची आय ॥
शीश उठाय लियो गोदी में * औ सखियन से कही सुनाय ॥
पंखा करिदो अब जल्दी से * जासों तुरत मूर्छा जाय ॥
कोऊ तलवा को सहलावै * कोऊ पंखा रही डुलाय ॥
चन्द्रकला मस्तक के ऊपर * कोमल हाथ रही थिरकाय ॥
होश आयगो नर ढेबा को * तुरतै उठा भरहरा खाय ॥
शीश हटाय लियो गोदी से * औ यों बोला बचन सुनाय ॥
कौने राजा की बेटी हौ * हमको साँच देहु बतलाय ॥
हाथ लगायो मोरि देही मा * रहि २ मोर प्रान घबराय ॥
चन्द्रकला तब बोलन लागी * प्रीतम सुनो हमारी बात ॥
चौड़ा राजा जलहर वाले * तिनको जानो हमरे तात ॥
चन्द्रकला है नाम हमारो * अपनो परिचय देहु बताय ॥
ढेबा बोलै चन्द्रकला से * भामिन मेरी बात बनाय ॥
नगर महोबा एक बस्ती है * जहँपर बसैं रजा परिमाल ॥
पारस पूजा जिनके घर में * परजा सबै बड़ी खुशहाल ॥
तिनही राजा की रय्यत हम * औ ढेबा है नाम हमार ॥
आज महोबे से आए थे * भामिन खेलन बनै शिकार ॥
साथ छूटिगा बघ ऊदन का * हम बगिया में पहुँचे आय ॥
इतनी सुनिकै चन्द्रकला तब * दोऊ हाथ बाँध रहिजाय ॥
आज बिलमजाव मोरीबगियामें * प्रीतम काम सिद्ध ह्वै जाय ॥
व्याह रचावैं हम बगिया में * औ फिर मौज करैं हर्षाय ॥
सुनिके बातें चन्द्रकला की * ढेबा कह्यो बचन ललकार ॥
चोरा चोरी ब्याह न करिहैं * बेटी सुनो चौड़िया क्यार ॥
साजि बरातें जलहर अइहैं * सातों भाँवर लिहैं डराय ॥
चन्द्रकला तब बोलन लागी * प्रीतम मेरी बात बनाय ॥
बड़ा लड़इया पिता हमारो * यहि ते मोर प्राण घबराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गंगा करि लेउ फुलबगिया में * तो मेरे मन जाय समाय ॥
गंगा कीन्हीं तब ढेबा ने * औ यों बोले बचन सुनाय ॥
व्याह रचावैं तुम्हरे सँगमा * भाँवरि सात लेयँ डरवाय ॥
पिता तुम्हारे जो मानैं ना * उनकी मुश्क लेहिं बँधवाय ॥
जो इन बातन को पालैं ना * हमको लौटि भगौती खाय ॥
यही समइया यहिं औसर मा * आए उदयसिंह सर्दार ॥
ढेबा मनमें हर्षित ह्वै गा * सुनिके टाप बेंदुला क्यार ॥
ऊदन देखो चन्द्रकला को * मनमें सोचि २ रहि जाय ॥
तौलौं ढेबा उदयसिंह को * सबियां हाल गये बतलाय ॥
सुनिकै बातैं नर ढेबा की * उदया फूलो न अंग समाय ॥
फूल के ऊदल बादर होइगा * जामा टूक २ ह्वै जाय ॥
हँस के बोला चन्द्रकला से * भौजी धीर धरो मन माय ॥
लश्कर लाऊँ मैं महुबे से * सातो भाँवर लेहुँ डराय ॥
धीरज दइकै चन्द्रकला को * दोऊ बीर महोबे जाँय ॥
ढेवा गवने निज मन्दिर को * ऊदन डटे कचेहरी जाय ॥
लगी कचेहरी सुनि आल्हाकी * भस्माभूत लाग दर्बार ॥
सिंह की बैठक छत्री बैठे * ठिहुनन नागिन धरे तरवार ॥
मोढ़ा के संग मोढ़ा रगरैं * कुरसी रगर २ रहिजाय ॥
गोले चढ़े भए भाँगन के * नैना लाल बरन दिखरायँ ॥
खाए अफीमन की गोली कोउ * पलकैं मूँदैं औ रहिजायँ ॥
तबला चटक रहो बँगला में * मंजीरन की ताल सुनाय ॥
छोटी पतुरिया उड़ि २ नाचैं * पके महल मरोरा खायँ ॥
पिंजरा टाँगे ललमुनियन के * शोभा कही बूत ना जाय ॥
बारह द्वारी को बँगला है * तेरा खम्भन की दालान ॥
बड़े २ छत्री सन्मुख बैठे * एकसे एक सुघरुवा ज्वान ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * जापर बैठ बनाफर राय ॥
बाँए बैठे बनरस वारे * नामी बीर तलंसी राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऊदन पहुँच गये बँगला में * तुरते नाच बन्द ह्वै जाय ॥
देखि के सूरत बघऊदन की * खरभर बँगले में मचि जाय ॥
हाथ जोरि के उदन बांकुरा * औ आल्हा तन रहे निहार ॥
नजर घूमि गई नुनि आल्हाकी * औ ऊदन पर परी निगाह ॥
बोले आल्हा तब ऊदन से * भइय्या मेरे उदयसिंह राय ॥
कहा बिचार उठो तेरे मन * साफै हाल देहु बतलाय ॥
ऊदन बोले तब आल्हा से * भइया मेरे बनाफर राय ॥
ब्याह भयो हम सब भाइनको * औ सब मौजैं रहे उड़ाय ॥
बिना बियाहे ढेबा भइय्या * रहि २ मोर प्रान घबराय ॥
हुकुम जो पावैं हम ददुवा का * ढेबा ब्याह देइं करवाय ॥
बातैं सुनिके बघ ऊदन की * बोले तुरत बनाफर राय ॥
युग २ जीवो तुम महुबे माँ * भइय्या मोर उदयसिंह राय ॥
पता लगावैंगे हम भाई * जल्दिन ब्याह दिहैं करवाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदन बोलैं * ओ महराजा बात बनाय ॥
पता लगाए हम बैठे हैं * केवल हुकुम देहु फरमाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदन से * हमको हाल देउ बतलाय ॥
कौने ब्राह्मण की लड़की है * हमहू लेयँ हृदय ठहराय ॥
ऊदन बोले तब आल्हाते * भइय्या मेरे बनाफर राय ॥
चौड़ा ब्राह्मण जलहर वाला * बक्सी जौन पिथौरा क्यार ॥
तेहि की कन्या चन्द्रकला है * चेहरा चन्दा की अनुहार ॥
तेहि सँग ब्याह होय ढेबाको * साफै हाल दीन्ह बतलाय ॥
करो तयारी अब जल्दी से * पंडित आपन लेहु बुलाय ॥
सुनिकै बातैं उदय सिंह की * आल्हा गए सनाका खाय ॥
सूख बतीसी गइ दाँतन की * मुखका पान गएव कुम्हिलाय॥
आल्हा बोले तब ऊदन से * ऊदन अक्किल गई तुम्हार ॥
ब्याह न करिहै चौड़ा ब्राह्मण * नाहक चहै बढ़ाओ रार ॥
सुनिकै बातैं बनाफर की * गुस्सा गयो बदन में आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कारी पुतरिया लाली ह्वै गइँ * नैना अग्नि ज्वाल ह्वै जायँ ॥
मोढ़ा फरके रन बौरे के * औ आल्हासन कही सुनाय ॥
सीधे २ ब्याह न करि है * तो टेढ़ेसे लेहिं कराय ॥
सुश्क बाँधिकै वहि चौड़ाकी * सातौं भाँवरि लेहिं डराय ॥
यहि का भय तनको ना मानो * खाली हुकुम देहु फरमाय ॥
सुनिकै बातैं बघ ऊदन की * आल्हा सोचि २ रहिजाय ॥
सोच समुझि के आल्हा ठाकुर * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
जाय के पूछो चन्देले से * जो वह हुकुम देहिं फरमाय ॥
करो तयारी तब चलने की * साँची बात दीन्ह बतलाय ॥
सुनिकै ऊदन रिसहा होइगा * तुरतै अटा दुवारे आय ॥
हुकम लगायो फिर जल्दी मे * औ बेंदुल को लीन्ह कसाय ॥
फाँदि बछेड़े पर चढ़ बैठो * औ सिरसा की पकरी राह ॥
तीन घरी के फिर अरसा में * सिरसा सहर भझायो जाय ॥
उतर बछेरे से भुइँ आवा * घोड़ा थामि लीन थनवार ॥
जायके पहुँचो दर्बारिन में * जहँ पर तपै बनाफर राय ॥
करी बन्दगी मलखाने को * दोऊ हाथ जोरि रहिजाय ॥
नजर घूमगई मलखाने की * ठाढ़ो दीख लहुरवा भाय ॥
भुजभर भेंटो उदयसिंह को * औ छाती सों लीन्ह लगाय ॥
संगै अपने सिंहासन पर * मलिखे ऊदन लीन्ह बिठाय ॥
मखिले बोले तब ऊदन से * भइय्या मेरे उदयसिंह राय ॥
कारी पुतरिया क्यों लाली भइं * साफै हाल देहु बतलाय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की * बोला तुरत लहुरवा भाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदन बोले * दादा मेरे बात बनाय ॥
नैना नरवर औ पथरी गढ़ * ढेबा करी बिषम तरवार ॥
तिन ढेबा के ब्याह करन को * आल्हा कीन्ह साफ इन्कार ॥
गंगा कीन्हीं चन्द्रकला से * की हम भाँवर लिहैं डराय ॥
हीनी बोलैं आल्हा ठाकुर * यहिते क्रोध रहो तन छाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हुकुम आपका जो हम पावैं * तौ हम व्याह रचावैं जाय ॥
मलिखे बोले तब ऊदन से * हम यह आज्ञा देहिं दिलाय ॥
तुरत कबुतरी को सजवायो * औ ऊदन सँग भए तयार ॥
जाइके पहुँचे नगर महोबे * जहँ परिमाल केर दर्बार ॥
उतर बछेड़न से भुइँ आये * घोड़ा थाम लिहेन थनवार ॥
ऊदन मलिखे दोऊ चलि भे * पहुँचे जाय तुरत दर्बार ॥
जहाँ कचहरी परिमालै की * भस्मा भूत लाग दर्बार ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * बैठो चन्द्र बंश सर्दार ॥
ऊदन मलिखे दोऊ पहुँचे * औ दर्बार पहुँचे जाय ॥
पाँच पैग से कुन्नस करिके * दोऊ हाथ बाँधि रहिजायँ ॥
नजर घूमिगई महराजा की * औ दोऊ पर परी निगाह ॥
भुजभर भेंटौ दोउ बीरन को * औ छाती से लीन्ह लगाय ॥
पास बिठायो दोउ बीरन को * औ फिर बोले प्रेम बढ़ाय ॥
कौन सो कारज तुम्हरो अटको * जो दर्बार पहुँचे आय ॥
हाथ जोरिके मलिखे बोले * औ महराजा बात बनाय ॥
व्याह करैहैं नर ढेबा को * दादा हुकुम देहु फरमाय ॥
सुनिके बातैं नरमलिखे की * सबहीं गए सनाका खाय ॥
कायर सोचैं अपने मनमें * यह धौं आई कौन बलाय ॥
भाँग उतरि गइ भंगेड़िन की * गांजा वाले बात बनाय ॥
मस्त विराजैं सभै अफीमी * पलकैं खोलैं औ रहिजायँ ॥
सूखि बतीसी गइ ज्वानन की * काना फूसी रहे बताय ॥
तब चन्देले बोलन लागे * बेटा मेरे बनाफर राय ॥
कहँ पर ब्याह होय ढेबा को * सोऊ हमैं देहु बतराय ॥
मलखे बोले तब राजा से * तुम सुन लेहु चन्देले राय ॥
चौंड़ा ब्राह्मण जलहर वाला * बक्सी जौन पिथौरा क्यार ॥
तेहि की कन्या चन्द्रकला है * चन्दा सूरज के अनुहार ॥
तहँई व्याह होय ढेबा का * साँचो हाल दीन्ह बतराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनिके बातें मलखाने की * राजा रहे ताहि समझाय ॥
युग २ जीवो तुम सिरसा में * बेटा मेरे भँवर मलखान ॥
ना चौड़ा ने करी सगाई * औ न भेजो यहाँ फलदान ॥
ब्याहन जैहो तुम जलहर में * बेटा हँसिहै सकल जहान ॥
तेहिते अबही चुप कर बैठो * बेटा मेरे भँवर मलखान ॥
पता लगावै कोइ कन्या को * ढेबा ब्याह देहिं करवाय ॥
सुनिके बातें चन्देले की * रिसहा भयो लहुरवा भाय ॥
भभका बेटा दस्सराज को * ज्यों बाँबी में भभकै नाग ॥
ऐसे भभका यह बँगला में * मनु बारूद लगाई आग ॥
नीके करि हैं तो करवइ हैं * टेढी टेढी लेहिं कराय ॥
करै दूसरी हमरे संग में * मारौं राज भंग होइ जाय ॥
दतिया मारो उरछा मारो * मारो खुरासान गुजरात ॥
नैना पथरी नरवर मारो * सब गढ़ थहर २ थर्रात ॥
नाम हमारो उदय सिंह है * हमरी बेंड़ बहै तरवार ॥
सेतु बंध औ रामेसुर लौ * बाजी टाप बेंदुला क्यार ॥
काह हकीकत वहि चौड़ा की * ठढ़े मुश्क लेहुँ बँधवाय ॥
माड़ौ छाऊं मैं ढालन से * भाँवर सात लेहुँ डरवाय ॥
स्याबस स्याबस मलखे भाखैं * युग २ जियो लहुरवा भाय ॥
हमहूं चलि हैं साथ तुम्हारे * भइय्या साँचै दीन्ह बताय ॥
पुष्य नक्षत्तर में जन्मा हूँ * बारह परो बृहस्पत आय ॥
आन देब की कौन चलावै * शंका हमै काल की नाय ॥
बातें सुनके दोउ बीरन की * राजा सोचै औ रहि जायँ ॥
सोच समुझि कै बड़ी देर में * राजा धामन लीन्ह बुलाय ॥
दस पुरवा को तुरतै भेजो * औ आल्हा को लीन्ह बुलाय ॥
उनहिन पायन आल्हा आए * औ दर्बार पहुँचे जाय ॥
बन्दन कीन्हा महराजा की * राजा छाती लीन्ह लगाय ॥
राजा बोलैं तब आल्हा से * तुम सुनि लेहु बनाफर राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऊदन मलिखे दोऊ बिगरे * हमरी एक मानते नायँ ॥
चौड़ा बकसी पृथी राजको * तेहि से युद्ध करन को त्यार॥
तुम्हरी मनोगतिक्या डोलति है* तुम हौ मण्डलीक औतार ॥
आल्हा बोलन नहिं पाए थे * पहिले बोले बीर मलिखान ॥
उवै दिवाकर चहै पश्चिम से * चहु चुइ पैरैं भूमि परभान ॥
व्याह रचावैंगे जलहर में * तेगा तान बीर मलखान ॥
यहि ते आज्ञा दादा देदो * काहे बातें रहे बनाय ॥
स्याबस २ ऊदन बोले * दादा मेरे भँवर मलखान ॥
सुनिकै बातैं दोउ कलहन की * आल्हा सोच २ रहि जायँ ॥
जगनिक भवको तब बँगला में * औ आल्हा से रहो बताय ॥
माड़ौ मारौ नर ढेबा ने * नैनागढ़ौ मचाई रारि ॥
पथरी नरवर औ दिल्ली में * ढेबा जाय करी तरवार ॥
ताके ब्याह करन को मामा * आगा पीछा रहे बताय ॥
हैं हरवारैं नर ढेबा की * उनकी किस्त चुकाओ जाय॥
धन्य बखानैं हम मलिखे को * मामा मेरे उदय सिंहराय ॥
जिनके बल से नगर महोबे * राजैं राज चँदेले राय ॥
हमहूँ चलि हैं मामा सँग मा * जलहर गर्द देहिं करवाय ॥
इतनी बातन के होते खन * पहुंचे आय इन्दलसी राय ॥
जगनिक की पीछे की बातैं * इन्दल कान झलक परिजाय ॥
हमहूँ चलिबै जगनिक भइय्या * साँची हाल दीन्ह बतलाय ॥
सुनिकै बातैं चन्देले ने * अपने मनमें कीन्ह विचार ॥
एक होय तेहिका समुझावैं * ई तो सबही खड़े तयार ॥
हुकुम लगायो महराजा ने * औ पंडित को लीन्ह बुलाय ॥
चूड़ामणि पंडित तब आए * खातिर कीन्ह चँदेले राय ॥
हाल बतायो सब पंडित को * औ यह कहा चँदेले राय ॥
लगन बताय देव जल्दी से * लरका मनै रहे घबराय ॥
पत्रा खोलो तब पंडित ने * सासौ वर्ग मिलावन लाग ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मीन मेष बृश्चिक सब गिनके * सब विधि सबै मिलाए जोग ॥
साइत नीकी चन्देले है * मण्डप अबहीं देहु सजाय ॥
खबर कराई तब महलन में * औ यह हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
बजे नगाड़ा मेरे दल में * सबियां फौज होहिं तइय्यार ॥
सुनिके बातैं महराजा की * खुश भे हृदय सूर सर्दार ॥
खबरैं पहुँची रंग महल में * सखियाँ करैं मंगला चार ॥
मलिखे ऊदन दोऊ चलिभे * जहँ मल्हना को पँवर दुवार ॥
मण्डप सुन्दर तहाँ रचवायो * मोतिन चौक दीन्ह पुरवाय ॥
बन्दनवारी चहुँधा बाँधी * घर २ कलश सूबरन क्यार ॥
घर २ में भइ बड़ी खुसाली * घर २ सखियाँ करैं शृंगार ॥
बारहु रानी परिमालिक की * सोऊ सज धज भईं तयार ॥
बिरमा दिवला दोनों आईं * महलन होय मंगला चार ॥
भयो बुलउव्वा तब ढेबा को * दौरे उदयसिंह सर्दार ॥
तुरत लै आए नर ढेबा को * चन्दन पाटा दीन्ह बिठाय ॥
सात सुहागिन मिलिकै आईं * ढेबा तेल चढ़ायो आय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * नहखुर होन लाग तत्काल ॥
नेगी झगरैं रनि मल्हना ते * हमको चही जवाहिर लाल ॥
सब नेगिन को नेग चुकायो * मल्हना तोड़ा दीन्ह गहाय ॥
कङ्कन बांधो कर ढेबा के * केशर उबटन दिया कराय ॥
गंगा जल सो फिर अन्हवायो * दरजी कपड़ा रहो सजाय ॥
जामा पहिरो मुसरू वाला * तेहि पर कीनखाप मँगवाय ॥
झालर लागी है रेशम की * अस्तर लाग दुदामी क्यार ॥
पैन्ह पैजामा साटन वाला * पगिया सिर में धरो सँभार ॥
खौर लगाओ फिर चन्दन को * तापर बिन्दी करै बहार ॥
भूषण आए तब ढेबा पर * पहिरन लाग ढेबा सर्दार ॥
पहिली लीन्हो तरवारी को * औ बून्दी की असल कटार ॥
अगल बगल में दुइ पिस्तौलैं * बाँधो तुरत शूर सर्दार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुरत पालकी फिर मँगवाई * औ ढेबा को दीन्ह चढ़ाय ॥
मनियाँ देवन को सुमिरन करि * औ शारदको शीश नवाय ॥
इष्टदेव का सुमिरन करिके * ढेबा चढ़े पालकी जाय ॥
चली पालकी नर ढेबा की * कुँवटा ऊपर पहुँची जाय ॥
धरी पालकी गई तहना पर * यारो सुनियो कान लगाय ॥
बारा रानी चन्देले की * देवै विरमा गइं सब आय ॥
देवै बोली तब मल्हना से * ओ महरानी बात बनाय ॥
आल्हा ऊदन मलखे ढेबा * चारो शूर एकही आय ॥
कुवाँ विवाहो अब जल्दी से * देरी काहे रही लगाय ॥
मल्हना बैठि गई कुँवटा पर * आपन पाँव दीन्ह लटकाय ॥
पहिली भाँवर के घुमतै खन * नर ढेबा ने कही सुनाय ॥
प्राण दान माता हम दीन्हों * मेरी तकसीर माफ है जाय ॥
बाग लगाऊँ तोरे नाम का * माता साँची दीन्ह बताय ॥
चरण लागिकै उन मल्हना के * ढेवा रहिगे शीश नवाय ॥
हाथ फेरि दौ रानि मल्हना ने * युग २ जियो बीर सर्दार ॥
सुमिरि शारदा मइहर वाली * ढेबा पलकी भये सवार ॥
ऊदन पहुँचो तब लश्कर में * तोप दरोगा लीन्ह बुलाय ॥
बोला बेटा देशराज का * बड़ि २ तो पैं लेहु सजाय ॥
हनू हँकारणि गर्भ गिरावन * सो चरखिन पर देहु चढ़ाय ॥
बड़ि २ तोपें अष्ट धातु की * समुहें गोल देहु अगियाय ॥
गगन गरज्जन बिजुली तड़प्पन * सो आगे को देहु बढ़ाय ॥
कुवाँ सुखावन बुर्ज मरोरन * भैरो तोप लेहु सजवाय ॥
सूर्य लपकनि चन्द्र झपकनि * तोप कालका करो तयार ॥
तोप संकठा को सजवावो * जो शत्रु को करै सँहार ॥
तोप लछमना को सजवावो * मन पके का गोला खाय ॥
तोप भयंकर परिमाले की * सो चरखी पर देहु चढ़ाय ॥
हाथी दारोगा को बुलवायो * सोने कड़ा दीन्ह डरवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथी सिगरे मेरे दल के * भय्या जाय लेहु सजवाय ॥
बड़े २ हाथिन को सजवावो * छोटे पर्वत के अनुहार ॥
हाथी सगरे गढ़ महुबे को * अब चलने को होहिं तयार ॥
गज इकदन्ता को सजवावो * औ दुइदन्ता लेहु सजाय ॥
मैनकुँज मलया धौरागिर * औ भौंरागिर लेहु सजाय ॥
अंगद गिर औ पंगद गिरि से * मकुना हाथी लेहु सजाय ॥
भूरा हाथी को सजवावो * हौदा उपर देहु धरवाय ॥
मुडिया हौदा को धरवावो * चारों ओर चले तलवार ॥
चुम्बक पत्थर के हौदन को * जल्दी करो जाय तय्यार ॥
हाथी सजन लगे लश्कर में * यारो सुनियो कान लगाय ॥
झूलैं डारीं मखमल वारी * ऊपर हौदा धरे बनाय ॥
गद्दा डारे हैं मखमल को * जिनमा गुठुवन पाँव समाय॥
लगे जवाहिर हीरा मोती * शोभा कही बूतना जाय ॥
हीरा बिराजैं अम्मारिन माँ * झालर लगी मोतियन क्यार॥
बारह कलशा सुबरन वारे * हर हौदन में करैं बहार ॥
एक २ हाथी के हौदा में * बैठे चार चार असवार ॥
दुइ २ भाला औ दुइ बरछी * दुइ २ कमर परी तरवार ॥
बोला दरोगा फिर घोड़न को * चीरा कलँगी दई धराय ॥
बड़ी राशि के जितने घोड़ा * तिन सबहिन को लेहु सजाय॥
हरियल मुश्की घोड़ा साजो * नकुला घोड़ लेहु सजवाय ॥
स्याह सुर्ख कुम्मैत बछेड़ा * सुरखा सब्जा लेहु सजाय ॥
लकवा गर्रा औ कुम्मैता * औ दरियाई होय तयार ॥
अर्बी तुर्की औ तातारी * पँचकल्यानी होय तयार ॥
अबलख घोड़न को सजवावो * समुदा घोड़ करो तय्यार ॥
घोड़ा दरोगा दौरत जावै * पहुँचा जाय तुरत घोड़सार ॥
होय सजावट अब घोड़न की * यारो सुनियो कान लगाय ॥
सुम्म रँगाय दिए मेंहदी सो * फिर केशर सो दीन्ह रँगाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पूँछ रँगाई फिर घोड़न की * अब जेबर को करो शुमार ॥
बारन बारन मोती गूँथे * सुन्दर झालर दई लगाय ॥
गद्दा डारो मखमल वारो * तेहि पर जीन दीन कसवाय॥
परी रकाबैं हैं सोने की * शोभा कछू कही ना जाय ॥
लगे बकसुआ हैं चाँदिन के * औ सोने की बनी लगाम ॥
रस्सी सुन्दर रेशम वारी * जिनके उपर जरी के काम ॥
पड़ी हैकलें हैं सोनेकी * बिच २ हिरा जवाहिर लाल ॥
जेरवन्द ले कीनखाप को * सो सबही के बँधाई हाल ॥
शीशफूल मस्तक पर बाँधे * जापर कलँगी करै बहार ॥
पुट्ठा रँगा दिये मेंहदी से * तापर कलश सूबरन क्यार ॥
घोड़ा सजिगे सब महुबे के * जिनको सजत न लागी बार ॥
ऊदन बोले तब ज्वानन से * यारो सुनियो बात हमार ॥
नौकर चाकर हम जानी ना * तुम सब भाई लगौ हमार ॥
जिनहिं पियारी हो घरतिरिया * अबहीं छोर धरै हथियार ॥
जिनहिं पियारे घर लड़िका हों * अपनी तलब लेहिं घर जाय ॥
जिनहिं पियारी होय भगौती * उइ हमरे सँग लोह चबाय ॥
खटिया परके जो मर जैहो * कोई नाम लेवैया नाय ॥
जो मर जइहौ रनखेतन में * गावैं सात साख लौ नाम ॥
कटि २ बोटी गिरैं खेत में * उठि २ रुण्ड करैं तरवार ॥
सूर सराहैं हम ताही को * साँची कहैं सूर सरदार ॥
पहिरो २ मेरे सहिजादो * जैसी जाके अंग समाय ॥
करन तयारी ऊदन लागे * यारो सुनियो कान लगाय ॥
इक २ जिरहैं दुइ २ बखतर * रजपूतन ने लई उठाय ॥
नीचे पहिरे हैं कछनी बन्द * औ ऊपर से कुलह कबार ॥
तिनके ऊपर बखतर पहिरे * जिनपर तेग नहीं अनियाय ॥
टोप झिलमिला सरपर राखो * गोली लगे चीप ह्वै जाय ॥
सुर्ख पगड़िया है मस्तक पर * लोहे कुंडी दइ लौटाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चीरा कलँगी तोहिके ऊपर * मोती चमक २ रहि जाय ॥
ऊदन मलिखे दोऊ चलिभे * देवी मढ़ी पहुँचे जाय ॥
चन्दन अक्षत औ जल लइकै * सुन्दर कमल लीन्ह मँगवाय ॥
बिछी आसनी मखमल वाली * तापर बैठ दोऊ हरषायँ ॥
पूजा कीन्हों भल शारद की * माथा रहिगे दोउ झुकाय ॥
चौड़ा ब्राह्मण तुव बरदानी * हमहूँ सेवक मातु तुम्हार ॥
तुम्हरेन बलपर हम फूलत हैं * माता लज्जा राखु हमार ॥
पूजा करिके तिन शारद की * दोनों रहिगे शीश झुकाय ॥
आभा बोली तब देवी की * तुम्हरी बिजय लहुरवा भाय ॥
दोनों चलि भए तब मढ़िया से * औ परिमाल कचेहरी जाय ॥
करी बंदगी परिमालय को * दोनों हाथ बाँध रहि जाय ॥
आज्ञा दै देव अब दादा तुम * हम जलहर को खड़ेतयार ॥
आज्ञा दै दइ महराजा ने * शारद रक्षा करैं तुम्हार ॥
ब्याह के ढेबाको लै आओ * हमरो हुकुम बनाफर राय ॥
हुकुम पायके दोनों चलिभे * औ फौजन में पहुँचे आय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * हाहाकारी शब्द गा छाय ॥
पहिले नगाड़ा में जिनबन्दी * दुसरे सबै सजग ह्वै जाय ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * क्षत्री सबै भये असवार ॥
चौथे नगाड़ा के बाजत खन * लश्कर चला महोबे क्यार ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो * तापर ब्रह्मा भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो * ऊदन फाँदि भयो असवार ॥
घोड़ा करिलिया की पीठी पर * इन्दल आल्हा केर कुमार ॥
घोड़ा पपीहा को सजवायो * जगनिक फाँदि भयो असवार॥
ताल्हा सय्यद बनरस वारे * घोड़ा सिंहिनि पर असवार ॥
घोड़ी कबुतरी की पीठी पर * मलखे फाँदि भयो असवार ॥
मन्ना गूजर महुबे वारा * सो बरात को भयो तयार ॥
अली अलामत औ दरियाखां * बेटा जान बेग सुलतान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तेग बहादुर अली बहादुर * जिनकी बेंड़ बहै तरवार ॥
ताल्हा सय्यद के बेटा हैं * एक से एक सूर सर्दार ॥
सो सब घोड़न पर चढ़ि बैठे * अल्ला और खुदा को ध्याय॥
मदन गड़ेरिया महुबे वारो * सोऊ चला शारदा ध्याय ॥
आल्हा ठाकुर की तय्यारी * यारो सुनियो कान लगाय॥
गंगाजल आल्हा मँगवायो * औ अस्नान कियो हर्षाय ॥
लंग चढ़ायो रेशम वारो * शारद मढ़ी पहूँचा जाय ॥
आसन लइकै मखमल वारो * तापर बैठ बनाफर राय ॥
स्तुति कीन्हों भल देबी को * आल्हा हाथ जोर सिर नाय ॥
करैं चढ़ाई हम ब्राह्मण पर * माता खता माफ ह्वै जाय ॥
तुम्हरे बल पर आल्हा फूलैं * माता लाज तुम्हारे हाथ ॥
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर * काटन लाग आपनो माथ ॥
हाथ पकरि लो तब देबी ने * औ आल्हा से रही बताय ॥
हाथ भगेलुन पर डार्यो ना * मान्यो कहा बनाफर राय ॥
चौड़ा ब्राह्मण भक्त हमारो * सोऊ बड़ा बीर बरियार ॥
करै सामना जो संगर में * तौ फिर कौन गहे हथियार ॥
बिजय तुम्हारी अबकी ह्वै हैं * भाँवर सात लिहौ डरवाय ॥
इतनी सुनिकै आल्हा ठाकुर * मनमां बहुत खुशी ह्वै जाय ॥
माथ नवायो महरानी को * आल्हा करन तयारी लाग ॥
नीचे पहिरो सब्ज बनाती * जामे तार लोह के लाग ॥
तेहिके ऊपर झीलम बख्तर * पहिनो मंडलीक औतार ॥
जामा पहिरो तब मुसरू को * गोटा लाग दुदामी क्यार ॥
टोप झिलमिला सरमें दीन्हों * तापर बँधा बैंजनी पाग ॥
चीरा कलँगी तापर खोंसो * जामें हीरा जवाहिर लाग ॥
चन्दन खोरि डटी माथे में * ऊपर बिन्दी करै बहार ॥
छप्पन छुरिया कम्मर खोंसी * औ बूँदी की असल कटार ॥
अगल बगल में दुइ पिस्तौलैं * कम्मर दुइ बाँधी तलवार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कड़ाबीन को जोड़ी लइके * बाँधो और सबै हथियार ॥
सजि ठाढ़े भे आल्हा ठाकुर * मानो इन्द्र अखाड़े जाय ॥
गजभर छाती है क्षत्री की * साढ़े तीन हाथ का ज्वान ॥
हाथी पचशावद साजि आयो * हौदाचमकि चमकि रहिजाय॥
सीढ़ी मँगाई मलयागिर की * सो हौदा तन दई लगाय ॥
सुमिरि शारदा मइहर वारी * मनियाँ देव महोबे क्यार ॥
सीढ़िन २ आल्हा ठाकुर * हाथी ऊपर भे असवार ॥
उठी पालकी नर ढेबा की * औ फिर कूच दीन करवाय॥
डंका बाजे अहतंका के * हाहाकारी शब्द गा छाय ॥
खर २ खर २ कै रथ दौरे * रब्बा चलैं पवन की चाल ॥
फौजैं चलि भइँ बन्नाफर की * सारी धरा उठी तब हाल ॥
दग दग दग करैं महावत * कोऊ हाथी रहे भगाय ॥
कोउ २ घोड़ा मोर चाल पर * कोउ २ हंस चाल पर जाय ॥
कोउ २ घोड़ा कदम चाल पर * कोऊ दुलकी रहे चलाय ॥
कोउ २ क्षत्री मन के मौजी * सरपट घोड़ा रहे बढ़ाय ॥
गाड़ी चलि भइँ तोपन वारी * घूरी करर २ रहि जाय ॥
पाथर पिसके कांकर होइगा * कांकर पिसे रेत ह्वै जाय ॥
गर्द उड़ानी आसमान में * लोपे अन्धकार में भान ॥
मारू डंका चहुँधा बाजैं * यारो बचन करो परमान ॥
आठ रोज की मंजिल करके * जलहर धुरो दबायो जाय ॥
डेरा डार दियो धूरे पर * ऊदन तम्बू दीन गड़ाय ॥
आठ कोसलौं फौजैं परिगइँ * तँबुवन रही लालरी छाय ॥
ऊभे ऊभे तँबुवा गड़ि गे * नीचे दीन्ह बजार लगाय ॥
कम्मर खुलगइ हैं ज्वानन की * सबने खोल धरे हथियार ॥
जीन उतार धरे घोड़न के * हाथिन हौदा धरे उतार ॥
हाथी बँध गए हथखाने में * घोड़ा लगे थान से जाय ॥
चढ़ी रसोइय्याँ उमरायन की * शोभा कही बूत ना जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चरि २ गौवैं घरका डगरीं * चिरियाँ लिहेन जाय बसन्यार ॥
हियाँ की बातैं हियनैं रहिगइँ * आगे और भईं तय्यार ॥
तारागन नभ चमकन लागे * संतन धुनी दीन्ह परचाय ॥
अस्ताचल को सूर्य्य देव गे * संझाकाल पहूँचो आय ॥
रहै समुन्दर में जब लौ जल * जब लौं रहैं चन्द्र और सूर ॥
बैजनाथ परसाद जहाँ में * यश सो रहैं सदा भरपूर ॥
करौं तरंग यहाँ से पूरन * मनमें सुमिरि भवानी कंत ॥
राम रमा मिलि दर्शन दीजै * इच्छा यही मोर भगवन्त ॥
इति श्री ढेबा का ब्याह पंडित सुदर्शनलाल त्रिवेदी वैद्यशास्त्री कृत
प्रथम तरंग सम्पूर्णम् ।

* सुमिरन *

श्री रघुनाथ सियाबर को शिर नाय कबीन्द्रन को शिर नाऊँ ॥
दुष्ट प्रभंजन को हनुमंत प्रभूत बली सब भाँति मनाऊँ ॥
ध्याऊँ सदा गुरु के पद पङ्कज शम्भु पदाम्बुज में लवलाऊँ ॥
भारत भूषण शत्रु निदूषन शूरन वीरन के गुण गाऊँ ॥

* आल्हा छन्द *

चरण मनाऊँ शिव शंकर के * जेहि सिर गंग भंग आधार ॥
भस्म रमाये अंग २ में * नन्दी बृषभ नाथ असवार ॥
भाल चन्द्रमा भल सोहत है * धारे कण्ठ मुण्डकी माल ॥
शर्प बिषैलन के आभूषण * अम्बुजसरिसनयनत्रयलाल ॥
जटा जूट अर्द्धंग बिराजैं * आधे अङ्ग अम्बिका माय ॥
भूत पिशाच प्रेत सँग डोलैं * बोले बचन बनाय बनाय ॥
कर डमरू त्रैशूल बिराजै * नैनन रही लालरी छाय ॥
हैं वरदानी सब देवन में * महिमा रहे सकल सुर गाय ॥
सुखराशी कैलाश निवासी * हैं अविनाशी शम्भु सुजान ॥
सुख दायक सबही गुण पायक * पूरन करै कार्य्य जन जान ॥
सीघ्र प्रसन्न होत शिवशंकर * भोला नाथ वरद आरूढ़ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऐसे विश्वनाथ विश्वेश्वर * क्यों ना भजे काम तजिमूढ़ ॥
छूट सुमिरनी गइ देवन की * शाका सुनौ सूरमन क्यार ॥
एपन वारी द्वारे जाई * बारी बिषम करी तरवार ॥

* कथारम्भ *

चढ़ी रसोइय्यां उमरावन की * कोइ २ कसरत रहे लगाय ॥
तीन दिना धूरेपर होइके * ऊदन सोच २ रहिजाय ॥
जायके पहुँचा वहि तम्बू में * जहँ पर बैठे बनाफर राय ॥
लगी कचेहरी सुनिआल्हा की * तबला गमकि २ रहिजाय ॥
जोड़ी नाच रही कथकन की * कमरैं तीन २ बल खायँ ॥
नाचैं गावैं भाव बतावैं * औ क्षत्रिन को रहे रिझाय ॥
तौलौं ऊदन दाखिल ह्वैगा * सबही इधर उधर हटि जायँ ॥
देखि कै सूरत उदयसिंह की * तुरतै नाच बन्द ह्वै जाय ॥
नजर घूमि गइ सुनि आल्हा की * औ ऊदन पै नजर परजाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदन से * अपनो हाल देहु बतलाय ॥
ऊदन बोलैं तब आल्हा से * भय्या मेरी बात बनाय ॥
देर लगइबे की बेरिया न * अपनो पंडित लेहु बुलाय ॥
बातैं सुनिके उदयसिंह की * राजा हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
औ बुलवायो चूड़ामणि को * सो तम्बू में पहुँचे आय ॥
खोल पत्तरा देखन लागे * गण वर्गन सब लीन्ह मिलाय॥
सगुन बिचारो चौघड़िया को * मेष लगन लीन्हीं ठहराय ॥
साइत नीकी दरवाजे की * ऐपनवारी देउ पठाय ॥
इतनी बात सुनी बघ ऊदन * रूपन बारी लीन्ह बुलाय ॥
बोलैं ऊदन तब रूपन से * भय्या मेरे रूप सर्दार ॥
ऐपनवारी को लैजावो * माँगो नेग दुवारे क्यार ॥
इतनी सुनिके रूपना बोलै * तुम सुन लेहु लहुरवा भाय ॥
हमरे भरोसे तुम ना रहिहौ * हम नहिं मूड़ कटैहैं जाय ॥
औरौ बारी हैं महुबेको * तिनको जलहर देहु पठाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

रहियो धोखे ना पथरी के * जहँपर ब्याहे भवर मलखान॥
कठिन मवासी है जलहर की * ब्राह्मण देव परैं दिखराय॥
बड़े बड़े योधा तेहि चौड़ा के * दाहिन सदा शारदा माय॥
ऊदन बोलै तब रूपन से * रूपन भय्या बात बनाय॥
ढेबा बियाहन को ना रइहैं * बतिया कहिवे को रहिजायँ॥
परजा वारी हम ना जानैं * तुम तो भय्या लगो हमार॥
गदा बनेठी बाना फेंको * तेहा राखो बीरता क्यार॥
ऐसी हीनी जो तुम बोलिहौ * तो फिर जइहैं काम नसाय॥
यहिसे झटपट भय्या साजिकै * ऐपनवारि देहु पहुँचाय॥
इतनी सुनिकै रुपना बोलैं * भय्या मेरे लहुरवा भाय॥
कहन तुम्हारी को ना टारैं * ऐपन वारी दें पहुँचाय॥
घोड़ा मनुरथा ढेबा वारो * अबहीं बेगि करो तय्यार॥
पाँचो कपड़े नर ढेबाके * औ ढेबाकी ढाल तरवार॥
पाग पैजनी ढेबा वारी * चीरा कलँगी देव मँगाय॥
कहन मानिकै तब हम तुम्हरी * जलहर नेग लेहिं चुकवाय॥
जो जो बात कही रुपना ने * ऊदन तुरतै दीन्ह मँगाय॥
सजिगो बारी महुबे वारो * शोभा बूत कही ना जाय॥
फाँदि बछेड़े पर चढ़ बैठो * रूपन मनै शारदा ध्याय॥
तीन घरी के फिर अरसा में * फाटक ऊपर पहुँचा जाय॥
सूरत देखी दरबानी ने * गरुई हाँक दीन्ह ललकार॥
कहाँ से आए औ कहँ जइहो * कहँ के कौन शूर सर्दार॥
रूपन बोलै दरबानी से * औ दरबानी बात बनाय॥
नगर महोबा एक बस्ती है * जहँ पर बसत बनाफर राय॥
नाम चन्देले जग जाहिर है * पारस पूजा की अधिकाय॥
लोहा छुवत सोन ह्वै जावै * तेहि की बात कौन बतियाय॥
तिनके घर के हम बारी हैं * औ रूपन है नाम हमार॥
आई बरातैं हैं महुबे की * औ लाए हम ऐपन वार॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

खबर सुनाओ तुम राजा को * हमरो नेग देहिं मँगवाय ॥
बातैं सुनिके तहँ रुपना की * दर्वानी ने कही सुनाय ॥
कहा नेग ढारे को तुम्हरो * सोऊ आप देहु बतराय ॥
रूपन बोलै दर्वानी से * औ दर्वानी बात बनाय ॥
चार घरी भर चले सिरोही * ढारे बहै रक्त की धार ॥
जाय के कहियो महराजा से * चाही यही नेग सर्कार ॥
तब दर्वानी बोलन लागो * औ घोड़े के विकट असवार ॥
ठंढे ह्वैके ढारे अइयो * तब फिर खबर करैंगे यार ॥
नशा उतारे पर इत आयो * फाटक तुरत देहिं खुलवाय ॥
सुनिके बातें दर्वानी की * रूपन बारी उठा रिसाय ॥
धरि ललकारो दर्बानी को * गाँड़ू काह रहा बतराय ॥
खबरैं करदे महराजा को * नहिं तो ठाढ़ ढार पछिताय॥
इतना कहिकै रूपन बारी * ऐंडा मसका मनुरथा घ्वार ॥
उड़ो बछेड़ा आसमान पर * फाटक निकर गए वा पार ॥
लगी कचेहरी जहँ चौड़ा की * भस्मा भूत लाग दर्बार ॥
बड़े २ योधा बँगला बैठे * एक से एक सूर सर्दार ॥
ताहर बेटा पृथीराज को * सोऊ एकलँग परै दिखाय ॥
तौलौं बारी दाखिल ह्वैगा * गो दर्बार सनाका खाय ॥
करी बंदगी रूपन बारी * ऐपन वारी दीन्ह चलाय ॥
चौड़ा पूछै तब बारी से * ऐपन वारी दीन्ह चलाय ॥
रुपना बोलै तब चौड़ा से * तुम सुनि लेहु चौड़िया राय॥
आई बरातैं गढ़ महुबे से * नर ढेबा का करैं विवाह ॥
ऐपनवारी हम लाए हैं * हमरो नेग देहु मँगवाय ॥
चौड़ा बोलो तब बारी से * अपनो नेग देहु बतराय ॥
रूपन बोलो तब चौड़ा से * गर्रुई हाँक दीन्ह ललकार ॥
तीन घरी भर चलै सिरोही * ढारे बहै रक्त की धार ॥
नेग हमारो यही चाहिये * जल्दी आप देहु मँगवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बातैं सुनिके अस बारी की * ताहर अगिन ज्वाल ह्वैजाय॥
हुकुम लगाय दियो ताहर ने * बारी मुड़ लेहु कटवाय॥
देवी मरहठा दक्षिण वारा * सुनतै उठा भरहरा खाय॥
गुर्ज उठाय लियो देबी ने * औ रूपन पर दीन्ह चलाय॥
बाएँ से घोड़ा दहिने ह्वै गा * नीचे साँग गिरी अरराय॥
सुमिरि शारदा महुबे वारी * रूपन खैंचि लीन्ह तरवार॥
बाग दाब लइहै दाँतन में * दूनो हाथ करै तरवार॥
रूपन मारै तरवारी से * घोड़ा टापन रह्यो गिराय॥
एकै मारै एक ललकारै * तीसर घौंस खाय भगजाय॥
बड़ी लड़ाई भइ द्वारे पर * औ बहि चली रक्तकी धार॥
रूपन विचलो रण खेतन में * मारै ढूँढ़ि २ सर्दार॥
मूड़न केरे मुड़ चौरा में * औ रुण्डन के लाग खरिहान॥
भगे सिपाही जलहर वारे * सूझै कछु न अपन बिरान॥
तब ललकारो फिर चौड़ा ने * टूटे एक साथ सर्दार॥
सुमिरन करके नारायण को * रूपन गरू दीन्ह ललकार॥
छोड़ि आसरा जिन्दगानी को * रूपन गोल गयो समिपाय॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठे * जैसे सिंह बिडारै गाय॥
तैसेइ टूटो रूपन वारी * आपन मया मोह बिसराय॥
एड़ा मसकी तब घोड़े को * घोड़ा आसमान मड़राय॥
कारे बादर की लाली में * घोड़ा गयो तुरत समिपाय॥
घोड़ा मनोरथा उतरत आवै * मानो गिरह कबूतर खाय॥
घोड़ा उतरो दर्वारिन में * जहँ पर बैठ चौड़िया राय॥
भाला लइकै नाग दौन की * ऐपन बारी लई उठाय॥
एड़ा मसको फिर घोड़े को * घोड़ा आसमान उड़ि जाय॥
मारु २ करि क्षत्री दौरे * रूपन अम्बर में मड़राय॥
बाग मोर दई फिर घोड़े की * फाटक निकर गयो बापार॥
देखि हकीकत यह बारी की * चौड़ा मनमें करै बिचार॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बड़े लड़ाक महुबे वारे * अब धौं काह करै कर्तार ॥
राय मिलायो फिर ताहर से * बेटा जौन पिथौरा क्यार ॥
बेटी व्याहैं जो ढेबा सँग * बूड़ै सात साख को नाँव ॥
नाहीं करिहैं जो व्याहन से * तौ हूँ लगै काल को दाव ॥
ताहर बोलै तब चौड़ा से * तुम सुन लेहु चौड़िया राय ॥
लिखी हकीकत सब हियनाकी * औ ददुवा को देहु जनाय ॥
फौजें आवैं गढ़ दिल्ली से * सब के मूड़ लेहिं कटवाय ॥
यह मत भाय गई चौड़ा के * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
कागज लइकै कलपी वारो * चौड़ा लिखन हकीकत लाग ॥
श्री सरब उपमा लिखिकै * ता पाछे में सात सलाम ॥
लिखी हकीकेत फिर चौड़ाने * तुम सुनलेहु पिथौरा राय ॥
चढ़े महुबिया महुबे वारे * जलहर शहर लीन्ह घिरवाय ॥
लाइ बरातैं गढ़ महुबे से * जोरा जोरी करैं विवाह ॥
बिटिया व्याहि देहिं ढेबाको * तौ सब जगत हँसै नरनाह ॥
लिखी हकीकत हमने सारी * तुमहूँ ठीक लेउ ठहराय ॥
फाटक बन्दी गढ़की करके * चौड़ा तकै तुम्हारी राह ॥
बन्द लिफाफा में करि दीन्हों * औ धावन को दीन्ह गहाय ॥
फांदि सांडिनी पर चढ़ि बैठो * औ दिल्ली की पकरिलइ राह ॥
जाय के पहुँचो गढ़ दिल्ली में * जहँ दर्बार पिथौरा क्यार ॥
उतर सांड़िनी से भुइँ आयो * हाजिर जाय भयो दर्बार ॥
पाँच हाँथ ऊचा सिंहासन * जापर तपे पिथौरा राय ॥
बड़े २ क्षत्री तहवाँ बैठे * एक से एक अधिक उमराय ॥
पाँच पैग से कुन्नस करिके * धामन पाती दीन्ह गहाय ॥
पकरि कतरनी से बन्द काटो * आंकुइ आक नजरि करिजाय॥
पाती पढ़तै परलै होयगइ * राजा गए सनाका खाय ॥
मूख बतीसी गै दांतन की * मुँह का पान गया कुम्हलाय ॥
नौ कोठे से नाड़ी काँपी * सबियाँ देह उठी थर्राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

लखी हकीकत महराजा की * सब दर्बार गयो सन्नाय ॥
चुपके होइके पृथीराज तब * सवियाँ ध्यान गए दौराय ॥
क्रोध आयगा तब देही में * औ वीरत्व गयो तन छाय ॥
हुकुम लगायो महराजा ने * मेरी फौज होय तय्यार ॥
हुकुम सुनत खन परलै होइगइ * साजन साज लगे सर्दार ॥
हाथी दरोगा को बुलवायो * सोना कड़ा दिये डरवाय ॥
तोप दरोगा को बुलवायो * चीरा कलँगी दीन्ह गहाय ॥
आयो दरोगा घोड़न वारो * ताको तोड़ा दवो पकराय ॥
फौज सजाओ सब जल्दी से * हमको पल २ होय अवार ॥
एक दंता द्वै दंता सजिगै * हाथी सबै भए तय्यार ॥
सब पर झूलैं परी सुनहरी * सब पर हौदा दीन्ह धराय ॥
जीन धराओ सब घोड़न पर * पाँवन मेंहदी दीन्ह रँगाय ॥
लगी झालरैं हैं मोतिन की * रेशम तेग दई खिंचवाय ॥
तुर्की ताजी औ कुम्मैता * अरबी घोड़ा लीन्ह सजाय ॥
हरियल मुश्की पचकल्यानी * काठी सब पर धरी बनाय ॥
फेर साँड़ियन को सजवायो * गर चौरासी दई डराय ॥
पाँव पैजनी भरे छमाके * गल हमेल कण्ठा हहराय ॥
लाल बनाती मुल्तानी की * ऊपर झूलैं दई डराय ॥
तंग कसाय दिये रेशम की * शोभा कही बूत ना जाय ॥
सजी पालकी और नालकी * औ सुखपाल लीन्ह सजवाय ॥
सवियां फौजैं पृथीराज की * डंका बाजत खन सजि जाय ॥
सुनो सजावट सरदारन की * हमरे बूत कही ना जाय ॥
लाल कुर्तिया सबने पहिनी * ऊपर बखतर लीन्ह सजाय ॥
झीलम बखतर फौलादी है * जिनमें सांग नहीं अनियाय ॥
ताके ऊपर से झीलम है * जामे तेग मरोरा खाय ॥
बारह जोड़ी बजै नगारा * बाजै तुरही औ करनाल ॥
नौसै झण्डा है फौजन में * एकदम गई लालरी छाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बावन झण्डा हैं निशान के * तिनमें ध्वजा रही फहराय ॥
बजैं बाँसुरी कहु दंगल में * शोभा कही बूत ना जाय ॥
हाथी चढ़्या हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
कोइ नालकी कोइ पालकी * कोई रथ ऊपर असवार ॥
सब दल उमड़ो पृथीराज को * आठ कोस लौं लगी कतार ॥
कूँच कराय दियो लश्कर को * मारू डंकन की धुधकार ॥
हियाँ की बातैं हियाँ छोड़ दई * अब आगे की कहै सुनाय ॥
रूपन पहुँचो निज फौजन में * आगे मिलो लहुरवा भाय ॥
आवत देखो तिन रूपन को * बारी रंग विरंगा ज्वान ॥
रक्त स्नान किये है बारी * हाथमा लिहे नगिन किरपान ॥
ऊदन बोले तब रूपन से * भय्या हाल देहु बतलाय ॥
कैसी गुजरी है जलहर में * कैसो लोह परै दिखराय ॥
रूपन बोलै तब ऊदन से * तुम सुनि लेहु लहुरवा भाय ॥
कठिन मवासी गढ़ जलहर है * तुमसे साफ दीन्ह बतलाय ॥
अब तक जीते हौ ठकुरन को * यह बँभनेठे बुरी बलाय ॥
देवी शारदा को बरदानी * भारी भक्त चौड़िया राय ॥
सेना अइहै गढ़ दिल्ली से * भारी होय घोर घमसान ॥
ड्यूटी अपनी पूरी कर दइ * आगे मालिक हैं भगवान ॥
चौड़ा धाँधू करैं सलाहैं * माहिल तहाँ पहूँचे आय ॥
देखिकै सूरत तिन माहिल की * ताहर बोल उठे हर्षाय ॥
आओ आओ उरई वाले * आए भले समय में यार ॥
चढ़े महुबिया महुबे वारे * अपनी करिये कछु बिचार ॥
माहिल बोले तब ताहर सों * तुम सुनलेहु बीर चौहान ॥
लड़े न जीतिहौ इन कलहन से * भारी बीर भँवर मलखान ॥
धोखा दइकै इनको मारो * तुम्हरो काम सिद्ध ह्वै जाय ॥
ताहर बोलै तब माहिल से * नीकी जुगत देहु बतलाय ॥
सरबत भेजो तुम जनवासे * तामें जहर देहु घोरवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

संगै चलिहैं हमहूँ तुमहूँ * कोरा एक घड़ा रहि जाय ॥
तेहिते प्यावौ हमको तुमको * उनको जहर देहिं पिलवाय ॥
मनै आयगइ यह ताहर के * तुरतै जहर दीन्ह घोरवाय ॥
एक घड़ा सादा सर्वत लै * सो सब बँहिगिन दीन धराय ॥
लइके चलिभै ताहिर माहिल * औ जनवास पहुँचे जाय ॥
करी खातरी बघऊदन ने * ऊँची गद्दी दीन्ह डराय ॥
ताहिर माहिल तेहिपर बैठे * पूछी कुशल बनाफर राय ॥
कियो इशारा तब ढेबाने * औ मलिखेकी नजर परिजाय ॥
शरबत लइके जलहर वारा * एकजा नाँदन दीन्ह भराय ॥
यहगति देखी जब ताहर ने * भागे कान जनेव चढ़ाय ॥
माहिल ठाकुर जान न पाए * रूपन लायो ग्लास उठाय ॥
ऊदन बोलै तब माहिल से * मामा शरबत भयो तयार ॥
माहिल बोले तब ऊदन से * सुनिये उदयसिंह सर्दार ॥
नहीं बरातन में हम आए * शरबत हमरी पियै बलाय ॥
सुनिके बातैं ई माहिल के * हँसके बोला लहुरवा भाय ॥
नहीं बरातन में तुम आये * तबहीं जहर लाए घोरवाय ॥
नीके पीहौ तो पिलवै हैं * नाहीं तो टेढ़े देहिं पिलाय ॥
माहिल तड़पे तब बँगला में * ऊदन अकिल गई तुम्हार ॥
जहर होय या होय संखिया * हमको कौन परी दर्कार ॥
हम नहिं पी हैं या सरबत को * चाहै कोटिन करौ उपाय ॥
माहिल राजा की बातैं सुनि * पकरौ दौरि लहुरवा भाय ॥
हाथ पावँ माहिल बहु पटको * पै धरि मुश्क लीन्ह बँधवाय ॥
दया आय गइ सुनि आल्हाके * माहिल बन्दि दीन्ह छोड़वाय ॥
माहिल भागे तब फौजन से * औ जलहर में पहुँचे आय ॥
तौलौं धामन देहली वारो * सोऊ तहां पहुँचो आय ॥
कही हकीकत पृथीराज की * आए शब्दबेधि चौहान ॥
सुनिके बातैं अस धामन की * चौड़ा मनैं बहुत हर्षान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हुकुम लगाय दियो चौड़ा ने * मेरी फौज होय तय्यार ॥
डंका बाजे अहतंका के * क्षत्री सबै भए हुशियार ॥
पहिले नगाड़ा में जिनबन्दी * औ दुसरे में भये तय्यार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * क्षत्री सबै भये असवार ॥
हाथी चढ़ैय्या हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
दुइ २ भाला दुइ २ बरछी * दुइ २ कमर पड़ी तलवार ॥
गज एकदन्ता को सजवायो * यारो सुनियो कान लगाय ॥
झूल डालदी रेशम वारी * मखमल गद्दी दीन्ह डराय ॥
तेहिके ऊपर धरि अम्बारी * सुबरन कलशा धरे मँगाय ॥
गद्दी डारी फिर मखमल की * जामें गुठुवन पाँव समाय ॥
मस्तक रँग दो एकदंता को * घंटा गरे दीन बँधवाय ॥
सीढ़ी लइके मलयागिरि की * सो हाथी में दीन्ह धराय ॥
सुमिरि शारदा मइहर वाली * औ शंकर के चरन मनाय ॥
चढ़िगो चौड़ा एकदन्ता पै * नारायण के चरण मनाय ॥
घोड़ा नाम दलगंजन ऊपर * ताहर पिरथी केर कुमार ॥
बड़ा लड़य्या यहु रन बौरा * कलयुग करन केर औतार ॥
फौजैं चलि भइँ जलहर गढ़ से * औ धूरे पै पहुँचीं जाय ॥
एक हरिकारा दौरति आवै * औ ऊदन से कही बुझाय ॥
केहिकी निदिया तुम सोवत हौ * भय्या मेरे लहुरवा भाय ॥
आईं फौजें गढ़ जलहर से * औ धूरे पै पहुँची आय ॥
सुनी खबरिया उदयसिंह ने * औ उठि बैठ भरहरा खाय ॥
हुकुम लगायो है फौजन में * भय्या फौज पहुँच गइ आय ॥
करो तयारी अब जल्दी से * अपने बाँधि लेहु हथियार ॥
मारि गिराओ मेरे सहिजादो * मुर्चा हटै चौड़िया क्यार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * सबियाँ फौज भइँ तय्यार ॥
हाथी चढ़ैया हाथी चढ़िगे * बांके घोड़न के असवार ॥
सजिके फौजें सब ठाढ़ी भइँ * मुर्चा ऊदन दियो लगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घोड़ा बेंदुला रनमें नाँचै * घोड़ी थिरिक थिरिक रहिजाय ॥
घोड़ा करिलिया पै इंदल है * जगनिक पपिहा पर असवार ॥
आल्हा बैठे पचशावद पर * सय्यद सिंहिन पर असवार ॥
अली अलामत औ दरिया खां * बेटा जान बेग सुलतान ॥
तेग बहादुर अली बहादुर * जिनको जानत सकलजहान ॥
तेऊ त्यार भए जल्दी से * औ घोड़न पै भए सवार ॥
मदन गड़ेरिया महुबे वारा * सोऊ बाँध लीन हथियार ॥
जायके पहुँचे रनखेतन में * मुर्चा अपने दिये लगाय ॥
ताहर घोड़ा दाबे आवैं * औ ऊदन से रहे बताय ॥
काहे रार मचाई ऊदन * काहे काल गरेरो आय ॥
काल तुम्हारो अब आयो है * नाहक मूड़ कटायो आय ॥
अबहूँ लौट जाव महुबे को * अबहूँ कछु नसायो नाथ ॥
ऊदनि बोले तब ताहर से * ठीकै आप रहे फरमाय ॥
पै रन चढ़िके पीछे लौटैं * हमरी झूठ परै तरवार ॥
दतिया मारयों उरछा मारयों * मारयों ढूँढ़ि ढूँढ़ि सर्दार ॥
काबुल औ कंधार बिडार्‌यो * नैना पथरी दिये नसाय ॥
मुहरा मारयो पृथीराज को * ब्रह्मा ब्याह लीन्ह करवाय ॥
तब नहिं ताहर मूड़ कटायो * अब हियँ सेखी रहे बघार ॥
सेतुबंध औ रामेश्वर लौ * बाजी टाप बेंदुला क्यार ॥
सूधे सूधे ब्याह करावौ * सातो भाँवर देहु डराय ॥
डोलो दइके चन्द्रकला को * सबियाँ झगड़ा देहु मिटाय ॥
जगमें जाहिर सबकोई जानै * महुबे बसैं बनाफर राय ॥
जोहिकी बिटिया नीकी देखैं * जोरा जोरी करें विवाह ॥
तुम्हें मुनासिब अब याही है * चुपके ब्याह देव करवाय ॥
नहिं तो अरुझे रन खेतन में * मारों राज भंग ह्वै जाय ॥
बातन बातन बतबढ़ ह्वैगे * औ बातन में बढ़िगै रार ॥
बहु रणबंका पृथीराज सुत * कलहा उदयसिंह सर्दार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हुकुम लगाय दियो ताहर ने * तोपन आगी देहु लगाय ॥
भई खबरिया जब फौजन में * गोलन्दाज उठे हर्षाय ॥
ऊदन आए अपनी फौजन * अपनो हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
बत्ती दै देव मेरि तोपन में * इन पाजिन को देहु उड़ाय ॥
इतनी सुनिके झुके खलासी * औ तोपनपर पहुँचे जाय ॥
लइके थैली बारूदन की * सो तोपन में दई चलाय ॥
तिनके ऊपर गोला डारे * सुम्मा ठोकि २ रहिजायँ ॥
रंजक धरिके फिर प्यालन में * तुरतै बत्ती दई लगाय ॥
धुवाँ उड़ानो आसमान में * दोउ दल अंधकार गोछाय ॥
गोला ओला के सम बरसैं * तोपैं अरर २ अररायँ ॥
अररर अररर गोला बोलैं * कह २ करै अगिनियाँ बान॥
सर सर सर सर तीरैं छूटैं * कटि २ गिरैं सुघरुवा ज्वान ॥
परो सनाका जब तीरन को * कैवर मन्न मन्न मन्नाय ॥
गोली छूटै बन्दूकन से * मानो मघा बुन्द झरलाय ॥
जेहि हाथी के गोला लागै * मानो चोर सेंध कइ जाय ॥
जौने ऊँटके गोला लागै * तुरतै सार गिरै अललाय ॥
जौन घोड़ के गोला लागै * मानो कला कबूतर खाय ॥
जेहि क्षत्री के गोला लागे * धुनिकत रूई सरिस उड़िजाय॥
गोला जँजिरहा जिनके लागे * तिनकर हाड़ मास उड़जाय ॥
बम्ब का गोला जिनके लागे * सीधे चला स्वर्ग को जाय ॥
फूटै गोला जब खेतन में * विगहन फौज देहि बिथराय॥
बड़ी लड़ाई भइ तोपन की * सुम्मा लाल बरन ह्वै जाय ॥
मास उड़ानो है चुटकिन को * तोपन हाथ धरो ना जाय ॥
तोप लड़ाई बन्द भई तब * कड़ाबीन लौ हाथ उठाय ॥
तड़ २ तड़ २ गोला बरसैं * मानो मघा बूँद झरलाय ॥
जेहिं हाथी के गोली लागै * पीछे पाँच-पैग हटजाय ॥
जौन ऊँट के गोली लागै * भागै सार तुरत अललाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जेहि घोड़ा के गोली लागे * सोऊ घूमि २ मरजाय ॥
जेहि क्षत्री के गोली लागे * सो मुँह भरा गिरै मरजाय ॥
पहर एक भर गोली बरसी * ज्वानन लीन कमान उठाय ॥
मर २ मर २ मचै कमानियाँ * गाँसी डेढ़ सेर की खाय ॥
सर २ सर २ तीरैं चल रहीं * चारो ओर रही सर्राय ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के * रहिगा डेढ़ कदम मैदान ॥
पारब्रह्म को सुमिरन करिके * ज्वानन लीन शिरोही तान ॥
खट २ खट २ तेगा बाजै * बाजै छपक छपक तरवार ॥
खाँड़ा चटकै बर्दवान का * कोटा बूँदी की तरवार ॥
चलै सिरोही मानासाही * औ बूँदी की असल कटार ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के * बोलैं मार २ ललकार ॥
हौदन २ नचै बेंदुला * ऊदल करै विषम तरवार ॥
को गति बरनै तहँ मलिखे की * दूनो हाथ करै तरवार ॥
इन्दल जगनिक की मारन माँ * कोऊ शूर न आड़ै पाँव ॥
भगे सिपाही जलहर वारे * दय्या बापू दियो मचाय ॥
भागत देखो जब लश्कर को * ताहर घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठे * जैसे सिंह बिडारे गाय ॥
जैसे बाज चिरी पर टूटे * ताहर गोल गयो समिपाय ॥
चौड़ा बढ़ि गयो समरभूमि में * औ बीरन से कही सुनाय ॥
सदा तुरय्याँ ना बन फूलै * यारो सदा न सावन होय ॥
मानुष देही सदा न होइहै * जीवित सदा रहे ना कोय ॥
खटिया परकै जो मर जइहो * यारो गीध माँस ना खाय ॥
समरभूमि में सन्मुख मरिहो * सीधे चले स्वर्ग को जाय ॥
तेहिते तुमका समझाइत है * काहे भाग रहे भय खाय ॥
मारो मारो मेरे शहिजादो * जिन्दा लौट न कोई जाय ॥
जीत लड़ाई जलहर चलिये * दूनी तलब देहुँ करवाय ॥
दै दै पानी रजपूतन को * चौड़ा आगे दीन्ह बढ़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बढ़िगए योधा जलहर वाले * अपनो मया मोह बिसराय ॥
चलै जुनब्बी और तिनब्बी * ऊना चले बिलायत क्यार ॥
चलै शिरोही माना शाही * कोताखानी चलै कटार ॥
मूड़न केरे मुड़ चौरा भे * औ रुण्डन के लाग पहार ॥
इहाँ की बातैं इहैं छोड़ दो * अब आगे का सुनो हवाल ॥
आई फौजें पृथीराज की * जेहिमाँ बड़े २ महिपाल ॥
पृथीराज ने करी चलाकी * फौजें पीछे दीन्ह पठाय ॥
जहँ जनवासो बन्नाफर को * वहँ ही अरे पिथौरा राय ॥
डंका बाजै अहतंका के * हाहा कारी शब्द गा छाय ॥
कान अवाज परी ब्रह्मा के * ब्रह्मा उठे भरहरा खाय ॥
ब्रह्मा बोलै नरढेबा से * भय्या फौज पहूँची आय ॥
जतन बताओ अब जल्दी से * याको करिये कौन उपाय ॥
सुनिकै बातैं ब्रह्मानन्द की * ढेबा मनै उठो हर्षाय ॥
ढेबा बोले तब ब्रह्मा से * भय्या मेरे चन्देले राय ॥
करो तयारी अब जल्दी से * मुरचा मारो पिथौरा क्यार ॥
घोड़ा मनुरथा को सजवायो * तापर ढेबा भए सवार ॥
मौरैं उतार धरी डेरन में * मनमें ध्याय शारदा माय ॥
ढेबा चलिभयो रनखेतन में * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
हुकुम लगायो ब्रह्मानँद ने * जल्दी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजे अहतंका के * फौजन सजत न लागी बार ॥
हाथी चढ़इया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
घोड़ा हरनागर सजिके आयो * तापर ब्रह्मा भये सवार ॥
सुमिरि शारदा मइहर वाली * मनियाँ सुमिर महोबे क्यार ॥
समुहें घोड़ा को धरि दाबो * ब्रह्मा पूत चन्देले क्यार ॥
नाचो घोड़ा समर भूम्मि में * ब्रह्मा खैंच लीन्ह तलवार ॥
देवि शारदा को सुमिरन करि * मारै ढूँढ़ि २ सर्दार ॥
ढेबा बिगरो रनखेतन में * मनमा सुमिरि शारदा माय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

एकै मारै एक ललकारै * एकै खौफ खाय भगजाय ॥
ढेबा ब्रह्मा रन खेतन में * अपने जौहर रहे दिखाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वारे * शंका करैं कालकी नायँ ॥
मुर्चा हटिगो पृथीराज के * भागे वीर छोड़ हाथियार ॥
तब ललकारो पृथीराज ने * बिरथा भाग रहे क्यों यार ॥
अमर न रहि है कोई दुनियाँ माँ * यहि ते करो युद्ध मनलाय ॥
लूट माफ तुम्हरो हम करदइ * फौजैं तुरत लेहु लुटवाय ॥
दइके पानी पृथीराज ने * अपने योधा दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही दिल्ली वारे * अपनो मया मोह बिसराय ॥
खट २ खट २ तेगा बाजै * बाजै छपक २ तरवार ॥
सर २ सर २ ती रैं चल रहीं * तड़ २ कड़ावीन की मार ॥
अपन परायो ना पहिचाने * सब चिल्लाय मारही मार ॥
कटिगे कल्ला तहँ घोड़न के * चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
डारै घैहा रनमें लोटैं * सबही प्यास २ चिल्लायँ ॥
मुहर कटोरा पानी होइगा * विन पानी के वीर मरजायँ ॥
पैदल गिरिगे पैग २ पर * दुइ २ पैग गिरे असवार ॥
विसे २ पर हाथी गिरिगे * छोटे पर्वत के अनुहार ॥
ढेर लागिगए नर मुण्डन के * लोथिन उपर लोथ दिखराय ॥
नौसै हाथिन के हलका में * ढेबा ब्रह्मा परैं दिखाय ॥
भगे सिपाही महुबे वारे * काहु पाँव अड़ाये नाँय ॥
बिकट लड़ाई भइ तहँना पर * औ बहिचली रक्तकी धार ॥
भगे सिपाही सब महुबे के * अपने छोड़ २ हथियार ॥
ढेबा ब्रह्मा दोऊ सोचैं * अवधौं काह करैं भगवान ॥
ऐंड लगायो हरनागर को * ब्रह्मा सुमिरि कृष्ण भगवान ॥
आदि भयंकर के हौदा पर * घोड़ा फाटि परो अरराय ॥
ढाल की औझड़ ब्रह्मा मारी * सोने कलश गिरे भर्राय ॥
हियाँ की बातैं हियँई रह गईं * आगे और भईं तय्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बाजैं डङ्का अहतङ्का के * रन में मच रहो हाहाकार ॥
कान झनक आल्हा के परिगई * औ ऊदन को लीन्ह बुलाय ॥
आल्हा बोलै उदयसिंह से * भय्या मेरे लहुरवा भाय ॥
फौजैं आईं दिल्लीपति की * डंका रहो साफ बतलाय ॥
ढेबा ब्रह्मा हैं डेरन पर * गास्यो उन्हैं पिथौरा जाय ॥
करौ लराई अब जल्दी खन * नाहीं अनरथ परै दिखाय ॥
ऊदन बोलै तब आल्हा से * दादा हमरी बात बनाय ॥
मलिखे भैय्या औ हम इतहैं * उतकी आप निबेड़ो जाय ॥
खतम लड़ाई जल्दी करिके * हमहूँ बेगि पहूँचे आय ॥
मनै आय गइ यह आल्हा के * आपन हाथी दीन्ह बढ़ाय ॥
जगनिक इन्दल अगल बगलमें * अपने घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यहाँ की बातैं यहैं छोड़ि के * फिर ब्रह्मा को सुनावैं हाल ॥
स्यावस २ पिरथी बोले * धन २ तोर पिता परमाल ॥
पै अब सँभरो तुम घोड़े पर * ब्रह्मा मल्हना केर कुमार ॥
हमरी चोटन से बच जाओ * होवै दूजो जनम तुम्हार ॥
लाल कमान लई पिरथी ने * देउता काँप उठे थर्राय ॥
ब्रह्मा सोचैं अपने मनमाँ * अब सिर गाज गिरो अर्राय ॥
शब्द बेध शर हनैं पिथौरा * जिनको वार न खाली जाय ॥
मनमाँ सुमिरो तब शारद को * सम्मोहन सर दीन्ह चलाय ॥
जाय के लागो सो मस्तक में * पिरथी गिरे मूर्छा खाय ॥
होश में आए पिरथी राजा * मनमें छाय क्रोध तब जाय ॥
तान कमानियाँ लई कान लौं * तीबा मर २ मची कमान ॥
मनमें सुमिरो परब्रह्मै को * औ तरकस से काढ़ो बान ॥
तौलौं आल्हा दाखिल ह्वैगे * देखत गए सनाका खाय ॥
तुरत बढ़ायो निज हाथी को * ब्रह्मा पीछे दीन्ह हटाय ॥
ठोकर मारी पँचशावद ने * हाथी हटो पिथौरा क्यार ॥
हाथ हालगा पृथीराज का * गाँसी निकर गई वा पार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सो समिपाय गई हौदा में * बचगा देशराज का लाल ॥
आल्हा बोले पृथीराज से * धिक २ तव पौरुष महिपाल॥
लाल कमान गही लरिका पर * तुमको हया शरम नहिं आय॥
यह कहि आल्हा गुर्ज उठायो * औ पिरथी पर दीन्ह चलाय॥
लटुवा लाग गयो माथे पर * पिरथी गिरे मूर्छा खाय॥
भगे सिपाही दिल्ली वारे * अपनो मुर्चा दीन्ह हटाय॥
झुके सिपाही महुबे वारे * अपनो खींच २ तरवार॥
धाँधू ठाकुर तब वहिं आए * गरुहे हाँक दीन्ह ललकार॥
पानी दै दै रजपूतन को * धाँधू मुर्चन दीन्ह डटाय॥
झुके सिपाही दूनों दलके * समुहें गोल गयो सामिपाय॥
चलै जुनब्बी औ अहिगब्बी * ऊना चलै विलायत क्यार॥
तेगा चटकै बर्दवान के * कोता खानी चलै कटार॥
पैदल अभिर गये पैदल से * औ असवार साथ असवार॥
हौदा के सँग हौदा मिल गये * औ ह्वै रही भड़ाभड़ मार॥
पाँच कोस लौं चलै सिरोही * चारों ओर चलै तरवार॥
मूड़न केरे मुड़ चौरा भे * औ रुण्डन के लाग पहार॥
पैग २ पर पैदल गिरिगे * दुइ २ पैग गिरे असवार॥
विसे विसे पर हाथी गिरिगे * छोट पर्वत की अनुहार॥
कल्ला कटजायँ जिन घोड़नके * सो गिर परैं करौंटा खाय॥
कटि भुजदण्डै रजपूतन की * चारों ओर परी बिल्लायँ॥
कटै भुसुण्डा जिन हाथिन के * भुइमाँ गिरे भरहरा खाय॥
पागिया डारी जो लोहुन माँ * मानो कमल फूल उतरायँ॥
पड़े दुशाला कहुँ लोहू माँ * मानो नदी उगे सिवार॥
ढालैं डारी हैं लोहू में * सो कछुवासी रहीं उतराय॥
पड़ी बन्दूकैं हैं लोहू में * कारो नाग ऐस मन्नायँ॥
छुरी कटारी लोहू डारी * छोटी मछरी सों दिखरायँ॥
घैहा डारे रन में लोटैं * सबही प्यास २ चिल्लायँ॥

मुहर कटोरा पानी होइगा * कोऊ बातौ नहीं बनायँ ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * अपनो मया मोह बिसराय ॥
हाहाकार मचो लश्कर में * सवियाँ सूर गये घबराय ॥
कोऊ रोवत हैं तिरियन को * उनको कौन लगइहैं पार ॥
कोऊ रोवत हैं लरिकन को * कोऊ पुरखन कीन्ह गुहार ॥
कोऊ रोवैं महतारिन को * कुंछा लिये रही नौ मास ॥
कोउ २ रोय रहे रोड़न को * जिनके परी प्रेम की फाँस ॥
गोल फूटिगा भर्रा परिगा * लश्कर अनी बदल हुइजाय॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जे रन दुलहा चले पराय ॥
दुइ २ फेटन के बँधवय्या * तिन नारेनकी पकरी राह ॥
भेड़हा आए हैं महुबे से * तिन फौजन में दीन्ह छुड़ाय॥
भेंड़ बकरियन की गिनती ना * ते मनइन की करैं ज्योनार ॥
छाड़ि नौकरी हम पिरथी की * लकड़ी बेंच खायँगे यार ॥
बकुचा बाँधे कोउ ढालन के * कोउ तरवार लीन्ह गठियाय॥
हमै न मरियो ओ शहिजादो ❋ हम बैपार करन को जायँ ॥
कोऊ रक्त सनी माटी को ❋ रामानन्दी तिलक लगाय ॥
हमै न मरियो हमै न मरियो ❋ हमतो हरिद्वारको जायँ ॥
भिक्षा करने को आए थे ❋ हियँपर चलन लाग तरवार ॥
कायर भागचले समुहें से ❋ शायर करैं भड़ाभड़ मार ॥
कोउ कोउ कायर तर लोथिनके ❋ यारो ऐसे रहे लुकाय ॥
अगल बगल औ ऊपर नीचे ❋ मुर्दै मुर्दा लीन्ह उठाय ॥
मुर्दा बनके कायर लेटे ❋ अपने प्राणन रहे बचाय ॥
हल्ला आवै जब हाथिन के ❋ तबते बिना मौत मरिजायँ ॥
बषा लागि रही लोहू की ❋ मूझैं लाल लाल असवार ॥
सावन भादौं पानी बरषै ❋ रन में रक्त मूसलाधार ॥
रक्त पनारा रन में लागे ❋ पगड़ी कमल तुल्य उतरायँ ॥
लाशैं बिछ रहिं समरभूम्मि में ❋ घायल लोट २ रहि जायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घोड़ा नहाने सब लोहू में * लोहुन डूब गई तरवार ॥
लालै लाल लखौ चौगिर्दा * मानो फूल रही फुलवार ॥
मारा मार मची संमर में * रन में घोर होय घमसान ॥
कटि २ मूड़ गिरैं धरती पर * आँधी टूटे आम समान ॥
धन्य विधाता हमको राखो * तिरिया भागन से बच जायँ ॥
कोई सुमिरैं मातु पिता को * तुम संकट में होहु सहाय ॥
अल्ला २ करैं मुसल्ला * हिन्दू लेयँ राम को नाम ॥
खुदा २ सैय्यद सब कहते * तोबा तिल्ला रटै पठान ॥
बड़े २ बेटवा कैथन वारे * भागत तकत पिछारी जायँ ॥
लिखन पढ़न की करैं नौकरी * काहे मूड़ कटावन जायँ ॥
लम्बी धोतिन के पहिरय्या * सुरमाँ जड़ैं दिना औ रात ॥
घर में तिरियन के संग बैठे * खेलें काँछ सोऊ दिखरात ॥
जुल्फैं लटकि रहीं काँधे पर * टोपी कामदार दिखरायँ ॥
कायर भागि गए लश्कर से * तेऊ मार गुनै भयखायँ ॥
ऐसी नौकरी कहे न करिहैं * बन में बेंच लकरिया खायँ ॥
बड़े २ लरिका बनियन वारे * तोदैं लटकि २ रहिजायँ ॥
तेऊ छोड़ २ मुरचन को * दैय्या बाबू रहे मचाय ॥
घर होते तो हलुवा खाते * नाहक फँसे यहाँ पर आय ॥
छैल चिकनियाँ भगे सिपाही * जे नित तकैं पराई नारि ॥
यह गति होगइ है लश्करकी * बेड़ा कौन लगावै पार ॥
कोऊ सेवत हैं भय्यन को * विधना दीन्ह विछोह कराय ॥
आधे ज्वान कटे दिल्ली के * तेहिके आधे बनाफर राय ॥
मुहरा हटिगो पृथीराज को * भागीं फौज सबै भर्राय ॥
फौजें टूटि परीं महुबे की * चहुँधा अरर २ अर्राय ॥
मुर्चा हटिगो इत छौड़ा को * ताहर ठाकुर चले पराय ॥
भागि के पहुँचे सब जलहर में * जीते युद्ध बनाफर राय ॥
पिरथी चौड़ा ताहर धाँधू * मनमाँ सोचि २ रहिजायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बड़े लड़ैया महुबे वारे * शारदु इनकी करै सहाय ॥
खबरैं पाईं महरानी ने * औ चौड़ा को लीन्ह बुलाय ॥
चौड़ा चलिभो दर्वारिन से * रानी पास पहूँचा जाय ॥
आरति कीन्हों महरानी ने * औ आसन पर दीन्ह बिठाय ॥
हाथ जोरिके रानी बोलै * औ महराजा बात बनाय ॥
हुकुम तुम्हारो जो मैं पाऊँ * महुबे फौज देहुँ बिनसाय ॥
चौड़ा बोलै महरानी से * प्यारी हाल देहु बतलाय ॥
बोलै रानी तब चौड़ा से * प्रीतम मेरी बात बनाय ॥
सखी हमारी चित्तर रेखा * जादू विद्या देहि दिखाय ॥
जादू जानै बंगाले का * मानुष पाथर देहि बनाय ॥
हुकुम जो पाऊँ मैं कंथा को * सबको पाथर देहुँ कराय ॥
मनै आयगे यह चौड़ा के * तुरतै हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
हुकुम पायके महरानी ने * चित्तर रेखहिं लीन्ह बुलाय ॥
आइके पहुँची चित्तर रेखा * दोऊ हाथ बाँध रहिजाय ॥
रानी बोली तब महलन में * भैना मेरी बात बनाय ॥
जादू अपनो आज दिखाओ * पाथर सबको देहु बनाय ॥
कैद करो आल्हा ऊदन को * हमरो काम सिद्ध ह्वै जाय ॥
चित्तर रेखा चलि महलन से * फौजन तुरत पहूँची आय ॥
वीर महमदा की पुरिया लै * सो फौजन में दीन्ह चलाय ॥
सुध बुध जात रही बीरन की * चित्रा बँगले गई समाय ॥
आल्हा ऊदन ब्रह्मा मलिखे * ढेबा और इन्दलसी राय ॥
जगनिक ताल्हा सब बीरन पर * आपन जादू दीन्ह चलाय ॥
मलिखे इन्दल ह्वै वीरन पर * जादू असर करो कछु नायँ ॥
चित्रा सोचै अपने मनमें * अबधौं काह करैं भगवान ॥
सुआ बनाओ सब वीरन को * औ चलिदीन सुमिरि भगवान॥
महुबे वारे सबै बहादुर * उठतै गए सनाका खाय ॥
आल्हा ऊदन ढेबा ब्रह्मा * जगनिक नहीं परे दिखराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मलिखे बोलैं तब इन्दल से * बेटा मेरे परेवना लाल ॥
जुलुम गुजारो या चौड़ा ने * उत्तर कहा देहिं नरपाल ॥
इंदल बोले तब मलिखे से * चाचा हुकुम देहु फरमाय ॥
जायँ महोबे हम जल्दी से * मातै खबर सुनावैं जाय ॥
मलिखे बोले तब इन्दल से * बेटी मेरे इन्दलसी राय ॥
तुमतो रहौ लाल फौजन में * हमअब अमर गुरू ढिंगजायँ ॥
मनै भाय गइ यह इन्दल के * मलिखे घोड़ा लीन्ह सजाय ॥
फाँदि बछेड़ी पर चढ़ बैठो * मनमें सुमिरि शारदा माय ॥
राह पकरि लइ बबुरी बनकी * घोड़ी आसमान मड़राय ॥
सर २ सर २ छुटी बछेड़ी * अम्बर पंख दीन्ह फैलाय ॥
जाय के पहुँचो बबुरी बनमें * घोड़ी उतर परी हर्षाय ॥
उतर बछेड़ा से भुइँ आयो * मढिया चला बनाफर राय ॥
आवत देखो नर मलिखे को * गुरुवा ताली लीन लगाय ॥
मलिखे पहुँचे गुरु अम्मर ढिंग * चरणन शीश नवायो जाय ॥
एक पाँवसे ठाढ़ो होइके * मलिखे हाथ बाँध रहिजाय ॥
डेढ़ पहर मलिखे को होइगै * गुरुवा ताली खोलत नायँ ॥
काढ़ि सिरोही लइ मलखे ने * मनमें सुमिर शारदा माय ॥
मस्तक आपन काटन चाहो * अमरा उठा रामको ध्याय ॥
ठाढ़ो देखो मलखाने को * गुरुवा पास लीन्ह बैठाय ॥
हाल बताओ मलिखे ठाकुर * काहे बदन रहो कुम्हलाय ॥
मलिखे बोले अमर गुरू से * बाबा करो सहाय हमार ॥
बड़ी मुसीबत में पारके हम * देखन आए आप दुवार ॥
कही हकीकत जलहर वारी * मलिखे यथा तथ्य सब गाय ॥
सुनिके बातैं मलखाने की * अमरा बोलो बचन सुनाय ॥
धीरज धारो मनमें बेटा * तुम्हरो काम सिद्ध ह्वै जाय ॥
करी तयारी अमर गुरू ने * यारो सुनियो कान लगाय ॥
झोली टाँगलई काँधे में * वेन मुदरिया लई उठाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

उड़न खड़ाऊँ पै चढ़ बैठो * गुरुवा आसमान मड़राय ॥
एड़ा मसको मलखाने ने * घोड़ी चली बराबर जाय ॥
दोऊ चलिभे बबुरी बन से * औ फौजन की पकरलइ राह ॥
भैरो चलिभे सँग अमरा के * कलुवा औरं महमदा वीर ॥
अली गली की चलीं चूड़ैलें * खावैं जौन कलेजा चीर ॥
डाँकिन साँकिन जिन्नपरी सब * अमरा साथ चली हर्षाय ॥
चार पहर की मंजिल करिके * फौजन बीच पहूँचा जाय ॥
मलिखे घोड़ा है फौजन में * अमरा महल पहूँचा जाय ॥
जौन सो कमरा था चित्रा का * अमरा पहुँच गयउ हर्षाय ॥
चुटकी लैके भैरो बारी * सो अमरा ने दीन्ह चलाय ॥
जादू झूठ भए चित्रा के * अमरा पिंजरा लीन्ह उठाय ॥
जूरा काटि दियो चित्रा को * अमरा फौज पहूँचा आय ॥
मानुष कीन्हों सब बीरन को * निजरतन सब दीन्ह बनाय ॥
आल्हा देखो अमर गुरू को * चर्णन गिरो दौरि हर्षाय ॥
ऊदन देवा ब्रह्मा आदिक * तेऊ पाँय पलोटे आय ॥
आशिष दीन्हों अमर गुरू ने * युग २ जियो बनाफर राय ॥
जादू विद्या अब चलिहै ना * सातो भाँवर लेहु डराय ॥
हुकुम पायके अमर गुरू को * आल्हा धामन लीन्ह बुलाय॥
कागज लइकै कलपी वारो * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
सिद्ध श्री सर्वोपम लिखिके * औ आगे को लिखो हवाल॥
अपनी वाली तो सब कर लइ * अब है कहा हृदय महिपाल॥
चिट्ठी देखत व्याह रचाओ * सातो भाँवर देहु डराय ॥
नाहिं तो तोपैं हमरी चलिहैं * जलहर गर्द दिहैं करवाय ॥
बन्द लिफाफा में कर दीन्हों * अपनी मुहर दीन्ह लगवाय ॥
सो पकराय दियो धामन को * धामन चलिभो शीश नवाय ॥
कूद साँड़िनी पर चढ़ि बैठो * औ जलहर की पकरलइ राह ॥
छम २ छम २ चली साँड़िनी * औ फाटक पै पहूँची आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धामन उतरि परो जल्दी से * औ दर्बार पहूँचा जाय ॥
लगी कचहरी पृथीराज की * धामन अटा तड़ाका जाय ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * तापै तपै पिथौरा राय ॥
बड़े २ योधा तहवाँ बैठे * नेजा सन्मुख रहे उठाय ॥
पाँच पैग से कुन्नस कीन्हीं * औ समुहें झुकि करी सलाम॥
चिट्ठी फेंक दई गद्दी पर * सबरे बन्द होइगए काम ॥
नजर घूमि गइ बादशाह की * औ चिट्ठी को लीन्ह उठाय ॥
पकरि लिफाफा के बन्द काटे * आँकुइ आँकु नजर करिजाय॥
करी सलाहैं बादशाह ने * औ फिर चिट्ठी लिखी बनाय॥
कागज लैके कलपी वारो * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
सिद्ध श्री सर्वोपम लिखिके * औ सब हाल लिखे नरपाल॥
गहनो भेजो तुम जल्दी से * औ सब रीत होहिं तत्काल ॥
इकलौ लरिका यहाँ भेजदो * सातो भाँवर दोहिं डराय ॥
संगमा करिकै फिर ताहर को * धामन बिदा दीन्ह करवाय॥
जायके पहुँचे जनवासे में * देखो उदयसिंह सर्दार ॥
ताहर आय रहे धामन सँग * जो पिरथी के जेठ कुमार ॥
करी खातिरी उदयसिंह ने * ऊँची गद्दी दई धराय ॥
हाल बतायो सब ताहर ने * यह कहि दीन्ह पिथौराराय ॥
रसम चढ़ावे की पूरी कर * इकलो लड़का देहु पठाय ॥
व्याह करावैं हँसी खुशी से * सातो भाँवर देहिं डराय ॥
ऊदन बोले तब ताहर से * भय्या समर धनीं चौहान ॥
आल्हा ब्रह्मा जगनिक इन्दल * भय्या मेरे भँवर मलखान ॥
सय्यद चाचा बनरस वारे * रूपन बारी खास हमार ॥
हमहूँ चलिहैं सँग ढेबा के * होई तबै ब्याह सर्दार ॥
इकले ढेबा नहिं जैबे के * तुम घटि करो वहां ले जाय ॥
गंगा करिलेव जनवासे में * तब हमलोग चलैं हर्षाय ॥
गंगा करिके ताहर ठाकुर * जलहर तुरत पहुँचो आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करी तयारी बघ ऊदन ने * यारो सुनियो कान लगाय ॥
सजी पालकी नर ढेबा की * तापर ढेबा भये सवार ॥
आल्हा ऊदन औ मलखाने * जगनायक सिंह भए तयार ॥
मन्ना गूजर महुबे वारो * मोहन बौरी के सर्दार ॥
जोगा भोगा नैनागढ़ के * सोऊ सजिके भए तयार ॥
ताल्हा सैयद बनरस वारे * जिनकी बेड़ बहै तरवार ॥
इन्दल सजिगो है जल्दी से * आल्हा पुत्र वीर सर्दार ॥
जोगा भोगा बड़े लड़य्या * जिनकी जगजाहिर तरवार ॥
कठिन यादवा बौरी वारे * मोहन शूर बीर सर्दार ॥
ताल्हा सैय्यद बनरस वारे * जो मरिबे को नाहिं डेराय ॥
मन्ना गूजर बड़ो लड़य्या * जो सन्मुख रन लोह चबाय ॥
जग नायक जगनेरी वाले * भैने जौन चन्देले क्यार ॥
भाला जाको जग जाहिर है * जावे सात तवा के पार ॥
आल्हा ऊदल मलिखे सजिगे * सबही फाँदि भये असवार ॥
चली पालकी नर ढेबाकी * संगै सबै सूर सर्दार ॥
ताहर बोल रहे पिरथी से * दादा सावधान होइ जाव ॥
आई पालकी दरवाजे पर * संगै सबै बनाफर राय ॥
इतनी सुनिके पृथीराज ने * तुरतै हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
फाटक बन्द करो जलहर के * सब की कटा देहु करवाय ॥
पलकी रखा देव द्वारे पर * सबको भीतर चलौ लिवाय ॥
सबको मड़ए तर बैठाओ * औ उपरोहित लेहु बुलाय ॥
हुकुम बजायो सुन ताहर ने * जो २ कहो पिथौरा राय ॥
पंडित आय गये मड़ए में * पोथी पत्रा काँख दबाय ॥
चढ़ो चढ़ावा तब मड़ए में * ऊदन डब्बा दीन्ह सहाय ॥
चन्दन से चौका लिपवायो * मोतिन चौक दई पुरवाय ॥
कलश सूबरन को धरवायो * चन्दन पीढ़ी दीन्ह डराय ॥
अक्षत चन्दन और सुपारी * सो दोना में दओ धरवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तब स्वस्तयन पढ़ो पंडित ने * चन्द्रकला को लीन्ह बुलाय ॥
सखियां मंगल गावन लागीं * बेटी चौक पहूँची आय ॥
चढ़ो चढ़ावा चन्द्रकला को * हमरे बूत कही ना जाय ॥
सजे अभूषण जो जेहि अँगमें * यारो सबियाँ कहाँ सुनाय ॥
बाड़ि २ अँखिया चन्द्रकला कॉ * छोटे मिरगन के अनुहार ॥
शोभा लखिके चन्द्रबदन की * मो हैं जगत सबै नरनार ॥
सारी पहिरी रेशम वारी * जामें तारकसी का काम ॥
ओढ़ो दुपट्टा अतलस वारो * झालरि बीच जड़ाऊ काम ॥
अँगिया पहिरी मारवाड़ की * जो छाती में गई समाय ॥
हीरा लाल जवाहिर लागे * यारो दमकि २ रहिजाय ॥
पहिरो घांघरा घूम घुमेरो * नीको जरद किनारी लाग ॥
मालदहेकी चोली ऊपर * लहँगा देखि बढ़े अनुहार ॥
पाँव महावर हाथन मेंहदी * दाँतन मिस्सी लई लगाय ॥
आँखिन आँजो भल आँजनको * कोरन जाय करेजा खाय ॥
कड़ाके ऊपर छड़ा बिराजे * ऊपर पायजेब घहराय ॥
छुमुक बजनियाँ बिछियापहिरे * सुनिके होय करेजे घाय ॥
आगे अंगेलियापाछे पछेलिया * कंकन शोभा कही न जाय ॥
करन फूल कानन में सोहै * झुमका भूमि २ रहि जायँ ॥
टिकवा सोहै भल मस्तक पर * मोती लटक २ रहिजायँ ॥
हिरा बिराजै शीश फूल में * गोटा चमकि २ रहि जाय ॥
चम्प कली पचलड़ी सतलड़ी * जेहर तेहर गले सुहाय ॥
मोहन माला चन्द्रहरन अस * भुज भुजबन्द दरेरा खाय ॥
दुलरी तिलरी कण्ठ विराजै * बेंदी शोभा कही न जाय ॥
नथकी शोभा कौन बखानै * लटकन लटकि २ रहिजाय ॥
जितने गहना रहे तिरियन के * चन्द्रकला तन दिये सजाय ॥
पंडित मंत्र उचारन लागे * नर ढेबाको भयो बुलाय ॥
पहिले पूजो श्री गणेश को * फिर गौरी का दियो पुजाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पूजा कराई नवग्रहों की * औ फिर गाँठी दीन्ह बँधाय ॥
करि गठबन्धन तब पंडित ने * साखोच्चार कियो हर्षाय ॥
कन्यादान कियो चौड़ाने * मनमें शारद चरण मनाय ॥
भाँवरि परन लगी मड़ए में * ताहर उठो बीर सरदार ॥
पहिली भांवरि के परतै खन * ताहर खैंच लीन्ह तरवार ॥
कियो झड़का नर ढेवा पै * ऊदन लीन्ह ढाल पर वार ॥
दुसर भाँवरि के परतै खन * क्षत्री आये कई हजार ॥
ऊदल बोले तब आल्हा से * दादा मंडलीक औतार ॥
भाँवरि करलो तुम भय्या की * हम बढ़ि करैं अगारी भार ॥
यह कहि तुरते उदन बाँकुड़ा * मनमें ध्याय शारदा माय ॥
खैंच शिरोही अपनी लीन्ही * समुहें गोल गए समिपाय ॥
मलिखे ब्रह्मा औ जगनायक * जोगा भोगा सूर सर्दार ॥
मन्ना गूजर महुबे वारो * औ बनरस के बीर परिवार ॥
इन्दल बेटा सुनवाँ वारो * औ आल्हा के लड़ैतालाल ॥
सोऊ घुसगो समर भूमि में * धरिकै बिकट रूप बिकराल ॥
झुके महुबिया महुबे वारे * दोऊ हाथ करैं तरवार ॥
बड़ा लड़य्या देवै वारो * मारै ढूँढ़ि २ सरदार ॥
मलिखे मौर तेगतग्न के * अपनो मया मोह बिसराय ॥
ब्रह्मा ठाकुर की मारुन में * सब दल रेन बेन हुइ जाय ॥
मूड़न केरे मुड़ चौरा भे * औ रुण्डन के लगे पहार ॥
तीन घरी भर चली शिरोही * मड़ए बही रक्त की धार ॥
बड़े लड़य्या दिल्ली वारे * एऊ विषम करैं तरवार ॥
आधे मड़ये भाँवर होवे * आधे घूमि रही तरवार ॥
चरबी लपट रही खम्भन में * औ खूनन के उठे फुहार ॥
क्षत्री टूटे महुबे वोर * सबियाँ फौजें दीन्ह बिडार ॥
भगे सिपाही दिल्ली वारे * अपनो डार २ तरवार ॥
हारमान के तब पृथ्वी ने * मड़ए बन्द कराई मार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करी तयारी फिर बेटी की * डोला तुरत भयो तय्यार ॥
तब बुलवायो फिर बिटिया को * होइ गइ चन्द्रकला तय्यार ॥
मिल जुलकेअपनी सखियनसों * माता हिये गई लपटाय ॥
माता रोय उठी तब यारो * हमरे बूत कही ना जाय ॥
डोला चलिभौ है जलहर से * औ जनवास पहूँचा आय ॥
हुक्म लगायो तब आल्हा ने * आजै कूँच देहु करवाय ॥
कूँच को डंका बाजन लागो * छत्री सबै भए तैयार ॥
डंका बाजे अहतंका के * हाहा कारी शब्द सुनाय ॥
सात रोज की मंजिल करिके * महुबो धुरो दबायन जाय ॥
डेरा डारि दियो घूरे पर * ऊदन रूपन लीन बुलाय ॥
खबरि जनाओ वा महुबे में * आये ब्याहि बनाफर राय ॥
इतनी सुनिके रूपन चलि भो * औ महलन में पहूँचो जाय ॥
ठाढ़ी मल्हना इत अंटा पर * हेरै बाट उदयसिंह क्यार ॥
नजरि घूमिगै महरानी की * रुपना ठाढ़ो पँवर दुवार ॥
सिढ़ियन २ रानी उतरी * औ रुपना पै पहुँची आय ॥
मल्हना बोलै तब रूपन से * भैया हाल देहु बतलाय ॥
कहाँ पै डोला चन्द्रकला को * कहँ रण बाघ बनाफर राय ॥
आल्हा मलिखे ऊदन ब्रह्मा * सबको हाल कहौ समुझाय ॥
कैसी गुजरी है जलहर में * बेटा हाल देहु बतलाय ॥
हाल बतायो तब रुपना ने * धूरे सबै पहूँचे आय ॥
इतनी सुनिके मल्हना रानी * मनमें बहुत खुशी ह्वै जाय ॥
थार सूबरन को मँगवायो * चौमुख दिया दियो बरवाय ॥
सिगरी सखियाँ महुबे वारी * सो मल्हना ने लई बुलाय ॥
देवै विरमा दोनों आईं * मछुला फुलवा संग लिवाय ॥
बारह रानी परिमालिक की * द्वारे सबै पहूँची आय ॥
डोला आयो दरवाजे जब * परछन करन लगीं हरषाय ॥
नेगी बुलवाए मल्हना ने * सब को मुहरै दईं बटाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ब्राह्मण भाटन को बुलबायो * मुहर दक्षिणा दई गहाय ॥
ढेबा चन्द्रकला दोउन को * मल्हना महलन गई लेवाय ॥
आल्हा ऊदन मलिखे ब्रह्मा * जगनिक और इँदलसी राय ॥
सोऊ आय गये महलन में * मल्हना चरन रहे लपटाय ॥
देवै विरमा पद बन्दन करि * ऊदन हाथ जोरि रहिजाय ॥
माता तुम्हरी दया कृपा से * हम ढेबा को लाए विवाह ॥
जहाँ कचहरी चन्देले की * पहुँचे तहाँ धवलगजगाह ॥
हाथ जोरिके परिमालिक के * टेके चरण कमल में माथ ॥
आशिष दीन्हों सब पुत्रनको * मनमें ह्वे प्रसन्न नर नाथ ॥
हुकुम लगायो महराजा ने * तोप सलामी देहु दगाय ॥
दगी सलामी तब तोपन की * घर २ बजै अनंद बधाय ॥
नेग जोग भए सब महलन में * सो सब हमसे कहो न जाय ॥
चन्द्र कला वर्णन में लागी * मल्हना छाती लीन्ह लगाय ॥
हार उतारो महरानी ने * चन्द्रकलाको दओ पहिराय ॥
बारह रानी परिमालिक की * एक २ भूषण दिये सजाय ॥
हार नौलखा देवै लइके * चन्द्रकला गर डारो जाय ॥
विरमा दीन्हों चन्द्र हार है * फुलवा मछला मन सकुचाय ॥
हृदय भेंट अपने करि दीन्हे * चन्द्र कला से प्रेम बढ़ाय ॥
कूच कराये सब राजन ने * आए नेउते जौन बुलाय ॥
यहि बिधि जलहर ढेबा ब्याहे * सो सब कहा कथा हमगाय ॥
साँचो ब्याह भयो ढेबा को * हमने सोई कहो बनाय ॥
चरि २ गउवैं धर का डगरीं * चिरियालिहिनजाय बसन्यार॥
हियाँ की बातैं हियनै छोड़ो * आगे और होयँ तय्यार ॥
तारागन नभ चमकन लागे * संतन धुनी दीन्ह बरवाय ॥
अस्ताचल को सूरज गवने * संझाकाल गयो नगचाय ॥
रहै समुन्दर में जौलौं जल * जौलौ रहैं चन्द्र औ सूर ॥
बैजनाथ पराशद जहाँ में * यश सो रहैं सदा भर पूर ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तिनके सुत गोपालदास जी * युग २ जियैं कीर्त यश पाय ॥
आज्ञा दीन्हीं यहि रचना की * हमपर कृपा भई अधिकाय ॥
करैं तरंग यहाँ से पूरन * मनमें सुमिरि भवानी कंत ॥
राम रमा मिलि दर्शन दीजो * इच्छा यही मोर भगवंत ॥

इति श्री पंडित सुदर्शन लाल त्रिवेदी वैद्य शास्त्री 'चक्र'
जिला फतेहपूरान्तर गत क़सबा हथगाम निवासी रचित
नर ढेबा का ब्याह सम्पूर्णम् ।

—:***:—

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी ।

बाबू बैजनाथ प्रसाद द्वारा श्रीविश्वेश्वर प्रेस काशी में मुद्रित ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

* अथ *

परिमालिक का ब्याह

यानी।

महोबे की पहिली लड़ाई।

लेखक-

गुरुवर श्रीलाल के चरणानुरागी

पं० सुदरशनलाल त्रिबेदी, वैद्यशास्त्री 'चक्र'

पो० मु० हथगाम जिला फतेहपुर निवासी।

* प्रकाशक *

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी।

बाबू बैजनाथ प्रसाद द्वारा-

श्री विश्वेश्वर प्रेस, काशी में

मुद्रित।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ महोबे की पहली लड़ाई ॥

अर्थात्–

परि मालिक का ब्याह आरम्भ ।

मंगला चरन ।

कुं०–धन दारा अरु सुतन में, रहत लगाए चित्त ।
चक्र कहे खोजत नहीं, गाढ़े दिन को मित्त ॥
गाढ़े दिन को मित्त, जठर जननी प्रति पाल्यो ।
दसन हीन पय दयो, दसन पै असन सुआल्यो ॥
कहत सुदर्शन लाल, भुलाए कहाँ फिरत मन ।
पाइ कनक तन, विलख जाहि बोलत सुरपति धन ॥

सवैया ।

राम कहौ मन राम कहौ बिनु राम कहे कुछ काम न आवै ।
धाम शरीर विभव सिगरो इनसो मति मूरख नेह लगावै ॥
मातु पिता तिय पुत्र सहोदर अन्त समय कोउ काम न आवै ।
कवि चक्र गहै एक ईश्वर को तब होय सुखी दुःख फेर न पावै ॥

आल्हा छन्द ।

गण नायक के पद वन्दन करि * औ शारद के चरण मनाय ॥
तीर्थन ध्यावै पतित पावनी * कलिमल हरन सुरसरी माय॥
धामन ध्यावै जगन्नाथ को * जहँ पर वर्ण भेद नहिं आय॥
छूआ छूत भूत है भागो * मन में हार मान भय खाय ॥
क्षेत्रन ध्यावैं कुरु क्षेत्र को * जहँ पर भई भयङ्कर मार ॥
कौरव पाण्डव दोनों जूझे * होइगे सकल बीर संहार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सोई आय भए कलियुग में * आल्हा आदि शूर सरदार ॥
युद्ध अघाय कीन्ह जिव भरके * कीन्हों नाश क्षत्रियन क्यार॥
भूप युधिष्ठिर कलि में जन्मे * धरिकै मण्डलीक औतार ॥
आल्हा अमर कियो देवी ने * जगमें अमर रही तरवार ॥
भीमसेन ऊदन ह्वै प्रगटे * जाकी बेंड़ी बहै तरवार ॥
घोड़ा बेंदुला को चढ़वइय्या * महुबे केर बीर बरियार ॥
अर्जुन कहिये ब्रह्मा नन्द को * जो मल्हना के लड़ैतो लाल ॥
मर्द महोबे को सरनामी * नामी बाप रजा परिमाल ॥
बच्छराज सुत मलखे कहिये * सहदेव राजा को औतार ॥
रती भान सुत लाखन राना * जानौ नकुल केर औतार ॥
बड़ा बहादुर यहु योधा था * नाती बेन चक्कवै क्यार ॥
भुरही हाथिन को चढ़वइय्या * मारो मान पिथौरा क्यार ॥
पृथ्वी राज दिल्ली के राजा * कौरव पती क्यार औतार ॥
धाँधू ठाकुर महुबे वारो * कुरुपति केर बन्धु परिवार ॥
इन्दल बेटा सुनि आल्हा को * जो सुनवाँ को लड़ैतो लाल ॥
सो औतार जानु अभिमनु को * तोरयो चक्रव्यूह तत्काल ॥
है औतार कर्ण को ताहर * बेटा राय पिथौरा क्यार ॥
रानी द्रोपदी बेला ह्वै कै * कीन्हों सबै सूर संहार ॥
नटन मध्य नटवर गिर धारी * ध्याऊँ तुम्हें यशोदा लाल ॥
बैद्यन ध्याऊँ धन्वतरि को * कीशन वीर अंजनी लाल ॥
पहिले ध्यावैं बजरंगी को * पीछे वाल वीर परिवार ॥
तीन लोक के सारे योधा * सन्मुख दीन्हें युद्ध पछार ॥
योगिन ध्यावैं बिश्वेश्वर को * शंकर भूतनाथ महराज ॥
दानिन ध्यावैं और मनावैं * नृप हरिचन्द सबन सिरताज ॥
भक्तन ध्यावैं भक्त विभीषण * ध्रुव प्रहलाद आदि महराज ॥
वीरन ध्यावैं गंगा सुतको * करि प्रण छाड़ि दीन जिनराजा॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सत्य सराहैं अवध पती को * दीन्हों प्राण सत्य पर यार ॥
वज्र सराहैं देवराज को * शत्रुन जारि करै जो छार ॥
चक्र सराहैं कमलापति को * जासों करैं दीन प्रतिपाल ॥
शूल सराहै भूत पती को * काटै शूल भक्त तत्काल ॥
कण्ठ में बैठो तुम कण्ठेश्वरि * जिह्वा बैठ शारदा माय ॥
आल्हा पँवारो को गावत हौं * भूले अक्षर देहु बताय ॥
देउता गावैं यहि खेरेके * जिनके नाम न जानैं भाय ॥
उनके अखाड़े चढ़ गावत हौं * भूले कण्ठ जाव फरमाय ॥
काली गइय्ये कल कत्ते की * लीला कण्ठ कजीजर क्यार ॥
फूलमती कनवज की गइय्यो * माता लागो आय गुहार ॥
फिर पद वन्दौं श्रीलाल के * गुरुवर जौन ज्ञान दातार ॥
आल्हा पँवारा अब गावत हैं * बेड़ा आय करो अब पार ॥
छूटि सुमिरिनी गइ देवन की * शाका सुन सूर मन क्यार ॥
व्याह बखानै परिमालिक का * पहिला युद्ध महोबे क्यार ॥
नगर महोबा एक बस्ती है * यारो सुनियो कान लगाय ॥
वासुदेव की थी रजधानी * शोभा कही बूत ना जाय ॥
कन्या जनमी तिनके घर में * एक ते एक रूप की खान ॥
मल्हना अगमा दिवला तिलका * कमला जेहि मुख कमल समान ॥
माहिल भूपति दुइ बेटा थे * जिनकी बेंड़ि बहै तलवार ॥
बड़े लड़ैया दूनौं लरिका * एक से एक शूर सर्दार ॥
बड़ी सुन्दरी मल्हना बेटी * शोभा कहाँ बूतना जाय ॥
तेज बिराजे अंग अङ्ग में * देखत शूर गिरैं गस खाय ॥
कटि केहरी आँख रतनारि * कोकिल सरिस कण्ठ उच्चार ॥
मत्त गयन्दन चाल लजावै * नैना मिग्गा के अनुहार ॥
देश देश में खबरैं पहुँची * मल्हना सुघर सुन्दरी नार ॥
बेटी कहिये वासुदेव की * चन्दा सूरज के अनुहार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

राय चँदेले चन्देली के * जिनका नाम रजा परिमाल ॥
बड़े २ योधा देश २ के * कीन्हो खोजि २ पामाल ॥
सुनी खबरिया परि मालिक ने * सुन्दर कुँवरि महोबे क्यार ॥
बड़ी सुन्दरी मल्हना बेटी * मानो सूर्य्य चन्द्र उजियार ॥
सुनत खबरिया परलै ह्वैगै * भैया देख दई के ख्याल ॥
सुखि बतीसी गइ दाँतन की * मोहित भए रजा परिमाल ॥
चिन्तामणि मंत्री बुलवायो * तासो कह्यो हिए को हाल ॥
मल्हना रानी के देखे बिन * अबना बचैं रजा परिमाल ॥
जेहिके मंत्री चिन्ता मानि हैं * काहे न चिन्ता देहिं हटाय ॥
राह बताय देहु जल्दी से * मल्हन जाते हमैं मिलजाय ॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की * मंत्री लीन्ह अंगुरिया दाब ॥
बड़ा लड़इय्या वासु देव है * सन्मुख होंय शत्रु बेताब ॥
सुनिकै बातैं ई मन्त्री की * गुस्सा भए रजा परिमाल ॥
काली पुतरिया लाली होइ गइँ * सिकुरन तीन दिखानी भाल ॥
एक कर पहुँचो तरवारी पर * दूजो अटा मुच्छ पै जाय ॥
धरि ललकारो है मंत्री को * मंत्री तेरो बुरा ह्वै जाय ॥
काह हकीकत बासु देव की * मारो राज भंग ह्वै जाय ॥
मुश्क बांधिकै बादशाह की * सातौं भाँवर लेहुँ डराय ॥
रूप मोहनी वहि मल्हना को * हियरे हमरे गयो समाय ॥
लगन बताओ अब जल्दी से * हमसे धीर धरो ना जाय ॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की * मंत्री पत्रा लीन्ह उठाय ॥
मीन मेष सब राशि मिलाये * औ नक्षत्र लीन्ह बैठाय ॥
सोचि समुझि के मन अपनेमें * साइत दीन्हों तुर्त बताय ॥
कूच कराओ अब जल्दी से * तुम्हरो काम सिद्ध ह्वै जाय ॥
इतनी सुनिकै परिमालिक ने * तुरतै हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने कड़ा दीन्ह पहिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बजै नगाड़ा मेरे दल में * हा हा कारी शब्द सुनाय ॥
जितनी फौजैं चन्देरी में * सबियाँ तुरतै लेहु सजाय ॥
तोप दरोगा को बुलवायो * मुहरन तोड़ा दीन गहाय ॥
बड़ी २ तोपै अष्ट धातु की * जल्दी सबन लेहु सजवाय ॥
हुक्म पायके चलो दरोगा * सबियां तोपैं करी तयार ॥
पर्वत फोरन तोपैं साजी * बारा कोस जाय धधकार ॥
किला धसकनि बुर्ज मरोरन * किल्ली तोरन लईं सजाय ॥
हनू हंकारनि गर्भ गिरावनि * सोचरखिन पर दईं चढ़ाय ॥
अष्ट धातु की बड़ि बड़ि तोपैं * मन पके का गोला खायँ ॥
तोप लक्ष्मणा को सजवायो * जाकी चोट किला धँसजाय ॥
तोप कालिका औ रण चंडी * भैरौ तोप भई तइय्यार ॥
गंगा जमुनी जो तोपैं थीं * सोऊ तुरत भई तइय्यार ॥
गाज गिरावनि बड़ि २ तोपैं * मन पचास का गोला खायँ ॥
सो चढ़वाय दियो चरखिन में * बारा कोस लगे जो जायँ ॥
आफ का गोला जो खाती हैं * सोऊ तुरत भई तइय्यार ॥
छोटी तोपैं बहु सजवाईं * जो रन सन्मुख चलैं अगार ॥
हाथि दरोगा फिर बुलवायो * औ यह हुक्म दीन्ह फरमाय ॥
जितने हाथी चन्देली में * सबिया तुर्त सजाओ भाय ॥
चीरा कलँगी एक मँगाओ * तुरतै हाथ दीन्ह पकराय ॥
चलो दरोगा हाथिन बारा * अपने गोल पहूँचा जाय ॥
हाथी साजे कजरी बनके * जिनके बलका नहीं शुमार ॥
सिंहल द्वीपी सुन्दर हाथी * सबिया तुर्त भए तइय्यार ॥
चीन देस के भारी हाथी * जो मँगवाए रजा परिमाल ॥
लइकै झूलैं रेशम वारी * तुरतै दीन्ह सबन पर डाल ॥
साजि इक दन्ता सब हाथीगे * औ दुइ दन्ता लीन्ह सजाय ॥
मेगुल भूरा हाथी साजे * शोभा कही बूतना जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बड़े २ दाँतन वारे हाथी * जिनको सजत न लागी बार ॥
छोट दांत के सबरे हाथी * सोऊ तुरत कीन्ह तइय्यार ॥
खूनी हाथी फिर सजवायो * पांयन दीन जंजीरै डार ॥
खोलि जंजीरै रन में देवैं * ई क्षत्रिन का करैं अहार ॥
पहिले गद्दा रेशम वारे * तापर हौदा धरे बनाय ॥
बनी अँबारी है सोने की * जा पर नहीं नज़र आड़ियाय ॥
कलस सूबरन के सुन्दर लै * हौदा ऊपर दीन्ह धराय ॥
चुम्बक पत्थर के हौदा हैं * जापर शेल बिलौंचा खाय ॥
ठेर दरोगा फिर घोड़न को * दीन्हों हुक्म चन्देले राय ॥
जितने घोड़े हैं लश्कर में * सबियाँ जाय लेहु सजवाय ॥
सुनिकै बातैं चन्देले की * तुरतै चला दरोगा धाय ॥
हुकुम सुनायो मातहेतन को * सबियाँ घोड़ा लेहु सजाय ॥
रश्की मुश्की पचकल्यानी * सब्जा सुरखा करो तयार ॥
घोड़ कुमैतन को सजवावो * जिनकी चाल बायु अनुहार ॥
गर्रा भर्रा को सजवावो * तुग़लक घोड़े लेहु सजाय ॥
सुन्दर घोड़े काठवाड़ के * सब पर जीन देहु धरवाय ॥
घोड़ा साजो काबुल वारे * औ कन्धारी लेहु सजाय ॥
अरबी घोड़न को सजवाओ * तातारिन को लेहु कसाय ॥
घोड़ा साजो दरियाई सब * जिनके सुम्म न जलमें जायँ ॥
जलपातुर घोड़े सजवाओ * जिनको देखि शत्रु भय खायँ ॥
बारह जात कबूतर घोड़े * रंग बिरंगे लेहु सजाय ॥
जीन धराओ रंग बिरंगे * दुइ २ तंग देहु कसवाय ॥
घोड़ा सजन लगे लश्कर में * शोभा कही बूत ना जाय ॥
गद्दा धरदौ मखमल वालो * तापर झूल जरी को डाय ॥
कस दई काठी सब घोड़न पर * रेशम तंग दीन्ह डखवाय ॥
लगे बकसुवा हैं सोने के * चहुँधा चमकि २ रहिजायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

डारी हैकलैं गल घोड़न के * ऊपर जेर बन्द फहराँय ॥
कलशा लइकै सुबरन वारे * सो पुट्ठन पर धरे बनाय ॥
पूँछ रँगाई रंग बिरंगी * दुमची रेशम दीन्ह बँधाय ॥
अष्ट धातुकी नालैं लइकै * चारो सुम्मन दीन्ह जड़ाय ॥
ऊँट दरोगा को बुलवाए * सोने कड़ा दिहौ पहिराय ॥
जिते साँड़िया मेरे लश्कर में * काठी सबपर देहु कसाय ॥
मारवाड़ के खरे साँड़िया * दिनमें साठ कोस जो जाँय ॥
मेवाड़ी असली सजवावो * जिनके भूमि न लागैं पाय ॥
अरबी ऊटन को सजवावो * जो दिन रात रेतमाँ जाँय ॥
ऊँट सजाओ बीकानेर के * काठी सब पर देहु धराय ॥
करी सजावट भल ऊँटन की * रेशम गद्दा दीन्ह डराय ॥
काठी मँगाई मलयागिर की * सोने पत्र रहे लपटाय ॥
तंग दुरंगा रेशम वारे * सो काठिन में दीन बँधाय ॥
लगे बकसुवा हैं सोने के * देखे नहीं दीठ अनियाय ॥
गल हमेल सोने की सोहैं * चौरासिन की अजब बहार ॥
पाय पैजनी भल सोहत हैं * उठतै पाँव होय झनकार ॥
शीश फूल सोने को लैके * हीरा मानिक दीन जड़ाय ॥
सो लटकाय दियो मस्तक में * पुट्ठन कलसा दीन धराय ॥
हुक्म सुनायो चन्देले ने * सबियाँ फौज होय तैयार ॥
डंका बाजे अहतंका के * फौजन सजत न लागी बार ॥
सिगरी तोपैं देख भाल के * औ चरखिन पै दीन्ह चढ़ाय॥
तिनके पीछे कितने छकड़े * भारी गोलन दीन लदाय॥
थैला लइकै वारूदन के * सो गाड़ेन में दीन भराय ॥
भई सजावट फिर हाथिनकी * तिनकी कहै हकीकत गाय ॥
तार कसी की झूलैं लइकै * जिनमें जड़े जवाहिर लाल ॥
जितने हाथी थे लश्कर में * एकै साथ दई हैं डाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मोती लागे हैं झालर में * यारो चमकि २ रहि जायँ ॥
हौदा लइकै रंग विरंगे * सो रस्सन से दीन्ह कसाय ॥
केहु पर हौदा अष्ट धातु को * जापर वार नहीं अनियाय ॥
चुम्बक पत्थर के हौदा कहुँ * जिन पर शेल विलौला खाय॥
सोने चाँदी के केहु ऊपर * जिन पर रतनन केर जड़ाव॥
कलस मूबरन को माथे पर * जिनमें चुन्नी केर भराव ॥
घोड़ा सज गए चन्देली के * एक से एक सुघर दिखरायँ ॥
सिरपर कलँगी भल सोहत है * रेशम तंग दीन्ह कसवाय ॥
तंग दुतँगे तार कसी के * सोने केर बकसुवा लाग ॥
दम २ दमकि रहो पेटन में * जेरबन्दु के एक २ ताग ॥
सजे साँडिया चन्देले के * जिनको सजत न लागी बार॥
सजी पालकी और नालकी * गजरथ सबै भए तइय्यार ॥
खोलि कोठरी दई राजा ने * गरुई हाँक दीन्ह ललकार ॥
पहिरो २ मेरे सहिजादो * अब क्यों करते यार अबार ॥
पहिले पहिरो लाल बनाती * ताके ऊपर कुलह कबार ॥
ताके ऊपर बख्तर पहिरो * जामे उचटि जाय तरवार ॥
टोप झिलमिला सरपर बाँधो * जापर तेग धार झरि जाय ॥
छूरी कटारी भाला बरछी * मन मानिक की लेहु बेराय ॥
अगल बगल में दुइ पिस्तौलैं * एक २ सिंहिन मूठ कटार ॥
बघ नख पहिर लेहु हाथन में * लैलो धार दार तरवार ॥
जोड़ी लैलो कड़ा वीन की * गोली टका भरे की खाय ॥
सन्मुख मारो जेहि योधा को * तेहि यमधाम देहि पहुँचाय ॥
जितना गहना रजपूती का * सन्मुख परा तुम्हारे भाय ॥
पहिरो २ मेरे सहिजादो * जाके अङ्गन जौन समाय ॥
खुलो खजाना चन्देली को * मुन्सी आयो नवल चौहान ॥
बोलन लागो सो बीरन से * सुनियो यार लगाकर कान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जिन्हैं पियारी होयँ मेहरिया * चुप्पै तलब लेहिं घर जायँ ॥
जिनका गौना अबहीं आवा * उइ क्यों खड़े २ पछतायँ ॥
जिन्हैं पियारी मातु भगौती * कम्मर दुइ बाँधैं तरवार ॥
बड़ा लड़इय्या बासुदेव है * तासे करैं भयानक मार ॥
पैदा होवै जो दुनियाँ में * यारो एक दिना मर जाय ॥
अमर न काया केहु मानुषकी * एक दिन काज सबैको खाय ॥
खटिया परके जो मरि जइहौ * कैव्वा गीध माँस ना खाय ॥
तेहिते तुमका समुझाइत है * औसर आज गयो है आय ॥
बरनी होइगई अब बीरन की * अपनो जोर देहु दिखराय ॥
जीत महोबा जादिन आओ * दूनी तलबैं देहुँ कराय ॥
इतनी सुनिकै छत्री बोले * मुंशी सुनिये कान लगाय ॥
जौलौं शक्ति रहे या तनमें * तौलौं धरैं अगारी पायँ ॥
पाँय पछारी को ना डारैं * चहे तन धजी २ उड़िजाय ॥
जहाँ पसीना गिरै राजा को * हमरी तहाँ रक्तकी धार ॥
कटि २ शीश गिरैं धरनी पर * उठि २ रुण्ड करैं तरवार ॥
सुनिकै बातैं अस बीरन की * मुंशी खुशी नवल चौहान ॥
जायके पहुँचो चन्देले ढिग * औ सन्मुख ह्वै लगा बतान ॥
फौजैं सजगईं महराजा सब * जल्दी आप होंय तइय्यार ॥
सुनी हकीकत परिमालिक ने * मनमें छायो हर्ष अपार ॥
तुरत बुलायो चिन्तामणि को * औ फिर कही हृदय की बात॥
करौ तयारी अब जल्दी से * आवो चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनिकै पण्डित बोले * महाराज की लेहुँ बलाय ॥
आप तयारी अपनी करिये * हमहुँ साथ चलैं पछियाय ॥
सुनिकै बातें चिन्तामनि की * गंगाजल तब लीन्ह मँगाय ॥
कंचन चौकी एक डरायो * तापर बैठि गए हरगाय ॥
गंगा जल से अन्हवन करिकै * लै कै राम चन्द्र को नाम ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुमिरन कीन्हों इष्ट देवको * आओ आज हमारे काम ॥
कांछा पहिरो रेशम वारो * जामे तारकसी को काम ॥
पहिर जाँघिया ताके ऊपर * फिर पैजामा सुघर ललाम ॥
जामा पहिरो मुसरू वारो * जामे गोट दुदामी क्यार ॥
अगल बगल में दुइ पिस्तौलैं * कम्मर लटक रहीं तरवार ॥
कड़ाबीन की जोड़ी लैलई * लैलइ सिंहिन मूठ कटार ॥
छप्पन छुरियाँ खुसीं कमर में * भाला बरछी धार अपार ॥
पाग बैगनी सिर पर सोहै * कलँगी मोतीचूरकी लाग ॥
मोतिन माला भल सोहत है * दम २ दमकि रहीं मन नाग॥
गजभर छाती चन्देले की * साढ़े तीन हाथ का ज्वान ॥
बड़ो लड़इय्या यहु जोधा है * भूपन केर झारि दौ मान ॥
साजि परिमालिक जब ठाढ़े भे * मानों इन्द्र अखारे जाय ॥
सुन्दर रूप बनो राजा को * हमरे बूत न बरनै जाय ॥
बीर भद्र हाथी मँगवायो * ताको तुर्त लीन्ह सजवाय ॥
झूल डारि दइ है रेशम की * मखमल गद्दी धरे बनाय ॥
तापर हौदा अष्ट धातु को * रेसम रस्सिन दीन्ह कसाय ॥
कलस सूबरन के लैलीन्हे * सो हौदा में धरे बनाय ॥
सीढ़ी लगाई मलया गिरिकी * और राजा को सुनायो जाय ॥
हाथी त्यार खड़ो महराजा * अब क्यों राखी देरलगाय ॥
सुनिकै बातैं फीलवान की * मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
सीढ़िन २ राजा चढ़िकै * हौदा बीच पहूँचे जाय ॥
राजा सजतै सब दल साजिगा * शोभा कौन कबी सकगाय ॥
हाथी बढाय दियो राजाने * मनमें सुमिरि शारदा माय ॥
पहिल नगाड़ा में जिनवन्दी * औ दुसरे में भए असवार ॥
तिसर नगाड़ा के बाजतखन * लम्बे बन्द केर तैयार ॥
चलिभई फौजें चन्देली की * औ महुबे की पकरि लइँ राह ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हाथी चढ़इय्या हाथिन चढ़िगे * बांके घोड़न के असवार ॥
बड़ि २ तोपन वारे छत्री * पलकी उपर भए असवार ॥
सब्ज़ पालकी सब्ज़ नालकी * सब्ज़े सबमें पड़े उहार ॥
सब्जै बाना सब्ज निशाना * सब्जै आठो लगे कँहार ॥
सब्ज़ै पलटन सब्ज रिसाले * सब्जै रंगकेर व्योहार ॥
सब्ज़ै हाथी सब्ज़ै घोड़ा * सब्ज़ै कमर पड़ी तरवार ॥
छाई सब्जी आठ कोसलों * सब्जै रंग केर व्योपार ॥
बारा जोड़ी बजे नगाड़ा * धौंसा होत गोल में जाय ॥
गड़ गड़ गड़ गड़ बजै नगाड़ा * हाहा कारी शब्द गा छाय ॥
नौसे झण्डा उड़ैं हवामें * नभ में रही लालरी छाय ॥
आठ लाख से चढ़े चन्देले * सब रंग ध्वजा रहे फहराय ॥
कूचकै डंका तब बज वाएव * लश्कर चला चंदेले क्यार ॥
थर २ थर २ पृथ्वी डोली * देउता काँपि उठे संसार ॥
दाढ़ी करखा बोलन लागे * बाजी तुरही औ करनाल ॥
डगमग २ पृथ्वी डोली * यहि बिधि चले रजा परिमाल॥
खर २ खर २ कै रथ दौरैं * रव्वा चलैं पवन की चाल ॥
टप २ टप २ टापैं बाजैं * उगलै आग टाप की नाल ॥
पाथर पिसिकै कांकर होइगे * कांकर पीसि धूर ह्वै जांय ॥
धूल उड़ानी आस मान में * चहुँधा अन्धकार गा छाय ॥
दबति अँधेरिया दलमें आवै * लोपे अन्धकार दिन राय ॥
इन्दर डोले इन्द्रासन पै * औ कैलाश भूत पति राय ॥
मंजिल २ पर मुकाम करि * महुबे धूरो दबायो जाय ॥
फौजैं डारि दई धूरे पै * चहुँधा तम्बू दिये गड़ाय ॥
जीनैं उतरि गईं घोड़न की * हाथिन हौदा धरे उतार ॥
ऊँचे २ तम्बू गड़ि गए * औ खाले में लगी बजार ॥
चढ़ी रसोइय्या उमरायनकी * कोउ २ करन लगे अस्नान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पटा बनेठी कोउ २ फेरैं * कोउ २ करैं तेग पर सान ॥
लगी कचेहरी परिमालिक की * भस्मा भूत लाग दर्बार ॥
बड़े २ क्षत्री जहँ पर बैठे * टिहुनन धरे नागिन तरवार ॥
कुरसी के संग कुरसी रगरै * मोढ़ा रगरि २ रहि जाय ॥
तेहि समइय्या तेहि औसरमाँ * मंत्री गए तहाँ पर आय ॥
बोले राजा तब मंत्री से * अब सब हाल देहु बतलाय ॥
करैं लड़ाई कौन जुगुत से * हमरे काज सिद्ध होइ जाय ॥
चिन्तामन मंत्री तब बोले * तुम सुन लेहु रजा परिमाल ॥
ऐपन बारी को भिजवावो * बारी आप बुलावो हाल ॥
इतनी सुनिकै परिमालिक ने * कल्लू बारी लीन बुलाय ॥
राजा बोलैं फिर बारी से * मैं बारीकी लेहुँ बलाय ॥
ऐपन बारी को लै जावो * महुबे खबर देहु पहुँचाय ॥
चढ़े चन्देले आठ लाखसों * मल्हना ब्याह देहु करवाय ॥
हँसी खुसी से ब्याहु करावो * नाहीं चलै बिषम तलवार ॥
लड़े न जितिहौ परिमालिक से * यहिते कही करौ सर्कार ॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की * कल्लू कहन लाग हरगाय ॥
कठिन मवासी गढ़ महुबा है * हमरे बूत होन की नाय ॥
औरौ नेगी चन्देली के * तिनको आप देहु पठवाय ॥
बड़े लड़इय्या महुबे वारे * हमना मूड़ कटइहैं जाय ॥
सुनिकै बातैं अस बारी की * गुस्सा भए चँदेले राय ॥
धरि ललकारो है कल्लू को * बारी तेरा बुरा ह्वै जाय ॥
पटा बनेठी बाना फेंको * कम्मर दुइ बाँधो तरवार ॥
तेहा राखो रजपूती का * तौ फिर जीवे को धिरकार ॥
नाउ बारी तुम्हैं न जानैं * जानैं हितू रजा परिमाल ॥
तेहिते तुमका समुझाइत है * कल्लू काहे बतावै ठाल ॥
जल्दी जावो अब महुबे को * बारी बृथा मनै भयखाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनिकै बातैं चन्देले की * बारी मनै खुशी ह्वै जाय ॥
हाथ जोरिकै बारी बोलै * मैं राजा की लेहुँ बलाय ॥
पाँचों कपड़े अपने दै देव * अपनो घोड़ा देहु मँगाय ॥
पाग बैगनी सिरको दै देव * चीरा कलँगी साथ लगाय ॥
तेगा दै देव अपने करको * महुबे खबर देहुँ पहुँचाय ॥
कल्लू बारी की बातैं सुनि * सामाँ सबही दीन मँगाय ॥
मो लैलीनी है बारीने * मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
कपड़े पहिरे चन्देले के * पगड़ी सरमें लीन लगाय ॥
सवा लाख की चीरा कलँगी * माथे चमकि २ रहिजाय ॥
अगल बगल में दुइ पिस्तौलैं * दहिने सिंहिन मूठकटार ॥
जोड़ी लैलैई कड़ाबीन की * कम्मर दुइ बाँधी तरवार ॥
सुमिरन करिकै नारायण को * गुरु अपने को चरण मनाय ॥
उछरि बछेड़े पर चढ़ि बैठो * फूलो अँगमें नहीं समाय ॥
एड़ा मसको जब घोड़े को * घोड़ा तुर्त स्वर्ग मँड़राय ॥
काले बादर की लाली में * बारी गयो पार समिपाय ॥
सर सर सर सर उड़ो बछेड़ा * फाटक ऊपर पहुँचा जाय ॥
धरि ललकारो दर्बानी को * फाटक जल्द देहु खुलवाय ॥
सुनिकै बातैं तब बारी की * दर्बानी ने कहो तत्काल ॥
कहाँ से आए औ कहँ जइहौ * पहिले कहो यार सब हाल ॥
सुनिकै बातैं दर्बानी की * कलुवा मनमें उठा रिसाय ॥
धरि ललकारो दर्बानी को * बक २ काहे रहे लगाय ॥
नगर चँदेली एक बस्ती है * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
शूर न राखो जिन धरती में * जाको तको करो पामाल ॥
तुम्हरे राजा की कन्या है * मल्हना जाहि कहै संसार ॥
ताहि बिवाहन हम आए हैं * साँची तुम्हैं बतावा सार ॥
जल्दी खोलो अब फाटक को * राजै खबर सुनावो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

आई बरायत चन्देली से * दाना घास देहु पहुँचाय ॥
ऐपनबारी बारी लावा * ताको नेग चही सर्कार ॥
चार घरी भर चलै सिरोही * द्वारे बहै रक्त की धार ॥
सुनिकै बातैं अस बारी की * हँसि दर्बानी कही सुनाय ॥
भंग चढ़ाई है क्या तुमने * या बोतल है दीन चढ़ाय ॥
सुनिकै बातैं दर्बानी की * बारी अग्नि ज्वाल ह्वै जाय ॥
एँड़ा मसको है घोड़ा को * घोडा आसमान उड़िजाय ॥
सातों फाटक बारी नाघो * औ दर्बार पहुँच गा जाय ॥
करी बन्दगी महराजा को * ऐपन बारी दीन चलाय ॥
आई बरायत चन्देली से * दाना घासदेहु पहुँचाय ॥
ऐपन बारी हम लाए हैं * हमरो नेग देहु मँगवाय ॥
सुनिकै बातैं अस बारी की * राजा मन में उठे रिसाय ॥
औ ललकारो है बारी को * बारी तेरा बुरा ह्वै जाय ॥
तुम्हरो नेग काह द्वारे को * जल्दी तौन देहु बतलाय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की * कल्लू कहे बचन हरखाय ॥
सवापहर भर चलै सिरोही * द्वारे बहै रकतकी धार ॥
जो कोइ शूर होय महुबे में * सन्मुख आय करै तरवार ॥
जरि कै राजा राहुट होइगा * नैनन गई लालरी छाय ॥
माहिल भूपति को ललकारो * देखो जियत न बारी जाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * अपनी खैंचि २ तरवार ॥
धरि ललकारो वहि कल्लूको * रहियें साव धान सर्दार ॥
कोऊ मारो तरवारी सो * कोउ २ भाला रहे चलाय ॥
कोऊ मारै छुरी कटारी * कलुवा नेक शंक ना खाय ॥
सुमिरन करिकै नारायन को * मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
खैंचि सिरोही लइ कल्लू ने * समुहे गोल गयो समिपाय ॥
जैसे भेडिन भड़हा पैठै * जैसे सिंह बनी को जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तैसेई टूटो कल्लू बारी * समुहे गोल घुसो अर्राय ॥
एकै मारे एक ललकारै * एक फटकार सुने भगजाय ॥
कलुवा मारै तरवारी से * घोड़ा टापन देय गिराय ॥
जौन गोल में कलुवा जावै * सो दल काई सो फट जाय ॥
कलुवा बारी की धमकिन में * कोऊ रजपूत न आड़ै पाव ॥
चारि घरी भर चली सिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
मूड़न केरे मुड़ चौरा भे * औ रुण्डन के लाग पहार ॥
घोड़ा बढ़ायो तब बारी ने * औ राजा ढिग पहुँचो जाय ॥
ऐपन बारी तुर्त उठाई * औ राजासे कही सुनाय ॥
नेग आपनो हम भरि पावा * अब चुपके से करो विवाह ॥
नाहीं तो तुम्हरी कुशल नहीं है * भारी भूप चन्द नर नाह ॥
एँड़ा मसको फिर घोड़ा को * घोड़ा आसमान उड़ जाय ॥
पकड़ो २ सब ललकारो * बारी पार पहूँचा जाय ॥
सर २ सर २ छुटा बछेड़ा * औ लश्कर में पहुँचगा आय॥
रंग विरंगा बारी देखो * भूपति गए सनाका खाय ॥
हाथ जोरि कै कलुवा बोलै * ओ महराज चन्देले राय ॥
आपन करनी हम करि आए * अपनी आप देहु दिखराय ॥
सुनिकै बातें ई कलुवा की * बोले तुरत चँदेले राय ॥
हाल बतावो अब महुबे को * नाहक काह रहे बर्राय ॥
कलुवा बोलो तब राजा सो * द्वारे चली विषम तरवार ॥
बड़े २ क्षत्री गढ़ महुबे के * मोपर टूटे सात हजार ॥
दाया कीन्हों शिव शंकर ने * औ गनपत ने करी सहाय ॥
ऐसी तेग भई महराजा * सब सूरन को दीन भगाय ॥
सुनिकै बातें महराजा ने * मनमें मोद कियो अधिकाय ॥
यहाँ की बातें इहैं छोड़ दई * महुबो हाल कहैं समुझाय ॥
लगी कचेहरी बासुदेव की * भस्मा भूत लाग दरबार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

एक एक से क्षत्री बैठे * टिहुनन धरे नगिन तरवार ॥
देखि हकीकत वा बारी की * मनमा गए सनाका खाय ॥
सूखि बतीसी गई दाँतन की * मुँहका पान गएव कुम्हिलाय ॥
रिसहा ह्वैके बासुदेव तब * गरुई हाँक दीन्ह ललकार ॥
लानत ऐसी रजपूती को * पगिया बाँधन को धिरकार ॥
बारी जियत गयो महुबे से * सबकी देखलई तरवार ॥
चिड़िया मारी है बागन में * बकुला मारे सागर पार ॥
काम परिगयो जब नाहर से * गाँड़ु भगे पीठ दिखराय ॥
क्षत्री बोलैं तब राजा से * हमरी खता माफ ह्वै जाय ॥
मानुष होवै तो लड़मरिये * पै पक्षी से नहीं बसाय ॥
करी बीरता है घोड़ा ने * राजा साफ देहिं बतराय ॥
सुनिकै बातैं सर्दारन की * राजा सोच २ रहिजाय ॥
कागद लइकै कलपी वारो * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
चिट्ठी लिखदई बासुदेव ने * यारो सुनियो कान लगाय ॥
सिद्ध श्री सर्वोपम लिखिकै * तेहिके पीछे सात सलाम ॥
चिट्ठी तुमका हम भेजित है * सो सुन लेहु चँदेले राय ॥
कठिन मवासी गढ़ महुबा है * काहे मूड़ कटावो आय ॥
अबहूँ बिगरा कछु नाहीं है * चुपके लौटि चँदेरी जाव ॥
करैं बिवाह नहीं मल्हना को * चाहे मूड़ मारि मरजाव ॥
कठिन मवासी गढ़ महुबा है * नाहक गर्भ गँवइहौ आय ॥
चुप्पै लौटि चँदेली जाओ * तुम सर काल रहो मड़राय ॥
हमसे तुमसे कुछ झगड़ो नहिं * काहे रार बढ़ायो आय ॥
मनसा तुम्हरी जो लड़ने की * तौ फिर खबर्दार ह्वै जाव ॥
इतनी बातैं लिख चिट्ठी में * ऊपर मुहर दीन करवाय ॥
बन्द लिफाफा में करि दीनों * औ धामन को दीन्ह गहाय ॥
लइकै पाती महराजा की * धामन चला तड़ाका जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

उछलि साँडिनी पर चढ़ बैठो * मनमें चलो गनेश मनाय ॥
जायकै पहुँचो है फौजन में * फौजैं देखि गयो चकराय ॥
लगी कचहरी परिमालिक की * भस्मा भूत लगा दर्बार ॥
सिंह की बैठक छत्री बैठे * टिहुनन धूर नगिन तरवार ॥
ढालैं लटकि रहीं कंधे पर * औ कम्मर में खुँसी कटार ॥
राते माते सबै बहादुर * एक से एक शूर सर्दार ॥
जहाँ कचेहरी चन्देले की * धामन अटा तड़ाका थार ॥
तबला चटकि रहे बंगल में * लौडा नाचैं कलंवतन केर ॥
महफिल जमरही चन्देले की * चहुँधा लोग रहे सब घेर ॥
छोटी पतुरियाँ उठि २ नाँचै * तम्बुवा आसमान फहराय ॥
गजल परज तिल्लाना गावै * टप्पा ठुमरी रही सुनाय ॥
जायके धामन दाखिल हुइगो * पहुँचो बीच कचहरी जाय ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * जामें तपैं चन्देलीराय ॥
कुन्नस कीनी सात पैगते * औ झुकि कीन्हीं सात सलाम ॥
हाथ जोरिकै धामन ठाढ़ो * करमें रहा लिफाफा थाम ॥
नजर घूमगई महराजा की * औ धामन से लगे बतान ॥
कहाँ से आए हाल बताओ * धामन करो हमारी कान ॥
हाथ जोरि कै धामन बोलै * ओ महराज चन्देले राय ॥
नगर महोब एक बस्ती है * दूसर इन्द्र लोक मनु आय ॥
राजा हमरे बासुदेव हैं * पाती सोइ दई पहुँचाय ॥
यह कहि पाती को दै दीन्हों * दोनों हाथ जोरि रहिजाय ॥
पाती लैलई चंदेले ने * औ मन्त्री को दीन गहाय ॥
मंत्री लइकै फिर पाती को * मुंशी आगे दीन बहाय ॥
काटि कतरनी से बन्द दीन्हें * मुंशी चिट्ठी दई सुनाय ॥
चिट्ठी सुनतै परलै ह्वै गई * राजा गए क्रोध में आय ॥
औ ललकारो है मंत्री को * मंत्री सावधान हुइ जाव ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

फौजें सजा लेउ जल्दी से * मुहबा गर्द देहु करवाय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की * तुर्त नगड़ची लीन्ह बुलाय ॥
हुक्म सुनायो महराजा को * सोने कड़ा दीन पहिराय ॥
डंका बाजै अब लश्कर में * क्षत्री सबै होंय तय्यार ॥
बजो नगड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भए हुशियार ॥
पहिले नगाड़ा में जिन बन्दी * दुसरे बाँध लिहेन हथियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भए असवार ॥
हाथी चढ़ैय्या हाथी चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
कोऊ नालकी कोऊ पालकी * कोऊ गजारूढ़ सर्दार ॥
बड़ि २ तोपैं अष्ट धातु की * सो चरखिनमें दई चढ़ाय ॥
फौजें चलिभईं चन्देलेकी * डंका होत गोल में जाय ॥
पहिया ठुरुक रहे तोपनके * करकत आवैं आगिनिया बान॥
बारह जोड़ी बजै नगाड़ा * मन में चढो घोर घमसान ॥
नौसौ हाथिन के हलका में * हाथी चलो चन्देले क्यार ॥
हियाँ कि बातैं हियैं छोड़ दई * आगे और भई तैयार ॥
खबरैं पहुँची गढ महुबे में * की चढ़ि आये चँदेले राय ॥
गुस्सा होइकै बासुदेव ने * माहिल भूपति लीन्ह बुलाय ॥
हुक्म दैदियो महराजा ने * सबियाँ लश्कर लेहु सजाय ॥
जाय न पावैं अब चन्देले * टटुवा टायर लेहु छिनाय ॥
हुक्म पाय कै माहिल भूपति * अपनी फौज पहूँचे आय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने कड़ा दीन्ह पहिराय ॥
मारू डंका बाजन लागो * हाहा कारी शब्दगा छाय ॥
डंका बाजे अहतंका के * फौज सजावट देहिं सुनाय ॥
तोप दरोगा को बुलवायो * मुहरन तोड़ा दिहो गहाय ॥
जितनी तोपैं गढ़ महुबे में * सबियाँ तुर्त लेहु सजवाय ॥
हुक्म पायके चलो दरोगा * मनमें आनँद मोद बढ़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बड़ी २ तोपैं महुबे वारी * सो चर्खिन में दीन्ह चढ़ाय ॥
तोप भवानी और कालका * जो दुइ मनका गोला खाँय ॥
हनू हँकारन गर्भ गिरावन * सो चर्खिन में दीन्ह चढ़ाय ॥
सूर्य्य लपकनि चन्द्र झपकनि * सबियाँ तोपैं लीन्ह सजाय ॥
बम्ब के गोला वारी तोपैं * सबियाँ तुरत लईं सजवाय ॥
किल्ला तोरन पर्वत फोरन * बुर्ज मरोरन लईं सजाय ॥
तोप संकठा को सजवायो * जो संकठ में करै सहाय ॥
भैरो तोपन को सजवायो * बारा कोस जाय धधकार ॥
बिजुली तड़प्पन कुँवा सुखावन * लक्ष्मण तोप करी तय्यार ॥
हाथी दरोगा फिर बुलवायो * चीरा कलँगी दीन्ह मँगाय ॥
हुक्म लगायो है माहिल ने * सबियाँ हाथी लेहु सजाय ॥
बड़े बड़े हाथी सब सजवावो * छोटे पर्वत की उनहार ॥
इकदन्ता दुइ दन्ता साजो * जिनके बलको नहीं शुमार ॥
मैनाकुज मलया धौलागिर * औ भौंरागिर लेहु सजाय ॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा * हाथी अबहिं लेहु सजवाय ॥
गज मतवारे सब सजवावो * मुड़िया हौदा देहु धराय ॥
जितने हाथी गढ़ महुबे में * तिनको बेगि सजाओ जाय ॥
हुक्म पायकै चला दरोगा * पहुँचा फीलखान में जाय ॥
हुक्म लगायो मातहतन को * जल्दी हाथी लेहु सजाय ॥
डारे गद्दा मखमल वारे * शोभा कछु कहीना जाय ॥
हौदा लइकै चाँदी वारे * सो गद्दन पर धरे बनाय ॥
डारिकै रस्सा रेशम वारे * तिन हौदन को दीन्ह कसाय ॥
चुम्बक पत्थर के हौदा लै * कुछ हाथिन पर धरे बनाय ॥
एक २ हाथी के हौदा में * बैठे चार २ असवार ॥
हीरा चमकैं अम्मारिन में * झालर लागि मोतियन क्यार ॥
घोड़ा दरोगा फिर बुलवायो * सोने कड़ा दीन्ह पहिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जितने घोड़ा गढ़ महुबे में * सबियाँ तुर्त सजाओ जाय ॥
बड़े २ घोड़ा सभी सजाओ * जल्दी करो जाय तैयार ॥
हरियल मुश्की पँचकल्यानी * घोड़ा सभी करो तैयार ॥
स्याह सब्ज घोड़े सब साजो * हम से धीर धरा ना जाय ॥
ताजी तुर्की को सजवावो * अबलख घोड़े लेहु सजाय ॥
नकुला घोड़न को सजवावो * अरबी घोड़ होयँ तैयार ॥
कच्छी मच्छी घोड़ा साजो * समुदा घोड़ करो तैयार ॥
लक्खा गर्रा औ कुम्मैता * सुर्खा घोड़ सजाओ जाय ॥
श्यामकर्ण सब घोड़े साजो * औ दरियाई लेहु सजाय ॥
चौदह जात कबूतर साजो * जलपातुर सब लियो सजाय ॥
हुकुम पायके चला दरोगा * घोड़शाले में पहुँचा जाय ॥
झूलन रेशम को डरवायो * मखमल गद्दी धरी बनाय ॥
धरि कठिलानी फिर घोड़न पर * रेशम तंग दीन्ह खिचवाय ॥
लगे बकसुवा हैं सोने के * दम २ दमकि २ रहि जायँ ॥
छोटी कलँगी मोतीचूर की * सो मस्तक पर दई बँधाय ॥
छल्ला लैकै सोनेवारे * सो लगाम में दीन्ह डराय ॥
परी रकाबैं तहँ चाँदी की * हैकल गरे दीन बँधवाय ॥
दुमची जेरबन्द रेशम की * रंग बिरंगी दई बधाँय ॥
कलश सूबरन के लै लीन्हें * ते पुट्ठन पर धरे बनाय ॥
कहँ लगि बरन करौं घोड़न की * कछु तारीफ करो ना जाय ॥
जितने घोड़ा थे महुबे के * सबियाँ तुर्त लियो सजवाय ॥
ऊँट दरोगा को बुलवायो * माहिल हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
जितने ऊँट होंय महुबे में * तुरतै सबियाँ लेउ सजाय ॥
चला दरोगा ऊँटन वारा * पहुँचो शुतुरखान में जाय ॥
सजे साँड़िया मारवाड़ के * दिन में साठ कोस जो जायँ ॥
कच्छी साजे अरु मेवाड़ी * जिनके जमीं न लागै पायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

अरबी ऊँटन को सजवायो * जो रेती में नहिं घबरायँ ॥
बीकानेरी ऊँट सजाये * सब पर गद्दा दियो डराय ॥
धरि दइ काठी सब ऊँटन पर * तुरतै सबै लिए सजवाय ॥
रथ सजवाएव माहिल ठाकुर * शोभा कही बूत ना जाय ॥
कनक रचित सुन्दर रथ सोहैं * आभा चमकि चमकि रहिजाय॥
झालर लागी है मोतिन की * कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
घोड़ जुताए कहुँ २ अरबी * सब्जा घोड़ कहूँ दिखरायँ ॥
जायके पहुँचो फिर क्षत्रिनढिग * माहिल बीर गोटइया चार ॥
हाथ उठाय कहन असलागो * क्षत्री होहु सबै हुसियार ॥
जितने क्षत्री हमरे दलमें * सबियाँ बाँध लेहु हथियार ॥
शूर बघेले और चँदेले * औ चौहान डौंडिया ख्यार ॥
सूरज वंशी औ रघुवंशी * चन्दरवंशी होंय तयार ॥
हाड़ा वारे बूँदी वारे * एक से एक बीर बरियार ॥
तोमर ठाकुर तोमर घरा के * सबरे मैनपुरी चौहान ॥
सजैं महावर वाले ठाकुर * औ सजि जांय यादवा ज्वान ॥
मारवाड़ के भारी ठाकुर * औ परिहार गुटइय्या टार ॥
सब गहलौत और कछवाहे * यारो बांधि लेहिं हथियार ॥
हुकुम पायके सिगरे क्षत्री * तुरतै होन लगे तैयार ॥
कुरी छतीसो सब सजवाई * माहिल महुबे केर कुमार ॥
चरि २ गउवें घर को डगरीं * पत्नी लिहेन जाय बसन्यार ॥
धूनी रमि रहीं वैरागिन की * गांजा चिलम केर व्योहार ॥
सब दिन बीतो दौड़धूप में * संझाकाल गयो नगिचाय ॥
और लड़ाई आगे वरनैं * यहँपर कलम आज रुकजाय ॥
रहै समुन्दर में जौलौं जल * जौलौं रहैं चन्द्र औ शूर ॥
बैजनाथ परशाद नाम यह * जगमें रहै सदा भरपूर ॥
गुरुवर हमरे श्रीलाल जी * हमपर दया करैं अधिकाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

उनहीं के बल बुध प्रताप से ❋ चक्र लखनी रहे चलाय ॥
कियो तरंग यहाँ से पूरन ❋ मनमें सुमिरि भवानीकन्त ॥
रामरमा मिलि दर्शन दीजै ❋ इच्छा यही मोर भगवन्त ॥

प्रथम तरंग सम्पूर्णम

अथ द्वतीय तरंग प्रारम्भ।

॥ सवैया ॥

नन्द यशोमति के पग ध्याय मनाय सबै विधि नन्द दुलारे।
दीन दयाल दयानिधि ह्वै सुनतै गज टेर हैं जाय उबारे ॥
भक्तन पै जब कष्ट परो तब संकट से बृजराज निकारे।
'चक्र सुदर्शन' ह्वै निःशङ्क हैं गावत वीरन केर पँवारे ॥

❋ सुमिरन ❋

भादौं मास अष्टमी कहिये ❋ शुभ दिन आनि परो बुधवार ॥
आधी रात के फिर अमला में ❋ चन्दा किहौ आय उजियार ॥
समय सुहावन अति मनभावन ❋ पावन करन जगत कल्यान ॥
मथुरा ग्राम जेल के भीतर ❋ जन्मे कृष्णचन्द्र भगवान ॥
अस्तुति कीन्हों सब देवन मिलि ❋ जय २ कृष्णचन्द्र भगवान ॥
जब २ भीर परत भक्तन पर ❋ तब २ धरत तुम्हारो ध्यान ॥
तुम्हरी लीला सब जग जाहिर ❋ गावत सबै वृद्ध औ बाल ॥
घट २ बासी अविनासी प्रभु ❋ गो द्विज पालक दीनदयाल ॥
मानुष लीला करि दुनियाँ में ❋ हरिहौ नाथ भूमि को भार ॥
रक्षा करिहौ निज भक्तन की ❋ गाई सुयश सकल संसार ॥
करि अस्तुत देवता घर गमने * माया प्रबल कृष्ण भगवान ॥
द्वार कपाट खुले आपहि से * सोए सबै पहरुवा ज्वान ॥
श्री वसुदेव देवकी दूनों * बन्धन मुक्त तुरत ह्वै जायँ ॥
कहै देवकी तब प्रीतम से * प्रीतम मेरी बात बनाय ॥
कीजै यत्न नाथ अब कोई * जासे बचै हमारो लाल ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तब बसुदेव कृष्ण लै धाए * पहुँचन चहैं गोकुलै हाल ॥
करिकै यत्न गोकुलै पहुँचे * देखो वहाँ केर सब हाल ॥
कन्या जन्मी है यशुदा के * सोवे सबै लोग बेहाल ॥
कन्या लैलो वासुदेव ने * औ गुपालको दीन्ह सुवाय ॥
भेद न जानन कोउ पायो है * पहुँचे नगर गोकुलै आय ॥
यह सब हाल पुराणन भाखे * हमरे बूत कहो ना जाय ॥
जो विस्तार रूप यहि बरनैं * हमरो ग्रन्थ बहुत बढ़जाय ॥
छूटि सुमिरनी गइ देवनकी * शाका सुनो सूरमन क्यार ॥
माहिल भूपति के सँग भइया * चलि है अम्ब भवार तरवार ॥

कथा रंभ ।

हाथी चढइया हाथी चढिगए * बांके घोड़न केर सवार ॥
कोई नालकी कोई पालकी * कोऊ गजरथ पर असवार ॥
बड़ि २ तोंदन वारे क्षत्री * पलकी उपर भए असवार ॥
अलबेले जन हैं साड़िन पर * कम्मर दुइ बाँधे तरवार ॥
पैदल पल्टन और रिसाले * सबही बेगि भए तइयार ॥
जितनी फौजैं गढ़ महुबे की * सबियाँ बाँधलीन्ह हथियार ॥
धौंसा बाजो है लश्कर में * बारह कोस जाय धुधकार ॥
सिंहा हाथी तब साजो गो * तापर चढ़े महिल परिहार ॥
सब्जा हाथी के हौदा में * भूपति तुर्त भए असवार ॥
हाथ उठायके माहिल बोलैं * रखियो लाज महोबे क्यार ॥
खटिया परिकै जो मरि जैहौ * यारो कोउ न लैहै नाम ॥
सन्मुख रन में जो मर जइहौ * सीधे चले जाव सुरधाम ॥
सुनिकै बातैं इ माहिल की * बोले सबै शूर सर्दार ॥
पाँव पिछारी को ना धरिबे * साँची कहैं बचन सर्कार ॥
निमक तुम्हारो हम खावा है * सो हाड़न में गयो समाय ॥
पाँव पिछारू को जो डारैं * तो रजपूती धरम नसाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कटि २ मुण्ड गिरै धरनी में * उठि २ रुण्ड करै तरवार ॥
नमक तुम्हारो चलके भरदें * साँची कहें महिल परिहार ॥
इतनी सुनिकै माहिल भूपति * दोऊ मनमें मोद बढ़ाय ॥
कूच कराय दियो फौजनको * मनमें देवि शारदा ध्याय ॥
निकरी फौजें गढ़ महुबे से * शोभा कही बूत ना जाय ॥
पाँच लाख से माहिल चलिभे * हाहाकारी शब्द गा छाय ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे * घूमन लागे लाल निशान ॥
धूरि उड़ानी आसमान पर * यारो लोथि गए हैं मान ॥
रणके बाजन बाजन लागे * रणके होन लाग सिंगार ॥
छम २ छम २ बजै पैजनी * झांझनकेर होय झनकार ॥
खर २ खर २ कै रथ दौरें * रब्बा चलैं पवन की चाल ॥
पहिया ढुरुकि रहे तोपन के * काँपी भूमि शेष सिर हाल ॥
बारह जोड़ी बजै नगारा * बाजै तुरही औ करनाल ॥
इतहैं फौजें माहिल वारी * उतसे चले राजा परिमाल ॥
दोऊ सेना बदलति आवैं * समर भुम्मि में पहुँचीं आय ॥
शोभा बरनों क्या फौजन की * कायर सबै रहे थर्राय ॥

* सवैया *

फौज सजी दुहुँ ओर खड़ी सब वीर बली दुहुँ ओर सयाने।
बादल सों उमहे दल दो तिनकी उपमा कवि कौन बखाने ॥
शूर बली रन धीर महा रनमें चढ़िकै हियमें हरषाने।
कवि चक्र कहैं गतिको तिनकी भयभीत भए नररूप जनाने॥

* कुण्डलिया *

यारो शायर दस भले कायर नहीं हजार।
शायर रन सन्मुख करैं कायर करैं बेगार ॥
कायर करैं बेगार प्राणकी आश लगावैं।
ढीली बाँधै लांग त्रियन से खूब बतावैं ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कहत चक्र कवि यार बात जुग २ है जाहर ।
शायर भलो है एक संग सौ भले न कायर ॥

* आल्हा छन्द *

कायर तकि रहे इधर उधरको * नौ कोठन से निकर रहे प्रान॥
कोऊ रोवे घर तिरियन से * अब कस होय मोर कल्यान॥
करी चढ़ाई परिमालिक ने * चन्देले को राजकुमार॥
बड़ो लड़इया जगमें जाहिर * वाकी बेड़ि बहै तरवार॥
तिरिया हँसके बोलन लागीं * बालम मेरी बात बनाय॥
लहँगा ओढ़नी अब तुम पहिरो * दाँतन मिस्सी लेहु लगाय॥
चार दिनाको तिरिया बनिकै * सबियाँ आफत देहु हटाय॥
फौजैं लौटि जायँ चन्देली * तब फिर निकर परयो हरषाय॥
मन खिसियाने तब कायर हैं * हिम्मत करके बढ़े अगार॥
दूनों फौजैं सन्मुख होइ गईं * मुर्चा बन्दी भई तयार॥
हाथी बढ़ायो तब माहिल ने * गर्रई हाँक दीन्ह ललकार॥
काकी माता नाहर जाई * काके जामे करेजे बार॥
काने सरबर करी हमारी * केहि सिर काल रह्यो मड़राय॥
चार चौसधा के नाके पर * काने धौंसा दियो बजाय॥
इतनी सुनिकै परिमालिक ने * आपन हाथी दीन्ह बढ़ाय॥
औ ललकारो है माहिल के * सुनियो माहिल कान लगाय॥
नगर चँदेली एक बस्ती है * जहँ हैं कीर्तसिंह महिपाल॥
तिनके लरिका हमको जानो * हमरो नाम रजा परिमाल॥
बहिन तुम्हारी जो मल्हना है * सुन्दर रूप शील गुण धाम॥
तेहिको ब्याहन हम आए हैं * किस्सा बारी किहो तमाम॥
चुपके ब्याहि देहु बहिनी को * नहिं तो करो युद्ध अब आय॥
बिना बियाहे हम जैबेना * चहै तन धजी २ उड़जाय॥
इतनी सुनिकै माहिल जरि गए * नैना अग्नि ज्वाल हुइजाय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

कबसे ठाकुर तरवरिहा भे ❋ कबसे पाई बीरता आय ॥
कउवा मारे हैं बागन में ❋ बगुला भगे हैं सागर पार ॥
काम परो है ना क्षत्री से ❋ गाँड़ छोड़ि भगो हथियार ॥
धोखे न रहियो केहु क्षत्री के ❋ यह है नगर महोबा भाय ॥
तासों लौटि जाहु चुपके से ❋ काहे मूड़ कटाओ आय ॥
सुनिकै बातें ई माहिल की ❋ गुस्सा भए रजा परिमाल ॥
धरि ललकारो है माहिल को ❋ सुनिये बासुदेव के लाल ॥
हम हैं राजा चन्देली के ❋ हमरो नाम रजा परिमाल ॥
जेहिकी बिटिया सुन्दर देखैं ❋ तेहिपर करैं चढ़ाई हाल ॥
हँसी खुसी से जो ना ब्याहै ❋ जबरन शादी लेहिं कराय ॥
डंड बाँधिकै बरजोरी से ❋ सातों भाँवर लेहिं डराय ॥
बिना बियाहे ना लौटन के ❋ तुमको साफ दीन्ह बतलाय ॥
खैर आपनी तुम जो चाहो ❋ चुपके शादी देहु कराय ॥
इतनी सुनिकै माहिल बोलैं ❋ राजा अक्किल गई तुम्हार ॥
नगर महोबा यह बस्ती है ❋ यहँपर नहीं चलै तरवार ॥
तेहिते फिर भी समुझाइत है ❋ काहे काल रहे गुहराय ॥
भागे न बचिहौ चन्देली लौं ❋ टटुवा टायर लेहिं छुड़ाय ॥
बातन बातन बतबढ़ होइगै ❋ औ बातन में बढ़िगै रार ॥
माहिल लौटि परे फौजन में ❋ गरुई हाँक दीन्ह ललकार ॥
बत्ती दै देव मेरे तोपन में ❋ इन पाजिन को देहु उड़ाय ॥
हुकुम सुनत खन परलै ह्वै गई ❋ कछु तारीफ करो ना जाय ॥
झुके खलासी दुहुँ तरफा से ❋ तोपन ऊपर पहुँचे जाय ॥
थैली लइकै बारूदन की ❋ सो तोपन में दीन भराय ॥
गोला डारि दई ऊपर से ❋ सुम्मा मारि रहे हरगाय ॥
रंजक धरिदई फिर प्यालन में ❋ ऊपर बत्ती दई लगाय ॥
धुवाँ उड़ानो आसमान लौं ❋ सूरज गए धुन्ध में छाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दोऊ ओर से जगी भवानी ❀ अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
अररर अररर गोला छूटैं ❀ धुवना रहो सरग मँड़राय ॥
सननन सननन गोली छुटै ❀ तीरैं सर्र सर्र सर्राय ॥
गोला लागै जेहि हाथी के ❀ सो गिर परै चकत्ता खाय ॥
जौन ऊँट के गोला लागै ❀ गिरिकै भूमि सार अललाय ॥
गोला लागै जिन घोड़न के ❀ चारों सुम्म गर्द ह्वै जायँ ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिन के ❀ धुनकत रुई सरिस उड़जायँ ॥
बंब का गोला जिनके लागै ❀ सो लत्ता से जायँ उड़ाय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❀ तिनके हाड़ माँस छुटि जायँ ॥
छोटी गोली जिनके लागैं ❀ मानौ गिरह कबूतर खाय ॥
बान के डंडा जिनके लागैं ❀ उनके दुइ खण्डा ह्वै जाय ॥
सवा पहर भर गोला बरसो ❀ तोपन हाथ धरो ना जाय ॥
तोपैं धैं धैं लाली ह्वै गईं ❀ चुटकिन के गए माँस उड़ाय ॥
चढ़ी कमनियाँ पानी ह्वै गईं ❀ गोलन्दाज कहैं समुझाय ॥
हमरे भरोसे अब ना रहियो ❀ अब नहिं हमरी कछू बिसाय॥
मारु वन्द मै तब तोपन की ❀ लम्बे बन्द भए तैयार ॥
दोऊ दल आगे को बढ़िगे ❀ परिगई कड़ाबीन की मार ॥
हाँथ बन्दूकैं लइ ज्वानन ने ❀ लइकै पारब्रह्म को नाम ॥
छाँड़ि आसरा जिन्दगानी को ❀ चलने लगे शूर सुरधाम ॥
रिमझिम २ गोली बरसै ❀ मानो मघा बूँद झरिलाय ॥
फुँके पलीता बन्दूकन के ❀ चहुँधा अर्र अर्र अर्राय ॥
गोला लगिजाय जेहि हाथी के ❀ पीछे पाँच पैग हटजायँ ॥
गोली लागै जौन ऊँट को ❀ सो गिरिजाय सार अरराय ॥
गोली लागै जेहि क्षत्री के ❀ ताको काल जाय नगिचाय ॥
गोली लागै जेहि घोड़ा के ❀ मानो गिरह कबूतर खाय ॥
चार घरी भर गोली बरसी ❀ चुटकिन को गै मास उड़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यहू लड़ाई पीछे परिगई ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥
बढ़े सिपाही दुहुँ तरफा से ❋ रहिगा पाँच पैग मैदान ॥
सांगै चलन लगी दुहुतरफा ❋ यारो भयो युद्ध घमसान ॥
छुटै पिचिका भल लोहुन के ❋ औ बुबकारिन बोलै घाव ॥
जुलफैं बूड़िगई लोहू में ❋ सूझत नाहीं अपन पराय ॥
चारि घरी भर बजो सागड़ा ❋ भारो भई सांग की मार ॥
भाला टूटिके दोना हाइगै ❋ दुइमा एक न मानै हार ॥
यहौ लड़ाई पाछे पड़ गइ ❋ अब आगे को सुनो हवाल ॥
दोनों फौजन के चौसंग में ❋ आगे बढ़े राजा परिमाल ॥
औ ललकारो समर भुमि में ❋ ज्वानन खैंचि लई तलवार ॥
चलै जुनब्बी और तिनब्बी ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के ❋ औ बूँदी की असल कटार ॥
चलै शिरोही माना शाही ❋ औ कोटा बूँदी की तलवार ॥
पैदल के सँग पैदल अभिरे ❋ औ असवार साथ असवार ॥
हौदा के संग हौदा भिर गए ❋ आम्बा भवार चली तलवार ॥
सात कोस लौं चलै शिरोही ❋ कटि कटि गिरैं सूर सरदार ॥
पैग २ पर पैदल गिर गए ❋ दुइ २ पैग गिरे असवार ॥
बिसे २ पर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वत सरिस देखाएँ ॥
कला कटिजाएँ जिन घोड़नके ❋ धरती गिरें करवटा खायँ ॥
कटि भुजदंडै रजपूतन के ❋ चेहरा आरपार होइ जायँ ॥
कटे भुसंडा जिन हाथिन के ❋ सो गिर पड़ैं भरहरा खायँ ॥
पागिया तैर रहीं लोहू में ❋ मानो कमल फूल उतरायँ ॥
उलझी जुल्फैं सरदारन की ❋ बहु सेवारसी परैं दिखाय ॥
ढालें गिर गई हैं लोहू में ❋ कछुआ सरिस परे दिखरायँ ॥
पड़ी बंदूकें जो लोहू में ❋ कारे नाग सरिस मन्नायँ ॥
घइहा डारे रण खेतन में ❋ सगरे प्यास २ चिल्लायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

मोहर कटोरा पानी होइगा ❋ कोई बुंद देवइया नायँ ॥
कोऊ रोवत हैं तिरिअन को ❋ हालै लाए गवन कराय ॥
हाय गोसइयाँ अबका करिहैं ❋ हमरो काल पहूँचो आय ॥
कोऊ रोवत हैं लरिकन को ❋ पुरखन कोऊ रहे चिल्लाय ॥
गोल फूटगा भर्रा परिगा ❋ माहिल फौज भगी भर्राय ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ रण दूल्हा से चले पराय ॥
दुई २ फेटन के बँधवइया ❋ उन नारेनकी पकरलई राह ॥
भड़हा आए चन्देली के ❋ सो महुबे में दीन छोड़ाय ॥
भेड़ बकरीयन की गिनती क्या ❋ उन मनइन के करें अहार ॥
कोई रोवै महतारिन को ❋ राख्यो गर्भ माहि ६ मास ॥
हमरे जूझे परलै होई ❋ काकी हाय करेगी आस ॥
छोड़ नौकरी बासुदेव की ❋ बरु बन बेंच लकड़िया खायँ॥
नाहीं भारू घर अपने हम ❋ जो हिंय मूड़ कटावैं जाय ॥
पाँच लाख से मालिक आए ❋ रहिगे तीन लाख सर्दार ॥
हाथी बढ़ायो तब माहिल ने ❋ गर्ई हाँक देत ललकार ॥
मुर्चन २ माहिल पहुँचो ❋ सबसों कहेव पुकार पुकार ॥
नौकर चाकर हम नहिं जानैं ❋ तुम सब भाई लगो हमार ॥
भागि न जइयो तुम मुहरे से ❋ बुड़िहैं सात साख लौं नाम ॥
रन खेतन में जो मर जइहौ ❋ सीधे चले जाव सुरधाम ॥
मानुष देही यह दुर्लभ है ❋ यारो मिलै न बारम्बार ॥
पत्ता टूटै ज्यों तरुवर से ❋ यारो फेर न लागै डार ॥
सदा तरोइया ना बन फूलै ❋ यारो सदा न सावन होय ॥
अमर न काया केहु मानुषकी ❋ सबदिन सदा जियै न कोय॥
यहु दिन कहिबेको रहि जैहै ❋ समया परै न बारम्बार ॥
तेहिते तुमका समझाइत है ❋ यारो राखियो लाज हमार ॥
सुनिकै बातैं ई माहिल की ❋ मनमें छाई खुशी अपार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भुके सिपाही महुबे वारे ❋ फिर रन लागि चलन तलवार॥
ना पुरवाई ना पछुवा है ❋ उत्तर दक्खिन नहीं सुझाय॥
चारो बयारिन का मसका है ❋ रन में होय भड़ाभड़ मार॥
भुके सिपाही चन्देली के ❋ जो मरिबे को नहीं डेराँय॥
भगे सिपाही माहिल वारे ❋ लश्कर रेन बेन ह्वै जाय॥
भगत सिपाही अपने देखो ❋ माहिल हाथी दीन्ह बढ़ाय॥
औ ललकारो चन्देले को ❋ ठाकुर हमरी बात बनाय॥
दुइ २ रुपिया के नौकर हैं ❋ इनको काहे रहे कटवाय॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ देखैं कापर राम रिसाय॥
मनै आइ गई परिमलिक के ❋ हाथी आपन दीन्ह बढ़ाय॥
पहिले चोटैं अपनी करलो ❋ नाहीं तो स्वर्ग बैठि पछताव॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की ❋ माहिल रामचन्द्र को ध्याय॥
खैंचि सिरोही मानासाही ❋ सन्मुख गयो तड़ाका आय॥
करो जड़ाका तकि चेहरे पर ❋ बाएँ उठी गैड़ की ढाल॥
तीन सिरोही हनि हनि मारो ❋ पै बचि गए रजा परिमाल॥
माहिल सोचैं अपने मनमें ❋ है बड़ वीर चन्देले राय॥
गुर्ज उठायो तब माहिल ने ❋ औ अँगुरिन में रहो घुमाय॥
रामचन्द्र को सुमिरन करिकै ❋ औ शारद को शीस नवाय॥
गुर्ज चलाई चन्देले पर ❋ सन्मुख झेली चन्देले राय॥
चोट बचाय लई राजा ने ❋ दाहिने भई शारदा माय॥
लई कमानियाँ तब माहिल ने ❋ गांसी एक सेर की खाय॥
फोक जमाई सन्दोही की ❋ गाँसी ईसपात की भाय॥
मर २ मर २ मची कमनियां ❋ हीकर डटिकै दीन चलाय॥
धरि ललकारो तब माहिल ने ❋ ठाकुर खबर्दार ह्वै जाय॥
अबकी चोटन जो बच जइयो ❋ घर में छटी धरइयो जाय॥
हाथी हटिगो परिमालिक को ❋ सन्मुख तीर गयो सर्राय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बचिगो बेटा कीर्तसिंह को ❀ शारद माता करी सहाय ॥
बोले माहिल तब राजा से ❀ सुनिये बात चन्देले राय ॥
चोटैं तीन बचाईं हमरी ❀ दहिने भयो धर्म्म है आय ॥
अबहूँ लौटि जाहु महुबे से ❀ राजन मानो कही हमार ॥
हँसिकै ज्वाब दियो चन्देले ❀ तुम सुन लेहु महिल परिहार ॥
धर्म्म क्षत्रियन के नाहीं है ❀ रन चढ़ि जौन हटावैं पाँय ॥
जौ हम लौटैं बिना बियाहे ❀ तौ रजपूती धरम नसाय ॥
एक वार औ रौ तुम करि लेव ❀ मनकै मेटि लेहु अरमान ॥
हमरे वारन से बचिहौ ना ❀ नाहक जाई अजाए जान ॥
सुनिकै बातैं चन्देले की ❀ माहिल भाला लियो उठाय ॥
दुचितो करिकै परिमालिक को ❀ माहिल भाला दीन्ह चलाय ॥
हाथी हटाओ पीलवान ने ❀ नीचे सांग गिरी अरराय ॥
तब ललकारो चन्देले ने ❀ माहिल खबरदार ह्वै जाय ॥
वसरिन २ अब तुम खेलो ❀ जैसे कुवाँ भरै पनिहार ॥
तुम्हरी वारैं हमने झेली ❀ हमरो देखो अब तरवार ॥
इतना कहिकै चन्देले ने ❀ अपनो हाथी दीन बढ़ाय ॥
दोनों हौदा इकमिल ह्वैगे ❀ मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
मनिया देवन को सुमिरन करि ❀ नंगी सूत लई तरवार ॥
मस्तक मारो सो हाथी के ❀ हाथी छोड़ि दीन चिघ्घार ॥
रस्सा काटि दओ रेशम को ❀ औ हौदा को दियो गिराय ॥
तुरतै उतरि पड़े हाथी से ❀ माहिल मुश्क लीन्ह बँधवाय ॥
माहिल बाँधत परलै ह्वै गइ ❀ भूपति गए सनाका खाय ॥
सोच समुझि कै अपने मनमें ❀ हाथी आगे दीन्ह बढ़ाय ॥
औ ललकारो वहि भूपति ने ❀ काके जामें करेजे बार ॥
सो अब ज्वाब देइ सन्मुख होय ❀ भाई बाँधो कौन हमार ॥
इतनी सुनिकै भूप चन्देले ❀ आपन हाथी दीन्ह बढ़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

औ फिर ज्वाब दियो भूपतिको ❋ भूपति सुनिये कान लगाय॥
हमरी माता नाहर जाई ❋ हमरे जामे करेजे बार॥
हम चढ़ि आए हैं महुबे पर ❋ हमहीं बाँधो है भाइ तुम्हार॥
ब्याह कराओ अब बहिनीको ❋ काहे रार बढ़ाओ यार॥
बिना बियाहे जो हम जावैं ❋ तौ फिर जीवे को धिकार॥
इतनीसुनिकै जगनिकजरिगए ❋ अरु आँखिन से झरे अँगार॥
ब्याह न करिहैं हम बहिनीको ❋ चाहे कोटि धरौ औतार॥
तेहिते लौटि जाहु चुपके से ❋ नाहक भर्म गँवायो आय॥
जितने आए चन्देली के ❋ सबके मूँड लेहुँ कटवाय॥
सुनिकै बातैं ई भूपति की ❋ हँसिके बोले चन्देले राय॥
आन्धर होवै जो सावन में ❋ सब दिन हरो २ दिखराय॥
हमहैं क्षत्री चन्देली के ❋ तुमते साफ देहिं बतलाय॥
बिना बियाहे हम लौटब ना ❋ महुबा गर्द देहुँ मिलवाय॥
डंड बाँधिकै तोरे बापकी ❋ सातों भाँवर लेहुँ डराय॥
बावन गढ़को हम सर कीन्हो ❋ जीते बड़े २ नर राय॥
तुम्हरी गिनती केहि लेखे में ❋ नाहक आय बढ़ाई रार॥
शरण हमारी में जो आवै ❋ ताकी रक्षा धर्म हमार॥
कैर दूसरी जो कोइ हमसे ❋ मारों क्षत्र भंग ह्वै जाय॥
धोके रहियो न दुसरे के ❋ महुबा शहर लेहुँ लुटवाय॥
तब ललकारो है भूपति ने ❋ ठाकुर काहे करो तकरार॥
काल आयगो है अब तुम्हरो ❋ तेहिते जल्द होहु हुसियार॥
सम्हरो २ अब हौदा पर ❋ देखो एक हमारो वार॥
असकहि ध्यायो नीलकंठ को ❋ मनिया देव महोबे क्यार॥
सुमिरन करिकै जगदम्बा को ❋ शारद चरन हिये में धार॥
फिर ललकारो है भूपति ने ❋ नंगी हाथ लिये तरवार॥
करो जड़ाका जब सन्मुख ह्वै ❋ बाएँ उठी गैड़ की ढाल॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

टूटि सिरोही गइ भूपति की ❋ औ बचि गए रजा परिमाल ॥
गुर्ज उठाय लियो भूपति ने ❋ औ सन्मुख होय दीन चलाय॥
हाथी हटिगो परिमालिक को ❋ उनके अङ्ग न आयो घाय ॥
हाथी बढ़ाओ परिमालिक ने ❋ औ भूपति से कही सुनाय ॥
बार तुम्हारी हमने झेली ❋ उसरी गई तुम्हारी आय ॥
अस कहि सुमिरो इष्ट देव को ❋ औ फिर खैंच लई तलवार ॥
करौ झडाका चन्देले ने ❋ औ भूपति को दियो पछार ॥
मुश्क बांधिकै फिर भूपति की ❋ माहिल पास दीन्ह पहुँचाय ॥
जितनी फौजैं महुबे वारी ❋ ऊँचे खाले चलीं पराय ॥
बन्द लड़ाई चन्देले करि ❋ डेरे लौट परे तत्काल ॥
कमरैं खोलि दई क्षत्रिन ने ❋ सूचित भए रजा परिमाल ॥
चिन्तामनि मंत्री बुलवायो ❋ तिनसे कही चेन्देले राय ॥
माहिल भूपति दोउ बेटन की ❋ हमने मुश्क लई बँधवाय ॥
आगे लड़ाई कैसे ह्वैहै ❋ हमको युगुत देहु बतलाय ॥
मंत्री बोले तब राजा से ❋ मैं राजाकी लेहुँ बलाय ॥
चिट्ठी लिखि देव बासुदेव को ❋ तुमको नीत रहे बतलाय ॥
जो मरजावै गुड़ दीन्हें से ❋ माहुर काहे पियावैं भाय ॥
मनै आय गई चन्देले के ❋ अपनो कलमदान मँगवाय ॥
कागद लइकै कलपी वारो ❋ मनमें श्री गणेशको ध्याय ॥
सिद्ध श्री सर्वोपम लिखिकै ❋ तेहिके पीछे सात सलाम ॥
चिट्ठी तुमको हम भेजित है ❋ सुनिये बासुदेव बलधाम ॥
माहिल भूपति तुम्हरे बेटा ❋ हमने कैद लीन्ह करवाय ॥
तेहिते तुमको समुझाइत है ❋ मनको काह रहे भरमाय ॥
मल्हना बेटी चुपके ब्याहो ❋ काहे रार बढ़ाओ भाय ॥
करो दूसरी हमरे सँग में ❋ तुम्हरो शहर लेहिं छिनवाय ॥
बेटी ब्याहे बिन जैहैं ना ❋ हमरे बचन करो परमान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हम चन्देले चन्द्रवंश हैं ❋ बिटिया दिये नहीं कुछ हानि ॥
ऐसी चिट्ठी चन्देले लिखि ❋ औ धामन को दीन्ह पकराय॥
चिट्ठी लइकै धामन चलिभो ❋ साँड़िनि निकट पहूँचो आय ॥
कूदि साँड़िनी पर चढ़ि बैठो ❋ औ महुबे की पकरी राह ॥
छम २ छम २ चलै साँड़िनी ❋ जाको परे भूमि ना पाँय ॥
जायके पहुँचो है महुबे में ❋ धामन उतरि परा हरषाय ॥
जहाँ कचेहरी वासुदेव की ❋ धामन अटा तड़ाका जाय ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन ❋ जापर बैठ वीर वरियार ॥
बड़े २ क्षत्री जहँपर बैठे ❋ टिहुनन धरे नगिन तरवार ॥
सिंह की बैठक क्षत्री बैठे ❋ बड़े २ गोला भांग जमाय ॥
चढ़ी अफीमन की गोली हैं ❋ आँखें मूँदें औ रहिजायँ ॥
किटकिन किटकिन बजै मजीरा ❋ तबला गमकि २ रहिजाय ॥
छोटी पतुरिया उड़ि २ नाचै ❋ लहरा आसमान लहराय ॥
पाँच पैगसे कुन्नस करिकै ❋ औ आगे बढ़ि करी सलाम ॥
पाती दैदई महराजा को ❋ धामन ध्याय हृदय श्रीराम ॥
पकरि लिफाफा के बँद काटे ❋ आकुइ आँक नजर करिजाय॥
चिट्ठी बाँचत परलै ह्वैगई ❋ आँखन गई लालरी छाय ॥
तुरत जबाब लिखो चिट्ठी को ❋ अपनो कलमदान मँगवाय ॥
सिद्ध श्री सर्वोपम लिखिदो ❋ मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
धोखे न रहियो बावनगढ़ के ❋ मनके बढ़े चँदेले राय ॥
कठिन मवासी गढ़ महुबो है ❋ सीधे व्याह होन को नायँ ॥
तेहिते फिरजाव चंदेली को ❋ अबहूँ कछु न बिगरा भाय ॥
भागे न बचिहो चंदेली लौं ❋ सबके मूड़ लेहुँ कटवाय ॥
बंद लिफाफा में करि दीन्हों ❋ औ धामन को दीन्ह पकराय॥
चलिभा धामन गढ़ महुबे से ❋ पहुँचा जहाँ चँदेले राय ॥
पाती दैदई चँदेले को ❋ धामन हाँथ बाँधि रहिजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

काटि लिफाफा के बँद डारे ❀ आँकुइ आँकु नजर करिजाय ॥
छाय लालरी गइ आँखन में ❀ गुस्सा गई बदन में आय ॥
डंका बाजै मेरे लश्कर में ❀ तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में ❀ सिगरी फौज भई तैयार ॥
हाथी चढ़ैया हाँथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न के असवार ॥
हियाँ की बातें हियैं छोड़ दई ❀ अब आगे के सुनो हवाल ॥
वासुदेव महुबे को राजा ❀ सोऊ सजन लागो तत्काल ॥
तोप दरोगा को बुलवायो ❀ सोने कड़ा दियो पहिराय ॥
जितनी तोपैं गढ़ महुबे में ❀ सबियाँ लेहु तुरत सजवाय ॥
हाथी दरोगा को बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दीन्ह फरमाय ॥
जितने हाथी गढ़ महुबे में ❀ हौदा सब पर देहु धराय ॥
घोड़ दरोगा को बुलवायो ❀ चीरा कलँगी दीन गहाय ॥
जितने घोड़ा मेरे लश्कर में ❀ सब पर जीन देहु धरवाय ॥
बजो नगाड़ा तब महुबे में ❀ फौजैं भईं सबै तैयार ॥
पहिले नगाड़ा में जिन बन्दी ❀ औ दूसरे में भए हुशियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत खन ❀ घोड़न ऊपर भए सवार ॥
हाँथी चढ़ैया हाँथी चढ़िगए ❀ बाँके घोड़न के असवार ॥
चार घरी को अरसा गुजरो ❀ सजिगे तीन लाख सर्दार ॥
दो हजार तोपैं सजवाई ❀ हाँथी साजिगे पाँच हजार ॥
वीरभयंकर हाथी साजो ❀ जामें कलश सुबरन क्यार ॥
चकमक पत्थर के हौदा हैं ❀ जामें टूटि जाय तरवार ॥
सीढ़ी लागी मलयागिरि की ❀ मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
चढ़िगए राजा बासुदेवजी ❀ हाँथी ऊपर पहुँचे जाय ॥
समर भयङ्कर हाथी चलिभो ❀ हाहाकारि शब्द गा छाय ॥
डंका बाजे अहतङ्का के ❀ सूझत नाहीं अपन पराय ॥
इतते फौजैं बासुदेव की ❀ उत से फौज चँदेले क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

दोनों बढ़ रहीं दोनों ओर से ❀ चम २ चमकि रही तलवार ॥
हाथी बढ़ायो बासुदेव ने ❀ औ राजा तर पहुँचो जाय ॥
कौन सूरमा जग जन्मा है ❀ महुबा धुरा दबायो आय ॥
कौने बाँधो है माहिल को ❀ भूपति कौन लीन्ह बँधवाय॥
कौन चन्देला कहलावत है ❀ का सिर काल रहो मड़राय ॥
इतनी सुनिकै चन्देले ने ❀ हाथी आपन दीन्ह बढ़ाय ॥
औ ललकारो बासुदेव को ❀ ठाकुर खबरदार हुइजाय ॥
हमने बाँधो है माहिल को ❀ भूपति कैद लीन्ह करवाय ॥
नाम हमारो परिमालिक है ❀ जगमें विदित चन्देले राय ॥
जल्दी ब्याह करो बिटिया को ❀ नहिं महुबा को लेहु लुटाय॥
डंड बाँधिकै ब्याह कराऊँ ❀ सातौ भाँवर लेहुँ डराय ॥
बोले राजा बासुदेव तब ❀ तुम सुन लेहु चन्देले राय ॥
नाही टीका हमने भेजो ❀ काहे फौजैं लाए चढ़ाय ॥
नहीं सगाई हमने कीन्हीं ❀ तुम अन्याय कियो है आय॥
मनके बढ़िया चन्देले हैं ❀ मुहरा मर्द केर अब भाय ॥
कव्वा मारे हैं बागन में ❀ बगुला मारे तलैया ताल ॥
जंगल मिरगा तुमने मारे ❀ औ बनिगए बीर परिमाल ॥
तेहिते तुमका समुझाइत है ❀ चुपके लौटि चन्देली जाय ॥
डंड छारि दो मोरे बेटनकी ❀ काहे रार बढ़ाई आय ॥
ब्याह चंदेली में होईनौं ❀ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
चुपके लौटि जाव जल्दी से ❀ नहिं तो लैहौं मूड़ कटाय ॥
सुनिकै बातें बासुदेव की ❀ बोले बिहँसि रजा परिमाल ॥
नहीं सगाई तुमने कीन्हीं ❀ तौ क्या बिगड़ गयो महिपाल॥
कौन सिंह को न्योता भेजैं ❀ कीतुम आय मास मम खाय॥
अपने बलसे सिंह पछारैं ❀ निर्भय विपिन फिरैं बनराय॥
कहाँ क्षत्तरी करैं सगाई ❀ सुनिये महाराज चितधार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जेहिकी बिटिया सुन्दर देखैं ❀ जगमें रूप राशि करतार ॥
बलकर तासे व्याह रचावैं ❀ क्षत्री सदा तेगकी धार ॥
लगन धरावै बनिया बाटू ❀ जूड़ी चढ़ै देखि तलवार ॥
हमतो बेटा हैं क्षत्री के ❀ जो रन चढ़के लोह चबायँ ॥
आन देवता की का गिनती ❀ शङ्का नहीं कालकी खायँ ॥
सिंहिनि माताने जाया है ❀ नित नव मारि शिकारैं खायँ॥
सुन्दरि नारि देखिकै क्षत्री ❀ शङ्का नहीं कालकी खायँ ॥
जेहिकी बिटिया सुंदर देखैं ❀ तेहिकर धूरो लेहिं दबाय ॥
दावा राखैं रजपूती को ❀ औ करि तेगा लेहिं विवाह ॥
बावन गढ़के राजा जीते ❀ मारो खुरासान गुजरात ॥
जितने क्षत्री हैं पृथ्वी पर ❀ सबियाँ थहर २ थहरात ॥
करै दूसरी जो कोइ हमसे ❀ मारों क्षत्र भंग ह्वै जाय ॥
गढ़िया खोदि ताल करवाऊँ ❀ मटियामेट देहुँ करवाय ॥
इतनी सुनि लइ बासुदेव ने ❀ सूखी निकर गई वापार ॥
मानो तोप निशाना लागो ❀ याकी उगिल परी तलवार ॥
जैसे पान में चूना लागै ❀ उरते खैर तुरत रचिजाय ॥
बात लागि गै बासुदेव के ❀ नैना अगिज्वाल होइजाय ॥
हुक्म सुनायो रजपूतन को ❀ तोपन आगी देहु लगाय ॥
बेगि उड़ादो इन पाजिनको ❀ सबकी कटा देहु करवाय ॥
बत्ती दैदइ तब तोपन में ❀ धुअना रहो सरग मड़राय ॥
छाय अँधेरिया गइ लश्कर में ❀ सूरज गए धुवा में छाय ॥
बड़ि २ तोपैं अष्ट धात की ❀ चहुँधा गर्ज २ रहि जायँ ॥
होय धड़ाका जब तोपन के ❀ नारिन केर गर्भ गिरजाय ॥
अररर अररर गोला छूटै ❀ सररर परी तीरकी मार ॥
सननन सननन गोला बरसै ❀ कैवरि निकरि जायँ वापार॥
गोला लागै जिन हाथिन के ❀ सो रन चिघर २ रहिजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गोला लागै जौन ऊँट के ❋ सो गिरि परै चकत्ता खाय ॥
जौन घोड़ के गोला लागै ❋ चारौ सुम्म गर्द ह्वै जाय ॥
गोला लागै जेहि क्षत्री के ❋ लत्ता सरिस तौन उड़ि जायँ ॥
बंब का गोला जिनके लागै ❋ सीधे स्वर्गलोक को जायँ ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❋ तिनके हाड़ माँस छुटिजायँ ॥
बान का डंडा जिनके लागै ❋ तिनके दुइखंडा ह्वै जाय ॥
तीर की गाँसी जाके लागै ❋ सो गिरपरै करौटा खाय ॥
दोउ ओर से गोला बरसै ❋ अंधाधुंध मचाई मार ॥
बड़ी लड़ाई भइ तोपन की ❋ बरसै गोल बुंद अनुहार ॥
तोपैं तपिकै लाली होइगईं ❋ जिनपर हाथ धरो ना जाय ॥
चढ़ी कमानियाँ पानी होइगईं ❋ चुटकिन के गए माँस उड़ाय ॥
तोप लड़ाई पीछे परिगइ ❋ आई कड़ाबीन की मार ॥
मननन मननन गोली छूटै ❋ सूखी निकर जाय वा पार ॥
सननन सननन सहटी छूटैं ❋ काली नागिन अस मंत्राय ॥
बान अगिनियाँ कहुँ २ छूटैं ❋ कहुँ २ तीर रहे सन्नाय ॥
जैसे साँप घुसै बाँबी में ❋ सर सर चला सराका जाय ॥
तैसइ गोली धँसै देह में ❋ काटत मास अराका जाय ॥
जेहि हाथी के गोली लागै ❋ दल में सार ठाढ़ चिल्लाय ॥
मानो बज्र गिरो पर्वत पै ❋ धरती फार गयो सामिपाय ॥
जौन ऊँटके गोली लागै ❋ वह मुँहबाय सार अलसाय ॥
गोली लागै जेहि घोड़ा के ❋ मानो गिरह कबूतर खाय ॥
गोली लागै जौन ज्वान के ❋ सो गिरपरै भरहरा खाय ॥
यहू लड़ाई पाछे परिगई ❋ यारो सुनयो कान लगाय ॥
छोड़ि बंदूकैं दइ ज्वानन ने ❋ लम्बे बंद किये तैयार ॥
आगे बढ़ गईं दूनो फौजैं ❋ अपनी खैंचि २ तरवार ॥
चलै जुनब्बी और तिनब्बी ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तेगा चटकैं बर्दवान के ❀ औ बूँदी की असल कटार ॥
खट २ खट २ तेगा बोलै ❀ बोलै छपक २ तरवार ॥
गप २ गप २ छुरी कटारी ❀ औ घावन ते छुटैं फुहार ॥
कल्ला कटिगए भइ घोड़न के ❀ चेहरा केट सिपाहिन क्यार ॥
कटि भुजदण्ड गईं वीरन की ❀ औ बहि चली रक्त की धार ॥
पैग २ पर पैदल गिरिगे ❀ दुई २ पैग गिरे असवार ॥
बिसे २ पर हाथी डारे ❀ छोटे पर्वत की अनुहार ॥
भारी समर भयो महुबे में ❀ आम्बा भवार चली तरवार ॥
मूड़न केर मुड़ चौरा भे ❀ औ रुण्डन के लाग पहार ॥
पगिया डारी हैं लोहू में ❀ मानो कमलफूल उतरायँ ॥
परे दुशाला हैं लोहुन में ❀ जे जलजीव सरिस दिखरायँ ॥
डारे घैहा रन में लोटैं ❀ सबही प्यास २ चिल्लायँ ॥
मुहर कटोरा पानी होइगा ❀ कोऊ बूँद दिवइया नाहिं ॥
दोनों फौजैं एकमिल ह्वैगईं ❀ औ फिर चलन लगी तरवार ॥
भैया ऊपर भैया जूझे ❀ जूझे यार यार सँग यार ॥
सूँड़ लपेटा हाथी होइगे ❀ ऊपर होय भड़ाभड़ मार ॥
जिरहन वारे लोटैं पोटैं ❀ बख्तर वारे खायँ पछार ॥
हलके घाव है जिन वीरन के ❀ उठ २ करैं खूब तरवार ॥
अपनो पराया कछु ना सूझै ❀ मार २ सब रहे पुकार ॥
झुके सिपाही महुबे वारे ❀ अपनी खैंचि २ तरवार ॥
झुके सिपाही चंदेली के ❀ अपनो माया मोह विसार ॥
बड़ी लड़ाई भइ संगर में ❀ हमरे बूत कही ना जाय ॥
कायर भागे दोऊ दल के ❀ ऊँचे खाले रहे लुकाय ॥
ढीली धोतिन के बँधवैया ❀ तिरिया तकैं पनघटा जाय ॥
ह्वै २ कलँगिन के बँधवैया ❀ ते नारे की पकरी राह ॥
प्राण पियारे जिन मेहरन को ❀ गाँडू छोड़ दिहेन हथियार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गम मनावैं औ शङ्कर को ❋ बिधना राखु आजु यहिबार॥
ऊपर मुरदा अपने करिके ❋ तर लोथिन के रहे लुकाय॥
हेला आवैं जब हाथिन के ❋ तिनके प्राण अजाए जाय।
जिन्हैं पियारी हाय सुंदरी ❋ अबहीं लाए गवन कराय॥
डारि सिरोही करते दीन्हीं ❋ तनमें लीन्हीं भस्म रमाय॥
रक्त भरी माटी कर लइके ❋ मस्तक टीका लिये लगाय॥
औ ललकारो है बीरन को ❋ औ महराजा बात बनाय॥
हमै न मरियो हमै न मरियो ❋ हमतो भीख माँगके खायँ॥
तीरथ करने हम आए हैं ❋ भइया हरिद्वार को जायँ॥
निहुरे २ कायर भागे ❋ जिनको राह नहीं दिखराय॥
पट्टे बाज सिपाही भागे ❋ भागे बड़े २ उमराव॥
भागत फौजैं आपन देखो ❋ राजा हाथी दीन्ह बढ़ाय॥
हाथ उठाय के राजा बोलैं ❋ भैयो मेरी बात बनाय॥
नौकर चाकर हम जानी ना ❋ तुमतो भाई लगो हमार॥
भाग न जैयो रन समुहे से ❋ ऐसे भगिवे को धिक्कार॥
सदा तुरैया ना बन फूलै ❋ यारो सदा न सावन होय॥
मानुष देही या दुर्लभ है ❋ फिर यह जनम होय ना होय॥
खटिया परि कै जो मर जैहौ ❋ कोऊ नाम लेइगो नाय॥
सन्मुख मरिहौ रन खेतन में ❋ साखा सात पुस्त लौं जाय॥
पत्ता टूटै जो तरुवर से ❋ भैया फेरि न लागै डार॥
यह दिन कहिबे को रहिजै हैं ❋ समया परै न बारम्बार॥
युद्ध जीति कै महुबे लौटो ❋ मुहरन तोड़ा देहुँ गहाय॥
स्वर्ग मड़इया सब काहू की ❋ कोई आज काल्ह कोइ जाय॥
बढ़िजाव बढ़िजाव मेरे सहजादो ❋ अब क्यों राखो देर लगाय॥
जंग जीत लो चन्देले को ❋ दूनी तलब देहुँ करवाय॥
दिहौ बढ़ावा रजपूतन को ❋ औ आगे को दियो बढ़ाय॥
झुके सिपाही महुबे वारे ❋ अपनो मया मोह बिसराय॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

इतसे फौजैं चन्देले की * अम्बा भवार चलै तलवार ॥
तीन पहर भर चली सिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार॥
जैसे पान तमोली कतेर * जैसे खेती काट किसान ॥
सुवा सुपारी को जिमि काटै * तैसेइ कटैं सुघरुवा ज्वान ॥
छुटैं पिचिका भाई लोहू के * होइगे लाल २ असवार ॥
सावन भादौं की बर्षा मनु * रनमें बहै रक्त की धार ॥
नहरैं निकरि परीं लोहू की * पगिया कमल सरिस उतरायँ॥
लाशन ऊपर लाशैं पाटीं * घइहा कहर २ रहिजायँ ॥
घोड़े बूड़ि गए लोहू में * यारो बूड़ि गई तरवार ॥
लाली फैल रही संगरमें * मानो फूल रही फुलवार ॥
कटि २ शीश गिरैं धरती में * उठि २ रुण्ड करैं तरवार ॥
मार २ कहि क्षत्री धावै * श्यावश २ कहैं पुकार ॥
कोई सुमिरि रहे तिरियन को * लाये हाल गवन करवाय ॥
हाय विधाता तुम दहिने हो * प्यारी भाग आज बचजायँ ॥
कोई सुमिरै महतारी को * संकट परा भयानक आय ॥
करौ सहाई अब माता तुम * हमरे प्राण बचाओ आय ॥
कोई सुमिरै देवि देवता * दैया बापू रहे मचाय ॥
अल्ला २ करैं मुसल्ला * हल्ला परो गोल में आय ॥
खुदा २ सैयद सब टेरैं * तोबा तिल्ला करैं पठान ॥
वार लाग जाय तरवारी का * औ कटिजायँ सुघरुवा ज्वान॥
बड़े २ बेटा कायथ वारे * तेऊ रन से चले पराय ॥
लिखन पढ़नकी करैं नौकरी * बन में बेंच लकड़िया खायँ॥
लंबी धोतिन के पहिरैया * बीड़ा खाय निकारैं दाँत ॥
माँग काढिकै पाटी फारैं * सुरमा देहिं दिना औ गत ॥
जुल्फैं लटकि रहीं काधेलौं * टोपी रहा कानलौं छाय ॥
गाँडू भागि चले सन्मुख से * पीछे फेर देखते नाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऐसी नौकरी हमना करिहैं * चाहै भीख माँगि के खायँ ॥
बड़े २ बेटा भाई सेनके * धोती रही तोंद पर छाय ॥
घर होते तो हेलुवा खाते * चुपके बैठि दुकानन मायँ ॥
घायल होइकै सो कहँरत हैं * इनको मास गीध अब खायँ ॥
छैल चिकनिया जिउ लै भागे * नित उठि तकैं पराई नार ॥
यह गति होगइ है लश्कर की * बेड़ा कौन लगावै पार ॥
जिनके कंथा खेतन जूझे * कामिनि पिया २ चिल्लाय ॥
माता रोवै निज पुत्रन को * लरिका इधर उधर बिल्लायँ ॥
भाई रोई रहे भाइन को * ईश्वर दीन्ह बिछोहा डार ॥
आधे ज्वान कटे महुबे के * तेहिके आध चन्देले क्यार ॥
बड़े लड़इया चंदेले हैं * जिनकी बेड़ि बहै तलवार ॥
दौड़ २ के बैरी मारैं * अम्बा भ्वार करैं तलवार ॥
कोई २ घोड़ा हंस चाल परं * कोउ २ मोर चालपर जाय ॥
भाला घूमै रजपूतन के * जिनमें पाखि उड़त बिधजाय ॥
साँगैं चमकैं भल फौजन में * कहुँ २ लपकि रही तलवार ॥
दबी बापसी चन्देले की * होवे यार भड़ा भड़ मार ॥
इक मुहरे पर है परिमालिक * अन्धा धुन्ध करै तलवार ॥
दुसरे मुहरे पर चिन्तामन * मंत्री जौन चँदेले क्यार ॥
बड़ो लड़इया यहु बाम्हन है * जिनकी बेड़ि बहै तलवार ॥
धरि २ मारै औ ललकारै * सुनिकै शत्रु भगैं ललकार ॥
एक अलँग में चन्द्रकार है * भाई जौन चँदेले क्यार ॥
बड़ो लड़इया यहु जोधा है * हाथे चमकि रहीं तलवार ॥
चौथे मुहरा के ऊपर में * मुंशी डटे नवल चौहान ॥
धरि २ मारै औ ललकारै * रनमें करैं घोर घमसान ॥
चार तरफ से चारिव दबिगे * फौजैं झुकी चँदेले क्यार ॥
खट २ खट २ चलै सिरोही * रनमें होय भयानक मार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0, Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जैसे भेड़िन भेड़हा पैठैं ❋ जैसे सिंह बिडारैं गाय ॥
जैसे लरिका खेलैं कबड्डी ❋ गिन २ धरैं अगारी पायँ ॥
तैसेइ टूटे चंदेली के ❋ एक से एक लड़ैते ज्वान ॥
भगदर परिगै है लश्कर में ❋ भागे सबै महुबिया ज्वान ॥
इकले वासुदेव महराजा ❋ गर्जै खड़े बीच मैदान ॥
तोप मोरचा को लै लीना ❋ आगे बढ़े चँदेले ज्वान ॥
राम बनावै तो बनिजावै ❋ बिगड़ी बनत २ बन जाय ॥
बनी २ के सब साथी हैं ❋ बिगरे कोऊ नहीं दिखाय ॥
हाथी बढ़ायो बासुदेव ने ❋ मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
औ ललकारो चन्देले को ❋ ठाकुर खबर्दार ह्वै जाय ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ देखैं कापर राम रिसाय ॥
पहिली उचौनी अब करलीजै ❋ नाहिं तो स्वर्ग बैठि पछिताय ॥
सुनिकै बातैं वासुदेव की ❋ बोले चन्द्रवंश सर्दार ॥
रीतैं बांधी चन्द्रब्रह्म ने ❋ भैया कुला २ ब्योहार ॥
हा हा खाते को ना मारैं ❋ ना भागे के पैरैं पछार ॥
हाथ मेहरियन पर ना डारैं ❋ गो ब्राह्मण की सुनैं पुकार ॥
पहिली उचौनी कबौं न करते ❋ साँची कहैं भूप परिहार ॥
अपनी वारैं जल्दी करलो ❋ काहे करते खड़े अवार ॥
इतनी सुनिकै वासुदेव ने ❋ मनमा सुमिरि शारदा माय ॥
मनिया देवन के पगध्यायो ❋ अब असने में करौ सहाय ॥
सुमिरन करिकै इष्टदेव को ❋ राजा खैंचि लई तरवार ॥
करो जड़ाका चंदेले पर ❋ लीन्हों भूप ढाल पर वार ॥
तीन सिरोही हनि २ मारी ❋ उनके अंग न आयो घाय ॥
टूटि सिरोही गै राजा की ❋ राजा खड़े २ पछितायँ ॥
यही सिरोही से गज काटे ❋ औ घोड़न के चारो पायँ ॥
वही भगौती धोका दै गई ❋ हमरो काल गयो नगिचाय ॥

CC-0, Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

साँग उठाई तब राजा ने * औ सन्मुख से दई चलाय ॥
हाथी हटिगो चन्देले को * नीचे साँग गिरो अरराय ॥
गुर्ज उठायो बासुदेव ने * मनमें सुमिरि शारदा माय ॥
धरि ललकारो चन्देले को * मारो गुर्ज क्रोध में आय ॥
वार बचायो चन्देले ने * नीचे साँग गिरी अरराय ॥

❋ सवैया ❋

पूत कपूत जनै गदही दस पुत्र जनै कल नेक न पावै।
लादत २ भार सदा जब आयु घटै यम धाम सिधावै ॥
सिंहिनि एक सुपुत्र जनै बनमें निःसंक रहै सुख पावै।
चक्र सपूत सदा सुख देत कपूत सदा कुल दाग लगावै ॥

ठाढ़े सोचैं बासुदेव नृप * हमपर राम गए रिसियाय ॥
बिटिया दीन्हीं नारायन ने * इज्जत माटी दीन मिलाय ॥
होत न बेटी जो हमरे घर * तोकस चढ़त चन्देले राय ॥
दोनों लरिका हमरे बँधगए * हमरो काल पहूँचो आय ॥
गौ ब्राह्मण को जौन सतावै * पीढ़ी सात नरक को जाय ॥
जेहिके घरमें नारि कर्कसा * तेहिकर अवस नाश ह्वै जाय ॥
कन्या जन्मैं जेहिके घरमें * तेहिकी कुशल करैं भगवान ॥
सबै प्रतिष्ठा कन्या नाशै * कन्या गर्व निवारनि जान ॥
बनिया अच्छे सब विधि भैया * कन्या होंय तीन औ चार ॥
कन्यादान करैं आनन्द सों * अपनी कुला २ व्योहार ॥
बड़ी बुराई यह क्षत्रिन माँ * कन्या कुलको देहिं नसाय ॥
शीश जमाई का काटत हैं * बिटिया बिधवा देहिं बनाय ॥
हाय गुसैयाँ कैसी कीरये * हमरे बूत सहीना जाय ॥
यहिविधि सोचि समुझि राजाने * चन्देले से कही सुनाय ॥
गरुए नाते के लरिका हौ * जो तुम चलो हमारे साथ ॥
तौ हम ब्याह करैं बेटी को * साँची बात कहैं नरनाथ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनिकै बातैं महराजा की * आगे बढ़े चन्देले राय ॥
औ ललकारो बासुदेव को * राजा खबरदार ह्वै जाय ॥
तुम्हरी वारैं हमने झेली * हमरी लेहु वार सर्कार ॥
ऐसी कहिकै चन्देले ने * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
कियो जड़ाका बासुदेव पर * मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
रस्सा काटि दियो हाथी के * हौदा तरे गिरो भहराय ॥
मुश्क बाँधि लई महराजा की * लश्कर तिड़ी बिड़ी ह्वै जाय ॥
कह्यो चन्देले बासुदेव से * राजा काह रहे पछिताय ॥
कौन सी शेखी में भूले हो * मारौं राज भंग ह्वै जाय ॥
अबही ब्याहौ ना बेटी को * महुबा गर्द देहुँ करवाय ॥
इतनी सुनिकै बासुदेवजी * बोले सुनो चँदेले राय ॥
डंड छोरि देव दोउ बेटन की * अबही ब्याह देहुँ करवाय ॥
गंगा कीन्हीं बासुदेव ने * मुश्कैं खोलि चँदेले राय ॥
हँसी खुसी से राजा चलिभै * माहिल भूपति संग लिवाय ॥
युक्ति बिचारी बासुदेव ने * चुंगल दहक दियो खुदवाय ॥
पलँग बिछायो ताके ऊपर * कच्चे तागन दियो बिनाय ॥
फिर बुलवायो परिमालिक को * यारो सुनियो कान लगाय ॥
खबरैं पहुँची चन्देल पर * उनने मंत्री लीन्ह बुलाय ॥
भयो बुलौवा है ब्याहे को * आज्ञा देहु महल हम जायँ ॥
सुनिकै बातैं चन्देले की * मंत्री सोचि २ रहिजाय ॥
सोचि समुझि के मंत्री बोले * सुनिये चन्द्र वंश सर्दार ॥
संगै तुम्हरे हम सब चलिबे * सातो शूर चन्देली क्यार ॥
मनै भाय गई चंदेले के * तुरतै हुकुम दीन फर्माय ॥
करैं तयारी सातौ योधा * आगे कहैं हकीकत गाय ॥
सातो चलि भे भाइ फौजन से * पहुँचे नगर महोबे जाय ॥
खातिर कीन्हीं बासुदेव ने * ऊँची गद्दी दई डराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भयो बुलौवा परिमालिक को * भीतर महल गए परिमाल ॥
पलँग बतायो सोइ ऊमे को * दैया देख दई के ख्याल ॥
नजर घूमगई चन्देले की * मल्हना कुँवरि नजर परिजाय॥
कियो इशारा तिन मल्हना ने * कंथा सावधान ह्वै जाव ॥
चतुर चन्देले अति भारी थे * सबकुछ समझ गए तत्काल ॥
कुरसी और रहै बँगला में * तामे बैठे रजा परिमाल ॥
सन्मुख देखो जब मल्हना को * मानों चन्द्र पूर्ण दिखराय ॥
रूप रँगीली अति गरवीली * सुन्दर सुखद सलोनी नार ॥
बड़ि २ आँखें वहि मल्हनाकी * छोटे मिरगन के अनुहार ॥
पाँव महावर दांतन मिस्सी * तेहि पर बीड़ा करै बहार ॥
गोर बदन पर हरियर गोदना * यागे दमकि २ रहिजाय ॥
मल्हना रानी की सूरत लखि * मोहित भए चन्देले राय ॥
सोचन लागे तब चन्देले * केहिबिधि यासों होय विवाह॥
घटिहा राजा बासुदेव है * यहि ते मनै होत पछिताव ॥
लोभी को धन से बस करिये * मूरख सब्ज़ बाग दिखराय ॥
नारि नवेली तब बस होवै * भूषण बस्त्र देइ मँगवाय ॥
करैं बड़ाई बहुत भाँति से * झूठी साँची बात बनाय ॥
बसीकरन यह आला जानो * दुष्टै पुरुष अवश फँस जायँ॥
यहिविधि सोचि समुझिके मनमें * बोले तुरत चन्देले राय ॥
एक बात तुमको बतलावैं * राजा सुनिये कान लगाय ॥
बिटिया जनमै जेहिके घरमें * तेहि की पति राखैं भगवान॥
स्यानी बिटिया सूरत देखैं * तिनको लागै पाप महान ॥
स्यानी बिटिया कोऊ न राखै * जल्दी ब्याह देहिं करवाय ॥
उत्तम मानुष उनको कहिये * जे ज्वानी में करैं विवाह ॥
अधम पुरुष ते पुरुष कहावैं * बिटिया जौन बिबाही नाय ॥
तेहिते तुमको समुझाइत है * नाहक चित्त रहे भरमाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हसी खुशी से व्याह कराओ * काहे मूड़ रहे कटवाय ॥
इकले बिटिया के जियरे पर * नाहक रार मचाओ भाय ॥
अपयश खान जान जग बेटी * यश औ मान देइ विनशाय॥
मान मारिकै गर्व घटावै * बिटिया चण्डि रूप दिखराय ॥
विधवा बिटिया जेहिकी होइजाय * तेहिको कौन कहै अहवाल ॥
रहै प्रतिष्ठा को भय हरदम * साँची कहैं बात नरपाल ॥
नीति शास्त्र तुम भल जानतहौ * तुमको काह कहैं समुझाय ॥
तेहिते तुमका समुझाइत है * चुपके भाँवरि देहु डराय ॥
सुनिकै बातैं चन्देले की * राजा उठे हृदय हर्षाय ॥
तुरत बुलायो है पंडित को * यारो सुनियो कान लगाय ॥
तुरत सहेली सब तब आईं * होवै लाग मंगला चार ॥
कलश सूबरन के धरवाये * बाँधी द्वार पै बन्दन वार ॥
हुक्म सुनायो बासुदेव ने * महुबा नगर देहु सजवाय ॥
झाड़ू करिकै गलियारिन में * औ सतरंजी देहु बिछाय ॥
द्वार २ पर कलश धरावो * बन्दन वार देहु बँधवाय ॥
नौबत बाजैं द्वार २ पर * अँतरन सड़क सिंचावोजाय ॥
आए चन्देले इत फौजन में * आपन करन तयारी लाग ॥
सजी बरातैं चन्देले की * यारो उड़ै छतीसो राग ॥
अन्हवन कीन्हों परिमालिकने * मनमें श्री गणेश को ध्याय॥
धोती पहिरी रेशम वारी * गुठुवन तलक लीन्ह लटकाय॥
जामा पहिरो मुसरू वारो * जामें गोट दुदामी क्यार ॥
अगल बगल में दुइ पिस्तौलैं * दहिने सिंहिनि मूठ कटार ॥
चली बरायत चन्देले की * पलकी बैठ चन्द्र सर्दार ॥
जायके पहुँचे हैं महुबे में * घर २ होय मंगला चार ॥
उड़ै गुलाल यार चहुँधा से * कामिनि करैं फूलकी मार ॥
कहूँ सुगन्ध उड़ै केवड़ा को * जासों मस्त होयँ सर्दार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

छुटैं पिचिका केशर वारे * गलियाँ महक २ रहिजायँ ॥
टँगे पीजरा लल मुनियन के * चिड़िया चहक २ रहिजायँ ॥
बन्दन वारी घर २ सोहै * दर २ कलश सूबरन क्यार ॥
गड़ २ गड़ २ बजै नगारा * झनझन झाँझनकी झनकार॥
उड़ैं दुपट्टा भइ तिरियन के * नभमें रही लालरी छाय ॥
झुकि २ देखै चन्देले को * शोभा कही बूतना जाय ॥
रूप उजागर अति गुनआगर * शोभा जाकी अगम अपार ॥
धन्य बखानैं वहि माता को * जाकी कोख लीन्ह औतार ॥
रूप देखिकै परिमालिक को * सबियाँ मोहि २ रहि जायँ ॥
आई बरायत दरवाजे पर * राजा पांडित लीन्ह बुलाय ॥
चौक लिपाई भइ गोबर से * मोतिन चौक दीन्ह पुरवाय॥
कलश सूबरन को धरवायो * चौमुख दियना दिहो जराय॥
मंगल गान होन तब लागे * पंडित बेदी रची बनाय ॥
चौकी बैठे चंदेले तब * मनमें श्री गणेश को ध्याय॥
पंडित चिंतामणि तब आए * गहनो डिब्बो दियो गहाय ॥
तुरत बुलाओ अब बेटी को * साइत निकट पहुँची आय ॥
सुनिकै बातैं चिंतामन की * राजा नाउन लीन्ह बुलाय ॥
तुरतै लै आवो बेटी को * राजा हुक्म दीन्ह फ़रमाय ॥
चलि भइ बेटी तब तहना से * अन्तः पुरै पहूँची जाय ॥
तुरत बुलायो है बेटी को * औ चौकी पर दीन्ह बिठाय ॥
झारी लइकै गंगाजल की * अन्हवन तुरत दीन्ह करवाय॥
भाँतिं २ के बस्त्र मँगाए * शोभा कही बूत ना जाय ॥
घूम घुमारो अजब घाँघरा * तापर चीर दच्छिणी भाय ॥
गोट सुनहरी जामे लागी * सन्मुख दीठ नहीं अनिपाय॥
बाँक बाँकुड़ी गुखरू लागी * झालर लगी मोतियन क्यार॥
कमल कली सम नौसै कलियाँ * सो लहँगा माँ देहिं बहार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

नाक नथुनियाँ है सोने की * लटकन झूमि २ रहिजाय ॥
परा चौघरा तेहि नथुनी माँ * चहुँदिसि घूमि २ रहिजाय ॥
कानन करन फूल सोहत है * झुम्का गुच्छी केर बहार ॥
बाज़ी बाला और उतन्ना * झूमर बार लचाके दार ॥
बेंदी सोहै भल माथे में * मणिगन चमकि२ रहिजायँ ॥
दुलरी तिलरी गर सोहत हैं * गोफैं दमकि २ रहिजायँ ॥
शीशफूल औ बेना बुंदी * टिकुली दीन्हीं बीच लिलार॥
बाँकी, टेढी, औ चौठानी * अरसी लीन अँगुरियन धार॥
जुगनू, जेहर, तेहर लइकै * औ धुक धुकी नौलखा हार॥
कड़ा के ऊपर छड़ा बिराजै * तेहिपर पायल की झनकार॥
छला छाप औ अंगुस्ताना * सब अँगुरिन में दीन्ह सजाय॥
अनवठ बिछिया सुन्दर लइकै * नाइन पायँ दीन्ह पहिराय॥
गोरि २ बहियाँ हरि २ चुरियाँ * सोने कंकन केर बहार॥
छत्री और मुतेहरा सोहैं * जोसन बाजू को सिंगार॥
कहँलौं वर्ण करौं गहने को * मोरे बूत न बरना जाय॥
सजिकै मल्हना जब ठाढी भै * यारो शची रमा दिखराय॥
हाथे मेंहदी पाँव महावर * देखत हियरे जाय समाय॥
सजि सिंगार और आभूषण * मानो शची इन्द्र पै जाय॥
स्वस्ति मंत्र पंडित उचारयो * मल्हना हंस चालसो जाय॥
जायके पहुँची भाइ मंडप में * चन्दन चौकी दीन्ह बिठाय॥
भौंरी परन लगी मंडप में * यारो सुनियो कान लगाय॥
श्री गणेशको सुमिरन करिकै * ठाढ़े भए चन्देले राय॥
पहिली भाँवर के परतै खन * माहिल खैचलीन्ह तलवार॥
कियो जड़ाका चंदेले पर * माहिल गरू दीन ललकार॥
ढाल अडाय वार लै लीन्हों * मुंशी वीर नवल चौहान॥
दूसरि भाँवर के परतै खन * भूपति लीन्ह सिरोही तान॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

करो जड़ाका चन्देले पै * मंत्री लीन्ह ढालपरवार ॥
टूट सिरोही गइ भूपति की * बचिगे साफ चन्द्र सरदार ॥
तीसरि भाँवर के परतै खन * क्षत्री आए एक हजार ॥
हल्ला बोल दियो मण्डप में * अम्बाभ्वार चली तलवार ॥
चिन्तामनि मंत्री ललकारे * यारो खबरदार होइजाव ॥
सम्भरो मुंशी अब जल्दी से * अपनो जौहर देहु दिखाय ॥
आधे मड़ए भाँवरि परिरही * आधे विषम चलै तलवार ॥
मूँड़न केरे मुड़ चौरा भे * औ रुण्डनके लाग पहार ॥
सातो भाँवरि जब पूरी भइँ * मनमें खुशी रजा परिमाल ॥
बहुतक दान दक्षिणा दीन्हो * ह्वैगे याचक सकल निहाल ॥
चिन्तामन मंत्री तब आए * नेगी सबै लीन्ह बुलवाय ॥
गहना बाँटो भाइ नेगिन के * नेगी सबै खुशी ह्वै जायँ ॥
जितना दायज दियो राजा ने * उतने मंत्री दीन्ह मिलाय ॥
सो बँटवाय दियो दीनन को * घर २ गई खुशाली छाय ॥
बजै बधाई महुबे घर घर * दर २ रहो यार यश छाय ॥
तबै चन्देले बोलन लागे * सुनिये बासुदेव नरराय ॥
करौ तयारी अब जल्दी से * अबहीं बिदा देहु करवाय ॥
खबरैं होइगइँ रंग महल में * बेटी अबहिं बिदा ह्वै जाय ॥
भई तयारी तब परछन की * बेटी बिदा दई करवाय ॥
डोला लइकै चन्देले ने * तुरतै कूँच दीन्ह करवाय ॥
बिदा बरात भई महुबे से * डोला चला मल्हनदे क्यार ॥
इधर उधर में नौसै घोड़ा * आगे पाछे एक हजार ॥
तेहिके पीछे फौजैं चलिभइँ * डंका होत गोल में जाय ॥
मंजिल २ के चलिबे में * अपने नगर पहूँचे आय ॥
एक हरकारा दौरति आवै * औ चंदेली पहुँच गा जाय ॥
खबर सुनाई है महलन में * तुरतै सखियाँ लई बुलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भई तयारी रंग महल में * सखियाँ करैं मंगलाचार ॥
आये चन्देले चन्देली में * परछन भयो मल्हनदे क्यार ॥
दगी सलामी है तोपन की * धुँवना आसमान मँडराय ॥
बड़ी खुशाली भइ सबके मन * मुहर असर्फी रहे लुटाय ॥
एक सभैया की बातें हैं * यारो सुनियो कान लगाय ॥
मल्हना बोली चन्देले से * सुनिये चन्द्रवंश नरराय ॥
नगर महोबा मोरे बाबुलको * दूसर स्वर्गलोक प्रभु आय ॥
यातो चलिये आप महोबे * नातरु मोहिं देहु पहुँचाय ॥
नगर महोबा मोहिं न भूलै * कंथा साँच देहु बतराय ॥
हाहा खाऊँ पय्याँ लागूँ * महुबे मोहिं देहु पहुँचाय ॥
सुनिकै बातें महरानी की * बोले बिहँसि चन्देले राय ॥
कौन बात को दुख है प्यारी * काहे गई मनैं घबराय ॥
धर्म पतिव्रत तुम जानत हौ * नारी केर पती शृंगार ॥
महुबे जाय रहौ तुम प्यारी * तौ फिर हमैं हँसै संसार ॥
मल्हना बोली परिमालिक से * सुनिये चन्द्रवंश सरदार ॥
बिना महोबा के देखे मैं * कंथा मरौं पेटको मार ॥
बोले राजा तब रानी से * तौ फिर धीर धरौ मनमाय ॥
करौं चढ़ाई फिर महुबे पै * लड़िके महुबा लेहुँ छिनाय ॥
असकहि चलिभे हैं चन्देले * पहुँचे आय राजदर्बार ॥
बड़े २ क्षत्री जहँ पर बैठे * बैठे बड़े बड़े सर्दार ॥
चिन्तामन मंत्री तहँ बैठे * बिनसे कही चन्देले राय ॥
रानी बिगरी हैं महलन में * महुबे बास करैं हम जाय ॥
हमना रहिबे चंदेली में * साफै साफ दिहेंन बतलाय ॥
करौ चढ़ाई अब महुबे पर * महुबा लड़के लेहु छिनाय ॥
दई सलाहैं जब मंत्री ने * डंका तुर्त दियो बजवाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * हाहाकारी शब्द गा छाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तुरत नगड़ची तहँ हाजिर भा * सोने कड़ा दीन्ह डरवाय ॥
बजै नगाड़ा मेरे लश्कर में * फौजैं सबियाँ लेहु सजाय ॥
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी * औ दुसरे में भए हुशियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * घोड़न फाँदि भए असवार ॥
चौथे नगाड़ा के बाजत खन * क्षत्रिन कूच कीन्ह तत्काल ॥
सात लाख फौजैं संग लइकै * महुबे चढ़हैं रजा परिमाल ॥
मंजिल २ के चलिबे में * महुबा धुरो दबायो जाय ॥
तीन कोस जब महुबा रहिगा * तम्बू तहाँ दीन्ह गड़वाय ॥
कमर खुलिगई रजपूतन की * घोड़न जीन उतर सब जाय ॥
हौदा छोरि धरे हाथिन के * ज्वान रसोई दिहेन चढ़ाय ॥
लगी कचेहरी चंदेले की * भस्मा भूत लाग दरबार ॥
बड़े बड़े योधा जहँ पर बैठे * टिहुनन धरे नागिन तलवार॥
लौंडा नाच रहे कथिकन के * जोड़ी नाचै पुतरियन क्यार॥
झोंका मारैं जब नैनाको * सूखी निकर जाय वापार ॥
चिन्तामन मंत्री तब बोलैं * सुनिये बात चन्देले राय ॥
खबरैं करि देव वासुदेव को * अब क्यों राखी देर लगाय ॥
मनै आयगई चंदेले की * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
कागद लइकै कलपी वारो * सरनामाको लिखो बनाय ॥
आगे लिखन हकीकत लागे * सुनिये बासुदेव परिहार ॥
शहर महोबा खाली करदो * नहीं तो होय भयानक मार॥
पाती लिखिकै चंदेले ने * औ धामनको दीन्ह पकराय॥
लैके पाती धामन चलिभा * महुबे शहर पहूँचो जाय ॥
लगी कचेहरी बासुदेव की * भस्मा भूत लाग दर्बार ॥
जायके धामन दाखिल होइगो * सीधे चला गयो दरबार ॥
सात कदम से करी बन्दगी * पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजर घूमगई महराजा की * पाती तुरतै लई उठाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पकरि कतरनी से बन्द काटे * आँकुइआँकु नजर करिजाय॥
पाती बाँचत परलै हुइ गई * राजा गए सनाका खाय॥
थर २ थर २ देही काँपी * मुँहका पान गयो कुम्हलाय॥
नाम पढ़त खन चन्देले को * भूपति बहुत गये घबराय॥
माहिल बोलैं तब राजा से * मैं ददुवाकी लेहुँ बलाय॥
कहाँ से चिट्ठी यहु आई है * सबियाँ हाल देहु बतलाय॥
बासुदेव राजा तब बोले * बेटा सुनो महिल परिहार॥
महुबा माँगत चंदेले हैं * आए साज शूर सरदार॥
अनुचित कार्य करैं दुनियाँ में * एकदिन जायँ कालके गाल॥
सज्जन जन से बैर बिसाहैं * तिनको कौन बतावै हाल॥
बैर बिसाहैं बल धारिन से * तिनकी जाय अजाए जान॥
पर नारिन को करैं भरोसा * तिनकी मति मारी भगवान॥
तेहिते कही हमारी मानो * महुबा खाली देहु कराय॥
हँसी खुशी से महुबा दइकै * हत्याकाण्ड देहु टरकाय॥
सुनिकै बातैं महराजा की * माहिल अग्निज्वाल ह्वै जाय॥
छाय लालरी गई आँखिन में * पहुँचा तुरत फौज में जाय॥
औ ललकारयो है माहिल ने * फौजन डंका देहु बजाय॥
डंङ्का बाजे अहतङ्का के * हाहाकारी शब्द गा छाय॥
फौज सजाई है माहिल ने * जिनको सजत न लागी बार॥
नौलख घोड़ा उन सजवायो * औ हाथिन को नहीं शुमार॥
दुइ हजार तोपैं सजवाईं * मन पके कर गोला खाय॥
कूँच कराय दियो महुबे से * औ मैदान पहूँचे आय॥
खबरैं पाई चन्देले ने * आए लड़न महिल परिहार॥
तुरत नगाड़ा को बजवायो * सजिगे चन्द्रवंश सर्दार॥
इतते फौजें बासुदेव की * उत ते बढ़ी चन्देले क्यार॥
बातन बातन बतबढ़ होइगयो * औ बातन में बाढ़ी रार॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पहिली लड़ाई भइ तोपन की * दूजी भई तीर की मार ॥
तिसर लड़ाई फिर साँगन की * चौथी चली विषम तरवार ॥
पैदल के सँग पैदल अभिरे * औ असवार साथ असवार ॥
हौदा के सँग हौदा अभिरे * अभिरे सबै शूर सर्दार ॥
दोनों फौजें संगम होइगईं * अम्बाझवार चली तलवार ॥
बड़ो लड़य्या यहु योधा था * जेहिका कहैं चन्द्रसरदार ॥
तीन पहर भर चली शिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
मूड़न केरे मुड़ चौरा भे * औ रुण्डन के लगे पहार ॥
माहिल भूपति दोउ बेटन की * बाँधी मुश्क चँदेलेराय ॥
भागी पड़िगइ है फौजन में * सबदल रेन बेन ह्वै जाय ॥
खबरैं ह्वैगईं बासुदेव को * सोऊ तुरत गए हैं आय ॥
करी अधीनी चन्देल की * दोनों हाथ बाँधि रहिजाय ॥
मुश्क खोलि दौ दोउ बेटनकी * महुबा खाली देहुँ कराय ॥
बैठे राज करो महुबे में * तुमको कौन परी परवाह ॥
सुनिकै बातैं महराजा की * तुरतै हुक्म दीन्ह फरमाय ॥
मुश्क खोलि दौ परिहारन की * औ ख़ातिरसे लाओ लिवाय॥
बासुदेव महुबे में पहुँचे * महुबा खाली दीन्ह कराय॥
अपनो कुटुम साथ सब लइके * उरई शहर पहूँचे जाय ॥
तहाँ निवास कियो राजाने * महुबे बसे रजा परिमाल ॥
होय हकीकत आगे जैसी * तैसो तहाँ सुनावैं हाल ॥
ब्याह बखानो परिमालिक को * यारो यथा तथ्य हमगाय ॥
पढ़िहै सुनिहैं जे नर याको * यारो जोश चढ़ै मनमाय ॥
असल बूँदको जो नर होवै * आल्हा सुनै अधिक हर्षाय ॥
जोश जवानी तनमें छावै * सन्मुख बीर रूप मँडराय ॥
चरि २ गउवैं घरका डगरीं * संझा काल पहुँचो आय ॥
उडि २ पँछी लिहेन बसेरा * सन्तन धुनी दीन्ह परचाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

युग २ जीवैं श्रीलाल जी * गुरुवर ज्ञान बुद्धि दातार ॥
जिनके बुद्धी बल प्रताप से * गायों सुयश शूर मन क्यार ॥
रहै समुन्दर में जौलौं जल * जौलौं रहैं चन्द्र औ शूर ॥
बैजनाथ परशाद नाम यह * जगमें रहै सदा भरपूर ॥
तिनके सुत गोपालदास जी * युग२ जियैं कीर्त यश पाय ॥
दाया होवै शिव शंकर की * सम्पति सुक्ख सदासरसाय ॥
कियो तरंग यहाँ से पूरन * मनमें सुमिरि भवानी कन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन दीजो * इच्छा यही मोर भगवन्त ॥

आल्हा परिमाल ब्याह सम्पूर्णम् ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

* श्रीः *

अथ धाँधू का व्याह ।

अर्थात्

बुख़ारा की लड़ाई ।

लेखक-

श्री पं०- श्रीलाल जी उपाध्याय के चरणा नुरागी

पं० सुदर्शन लाल त्रिवेदी वैद्य शास्त्री ।

* प्रकाशक *

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी ।

बाबू बैजनाथ प्रसाद द्वारा-

श्री विश्वेश्वर प्रेस, काशी में

मुद्रित ।

-:*****:-

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

॥ अथ धाँधू का ब्याह ॥

॥ यानी ॥

बुखारे की लड़ाई आरम्भ ।

—*****—

॥ सवैया ॥

दीपक बारि धरो मठ भीतर सुन्दर स्याम सखा उजियारी ।
चार चकोर चहूँ दिसि राजत नाग पचास गरे बिच डारी ॥
बैल चढ़े मृगछाल सुहात सो सुन्दर गंग जटा सिर धारी ।
तोहि शिवा शिव ध्यावति हौं कैलाशपती पति राखु हमारी ॥

॥ सुमिरन ॥

हम पद बन्दैं विप्र वृन्द के * जे श्रुति नीति शास्त्र बक्तार ॥
परम पियारे नारायण के * धारे बिष्णु भक्त उर हार ॥
चरण मनाऊँ शिव शङ्कर के * जेहि सिर गङ्ग भङ्ग आधार ॥
भस्म रमाए अङ्ग २ में * नन्दी बृषभ नाथ असवार ॥
भाल चन्द्रमा भल सोहत है * धारे कण्ठ मुण्डकी माल ॥
सर्प विषैलन के भूषण हैं * अम्बुज सरिस नयनभयलाल॥
जटा जूट अर्द्धङ्ग बिराजैं * आधे अङ्ग अम्बिका माय ॥
भूत पिशाच प्रेत संग डोलैं * बोलैं बचन बनाय बनाय ॥
कर डमरू त्रैसूल बिराजै * नैनन रही लालरी छाय ॥
हैं वरदानी सब देवन में * महिमा रहे सकल सुर गाय ॥
सुख राशी कैलाश निवासी * हैं अबिनाशी शम्भु सुजान ॥
सुख दायक सबही गुण पायक * पूरन करैं कार्य्य जन जान ॥
शीघ्र प्रसन्न होत शिव शङ्कर * भोला नाथ वरद आरूढ़ ॥
ऐसे विश्व नाथ विश्वेश्वर * क्यों ना भजै काम तजि मूढ़ ॥
छूट सुमिरनी गइ देवन की * शाका सुनो शूरमन क्यार ॥
ब्याह बखानैं नर धाँधू को * सूबा जौन पिथौरा क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

* कथा आरम्भ *

बलख बुखारा दुइ बस्ती हैं * यारो सुनियो कान लगाय ॥
अभिनन्दन रणधीर सिंह जी * तहँ पर राज करैं दोउ भाय ॥
नगर बुखारा के महराजा * श्री रणधीर सिंह सरदार ॥
बड़ा लड़इया यहु योधा है * सेवक मातु अम्बिका क्यार ॥
कन्या जनमी तिनके घर में * चन्दा सूरज की अनुहार ॥
केशर नाम धरो कन्या को * राजा धीर सिंह सर्दार ॥
बारा बरिस की जब कन्या भई * योबन रूप गयो भल आय ॥
संग सखिन के नित उठि खेलै * मन में आनन्द मोद बढ़ाय॥
हाल बतावैं अब आगे को * यारो सुनो कथा मन लाय ॥
एक समइया की बातैं हैं * सावन मास गयो जब आय ॥
संग सखिन के केशर चलिभई * फुल बगिया में पहुँची जाय ॥
को गति वरनै तेहि बगिया की * शोभा कही बूत ना जाय ॥
दाख छुहारन की बगिया है * कहुँ २ नीबू और अनार ॥
बेला चमेली कहुँ कहुँ फूलै * कहुँ २ फूल रही कचनार ॥
गुलाबास गुल मेंहदी फूलैं * गुल तोरा की अजब बहार ॥
चंपा जर्द गुलाब ज्योंदिया * जूही फूल रही फुलवार ॥
कंटीं कियारी तेहि बगिया में * सब्जा मखमल सो दिखराय॥
पड़िगए झूला तहँ बगिया में * रेशम रस्सा दीन्ह डराय ॥
झूला झूलै सावन गावै * चादर फहर २ फहराय ॥
झोंका लागै जब झूला का * कम्मर तीन २ बल खाय ॥
करैं मसखरी सब आपुस में * मनमें आनन्द मोद बढ़ाय ॥
कोउ२सखियाँ तहँ व्याही थीं * प्रीतम याद गई है आय ॥
सूखि बतीसी गई दांतन की * मुँहका पान गयो कुम्हलाय॥
देखि हकीकत केशर पूछै * हमको हाल देहु बतलाय ॥
व्याही सखियाँ तब बोलत भईं * बहिना हाल कहा न जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

याद आय गै है प्रीतम की * ताते गएव बदन कुम्हिलाय ॥
केशर पूछो फिर सखियन से * का सुख वहाँ मिले अधिकाय ॥
हाल बताओ अब जल्दी से * हमसे धीर धरो ना जाय ॥
सखियाँ बोलैं तब केशर से * बहना मेरी बात बनाय ॥
का सुख वरनै स्वसुरपुरी को * हमरे बूत कही ना जाय ॥
प्रीतम लेहिं अङ्क भरि जबहीं * तबहीं स्वर्ग लोक दिखराय ॥
पान खवावैं औ मुख चूमैं * छतियाँ छुवैं और अठिलायँ ॥
सुर पुर नर पुर तीन लोक में * सो सुख परै न कहूँ दिखाय ॥
पकरि अङ्क में प्रीतम दाबैं * सो सुधि जनम २ ना जाय ॥
होश आइगा तिन प्रीतम का * हमसे धीर धरो न जाय ॥
प्राण पियारे की यह मूरत * हिरदय आय २ भगि जाय ॥
एक सखी तहँ औरौ बोली * केशर बहिना बात बनाय ॥
बारा बरिस की उमर तुम्हारी * योबन अंग २ दिखराय ॥
तुम्हरे साथ की जौन सहेली * दुइ २ बालक रहीं खिलाय ॥
माल खजाना की कमती है * की कुल हीन बाप औ माय ॥
ब्याह तुम्हारो क्यों नहिं कीन्हा * मनमें नेक नहीं ठहराय ॥
सुनिकै बातैं अस सखियन की * केशर मनै गई शरमाय ॥
चलि भई बेटी तब बागन से * महलन अटी तड़ाका जाय ॥
जाय के पहुँची है माता ढिंग * माता गोद लीन्ह बैठाय ॥
मस्तक चूमो है बेटी को * मनमें आनन्द मोद बढ़ाय ॥
पूछन लागी फिर बेटी से * बेटी हाल देहु बतलाय ॥
मुखकी ज्योति कहे कुम्हिलानी * काहे शोच रहो तन छाय ॥
हाल बताय देहु जल्दी से * हमसे धीर धरो ना जाय ॥
बोली मारी जो काहू ने * ताकी जीभ लेहुँ निकराय ॥
खाल खींच के भुस भरवावों * तब हियरे की डाह बुताय ॥
केशरि बोलै तब माता सो * माता साँची देहिं बताय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हमरे संगकी सबै सहेली * माता कहैं तेख दरसाय ॥
कै कुल हीने महराजा हैं * कै धन नहीं रहा है पास ॥
ब्याह तुम्हारे अबै न कीन्हा * माता करो बचन विश्वाश ॥
सुनिकै बातैं अस बेटी की * माता सोचि २ रहिजाय ॥
तुरत बुलाय लियो बाँदी को * औ यह हुक्म दीन्ह फरमाय ॥
जल्दी चली जाव बँगला को * राजे खबर सुनावै जाय ॥
तुम्हें बुलायो महरानी ने * साथै अपने लाव लिवाय ॥
बाँदी चलिभइ तब महलन से * थिरकत चली कचेहरी जाय ॥
पतरी कम्मर वहि बांदी की * यारो तीन २ बल खाय ॥
झोका लागे जब वायूको * डुपटा फहर २ फहराय ॥
एक घरी के बस अरसा में * बाँदी अटी कचेहरी जाय ॥
हाथ जोरि कै बाँदी बोलै * औ महराजा बात बनाय ॥
तुम्हें बुलायो महारानी ने * बोलीं साथै लाव लिवाय ॥
सुनिकै बातें भाइ बांदी की * राजा उठे भरहरा खाय ॥
जायके पहुँचे हैं महलन में * यारो सुनियो कान लगाय ॥
आवत देखो महराजा को * रानी उठी भरहरा खाय ॥
कंचन चौकी को डरवायो * महराजा को दीन्ह बैठाय ॥
लई बिजनियाँ फूलन वारी * औ राजा तन रही हिलाय ॥
पलंग बिछायो फिर पचरङ्गा * रेशम तकिया दीन्ह धराय ॥
हाथ जोरि कै रानी बोलै * औ महराजा बात बनाय ॥
बिटिया स्यानी केशर ह्वैगई * हमरे धीर धरो ना जाय ॥
जेहिकी बिटिया स्यानी होइजाय * वहिको कैसे नींद सुहाय ॥
टीका भेजि देव जल्दी से * यामें देर करो अब नाय ॥
यह मन मान गई राजा के * उठि दर्बार पहुँचे जाय ॥
टीका की सामा मँगवाई * औ बँगले में दीन्ह धराय ॥
साल दुसाला मोतिन माला * चीरा कँलगी लीन्ह मँगाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पाँच अंगूठी अतिही सुन्दर * जामें हीरा जड़े बनाय ॥
साठ पालकी अस्सी गजरथ * बढ़िया घोड़ा एक हजार ॥
मोती बेटा को बुलवायो * यहु रण धीर सिंह सर्दार ॥
पाती लिखि दइ महराजा ने * यारो सुनो लगा कर कान ॥
सिद्ध श्री सर्वोपम लिखि के * तेहिके पीछे सात सलाम ॥
पहिल लड़ाई है धूरे की * दूसरि द्वार घोर घमसान ॥
तिसर लड़ाई है मडए की * जिन्दा फौज बचै ना ज्वान॥
चौथी लड़ाई है जादू की * पाथर फौजैं देहुँ कराय ॥
मुर्चा मारै जौन सूरमा * तौनै टीका लेहि चढ़ाय ॥
बन्द लिफाफे में करि दीन्हों * ऊपर मुहर दीन्ह करवाय ॥
मोती बेटा पास बिठाया * सारी बातैं कहि समुझाय ॥
बावन गढ़ में बेटा जइयो * पै ना जइयो नगर महोब ॥
जाति बनाफर की हीनी है * ताते तुम्हैं दीन्ह बतलाय ॥
बहुत भाँति राजा समुझाये * औ फिर हुक्म दीन्ह फरमाय ॥
कूँच कराय दियो मोती ने * सबरे नेगी संग लिवाय ॥
राह पकरि लई तेहि कनवजकी * मनमें श्रीगणेश को धाय ॥
जयचन्द राजा कनवज वारे * तिनकी ड्योढ़ी पहूँचे जाय ॥
मोती पहुँचे जब फाटक पै * दर्बानी ने कही सुनाय ॥
कहाँ से आए औ कहँ जइहौ * ठाकुर हाल देहु बतलाय ॥
सुनिकै मोती बोलन लागे * औ दर्बानी बात बानय ॥
टीका लाए हैं बहिनी का * राजे खबरि सुनावो जाय ॥
नाम हमारो मोती सिंह है * धीर सिंह के राजकुमार ॥
नाम बुखारा जग जाहिर है * जहँ सब बसैं सूर सर्दार ॥
सुनिकै बातैं मोती सिंह की * धामन चला कचेहरी जाय ॥
जायके पहुँचो दर्बारन में * धामन हाथ बाँधि रहिजाय ॥
नजर घूमगई महराजा की * औ धामन तन रहे निहार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धामन बोले महराजा से * सुनिये कनवज के सर्दार ॥
टीका लाए मोती ठाकुर * जो हैं कुँवर बुखारे क्यार ॥
नेगी सहित द्वार पर बिलमे * आज्ञा काह होय सर्कार ॥
हुकुम सुनायो महराजा ने * जल्दी उनको लाव लिवाय ॥
उनही पाँयन धामन लौटो * मोती सिंह को दीन्ह पठाय ॥
मोती चलिभे हैं द्वारे से * आपन नेगी संग लिवाय ॥
जाइके पहुँचौ दरबारन में * मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
करी बन्दगी महराजा को * चिट्ठी हाथ दीन्ह पकराय ॥
पकरि कतरनी से बन्द काटे * आँकुइ आंकु नजर करिजाय ॥
चिट्ठी बाँची महराजा ने * पढ़ते गए सनाका खाय ॥
सूखि बतीसी गइ दाँतन की * मुँहका पान गयो कुम्हिलाय॥
पाती फेरि दई मोती को * टीका तुर्त दीन्ह लौटाय ॥
लरिका भारू नहिं हमरे घर * जो हम मूँड़ कटावैं जाय ॥
चलिभे मोती तब हुवना से * नैना गढ़ में पहुँचे जाय ॥
पाती बाँची नैपाली ने * तुरतै टीका दीन्ह फिराय ॥
हुवाँ से चलके बिसाहिन पहुँचे * तिनहू टीका दीन्ह फिराय ॥
जाइके पहुँचे तब दिल्ली में * यारो सुनियो कान लगाय ॥
खबर कराई महराजा को * औ दर्बार पहूँचे जाय ॥
सात हाथ ऊंचा सिंहासन * जापर तपै पिथौरा राय ॥
गजभर छाती महराजा की * साढ़े तीन हाथ को ज्वान ॥
चेहरा चमके बादशाह को * मानो आप दूसरो भान ॥
पाँच पैग से कुन्नस करिके * मोती सिंहने करो सलाम ॥
पाती दीन्ही बादशाह को * लीन्हीं हाथ पिथौरा थाम ॥
कतर कतरनी से बन्द काटे * आँकुई आंकु नजर करिजाय ॥
चिट्ठी बाँची महराजा ने * मनमें गए सनाका खाय ॥
सूखि बतीसी गइ दाँतनकी * मुँह का पान गयो कुम्हलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पाँच अंगूठी अतिही सुन्दर * जामें हीरा जड़े बनाय ॥
साठ पालकी अस्सी गजरथ * बढ़िया घोड़ा एक हजार ॥
मोती बेटा को बुलवायो * यहु रण धीर सिंह सर्दार ॥
पाती लिखि दइ महराजा ने * यारो सुनो लगा कर कान ॥
सिद्ध श्री सर्वोपम लिखि के * तेहिके पीछे सात सलाम ॥
पहिल लड़ाई है धूरे की * दूसरि द्वार घोर घमसान ॥
तिसर लड़ाई है मडए की * जिन्दा फौज बचै ना ज्वान॥
चौथी लड़ाई है जादू की * पाथर फौजें देहुँ कराय ॥
मुर्चा मारै जौन सूरमा * तौनै टीका लेहिं चढ़ाय ॥
बन्द लिफाफे में करि दीन्हों * ऊपर मुहर दीन्ह करवाय ॥
मोती बेटा पास बिठाया * सारी बातैं कहि समुझाय ॥
बावन गढ़ में बेटा जइयो * पै ना जइयो नगर महोब ॥
जाति बनाफर की हीनी है * ताते तुम्हैं दीन्ह बतलाय ॥
बहुत भाँति राजा समुझाये * औ फिर हुक्म दीन्ह फरमाय ॥
कूँच कराय दियो मोती ने * सबरे नेगी संग लिवाय ॥
राह पकरि लई तेहि कनवजकी * मनमें श्रीगणेश को धाय ॥
जयचन्द राजा कनवज वारे * तिनकी ड्योढ़ी पहूँचे जाय ॥
मोती पहुँचे जब फाटक पै * दर्बानी ने कही सुनाय ॥
कहाँ से आए औ कहँ जइहौ * ठाकुर हाल देहु बतलाय ॥
सुनिकै मोती बोलन लागे * औ दर्बानी बात बानय ॥
टीका लाए हैं बहिनी का * राजे खबरि सुनावो जाय ॥
नाम हमारो मोती सिंह है * धीर सिंह के राजकुमार ॥
नाम बुखारा जग जाहिर है * जहँ सब बसैं सूर सर्दार ॥
सुनिकै बातैं मोती सिंह की * धामन चला कचेहरी जाय ॥
जायके पहुँचो दर्बारन में * धामन हाथ बाँधि रहिजाय ॥
नजर घूमगई महराजा की * औ धामन तन रहे निहार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

धामन बोले महराजा से * सुनिये कनवज के सर्दार ॥
टीका लाए मोती ठाकुर * जो हैं कुँवर बुखारे क्यार ॥
नेगी सहित द्वार पर बिलमे * आज्ञा काह होय सर्कार ॥
हुकुम सुनायो महराजा ने * जल्दी उनको लाव लिवाय ॥
उनही पाँयन धामन लौटो * मोती सिंह को दीन्ह पठाय ॥
मोती चलिभे हैं द्वारे से * आपन नेगी संग लिवाय ॥
जाइके पहुँचौ दरबारन में * मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
करी बन्दगी महराजा को * चिट्ठी हाथ दीन्ह पकराय ॥
पकरि कतरनी से बन्द काटे * आँकुइ आंकु नजर करिजाय ॥
चिट्ठी बाँची महराजा ने * पढ़ते गए सनाका खाय ॥
सूखि बतीसी गइ दाँतन की * मुँहका पान गयो कुम्हिलाय॥
पाती फेरि दई मोती को * टीका तुर्त दीन्ह लौटाय ॥
लरिका भारू नहिं हमरे घर * जो हम मूँड़ कटावैं जाय ॥
चलिभे मोती तब हुवना से * नैना गढ़ में पहुँचे जाय ॥
पाती बाँची नैपाली ने * तुरतै टीका दीन्ह फिराय ॥
हुवाँ से चलके बिसहिन पहुँचे * तिनहू टीका दीन्ह फिराय ॥
जाइके पहुँचे तब दिल्ली में * यारो सुनियो कान लगाय ॥
खबर कराई महराजा को * औ दर्बार पहूँचे जाय ॥
सात हाथ ऊंचा सिंहासन * जापर तपै पिथौरा राय ॥
गजभर छाती महराजा की * साढ़े तीन हाथ को ज्वान ॥
चेहरा चमके बादशाह को * मानो आप दूसरो भान ॥
पाँच पैग से कुन्नस करिके * मोती सिंहने करो सलाम ॥
पाती दीन्ही बादशाह को * लीन्हीं हाथ पिथौरा थाम ॥
कतर कतरनी से बन्द काटे * आँकुई आंकु नजर करिजाय ॥
चिट्ठी बाँची महराजा ने * मनमें गए सनाका खाय ॥
सूखि बतीसी गइ दाँतनकी * मुँह का पान गयो कुम्हलाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तब कोठन ते नाड़ी छूटी * देही थहर २ थर्राय ॥
पाती फेर दई पिरथी ने * औ मोती से कही सुनाय ॥
लरिका क्वाँरा नहिं हमरे घर * टीका अनत चढ़ाओ जाय ॥
हाथ ज़ोरि के ताहर बोले * मैं ददुवा की लेहुँ बलाय ॥
कैसी पाती यह लाए हैं * हमको हाल देहु बतलाय ॥
ताहर बेटा की बातैं सुनि * दीन्हों ज्वाब पिथौरा राय ॥
पाती भेजी धीर सिंह ने * साथे टीका दियो पठाय ॥
सोई टीका यहु आयो है * लाए मोती सिंह सर्दार ॥
लरिका बारो कोउ हमरे ना * तातें टीका देहिं फिराय ॥
हाथ जोरि के ताहर बोलें * मैं ददुवा की लेहुँ बलाय ॥
धांधू ठाकुर काँरे बैठे * टीका उनको देहिं चढ़ाय ॥
बोले पिथौरा तब ताहर से * ताहर अकिल गई तुम्हार ॥
बड़ा लड़इया धीर सिंह है * वाकी बेड़ बहै तरवार ॥
कठिन मवासी बलख बुखारा * हमसे ब्याह करो ना जाय ॥
कन्या सुन्दर कोइ ढूँढि कै * धाँधू ब्याह देहिं करवाय ॥
इतनी सुनिकै ताहर भभका * ज्यों बांबी में भभकै नाग ॥
कारी पुतरिया लाली होइ गईं * जनु बारूद लागि गइ आग ॥
गर्जा बेटा पृथ्वी राज का * जो है करन केर औतार ॥
घरका आवा टीका फेरैं * हमरे जीवे को धिरकार ॥
टीका फिर जाय जो दिल्ली से * बूड़े सात साखलौं नाम ॥
ताते टीका नहिं फिरने का * सुनिये महाराज बल धाम ॥
टीका चढ़े आज धांधू का * ददुवा काह रहे घबराय ॥
मारे तेगा तरवारिन के * रनमें चहला देहुँ मचाय ॥
डंड बाँधि लेव धीर सिंह की * सातौं भाँवर लेहु डराय ॥
टीका चढ़ा लेव धांधू को * ददुवा काहे रहे भय खाय ॥
ताहर बेटा की बातैं सुनि * हँसिकै कही चौड़िया राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

शाबश २ ताहर तुमको ❀ हमरे मनै बात गइ आय ॥
देश २ में नाम तुम्हारो ❀ जानै तुम्हैं सकल संसार ॥
तुम्हैं हँसउआ को डर नाहीं ❀ तुम्हरो जग जाहिर तरवार ॥
टीका फिरि जाय जो दिल्ली से ❀ तौ फिर महाराज धिकार ॥
लानत ऐसी रजपूती पर ❀ पगिया बाँधन को धिरकार ॥
बातैं सुनिकै अस चौड़ाकी ❀ बोले बिहँसि पिथौरा राय ॥
मनैं तुम्हारे जैसी आवै ❀ तैसी करो चौड़िया राय ॥
सुनिकै बातैं महाराज की ❀ चौड़ा हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
खबरैं ह्वै गइं रंग महल में ❀ यारो सुनियो कान लगाय ॥
गोबर आयो सुरहि गाय को ❀ तासों चौक दीन्ह लिपवाय ॥
हंसामन पंडित बुलवायो ❀ सोऊ तुरत पहुँचे आय ॥
चौक पुराई भल मोतिन से ❀ सोने कलश दीन्ह धरवाय ॥
बन्दनवार द्वार पर बाँधी ❀ सखियाँ सबै लीन बुलवाय ॥
मंत्र उचारन प्रोहित लागे ❀ सखियाँ करैं मंगला चार ॥
चौड़ा बकसी एक ओर में ❀ दूजी ओर कर्ण औतार ॥
भयो बुलउवा तब मोती को ❀ मोती महल पहूँचे आय ॥
हंसामन पंडित तब बोले ❀ ठाकुर मेरी बात बनाय ॥
साइत आइ गई टीका की ❀ जल्दी टीका देहु चढ़ाय ॥
भयो बुलउवा तब धांधू को ❀ धाँधू चौक पहुँचे आय ॥
सखियां मंगल गावन लागीं ❀ पंडित वेद उचारन लाग ॥
धांधू ठाकुर पाटा बैठे ❀ सर में बँधी बैंगनी पाग ॥
टीका कीन्हों तब मोती ने ❀ बीड़ा पान दीन्ह पकराय ॥
बीड़ा चाभि लियो धाँधू ने ❀ ताहर गहना लीन मँगाय ॥
सो बटवाय दिहो नेगिन को ❀ नेगी सबै खुशी ह्वै जायँ ॥
साइत सोधि लई भौरिन की ❀ मोती सिंह को दीन्ह बताय ॥
अगहन मास पक्ष उजियारी ❀ तेरस तिथी बार एतवार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तेहि दिन भाँवर धाँधू सिंहकी ❀ परिहै मोती सिंह सर्दार ॥
कूच कराय दियो मोती ने ❀ यारो नेगी संग लिवाय ॥
चार दिना का धावा करिके ❀ अपने नगर पहूँचे जाय ॥
करी बन्दगी महराजा को ❀ दोनों हाथ बाँध रहि जाय ॥
राजा बोलैं तब मोती से ❀ मैं बबुआ की लेहुँ बलाय ॥
कौन देश कौने राजा घर ❀ टीका पुत्र चढ़ायो जाय ॥
हाथ जोरि कै मोती बोलैं ❀ दादा सुनियो कान लगाय ॥
पृथी राज दिल्ली के राजा ❀ जो है समर धनी चौहान ॥
शब्द बेध रन हनै पिथौरा ❀ उनको जानत सकल जहान ॥
धाँधू ठाकुर बड़ा लड़इया ❀ सूबा जौन पिथौरा क्यार ॥
टीका चढ़ा उन्हीं धांधू को ❀ घर २ भए मंगला चार ॥
सुनिकै बातैं मोती सिंह की ❀ राजा अग्नि ज्वाल ह्वै जाय॥
धरि ललकारो मोती सिंह को ❀ कादर तेरा बुरा ह्वै जाय ॥
टीका चढ़ा दियो धांधू को ❀ ओछी जाति बनाफर क्यार ॥
बेटा कहिये देशराज को ❀ चेरी पुत्र जान संसार ॥
जौने बातन को बरजो रहै ❀ सोई गई सामने आय ॥
व्याह न करिबे हम धांधू से ❀ टीका अबहिं लाउ लौटाय ॥
हाथ जोरिकै मोती बोलैं ❀ मोरि तकसीर माफ होइजाय॥
टीका लौटन को अब नाहीं ❀ चाहै कोटिन करो उपाय ॥
आवैं बराती जब दिल्ली के ❀ तबही मूड़ लेहिं कटवाय ॥
मनै आय गइ महराजा के ❀ चुपके मूड़ लीन औंधाय ॥
इहाँ की बातैं इहैं छोड़ दइ ❀ आगे और भई तैयार ॥
लागो महिना जब अगहनको ❀ बोला पूत पिथौरा क्यार ॥
केहिकी निदिया ददुवा सोवो ❀ अगहन मास पहुँचा आय ॥
करौ तयारी अब जल्दी से ❀ नर धांधू को करौ बिवाह ॥
सुनिकै बातैं अस ताहर की ❀ राजा न्योत दीन्ह पठवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जितने राजा व्योहारी थे ❋ ते सब तुरत लीन्ह बुलवाय ॥
देश देश के राजा आये ❋ दिल्ली डेरा दीन्ह गड़ाय ॥
फौजैं पड़ि गईं चौगिर्दा से ❋ झण्डन रही लालरी छाय ॥
रीत रसम ब्याहे की होवै ❋ पंडित आइ गए तत्काल ॥
तेल चढ़ावा गा धांधू को ❋ आगे और कहैं अहवाल ॥
पृथ्वी बोले तब ताहर से ❋ ताहर बेटा बात बनाय ॥
करो तयारी अब जल्दी से ❋ अपनी फौज लेहु सजवाय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की ❋ ताहिर अटा फौज में आय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो ❋ सोने कड़ा दीन्ह डरवाय ॥
डङ्का बाजै मेरे लश्कर में ❋ सबियां फौज होय तैयार ॥
बोलि दारोगा तोपन वाला ❋ ताहर कहैं बचन ललकार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्ट धातु की ❋ सो चरखिन पर देहु चढ़ाय ॥
जितनी तोपैं मेरे लश्कर में ❋ सबियां तोप लेहु सजवाय ॥
हाथी दारोगा को बुलवायो ❋ चीरा कलंगी दीन्ह गहाय ॥
जितने हाथी मेरे दलमें ❋ तुरतै सबै लेहु सजवाय ॥
जौरा भौरा हाथी साजो ❋ छोटे पर्वत की उनहार ॥
एक दन्ता दुइ दन्ता साजो ❋ कजरी बनके करो तयार ॥
घोड़ दरोगा फिर बुलवायो ❋ औ यह हुकुम दीन्ह फरमाय॥
जितने घोड़ा मेरे लश्कर में ❋ सब पर जीन देहु धरवाय ॥
घोड़ दारोगा तुरतै चलिभा ❋ औ अस्तबल पहुंचा जाय ॥
जितने घोड़ा घोड़साले में ❋ सबको तुरत दीन्ह सजवाय ॥
बड़े २ घोड़ा उन मँगवायो ❋ झूल सुनहरी दई डराय ॥
गद्दा धरि दए मखमल वाले ❋ मेहदी पांयन दई लगाय ॥
जीन धरायो सब घोड़न पर ❋ रेशम तंग दीन्ह कसवाय ॥
लगी झालरैं हैं मोतिन की ❋ शोभा कही बूत ना जाय ॥
तुर्की ताजी औ कुम्मैता ❋ पंच कल्यानी किये तयार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पग पैजनियां तिनके बांधी ❀ डोलत पांव उठै झनकार ॥
फेरि साँड़ियन को सजवायो ❀ सब पर काठी दीन्ह धराय ॥
घंटी बाँधी गल ऊटन के ❀ आगे जेर बन्द फहराय ॥
लाल बनाती मुलतानी की ❀ झूलैं सब पर दई डराय ॥
तंग दुतंगा रेशम वारे ❀ सब ऊँटन में दीन्ह कसाय ॥
सजी पालकी और नालकी ❀ जिनको सजत न लागी बार ॥
फौजैं सजि गइँ दिल्ली वारी ❀ सबने बाँध लए हथियार ॥
पहिले पहिरी लाल बनाती ❀ तेहिके ऊपर कुलह कबार ॥
बख्तर पहिरो तेहिके ऊपर ❀ जामें गड़ै नहीं तरवार ॥
टोप झिल मिला है मस्तकपर ❀ गोली लगे चीप ह्वै जाय ॥
सब दल सजिगो है ताहर को ❀ आगे हाल कहैं अब गाय ॥
गड़ २ गड़ २ बजै नगाड़ा ❀ हा हा कार शब्द गा छाय ॥
नौ सौ झण्डा है फौजन में ❀ नभ में रही लालरी छाय ॥
बावन झण्डा हैं निशान के ❀ सब रँग ध्वजा यार फहराय ॥
सात लाख फौजैं सजवाईं ❀ जेहिका कही पिथौरा राय ॥
पहिल नगाड़ा में जिनबंदी ❀ औ दुसरे में भए असवार ॥
तिसर नगाड़ा के बाजत खन ❀ कीन्हो कूच सबै सर्दार ॥
सजी पालकी तब धाँधू की ❀ धाँधू सुमिरे शारदा माय ॥
मनिया देव महोबे वारे ❀ धाँधू बीर रहो है ध्याय ॥
तेगा लइकै बर्दवान का ❀ सो कम्मर में लीन लटकाय ॥
सुमिरन करिकै इष्ट देव को ❀ पलकी ऊपर पहुँचा जाय ॥
सेना उमड़ी पृथ्वी राज की ❀ आठ कोसलौं लगी कतार ॥
कूच करायो जब लश्कर को ❀ चलिये सबै शूर सर्दार ॥
बारह दिन की मंजिल करके ❀ पहुँचे नगर बुखारे जाय ॥
पाँच कोस जब रहो बुखारा ❀ फौजन डेरा दीन्ह डराय ॥
तँबुआ गड़िगे उमरायन के ❀ घोड़न जीन दीन्ह उतराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ऊँचे २ फौजें परि गईं ❀ नीचे हाटें दीन लगाय ॥
लगी कचेहरी पृथ्वी राज की ❀ भस्मा भूत लाग दर्बार ॥
बड़े २ क्षत्री जहवाँ बैठे ❀ ठिहुना धरे नगिन तरवार ॥
ताहर बोले तब पिरथी से ❀ दद्दुवा पंडित लेहु बुलाय ॥
करौ तयारी अब जल्दी से ❀ ऐपन वारी देहु पठाय ॥
छेदा बारी को बुलवायो ❀ तासो कहैं पिथौरा राय ॥
ऐपन वारी तुम लै जावो ❀ राजै ख़बर सुनावो जाय ॥
तुरत बछेड़ा को सजवायो ❀ छेदा फाँदि भयो असवार ॥
जाइके पहुँचो है फाटक पर ❀ गरुई हाँक दीन्ह ललकार ॥
खबरैं करि दो महराजा को ❀ फौजें आईं पिथौरा क्यार ॥
धाँधू व्याहन को आए हैं ❀ हम लाए हैं ऐपनवार ॥
खबरैं दीन्ही दरवानी ने ❀ सुनिये धीर सिंह सर्दार ॥
फौजें आइ गईं दिल्ली से ❀ बारी ठाढ़ो पँवर दुवार ॥
हुक्म दैदियो तब मोती को ❀ श्री रनधीर सिंह सर्दार ॥
जायके देखो वहि नेंगी को ❀ आयो यहाँ कौन सर्दार ॥
देर लागि गै दरवानी को ❀ छेदा घोड़ा दीन्ह बढ़ाय ॥
जहाँ कचहरी महराजा की ❀ बारी वहाँ पहूंचा जाय ॥
ऐपनवारी बारी लइके ❀ गद्दी ऊपर दीन्ह चलाय ॥
औ फिर बोलो महराजा से ❀ राजा सुनिये कान लगाय ॥
सात लाख से चढ़ो पिथौरा ❀ लइकै खुरासान गुजरात ॥
चुपके व्याह करौ धाँधू को ❀ नहिं तो तेग चले दिन रात ॥
सुनिके बातें यह बारी की ❀ राजा अग्नि ज्वाल ह्वै जाय ॥
काह हकीकत पृथीराज की ❀ हमसे भाँवर लेहि डराय ॥
जाति बनाफर की ओछी है ❀ उनघर व्याह करैं ना भाय ॥
खैर आपनी पृथ्वी चाहैं ❀ चुप्पै कूंच जाँय करवाय ॥
सुनिकै बातें छेदा चलिभा ❀ अपनी फौज पहूँचा आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यहाँ की बातैं यहाँ छोड़ दई ❀ आगे और कहैं अब गाय ॥
फौजैं साजी महराजा ने ❀ औ मोती को लीन्ह बुलाय ॥
जल्दी जाओ रन खेतन में ❀ सबके मूड़ लेहु कटवाय ॥
सुनिके बातैं महराजा की ❀ मोती मने उठे हर्षाय ॥
साजि बछेड़े पर चढ़ि बैठे ❀ औ फौजन में पहुँचे आय ॥
डङ्का बाजे अहतङ्का के ❀ हा हा कारी शब्द गा छाय ॥
फौजैं सजि गइँ मोती सिंहकी ❀ शोभा कही बूतना जाय ॥
मारु २ के मौहर बाजै ❀ बाजै हाव २ करनाल ॥
बड़े २ योधा सजिके ठाढ़े ❀ बाँधे पाग बैजनी भाल ॥
एक हरिकारा दौरति आवै ❀ औ ताहर से कहै सुनाय ॥
केहिकी निदिया ताहर सोवौ ❀ फौजैं गईं शीश पर आय ॥
सुनिके बातैं हरकारी की ❀ ताहर उठे भरहरा खाय ॥
हुकुम लगाय दियो फौजन में ❀ डंका तुर्त दीन्ह बजवाय ॥
डङ्का बाजे अहतङ्का के ❀ हा हा कारी शब्द गा छाय ॥
बड़ि २ तोपैं जो लश्कर में ❀ सो चरखिन में दीन्ह चढ़ाय ॥
हाथी सजि गए बरन बरन के ❀ घोड़ा सबै लिए सजवाय ॥
तीन लाख फौजें सजवाईं ❀ ताहर खेत पहुंचे आय ॥
गज इक दन्ता को सजवावो ❀ तापर चौड़ा भयो सवार ॥
जायके पहुँचो रन खेतन में ❀ गरुई हाँक दीन्ह ललकार ॥
कही मानि लो मोती ठाकुर ❀ नाहक रार मचाओ भाय ॥
तेहिते तुमका समुझाइत है ❀ चुपके ब्याह देहु करवाय ॥
बातैं सुनिकै अस चौड़ा की ❀ बोला मोती सिंह सर्दार ॥
ब्याह बनाफर घर होई ना ❀ ओछी जाति बनाफर क्यार ॥
बातन बातन बतबढ़ होइगै ❀ औ बातन में बढ़िगै रारि ॥
मोती आय गयो फौजन में ❀ गरुई हाँक दीन्ह ललकार ॥
बत्ती दै देवैं मेरि तोपन में ❀ इन पाजिन को देहु उड़ाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

झुके खलासी दोउ तरफा के ❀ तोपन आगी दीन्ह लगाय॥
थैली भरके बारूदन की ❀ तापर गोला दीन्ह डराय॥
प्याली दइकै रंजक वारी ❀ सुम्भा फेंकि फेकि रहिजाय॥
दै दइ बत्ती जब तोपन में ❀ धुवना रहा सरग में छाय॥
छाइ अँधेरिया गइ फौजन में ❀ गोला चले सबै अरराय॥
अररर अररर गोला बरसै ❀ कह २ करैं अगिनियाँ बान॥
घैहा लोट रहे खेतन में ❀ यारों बड़े सुघरुवा ज्वान॥
टप २ टप २ गोला बरसै ❀ तीरैं सर्र सर्र सर्राय॥
छोटी गोली कहुँ २ बर्षै ❀ मानो मघा बूंद मन्नाय॥
जेहि हाथी के गोला लागै ❀ मानौ चोर सेंध कै जाय॥
जौन ऊँटके गोला लागै ❀ सो गिर पैर चकत्ता खाय॥
जेहि घोड़ा के गोला लागै ❀ मानो गिरह कबूतर खाय॥
जेहि क्षत्री के गोला लागै ❀ ताको पता न लागै भाय॥
चारि घरी भर गोला बरसो ❀ तोपन हाथ धरो ना जाय॥
तोपैं धैं धैं लाली होइ गइँ ❀ गेचुटकिनके मास उड़ाय॥
यहू लड़ाई पीछे परि गइ ❀ लम्बे बन्द भए तइयार॥
लई सिरोही मानो शाही ❀ कोटा बून्दी की तरवार॥
खट २ खट २ तेगा बाजै ❀ बाजै छपक २ तरवार॥
चलै जुनब्बी और तिन्नबी ❀ ऊना चलै बिलायत क्यार॥
झुके सिपाही मोती सिंहके ❀ अपनो मया मोह बिसराय॥
भगे सिपाही दिल्ली वारे ❀ अपने २ प्राण बचाय॥
यह गति देखी जब चौड़ाने ❀ अपनो हाथी दीन्ह बढ़ाय॥
औ ललकारो मोती सिंहको ❀ ठाकुर खबरदार होइ जाय॥
इतना कहिकै साँग चलायो ❀ मोती लइगे वार बचाय॥
गुर्ज उठाय लियो मोती ने ❀ औ चौड़ा पै दीन चलाय॥
लागि चपेटा गा हाथी के ❀ हाथी भगा चौडिया क्यार॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह गति देखी जब ताहर ने ❀ गरुई हाँक दीन्ह ललकार ॥
सँभरो सँभरो मोती ठाकुर ❀ तुम्हरो काल गयो नगिचाय ॥
यह कहि मारो तरवारी को ❀ मोती लइगे वार बचाय ॥
गुर्ज उठायो फिर मोती ने ❀ शिव शंङ्कर के चरण मनाय ॥
औ ललकारो है ताहर को ❀ ताहर खबर दार ह्वै जाय ॥
गुर्ज धमंकी नर मोती ने ❀ घोड़ा गयो चपेटा खाय ॥
घोड़ा भागि चलो ताहर को ❀ मोती घोड़ा दीन्ह बढ़ाय ॥
दियो बढ़ावा रजपूतन को ❀ बढिगे मार २ चिल्लाय ॥
भगे सिपाही दिल्ली वारे ❀ सूझै अपन परावा नाय ॥
एक हरिकारा दौरति आवै ❀ पहुंचो जहां पिथौरा राय ॥
खबर सुनाई समर भुम्मि की ❀ राजा गये सनाका खाय ॥
धांधू बोले बादशाह से ❀ ओ महराजा बात बनाय ॥
आज्ञा पाऊं महाराज की ❀ मोती मल को लेहुँ बंधाय ॥
आज्ञा दै दई पृथी राज ने ❀ धांधू हाथी लीन्ह सजाय ॥
जाइकै बैठो है हौदा में ❀ मनमें सुमिरि शारदा माय ॥
मागया देवन को सुमिरनकरि ❀ लीला कण्ठ कलिंजर क्यार ॥
इष्ट देव को सुमिरन करिकै ❀ धांधू खैंच लीन्ह तलवार ॥
हाथी बढ़ाय दियो धांधू ने ❀ गरुई हांक देत ललकार ॥
जाइके पहुँचा समर भुमि में ❀ गर्जा शूर बीर सर्दार ॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठे ❀ जैसे सिंह बिडारे गाय ॥
तैसेइ घुसिगो यह दल भीतर ❀ शङ्का मनै नेकना खाय ॥
एकै मारै एक ललकारै ❀ दूसरे खौफ खाय मर जाय ॥
भवरा नन्द हाथी मस्ताना ❀ लाखन योधा रहो नसाय ॥
साँकर फेरि रहो लश्कर में ❀ धांधू विषम करै तरवार ॥
केतक सूरन को हनि डारो ❀ फौजैं भगीं बुखारा क्यार ॥
या गति देखी जब मोती ने ❀ गरुई हांक दीन्ह ललकार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सँभरो २ अब हाथी पर ❀ ठाकुर झलो हमारे वार ॥
असकहि मारो तरवारी को ❀ बाएं उठी गैंडकी ढाल ॥
बचा दुलरुवा देश राजका ❀ वह पिरथी का लड़ैतालाल ॥
तेगा लीन्हो बर्दवान को ❀ जामें धरी चीर मा बाढ़ ॥
तेगा छोड़ दियो मोती पै ❀ मोती लीन्ह ढाल पर आड़ ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली ❀ गद्दी कटि मखमल कीजाय ॥
बचा दुलरुवा धीरसिंह का ❀ सोने कलश गिरे झन्नाय ॥
गुर्ज उठायो फिर मोती ने ❀ औ धांधू पर दीन्ह चलाय ॥
बांए से हाथी दहिने होइगा ❀ नीचे गुर्ज गिरा अरराय ॥
लई सिरोही नर धाँधू ने ❀ सुमिरन कीन्ह शारदा माय ॥
मोती बोलै तब जीवन से ❀ मालिन मेरी बात बनाय ॥
अबकी वारन से बचिहैं ना ❀ साफै हाल दीन्ह बतलाय ॥
कैद कराय लेव धांधू की ❀ नहिं सब जइहैं काम नसाय ॥
सुनिकै बातैं मोती सिंह की ❀ मालिन उठी भरहरा खाय ॥
वीर मुहमदा की पुरिया लै ❀ सो साँधू पर दीन्ह चलाय ॥
देही ढील भई धाँधू की ❀ हौदा गिरे मूर्छा खाय ॥
पुरिया लइकै भैरौं वारी ❀ सो फौजन में दीन्ह चलाय ॥
पाथर फौज भई दिल्ली की ❀ मोती मनै उठे हर्षाय ॥
मुश्क बाँधि लइ नर धाँधू की ❀ औ पलकी में दीन धराय ॥
कूच कराय दियो फौजन को ❀ अपने धाम पहूँचे जांय ॥
यक हरिकारा दौरति आवै ❀ औ पिरथी से कही सुनाय ॥
फौजैं पाथर सवरी ह्वै गइँ ❀ मालिन जादू दीन चलाय ॥
सुनिकै बातैं हरकारा की ❀ राजा मने गए घबराय ॥
हुकुम लगाय दियो जल्दी से ❀ जल्दी कूच देहु करवाय ॥
सन्मुख आवै तो लड़ मरिये ❀ अब जादू से लड़ा न जाय ॥
कूच कराय दियो जल्दी से ❀ चौड़ा ताहर गे घबराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चरि २ गउवैं घरका डगरी ❋ पत्नी लिहेन बसेरा आय ॥
तारा गन नभ चमकन लागे ❋ संतन धुनी दीन्ह परचाय ॥
अस्ताचल को सूर्य देव गे ❋ संझा काल पहूँचा आय ॥
दाया कीन्ही श्री लाल ने ❋ जो हम गए पँवारा गाय ॥
होवै भूल चूक जो भइया ❋ बुधजन ताको लेहिं बनाय ॥
रहै समुन्दर में जौ लौ जल ❋ जौलौ रहै इन्द्र औ सूर ॥
बैजनाथ परशाद नाम यह ❋ यश सो रहै सदा भरपूर ॥
सदा भवानी रहै दाहिनी ❋ दाया करैं शारदा माय ॥
करैं तरंग यहाँ से पूरन ❋ मनमें श्री लाल पद ध्याय ॥
फेरि मनावैं शिव शङ्कर को ❋ वरदारूढ़ भवानी कन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन दीजै ❋ इच्छा यही मोर भगवन्त ॥

इति श्री धाँधू का ब्याह चक्रकवि रचित प्रथम तरंग
सम्पूर्णम् ।

कवित्त ।

श्याम तन जाका, रचा हाथमें हिनाका रंग, औ लबोंकी लाली गुल्लालीसी दुचंद है ॥ कानन की बाली घुघुराली जुल्फ जाली देख परी जी आली बन माली इस फन्द है ॥ सोहनी सी मूरत है मोहनी सी मूरत है खासा खूब मूरत है पूनो का सा चन्द है ॥ हँसती पेशानी 'चक्र, हिरदय समानी यारो आनन्द का कन्द प्यारा नन्द फरज़न्द है ॥

❋ सुमिरन ❋

भादौ मास पक्ष अँधियारी ❋ तिथि अष्टमी वार बुधवार ॥
आधी रात केर अमला में ❋ लीन्हों कृष्ण चन्द्र औतार ॥
डारि मोहनी दइ मोहन ने ❋ सोए सबै पहरुवा ज्वान ॥
देवकि बोलै बासुदेव से ❋ यारो बचन करो परमान ॥
प्राण बचाओ यहि बालक के ❋ मेरे प्राण नाथ भर्तार ॥

CC-0. Swami Atmanahd Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

भोर होत अइहै हत्यारा * देहै पुत्र जान से मार ॥
सुनिकै बातें निज नारी की * सोचैं बासुदेव मन माय ॥
कौन भाँति से पुत्र बचावैं * एकौ यतन सुझतो नाय ॥
दाया होइ गइ गिरधारी की * बन्धन मुक्त भए बसुदेव ॥
फाटक एक साथ सब खुलिगे * याको जानो न कोऊ भेव ॥
लै बसुदेव कृष्ण कहँ चलिभे * गोकुल नगर पहूँचे जाय ॥
कन्या लइकै तुरतै लौटे * बन्दी खाने पहूँचे जाय ॥
यह सब कथा व्यास ने गाई * महिमा कृष्ण चन्द्र भगवान ॥
शेष महेश शारदा हारीं * माया भेद कोऊ न जान ॥
कौन हकीकत हम राखत हैं * तुम्हरो सुयश सकैं जो गाय ॥
आल्हा पँवारा गाय सुनावै * तुम्हरी कृपा अगर ह्वै जाय ॥
छूटि सुमिरनी गै देवन की * शाका सुनो सूरमन क्यार ॥
खबर महोबे में अब जाई * अइहैं उदय सिंह सर्दार ॥

* कथारम्भ *

कैद कराय लई धाँधू की * मोती नगर पहूँचे आय ॥
खबरैं होइ गईं महराजा को * मन में उठे भूप हर्षाय ॥
बन्दि कराई फिर धाँधू की * गल में तौक दीन्ह डरवाय ॥
नव नव फाँसै ठुकीं नहन में * चुम्बक दहक दीन्ह डरवाय ॥
खबरैं पहुँची यह महलन में * केशर मनै गई घबराय ॥
अपने मनमें केशर सोचै * यारो सोचि सोचि रहिजाय ॥
कंथ हमारे हैं भकसी में * उनको कौन निकारै जाय ॥
फिर कुछ सोचो अपने मनमें * औ बाँदी को लीन्ह बुलाय ॥
थार मूबरन को सजवायो * चौमुख दिया धरो बरवाय ॥
सँग लै लीन्हो है बाँदी को * भकसी ऊपर पहुँची जाय ॥
हिलकी भरि २ केशर रोवै * कन्था मेरी बात बनाय ॥
भोजन लाई यह दासी है * करिके कृपा लीजिये खाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनिकै बातैं धाँधू बोलैं * रानी आकिल गई तुम्हार ॥
काँरी करके भोजन खावैं * रनमें झूठि परै तरवार ॥
जबै पिथौरा हमैं छुड़ावैं * तबही भोजन पान सुहाय ॥
सुनिके बातैं नर धाँधू की * केशर बोली बचन सुनाय ॥
भागि पिथौरा गे दिल्ली को * कंथा तुमको देहुँ निकार ॥
धाँधू बोलैं तब केशर से * भामिन हृदय लेहु यह धार ॥
सूरज टरिजाय चन्दा टरिजाय * नभसे चाहै गिरैं अँगार ॥
चोरा चोरी हम नहिं निकरैं * ताते जाहु महल यहिबार ॥
खबरैं भेजो नगर महोबे * आवैं उदय सिंह सर्दार ॥
बड़ा लड़ैया मेरो भइया है * वाकी बहै बेंड़ि तरवार ॥
सुनत खबरिया तुरतै अइहै * हमरी बन्दि छुड़इहै आप ॥
मारे तेगा तरवारिन के * चहला रन में देहि मचाय ॥
देवर तुम्हरे ऊदन लागैं * उनको खबर देहु पहुँचाय ॥
सुनिके बातैं नर धाँधू की * केशर महल पहूँची आय ॥
कागद लइकै कलपी वारो * अपनो कलमदान मँगवाय॥
सिद्ध श्री सर्वोपरि लिखिके * लिखदो नाम उदय सिंहराय ॥
नाम तुम्हारो जग २ जाहिर * तुम को जानै सब संसार ॥
तुम्हरे भाई परे कैद में * तुम्हरी कहाँ गई तरवार ॥
पिरथी आए थे ब्याहन को * रन सन्मुख से गए पराय ॥
धाँधू ठाकुर भाई तुम्हरे * भकसी परे रहे दुख पाय ॥
उनही नाम बतायो तुम्हरो * देवर करियो आप सहाय ॥
बन्दि छुड़ाओ आय कंथा की * तुम्हरो सुयश रहो जगछाय ॥
पाती लिखिकै महरानी ने * सुवना गरे दीन्ह बँधवाय ॥
भल पुचकारो फिर सुवना को * तुम असने में करो सहाय ॥
जल्दी चले जाव महुबे को * पाती देहु उदय सिंह हाथ ॥
यह कहि छोड़ि दियो सुखमाको * सुखमा तुरत सरग मड़राय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सात दिना की मंजिल करिके * चन्दन बाग पहूँचो जाय ॥
ऊदन घूमि रहे बगिया में * सुवना उनके नजर परिजाय ॥
पाती देखी गर सुवना के * ऊदन बचन कहे हर्षाय ॥
कहाँ की पाती तुम लाए हो * सुवना हाल देहु बतलाय ॥
है यह पाती केहु दुखिया की * तौ तू मेरे गोद में आय ॥
दुःख छुड़ाऊँ दुखियारी का * मेरो नाम उदय सिंह राय ॥
बातैं सुनिकै बघ ऊदन की * सुवना गयो गोद में आय ॥
पाती खोलि लई ऊदन ने * आँकुई आँकु नजर करिजाय॥
चिट्ठी बाँचत परलै होगई * गुस्सा गयो वदन में आय ॥
एक कर पहुँचो तरवारी पर * एक कर अँटा मूछपर जाय ॥
सुवना डारि दियो पिंजरा में * औ बेंदुल को लीन्ह सजाय ॥
कूदि बछेड़ा पर चढ़ि बैठो * औ सिरसाकी पकरी राह ॥
ऐड़ा मसको रस बेंदुल को * घोड़ा उड़ा हवा सम जाय ॥
चारिघरी के फिर अरसा में * सिरसा गढ़े पहुँचा जाय ॥
उतरि बछेड़ा से भुँइ आवा * घोड़ा थाम लीन्ह थनवार ॥
यहु रण बङ्का देवै बारा * तुरतै पहुँच गयो दर्वार ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * जामें तपै भँवर मलखान ॥
गजभर छाती रन नाहर की * साढ़े तीन हाथ का ज्वान ॥
बड़े २ क्षत्री बँगला बैठे * टिहुनन धरे नगिन तरवार ॥
लौंडा नाचिरहे कथिकन के * पहुँचा पूत दिवलदे क्यार ॥
सूरत देखी उदैसिंह की * मलखे उठे भरहरा खाय ॥
भुजभर भेटेव है भाई को * औ गद्दी पर लीन्ह बिठाय ॥
मलखे बोलैं बघ ऊदन से * भाई मेरे लहुरवा भाय ॥
कारी पुतरियाँ काहे लाली भईं * काहे रहो रोष तन छाय ॥
सुनिकै बातैं नर मलिखे की * बोल्यो उदयसिंह सर्दार ॥
धाँधू भइय्या भकसी डारे * सूबा जौन पिथौरा क्यार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ब्याह करन को गए पिथौरा * धाँधू तहाँ दीन्ह पकराय ॥
आप भागि आए दिल्ली को * बेटी पाती दीन्ह पठाय ॥
असकहि पाती कर मलिखे के * ऊदन तुरत दीन्ह पकराय ॥
पाती बाँची नर मलिखे ने * नैना अग्नि ज्वाल है जाय ॥
हुक्म लगाय दियो मलिखे ने * जल्दी फौजें लेहु सजाय ॥
फाँदि बछेड़ी पै चढ़ बैठो * ऊदन अपने संग लिवाय ॥
जहाँ कचहरी नुनिआल्हा की * दोऊ तहाँ पहुँचे जाय ॥
मूरत देखत इन दोउन की * क्षत्री गए सनाका खाय ॥
दोऊ कलहा साथै आए * अब धौं काहकरे भगवान ॥
नजर घूमि गई बब्बाफर की * ठाढ़ो लखो भँवर मलखान ॥
भुजभर भेटो मलखाने को * बोले मण्डलीक औतार ॥
कारी पुतरिया क्यों लाली भई * काहे क्रोध चढ़ा तन यार ॥
सुनिके बातें मलिखे बोले * मैं ददुवा की लेहुँ बलाय ॥
धाँधू ब्याहन गए बुखारा * दल को साजि पिथौरा राय ॥
भागि के आए सो दिल्ली में * धाँधू भकसी दीन्ह डराय ॥
चिट्ठी भेजो है भौजी ने * उनकी बन्दि लेहु छुड़वाय ॥
आल्हा बोले तब मलिखे से * भय्या काह गयो बौराय ॥
जनम के बैरी धाँधू हमरे * पृथ्वी कैद दीन्ह करवाय ॥
उनको पृथ्वी जाय छुड़ावें * जावे हमरी यार बलाय ॥
सुनि के बातें मलखे बोले * मैं ददुवा की लेहुँ बलाय ॥
धाँधू बनाफर भकसी डारो * जो है देश राजको लाल ॥
तुम्हें हँसौउवा को डरनाहीं * हँसिहैं सबै बड़े नर पाल ॥
धाँधू ब्याहि के दादा लाओ * होवै देश २ में नाम ॥
पृथ्वी जानै अपने मनमें * महुबे वारे बड़े सरनाम ॥
केशर भौजी आस लगायो * पाती हमको दीन्ह पठाय ॥
शरण हमारी में आई हैं * तो फिर हमें मुनासिब नाय ॥

चुपकें बैठ रहैं घर अपने * हँसिहैं बड़े बड़े सर्दार ॥
लानत हमरी रजपूती को * पागिया बाँधन को धिक्कार ॥
हमतो जावैं अबहिं बुखारा * भइया साँच दीन्ह बतलाय ॥
मोरे तेगा तरवारिन के * गढिया गर्द देहुँ करवाय ॥
तड़पो बेटा देश राज को * यहु देवे का लड़ैता लाल ॥
हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हारे * गढ़िया करदें पनिया ढाल ॥
मुश्क बाँधिलें धीर सिंह की * सातौं भावर लेहिं डराय ॥
इन्दल जगनिक बोलन लागे * हमहूँ खड़े सजे तैयार ॥
सुनिकै बातैं सब शूरन की * आल्हा सोचि. २ रहिजाय ॥
सोचि समुझि कै आल्हा बोलैं * भइया मेरी बात बनाय ॥
आज्ञा लैलेव चन्देले से * हमको उजर तनक कुछनाय ॥
ऊदन मलिखे तुरतै चलि भे * औ दर्बार पहूँचे जाय ॥
लगी कचहरी चन्देले की * टिहुना रगरि २ रहि जाय ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * तापर तपै चन्देले राय ॥
जोड़ी नाचि रही कथिकन की * तबला गमकि २ रहि जाय ॥
जायके दोनों दाखिल ह्वैगे * तुरतै नाच बन्द ह्वै जाय ॥
नजर घूमिगई चन्देले की * औ दोनों पर परी निगाह ॥
भुजा पकरि कै चन्देले ने * औ छाती से लीन्ह लगाय ॥
पास बिठायो चंदेले ने * बोले बचन हृदय हर्षाय ॥
दोनों मिलिकै कैसे आए * बेटा मेरे बनाफर राय ॥
हाथ जोरिके मलिखे बोलैं * ओ महराजा बात बनाय ॥
धाँधू व्याहन गए बुखारा * सबदल साजि पिथौरा राय ॥
मारि भगायो धीरसिंह ने * धाँधू कैद लीन्ह करवाय ॥
पाती भेजो है भौजी ने * हमरी भौंरी लेहु डराय ॥
आज्ञा पावैं महराजा की * धाँधू ब्याह करावैं जाय ॥
जेठे भइया धांधू हमरे * हमको क्रोध रहो है आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

देश २ में होय हँसउवा * तेहिते हुकुम देहु फरमाय ॥
सुनके बातैं मलखाने की * राजा गए सनाका खाय ॥
फिर मलिखे से बोलन लागे * बेटा मेरे भँवर मलखान ॥
धाँधू भाई तुम्हरे साँचे * पै यह जाने सकल जहान ॥
जनम के बैरी पृथीराज घर * करैं चाकरी नाम धराय ॥
तेहिते तुमको समुझाइत है * तुमको कौन परी परवाह ॥
चुपके बैठो तुम घर अपने * पिरथी जाय लेहिं छुटवाय ॥
बन्दि छुड़ाओ तुम धाँधू की * धाँधू घेरे महोबा आय ॥
हाथ जोरिकै मलिखे बोले * मैं ददुवा की लेहुँ बलाय ॥
धरम क्षत्रियन के नाहीं है * शरणागत को देहिं भुलाय ॥
पाती भेजो केशर भौजी * हमसे भारी आस लगाय ॥
हमै मुनासिब यहु नाहीं है * हम पाती को जाहि दबाय ॥
तेहिते आज्ञा हमको दै देव * शङ्का मनसे देहु हटाय ॥
मुश्क बाँधिके धीर सिंह की * सातो भाँवरि लेहुँ डराय ॥
व्याह कराये बिन धाँधू का * हमसे धीर धरो ना जाय ॥
चुपके घरमें जो हम बैठैं * तो रजपूती धर्म नसाय ॥
ऊदन बोलै हाथ जोरि कै * ओ महराज बन्देले राय ॥
व्याह कराये बिन धाँधू को * ऊदन नहीं अन्नजल खाय ॥
दोऊ बिगरे हैं बंगले में * दो में एक मानता नाय ॥
आज्ञा दैदियो महराजा ने * जाओ व्याह रचाओ जाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवाये * औ यह हुकुम दीन्ह फरमाय॥
बजै नगाड़ा अब लश्कर में * सबियाँ फौज लेहु सजवाय ॥
धावन भेज दियो सिरसा को * फौजें लीन्हीं साजसजाय॥
आल्हा ऊदन ढेबा ब्राह्मण * मन्ना गूजर भए तयार ॥
इन्दल जगनिक दोऊ सजिगे * अपने बाँधि २ हथियार ॥
पाहिले नगाड़ा में जिनबन्दी * औ दुसरे में भए असवार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * चलिभे सबै सूरसरदार ॥
तीन दिनाकी मंजिल करिके * सिरसा गढ़े पहूँचे जाय ॥
सुलिखे सजिकै तुरतै आए * लश्कर कूच दीन्ह करवाय ॥
कूच कराय दयो सिरसा से * औ दिल्ली की पकरी राह ॥
नौ सौ झण्डा उड़ैं सुनहरा * डङ्का होत गोल में जाय ॥
चार दिना को धावा करिके * दिल्ली गढ़े पहूँचे जाय ॥
मलिखे ऊदन करी सलाहैं * आपन घोड़ा दीन्ह बढ़ाय ॥
जहाँ कचेहरी पृथीराज की * दोऊ तहाँ पहूँचे जाय ॥
उतरि बछेड़न से भुइँ आए * औ दर्बार पहूँचे जाय ॥
आवत देखे नर मलिखे को * पृथ्वी उठे भरहरा खाय ॥
चौकी आई सुबरन वारी * मखमल गद्दा दीन्ह डराय ॥
मलिखे ऊदन को बैठारो * खातिर दीन्ह पिथौरा राय ॥
कैसे आए दोनों भाई * आपन हाल देहु बतलाय ॥
मलिखे बोले पृथीराज से * धांधू नहीं यहाँ दिखराय ॥
उनकी लेन खैरियत आए * सांचो हाल दीन्ह बतलाय ॥
सुनिके बातैं नर मलिखे की * पृथ्वी गए सनाका खाय ॥
सूखि बतीसी गै दाँतन की * मुँहका पान गयो कुम्हलाय ॥
पृथ्वी बोले नर मलिखे से * सुनिये बीर बनाफर राय ॥
धाँधू व्याहन गए बुखारे * जहँ रन धीरसिंह नर राय ॥
कैद कराई तिन धाँधू की * फौजन पाथर दीन्ह बनाय ॥
भागि बुखारे से हम आए * भइया अपने प्राण बचाय ॥
इतनी सुनिके मलिखे बोले * सुनिये बात पिथौरा राय ॥
तुम्हे हँसउव्वा को डर नाहीं * रनसे आए पीठ दिखाय ॥
फौंज सजाओ अब जल्दी से * धांधू व्याह देहिं करवाय ॥
मुश्क बाँधि कै धीरसिंह को * सातौ भाँवरि लेहि डराय ॥
पृथ्वी बोले तब मलिखे से * मलिखे साफ देहिं बतराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हमरे भरोसे में ना रहियो * हम नहिं प्राण गँवै हैं जाय ॥
सुनिकै बातैं पृथी राजकी * भभका बच्छ राज का लाल ॥
कारी पुतरियाँ लाली ह्वै गइँ * मनो नैनन में बरै मसाल ॥
धरि ललकारे पृथीराज को * पगिया बाँधन को धिरकार ॥
देश २ में नाम तुम्हारो * कहाँ वह घुसर गई तरवार ॥
फौजैं सजा लेहु अब जल्दी * तुमको कौन परी परवाय ॥
बैठे रहियो तुम तंबुवा में * सातौ भाँवरि लेहिं डराय ॥
संग हमारे जो ना चलिहौ * तौ सब जइहै काम नसाय ॥
धाँधू भाई को दिखलाओ * या फौजन को लेहु सजाय ॥
पृथ्वी सोचैं अपने मनमें * कलहा दोउ बनाफर राय ॥
कही हमारी ये ना मनिहैं * तुरतै हुक्म दीन्ह फरमाय ॥
बजो नगाड़ा गढ़ दिल्ली में * सबियाँ फौज हुई तैयार ॥
हाथी चढ़इया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
आदि भयङ्कर हाथी साजी * तापर पृथ्वी भए सवार ॥
लश्कर चलिभो गढ़ दिल्ली से * चलिभै सबै शूर सर्दार ॥
कूँच कराय दियो दिल्ली से * मनमें श्री गनेश को ध्याय ॥
सात दिना की मंजिल करिकै * फौजैं धुरा दबायो जाय ॥
बारा कोस बुखारा रहिगा * मलिखे डेरा दीन्ह डराय ॥
हौदा उतरि गए हाथिन के * घोड़न जीन दीन्ह उतराय ॥
तम्बू गड़िगे रजपूतन के * मलिखे ढेबा लीन्ह बुलाय ॥
सगुन बताओ अब जल्दी से * भइया काम सिद्ध ह्वै जाय ॥
ढेबा बोलैं तब मलखे से * दादा मेरे भँवर मलखान ॥
गुदड़ी पहिर लेव जल्दी से * इतने बचन करो परमान ॥
भेदले आवैं जब गढ़िया का * तब सब काम सिद्ध ह्वै जाय ॥
इतने सुनिकै मलखे ठाकुर * गुदड़ी तुरतै लीन्ह मँगाय ॥
ऊदन मलिखे ढेबा कहिये * गंगा कुडहर के सर्दार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गुदड़ी पहिर लई चारो ने * जिनमें छिपी ढाल तरवार ॥
कर इकतारा गँगा लीन्हो * ऊदन बँसुरी लीन्ह उठाय ॥
डमरू सोहै कर ढेबा के * मलिखे खँभरी रहे बजाय ॥
ठुमरी टप्पा औ तिल्लाना * तोरैं गजल पर्ज पर तान ॥
नाचैं गावैं कमर झुलावैं * चारो बड़े सुघरुवा ज्वान ॥
बजै बाँसुरी बघ ऊदन की * जामें उड़ै छतीसो राग ॥
जै जै वन्ती औ धानी श्री * गावैं सोरठ और विहाग ॥
तान मरोरा उदन छोड़ै * पक्के महल उठै झन्नाय ॥
को गति बरनै गंगा सिंहकी * एक दम तार रहा झन्नाय ॥
गावत नाचत चारो चलिभे * फाटक ऊपर पहुँचे जाय ॥
मलिखे बोले दर्वानी से * भइया फाटक देहु खुलाय ॥
तब दर्बानी बोलन लागो * हमसे हाल देहु बतलाय ॥
कहाँ से आए औ कहँ जैहो * काहे नगर मझायो आय ॥
मलिखे बोले दर्वानी से * हमतो हिंगलाज को जाँय ॥
कुटी हमारी बंगाले में * भिक्षा शहर माँगिहै जाय ॥
फाटक खोलो दर्वानी ने * चारो घुसे शारदा ध्याय ॥
नाचत गावत गलियारेन में * पनघट ऊपर पहुँचे जाय ॥
बजै खंभरी भल मलिखे की * ढेबा डमरू रहे बजाय ॥
तान मरोरा ऊदन गावै * पक्के महल दरेरा खाय ॥
ता ता थेई ता ता थेई * ता ता थेई दीन्ह मचाय ॥
गंगा ठाकुर कुड़हर वारा * सबियाँ तार रहा झन्नाय ॥
रूपा बाँदी रंग महल की * सोऊ गई तहाँ पर आय ॥
नाच देखि के सुरति बिसारी * बाँदी मोहि २ रहि जाय ॥
पानी भरने पनि घट आई * दुपहर समय पहूँचा आय ॥
होश आयगो है बाँदी को * बाँदी चली महल भयखाय ॥
धरि ललकारो महरानी ने * बाँदी तेरा बुरा होय जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पानी बूँद नहीं महलन में * तैंने दुपहर दई गवाय ॥
हाल बतावै अब जल्दी से * नाहीं पेट देहुँ फरवाय ॥
हाथ जोरि कै बाँदी बोलै * मेरि तकसीर माफ ह्वै जाय ॥
चार योगिया ऐसे आए * शोभा कही बूत ना जाय ॥
सुर पुर नर पुर नाग लोक में * ऐसे नहीं कहूँ दिखराय ॥
नाचैं गावैं भाव बतावैं * तोरैं गजल पर्ज पर तान ॥
छोटो जोगी अति सुन्दर है * वाको रूप दियो भगवान ॥
हुक्म जो पावैं महरानी को * महलन लावैं उन्है बुलाय ॥
दर्शन करलो महरानी जी * तुम्हरो जन्म सफल ह्वै जाय ॥
अज्ञा दीन्हो महरानी ने * बाँदी चली तड़ाका धाय ॥
आयके पहुँची है योगिन तर * दोनों हाथ बाँधि रहि जाय ॥
हाथ जोरि के बाँदी बोलै * मैं बाबाको लेहु बुलाय ॥
तुम्हें बुलायो महरानी ने * महलन डमरू देहु बजाय ॥
सुनिके बातैं अस बाँदी की * योगी तुरत भए तैयार ॥
जाइके पहुँचे रंग महलमें * ठाढ़े ह्वैगे पँवर दुवार ॥
बजो बाँसुरी उदय सिंहकी * जामें उड़ै छतीसो राग ॥
जै जै बंती औ श्री धानी * ऊदन गावै राग बिहाग ॥
कमर झुकावै भाव बतावै * नाचै वीर उदय सिंहराय ॥
सूरत देखि २ जोगिन की * तिरिया मोहि २ रहिजायँ ॥
भरैं उसासैं औ अँगड़ाई * कोऊ ठाढ़ रही जमुहाय ॥
सूरत बिसारी घर द्वारे की * रोवत लरिका दीन्ह भुलाय ॥
यकटक देख रही योगिन को * औ आपुस में रही बताय ॥
योगी बलम हमारे होते * तौ छाती से लेति लगाय ॥
तौलौं दूजी बोलन लागी * बहनी मेरी बात बनाय ॥
छोटो योगी को जो पाऊँ * तो यह जनम सुफल ह्वै जाय ॥
तौलौं तीजी बोलन लागी * जोगी मेरे प्राण समभाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जोगिन बनि इनके सँग डोलैं * तौ जियरे की डाह बुताय ॥
एक सखी रिसही ह्वै बोली * राजौं काहे गइँ बौराय ॥
जोगिन बनि इनके संग डोलिहो * छड़िहौ पूत मात औ भाय ॥
सुनिकै सबियाँ कायल हुइगईं * नीचे मूड़ लीन्ह औंधाय ॥
तिरिया मोहीं उदयसिंह ने * सबकी सुरत दीन्ह बिसराय ॥
काहू दीन्ही साल दुसाला * काहू हार दीन्ह पहिराय ॥
रानी मोही धीरसिंह की * मनमें सोचि २ रहिजाय ॥
तौलौं आई केशर बेटी * सो ऊदन कि नजर परिजाय ॥
किया इशारा उदयसिंह ने * केशर तुरत भापसो जाय ॥
हाथ जोरि के केशर बोलै * मैं माता की लेहुँ बलाय ॥
हुकुम तुम्हारो जो मैं पाऊँ * जोगिन भोजन देहुँ कराय ॥
हुक्म दैदियो महरानी ने * केशर जोगिन संग लिवाय ॥
जायके पहुँची रङ्ग महल में * चन्दन चौकी दीन्ह डराय ॥
ऊदन बोले तब केशर से * भौजी हाल देहु बतलाय ॥
धोके जोगिन के रहियो ना * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
हाल बताओ अब जल्दी से * कहना कैद बनाफर राय ॥
केशर बोली तब ऊदन से * स्याबस तुम्हें उदयसिंह राय ॥
आओ भकसी तुम्हें दिखाऊँ * जामें भैया पड़े तुम्हार ॥
ब्याह कराओ देवर मेरो * भूलूं नहीं सुयश संसार ॥
भकसी देखी उदय सिंह ने * औ फिर कही वचन समुझाय॥
चुपके बैठो तुम महलन में * भाँवर सात लेहुँ डरवाय ॥
केशर बोली तब ऊदन से * देवर जेंय लेहु जेवनार ॥
ऊदन ज्वाब दियो केशर को * यह ना धर्म्म क्षत्रियन क्यार॥
भागत क्षत्रिन को ना मारे * ना रन धरे पिछारी पाय ॥
क्वारे भोजन हम नहिं करते * भौजी साँच दीन्ह बतलाय ॥
अस कहि चलि भये चारो योगी * फाटक निकरि गए वा पार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जाइके पहुँचे हैं लश्कर में * गुदड़ी सबहिन धरी उतार ॥
बारह बजे के फिर अमलामें * बोले उदय सिंह सर्दार ॥
मलिखे दादा जल्दी चलिये * करिये यहाँ न नेक अबार ॥
सुनिके बातैं बघ ऊदन की * मलखे उठे भरहरा खाय ॥
तुरत बुलाय लियो गंगा को * मलखे ताहि रहे समुझाय ॥
चलिये २ गंगा ठाकुर * अपने करतब देहु दिखाय ॥
गँगा मलिखे ऊदन चलिभे * सहर पनाह गए नगिचाय ॥
गदर गोह गंगा ने फेंकी * सीढ़ी तुरत कीन्ह लइयार ॥
तीनों चढ़िगे हैं तेहि ऊपर * भकसी पास गए सर्दार ॥
गङ्गा पैठ गए भकसी में * औ धाँधू से कही पुकार ॥
धाँधू ठाकुर जो जिन्दा हो * बोलौ तुरते देहुँ निकार ॥
कान अवाज परी धाँधू के * धाँधू उठे भरहरा खाय ॥
बन्दि छोर दइ गंगा सिंह ने * भकसी ऊपर पहुँचे आय ॥
चारों चलिभे तब लश्कर को * इनको चलत न लागी बार ॥
आइके पहुँचे हैं लश्कर में * जहँ सब परे शूर सर्दार ॥
मिला भेटि सबही सन कीन्ही * तौलौं गयो सबेरा आय ॥
लगी कचहरी पृथी राजकी * शोभा कही बूतनाजाय ॥
पाँच हाथ ऊंचा सिंहासन * जापै तपैं पिथौरा राय ॥
कंचन चौकी है दहिने पर * जापर बैठ बनाफर राय ॥
ऊदन मलिखे तिनके बाजू * टिहुनन धरे नगिन तरवार ॥
औरों क्षत्री बहुतक बैठे * एक से एक शूर सर्दार ॥
मलिखे बोले तब पिरथी से * जल्दी खबर देहु पहुँचाय ॥
आइ बरायत हैं दिल्ली से * संगै आए बनाफर राय ॥
भलो आपनो तुम जो चाहो * जल्दी ब्याह देहु करवाय ॥
नाहीं करने से ना बचिहो * गढ़िया गर्द देहु करवाय ॥
चिट्ठी लिखदइ पृथ्वीराज ने * औ धामन कर दीन्ह गहाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चलि भो धामन दर्बारन से * पहुँचा शहर बुखारे जाय ॥
लगी कहचरी धीर सिंहको * भस्मा भूत लाग दर्बार ॥
बड़े २ क्षत्री जहँ बैठे हैं * टिहुनन धरे नगिन तरवार ॥
जायके धामन दाखिल ह्वैगा * दोनों हाथ बाँध रहिजाय ॥
पाती फेंक दई गद्दी पर * धीर सिंह ने लई उठाय ॥
चिट्ठी बाँचत परलै ह्वै गई * गुस्सा गयो बदन में छाय ॥
कारी पुतरिया लाली ह्वै गई * देहीं फड़कि २ रहिजाय ॥
धरि ललकारो मोती मलको * मोती काह रहे औंघाय ॥
फौजें आईं गढ़ दिल्ली से * इनके मुड़ लेहु कटवाय ॥
सुनिके बातैं महारजा के * मोती उठे भरहरा खाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने कड़ा दीन पहिराय ॥
हुक्म लगायो मोतीमल ने * डंका अबहीं देहु बजाय ॥
जितनी फौजें मेरे दल में * सबियाँ तुरत लेहु सजवाय ॥
तोप दरोगा को बुलबायो * औयहु हुक्म दीन्ह फ़रमाय ॥
बड़ि २ तोपैं मेरे दल की * सो चरखिन पर देहु चढ़ाय ॥
हाथी दरोगा को ललकारो * जल्दी हाथी लेहु सजाय ॥
जितने घोड़ा मेरे लश्कर में * सब पर जीन देहु धरवाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भए हुशियार ॥
भाला बरछी तीर तमंचा * कोटा बूँदी की तरवार ॥
अपनी २ करैं तयारी * कायर रहे मनै पछताय ॥
हाय गोसइयां परलै हो गइ * अबतो गई जानपर आय ॥
पहिल नगारा में जिन बन्दी * औ दुसरे में भए तयार ॥
बड़े २ योधा सजि ठाढ़े भे * अपने बांधि २ हथियार ॥
तोप दारोगा दौरत आयो * सबियां तोपैं लई सजाय ॥
बड़ि २ तोपन को सजवायो * औ चरखिन पै दीन्ह चढ़ाय ॥
तोप संकठा को सजवावो * भैरौं तोप भई तैयार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गर्भ गिरावन कुवाँ सुखावन * बैरी तोरन भई तयार ॥
हाथी सजि रहे हैं लश्कर में * शोभा कही बूत ना जाय ॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा * छोटे परबत सम दिखराय ॥
एकदन्ता दुइ दन्ता साजे * साजिगे स्वेत बरन गजराज ॥
घंटा बांधे गल हाथिन के * सो घहराय रहे मनुगाज ॥
गद्दा धरिकै मखमल वारे * रेशम झूल दई डरवाय ॥
हौदा धरिकै चुम्बक वारो * फिर रस्सन से दीन्ह कसाय ॥
कलश सूबरन के मंगवाए * ते हौदन में दीन्ह धराय ॥
एक २ हाथी के हौदा में * छत्री चार २ बैठाय ॥
आगे हलका करि हाथिन को * पीछे घोड़ा दीन्ह लगाय ॥
हरियल मुश्की पंच कल्यानी * सब पर जीन दीन धरवाय ॥
लक्खा गर्रा औ कुम्मैता * सज्जा घोड़ भए तइयार ॥
जीनै कसदइ है घोड़न पर * चमकैं कलश सूबरन क्यार ॥
तिजै नगाड़ा के बाजत खन * छत्री धरैं रकाबन पाय ॥
चौथ नगाड़ा को सुनि करके * फौजन कूच दीन्ह करवाय ॥
बाजे डंका अहतङ्का के * हा हा कार शब्द गा छाय ॥
धूर उड़ानी आसमान में * दिन में अन्धकार गा छाय ॥
कोउ २ घोड़ा मोर चाल पर * कोउ २ कदम चाल परजाय ॥
हंस चाल पर कोई जावैं * कोई २ सरपट रहे भगाय ॥
पाथर पिसके कांकर ह्वैगे * काँकर पीस धूर ह्वै जाय ॥
चररा चररा चरखी चिघैं * तोपैं मरर मरर मर्रायँ ॥
एक हरिकारा दौरति आवै * मलिखे पास पहूंचा जाय ॥
हाथ जोड़ि के अरज सुनावै * ओ महराज बनाफर राय ॥
केहिकी निंदिया तुम सोवतहो * फौजें पास पहुंची आय ॥
सुनिकै बातैं हरकारा की * मालिखे हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * हाहा कार शब्द गा छाय ॥
जितनी फौजैं जनवासे में * सबियां तुरत लीन्ह सजवाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घोड़ी कबुतरी साजि ठाड़ी थी * तापर चढ़े बीर मलखान ॥
आदि भयङ्कर हाथी ऊपर * पृथ्वी समर धनी चौहान ॥
घोड़ा नाम दल गज्जन ऊपर * ताहर पृथ्वी केर कुमार ॥
हाथी एक दन्ता सजवायो * तापर चौड़ा भयो सवा ॥
घोड़ा बेंदुला की पीठी पर * यहू रन बाघ उदय सिंहराय ॥
हाथी पंचशावद सजवायो * सोने कलशा दीन्ह धराय ॥
सुमिरि शारदा मैहर वारी * मनियां देव महोब क्यार ॥
सीढ़िन २ गो हौदा में * आल्हा मण्डलीक औतार ॥
घोड़ा सजायो हरनागर को * शोभा कही बूत ना जाय ॥
कलश सूबरन के मँगवाए * सो चुट्टन में दीन्ह सजाय ॥
सजो दुलरुवा परिमालिक को * अर्जुन पंडा को अवतार ॥
अगल बगल में दुइ पिस्तौलैं * दाहिने सिंहनि मूठ कटार ॥
सुमिर शारदा मैहर वारी * ब्रह्मा भए घोड़ असवार ॥
घोड़ा मनुरथा की पीठी पर * डेबा फाँदि भए असवार ॥
लगे मोर्चा दुहुँ तरफा के * भारी शूर बीर सर्दार ॥
मोती बढ़गए तब आगे को * औ यह बात कही ललकार ॥
काकी माता नाहर जाई * काके जमे करेजे बार ॥
काने गासो नगर हमारो * कोहै शूर महोबे क्यार ॥
कानन भनक परी ऊदन के * आपन घोड़ा दीन्ह बढ़ाय ॥
जाइके पहुँचा एँव समुहें में * कलहा बीर उदयसिंह राय ॥
तुरत जवाब दियो माता को * सुनिये मोती सिंह सर्दार ॥
हमरिन माता नाहर जाई * हमरे जमे करेजे बार ॥
छोटे भइया हम आल्हा के * हमरो नाम उदय सिंहराय ॥
धाँधू भइया के व्याहन को * ठाकुर गए यहाँ पर आय ॥
हँसी खुशीसे शादी करदो * काहे करो यार तकरार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

हमसे दूजी जो तुम करिहौ * गढ़िया करदूँ बंटा ढार ॥
सुनिकै बातैं बघ ऊदन की * मोती कहे बचन ललकार ॥
कैसे व्याह करैं धाँधू सँग * ओछी जात बनाफर क्यार ॥
सुनिके बातैं मोती सिंहकी * तड़पा पूत दिवलदे क्यार ॥
गुस्सा आय गई बङ्का को * औ नैनन से झरे अँगार ॥
धँरि ललकारो मोती सिंह को * मोती काह रहे बतराय ॥
बेटी ब्याही नैपाली को * औ आल्हा का कीन्ह बिवाह ॥
बेटी व्याही पृथीराज की * सातौ भाँवर लीन्ह डराय ॥
हंसी खुशी से व्याह न करिहौ * मारौं राज गर्द ह्वै जाय ॥
दतिया मारे उरछा मोरे * मारे खुरासान गुजरात ॥
नाम सुनत खन बघ ऊदन को * पृथ्वी थहर २ थहरात ॥
सेतु बन्धु औ रामेश्वरलौं * बाजी टाप बेंदुला क्यार ॥
तेहिते तुमको समुझाइत है * मोती नाहक बढ़ाओ रार ॥
बातन २ बतबढ़ होइ गै * औ बातन में बढ़िगै रार ॥
गुसा आइगै भाइ मोती को * मोती कहे बचन ललकार ॥
बत्ती दै देव मेरे तोपन में * इन पाजिन को देहु उड़ाय ॥
अपनी २ फौजन आए * मोती और उदय सिंहराय ॥
झुके खलासी दुहुँ तरफा के * तोपन आगी दीन्ह लगाय ॥
दगी भवानी दुहु तरफा से * धुवना आसमान मड़राय ॥
अररर अररर गोला छूटै * मानो मेघ रहे घहराय ॥
सननन सननन तीरैं छूटैं * गोली मन्न २ मन्नाय ॥
गोला लागै जेहि हाथी के * मानो चोर सेंध कै जाय ॥
गोला लागै जौन ऊँट के * सो गिरि परै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जेहि घोड़ा के * चारो सुम्म गर्द ह्वै जाय ॥
गोला लागै जेहि क्षत्री को * ताको त्वचा सरग मडराय ॥
गोला बम्ब के जिनके लागे * तिनके हाड़ मास छुटिजाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

गोला जँजिरिहा जिनके लागे * ते लत्ता से जायँ उड़ाय ॥
गोली छोटी जिनके लागैं * मानों गिरह कबूतर खाय ॥
बान के डंडा जिनके लागैं * तिनके दुइ खंडा ह्वै जाय ॥
बरसो गोला चारि घरी भर * कोऊ शूर न टारैं पाँव ॥
तोपैं धै धै लाली होइ गईं * उनपै हाथ धरेना जाँय ॥
चढ़ी कमानियाँ पानी होइ गई * गे चुटकिन के मास उड़ाय ॥
तोप रहकला पीछे करि कै * ऊदन हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
बढ़ जाव २ मेरे शहजादों * अब क्यों राखी देर लगाय ॥
खैंच सिरोही लइ बीरन ने * समुहें गोल गए सामियाय ॥
झुके सिपाही दहु तरफा के * रहिगो पाँच पैग मैदान ॥
होदन २ नचै कबुतरी * जापर चढ़े भँदर मलखान ॥
चलै जुनब्बी और तिनब्बी * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * औ बूँदी की असल कटार ॥
पैदल अभिरे भाई पैदल से * औ असवार साथ असवार ॥
होदा के सँग होदा मिलिगे * अम्बा झोर चली तलवार ॥
पाँच कोस लौं चलै सिरोही * कटि २ गिरे शूर सर्दार ॥
पैग २ पर पैदल गिरिगे * दुइ २ पैग गिरे असवार ॥
बिसे २ पर हाथी गिरिगे * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
कल्ला कटिगे रजपूतन के * चेहरा कटे बछेरन क्यार ॥
कटि भुजदंडैं गईं ज्वानन की * हाथिन केर सूंड कट जाय ॥
कटे भुसुण्डा जब हाथिन के * उइं गिर परैं भरहरा खाय ॥
मूड़न केरे मुड़ चौरा भे * औ रुण्डन के लगे पहार ॥
बड़ी लड़ाई भइ खेनत में * यारो बही रकतकी धार ॥
पगिया डारी है लोहू में * मानो कमल फूल उतरायँ ॥
पड़े दुशाला जो लोहू में * ते सेवार सम परैं दिखायँ ॥
ढाले डारीं जो लोहू में * कछवा सरिस पड़ी उतरायँ ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जो बंदूक पड़ी लोहू में * कारे नाग अइस भन्नाय ॥
घइहा डारे रन खेतन में * जिनके प्यास २ रट लाग ॥
शूरबीर बढ़ि २ के मारैं * मानो खेल रहे हैं फाग ॥
मुहर कटोरा पानी होइगो * कोई बूँद देवइया नाय ॥
तीन लाख मोती के जूझे * तहिके आधे उदैय सिंहराय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * रनमें मार २ चिल्लाय ॥
हा हा कार मचो लश्कर में * फौजें उठीं सबै चिल्लाय ॥
कोऊ रोय रहे तिरियन के * हालै लाए गवन करवाय ॥
कोऊ रोवत हैं लरिकन को * पुरखन कोऊ रहे चिल्लाय ॥
कोऊ रोवैं महतारिन को * राखे जौन गरभ नौमास ॥
गोल फूटिगा भर्रा परिगा * बीरन छाड़ जीवन की आस ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जे रन दुलहा चले बराय ॥
दुइ२ फेटन के बँधवइया * नारेन केर पकर लइ राह ॥
लम्बी धोतिन के पहिरइया * जुलफन तेल रहो चुचुवाय ॥
सेखी मारैं भल तिरियन में * सोऊ रन से चले पराय ॥
भाँग उतरि गई भंगेडिन की * गांजा नशा हवा होइ जाय ॥
भगे अफीमी भई संगर से * पलकैं मूदैं औ रहि जायँ ॥
भागत फौजें मोती देखी * आपन घोड़ा दीन्ह बढ़ाय ॥
औ ललकारो रन खेतन में * कहँ हैं बीर बनाफर राय ॥
दाबे घोड़ी मलिखे आवैं * मोती पास पहुँचे आय ॥
लई सिरोही तब मोती ने * औ मलिखेपर दीन चलाय ॥
तीन सिरोही हनि २ मारी * मलिखे लीन्ही वार बचाय ॥
टूट सिरोही गइ मोती की * खाली मूठ हाथ रहिजाय ॥
तब ललकारो नर मलखे ने * ठाकुर सावधान ह्वै जाय ॥
ऐड़ा मसको रै घोड़ी को * घोड़ा आसमान उड़जाय ॥
कारे बादर की लाली में * यारो घोड़ी गइ समियाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सर सर सर उड़े बछड़ी * मानो गिरह कबूतर खाय ॥
घोड़ी कबुतरी आसमान पै * अम्बर पंख दिए फैलाय ॥
उतरत आवै आसमान सों * मोती सोचि २ रहिजाय ॥
यही सिरोही से गज काटे * औ घोड़न के चारो पाँय ॥
आज भगौंती धोखा दैगई * हमरो कालगयो नगिचाय ॥
धरि ललकारो फिर मालिन को * मालिन तेरा बुरा होइजाय ॥
सुनिके बातैं मोतीसिंह की * मालिन उठी भरहरा खाय ॥
पुरिया लइकै भैरौं वाली * सो मलिखे पै दीन्ह चलाय ॥
तकि २ जादू मालिन मारे * मलिखे अङ्ग नहीं अनियाय ॥
मलिखे बोलैं तब मालिन से * मालिन तेरा बुरा है जाय ॥
पुष्य नछत्तर में जन्मा हौं * वरहैं पड़ो वृहस्पति आय ॥
और देवता की गिनती ना * शंका हमैं कालकी नाय ॥
ढाल की औझर असकहि मारी * औ मालिन को दीन्ह गिराय ॥
जूरा काट लियो मालिन को * मालिन ठाढ़ रही पछताय ॥
मुश्क बाँध लइ फिर मालिन की * मलिखे कहीं बात समुझाय ॥
पहिली फौजैं पाथर करदइ * उनको मानुष देहु बनाय ॥
तौं हम छाँड़ि देहिंगे तुमको * नाहीं कैद परे मरजाय ॥
यह सुन पुरिया लै जादू की * औ मलिखे के दीन्ह पकराय॥
पुरिया डारो जाय फौजन में * मानुष तुरत फौज होय जाय ॥
पुरिया लइके मलिखे चलिभे * औ फौजन में फेंकदइ जाय॥
उठे सूरमा दिल्ली वारे * एक दम मार २ चिल्लाय ॥
मलिखे छाड़ो तब मालिन को * मालिन भागि नगर को जाय॥
देखि हकीकत मोती जरिगए * आपन घोड़ा दीन्ह बढ़ाय ॥
औ ललकारो उदयसिंह को * सुनिये बात उदय सिंहराय ॥
दस २ रुपिया के नौकर हैं * नाहक रहे मूड़ कटवाय ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है * देखैं कापर राम रिसाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

यह मन भाय गई ऊदन के * आपन घोड़ा दीन्ह बढ़ाय ॥
साँगि उठाई मोती मलने * औ ऊदन पर दीन्ह चलाय ॥
बाँए से घोड़ा दहिने होइगा * नीचे साँग गिरो अरराय ॥
मोती बोले तब ऊदन से * तुम सच जानो उदय सिंहराय ॥
तुम्हरी माता ने व्रतराखे * दूजो जन्म भएव तव भाय ॥
ऊदन बोले मोती मल से * ठाकुर अकिल गई तुम्हार ॥
हमहैं क्षत्री गढ़ महुबे के * मारे बड़े २ सर्दार ॥
औरो चोटैं अपनी करलो * मनके मेट लेव अरमान ॥
सुनिके बातैं बघ ऊदनकी * मोती लीन्ह गुर्जको तान ॥
सो धरि धमको बघऊदन पर * ऊदन लेइगो चोट बचाय ॥
खैंचि सिरोही तब मोती ने * औ ऊदनि पर दीन्ह झुकाय ॥
ढाल उठाई उदयसिंह ने * तापर भयो जड़ाका जाय ॥
तीन सिरोही हनि २ मारी * ऊदन लैगे वार बचाय ॥
तब ललकारो बघ ऊदन ने * माता खबरदार ह्वै जाय ॥
वारैं तुम्हरी हमने झेली * हमको राखो सारदा माय ॥
सम्हरो २ अब घोड़े पर * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
ऐड़ा मसको रस बेंदुल को * घोड़ा सर्ग रहा मड़राय ॥
ढालकी औझड़ ऊदन मारी * औ घोड़ा से दीन्ह गिराय ॥
मुश्क बाँधिलइ मोती मलकी * फौजैं भागि चलीं भर्राय ॥
यहगति देखी धीरसिंह ने * आपन हाथी दीन्ह बढ़ाय ॥
धरि २ मारै औ ललकारै * यहु रणबाघ बघेले राय ॥
इकले राजाकी धमकिन में * कोऊ शूर नहीं अड़ियाय ॥
मलिखे पहुँचे तब आल्हा तर * दोनों हाथ बाँधि रहिजाय ॥
हाथ जोर कै मलिखे बोलैं * दादा मण्डलीक औतार ॥
तुम्हरी बरनी का राजा है * काहे करते आप अबार ॥
जलदी बाँधो अब राजा को * तौ सब काम सिद्ध ह्वै जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सुनिके बातैं मलखाने की * आल्हा हाथी दीन्ह बढ़ाय ॥
बढ़िगो हाथी रन खेतन में * समुहें गोल गयो समियाय ॥
धीर सिंह के भाइ मुहरा में * पहुँचा बीर बनाफर राय ॥
टक्कर मारो पचसावद ने * हाथी हटो धीर सिंह क्यार ॥
खींच सिरोही धीरसिंहने * आल्हा उपर हनी तलवार ॥
वार बचायो सुनिआल्हा ने * औ हाथी से कही सुनाय ॥
कैद कराओ अब राजा को * काहे राखो देर लगाय ॥
साँकल फेरी पंचशावद ने * हौदा नीचे दीन्ह गिराय ॥
मुश्क बाँधलई धीर सिंह की * बोले तबै बघेले राय ॥
कैद छोड़ दो हम दोनों की * अबही ब्याह देहिं करवाय ॥
कैद छोड़ दइ तब आल्हा ने * पहुँचे दोउ नगर में जाय ॥
करी तयारी भाइ ब्याहे की * यारो सुनियो कान लगाय ॥
नेगी आए हैं राजा के * अब चढ़ावको देहु पठाय ॥
ऊदन पहुँचे पृथ्वीराज तर * औ राजा से कही सुनाय ॥
डब्बा दे देव तुम गहना को * महलन चढ़े चढ़ावा जाय ॥
पृथ्वी बोले तब ऊदन से * तुम सुनिलेहु ऊदयसिंहराय ॥
गहना नाहीं हम लाए हैं * सांचो हाल दीन्ह बतलाय ॥
इतना सुनिके ऊदन चलिगे * अपने फौज पहुँचे जाय ॥
डिब्बा लइके गहनो वारो * औ रुपना कोलीन्ह बुलाय ॥
ऊदन बोले फिर रूपन से * जल्दी जाव महल अब भाय ॥
चलिभो रूपन तब लश्कर से * महलन तुरत पहूँचो जाय ॥
गहना दइके रूपन बारी * अपनी फौज पहूँचा आय ॥
उत पंडित रानी बुलवायो * चन्दन चौक दीन्ह लिपवाय ॥
चौक पुराई फिर मोतिन से * सखियां सबै लीन्ह बुलवाय ॥
कलश सूबरन के धरवायो * तामें दिया दीन्ह बरवाय ॥
सखियाँ मङ्गल गावन लागीं * बेटी चौक पहुँची आय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

चढ़ो चढ़ावा भइ केशर को * शोभा कही बूतना जाय ॥
सजे अभूषण अङ्ग २ में * वरनन थोरा देहुँ सुनाय ॥
सारी पहिरी रेशम वारी * यारा सुनि लो कान लगाय ॥
ओढ़ दुपट्टा अतलस केरा * जामें तारकसी को काम ॥
धूप छाँह की चोली पहिरी * जामें अजब सुहावे धाम ॥
झालर लागी है मोतिन की * शोभा कही बूतना जाय ॥
गोटा पट्टा इतना लागो * समुहें दृष्टि नहीं अनियाय ॥
माथे बेंदी नीलाम्बर की * यारो चमकि २ रहिजाय ॥
करन फूल कानन में सोहैं * गालन दमकि २ रहिजाय ॥
झुमका झूलिरहे गालन में * गालन छुवे और इतराँय ॥
चम्प कली पचलरी सतलरी * जेहर तेहर रही सुहाय ॥
मोहन माला चन्द्रहार हैं * औ भुजबन्द कंठमें हार ॥
दुलरी तिलरी कंठ बिराजैं * बाजूबन्द चन्द अनुहार ॥
को गति बरनै वा नथुनी की * लटकन लटकि २ रहिजाय ॥
मनकी दमकि रही है भइया * देखत करै करेजे घाय ॥
कड़ा के ऊपर छड़ा बिराजै * तापर पावजेब झनकार ॥
अनवट बिछिया की शोभा है * को कवि गाय के पावै पार ॥
काजर सो है भल आंखिन में * दाँतन मिस्सी रही लगाय ॥
परी बतीसी है दांतन में * मेंहदी हाथन रही लगाय ॥
जितने गहना हैं तिरियन के * सो सब तनमें रहे सुहाय ॥
भयो बुलावा तब धाँधू को * साइत गई आय नगिचाय ॥
नेगी पहुँचे जनवासे में * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
लरिका भेज देव महराजा * भाँवर समय गयो है आय ॥
हुकुम लगायो है आल्हा ने * सबही शूर भए तइयार ॥
को गति बरनै तिन सूरन की * जिनको सजत न लागीबार ॥
आदि भयङ्कर हाथी ऊपर * चढ़िगे समर धनी चौहान ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Pranjali) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

सिढ़ियनसिढ़ियन मल्हनाउतरी * रूपन पास पहूँची जाय ॥
हाथ जोरिके रूपन बारी * सबिया हाल दियो बतलाय ॥
खबर पाइके मल्हना रानी * सब सखियन को लीन्ह बुलाय॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * महलन भयो मंगला चार ॥
थार सूबरन को मँगवायो * तामें दियो चौमुखा बार ॥
बारा रानी परिमालै की * देवै बिरमा संग लिवाय ॥
मछुला फुलवा दोनों आईं * द्वारे ऊपर पहुँची जाय ॥
डोली आयो दरवाजे पर * परछन होन लाग तत्काल ॥
नेग निछावर मल्हना कीन्ही * नेगी ह्वेगे सबै निहाल ॥
आल्हा ऊदन मलखे ढेवा * अरु रण बाघ उदय सिंहराय ॥
धाँधू ठाकर महलन आये * मल्हना चरन गिरे हैं जाय ॥
चरन लागि कै महतारिन के * धाँधू मने उठे हर्षाय ॥
दया तुम्हारी माता चहिये * हमको ईश दीन्ह बिलगाय ॥
मल्हना बोली तब धाँधू से * बेटा मेरे बनाफर राय ॥
जहाँ तुम्हारे मन में भावै * बेटा रहो मने हर्षाय ॥
विदा माँगि कै महतारी से * पहुँचे सबै कचेहरी जाय ॥
जहाँ कचहरी परिमालिक की * सबही तहाँ पहूँचे जाय ॥
करी बन्दगी महराजा को * धाँधू चरन गए लपटाय ॥
तुरत उठायो परिमालिक ने * औ छाती से लीन्ह लगाय ॥
मन प्रसन्न ह्वै महराजा ने * तुरतै हुकुम दीन्ह फरमाय ॥
दगे सलामी अब तोपन की * आए जीति बनाफर राय ॥
डोलन्हिन उतरी इत पलकी से * महलन मल्हना गई लिवाय॥
नेग जोग सब भे महलन में * यारो सुनियो कान लगाय ॥
केशर चरन छुए मातन के * औ माथे में लीन्ह लगाय ॥
बोलन लागी महतारिन से * माता मेरी बात बनाय ॥
तुमते उरिन कतहूँ न माता * राखो तुमने धर्म हमार ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Pranjali) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

देवर मलखे हैं मरदाने * बेंड़े उदय सिंह सर्दार ॥
यहि बिधि केशर करी बड़ाई * रानी उठी मनै हर्षाय ॥
आठ रोज महबे में रहिके * धाँधू महलन पहूँचे आय ॥
हाथ जोरि के धाँधू बोलैं * माता हुकुम देहु फर्माय ॥
अब हम जइहैं गढ़ दिल्ली को * साँचो हाल दीन्ह बतलाय ॥
करी तयारी तब मल्हना ने * डोला तुरत लीन्ह सजवाय ॥
चरन लागिकै महरानिन के * धाँधू कूँच दीन्ह करवाय ॥
सात रोज की मंजिल करिके * दिल्ली शहर पहूँचे जाय ॥
डोला गयो राज महलन को * धाँधू जहाँ पिथौरा राय ॥
करी बन्दगी बादशाह को * मन में खुशी पिथौरा राय ॥
यहि बिधि ब्याह भयो धाँधू को * सोई हाल दीन्ह बतलाय ॥
हमरे गुरुवर श्री लाल जी * हम पर दया करैं अधिकाय ॥
तिनहीं की दाया किरपासे * गाथा कही यार हम गाय ॥
तारागन नभ चमकन लागे * सन्तन धुनी दीन्ह परचार ॥
चरि २ गउवैं घर का डगरीं * संझा काल गयो नगिचाय ॥
चक्रकवी कृत आल्हा गइये * लइये भोर रामको नाम ॥
बुद्धी विमल होय यहि जामें * सीधो चलाजाय सुरधाम ॥
रहे समुन्दर में जौलौं जल * जौलौं रहे चन्द औ शूर ॥
बैजनाथ प्रशाद नाम यह * यशसों रहै सदा भरपूर ॥
तिनके सुत गोपाल दासजी * युग २ जिवैं सुख सरसाय ॥
उनही की आज्ञा से भइया * हमने गाथा कही बनाय ॥
कियो तरंग यहाँ से पूरन * मनमें सुमिरि भवानी कन्त ॥
राम रमा मिलि दरशन दीजै * इच्छा यही मोर भगवन्त ॥

इती श्री पं०—सुदर्शन लाल त्रिवेदी रचित
धाँधू का ब्याह सम्पूर्णम् ।

बाबू बैजनाथ प्रसाद द्वारा श्रीविश्वेश्वर प्रेस काशी में मुद्रित ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

घोड़ा कबुतरी की पीठी पर * यहु रण बाघ
हाथी नाम पंचशावद ऊपर * आल्हा मरडलीक औतार ॥
हाथी नाम एक दन्ता ऊपर * चौड़ा ब्राह्मण भएव सवार ॥
घोड़ा साजो हर नागर जो * तापर चन्द्रबंश सरदार ॥
घोड़ा मनुरथा की पीठी पर * ढेवा फाँदि भए असवार ॥
घोड़ा बेंदुला पर ऊदन हैं * ताहर दल गंजन असवार ॥
घोड़ा करिलिया की पीठी पर * इन्दल आल्हा केर कुमार ॥
सजी पालकी तब धाँधू की * शोभा कही बूत ना जाय ॥
चली पालकी जनवासे से * आल्हा चले शारदा धाय ॥
सब क्षत्री द्वारे पर पहुँचे * तब रनधीर सिंह नर राय ॥
साथ में लड़के मोती सिंह को * द्वारे तुरत पहूँचे आय ॥
करि अगुवानी सब शूरन की * फिर मड़ए तर गये लिवाय ॥
पंडित वेद उचारन लागे * धाँधू सिंह को लीन्ह बुलाय ॥
भांवरि परन लगी धाँधू की * यारो सुनियो कान लगाय ॥
पहिले भांवरि के परतै खन * मोती उठे भरहरा खाय ॥
कियो जड़ाका नर धाँधू पै * मोती सिंह खैंचि तरवार ॥
ढाल उठाई नर मलिखे ने * औ लैलीन ढाल पर वार ॥
दूसरि भाँवर के परतै खन * क्षत्री आए कई हजार ॥
सबै महुबिया ठाढ़ होई गे * होवै लाग भड़ाभड़ मार ॥
आधे मड़ए भाँवर होवै * आधे चलै बिषम तरवार ॥
बाढ़ि २ मारे रजपूतन को * ऊदन देवै केर कुमार ॥
शूरन केर मुड़ चपरा भे * औ सरडन के लगे पहार ॥
बड़ी लड़ाई भै आँगन में * औ बहि चली रकत की धार ॥
बैठे देखैं पिरथी राजा * मनमें सोचि २ रहि जाय ॥
बड़े लड़इया महुबे वारे * ई मरिबे को नाहिं डराय ॥
एक पहर भर चली सिरोही * आधे शूरन दीन्ह गिराय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

बड़े लड़इया महुबे वारे * सब छत्रिनको दीन्ह भगाय ॥
सातौं भाँवरि तिन डरवाई * मोती कैद लीन्ह करवाय ॥
ऊदन बोले धीरसिंह से * जल्दी बिदा देहु करवाय ॥
मुश्क खोल दई मोतीसिंह की * राजा मनै खुशी ह्वै जाय ॥
करी तयारी धीरसिंह ने * तुरतै बिदा दीन्ह करवाय ॥
डोला चलिभो तब केशरको * लश्कर कूँच दीन्ह करवाय ॥
चार दिना को धावा करिकै * दिल्ली शहर पहुँचे जाय ॥
खातिर कीन्ही पृथीराज ने * सबको दिल्ली लीन्ह टिकाय ॥
ऊदन बोले पृथीराज से * ओ महराजा बात सुनाय ।
जल्दी सजाओ अब डोलाको * हमरे साथ देहु पठवाय ॥
मुख दिखरावैं महतारी को * पीछे यहाँ देहु पठवाय ॥
सुनिकै बातैं यह ऊदन की * बोले तुरत पिथौरा राय ॥
डोला महुबे यहु जाई ना * साफै हाल दीन्ह बतलाय ॥
सुनिकै बातैं पृथीराज की * तड़पा बच्छराज का लाल ॥
डोला जाई यहु महुबे को * आज्ञाकारी रजा परिमाल ॥
ताते चुपके डोला दैदो * संगै धाँधू दहु पठाय ॥
दूजी करिहौ जो हमरे संग * मारौं राज भंग ह्वै जाय ॥
सुनिकै बातैं नर मलिखे की * हँसिके बोले पिथौरा राय ॥
हमने तुमसे ठट्ठा कीनी * तुमने जान लई सतभाय ॥
अस कहि डोला तुरत सजायो * औ धांधू को लीन्ह बुलाय ॥
सो करि दीन्ह संग ऊदन के * ऊदन कूँच दीन्ह करवाय ॥
सात रोजकी मंजिल करिके * महुबे नगर पहुँचे आय ॥
रूपन बारी को दौरायो * खबरैं पहिलेई दई पठाय ॥
ठाढ़ी मल्हना जहँ अटापै * बारी तहाँ पहूँचो जाय ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri